

प्रभु यीशु और उनके अनुचर

(नए नियम के अंतर्गत यीशु-सुसमाचार और प्रेरित-कार्य-कलाप)

अंग्रेजी एवं संशोधित हिंदी अनुवाद

भारत-लंका बाइबल-समिति

ए/१ महात्मा गांधी रोड,

बंगलौर-१

नवबंर, १९६१
५००० प्रतियाँ
प्रथम संस्करण

THE GOSPELS AND ACTS

THE AUTHORISED VERSION

AND

THE REVISED HINDI VERSION

THE BIBLE SOCIETY OF INDIA AND CEYLON
A/1 Mahatma Gandhi Road,
Bangalore-1

November, 1961
5000 Copies
First Edition

प्रभु यीशु और उनके अनुचर

(चारों सुसमाचार और प्रेरितों के कार्य कलाप का
अंग्रेजी और संशोधित हिंदी अनुवाद)

THE GOSPEL

ACCORDING TO

ST. MATTHEW

THE ANCESTORS OF JESUS

THE book of the generation of Jesus Christ, the
son of David, the son of Abraham. 2 Abraham
begat Issac ; and Isaac begat Jacob ; and Jacob begat
Judas and his brethren ; 3 and Judas begat Phares and
Zara of Thamar ; and Phares begat Esrom ; and Esrom
begat Aram ; 4 and Aram begat Aminadab ; and Amina-
dab begat Naasson ; and Naasson begat Salmon ; 5 and
Salmon begat Booz of Rachab ; and Booz begat Obed
of Ruth ; and Obed begat Jesse ; 6 and Jesse begat
David the king.

And David the king begat Solomon of her that had
been the wife of Urias ; 7 and Solomon begat Roboam ;
and Roboam begat Abia ; and Abia begat Asa ; 8 and
Asa begat Josaphat ; and Josaphat begat Joram ; and
Joram begat Ozias ; 9 and Ozias begat Joatham ; and
Joatham begat Achaz ; and Achaz begat Ezekias ;
10 and Ezekias begat Manasses ; and Manasses begat
Amon ; and Amon begat Josias ; 11 and Josias begat
Jechonias and his brethren, about the time they were
carried away to Babylon.

12 And after they were brought to Babylon Jecho-
nias begat Salathiel ; and Salathiel begat Zorobabel ;
13 and Zorobabel begat Abiud ; and Abiud begat Elia-
kim ; and Eliakim begat Azor ; 14 and Azor begat Sadoc ;
and Sadoc begat Achim ; and Achim begat Eliud ;
15 and Eliud begat Eleazar ; and Eleazar begat Matthan ;
and Matthan begat Jacob ; 16 and Jacob begat Joseph
the husband of Mary, of whom was born Jesus, who is
called Christ.

17 So all the generations from Abraham to David
are fourteen generations ; and from David until the
carrying away into Babylon are fourteen generations ;

मत्ती रचित सुसमाचार

१

यीशु की वंशावली

१ अब्रहाम की संतान दाऊद के पुत्र यीशु ख्रिस्त की वंशावली : २ अब्रहाम
से इसहाक उत्पन्न हुए, इसहाक से याकूब उत्पन्न हुए, याकूब से
यहूदा और उनके भाई उत्पन्न हुए, ३ यहूदा से तामार द्वारा फिरिस
और जोरह उत्पन्न हुए, फिरिस से हिस्रोन उत्पन्न हुए, हिस्रोन से
एराम उत्पन्न हुए ४ एराम से अम्मीनादाब उत्पन्न हुए, अम्मीनादाब से
नहशोन उत्पन्न हुए, नहशोन से सलमोन उत्पन्न हुए, ५ सलमोन से
राहब द्वारा बोअज उत्पन्न हुए, बोअज से रूत द्वारा ओबेद उत्पन्न
हुए, ओबेद से यिशै उत्पन्न हुए, ६ और यिशै से राजा दाऊद
उत्पन्न हुए ।

उरिय्याह की स्त्री द्वारा दाऊद से सुलमान उत्पन्न हुए, ७ सुलैमान
से रहबाम उत्पन्न हुए, रहबाम से अबिय्याह उत्पन्न हुए, अबिय्याह से
आसाफ उत्पन्न हुए, ८ आसाफ से यहोशाफात उत्पन्न हुए, यहोशाफात
से योराम उत्पन्न हुए, योराम से उज्जियाह उत्पन्न हुए, ९ उज्जियाह
से योताम उत्पन्न हुए, योताम से आहाज उत्पन्न हुए, आहाज से
हिजकिय्याह उत्पन्न हुए, १० हिजकिय्याह से मनश्शिह उत्पन्न हुए,
मनश्शिह से आमोन उत्पन्न हुए, आमोन से योशिय्याह उत्पन्न हुए,
११ और बाबुल को निर्वासित होने पर योशिय्याह से यकुन्याह और
उनके भाई उत्पन्न हुए ।

१२ बाबुल-निर्वासन के पश्चात्, यकुन्याह से शालतिएल उत्पन्न हुए,
शालतिएल से जरुब्बाबिल उत्पन्न हुए, १३ जरुब्बाबिल से अबीहूद उत्पन्न
हुए, अबीहूद से इल्याकीम उत्पन्न हुए, इल्याकीम से अजोर उत्पन्न हुए,
१४ अजोर से सदोक उत्पन्न हुए, सदोक से अखीम उत्पन्न हुए, अखीम से
इलीहूद उत्पन्न हुए, १५ इलीहूद से इलियाजार उत्पन्न हुए, इलिया-
जार से मत्तान उत्पन्न हुए, मत्तान से याकूब उत्पन्न हुए, १६ और
याकूब से यूसुफ उत्पन्न हुए जो मरियम के पति थे, मरियम से यीशु
जो ख्रिस्त कहलाते हैं उत्पन्न हुए।

१७ इस प्रकार अब्राहम से दाऊद तक सब चौदह पीढ़ी, दाऊद

and from the carrying away into Babylon unto Christ
are fourteen generations.

THE BIRTH OF JESUS

18 Now the birth of Jesus Christ was on this wise ;
When as his mother Mary was espoused to Joseph,
before they came together, she was found with child
of the Holy Ghost. 19 Then Joseph her husband, being
a just man, and not willing to make her a publick
example, was minded to put her away privily. 20 But
while he thought on these things, behold, the angel of
the Lord appeared unto him in a dream, saying, Joseph,
thou son of David, fear not to take unto thee Mary thy
wife : for that which is conceived in her is of the Holy
Ghost. 21 And she shall bring forth a son, and thou shalt
call his name JESUS : for he shall save his people from
their sins. 22 Now all this was done, that it might be
fulfilled which was spoken of the Lord by the prophet,
saying,

23 Behold, a virgin shall be with child, and shall
bring forth a son, and they shall call his name Emmanuel,
which being interpreted is, God with us. 24 Then
Joseph being raised from sleep did as the angel of the
Lord had bidden him, and took unto him his wife :
25 and knew her not till she had brought forth her
firstborn son : and he called his name JESUS.

WISEMEN FROM THE EAST

2 Now when Jesus was born in Bethlehem of Judæa
in the days of Herod the king, behold, there came wise
men from the east to Jerusalem, 2 saying, Where is
he that is born King of the Jews ? for we have seen
his star in the east, and are come to worship him.
3 When Herod the king had heard these things, he was
troubled, and all Jerusalem with him. 4 And when he
had gathered all the chief priests and scribes of the
people together, he demanded of them where Christ

से बाबुल-निर्वासन तक चौदह पीढ़ी और बाबुल-निर्वासन से ख्रिस्त
तक चौदह पीढ़ी हुईं ।

यीशु का जन्म

१८ यीशु ख्रिस्त का जन्म इस प्रकार हुआ । उनकी माता मरि-
यम की मंगनी यूसुफ से हुई थी, पर उनके समागम से पूर्व वह
पवित्र आत्मा से गर्भवती पाई गईं । १९ उनके पति यूसुफ ने
धर्मात्मा होने के कारण नहीं चाहा कि उनका अपयश हो और चुप-
चाप उन्हें त्याग देने का निश्चय किया । २० वह इस संबंध में
विचार कर ही रहे थे कि प्रभु के एक दूत ने उन्हें स्वप्न में दर्शन
दिए और कहा, 'यूसुफ ! दाऊद के पुत्र ! अपनी पत्नी मरियम को
अंगीकार करने से न डरो, क्योंकि उनके जो गर्भ है वह पवित्र आत्मा
से है । २१ वह पुत्र को जन्म देंगी, और तुम उनका नाम यीशु
रखना क्योंकि वह अपने लोगों का पापों से उद्धार करेंगे ।' २२ यह
सब इसलिए हुआ कि नबी कथित प्रभु का यह बचन पूरा हो,
२३ 'कुंवारी गर्भवती होगी और पुत्र को जन्म देगी, और उसका नाम
इम्मानुएल रखा जाएगा ।' अर्थात्, परमेश्वर हमारे साथ । २४ यूसुफ
निद्रा से जागकर प्रभु के दूत की आज्ञानुसार अपनी पत्नी को अपने
यहां ले आए, २५ और जबतक उन्होंने पुत्र को जन्म न दिया,
उनसे संपर्क नहीं रखा, और उन्होंने उनका नाम यीशु रखा ।

२

ज्ञानियों का दर्शन के लिए आगमन

१ राजा हेरोदेस के समय में जब यहूदिया के बैतलहम में यीशु
का जन्म हुआ, तो पूर्व देश के ज्ञानी* पुरुष यरूशलेम आए और
कहने लगे, २ 'यहूदिया के नवजात राजा कहां हैं ? क्योंकि हमने
उनका तारा उदय होते देखा है और उनकी वंदना करने आए हैं ।
३ यह सुनकर राजा हेरोदेस और उसके साथ समस्त यरूशलेम विच-
लित हो उठा । ४ राजा ने जनता के सब महापुरोहितों और
शास्त्रियों को एकत्रित कर उनसे पूछा कि ख्रिस्त का जन्म कहां होगा ?

*अक्षरश: 'मागी', फारस देश में पुरोहितों की एक जाति ।

should be born. 5 And they said unto him, In Beth-
lehem of Judæa: for thus it is written by the prophet,

6 And thou Bethlehem, in the land of Juda,
Art not the least among the princes of Juda:
For out of thee shall come a Governor,
That shall rule my people Israel.

7 Then Herod, when he had privily called the wise men
enquired of them diligently what time the star appeared.
8 And he sent them to Bethlehem, and said, Go and
search diligently for the young child; and when ye have
found him, bring me word again, that I may come and
worship him also. 9 When they had heard the king,
they departed; and, lo, the star, which they saw in the
east, went before them, till it came and stood over where
the young child was. 10 When they saw the star, they
rejoiced with exceeding great joy. 11 And when they
were come into the house, they saw the young child with
Mary his mother, and fell down, and worshipped him:
and when they had opened their treasures, they presented
unto him gifts; gold, and frankincense, and myrrh.
12 And being warned of God in a dream that they
should not return to Herod, they departed into their
own country another way.

THE FLIGHT TO EGYPT

13 And when they were departed, behold, the angel
of the Lord appeareth to Joseph in a dream, saying,
Arise, and take the young child and his mother, and flee
into Egypt, and be thou there until I bring thee word:
for Herod will seek the young child to destroy him.
14 When he arose, he took the young child and his
mother by night, and departed into Egypt: 15 and was
there until the death of Herod: that it might be fulfilled
which was spoken of the Lord by the prophet, saying,
Out of Egypt have I called my son.

HEROD'S MASSACRE OF THE CHILDREN

16 Then Herod when he saw that he was mocked of
the wise men, was exceeding wroth, and sent forth, and

५ उन्होंने कहा, 'यहूदिया के बैतलहम में, क्योंकि नबी का लेख है,
६ "हे बैतलहम, यहूदा की भूमि,
तू यहूदा के शासकों में किसी से कम नहीं,
क्योंकि तुझमें एक नेता उत्पन्न होगा,
जो मेरी प्रजा इस्राएल का मेषपाल होगा।" '

७ तब हेरोदेस ने ज्ञानियों को चुपचाप बुलाकर पूछताछ की कि
तारा उन्हें ठीक किस समय दिखाई पड़ा था ८ और यह कहकर
उन्हें बैतलहम भेजा, 'जाओ, बालक के विषय में ठीक-ठीक पता
लगाओ; और जब वह मिल जाए तो मुझे समाचार दो कि मैं भी
जाकर उसकी वंदना करूं।' ९ राजा के बचन सुन कर वे चले।
जो तारा उन्होंने उदय होते देखा था उनके आगे आगे चला, और
जहां बालक था वहां ऊपर ठहर गया। १० वे तारे को देखकर
आनंद-विभोर हो गए। ११ घर में प्रवेश कर उन्होंने बालक को
माता मरियम के साथ देखा, भूमि पर गिर बालक की वंदना की
तथा अपना-अपना कोष खोलकर स्वर्ण, लोबान और गंधरस की उसे
भेंट चढ़ाई। १२ तब स्वप्न में आदेश पाकर कि हेरोदेस के पास
न लौटना, वे दूसरे मार्ग से अपने देश को चल गए।

मिस्र-गमन

१३ उनके चले जाने के उपरांत प्रभु के एक दूत ने स्वप्न में
यूसुफ को दर्शन दिए और कहा, 'उठो, बालक एवं उसकी माता को
लेकर मिस्र देश को निकल जाओ, और जब तक मैं न कहूं वहां
रहना, क्योंकि हेरोदेस इस बालक की खोज करनेवाला है, कि इसकी
हत्या कर दे।' १४ वह रात्रि को ही उठे और बालक तथा उसकी
माता को लेकर मिस्र को निकल गए तथा हेरोदेस की मृत्यु तक वहीं
रहे १५ कि नबी-कथित प्रभु का यह बचन पूरा हो, 'मैंने मिस्र देश
से अपने पुत्र को बुलाया।'

बालकों की हत्या

१६ जब हेरोदेस ने देखा कि ज्ञानियों ने उसे मूर्ख बनाया है तो
वह अत्यन्त क्रोधित हुआ; और लोगों को भेजकर बैतलहम तथा उसके

slew all the children that were in Bethlehem, and in all
the coasts thereof, from two years old and under accord-
ing to the time which he had diligently enquired of the
wise men. 17 Then was fulfilled that which was spoken
by Jeremy the prophet, saying,

18 In Rama was there a voice heard,
Lamentation, and weeping, and great mourning,
Rachel weeping for her children,
And would not be comforted, because they are not.

THE RETURN FROM EGYPT

19 But when Herod was dead, behold, an angel of
the Lord appeareth in a dream to Joseph in Egypt, 20
saying, Arise, and take the young child and his mother,
and go into the land of Israel : for they are dead which
sought the young child's life. 21 And he arose, and
took the young child and his mother, and came into the
land of Israel. 22 But when he heard that Archelaus
did reign in Judæa in the room of his father Herod, he
was afraid to go thither : notwithstanding, being warned
of God in a dream, he turned aside into the parts of
Galilee : 23 and he came and dwelt in a city called
Nazareth : that it might be fulfilled which was spoken by
the prophets, He shall be called a Nazarene.

JOHN THE BAPTIST AND HIS MESSAGE

3 In those days came John the Baptist, preaching in
the wilderness of Judæa, 2 and saying, Repent ye : for
the kingdom of heaven is at hand. 3 For this is he that
was spoken of by the prophet Esaias, saying,

The voice of one crying in the wilderness,
Prepare ye the way of the Lord,
Make his paths straight.

4 And the same John had his raiment of camel's hair,
and a leathern girdle about his loins ; and his meat was
locusts and wild honey. 5 Then went out to him
Jerusalem and all Judæa, and all the region round about

आसपास के स्थानों में उन सब बालकों को, जो ज्ञानियों के बताए
समय के अनुसार दो वर्ष के अथवा छोटे थे, मरवा डाला। १७ इस
प्रकार यरमिय्याह नबी-कथित यह वचन पूरा हुआ,

१८ 'रामाह में रुदन और विपुल विलाप की वाणी सुनाई दी,
अपने बालकों के लिए रोती हुई राहेल
धैर्य धारण करने में असमर्थ है,
क्योंकि वे नहीं रहे।'

मिस्र से लौटना

१९ हेरोदेस के मरने पर प्रभु के दूत ने मिस्र में यूसुफ को स्वप्न
में दर्शन दिए और कहा, २० 'उठो बालक और उसकी माता को
लेकर इस्राएल देश को चले जाओ क्योंकि जो बालक का प्राण लेना
चाहते थे वे मर चुके हैं।' २१ वह उठे और बालक तथा उसकी
माता को लेकर इस्राएल देश में आए। २२ परन्तु उन्होंने जब
सुना कि अरखिलाउस अपने पिता हेरोदेस के स्थान पर यहूदिया में
राज्य कर रहा है तो वहां जाने से डरे, और स्वप्न में आदेश
पाकर गलील प्रांत को निकल गए। २३ यहां वह नासरत नामक
नगर में जा बसे कि नबियों का यह कथन पूरा हो, 'वह नासरी
कहलाएगा'।

३

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले और उनका सन्देश

१ उन दिनों यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले यहूदिया के निर्जन प्रदेश में
आए और प्रचार करने लगे, २ 'हृदय-परिवर्तन करो क्योंकि स्वर्ग-राज्य
निकट आ पहुंचा है।" ३ यह वही थे जिनके लिए यशायाह नबी
ने कहा है,

'निर्जन-प्रदेश में पुकारनेवाले की वाणी,
प्रभु का मार्ग तैयार करो,
उनके पथ सीधे बनाओ।'

४ यह यूहन्ना ऊंट के रोम का वस्त्र पहिनते और कमर में चमड़े
का कटिबंध बांधते थे। टिड्डी और वनमधु उनका आहार था।
५ यरूशलिम, समस्त यहूदिया, एवं यरदन के आसपास के सब प्रदेश

Jordan, 6 and were baptized of him in Jordan, confessing
their sins.

7 But when he saw many of the Pharisees and
Sadducees come to his baptism, he said unto them, O
generation of vipers, who hath warned you to flee from
the wrath to come? 8 Bring forth therefore fruits meet
for repentance: 9 and think not to say within your-
selves, We have Abraham to our father: for I say unto
you, that God is able of these stones to raise up children
unto Abraham. 10 And now also the axe is laid unto the
root of the trees: therefore every tree which bringeth
not forth good fruit is hewn down, and cast into the
fire. 11 I indeed baptize you with water unto repen-
tance: but he that cometh after me is mightier than I,
whose shoes I am not worthy to bear: he shall baptize
you with the Holy Ghost, and with fire: 12 whose fan
is in his hand, and he will throughly purge his floor, and
gather his wheat into the garner; but he will burn up
the chaff with unquenchable fire.

THE BAPTISM OF JESUS

13 Then cometh Jesus from Galilee to Jordan unto
John, to be baptized of him. 14 But John forbad him,
saying, I have need to be baptized of thee, and comest
thou to me? 15 And Jesus answering said unto him,
Suffer it to be so now: for thus it becometh us to fulfil
all righteousness. Then he suffered him. 16 And Jesus,
when he was baptized, went up straightway out of the
water: and, lo, the heavens were opened unto him, and
he saw the Spirit of God descending like a dove, and
lighting upon him: 17 and lo a voice from heaven,
saying, This is my beloved Son, in whom I am well
pleased.

HIS TEMPTATION

4 Then was Jesus led up of the spirit into the wilder-
ness to be tempted of the devil. 2 And when he
had fasted forty days and forty nights, he was afterward

उनके पास आने ६ और अपने पापों को अंगीकार कर यरदन में
बपतिस्मा लेने लगे।
७ जब उन्होंने बहुत से फरीसियों और सदूकियों को बपतिस्मा
लेने के लिए अपने समीप आते देखा तो उनसे कहा, 'हे सांप के
बच्चो, किसने तुमको आगामी कोप से भागने की सम्मति दी!
८ हृदय-परिवर्तन के अनुरूप आचरण करो, ९ और अपने मन में यह
न सोचो कि अब्रहाम हमारे पिता हैं, क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं कि
परमेश्वर इन पत्थरों में से अब्रहाम के लिए संतान उत्पन्न कर सकते
हैं। १० वृक्षों की जड़ों पर कुल्हाड़ी रखी जा चुकी है। जो वृक्ष
अच्छे फल नहीं देता, वह काटा और अग्नि में झोंका जाएगा।
११ मैं तुम्हें जल से हृदय-परिवर्तन का बपतिस्मा देता हूं, परंतु जो
मेरे पीछे आ रहे हैं, वह मुझसे अधिक शक्तिमान् हैं, मैं उनके जूते
उठाने योग्य नहीं हूं; वह तुम्हें पवित्र आत्मा और अग्नि से बपतिस्मा
देंगे। १२ उनका सूप उनके हाथ में है; वह अपना खलिहान पूर्ण-
तया स्वच्छ करेंगे और अपना गेहूं कोठार में एकत्रित करेंगे, परंतु
भूसी को उस अग्नि में जलाएंगे जो बुझने की नहीं।'

यीशु का बपतिस्मा

१३ तब गलील से यीशु बपतिस्मा लेने के हेतु यूहन्ना के समीप
यरदन-तट पर आए। १४ यूहन्ना ने यह कहकर उनको रोकना चाहा,
'स्वयं मुझे आपसे बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और आप मेरे
पास आए हैं ?' १५ यीशु ने उत्तर दिया, 'अब तो होने दीजिए।
उचित है कि हम इसी प्रकार सब धर्म-विधियां पूर्ण करें।' यूहन्ना
मान गए। १६ यीशु बपतिस्मा लेकर तुरंत जल से निकले तो उनके
लिए आकाश खुल गया, और उन्होंने परमेश्वर के आत्मा को कपोत-
सदृश उतरते और अपने ऊपर आते देखा। १७ एवं आकाशवाणी
हुई, 'यह मेरा पुत्र मेरा प्रिय है, जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं।'

४

यीशु की परीक्षा

१ तब आत्मा यीशु को निर्जन-प्रदेश में ले गया कि इबलीस
उन्हें प्रलोभन दे। २ जब वह चालीस दिन और चालीस रात उप-

an hungred. 3 And when the tempter came to him, he
said, If thou be the Son of God, command that these
stones be made bread. 4 But he answered and said, It is
written,

Man shall not live by bread alone,
But by every word that proceedeth out of the
mouth of God.

5 Then the devil taketh him up into the holy city, and
setteth him on a pinnacle of the temple, 6 and saith
unto him, If thou be the Son of God, cast thyself
down : for it is written,

He shall give his angels charge concerning thee
And in their hands they shall bear thee up,
Lest at any time thou dash thy foot against a
stone.

7 Jesus said unto him, It is written again,
Thou shalt not tempt the Lord thy God.

8 Again, the devil taketh him up into an exceeding high
mountain, and sheweth him all the kingdoms of the
world, and the glory of them ; 9 and saith unto him, All
these things will I give thee, if thou wilt fall down and
worship me. 10 Then saith Jesus unto him, Get thee
hence, Satan : for it is written,

Thou shalt worship the Lord thy God
And him only shalt thou serve.

11 Then the devil leaveth him, and, behold, angels came
and ministered unto him.

JESUS SETTLES AT CAPERNAUM

12 Now when Jesus had heard that John was cast
into prison, he departed into Galilee ; 13 and leaving
Nazareth, he came and dwelt in Capernaum, which is
upon the sea coast, in the borders of Zabulon and
Nephthalim : 14 that it might be fulfilled which was
spoken by Esaias the prophet, saying,

15 The land of Zabulon, and the land of Nephthalim,
By the way of the sea, beyond Jordan,
Galilee of the Gentiles ;

वास कर चुके तो उन्हें भूख लगी। ३ प्रलोभन देनेवाले ने आकर
उनसे कहा, 'यदि आप परमेश्वर-पुत्र हैं तो कह दीजिए कि ये पत्थर
रोटियां बन जाएं।' ४ उन्होंने उत्तर दिया, 'शास्त्र का लेख है,

"मनुष्य केवल रोटी से ही नहीं,
वरन् परमेश्वर के मुख से निकले हुए प्रत्येक वचन से जीवित रहेगा"'

५ तब इबलीस उनको पवित्र नगर में ले गया, और मंदिर के शिखर
पर खड़ाकर ६ उनसे कहा, 'यदि आप परमेश्वर-पुत्र हैं तो नीचे कूद
पड़िए, क्योंकि शास्त्र का लेख है,

"वह आपके लिए स्वर्ग-दूतों को आज्ञा देंगे"

और

"वे आपको अपने हाथों पर उठा लेंगे,
कि कहीं ऐसा न हो कि आपके चरणों को पत्थर से ठेस लगे।"'

७ यीशु ने उससे कहा, 'यह भी लेख है,

"प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर।"'

८ फिर इबलीस उनको एक अत्यन्त ऊंचे पर्वत पर ले गया, और
संसार के समस्त राज्य और उनका वैभव दिखाकर ९ उनसे बोला,
'यदि आप पृथ्वी पर गिरकर मेरी वंदना करें तो मैं यह सब कुछ
आपको दे दूंगा।' १० यीशु ने उससे कहा, 'दूर हो शैतान; क्योंकि
शास्त्र का लेख है,

"प्रभु अपने परमेश्वर की वंदना कर,
और केवल उन्हीं की सेवा अर्पित कर।"'

११ इस पर इबलीस उन्हें छोड़ गया, और स्वर्गदूत आकर उनकी
सेवा करने लगे।

कफरनहूम में यीशु का निवास

१२ जब यीशु ने सुना कि यूहन्ना बंदी कर लिए गए तो वह
गलील को चले गए, १३ और नासरत को छोड़कर, जबूलून और
नपताली की सीमा में, सागर के किनारे स्थित कफरनहूम में रहने
लगे १४ कि यशायाह नबी कथित यह बचन पूरा हो,

१५ 'जबूलून देश, नपताली देश,
सागर के पथ पर, यरदन पार,
अन्य जातियों का गलील।

16 The people which sat in darkness
Saw great light ;
And to them which sat in the region and shadow
of death
Light is sprung up.

HE BEGINS TO PREACH

17 From that time Jesus began to preach, and to say,
Repent : for the kingdom of heaven is at hand.

HE CALLS HIS FIRST DISCIPLES

18 And Jesus, walking by the sea of Galilee, saw
two brethren, Simon called Peter, and Andrew his
brother, casting a net into the sea : for they were fishers.
19 And he saith unto them, Follow me, and I will
make you fishers of men. 20 And they straightway left
their nets, and followed him. 21 And going on from
thence, he saw other two brethren, James the son of
Zebedee, and John his brother, in a ship with Zebedee
their father, mending their nets ; and he called them.
22 And they immediately left the ship and their father,
and followed him.

HE TOURS AND WORKS IN GALILEE

23 And Jesus went about all Galilee, teaching in
their synagogues, and preaching the gospel of the king-
dom, and healing all manner of sickness and all manner
of disease among the people. 24 And his fame went
throughout all Syria : and they brought unto him all
sick people that were taken with divers diseases and
torments, and those which were possessed with devils
and those which were lunatick, and those that had the
palsy ; and he healed them. 25 And there followed
him great multitudes of people from Galilee, and from
Decapolis, and from Jerusalem, and from Judæa, and
from beyond Jordan.

१६ जो जाति अंधकार में बठी थी,
उसने बड़ी ज्योति देखी है।
जो मृत्यु की छाया एवं प्रदेश में बैठे थे
उन पर ज्योति उदित हुई है।'

प्रचार का आरम्भ

१७ तब यीशु ने प्रचार आरम्भ किया। उनका कथन था, 'हृदय-
परिवर्तन करो क्योंकि स्वर्ग-राज्य निकट आ पहुंचा है।'

प्रथम शिष्यों का बुलाया जाना

१८ जब वह गलील-सागर के तट पर विचरण कर रहे थे तो
उन्होंने दो भाइयों को, अर्थात् शमौन उपनाम पतरस और उनके भाई
अंद्रियास को देखा। वे सागर में जाल डाल रहे थे क्योंकि वे मछुए थे।
१९ वह उनसे बोले, 'आओ, मेरे पीछे चलो, मैं तुम्हें मनुष्यों के मछुए
बनाऊंगा।' २० वे तुरंत जालों का परित्याग कर उनके अनुयायी
हो गए। २१ वहां से आगे बढ़ने पर उन्हें अन्य दो भाई दिखाई
दिए—जबदी के पुत्र याकूब और उनके भाई यूहन्ना। वे अपने
पिता जबदी के साथ नौका में जाल सुधार रहे थे। २२ यीशु ने
उन्हें बुलाया और वे तुरंत नौका और अपने पिता को छोड़कर उनके
अनुयायी हो गए।

गलील में प्रचार के लिए पर्यटन

२३ यीशु समस्त गलील में भ्रमण कर उनके सभागृहों में उपदेश देते,
राज्य के सुसमाचार का प्रचार करते, और सब रोगों और दुर्बलताओं से
जनता को स्वस्थ करते रहे। २४ इस प्रकार उनका यश समस्त सूरिया में
फैल गया। लोग विविध रोगों और क्लेशों से दुखित, भूतों से ग्रसित, तथा
पक्षाघात से पीड़ित मनुष्यों को यीशु के पास लाए और उन्होंने उन रोगियों को
स्वस्थ कर दिया। २५ गलील, दशनगर, यरूशलेम यहूदिया और यरदन के पार
से विशाल जनसमूह उनके पीछे हो लिया।

THE SERMON ON THE MOUNT

5 And seeing the multitudes, he went up into a
mountain : and when he was set, his disciples came
unto him : 2 and he opened his mouth, and taught
them, saying,

THE BEATITUDES

3 Blessed are the poor in spirit : for theirs is the kingdom of heaven.

4 Blessed are they that mourn : for they shall be comforted.

5 Blessed are the meek : for they shall inherit the earth.

6 Blessed are they which do hunger and thirst after righteousness : for they shall be filled.

7 Blessed are the merciful : for they shall obtain mercy.

8 Blessed are the pure in heart : for they shall see God.

9 Blessed are the peacemakers : for they shall be called the children of God.

10 Blessed are they which are persecuted for righteousness' sake : for theirs is the kingdom of heaven.

11 Blessed are ye, when men shall revile you, and
persecute you, and shall say all manner of evil
against you falsely, for my sake. 12 Rejoice,
and be exceeding glad : for great is your reward
in heaven : for so persecuted they the prophets
which were before you.

LESSONS FROM SALT AND FROM A LAMP

13 Ye are the salt of the earth : but if the salt have
lost his savour, wherewith shall it be salted ? it is
thenceforth good for nothing, but to be cast out, and
to be trodden under foot of men. 14 Ye are the light
of the world. A city that is set on an hill cannot be
hid. 15 Neither do men light a candle, and put it
under a bushel, but on a candlestick ; and it giveth light
unto all that are in the house. 16 Let your light so

५

पर्वतीय उपदेश

१ जनसमूह को देखकर यीशु पर्वत पर चढ़ गए। जब वह बैठ गए तो
शिष्य उनके समीप आए। २ यीशु इन शब्दों में उन्हें उपदेश देने लगे।

धन्य वचन

३ 'धन्य हैं वे जो दीनात्मा हैं, क्योंकि स्वर्ग-राज्य उनका है।
४ धन्य हैं वे जो शोक करते हैं, क्योंकि उन्हें सांत्वना प्राप्त होगी।
५ धन्य हैं वे जो विनम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।
६ धन्य हैं वे जो धार्मिकता के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त होंगे।
७ धन्य हैं वे जो दयावान् हैं, क्योंकि उन पर दया होगी।
८ धन्य हैं वे जिनके अंतःकरण निर्मल हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।
९ धन्य हैं वे जो शांति-स्थापक हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।
१० धन्य हैं वे जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग-राज्य
उनका है।

११ धन्य हो तुम जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हें बुरा भला कहें, तुमको सताएं
और भूठ बोलकर तुम्हारे विरुद्ध सब प्रकार की बुरी बातें कहें। १२ प्रफुल्लित
हो और आनंद मनाओ क्योंकि स्वर्ग में तुम्हारे लिए बड़ा फल है। इसी
प्रकार तुमसे पूर्व नबियों को उन्होंने सताया था।

लवण और दीपक से शिक्षा

१३ 'तुम पृथ्वी के नमक हो। यदि नमक अपना स्वाद खो बैठे तो वह
किस वस्तु से सलोना किया जाएगा। वह इसके अतिरिक्त किसी काम का
नहीं कि बाहर फेंक दिया जाए और मनुष्यों के पैरों तले रौंदा जाए।

१४ 'तुम संसार की ज्योति हो। पर्वत पर बसा नगर छिप नहीं सकता।
१५ दीपक को जलाकर आढ़क के नीचे नहीं वरन् दीवट पर रखते हैं, और वह
घर में सबको प्रकाश पहुंचाता है। १६ तुम्हारी ज्योति मनुष्यों के संमुख इस

shine before men; that they may see your good works,
and glorify your Father which is in heaven.

THE OLD LAW AND THE LAW OF JESUS

17 Think not that I am come to destroy the law,
or the prophets : I am not come to destroy, but to fulfil.
18 For verily I say unto you, Till heaven and earth
pass, one jot or one tittle shall in no wise pass from
the law, till all be fulfilled. 19 Whosoever therefore
shall break one of these least commandments, and shall
teach men so, he shall be called the least in the kingdom
of heaven : but whosoever shall do and teach them, the
same shall be called great in the kingdom of heaven.
20 For I say unto you, That except your righteousness
shall exceed the righteousness of the scribes and Pharisees,
ye shall in no case enter into the kingdom of
heaven.

ANGER AND MURDER

21 Ye have heard that it was said by them of old time,
Thou shalt not kill ; and whosoever shall kill shall be
in danger of the judgment : 22 but I say unto you,
That whosoever is angry with his brother without a
cause shall be in danger of the judgment : and whosoever
shall say to his brother, Raca, shall be in danger
of the council : but whosoever shall say, Thou fool,
shall be in danger of hell fire. 23 Therefore if thou
bring thy gift to the altar, and there rememberest that
thy brother hath ought against thee ; 24 leave there
thy gift before the altar, and go thy way ; first be reconciled
to thy brother, and then come and offer thy
gift. 25 Agree with thine adversary quickly, whiles
thou art in the way with him ; lest at any time the
adversary deliver thee to the judge, and the judge
deliver thee to the officer, and thou be cast into prison.
26 Verily I say unto thee, Thou shalt by no means
come out thence, till thou hast paid the uttermost
farthing.

IMPURITY

27 Ye have heard that it was said by them of old

प्रकार चमके कि वे तुम्हारे सत्कार्यों को देखकर, तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में
हैं, स्तुति करें।

पुराना नियम और नया नियम

१७ 'यह न समझो कि मैं व्यवस्था और नबियों के लेखों को लोप करने
आया हूं। मैं लोप करने नहीं वरन् पूर्ण करने आया हूं। १८ मैं तुमसे सच
कहता हूं कि जब तक स्वर्ग और पृथ्वी न टल जाएं, व्यवस्था की एक मात्रा या
एक बिंदु भी बिना पूरा हुए न टलेगा। १९ यदि कोई इन छोटी सी छोटी
आज्ञाओं में से एक का भी उल्लंघन करे, और दूसरे मनुष्यों को भी यही
सिखाए, तो वह स्वर्ग-राज्य में सब से छोटा कहलाएगा। परंतु जो कोई
उनका पालन करे और उनको सिखाए, वह स्वर्ग-राज्य में बड़ा कहलाएगा।
२० मैं तुमसे कहता हूं कि यदि तुम्हारी धार्मिकता शास्त्रियों और फरीसियों से
अधिक न हो तो तुम स्वर्ग-राज्य में प्रवेश नहीं करने पाओगे।

क्रोध और हत्या

२१ 'तुमने सुना है कि प्राचीनों से कहा गया था, "हत्या न करना; जो
कोई हत्या करेगा वह न्यायालय में दंडनीय होगा।" २२ किन्तु मैं तुमसे
कहता हूं कि जो कोई अपने भाई पर क्रोध करेगा, वह न्यायालय में दंडनीय
होगा, जो अपने भाई को अपशब्द कहेगा, वह परिषद् में दंडनीय होगा, और जो
कोई कहे, "अरे मूर्ख," वह अग्निमय-नरक के योग्य होगा। २३ अस्तु,
यदि तुम अपनी भेंट वेदी पर अर्पण कर रहे हो, और वहां तुम्हें स्मरण हो
कि मेरा भाई मुझसे किसी कारण अप्रसन्न है, २४ तो अपनी भेंट वेदी के
संमुख छोड़ दो, पहिले जाकर अपने भाई से मेल करो, और तब जाकर भेंट
अर्पण करो। २५ जब कि तुम अपने वादी के साथ मार्ग में ही हो, उससे
शीघ्र समझौता कर लो। ऐसा न हो कि वादी तुम्हें न्यायाधीश को सौंप दे
और न्यायाधीश सिपाही को, और तुम बंदीगृह में डाल दिए जाओ।
२६ मैं तुमसे सच कहता हूं कि जब तक पैसा-पैसा न चुका दो, वहां से
छूटने न पाओगे।

दुराचार

२७ 'तुमने सुना है कि कहा गया था "व्यभिचार न करना।"

time, Thou shalt not commit adultery : 28 but I say
unto you, That whosoever looketh on a woman to lust
after her hath committed adultery with her already in
his heart. 29 And if thy right eye offend thee, pluck
it out, and cast it from thee : for it is profitable for
thee that one of thy members should perish, and not
that thy whole body should be cast into hell. 30 And
if thy right hand offend thee, cut it off, and cast it
from thee : for it is profitable for thee that one of thy
members should perish, and not that thy whole body
should be cast into hell.

31 It hath been said, Whosoever shall put away
his wife, let him give her a writing of divorcement :
32 but I say unto you, That whosoever shall put away
his wife, saving for the cause of fornication, causeth
her to commit adultery : and whosoever shall marry
her that is divorced committeth adultery.

OATHS AND TRUTHFULNESS

33 Again, ye have heard that it hath been said by
them of old time, Thou shalt not forswear thyself, but
shalt perform unto the Lord thine oaths : 34 but I say
unto you, Swear not at all ; neither by heaven ; for it
is God's throne : 35 nor by the earth ; for it is his
footstool : neither by Jerusalem ; for it is the city of
the great King. 36 Neither shalt thou swear by thy
head, because thou canst not make one hair white or
black. 37 But let your communication be, Yea, yea ;
Nay, nay : for whatsoever is more than these cometh
of evil.

REVENGE

38 Ye have heard that it hath been said, An eye
for an eye, and a tooth for a tooth : 39 but I say unto
you, That ye resist not evil : but whosoever shall smite
thee on thy right cheek, turn to him the other also.
40 And if any man will sue thee at the law, and take
away thy coat, let him have thy cloke also. 41 And
whosoever shall compel thee to go a mile, go with him

२८ किंतु मैं तुमसे कहता हूं कि जो कोई किसी स्त्री पर बुरी अभिलाषा से आंख
लगाए, वह मन में उसके साथ व्यभिचार कर चुका। २९ यदि तुम्हारी
दाहिनी आंख तुम्हारे पतन का कारण है तो उसे निकाल कर फेंक दो।
३० यदि तुम्हारा दाहिना हाथ तुम्हारे पतन का कारण है तो उसे काटकर फेंक
दो। तुम्हारा कल्याण इसी में है कि भले ही तुम्हारा एक अंग नष्ट हो पर
समस्त शरीर नरक में न जाए।

३१ 'कहा गया था, "जो अपनी पत्नी का परित्याग करे वह उसे त्याग-पत्र
लिख दे"। ३२ किंतु मैं तुमसे कहता हूं कि व्यभिचार को छोड़कर यदि
किसी अन्य कारण से कोई अपनी पत्नी का त्याग करे तो वह उसे व्यभिचार के
लिए बाध्य करता है, और जो परित्यक्त स्त्री से विवाह करे, वह भी व्यभिचार
करता है।

शपथ और सत्यता

३३ 'फिर तुमने सुना है कि प्राचीनों से कहा गया था, "झूठी शपथ न
लेना, परंतु प्रभु के लिए अपनी शपथों को पूर्ण करना"। ३४ किंतु मैं तुमसे
कहता हूं कि शपथ कभी न लेना—न स्वर्ग की क्योंकि वह परमेश्वर का
सिंहासन है, ३५ न पृथ्वी की क्योंकि वह उनके चरणों की चौकी है, न यरू-
शलेम की क्योंकि यह महान् राजा का नगर है, ३६ और न अपने सिर की
क्योंकि तुम अपने एक बाल को भी सफेद या काला नहीं कर सकते।
३७ तुम्हारी "हां" का अर्थ हो "हां" और "नहीं" का अर्थ हो "नहीं। जो
इससे अधिक होता है, वह बुराई से है।

प्रतिकार

३८ 'तुमने सुना है कि कहा गया था, "आंख के बदले आंख और दांत के
बदले दांत।" ३९ किंतु मैं तुमसे कहता हूं कि दुष्ट का विरोध मत करो वरन्
जो तुम्हारे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे उसके आगे दूसरा भी फेर दो, ४० ज़ो
तुम पर नालिश करके तुम्हारा कुरता लेना चाहे, उसे अंगरखा भी ले लेने दो,
४१ और यदि कोई तुम्हें बेगार में एक मील ले जाए, तो उसके साथ दो मील

twain. 42 Give to him that asketh thee, and from him
that would borrow of thee turn not thou away.

LOVE AND THE PERFECT CHARACTER

43 Ye have heard that it hath been said, Thou shalt
love thy neighbour, and hate thine enemy. 44 But I say
unto you, Love your enemies, bless them that curse you,
do good to them that hate you, and pray for them
which despitefully use you, and persecute you ; 45 that
ye may be the children of your Father which is in
heaven : for he maketh his sun to rise on the evil and
on the good, and sendeth rain on the just and on the
unjust. 46 For if ye love them which love you, what
reward have ye ? do not even the publicans the same ?
47 And if ye salute your brethren only, what do ye
more than others ? do not even the publicans so ?
48 Be ye therefore perfect, even as your Father which is
in heaven is perfect.

SECRET CHARITY

6 Take heed that ye do not your alms before men,
to be seen of them : otherwise ye have no reward of
your Father which is in heaven.

2 Therefore when thou doest thine alms, do not
sound a trumpet before thee, as the hypocrites do in
the synagogues and in the streets, that they may have
glory of men. Verily I say unto you, They have their
reward. 3 But when thou doest alms, let not thy left
hand know what thy right hand doeth : 4 that thine alms
may be in secret : and thy Father which seeth in secret
himself shall reward thee openly.

SECRET PRAYER

5 And when thou prayest, thou shalt not be as the
hypocrites are : for they love to pray standing in the
synagogues and in the corners of the streets, that they
may be seen of men. Verily I say unto you, They
have their reward. 6 But thou, when thou prayest, enter
into thy closet, and when thou hast shut thy door,

चले जाओ। ४२ जो तुमसे मांगे उसे दो, और जो तुमसे उधार लेना चाहे
उससे मुंह न मोड़ो।

प्रेम और पूर्णता

४३ 'तुमने सुना है कि कहा गया था, "अपने पड़ोसी से प्रेम करना और
अपने शत्रु से द्वेष रखना।" ४४ किंतु मैं तुमसे कहता हूं कि अपने शत्रुओं
से प्रेम करो और अपने सतानेवालों के लिए प्रार्थना करो, ४५ जिससे तुम
अपने पिता की जो स्वर्ग में हैं, संतान बनो; क्योंकि वह दुर्जन और सज्जन दोनों
पर अपना सूर्य उदय करते हैं, तथा धार्मिक और अधार्मिक दोनों पर बर्षा करते
हैं। ४६ यदि तुम केवल उन्हीं से प्रेम करो जो तुमसे प्रेम करते हैं तो तुम्हें
क्या फल मिलेगा? क्या कर लेनेवाले यह नहीं करते? ४७ और यदि तुम
केवल अपने भाइयों को ही नमस्कार करते हो तो कौन सा बड़ा काम करते
हो! क्या अन्य जातियां ऐसा नहीं करतीं? ४८ अस्तु, तुम पूर्ण बनो जैसे
तुम्हारे स्वर्गिक पिता पूर्ण हैं।

६

गुप्तदान

१ 'सावधान! मनुष्यों के सामने उन्हें दिखाने के लिए अपने धर्म-कार्य
मत करो, नहीं तो अपने पिता से, जो स्वर्ग में हैं, कुछ फल न पाओगे।

२ 'जब तुम दान दो तो अपने आगे तुरही न बजवाओ, जैसे पाखंडी सभा-
गृहों और गलियों में करते हैं कि लोग उनकी प्रशंसा करें। मैं तुमसे सच
कहता हूं, उन्हें अपना फल मिल रहा है। ३ जब तुम दान दो तो तुम्हारा
बायां हाथ न जाने कि दाहिना हाथ क्या कर रहा है, ४ जिससे तुम्हारा
दान गुप्त हो; और तुम्हारे पिता, जो गुप्त रूप से देखते हैं, तुम्हें पुरस्कृत करेंगे।

गुप्त प्रार्थना

५ 'जब तुम प्रार्थना करो तो पाखंडियों के सदृश मत हो, क्योंकि उन्हें
सभागृहों और चौराहों पर खड़े होकर प्रार्थना करना प्रिय लगता है कि लोग
उन्हें देखें। मैं तुमसे सच कहता हूं कि उन्हें अपना फल मिल रहा है।
६ जब तुम प्रार्थना करो तो अपनी कोठरी में जाओ, द्वार बंद करो और अपने
पिता से जो गुप्त हैं प्रार्थना करो, और तुम्हारे पिता, जो गुप्त रूप से देखते हैं,

pray to thy Father which is in secret ; and thy Father
which seeth in secret shall reward thee openly. 7 But
when ye pray, use not vain repetitions, as the heathen
do : for they think that they shall be heard for their
much speaking. 8 Be not ye therefore like unto them :
for your Father knoweth what things ye have need of,
before ye ask him.

THE LORD'S PRAYER

9 After this manner therefore pray ye :
Our Father which art in heaven,
Hallowed be thy name.
10 Thy kingdom come.
Thy will be done in earth, as it is in heaven.
11 Give us this day our daily bread.
12 And forgive us our debts, as we forgive our debtors.
13 And lead us not into temptation, butdeliver us
from evil :
For thine is the kingdom, and the power, and
the glory, for ever. Amen.

14 For if ye forgive men their trespasses, your
heavenly Father will also forgive you : 15 but if ye
forgive not men their trespasses, neither will your Father
forgive your trespasses.

FASTING

16 Moreover when ye fast, be not, as the hypocrites,
of a sad countenance : for they disfigure their faces,
that they may appear unto men to fast. Verily I say
unto you, They have their reward. 17 But thou, when
thou fastest, anoint thine head, and wash thy face ;
18 that thou appear not unto men to fast, but unto
thy Father which is in secret : and thy Father, which
seeth in secret, shall reward thee openly.

TRUE WEALTH

19 Lay not up for yourselves treasures upon earth,
where moth and rust doth corrupt, and where thieves
break through and steal : 20 but lay up for yourselves

तुम्हें पुरस्कृत करेंगे। ७ प्रार्थना करते समय अन्यजातियों के सदृश बक-बक
मत करो, क्योंकि उनका विचार है कि बहुत बोलने से उनकी सुनी जाएगी।
८ उनके सदृश न बनो क्योंकि तुम्हारे पिता तुम्हारे मांगने से पूर्व ही जानते
हैं कि तुम्हें किन वस्तुओं की आवश्यकता है। ९ अस्तु, इस प्रकार प्रार्थना करो,

प्रभु की प्रार्थना

"हे हमारे पिता, आप जो स्वर्ग में हैं,
आपका नाम पवित्र माना जाए,
१० आपका राज्य आए,
आपकी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूर्ण होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो।
११ हमारे दिन भर की रोटी आज हमें दीजिए,
१२ जिस प्रकार हमने अपने ऋणियों को क्षमा किया है, वैसे ही आप
हमारे ऋणों को क्षमा कीजिए,
१३ हमें परीक्षा में न डालिए, वरन् बुराई से बचाइए।
* क्योंकि राज्य, पराक्रम और महिमा सर्वदा आपके हैं, आमेन।"

१४ क्योंकि यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा करोगे तो तुम्हारे स्वर्गिक
पिता तुम्हें क्षमा करेंगे, १५ परन्तु यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा नहीं
करोगे, तो तुम्हारे पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेंगे।

उपवास

१६ 'जब तुम उपवास करो तो पाखंडियों के सदृश उदास-मुख न रहो,
क्योंकि वे अपना मुख म्लान किए रहते हैं कि मनुष्यों को उपवासी दिखाई
दें। मैं तुम से सच कहता हूं कि उन्हें अपना फल मिल रहा है। १७ परंतु
जब तुम उपवास कर रहे हो तो अपने सिर पर तेल मलो और मुंह धो डालो,
१८ जिससे मनुष्यों को नहीं वरन् अपने पिता को जो गुप्त हैं, उपवासी दीख
पड़ो; और तुम्हारे पिता जो गुप्त रूप से देखते हैं, तुम्हें पुरस्कृत करेंगे।

सच्चा धन

१९ 'पृथ्वी पर अपने लिए धन संचय मत करो जहां कीड़े और काई
बिगाड़ते हैं, तथा चोर सेंध लगाते और चुरा लेते हैं, २० वरन् स्वर्ग में अपने
लिए धन संचय करो, जहां न तो कीड़े और काई बिगाड़ते हैं, और न चोर

* कुछ प्रतियों में यह पंक्ति नहीं पाई जाती।

treasures in heaven, where neither moth nor rust doth
corrupt, and where thieves do not break through nor
steal : 21 for where your treasure is, there will your
heart be also.

LIGHT AND DARKNESS

22 The light of the body is the eye : if therefore
thine eye be single, thy whole body shall be full of
light. 23 But if thine eye be evil, thy whole body
shall be full of darkness. If therefore the light that
is in thee be darkness, how great is that darkness !
24 No man can serve two masters : for either he
will hate the one, and love the other ; or else he will
hold to the one, and despise the other. Ye cannot
serve God and mammon.

ANXIETY ; TRUST IN GOD

25 Therefore I say unto you, Take no thought for
your life, what ye shall eat, or what ye shall drink ;
nor yet for your body, what ye shall put on. Is not
the life more than meat, and the body than raiment ?
26 Behold the fowls of the air : for they sow not,
neither do they reap, nor gather into barns ; yet your
heavenly Father feedeth them. Are ye not much better
than they ? 27 Which of you by taking thought can
add one cubit unto his stature ? 28 And why take ye
thought for raiment ? Consider the lilies of the field,
how they grow ; they toil not, neither do they spin :
29 and yet I say unto you, That even Solomon in all
his glory was not arrayed like one of these. 30 Where-
fore, if God so clothe the grass of the field, which to
day is, and to morrow is cast into the oven, shall he
not much more clothe you, O ye of little faith ?
31 Therefore take no thought, saying, What shall we
eat ? or, What shall we drink ? or, Wherewithal shall
we be clothed ? 32 (For after all these things do the
Gentiles seek :) for your heavenly Father knoweth
that ye have need of all these things. 33 But seek ye
first the kingdom of God, and his righteousness ; and
all these things shall be added unto you.

सेंध लगाते और चुराते हैं। २१ क्योंकि जहां तुम्हारा धन है, वहीं तुम्हारा मन भी होगा।

प्रकाश और अन्धकार

२२ 'शरीर का दीपक आंख है, यदि तुम्हारी आंख ठीक है तो तुम्हारा समस्त शरीर प्रकाशमय होगा, २३ परन्तु यदि तुम्हारी आंख बुरी है तो तुम्हारा समस्त शरीर अंधकारमय होगा। अस्तु, तुम्हारे भीतर की ज्योति अंधकार हो तो यह अंधकार कितना घोर होगा।

२४ 'कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता ; या तो वह एक के प्रति द्वेष रखेगा और दूसरे से प्रेम करेगा, अथवा एक के प्रति भक्ति रखेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा। तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।

चिंता-उन्मूलन

२५ 'मैं तुमसे कहता हूं कि अपने जीवन के लिए चिंता न करना कि हम क्या खाएंगे और क्या पिएंगे, और न शरीर के लिए कि क्या पहिनेंगे। क्या भोजन की अपेक्षा जीवन और वस्त्र की अपेक्षा शरीर अधिक मूल्यवान् नहीं ?
२६ आकाश के पक्षियों को देखो ; वे न बोते हैं, न काटते, और न कोठार में बटोरते, परंतु तो भी तुम्हारे स्वर्गिक पिता उनका पालन करते हैं। क्या तुम उनसे श्रेष्ठ नहीं हो ? २७ चिंता करके तुम में से कौन अपनी आयु में एक घड़ी भी बढ़ा सकता है ?* २८ और वस्त्र के लिए तुम चिंता क्यों करते हो ? वन पुष्पों से शिक्षा लो कि वे किस प्रकार खिलते हैं ! न तो वे श्रम करते हैं और न कातते हैं, २९ फिर भी, मैं तुमसे कहता हूं कि स्वयं सुलैमान अपने समस्त वैभव में उनमें से किसी के समान विभूषित नहीं थे। ३० अस्तु, यदि परमेश्वर मैदान की घास को, जो आज है और कल अग्नि में झोंक दी जाएगी, इस प्रकार पहिनाते हैं, तो हे अल्पविश्वासियो, तुमको वह क्यों न पहिनाएंगे ? ३१ इसलिए चिंता न करो; यह न कहो कि हम क्या खाएंगे, क्या पिएंगे अथवा क्या पहिनेंगे, ३२ क्योंकि इन सब वस्तुओं की खोज तो अन्यजातियां करती हैं, और तुम्हारे स्वर्गिक पिता जानते हैं कि तुम्हें इन सबकी आवश्यकता है। ३३ पहिले परमेश्वर के राज्य और उनकी धार्मिकता की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।

---

* इस पद का अनुवाद इस प्रकार भी हो सकता है : 'अपने शरीर की लम्बाई एक हाथ और बढ़ा सकता है ?'

34 Take therefore no thought for the morrow : for
the morrow shall take thought for the things of itself.
Sufficient unto the day is the evil thereof.

ON JUDGING OTHERS

7 Judge not, that ye be not judged. 2 For with
what judgment ye judge, ye shall be judged : and with
what measure ye mete, it shall be measured to you again.
3 And why beholdest thou the mote that is in thy
brother's eye, but considerest not the beam that is in
thine own eye ? 4 Or how wilt thou say to thy brother,
Let me pull out the mote out of thine eye ; and behold
a beam is in thine own eye ? 5 Thou hypocrite, first
cast out the beam out of thine own eye ; and then shalt
thou see clearly to cast out the mote out of thy brother's
eye.

6 Give not that which is holy unto the dogs,
neither cast ye your pearls before swine, lest they tram-
ple them under their feet, and turn again and rend you.

ENCOURAGEMENT TO PRAYER

7 Ask, and it shall be given you ; seek, and ye shall
find ; knock, and it shall be opened unto you : 8 for
every one that asketh receiveth ; and he that seeketh
findeth ; and to him that knocketh it shall be opened.
9 Or what man is there of you, whom if his son ask
bread, will he give him a stone ? 10 Or if he ask a fish,
will he give him a serpent ? 11 If ye then, being evil,
know how to give good gifts unto your children, how
much more shall your Father which is in heaven give
good things to them that ask him ?

THE GOLDEN RULE

12 Therefore all things whatsoever ye would that
men should do to you, do ye even so to them : for
this is the law and the prophets.

THE TWO ROADS

13 Enter ye in at the strait gate : for wide is the
gate, and broad is the way, that leadeth to destruction,

३४ 'अस्तु, कल की चिंता न करो, क्योंकि कल अपनी चिंता स्वयं कर
लेगा। आज के लिए आज का ही कष्ट पर्याप्त है।

७

दूसरों पर दोष लगाना

१ 'दोष न लगाओ जिससे तुम पर दोष न लगाया जाए, २ क्योंकि जिस
मान से तुम दोष लगाते हो उसी मान से तुम पर भी दोष लगाया जाएगा
और जिस माप से तुम मापते हो उसी माप से तुम्हारे लिए मापा जाएगा।
३ तुम अपने भाई की आंख का तिनका क्यों देखते हो? अपनी आंख का
लट्ठा तुम्हें नहीं सूझता! ४ तुम अपने भाई से कैसे कह सकते हो कि "लाओ
मैं तुम्हारी आंख से तिनका निकाल दूं।" देखो तो, लट्ठा है तुम्हारी आंख में!
५ हे पाखंडी, पहिले अपनी आंख का लट्ठा निकाल ले, तभी अपने भाई की
आंख का तिनका निकालने के लिए ठीक-ठीक देख सकेगा।
६ 'पवित्र वस्तु कुत्तों को न दो, और न अपने मोती शूकरों के सम्मुख
डालो; ऐसा न हो कि वे उनको पैरों तले रौंदें और पलटकर तुमको चीर डालें।

प्रार्थना के संबंध में प्रतिज्ञा

७ 'मांगो तो तुम्हें दिया जाएगा, ढूंढ़ो तो तुम पाओगे, खटखटाओ तो
तुम्हारे लिए खोला जायगा, ८ क्योंकि जो कोई मांगता है उसे मिलता है,
जो ढूंढ़ता है वह पाता है, और जो खटखटाता है उसके लिए खोला जाएगा।
९ तुम में से ऐसा कौन मनुष्य है कि यदि उसका पुत्र उससे रोटी मांगे—क्या
वह उसे पत्थर देगा? १० अथवा मछली मांगे तो क्या वह सांप देगा?
११ जब तुम बुरे होकर अपने बच्चों को अच्छी-अच्छी वस्तुएं देना जानते हो,
तो तुमसे कहीं अधिक तुम्हारे पिता जो स्वर्ग में हैं, अपने से मांगनेवालों को
अच्छी-अच्छी वस्तुएं क्यों न देंगे।

सुवर्ण नियम

१२ 'जैसा तुम चाहते हो कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें वैसा ही तुम भी
उनके साथ करो, क्योंकि यही व्यवस्था और नबियों कि शिक्षा है।

दो मार्ग

१३ 'संकीर्ण फाटक से प्रवेश करो क्योंकि विशाल और सरल है वह मार्ग,

sayings, the people were astonished at his doctrine.
29 For he taught them as one having authority, and
not as the scribes.

THE HEALING OF A LEPER

8 When he was come down from the mountain,
great multitudes followed him. 2 And, behold, there
came a leper and worshipped him, saying, Lord, if thou
wilt, thou canst make me clean. 3 And Jesus put forth
his hand, and touched him, saying, I will; be thou
clean. And immediately his leprosy was cleansed. 4 And
Jesus saith unto him, See thou tell no man; but go thy
way, shew thyself to the priest, and offer the gift
that Moses commanded, for a testimony unto them.

THE CENTURION'S SERVANT CURED

5 And when Jesus was entered into Capernaum,
there came unto him a centurion, beseeching him, 6 and
saying, Lord, my servant lieth at home sick of the palsy,
grievously tormented. 7 And Jesus saith unto him, I
will come and heal him. 8 The centurion answered and
said, Lord, I am not worthy that thou shouldest come
under my roof: but speak the word only, and my servant
shall be healed. 9 For I am a man under authority,
having soldiers under me: and I say to this man, Go,
and he goeth; and to another, Come, and he cometh;
and to my servant, Do this, and he doeth it. 10 When
Jesus heard it, he marvelled, and said to them that
followed, Verily I say unto you, I have not found so
great faith, no, not in Israel. 11 And I say unto you,
That many shall come from the east and west, and shall
sit down with Abraham, and Isaac, and Jacob, in the
kingdom of heaven. 12 But the children of the kingdom
shall be cast out into outer darkness: there shall be
weeping and gnashing of teeth. 13 And Jesus said unto
the centurion, Go thy way; and as thou hast believed,
so be it done unto thee. And his servant was healed
in the selfsame hour.

पर चकित रहा गया। २९ क्योंकि वह शास्त्रियों के सदृश नहीं, वरन्
अधिकारी के समान उपदेश देते थे।

८

कोढ़ी को स्वस्थ करना

१ जब वह पर्वत से उतरे तो विशाल जनसमूह उनके पीछे हो लिया।
२ एक कोढ़ी उनके पास आया और वंदना करके कहने लगा, 'हे प्रभु, यदि
आप चाहें मुझे शुद्ध कर सकते हैं।' ३ यीशु ने हाथ बढ़ाकर उसे स्पर्श
किया और बोले, 'निश्चय मैं चाहता हूं कि तुम शुद्ध हो जाओ।' और वह
तुरंत कोढ़ से शुद्ध हो गया। ४ यीशु ने उससे कहा, 'देखो, किसी से न कहना;
जाओ, अपने आप को पुरोहित को दिखाओ, और उनके प्रमाण के लिए मूसा
की आज्ञानुसार भेंट अर्पण करो।'

शतपति के सेवक को स्वस्थ करना

५ जब यीशु ने कफरनहूम में प्रवेश किया तो एक शतपति ने आकर
उनसे निवेदन किया, ६ 'मेरा सेवक घर में पक्षाघात से पीड़ित पड़ा है और
घोर कष्ट में है।' ७ उन्होंने उससे कहा, 'मैं आकर उसे स्वस्थ करूंगा।'
८ शतपति ने उत्तर दिया, 'प्रभु, मुझमें इतनी योग्यता नहीं कि आप मेरी छत
के नीचे आएं : एक शब्द कह दीजिए और मेरा सेवक स्वस्थ हो जाएगा।
९ क्योंकि मैं स्वयं शासन के अधीन हूं और सैनिक मेरे अधीन हैं। मैं एक से
कहता हूं, "जा" तो वह जाता है, दूसरे से कहता हूं, "आ" तो वह आता है;
मैं अपने दास से कहता हूं, "यह कर" तो वह करता है।' १० यीशु को
यह सुनकर आश्चर्य हुआ और उन्होंने अपने पीछे चलनेवालों से कहा, 'मैं
तुमसे सच कहता हूं कि मैंने इस्राएल में भी ऐसा विश्वास किसी में नहीं
पाया। ११ मैं कहता हूं, पूर्व और पश्चिम से बहुत लोग आएंगे और अब्र-
हाम, इसहाक और याकूब के साथ स्वर्ग-राज्य में भोजन करने बैठेंगे, १२
परंतु राज्य के पुत्र बाहर अन्धकार में निकाल दिए जाएंगे जहां रोना और
दांत पीसना होगा।' १३ फिर यीशु ने शतपति से कहा, 'जाओ, जैसा
तुमने विश्वास किया है वैसा ही तुम्हारे लिए हो।' और उसी घड़ी उसका
सेवक स्वस्थ हो गया।

SIMON'S WIFE'S MOTHER AND MANY OTHERS HEALED

14 And when Jesus was come into Peter's house,
he saw his wife's mother laid, and sick of a fever.
15 And he touched her hand, and the fever left her:
and she arose, and ministered unto them. 16 When
the even was come, they brought unto him many that
were possessed with devils: and he cast out the spirits
with his word, and healed all that were sick: 17 that
it might be fulfilled which was spoken by Esaias the
prophet, saying, Himself took our infirmities, and bare
our sicknesses.

TESTS FOR WOULD-BE DISCIPLES

18 Now when Jesus saw great multitudes about him,
he gave commandment to depart unto the other side.
19 And a certain scribe came, and said unto him, Master,
I will follow thee whithersoever thou goest. 20 And
Jesus saith unto him, The foxes have holes, and the
birds of the air have nests; but the Son of man hath
not where to lay his head. 21 And another of his
disciples said unto him, Lord, suffer me first to go and
bury my father. 22 But Jesus said unto him, Follow
me; and let the dead bury their dead.

THE STILLING OF THE TEMPEST

23 And when he was entered into a ship, his
disciples followed him. 24 And, behold, there arose a
great tempest in the sea, insomuch that the ship was
covered with the waves: but he was asleep. 25 And
his disciples came to him, saying, Lord, save us: we
perish. 26 And he saith unto them, Why are ye fearful,
O ye of little faith? Then he arose, and rebuked the
winds and the sea; and there was a great calm. 27 But
the men marvelled, saying, What manner of man is this,
that even the winds and the sea obey him!

THE GADARENE DEMONIACS

28 And when he was come to the other side into
the country of the Gergesenes, there met him two

पतरस की सास तथा अन्य लोगों का स्वास्थ्य लाभ

१४ तब यीशु पतरस के घर आए और देखा कि उनकी सास ज्वर में पड़ी
है। १५ उन्होंने उसका हाथ स्पर्श किया। उसका ज्वर उतर गया और
वह उठकर उनका सेवा-सत्कार करने लगी। १६ संध्या के समय लोग बहुत
से भूतग्रसितों को उनके पास लाए। उन्होंने अपने वचन द्वारा उन आत्माओं
को निकाला और सब रोगियों को स्वस्थ कर दिया, १७ कि यशायाह नबी
कथित यह वचन पूरा हो, 'उन्होंने स्वयं हमारी दुर्बलताएं ले लीं और हमारे
रोगों को उठा लिया।'

शिष्य बनने की उत्सुकता

१८ यीशु ने अपने चारों ओर विशाल जनसमूह को देखा तो दूसरे तट
पर जाने का आदेश दिया। १९ तब एक शास्त्री आकर उनसे बोला, 'गुरुजी,
जहां कहीं आप जाएंगे मैं आपका अनुसरण करूंगा।' २० यीशु ने कहा,
'लोमड़ियों के मांदें हैं और आकाश के पक्षियों के घोंसले, परंतु मानव-पुत्र
के लिए सिर रखने को भी कहीं स्थान नहीं।' २१ एक अन्य शिष्य उनसे
कहने लगा, 'प्रभु मुझे अनुमति दीजिए कि पहिले अपने पिता को गाढ़
आऊं।' २२ पर यीशु ने उससे कहा, 'तुम मेरा अनुसरण करो और मुरदों
को अपने मुरदे गाढ़ने दो।'

आंधी को शांत करना

२३ वह नौका पर चढ़े तो शिष्यों ने उनका अनुसरण किया। २४ एकाएक
सागर में प्रचंड आंधी उठी यहां तक कि नौका लहरों से ढक गई। परंतु
वह सो रहे थे। २५ शिष्यों ने आकर उन्हें जगाया और कहा, 'प्रभु, हमारी
रक्षा कीजिए, हम तो मरे।' २६ यीशु ने कहा, 'हे अल्पविश्वासियो, तुम
इतने भयातुर क्यों हो?' तब उन्होंने उठकर आंधी और समुद्र को रोका,
और बड़ी स्तब्धता छा गई। २७ वे लोग चकित हो कहने लगे, 'यह कैसे
मनुष्य हैं, कि आंधी और समुद्र भी इनकी आज्ञा मानते हैं?'

गिरासेन के भूतग्रसित को स्वस्थ करना

२८ जब वह दूसरे तट पर गिरासेनियों के प्रदेश में आए तो दो भूतग्रसित
मनुष्य कबरों से निकलकर उन्हें मिले। वे इतने भयंकर थे कि कोई उस

possessed with devils, coming out of the tombs, exceeding
fierce, so that no man might pass by that way. 29 And,
behold, they cried out, saying, What have we to do
with thee, Jesus, thou Son of God ? art thou come
hither to torment us before the time ? 30 And there
was a good way off from them an herd of many swine
feeding. 31 So the devils besought him, saying, If thou
cast us out, suffer us to go away into the herd of
swine. 32 And he said unto them, Go. And when they
were come out, they went into the herd of swine : and,
behold, the whole herd of swine ran violently down a
steep place into the sea, and perished in the waters.

33 And they that kept them fled, and went their
ways into the city, and told every thing, and what was
befallen to the possessed of the devils. 34 And, behold,
the whole city came out to meet Jesus : and when they
saw him, they besought him that he would depart out
of their coasts.

THE HEALING OF A PARALYTIC

9 And he entered into a ship, and passed over, and
came into his own city.

2 And, behold, they brought to him a man sick of
the palsy, lying on a bed : and Jesus seeing their faith
said unto the sick of the palsy ; Son, be of good cheer ;
thy sins be forgiven thee. 3 And, behold, certain of
the scribes said within themselves, This man blasp-
hemeth, 4 And Jesus knowing their thoughts said,
Wherefore think ye evil in your hearts ? 5 For whether
is easier, to say, Thy sins be forgiven thee ; or to say,
Arise, and walk ? 6 But that ye may know that the
Son of man hath power on earth to forgive sins, (then
saith he to the sick of the palsy,) Arise, take up thy
bed, and go unto thine house. 7 And he arose, and
departed to his house. 8 But when the multitudes saw
it, they marvelled, and glorified God, which had given
such power unto men.

THE CALL OF MATTHEW

9 And as Jesus passed forth from thence, he saw a

मार्ग से निकल नहीं सकता था। २९ वे चिल्ला उठे, 'हे परमेश्वर-पुत्र, हमारा
आपसे क्या संबंध ? क्या आप हमें समय से पहले ही सताने आए हैं ?'
३० वहां से कुछ दूर पर बहुत से शूकरों का समूह चर रहा था। ३१ भूतों ने
निवेदन किया, 'यदि आप हमें निकाल ही रहे हैं तो शूकरों के समूह में भेज
दीजिए।' ३२ यीशु ने उनसे कहा, 'जाओ।' वे निकलकर शूकरों के
समूह में प्रविष्ट हो गए और वह सारा समूह कारागार से सागर की ओर
झपटा और जल में डूब मरा।

३३ तब शूकरों के चरवाहे भागे और सब समाचार—भूतग्रसितों के
विषय में भी—नगर में जा सुनाया। ३४ इस पर सारा नगर यीशु से मिलने
निकल आया और उन्हें देखकर निवेदन करने लगा कि हमारी सीमा से चले
जाइए।

९

अर्धांगी को स्वस्थ करना

१ यीशु नौका पर चढ़कर पार हुए और अपने नगर में आए।

२ लोग शय्या पर पड़े हुए एक अर्धांगी को उनके पास लाए। यीशु ने
उनके विश्वास को देखा तो अर्धांगी से कहा, 'पुत्र धैर्य रख, तेरे पाप क्षमा
हुए।' ३ इस पर कुछ शास्त्री अपने मन में कहने लगे, 'यह तो परमेश्वर की
निन्दा करता है। ४ यीशु ने उनके विचार जानकर कहा, 'तुम अपने मन में
बुरे विचार क्यों ला रहे हो ? ५ सरल क्या है यह कहना कि तेरे पाप क्षमा
हुए, अथवा यह कहना कि उठ और चल फिर ? ६ पर इसलिए कि तुम जान
लो कि मानव-पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है'—वह तब
अर्धांगी से बोले,—'उठ अपनी शय्या उठा, और घर को चला जा।' ७ वह
उठा और अपने घर चला गया। लोग देखकर डर गए और परमेश्वर की
स्तुति करने लगे जिन्होंने मनुष्यों को ऐसा अधिकार दिया है।

मत्ती का बुलाया जाना

९ वहां से आगे बढ़ने पर यीशु ने मत्ती नामक मनुष्य को चुंगी की चौकी

man, named Matthew, sitting at the receipt of custom :
and he saith unto him, Follow me. And he arose, and
followed him.

10 And it came to pass, as Jesus sat at meat in the
house, behold, many publicans and sinners came and
sat down with him and his disciples. 11 And when
the Pharisees saw it, they said unto his disciples, Why
eateth your Master with publicans and sinners ? 12 But
when Jesus heard that, he said unto them, They that
be whole need not a physician, but they that are sick.
13 But go ye and learn what that meaneth, I will have
mercy, and not sacrifice : for I am not come to call the
righteous, but sinners to repentance.

FASTING

14 Then came to him the disciples of John, saying,
Why do we and the Pharises fast oft, but thy disciples
fast not ? 15 And Jesus said unto them, Can the
children of the bridechamber mourn, as long as the
bridegroom is with them ? but the days will come,
when the bridegroom shall be taken from them, and
then shall they fast. 16 No man putteth a piece of new
cloth unto an old garment, for that which is put in to
fill it up taketh from the garment, and the rent is made
worse. 17 Neither do men put new wine into old
bottles : else the bottles break, and the wine runneth
out, and the bottles perish : but they put new wine into
new bottles, and both are preserved.

JAIRUS' DAUGHTER, AND THE WOMAN WITH THE ISSUE OF BLOOD

18 While he spake these things unto them, behold,
there came a certain ruler, and worshipped him, saying,
My daughter is even now dead : but come and lay thy
hand upon her, and she shall live. 19 And Jesus arose
and followed him, and so did his disciples.

20 And, behold, a woman, which was diseased with
an issue of blood twelve years, came behind him, and
touched the hem of his garment : 21 for she said
within herself, If I may but touch his garment, I shall

पर बैठे देखा और उनसे कहा, 'मेरा अनुयायी हो।' वह उठे और उनके
अनुयायी हो गए।

१० जब वह घर में भोजन करने बैठे तो अनेक कर लेनेवाले और पापी
आकर यीशु और उनके शिष्यों के साथ सम्मिलित हुए। ११ यह देखकर
फरीसियों ने उनके शिष्यों से कहा, 'तुम्हारे गुरु कर लेनेवालों और पापियों
के साथ क्यों खाते-पीते हैं?' १२ यीशु उनकी बातं सुनकर बोले, 'स्वस्थ
मनुष्यों को वैद्य की आवश्यकता नहीं, पर रोगियों को होती है। १३ जाकर
सीखो कि इसका क्या अर्थ है, "मैं बलिदान नहीं वरन् दया चाहता हूं।" मैं
धार्मिकों को नहीं, परन्तु पापियों को बुलाने आया हूं।'

उपवास का प्रश्न

१४ तब यूहन्ना के शिष्यों ने उनके पास आकर कहा, 'क्या कारण है कि
हम और फरीसी बहुत उपवास करते हैं, पर आपके शिष्य उपवास नहीं
करते?' १५ यीशु ने उनसे कहा, 'जब तक दूलह साथ है, क्या बराती
शोक मना सकते हैं। पर समय आएगा जब दूलह उनसे ले लिया जाएगा,
तब वे उपवास करेंगे। १६ कोरे कपड़े की थिगली पुराने वस्त्र पर कोई नहीं
लगाता, कारण कि थिगली उस वस्त्र से कुछ और खींच लेगी और वह पहले
से भी अधिक फट जाएगा। १७ इसी प्रकार नवीन मदिरा को पुराने चर्म-
पात्रों में नहीं रखते, नहीं तो चर्मपात्र फट जाते हैं, मदिरा बह जाती है और
चर्मपात्र नष्ट हो जाते हैं। वरन् नई मदिरा को नए चर्मपात्रों में भरते हैं, इस
प्रकार वे दोनों ही सुरक्षित रहते हैं।'

याईर की पुत्री और प्रदर पीड़ित स्त्री को नीरोग करना

१८ वह उन लोगों से यह कह ही रहे थे कि एक अधिकारी आया और
उन्हें वंदना करके बोला, 'मेरी पुत्री की अभी मृत्यु हुई है। फिर भी आप
चल कर अपना हाथ उस पर रखिए, वह जीवित हो जाएगी।' १९ यीशु
उठकर अपने शिष्यों सहित उसके पीछे हो लिए।

२० और देखो, एक स्त्री को बारह वर्ष से रक्त-प्रदर था। २१ उसने
पीछे से आकर उनके वस्त्र के सिरे को स्पर्श किया; वह अपने मन में कह रही

be whole. 22 But Jesus turned him about, and when he saw her, he said, Daughter, be of good comfort; thy faith hath made thee whole. And the woman was made whole from that hour.

23 And when Jesus came into the ruler's house, and saw the minstrels and the people making a noise, 24 he said unto them, Give place : for the maid is not dead, but sleepeth. And they laughed him to scorn. 25 But when the people were put forth, he went in, and took her by the hand, and the maid arose. 26 And the fame hereof went abroad into all that land.

TWO BLIND MEN

27 And when Jesus departed thence, two blind men followed him, crying, and saying, Thou son of David, have mercy on us. 28 And when he was come into the house, the blind men came to him : and Jesus saith unto them, Believe ye that I am able to do this ? They said unto him, Yea, Lord. 29 Then touched he their eyes, saying, According to your faith be it unto you. 30 And their eyes were opened ; and Jesus straitly charged them, saying, See that no man know it. 31 But they, when they were departed, spread abroad his fame in all that country.

A DUMB DEMONIAC

32 As they went out, behold, they brought to him a dumb man possessed with a devil. 33 And when the devil was cast out, the dumb spake : and the multitudes marvelled, saying, It was never so seen in Israel. 34 But the Pharisees said, He casteth out devils through the prince of the devils.

CHRIST'S COMPASSION FOR THE PEOPLE

35 And Jesus went about all the cities and villages, teaching in their synagogues, and preaching the gospel of the kingdom, and healing every sickness and every disease among the people. 36 But when he saw the multitudes, he was moved with compassion on them, because they fainted, and were scattered abroad, as sheep

थी, 'यदि मैं उनके वस्त्र ही स्पर्श कर लूं तो स्वस्थ हो जाऊंगी।' २२ यीशु
ने मुड़कर उसे देखा और बोले, 'पुत्री, धैर्य रख, तेरे विश्वास ने तुझे स्वस्थ
किया है।' वह स्त्री उसी समय स्वस्थ हो गई।

२३ यीशु जब अधिकारी के घर पहुंचे और बांसुरी बजाने वालों तथा
जनसमूह को कोलाहल करते देखा तो बोले, २४ 'हट जाओ, बालिका मरी
नहीं, वरन् सो रही है।' इस पर लोग उनका उपहास करने लगे। २५ जब
भीड़ हटा दी गई तो यीशु भीतर गए। उन्होंने बालिका को हाथ पकड़कर
उठाया, और वह उठ बैठी। २६ यह समाचार उस समस्त देश में फैल
गया।

दो अंधों को दृष्टिदान

२७ जब यीशु वहां से आगे बढ़े तो दो अंधे यह पुकारते हुए उनके पीछे-
पीछे चले, 'दाऊद-पुत्र, हम पर दया कीजिए।' २८ जब वह घर पहुंचे तो
वे अंधे उनके पास आए। यीशु ने उनसे पूछा, 'क्या तुम्हें विश्वास है कि मैं
यह कर सकता हूं?' उन्होंने कहा, 'हां प्रभु।' तब यीशु ने उनकी आंखें स्पर्श
कर कहा, 'तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिए हो'; ३० और उनकी
आंखें खुल गईं। यीशु ने उन्हें चेतावनी दी, 'सावधान, यह बात कोई न
जाने।' ३१ पर उन्होंने जाकर उस समस्त प्रदेश में उनकी ख्याति फैला दी।

गूंगा भूत-ग्रस्त

३२ वे * बाहर निकल ही रहे थे कि लोग एक भूत-ग्रस्त गूंगे को यीशु के
पास लाए। ३३ भूत के निकाले जाने पर वह गूंगा बोलने लगा। इस पर
जनसमूह चकित होकर बोल उठा, 'इस्राएल में ऐसा कभी नहीं देखा था।'
३४ परन्तु फरीसियों ने कहा, 'वह भूतों के अधिपति द्वारा भूतों को
निकालता है।"

जनसमूह पर करुणा

३५ यीशु सब नगरों एवं गांवों में भ्रमण कर उनके सभागृहों में उपदेश
देते, राज्य के सुसमाचार का प्रचार करते और सब रोगों और दुर्बलताओं को
दूर करते रहे। ३६ जनसमूह को देखकर उन्हें दया आई क्योंकि वे लोग

* अर्थात्, 'दोनों अंधे'

having no shepherd. 37 Then saith he unto his disciples,
The harvest truly is plenteous, but the labourers are
few : 38 Pray ye therefore the Lord of the harvest, that
he will send forth labourers into his harvest.

THE TWELVE APOSTLES, AND THEIR MISSION

10 And when he had called unto him his twelve
disciples, he gave them power against unclean
spirits, to cast them out, and to heal all manner of
sickness and all manner of disease. 2 Now the names
of the twelve apostles are these ; The first, Simon, who
is called Peter, and Andrew his brother ; James the son
of Zebedee, and John his brother ; 3 Philip, and
Bartholomew ; Thomas, and Matthew the publican ;
James the son of Alphæus, and Lebbæus, whose surname
was Thaddæus ; 4 Simon the Canaanite, and Judas
Iscariot, who also betrayed him.

5 These twelve Jesus sent forth, and commanded
them, saying, Go not into the way of the Gentiles, and
into any city of the Samaritans enter ye not : 6 but go
rather to the lost sheep of the house of Israel. 7 And as
ye go, preach, saying, The kingdom of heaven is at hand.
8 Heal the sick, cleanse the lepers, raise the dead, cast
out devils : freely ye have received, freely give.
9 Provide neither gold, nor silver, nor brass in your
purses, 10 nor scrip for your journey, neither two coats,
neither shoes, nor yet staves : for the workman is
worthy of his meat. 11 And into whatsoever city or
town ye shall enter, enquire who in it is worthy ; and
there abide till ye go thence. 12 And when ye come
into an house, salute it. 13 And if the house be worthy,
let your peace come upon it : but if it be not worthy, let
your peace return to you. 14 And whosoever shall not
receive you, nor hear your words, when ye depart out of
that house or city, shake off the dust of your feet.
15 Verily I say unto you, It shall be more tolerable for
the land of Sodom and Gomorrha in the day of judg-
ment, than for the city.

दुखी और असहाय थे—उन भेड़ों के समान जिनका कोई मेषपाल न हो।
३७ तब उन्होंने अपने शिष्यों से कहा, 'पके खेत तो बहुत हैं परन्तु श्रमिक
थोड़े, ३८ इसलिए खेत के स्वामी से प्रार्थना करो कि वह अपने खेत काटने
के लिए श्रमिक भेजें।'

१०

प्रेरितों का भेजा जाना

१ तब यीशु ने बारह शिष्यों को बुलाकर उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर
अधिकार दिया कि उनको निकालें और सब रोगों एवं दुर्बलताओं को दूर
करें। २ बारह प्रेरितों के नाम ये हैं—प्रथम, शमौन उपनाम पतरस, उनके
भाई अन्द्रियास, जबदी के पुत्र याकूब, उनके भाई यूहन्ना, ३ फिलिप्पुस,
बरतुल्मय, थोमा, कर लेनेवाले मत्ती, हलफई के पुत्र याकूब, तद्दै, ४ शमौन
कनानी और यहूदा इस्करियोती जिसने यीशु को पकड़वाया।

५ इन बारह को यीशु ने यह आज्ञा देकर भेजा, ६ 'अन्यजातियों में न
जाओ और न सामरी नगरों में प्रवेश करो, वरन् इस्राएल वंश की भटकी भेड़ों
के पास जाओ। ७ यात्रा करते हुए प्रचार करो कि स्वर्ग-राज्य समीप आ
गया है। ८ रोगियों को स्वस्थ करो, मृतकों को जिलाओ, कोढ़ियों को शुद्ध
करो, भूतों को निकालो। तुमने बिना मूल्य पाया है, बिना मूल्य दो। ९ अपनी
थैली में सोना, चांदी और तांबा न लो, १० न मार्ग के लिए झोली, न दो
कुरते न जूते और न लाठी, क्योंकि श्रमिक को अपना भोजन मिलना चाहिए।
११ जिस किसी नगर अथवा गांव में प्रवेश करो तो पूछो कि वहां सुपात्र कौन
है, और बिदा होने तक उसके यहां ठहरो। १२ घर में प्रवेश करते समय उसे
शांति की आशीष दो। १३ यदि घर सुपात्र हो तो अपनी शांति उस पर रहने
दो, और यदि सुपात्र न हो तो अपनी शांति लौट आने दो। १४ यदि कोई
तुम्हारा स्वागत न करे और तुम्हारे उपदेश न सुने तो उस घर अथवा उस
नगर से निकलने पर, अपने पांवों की धूल झाड़ डालो। १५ मैं तुमसे सच
कहता हूं कि न्याय के दिन उस नगर की दशा से सदोम और अमोरा देश की
दशा अधिक सहनीय होगी।

16 Behold, I send you forth as sheep in the midst of
wolves : be ye therefore wise as serpents, and harmless
as doves. 17 But bewere of men : for they will deliver
you up to the councils, and they will scourge you in
their synagogues ; 18 and ye shall be brought before
governors and kings for my sake, for a testimony against
them and the Gentiles. 19 But when they deliver you
up, take no thought how or what ye shall speak : for it
shall be given you in that same hour what ye shall speak.
20 For it is not ye that speak, but the Spirit of your
Father which speaketh in you. 21 And the brother
shall deliver up the brother to death, and the father the
child : and the children shall rise up against their
parents, and cause them to be put to death. 22 And ye
shall be hated of all men for my name's sake : but he
that endureth to the end shall be saved. 23 But when
they persecute you in this city, flee ye into another : for
verily I say unto you, Ye shall not have gone over the
cities of Israel, till the Son of man be come.

24 The disciple is not above his master, not the
servant above his lord. 25 It is enough for the disciple
that he be as his master, and the servant as his
lord. If they have called the master of the house
Beelzebub, how much more shall they call them of his
household ?

26 Fear them not therefore : for there is nothing
covered, that shall not be revealed ; and hid, that shall
not be known. 27 What I tell you in darkness, that
speak ye in light : and what ye hear in the ear, that
preach ye upon the housetops. 28 And fear not them
which kill the body, but are not able to kill the soul :
but rather fear him which is able to destroy both soul
and body in hell. 29 Are not two sparrows sold for
a farthing ? and one of them shall not fall on the
ground without your Father. 30 But the very hairs of
your head are all numbered. 31 Fear ye not therefore
ye are of more value than many sparrows. 32 Whoso-
ever therefore shall confess me before men, him will I
confess also before my Father which is in heaven. 33 But

१६ 'देखो, मैं तुमको भेड़ों के सदृश भेड़ियों के बीच भेज रहा हूं। इस
लिए सर्पों के समान सतर्क और कपोतों के समान सरल बनो ; १७ लोगों से
सावधान रहो क्योंकि वे तुम्हें पंचायतों को सौंप देंगे, और अपने सभागृहों
में तुम्हें कोड़े मारेंगे। १८ मेरे कारण तुम शासकों और राजाओं के समक्ष
उपस्थित किए जाओगे कि तुम उनके लिए और अन्यजातियों के लिए साक्षी
हो। १९ जब वे तुम्हें पकड़वाएं तो चिंता न करना कि हम कैसे और क्या
कहेंगे, क्योंकि जो कुछ तुमको कहना होगा वह उसी क्षण तुम्हें बता दिया
जाएगा ; २० क्योंकि वक्ता तुम नहीं हो, वरन् तुम्हारे पिता का आत्मा तुममें
बोलता है। २१ भाई, भाई को, और पिता, पुत्र को मृत्यु के निमित्त सौंप
देगा, संतान माता-पिता के विरुद्ध उठ खड़ी होगी और उन्हें मरवा डालेगी।
२२ मेरे नाम के कारण सब तुमसे घृणा करेंगे; परंतु जो अंत तक स्थिर रहेगा,
त्राण पाएगा। २३ जब लोग तुम्हें एक नगर में सताएं तो दूसरे नगर को
भाग जाना मैं तुमसे सच कहता हूं, तुम इस्राएल के सब नगरों का भ्रमण
समाप्त नहीं कर सकोगे कि मानव-पुत्र आ जाएगा।

२४ 'शिष्य अपने गुरु से बड़ा नहीं और न दास अपने स्वामी से।
२५ शिष्य का अपने गुरु के सदृश और दास का अपने स्वामी के सदृश होना
ही बहुत है। यदि उन्होंने गृहस्वामी को बालजबूल कहा तो उसके परिवार
को क्या कुछ न कहेंगे।

२६ 'अस्तु, उनसे न डरो, क्योंकि ऐसा कुछ नहीं जो ढका हो और खोला
न जाएगा, जो छिपा हो और जाना न जाएगा। २७ जो मैं तुमसे अंधकार
में कहता हूं उसे तुम प्रकाश में कहो, जो कानोंकान सुनते हो उसका छतों से
प्रचार करो। २८ उनसे मत डरो जो शरीर को मार डालते हैं, पर आत्मा
को नहीं मार सकते, वरन् उससे डरो जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में
नष्ट कर सकता है। २९ क्या एक *पैसे में दो गौरैया नहीं बिकती ? पर
उनमें से एक भी तुम्हारे पिता के जाने बिना पृथ्वी पर नहीं गिरती। ३० और
तुम्हारे तो सिर के बाल भी सब गिने हुए हैं। ३१ इसलिए डरो मत ;
तुम बहुत गौरैयों से श्रेष्ठ हो। ३२ अस्तु, जो मनुष्यों के सम्मुख मुझे मानेगा
उसे मैं भी अपने स्वर्गिक पिता के सम्मुख मानूंगा, ३३ पर जो मनुष्यों के

* मूल में 'असरियस'—दीनार का सोलहवां भाग

whosoever shall deny me before men, him will I also deny before my Father which is in heaven.

34 Think not that I am come to send peace on earth: I came not to send peace, but a sword. 35 For I am come to set a man at variance against his father, and the daughter against her mother, and the daughter in law against her mother in law. 36 And a man's foes shall be they of his own household. 37 He that loveth father or mother more than me is note worthy of me; and he that loveth son or daughter more than me is not worthy of me. 38 And he that taketh not his cross, and followeth after me, is not worthy of me. 39 He that findeth his life shall lose it: and he that loseth his lile for may sake shall find it.

40 He that receiveth you receiveth me, and he that receiveth me receiveth him that sent me. 41 He that receiveth a prophet in the name of a prophet shall receive a prophet's reward; and he that receiveth a righteous man in the name of a righteous man shall receive a righteous man's reward. 42 And whosoever shall give to drink unto one of these little ones a cup of cold water only in the name of a disciple, verily I say unto you, he shall in no wise lose his reward.

11 And it came to pass, when Jesus had made an end of commanding his twelve disciples, he departed thence to teach and to preach in their cities.

JESUS AND THE BAPTIST

2 Now when John had heard in the prison the works of Christ, he sent two of his disciples, 3 and said unto him, Art thou he that should come, or do we look for another? 4 Jesus answered and said unto them, Go and shew John again those things which ye do hear and see: 5 the blind receive their sight, and the lame walk, the lepers are cleansed, and the deaf hear, the dead are raised up, and the poor have the gospel preached to them. 6 And blessed is he, whosoever shall not be offended in me.

सम्मुख मुझे अंगीकार नहीं करेगा उसे मैं भी अपने स्वर्गिक पिता के सम्मुख
अंगीकार नहीं करूंगा।

३४ 'यह न समझो कि मैं शांति कराने आया हूं, मैं शांति करने नहीं
वरन् तलवार चलवाने आया हूं। ३५ मैं आया हूं कि मनुष्य को अपने पिता
के, पुत्री को अपनी माता के और पुत्र-वधू को अपनी सास के विरुद्ध कर दूं।
३६ मनुष्य के शत्रु उसके घर के लोग ही होंगे। ३७ जो माता या पिता को
मुझसे अधिक प्रेम करता है वह मेरे योग्य नहीं, जो पुत्र या पुत्री को मुझसे
अधिक प्रेम करता हैं वह मेरे योग्य नहीं, ३८ और जो अपना क्रूस उठाकर मेरा
अनुसरण नहीं करता वह मेरे योग्य नहीं। ३९ जो अपने प्राण बचाए हुए है
वह उन्हें खोएगा, और जो मेरे कारण अपने प्राण खो चुका है वह उन्हें पाएगा।

४० 'जो तुम्हारा स्वागत करता है, वह मेरा स्वागत करता है और जो मेरा
स्वागत करता है, वह उसका स्वागत करता है जिसने मुझे भेजा है। ४१ जो
नबी को नबी मान कर उसका स्वागत करे, वह नबी का पुरस्कार पायेगा;
और जो धार्मिक को धार्मिक मानकर उसका स्वागत करें, वह धार्मिक का
पुरस्कार पाएगा ४२ जो कोई इन छोटों में से किसी को शिष्य मान कर उसे
केवल कटोरा भर शीतल जल पिलाए, तो मैं तुमसे सच कहता हूं, कि वह
अपना पुरस्कार कदापि न खोएगा।'

११

१ जब यीशु अपने बारह शिष्यों को ये आज्ञाएं दे चुके तो वहां से उनके
नगरों में उपदेश देने और प्रचार करने चले गए।

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का प्रश्न

२ यूहन्ना ने बंदीगृह में ख्रिस्त के कार्यों की कथा सुनी तो अपने *शिष्यों
को भेजकर ३ पूछा, 'क्या आनेवाले आप ही हैं, या हम किसी दूसरे की
प्रतीक्षा करें?' ४ यीशु ने उनको उत्तर दिया, 'जाओ, और जो कुछ तुम
सुनते और देखते हो उसका समाचार यूहन्ना को दो : ५ अंधे पुनः दृष्टि पाते
हैं, लंगड़े चलते हैं, कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं, बहरे सुनते हैं, मृतक जीवित
किए जाते हैं, और दीनों को सुसमाचार सुनाया जाता है। ६ धन्य है वह
जो मेरे विषय भ्रम में नहीं पड़ता।'

*कुछ प्राचीन प्रतियों में 'दो शिष्यों'

7 And as they departed, Jesus began to say unto
the multitude concerning John,

What went ye out unto the wilderness to see?
A reed shaken with the wind?
8 But what went ye out for to see?
A man clothed in soft raiment?
Behold, they that wear soft clothing are in kings' houses.
9 But what went ye out for to see?
A prophet? Yea, I say unto you,
And more than a prophet.
10 For this is he, of whom it is written,
Behold, I send my messenger before thy face,
Which shall prepare thy way before thee.

11 Verily I say unto you, Among them that are
born of women there hath not risen a greater than
John the Baptist: notwithstanding he that is least in
the kingdom of heaven is greater than he. 12 And
from the days of John the Baptist until now the king-
dom of heaven suffereth violence, and the violent take
it by force. 13 For all the prophets and the law pro-
phesied until John. 14 And if ye will receive it, this
is Elias, which was for to come. 15 He that hath ears
to hear, let him hear.

16 But whereunto shall I liken this generation? It
is like unto children sitting in the markets, and calling
unto their fellows, 17 and saying,

We have piped unto you, and ye have not danced;
We mourned unto you, and ye have not lamented.

18 For John came neither eating nor drinking, and
they say, He hath a devil. 19 The Son of man came
eating and drinking, and they say, Behold a man glut-
tonous, and a winebibber, a friend of publicans and
sinners. But wisdom is justified of her children.

WOE TO UNBELIEVING CITIES

20 Then began he to upbraid the cities wherein
most of his mighty works were done, because they
repented not: 21 Woe unto thee, Chorazin! woe unto

७ वे लोग जा रहे थे कि यीशु जनसमूह से कहने लगे,
'तुम निर्जन प्रदेश में क्या देखने निकले थे ?
नरकुल को जो वायु से प्रकंपित होता है ?
८ फिर, क्या देखने निकले थे ?
ऐसे मनुष्य को, जो कोमल वस्त्र धारण करता है ?
कोमल वस्त्र धारण करनेवाले तो राज-भवनों में रहते हैं।
९ तो फिर क्यों निकलते थे ?
नबी को देखने के लिए ? हां, मैं तुमसे कहता हूं,
नबी से भी महान् व्यक्ति को।
१० यही हैं जिनके विषय में शास्त्र का लेख है :
"देखो मैं तुम्हारे आगे अपना दूत भेज रहा हूं,
वह तुम्हारे आगे तुम्हारा मार्ग निर्माण करेगा।"
११ 'मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो स्त्रियों से उत्पन्न हुए हैं, उनमें यूहन्ना
बपतिस्मा देनेवाले से महान् कोई नहीं हुआ, तो भी स्वर्ग-राज्य का छोटे से
छोटा व्यक्ति उनसे अधिक महान् है। १२ यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के दिनों
से अब तक स्वर्ग-राज्य में बलपूर्वक प्रवेश हो रहा है, बल प्रयोग करनेवाले
उस पर अधिकार कर रहे हैं। १३ क्योंकि सब नबी और व्यवस्था यूहन्ना
के समय तक नबूवत करते रहे। १४ और यदि तुम मानना चाहो तो यही हैं
एलिय्याह जो आने को थे। १५ जिसके सुनने के कान हों, वह सुन ले।
१६ 'मैं इस पीढ़ी की तुलना किससे करूं ? यह बाजारों में बैठे हुए
बालकों के समान हैं जो एक दूसरे को पुकार कर कहते हैं,
१७ "हमने तुम्हारे लिए बांसुरी बजाई, पर तुम न नाचे,
हमने विलाप किया पर तुमने छाती नहीं पीटी।"
१८ 'क्योंकि यूहन्ना खाते और पीते नहीं आए, और लोग कहते हैं कि
उनमें भूत है; १९ परंतु मानव-पुत्र खाता और पीता आया और लोग कहते
हैं, "देखो, पेटू और पियक्कड़, कर लेनेवालों और पापियों का मित्र !" परंतु
ज्ञान अपने कर्मों से प्रमाणित होता है।'

अविश्वासी नगरों को धिक्कार

२० तब यीशु उन नगरों को धिक्कारने लगे जिनमें उनके बहुत से
सामर्थ्य के काम हुए थे, क्योंकि इन्होंने अपना हृदय-परिवर्तन नहीं किया था।
२१ 'हाय खुराजीन ! हाय बैतसैदा ! जो सामर्थ्य के काम तुममें किए गए यदि

thee, Bethsaida ! for if the mighty works, which were done
in you, had been done in Tyre and Sidon, they would
have repented long ago in sackcloth and ashes. 22 But
I say unto you, It shall be more tolerable for Tyre and
Sidon at the day of judgment, than for you. 23 And
thou, Capernaum, which art exalted unto heaven, shalt
be brought down to hell : for if the mighty works,
which have been done in thee, had been done in Sodom,
it would have remained until this day. 24 But I say unto
you, That it shall be more tolerable for the land of
Sodom in the day of judgment, than for thee.

THE CHILDLIKE HEART

25 At that time Jesus answered and said, I thank
thee, O Father, Lord of heaven and earth, because thou
hast hid these things from the wise and prudent, and
hast revealed them unto babes. 26 Even so, Father :
for so it seemed good in thy sight.

THE GRACIOUS INVITATION

27 All things are delivered unto me of my Father :
and no man knoweth the Son, but the Father ; neither
knoweth any man the Father, save the Son, and he to
whomsoever the Son will reveal him.

28 Come unto me, all ye that labour and are heavy
laden, and I will give you rest. 29 Take my yoke upon
you, and learn of me ; for I am meek and lowly in heart :
and ye shall find rest unto your souls. 30 For my
yoke is easy, and my burden is light.

SABBATH OBSERVANCE

12 At that time Jesus went on the sabbath day
through the corn ; and his disciples were an hun-
gred, and began to pluck the ears of corn, and to eat.
2 But when the Pharisees saw it, they said unto him,
Behold, thy disciples do that which is not lawful to do
upon the sabbath day. 3 But he said unto them, Have
ye not read what David did, when he was an hungred
and they that were with him ; 4 how he entered into
the house of God, and did eat the shewbread, which

वे सूर और सैदा में किए जाते तो उन्होंने टाट ओढ़कर और राख में बैठकर
कब का हृदय-परिवर्तन कर लिया होता। २२ अस्तु, मैं तुमसे कहता हूं कि
न्याय के दिन तुम्हारी अपेक्षा सूर और सैदा की दशा अधिक सहनीय होगी।
२३ और तू, हे कफरनहूम, क्या तू आकाश तक उठेगा? तू पाताल में
गिरेगा! क्योंकि जो सामर्थ्य के काम तुझमें किए गए यदि वे सदोम में किए
जाते तो वह आज तक बना रहता। २४ अस्तु, मैं तुझसे कहता हूं कि न्याय
के दिन तेरी अपेक्षा सदोम की दशा अधिक सहनीय होगी।'

बालक-सदृश मनोवृत्ति

२५ उस समय यीशु ने कहा, 'हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के स्वामी, मैं तुझे
धन्यवाद देता हूं कि तूने ये बातें ज्ञानियों और बुद्धिमानों से गुप्त रखीं और
शिशुओं पर प्रकाशित कीं। २६ हां, हे पिता, क्योंकि तुझे यही अच्छा लगा।

अनुग्रहपूर्ण निमंत्रण

२७ 'मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सौंपा है, और पुत्र को कोई नहीं जानता
है पर केवल पिता, और न कोई पिता को जानता है, पर केवल पुत्र, और वह
जिस पर पुत्र उसे प्रकाशित करना चाहे। २८ हे सब थके और दबे लोगो, मेरे
पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। २९ मेरा जूआ अपने ऊपर लो और मुझसे
सीखो, क्योंकि मैं विनम्र और मन में दीन हूं: और तुम अपनी आत्मा में
विश्राम पाओगे। ३० क्योंकि मेरा जूआ सहज है और मेरा बोझ हलका।'

१२

सबत पालन का प्रश्न

१ उस समय यीशु सबत के दिन खेतों में होकर जा रहे थे। उनके शिष्यों
को भूख लगी तो बालें तोड़ तोड़ कर खाने लगे। २ यह देखकर फरीसियों
ने यीशु से कहा, 'देखिए आपके शिष्य वह काम कर रहे हैं जो सबत के दिन
करना विहित नहीं।' ३ यीशु ने उनसे कहा, 'क्या तुमने नहीं पढ़ा कि दाऊद
ने, जब वह और उनके साथी भूखे थे, क्या किया था? ४ कैसे उन्होंने परमे-
श्वर के भवन में प्रवेश कर अर्पित की हुई रोटियां खाईं, जिनका खाना न उनके

was not lawful for him to eat, neither for them which
were with him, but only for the priests? 5 Or have
ye not read in the law, how that on the sabbath days
the priests in the temple profane the sabbath, and are
blameless? 6 But I say unto you, That in this place
is one greater than the temple. 7 But if ye had known
what this meaneth, I will have mercy, and not sacrifice,
ye would not have condemned the guiltless. 8 For the
Son of man is Lord even of the sabbath day.

CURE OF MAN WITH A WITHERED HAND

9 And when he was departed thence, he went into
their synagogue: 10 and, behold, there was a man
which had his hand withered. And they asked him,
saying, Is it lawful to heal on the sabbath days? that
they might accuse him. 11 And he said unto them,
What man shall there be among you that shall have
one sheep, and if it fall into a pit on the sabbath day
will he not lay hold on it, and lift it out? 12 How
much then is a man better than a sheep? Wherefore
it is lawful to do well on the sabbath days. 13 Then
saith he to the man, Stretch forth thine hand. And
he stretched it forth; and it was restored whole, like
as the other.

A PLOT TO KILL JESUS

14 Then the Pharisees went out, and held a council
against him, how they might destroy him. 15 But when
Jesus knew it, he withdrew himself from thence: and
great multitudes followed him, and he healed them all;
16 and charged them that they should not make him
known: 17 that it might be fulfilled which was spoken
by Esaias the prophet, saying,

18 Behold my servant, whom I have chosen;
My beloved, in whom my soul is well pleased:
I will put my spirit upon him,
And he shall shew judgment to the Gentiles.
19 He shall not strive, nor cry;
Neither shall any man hear his voice in the streets.

लिए और न उनके साथियों के लिए, पर केवल पुरोहितों के लिए विहित था ?
५ अथवा क्या तुमने व्यवस्था में नहीं पढ़ा कि पुरोहित मंदिर में, सबत के दिन
सबत-विधि का उल्लंघन करके भी, निर्दोष रहते हैं ? ६ मैं तुमसे कहता
हूं, यहां वह है जो मंदिर से भी महान् है। ७ यदि तुम इसका अर्थ समझते,
"मैं दया चाहता हूं, बलिदान नहीं" तो निर्दोष को दोषी न बताते। ८ क्योंकि
मानव-पुत्र सबत का स्वामी है।'

सूखे हाथ वाले मनुष्य का स्वस्थ किया जाना

९ वहां से वह आगे बढ़े और उनके सभागृह में प्रवेश किया। वहां एक
मनुष्य था जिसका हाथ सूख गया था। १० लोगों ने दोष लगाने के लिए यीशु
से पूछा, 'क्या सबत के दिन स्वस्थ करना विहित है ?' ११ उन्होंने उत्तर
दिया, 'तुममें से ऐसा कौन है, जिसके पास एक ही भेड़ हो, और वह सबत के
दिन गढ़े में गिर जाए, तो वह उसे पकड़ कर न निकाले। १२ फिर भेड़
की अपेक्षा मनुष्य कितना श्रेष्ठ है। अस्तु, सबत के दिन भलाई करना विहित
है।' १३ तब यीशु ने उस मनुष्य से कहा, 'अपना हाथ बढ़ा;' उसने बढ़ा दिया
और वह फिर दूसरे हाथ के समान स्वस्थ हो गया।

हत्या का षड्यंत्र

१४ इस पर फरीसी बाहर गए और उनके विरुद्ध मंत्रणा करने लगे कि
किस प्रकार उनका विनाश करें। १५ यह जानकर यीशु वहां से चले गए।
बहुत लोग उनके पीछे हो लिए, और उन्होंने सबको स्वस्थ कर दिया।
१६ यीशु ने उन्हें चेतावनी दी, 'मुझे प्रकट न करना' १७ कि यशायाह नबी
कथित यह बचन पूरा हो,

१८ मेरे सेवक को देखो, जिसे मैंने चुना है;
मेरा प्रिय जिससे मेरी आत्मा प्रसन्न है।
मैं अपनी आत्मा उसे दूंगा,
और वह अन्यजातियों पर न्याय की घोषणा करेगा।
१९ वह न विवाद करेगा और न चिल्लाएगा,
और न मार्ग में कोई उसकी वाणी सुनेगा।

20 A bruised reed shall he not break,
And smoking flax shall he not quench,
Till he send forth judgment unto victory.
21 And in his mame shall the Gentiles trust.

FALSE CHARGES

22 Then was brought unto him one possessed with
a devil, blind, and dumb: and he healed him, insomuch
that the blind and dumb both spake and saw. 23 And
all the people were amazed, and said, Is not this the son
of David? 24 But when the Pharisees heard it, they said,
This fellow doth not cast out devils, but by Beelzebub the
prince of the devils. 25 And Jesus knew their thoughts,
and said unto them, Every kingdom divided against
itself is brought to desolation; and every city or house
divided against itself shall not stand: 26 and if Satan
cast out Satan, he is divided against himself; how shall
then his kingdom stand? 27 And if I by Beelzebub
cast out devils, by whom do your children cast them
out? therefore they shall be your judges. 28 But if
I cast out devils by the Spirit of God, then the
kingdom of God is come unto you. 29 Or else how
can one enter into a strong man's house, and spoil his
goods, except he first bind the strong man? and then
he will spoil his house. 30 He that is not with me
is against me; and he that gathereth not with me
scattereth abroad. 31 Wherefore I say unto you, All
manner of sin and blasphemy shall be forgiven unto
men: but blasphemy against the Holy Ghost shall not
be forgiven unto men. 32 And whosoever speaketh a
word against the Son of man, it shall be forgiven him:
but whosoever speaketh against the Holy Ghost, it shall
not be forgiven him, neither in this world, neither in
the world to come.

33 Either make the tree good, and his fruit good;
or else make the tree corrupt, and his fruit corrupt
for the tree is known by his fruit. 34 O generation
of vipers, how can ye, being evil, speak good things?
for out of the abundance of the heart the mouth spe-
aketh. 35 A good man out of the good treasure of

२० वह कुचले हुए नरकुल को न तोड़ेगा,
वह बुझते हुए दीपक को न बुझाएगा
जब तक कि न्याय को विजयी न बनाए ;
२१ अन्यजातियाँ उसके नाम पर आशा करेंगी ।" '

शैतान की शक्ति या पवित्र आत्मा की

२२ तब लोग एक भूतग्रस्त को, जो अंधा और गूंगा था, यीशु के पास
लाए। उन्होंने उसे स्वस्थ कर दिया, और वह गूंगा बोलने और देखने लगा।
२३ इस पर सारा जनसमूह चकित होकर कहने लगा, 'कहीं यह दाऊद-पुत्र
तो नहीं है !' २४ पर फरीसियों ने सुना तो बोले, 'वह भूतों के अधिपति
बालजबूल की सहायता से भूतों को निकालता है।' २५ यीशु ने उनके
विचार जानकर उनसे कहा, 'जिस राज्य में फूट पड़ जाए, वह उजड़ जाएगा;
और जिस नगर एवं घर में फूट पड़ जाए, वह स्थिर नहीं रहेगा। २६ यदि
शैतान ही शैतान को निकाले तो उसके यहां फूट पड़ गई ! फिर उसका
राज्य कैसे स्थिर रहेगा ? २७ अच्छा, यदि मैं बालजबूल द्वारा भूत
निकालता हूं तो तुम्हारे पुत्र किसके द्वारा निकालते हैं ? फलतः वे ही तुम्हारे
न्यायकर्ता होंगे। २८ परंतु यदि मैं परमेश्वर के आत्मा द्वारा भूत निकालता
हूं तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे समीप निश्चय आ पहुंचा है। २९ बलवान
के घर में प्रवेश कर कौन उसकी सम्पत्ति लूट सकता है, जब तक वह पहिले
उस बलवान को बांध न ले ? इसके पश्चात् ही वह उसके घर को लूटेगा।
३० जो मेरे साथ नहीं, वह मेरे विरोध में है ; और जो मेरे साथ नहीं बटो-
रता, वह बखेरता है। ३१ इस कारण मैं तुमसे कहता हूं कि मनुष्यों को
सब पाप और निन्दा की क्षमा मिलेगी पर आत्मा के विरुद्ध निंदा की क्षमा
नहीं। ३२ जो कोई मानव-पुत्र के विरुद्ध शब्द कहे तो उसे क्षमा मिल
जाएगी ; पर जो पवित्र आत्मा के विरुद्ध बोले, उसे न तो इस युग में क्षमा
है, और न आगामी युग में।

३३ 'वृक्ष को अच्छा मानो, और उसके फल को भी अच्छा, अथवा वृक्ष
को निकृष्ट मानो, और उसके फल को भी निकृष्ट ; क्योंकि वृक्ष अपने फल से
ही पहिचाना जाता है। ३४ हे सांप के बच्चो, दुष्ट होते हुए तुम अच्छी बात
कैसे कह सकते हो ? क्योंकि जो मन में भरा है वही मुंह पर आता है।
३५ उत्तम मनुष्य अपने उत्तम कोष से उत्तम वस्तुएं निकालता है, और बुरा

the heart bringeth forth good things : and an evil man
out of the evil treasure bringeth forth evil things. 36
But I say unto you, That every idle word that men
shall speak, they shall give account thereof in the day
of judgment. 37 For by thy words thou shalt be justi-
fed, and by thy words thou shalt be condemned.

DEMAND FOR A SIGN

38 Then certain of the scribes and of the Pharisees
answered, saying, Master, we would see a sign from
thee. 39 But he answered and said unto them, An evil
and adulterous generation seeketh after a sign ; and
there shall no sign be given to it, but the sign of the
prophet Jonas : 40 for as Jonas was three days and
three nights in the whale's belly ; so shall the Son of
man be three days and three nights in the heart of
the earth. 41 The men of Nineveh shall rise in judg-
ment with this generation, and shall condemn it : be-
cause they repented at the preaching of Jonas ; and,
behold, a greater than Jonas is here. 42 The queen
of the south shall rise up in the judgment with this
generation, and shall condemn it : for she came from
the uttermost parts of the earth to hear the wisdom of
Solomon ; and, behold, a greater than Solomon is here.

THE DANGERS OF INCOMPLETE REFORMATION

43 When the unclean spirit is gone out of a man,
he walketh through dry places, seeking rest, and find-
eth none. 44 Then he saith, I will return into my
house from whence I came out ; and when he is come
he findeth it empty, swept, and garnished. 45 Then
goeth he, and taketh with himself seven other spirits
more wicked than himself, and they enter in and dwell
there : and the last state of that man is worse than the
first. Even so shall it be also unto this wicked
generation.

THE TRUE BROTHERHOOD

46 While he yet talked to the people, behold, his
mother and his brethren stood without, desiring to

मनुष्य अपने बुरे भंडार से बुरी वस्तुएं। ३६ मैं तुमसे कहता हूं कि मनुष्य
जो जो व्यर्थ की बात बोलेंगे, न्याय के दिन उसका लेखा देंगे; ३७ क्योंकि
अपने वचनों से ही तुम मुक्त या दंडित होगे।'

चिह्न की मांग

३८ तब कुछ शास्त्रियों और फरीसियों ने उनसे कहा, 'गुरु, हम आपसे
कोई चिह्न देखना चाहते हैं। ३९ यीशु ने उत्तर दिया, 'यह दुष्ट और
व्यभिचारिणी पीढ़ी चिह्न ढूंढ़ रही है, परंतु इसे यूनुस नबी के चिह्न के अति-
रिक्त कोई अन्य चिह्न नहीं मिलेगा। ४० क्योंकि जैसे यूनुस तीन दिन और
तीन रात जल-जंतु के उदर में रहे, उसी प्रकार मानव-पुत्र तीन दिन और
तीन रात पृथ्वी के गर्भ में रहेगा। ४१ न्याय के दिन नीनवे के लोग इस
पीढ़ी के साथ खड़े होंगे और इसे दंडनीय बताएंगे, क्योंकि उन्होंने यूनुस का
संदेश सुनकर हृदय परिवर्त्तन किया, और देखो, यहां वह है जो यूनुस
से भी महान् है। ४२ दक्षिण देश की रानी इस पीढ़ी के साथ न्याय के दिन
खड़ी होगी और इसे दंडनीय बताएगी, क्योंकि वह पृथ्वी के छोर से सुलैमान
की बुद्धिमत्तापूर्ण सुनने के लिए आई; और देखो, यहां वह है जो सुलैमान
से भी महान् है।

अधूरे सुधार से विपत्ति

४३ 'जब अशुद्ध आत्मा मनुष्य में से निकल जाती है, तो निर्जन स्थानों
में विश्राम की खोज में घूमती है, परंतु नहीं पाती। ४४ तब वह कहती है,
"जहां से मैं आई थी, वहीं—अपने घर—लौट जाऊंगी।" और वहां आकर
उसे सुनसान, स्वच्छ, और सुसज्जित पाती है। ४५ तब वह जाकर अपने से
अधिक दुष्ट सात आत्माएं और ले आती है, और वे वहां प्रवेश कर रहने
लगती हैं, और उस मनुष्य की पिछली दशा पहले से भी बुरी हो जाती है।
ऐसा ही इस दुष्ट पीढ़ी के साथ होगा।'

सच्चा नाता

४६ जिस समय वह जनसमूह से बोल रहे थे, उनकी माता और भाई

speak with him. 47 Then one said unto him, Behold
thy mother and thy brethren stand without, desiring
to speak with thee. 48 But he answered and said unto
him that told him, Who is my mother ? and who are
my brethren ? 49 And he stretched forth his hand
toward his disciples, and said, Behold my mother and
my brethren ! 50 For whosoever shall do the will of
my Father which is in heaven, the same is my brother
and sister, and mother.

THE SOWER

13 The same day went Jesus out of the house, and
sat by the sea side. 2 And great multitudes were
gathered together unto him, so that he went into a ship,
and sat ; and the whole multitude stood on the shore.
3 And he spake many things unto them in parables,

Saying, Behold, a sower went forth to sow ; 4 and
when he sowed, some seeds fell by the way side, and the
fowls came and devoured them up : 5 some fell upon
stony places, where they had not much earth : and
forthwith they sprung up, because they had no deepness
of earth : 6 and when the sun was up, they were
scorched ; and because they had no root, they withered
away. 7 And some fell among thorns ; and the thorns
sprung up, and choked them : 8 but other fell into good
ground, and brought forth fruit, some an hundredfold,
some sixtyfold, some thirtyfold. 9 Who hath ears to
hear, let him hear.

THE USE OF PARABLES

10 And the disciples came, and said unto him, Why
speakest thou unto them in parables ? 11 He answered
and said unto them, Because it is given unto you to
know the mysteries of the kingdom of heaven, but to
them it is not given. 12 For whosoever hath to him
shall be given, and he shall have more abundance : but
whosoever hath not, from him shall be taken away even
that he hath. 13 Therefore speak I to them in parables :

बाहर खड़े थे और उनसे बातें करना चाहते थे। ४७ किसी ने यीशु से कहा
'देखिए आपकी माता और भाई बाहर खड़े हैं और आपसे बातें करना चाहते
हैं।' ४८ उन्होंने समाचार देने वाले को उत्तर दिया, 'कौन है मेरी माता?
और कौन हैं मेरे भाई?' ४९ फिर अपने शिष्यों की ओर हाथ बढ़ाकर कहा,
'देखो, ये हैं मेरी माता और मेरे भाई; ५० क्योंकि जो मेरे स्वर्गिक पिता की
इच्छा के अनुसार कार्य करे, वही मेरा भाई, मेरी बहिन और मेरी माता है।'

१३

बीज बोने वाले का दृष्टांत

१ उस दिन यीशु घर से निकल कर समुद्र तट पर आ बैठे। २ उनके समीप
इतना विशाल जनसमूह एकत्रित हो गया कि उन्हें नौका पर चढ़ कर बैठना
पड़ा, और समस्त जनसमूह तट पर खड़ा रहा। ३ यीशु ने दृष्टांतों द्वारा
उनसे अनेक बातें कहीं।

उन्होंने कहा, 'एक बोने वाला बीज बोने निकला। ४ बोते समय कुछ
बीज मार्ग के किनारे गिरे और पक्षियों ने आकर उन्हें चुन लिया। ५ कुछ
पथरीली भूमि में गिरे जहां उन्हें बहुत मिट्टी न मिली, मिट्टी के गहरे न होने
के कारण वे शीघ्र अंकुरित हुए, ६ पर सूर्य के उदय होने पर झुलस गए और
जड़ न पकड़ने के कारण सूख गए। ७ कुछ कंटीली झाड़ियों में गिरे, और
झाड़ियां बढ़ीं और उनको दबा दिया। ८ कुछ अच्छी भूमि पर गिरे और
फूले-फले—सौ गुने, साठ गुने और तीस गुने। ९ जिनके कान हों वह सुन लें।'

दृष्टांतों का उद्देश्य

१० शिष्यों ने बाहर आकर उनसे पूछा 'आप दृष्टांतों में लोगों से क्यों
बात करते हैं?' ११ उन्होंने उत्तर दिया, 'इसलिए कि स्वर्ग-राज्य के रहस्यों
का ज्ञान तुम्हें दिया गया है, पर उन्हें नहीं। १२ क्योंकि जिसके पास है,
उसे दिया जाएगा और उसके पास बहुत हो जाएगा; पर जिसके पास नहीं है,
उससे जो कुछ उसके पास है, वह भी ले लिया जाएगा। १३ मैं उनसे
दृष्टांतों में इस कारण बात करता हूं कि देखते हुए भी वे नहीं देखते और

because they seeing see not; and hearing they hear not,
neither do they understand. 14 And in them is fulfilled
the prophecy of Esaias, which saith,

By hearing ye shall hear, and shall not understand;
And seeing ye shall see, and shall not perceive:
15 For this people's heart is waxed gross,
And their ears are dull of hearing,
And their eyes they have closed;
Lest at any time they should see with their eyes,
And hear with their ears,
And should understand with their heart,
And should be converted,
And I should heal them.

16 But blessed are your eyes, for they see: and your
ears, for they hear. 17 For verily I say unto you, That
many prophets and righteous men have desired to see
those things which ye see, and have not seen them: and
to hear those things which ye hear, and have not heard
them.

EXPLANATION OF THE ABOVE PARABLE

18 Hear ye therefore the parable of the sower.
19 When any one heareth the word of the kingdom,
and understandeth it not, then cometh the wicked one,
and catcheth away that which was sown in his heart.
This is he which received seed by the way side. 20 But
he that received the seed into stony places, the same is
he that heareth the word, and anon with joy receiveth
it; 21 yet hath he not root in himself, but dureth for a
while: for when tribulation or persecution ariseth
because of the word, by and by he is offended. 22 He
also that received seed among the thorns is he that
heareth the word; and the care of this world, and the
deceitfulness of riches, choke the word, and he becometh
unfruitful. 23 But he that received seed into the good
ground is he that heareth the word, and understandeth
it; which also beareth fruit, and bringeth forth, some an
hundredfold, some sixty, some thirty.

सुनते हुए भी नहीं सुनते और न समझते ही हैं। १४ इनके संबंध में यशायाह
नबी की यह नबूवत पूरी होती है,

"तुम सुनोगे अवश्य, पर न समझोगे,
तुम देखोगे अवश्य, पर तुम्हें सूझ न पड़ेगा,
१५ क्योंकि इन लोगों का मन मोटा हो गया है,
ये कानों से ऊंचा सुनने लगे हैं,
इन्होंने अपनी आंखें बंद कर ली हैं;
जिससे कहीं ऐसा न हो कि ये आंखों से देखें,
कानों से सुनें, मन से समझें,
और परिवर्तित हो जाएं,
तथा मैं इनको स्वस्थ कर दूं।"

१६ 'परंतु तुम्हारी आंखें धन्य हैं कि देखती हैं, और तुम्हारे कान धन्य हैं
कि सुनते हैं। १७ मैं तुमसे सच कहता हूं कि अनेक नबियों और धर्मात्माओं
ने चाहा कि जो बातें तुम देख रहे हो, देखें पर न देख सकें, और जो बातें तुम
सुन रहे हो, सुनें पर न सुन सके।

उपर्युक्त दृष्टांत की व्याख्या

१८ 'अब, तुम बीज बोने वाले का दृष्टांत सुनो। १९ जब कोई व्यक्ति
राज्य का बचन सुनता है पर समझता नहीं, तो वह दुष्ट आकर, जो कुछ उसके
हृदय में बोया गया था, छीन लेता है। यह वही है जो मार्ग के किनारे बोया
गया था। २० पथरीली भूमि पर बोया गया वह है, जो बचन को सुनकर
तुरंत आनंद से उसे ग्रहण करता है, २१ पर उसकी जड़ गहरी नहीं होती।
वह अल्प काल तक स्थिर रहता है और बचन के कारण कष्ट पड़ने या अत्या-
चार होने पर तुरंत उसका पतन हो जाता है। २२ कटीली झाड़ियों में बोया
गया वह है, जो बचन को सुनता है, पर संसार की चिंता और धन का मोह
इस बचन को दबा देते हैं, और वह पनपने नहीं पाता। २३ अच्छी भूमि में
बोया गया वह है, जो बचन को सुनता, समझता और फलवान् होता है, कोई
सौ गुना, कोई साठ गुना और कोई तीस गुना।'

THE TARES

24 Another parable put he forth unto them, saying,
The kingdom of heaven is likened unto a man which
sowed good seed in his field : 25 but while men slept, his
enemy came and sowed tares among the wheat, and went
his way. 26 But when the blade was sprung up, and
brought forth fruit, then appeared the tares also. 27 So
the servants of the householder came and said unto him,
Sir, didst not thou sow good seed in thy field ? from
whence then hath it tares ? 28 He said unto them, An
enemy hath done this. The servants said unto him,
Wilt thou then that we go and gather them up ? 29 But
he said, Nay ; lest while ye gather up the tares, ye root
up also the wheat with them. 30 Let both grow to-
gether until the harvest : and in the time of harvest I
will say to the reapers, Gather ye together first the tares,
and bind them in bundles to burn them : but gather the
wheat into my barn.

MUSTARD SEED AND LEAVEN

31 Another parable put he forth unto them, saying,
The kingdom of heaven is like to a grain of mustard
seed, which a man took, and sowed in his field : 32
which indeed is the least of all seeds : but when it is
grown, it is the greatest among herbs, and becometh a
tree, so that the birds of the air come and lodge in the
branches thereof.

33 Another parable spake he unto them ; The
kingdom of heaven is like unto leaven, which a woman
took, and hid in three measures of meal, till the whole
was leavened. 34 All these things spake Jesus unto the
multitude in parables ; and without a parable spake he
not unto them : 35 That it might be fulfilled which
was spoken by the prophet, saying,

I will open my mouth in parables ;
I will utter things which have been kept secret
from the foundation of the world.

THE TARES EXPLAINED

36 Then Jesus sent the multitude away, and went

गेहूं और जंगली बीज

२४ यीशु ने उनके सामने दूसरा दृष्टांत रखा। 'स्वर्ग-राज्य की तुलना
उस मनुष्य से की गई है जिसने अपने खेत में अच्छा बीज बोया, २५ परंतु
जब लोग सो रहे थे तो उसका शत्रु आया, और गेहूं के बीच जंगली बीज
बोकर चला गया। २६ जब अंकुर निकले और बालें लगी तो जंगली बीज*
भी दीख पड़े। २७ इस पर गृहस्वामी के सेवकों ने आकर उससे कहा,
"प्रभु, क्या आपने अपने खेत में अच्छा बीज नहीं बोया था? तो इसमें
जंगली बीज कहां से आए?" २८ वह बोला, "यह किसी शत्रु का कार्य
है।" सेवकों ने कहा, "क्या आपकी इच्छा है कि हम जाकर उन्हें एकत्र कर
लें।" २९ उसने कहा, "नहीं, कहीं ऐसा न हो कि जंगली बीज एकत्र करते
हुए, उनके साथ गेहूं भी जड़ के साथ उखाड़ लो। ३० कटनी तक दोनों को
साथ साथ बढ़ने दो। कटनी के समय मैं काटने वालों से कहूंगा कि पहले
जंगली बीज एकत्र करो और जलाने के लिए उनके गट्ठे बांध लो; फिर गेहूं को
मेरे कोठार में एकत्रित करो।" '

राई का बीज और खमीर

३१ उन्होंने एक और दृष्टांत उनके समक्ष रखा: 'स्वर्ग-राज्य राई के बीज
के सदृश है जिसे किसी मनुष्य ने लेकर अपने खेत में बो दिया। ३२ वह
होता तो सब बीजों से छोटा है, पर बढ़कर समस्त वनस्पतियों से विशाल हो
जाता है, और ऐसा वृक्ष बनता है कि उसकी शाखाओं में आकाश के पक्षी
आकर बसेरा करते हैं।'

३३ उन्होंने एक और दृष्टांत उन्हें बताया: 'स्वर्ग-राज्य खमीर के सदृश है,
जिसे किसी स्त्री ने लेकर तीन पसेरी मैदे में मिला दिया, और होते होते
सब में खमीर उठ आया।' ३४ ये सब बातें यीशु ने जनसमूह से दृष्टांतों में
कहीं, ३५ और दृष्टांतों बिना उनसे कुछ नहीं कहा, जिससे नबी-कथित यह
वचन पूरा हो,

'मैं दृष्टांतों में बोलूंगा:
संसार की उत्पत्ति से जो छिपा है उसे प्रकट करूंगा।'

जंगली बीज के दृष्टांत की व्याख्या

३६ जब वह जनसमूह को छोड़कर घर में गए तो उनके शिष्यों ने पास

* मूल में, 'ज़िज़िनिऑन'

into the house : and his disciples came unto him, saying,
Declare unto us the parable of the tares of the field.
37 He answered and said unto them, He that soweth
the good seed is the Son of man ; 38 the field is the
world ; the good seed are the children of the kingdom ;
but the tares are the children of the wicked one, 39
the enemy that sowed them is the devil ; the harvest is
the end of the world ; and the reapers are the angels.
40 As therefore the tares are gathered and burned in
the fire ; so shall it be in the end of this world. 41 The
Son of man shall send forth his angels, and they shall
gather out of his kingdom all things that offend, and
them which do iniquity 42 and shall cast them into a
furnace of fire : there shall be wailing and gnashing of
teeth. 43 Then shall the righteous shine forth as the
sun in the kingdom of their Father. Who hath ears to
hear, let him hear.

THE PEARL, THE TREASURE AND THE NET

44 Again, the kingdom of heaven is like unto
treasure hid in a field ; the which when a man hath
found, he hideth, and for joy thereof goeth and selleth
all that he hath, and buyeth that field.

45 Again, the kingdom of heaven is like unto a
merchant man, seeking goodly pearls : 46 who, when he
had found one pearl of great price, went and sold all that
he had, and bought it. 47 Again, the kingdom of
heaven is like unto a net, that was cast into the sea, and
gathered of every kind : 48 which, when it was full, they
drew to shore, and sat down, and gathered the good into
vessels, but cast the bad away. 49 So shall it be at the
end of the world : the angels shall come forth, and sever
the wicked from among the just, 50 and shall cast them
into the furnace of fire : there shall be wailing and
gnashing of teeth. 51 Jesus saith unto them, Have ye
understood all these things ? They say unto him, yea,
Lord. 52 Then said he unto them, Therefore every
scribe which is instructed unto the kingdom of heaven
is like unto a man that is an householder, which
bringeth forth out of his treasure things new and old.

आकर कहा, 'खेत के जंगली बीजों का दृष्टांत हमें समझा दीजिए।' ३७
उन्होंने उत्तर दिया, 'अच्छे बीज बोने वाला है मानव-पुत्र, ३८ खेत है संसार
और अच्छे बीज हैं राज्य की संतान; जंगली बीज दुष्ट की संतान हैं, ३९ और
उन्हें बोने वाला शत्रु इबलीस है; कटनी है संसार का अंत और काटनेवाले हैं
स्वर्गदूत। ४० जैसे जंगली बीज एकत्रित कर आग में जलाए जाते हैं वैसे
ही संसार के अंत में होगा। ४१ मानव-पुत्र अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा, और
वे उसके राज्य में से पतन के सब कारणों को एवं कुकर्मियों को एकत्रित कर
४२ अग्निकुंड में डालेंगे; वहाँ विलाप करना, रोना और दांत पीसना होगा।
४३ तब धर्मात्मा अपने पिता के राज्य में सूर्य के समान चमकेंगे। जिसके
कान हों वह सुन ले।

गुप्त निधि, अमूल्य रत्न और जाल के दृष्टांत

४४ 'स्वर्ग-राज्य खेत में छिपी हुई निधि के सदृश है जिसे किसी मनुष्य ने
पाया और छिपा दिया है। अब वह आनंद-मग्न होकर जाता और अपना
सब कुछ बेचकर उस खेत को मोल ले लेता है।

४५ 'फिर स्वर्ग-राज्य उस व्यापारी के सदृश है जो अच्छे मोतियों की
खोज में था। ४६ जब उसे एक बहुमूल्य मोती मिला तो उसने जाकर अपना सब
कुछ बेच दिया और उसे मोल ले लिया। ४७ फिर स्वर्ग-राज्य उस जाल के
सदृश है जो सागर में डाला गया, और जिसमें सब प्रकार की मछलियां
घिर आईं। ४८ जब वह भर गया तो लोग उसे तट पर खींच लाए, और
बैठकर अच्छी मछलियां तो पात्रों में एकत्रित कीं, और बुरी फेंक दीं। संसार
के अंत में ऐसा ही होगा। ४९ स्वर्गदूत आएंगे, धर्मात्माओं से दुष्टों को पृथक्
करेंगे, और उन्हें अग्निकुंड में डालेंगे। ५० वहां रोना और दांत पीसना होगा॥

५१ 'क्या तुम ये सब बातें समझे?' वे बोले, 'हां'। ५२ यीशु ने उनसे
कहा, 'इस कारण प्रत्येक शास्त्री जो स्वर्ग-राज्य का शिष्य बना है, उस गृहस्थ के
सदृश है, जो अपने भंडार से नई और पुरानी वस्तुएँ निकालता है।'

JESUS REJECTED AT NAZARETH

53 And it came to pass, that when Jesus had finished
these parables, he departed thence. 54 And when he
was come into his own country, he taught them in their
synagogue, insomuch that they were astonished, and
said, Whence hath this man this wisdom, and these
mighty works ? 55 Is not this the carpenter's son ? is
not his mother called Mary ? and his brethren, James,
and Joses, and Simon, and Judas ? 56 And his sisters, are
they not all with us ? Whence then hath this man all
these things ? 57 And they were offended in him. But
Jesus said unto them, A prophet is not without honour,
save in his own country, and in his own house. 58 And
he did not many mighty works there because of their
unbelief.

THE DEATH OF JOHN THE BAPTIST

14 At that time Herod the tetrarch heard of the
fame of Jesus, 2 and said unto his servants, This
is John the Baptist ; he is risen from the dead ; and
therefore mighty works do shew forth themselves
in him.

3 For Herod had laid hold on John, and bound him,
and put him in prison for Herodias' sake, his brother
Philip's wife. 4 For John said unto him, It is not
lawful for thee to have her. 5 And when he would
have put him to death, he feared the multitude, because
they counted him as a prophet. 6 But when Herod's
birthday was kept, the daughter of Herodias danced
before them, and pleased Herod. 7 Whereupon he
promised with an oath to give her whatsoever she
would ask. 8 And she, being before instructed of her
mother, said, Give me here John Baptist's head in a
charger. 9 And the king was sorry : nevertheless for
the oath's sake, and them which sat with him at meat,
he commanded it to be given her. 10 And he sent, and
beheaded John in the prison. 11 And his head was
brought in a charger, and given to the damsel : and she

नासरत में निरादर

५३ यीशु इन दृष्टांतों को समाप्त कर वहां से चले गए। ५४ वह अपने
नगर में आकर लोगों को उनके सभागृह में उपदेश देने लगे। इससे वे
चकित रह गए और बोले, 'इसे यह बुद्धि और सामर्थ्य के काम कहां से प्राप्त
हुए ? ५५ क्या यह बढ़ई का पुत्र नहीं है ? क्या इसकी माता का नाम
मरियम और इसके भाइयों का नाम याकूब, यूसुफ, शमौन और यहूदा नहीं
है ? ५६ और क्या इसकी सब बहनें हमारे बीच नहीं रहतीं ? फिर इसे यह
सब कहाँ से प्राप्त हुआ ?' ५७ इस प्रकार लोगों को उनके संबंध में भ्रम हुआ।
यीशु ने उनसे कहा, 'अपने नगर और घर को छोड़कर और कहीं नबी का
निरादर नहीं होता।' ५८ उन्होंने लोगों के अविश्वास के कारण वहां
सामर्थ्य के अनेक काम नहीं किए।

१४

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की मृत्यु

१ उस समय राज्यपाल* हेरोदेस ने यीशु का यश सुना २ और वह अपने
सेवकों से बोला, 'यह यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला है ; वह मृतकों में से जी
उठा है, ३ इस कारण उसमें यह शक्तियां क्रियाशील हैं।' हेरोदेस ने अपने
भाई की पत्नी हेरोदियास के कारण यूहन्ना को बंदी कर कारागार में डाल
दिया था ; ४ क्योंकि यूहन्ना ने उससे कहा था, 'उसका रखना आपके लिए
विहित नहीं।' ५ वह उनको मार डालना चाहता था, पर लोगों से डरता था,
क्योंकि वे उन्हें नबी मानते थे। ६ परंतु हेरोदेस के जन्मोत्सव पर हेरोदियास
की पुत्री ने सबके सामने नृत्य कर हेरोदेस को प्रसन्न किया। ७ इस पर
उसने शपथ खाकर वचन दिया, 'जो कुछ तुम मांगोगी मैं दूंगा।' ८ वह
अपनी माता द्वारा उकसाई हुई बोली, 'मुझे यहीं एक थाल में यूहन्ना बपतिस्मा
देने वाले का सिर दीजिए।' ९ राजा पर उदासी छा गई, तो भी अपनी शपथ
और अतिथियों के कारण उसने आज्ञा दी 'दे दिया जाए,' १० और लोगों
को भेजकर कारागार में यूहन्ना का सिर कटवा दिया। ११ उनका सिर
थाल में लाया गया, बाला को दे दिया गया और वह उसे अपनी माता के

* मूल में, 'तित्रअर्खेस'

brought it to her mother. 12 And his disciples came,
and took up the body, and buried it, and went and
told Jesus.

THE FEEDING OF THE FIVE THOUSAND

13 When Jesus heard of it, he departed thence by
ship into a desert place apart : and when the people had
heard thereof, they followed him on foot out of the
cities. 14 And Jesus went forth, and saw a great multi-
tude, and was moved with compassion toward them,
and he healed their sick.

15 And when it was evening, his disciples came to
him, saying, This is a desert place, and the time is now
past ; send the multitude away, that they may go into
the villages, and buy themselves victuals. 16 But Jesus
said unto them, They need not depart ; give ye them to
eat. 17 And they say unto him, We have here but five
loaves, and two fishes. 18 He said, Bring them hither
to me. 19 And he commanded the multitude to sit
down on the grass, and took the five loaves, and the two
fishes, and looking up to heaven, he blessed, and brake,
and gave the loaves to his disciples, and the disciples to
the multitude. 20 And they did all eat, and were
filled : and they took up of the fragments that remained
twelve baskets full. 21 And they that had eaten were
about five thousand men, beside women and children.

JESUS WALKS ON THE SEA

22 And straightway Jesus constrained his disciples
to get into a ship, and to go before him unto the other
side, while he sent the multitudes away. 23 And when
he had sent the multitudes away, he went up into a
mountain apart to pray : and when the evening was
come, he was there alone. 24 But the ship was now in
the midst of the sea, tossed with waves : for the wind
was contrary. 25 And in the fourth watch of the night
Jesus went unto them, walking on the sea. 26 And
when the disciples saw him walking on the sea, they
were troubled, saying, It is a spirit : and they cried out
for fear. 27 But straightway Jesus spake unto them,

पास ले गई। १२ उनके शिष्य आए एवं उनका शव ले जाकर कब्र में
रखा, और जाकर यीशु को समाचार दिया।

पांच सहस्र को भोजन कराना

१३ यह सुन कर यीशु नौका पर चुपचाप किसी निर्जन स्थान में चले गए।
जनसमूह ने जब यह सुना तो लोग नगर-नगर से पैदल ही उनकी पीछे हो
लिए। १४ यीशु ने उतर कर उस विशाल जनसमूह को देखा तो उनपर दया
आई और उनके रोगियों को स्वस्थ किया।

१५ जब सायंकाल हुआ तो शिष्य उनके पास आए और बोले, 'यह
निर्जन स्थान है, और अब देर हो गई है। जनसमूह को विदा कर दीजिए
कि गांव में जाकर अपने लिए भोजन मोल लें।' १६ परंतु यीशु ने कहा,
'इनको जाने की आवश्यकता नहीं ; तुम्हीं इन्हें खाने को दो।' १७ शिष्य
बोले, 'हमारे पास यहां पांच रोटी और दो मछलियों के अतिरिक्त और कुछ
नहीं।' १८ उन्होंने कहा, 'उन्हें यहां मेरे पास ले आओ।' १९ तब उन्होंने
जनसमूह को घास पर बैठने की आज्ञा दी। यीशु ने पांच रोटी और दो
मछलियाँ लीं और आकाश की ओर देखकर आशिष मांगी। तब उन्होंने
रोटियां तोड़कर शिष्यों को दीं, और शिष्यों ने लोगों को। २० सबने भोजन
किया और तृप्त हुए ; और लोगों ने बचे हुए टुकड़ों से भरी बारह टोकरियां
उठाईं। २१ भोजन करने वाले मनुष्यों की संख्या, स्त्रियों और बालकों के
अतिरिक्त, लगभग पांच सहस्र थी।

सागर पर चलना

२२ तब उन्होंने अपने शिष्यों को नौका पर चढ़ने और अपने पूर्व उस
पार जाने के लिए बाध्य किया, और स्वयं जन समूह को बिदा करने के लिए
रह गए। २३ जनसमूह को विदा कर वह पर्वत पर एकान्त में प्रार्थना करने
के लिए चले गए। सायंकाल हुआ तो वह वहां अकेले थे, २४ और नौका
स्थल से कई फर्लांग* दूर लहरों में डगमगा रही थीं, क्योंकि वायु विपरीत
थी। २५ वह रात्रि के चौथे पहर सागर पर चलकर उनकी ओर आए,
२६ पर शिष्य उन्हें सागर पर चलते देखकर त्रस्त हो उठे और कहने लगे, 'यह
कोई प्रेत है' एवं भय के कारण चिल्लाने लगे। २७ इस पर यीशु उनसे

* मूल में, 'स्तदियन', अर्थात् छह सौ सात फुट

saying, Be of good cheer ; it is I ; be not afraid. 28 And
Peter answered him and said, Lord, if it be thou, bid me
come unto thee on the water. 29 And he said, Come.
And when Peter was come down out of the ship, he
walked on the water, to go to Jesus. 30 But when he
saw the wind boisterous, he was afraid ; and beginning
to sink, he cried, saying, Lord, save me. 31 And imme-
diately Jesus stretched forth his hand, and caught him,
and said unto him, O thou of little faith, wherefore
didst thou doubt ? 32 And when they were come into
the ship, the wind ceased. 33 Then they that were in
the ship came and worshipped him, saying, Of a truth
thou art the Son of God.

34 And when they were gone over, they came into
the land of Gennesaret. 35 And when the men of that
place had knowledge of him, they sent out into all that
country round about, and brought unto him all that
were diseased ; 36 and besought him that they might
only touch the hem of his garment : and as many as
touched were made perfectly whole.

OBSERVANCE OF CEREMONIES

15 Then came to Jesus scribes and Pharisees, which
were of Jerusalem, saying, 2 Why do thy disciples
transgress the tradition of the elders ? for they wash
not their hands when they eat bread. 3 But he
answered and said unto them, Why do ye also transgress
the commandment of God by your tradition ? 4 For God
commanded, saying, Honour thy father and mother :
and, He that curseth father or mother, let him die the
death. 5 But ye say, Whosoever shall say to his father
or his mother, It is a gift, by whatsoever thou mightest
be profited by me ; 6 and honour not his father or his
mother, he shall be free. Thus have ye made the com-
mandment of God of none effect by your tradition.
7 Ye hypocrites, well did Esaias prophesy of you, saying,

8 This people draweth nigh unto me with their
mouth, and honoureth me with their lips ;
But their heart is far from me.

बोले, 'धैर्य धारण करो, मैं हूं; डरो मत।' २८ पतरस ने कहा, 'प्रभु, यदि
आप हैं तो मुझे पानी के ऊपर अपने पास आने की आज्ञा दीजिए।'
२९ उन्होंने कहा, 'आओ।' तब पतरस नौका से उतर कर पानी पर चलने लगे
और यीशु की ओर आए। ३० परंतु वह वायु को देखकर डर गए और डूबने
लगे तो चिल्लाकर बोले, 'प्रभु मुझे बचाइए।' ३१ इस पर यीशु ने हाथ बढ़ाकर
उन्हें थाम लिया और कहा, 'हे अल्पविश्वासी, तुमने संदेह क्यों किया?'
३२ जब वे नौका पर आए तो वायु थम गई। ३३ नौका में जो लोग थे,
वे उनके सामने गिर पड़े और बोले, 'आप सचमुच परमेश्वर-पुत्र हैं।'

३४ वे पार उतर कर गन्नेसरत की भूमि पर आए। ३५ वहां के लोगों
ने उनको पहिचान लिया और आस पास सब कहीं कहला कर सब रोगियों
को ले आए; ३६ एवं उनसे निवेदन किया कि उन्हें अपने वस्त्र का सिरा ही
स्पर्श करने दें; और जितनों ने स्पर्श किया, वे स्वस्थ हो गए।

१५

परंपरा पालन का प्रश्न

१ यरूशलेम से आए हुए फरीसी और शास्त्रियों ने यीशु के पास आकर
कहा, 'क्या कारण है कि आपके शिष्य प्राचीनों की परंपरा का उल्लंघन करते
हैं? २ क्योंकि वे भोजन करते समय हाथ नहीं धोते।' ३ यीशु ने उत्तर
दिया, 'क्या कारण है कि तुम स्वयं अपनी परंपरा के निमित्त परमेश्वर की
आज्ञा का उल्लंघन करते हो? ४ क्योंकि परमेश्वर ने कहा है, "माता पिता
का आदर कर" और "जो माता पिता को बुरा कहे उसे मृत्युदंड दिया जाए;"
५ पर तुम कहते हो कि यदि कोई व्यक्ति पिता अथवा माता से कहे, "मुझसे
जो कुछ तुम्हें प्राप्त होना था वह अर्पित हो चुका," तो वह अपने पिता और
माता का आदर न करे। ६ इस प्रकार तुम अपनी परंपरा द्वारा परमेश्वर के
बचन का निराकरण करते हो। ७ पाखंडियो! यशायाह नबी ने तुम्हारे संबंध
में ठीक ही नबूवत की है,

८ "ये लोग ओठों से मेरा आदर करते हैं,
पर इनका हृदय मुझसे दूर है,

9 But in vain they do worship me,
Teaching for doctrines the commandments of men.

10 And he called the multitude, and said unto them,
Hear, and understand : 11 not that which goeth into
the mouth defileth a man ; but that which cometh out
of the mouth, this defileth a man. 12 Then came his
disciples, and said unto him, Knowest thou that the
Pharisees were offended, after they heard this saying ?
13 But he answered and said, Every plant, which my
heavenly Father hath not planted, shall be rooted up.
14 Let them alone : they be blind leaders of the blind.
And if the blind lead the blind, both shall fall into the
ditch. 15 Then answered Peter and said unto him,
Declare unto us this parable. 16 And Jesus said, Are
ye also yet without understanding ? 17 Do not ye yet
understand, that whatsoever entereth in at the mouth
goeth into the belly, and is cast out into the draught ?
18 But those things which proceed out of the mouth
come forth from the heart ; and they defile the man.
19 For out of the heart proceed evil thoughts, murders,
adulteries, fornications, thefts, false witness, blasphe-
mies : 20 these are the things which defile a man : but
to eat with unwashen hands defileth not a man.

CURE OF A GENTILE GIRL

21 Then Jesus went thence, and departed into the
coasts of Tyre and Sidon. 22 And, behold, a woman
of Canaan came out of the same coasts, and cried unto
him, saying, Have mercy on me, O Lord, thou son of
David ; my daughter is grievously vexed with a devil.
23 But he answered her not a word. And his disciples
came and besought him, saying, Send her away ; for
she crieth after us. 24 But he answered and said, I
am not sent but unto the lost sheep of the house of
Israel. 25 Then came she and worshipped him, saying,
Lord, help me. 26 But he answered and said, It is not
meet to take the children's bread, and to cast it to
dogs. 27 And she said, Truth, Lord : yet the dogs eat
of the crumbs which fall from their masters' table.

९ ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं,
क्योंकि ये मनुष्य-रचित नियमों को
ऐसे सिखाते हैं मानो धर्म-सिद्धांत हों ।" '

१० तब उन्होंने जनसमूह को अपने पास बुलाकर कहा, 'सुनो और
समझो : ११ जो मुंह में जाता है, वह मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता, पर जो
मुंह से बाहर निकलता है, वह मनुष्य को अशुद्ध करता है ।' १२ शिष्य आकर
उनसे बोले, 'क्या आप जानते हैं कि आपका कथन फरीसियों को बुरा लगा ?'
१३ यीशु ने उत्तर दिया, 'प्रत्येक पौधा जिसे मेरे स्वर्गिक पिता ने नहीं लगाया,
उखाड़ा जाएगा । १४ उन्हें रहने दो, वे अंधे हैं और अंधों के पथ-प्रदर्शक !
यदि अंधा अंधे का पथ-प्रदर्शन करे तो दोनों ही गढ़े में गिरेंगे ।' १५ पतरस
ने उनसे कहा, 'यह दृष्टांत हमें समझाइए ।' १६ यीशु बोले, 'क्या तुम भी
अब तक इतने निर्बुद्धि हो ? १७ क्या तुम्हारी समझ में नहीं आता कि जो
मुंह में जाता है वह उदर में होकर मल द्वारा बाहर निकल जाता है ?
१८ परंतु जो मुंह से बाहर आता है, वह मन से निकलता है और मनुष्य को
अशुद्ध करता है; १९ क्योंकि बुरी-बुरी योजनाएं, हत्या, परस्त्रीगमन, व्यभिचार,
चोरी, झूठी साक्षी और निन्दा मन से ही उत्पन्न होती हैं । २० ये बातें मनुष्य
को अशुद्ध करती हैं; परंतु बिना हाथ धोए भोजन करना मनुष्य को अशुद्ध नहीं
करता ।'

अन्यजाति की बालिका को स्वस्थ करना

२१ वहां से चलकर यीशु सूर और सैदा के प्रदेशों में गए । २२ देखो,
एक कनानी स्त्री उस क्षेत्र से आकर चिल्लाने लगी, 'हे प्रभु, दाऊद-पुत्र, मुझ
पर दया कीजिए; मेरी पुत्री बुरी तरह भूतग्रसित है ।' २३ पर उन्होंने कुछ
उत्तर नहीं दिया । तब उनके शिष्यों ने पास आकर निवेदन किया, 'इस
स्त्री को बिदा कर दीजिए; क्योंकि यह चिल्लाती हुई हमारे पीछे लगी है ।'
२४ यीशु ने उससे कहा, 'मैं इस्राएल वंश की खोई हुई भेड़ों को छोड़कर
अन्य किसी के लिए नहीं भेजा गया ।' २५ पर वह स्त्री उनके सामने आकर
गिर पड़ी और बोली, 'प्रभु मेरी सहायता कीजिए ।' २६ उन्होंने उत्तर दिया
'बालकों की रोटी लेकर कुत्तों के आगे डालना ठीक नहीं ।' २७ वह बोली,

28 Then Jesus answered and said unto her, O woman,
great is thy faith : be it unto thee even as thou wilt.
And her daughter was made whole from that very hour.

MANY ARE HEALED

29 And Jesus departed from thence, and came nigh
unto the sea of Galilee ; and went up into a mountain,
and sat down there. 30 And great multitudes came
unto him, having with them those that were lame, blind,
dumb, maimed, and many others, and cast them down
at Jesus' feet ; and he healed them : 31 insomuch that
the multitude wondered, when they saw the dumb to
speak, the maimed to be whole, the lame to walk, and
the blind to see : and they glorified the God of Israel.

THE FEEDING OF THE FOUR THOUSAND

32 Then Jesus called his disciples unto him, and
said, I have compassion on the multitude, because they
continue with me now three days, and have nothing
to eat : and I will not send them away fasting, lest
they faint in the way. 33 And his disciples say unto
him, Whence should we have so much bread in the
wilderness, as to fill so great a multitude ? 34 And
Jesus saith unto them, How many loaves have ye ? And
they said, Seven and a few little fishes. 35 And he
commanded the multitude to sit down on the ground.
36 And he took the seven loaves and the fishes, and
gave thanks, and brake them, and gave to his disciples,
and the disciples to the multitude. 37 And they did
all eat, and were filled ; and they took up of the broken
meat that was left seven baskets full. 38 And they
that did eat were four thousand men, beside women
and children. 39 And he sent away the multitude, and
took ship, and came into the coasts of Magdala.

JESUS REFUSES THE REQUEST FOR A SIGN

16 The Pharisees also with the Sadducees came, and
tempting desired him that he would shew them
a sign from heaven. 2 He answered and said unto them

'हे प्रभु, कुत्ते भी स्वामियों की मेज से गिरा हुआ चूरचार खाते ही हैं।' २८
इस पर यीशु ने उत्तर दिया, 'हे महिला, तेरा विश्वास महान् है। जैसा तू
चाहती है, वैसा ही तेरे लिए हो।' और उसी क्षण उसकी पुत्री स्वस्थ हो गई।

रोगियों को स्वास्थ्य दान

२९ वहां से चलकर यीशु गलील सागर के किनारे गए; और पर्वत पर
चढ़कर वहां बैठ गए। ३० एक विशाल जनसमूह उनके पास आया जिसमें
लंगड़े, लूले, अंधे, गूंगे और अन्य बहुत से रोगी थे। लोगों ने उन्हें यीशु के
चरणों पर डाल दिया और यीशु ने उनको स्वस्थ कर दिया। ३१ जनसमूह ने
देखा कि गूंगे बोल रहे हैं, लूले स्वस्थ हो रहे हैं, लंगड़े चल रहे हैं, और अंधे
देख रहे हैं तो वे विस्मय विमुग्ध हो इस्राएल के परमेश्वर की स्तुति करने
लगे।

चार सहस्र को भोजन कराना

३२ यीशु ने अपने शिष्यों को बुलाकर कहा, 'मुझे इस जनसमूह पर दया
आती है, क्योंकि ये लोग अब तीन दिन से मेरे साथ हैं और इनके पास खाने
को कुछ नहीं है। मैं इन्हें भूखा घर नहीं भेजना चाहता; कहीं ऐसा न हो
कि ये मार्ग में शिथिल हो जाएं।' ३३ शिष्य बोले, 'इस निर्जन प्रदेश में
हमें इतना भोजन कहां से मिलेगा कि इतने बड़े जनसमूह को तृप्त कर
सकें।' ३४ यीशु ने उनसे पूछा, 'तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं?' वे बोले,
'सात, और कुछ छोटी मछलियां।' ३५ उन्होंने जनसमूह को पृथ्वी पर बैठने
की आज्ञा देकर ३६ सात रोटियां और मछलियां लीं, धन्यवाद करके तोड़ीं,
शिष्यों को दीं, एवं शिष्यों ने जनसमूह को। ३७ सबने भोजन किया और
तृप्त हुए; और उन्होंने बचे हुए टुकड़ों से भरे सात टोकरे उठाए।
३८ भोजन करने वाले, स्त्री-बच्चों के अतिरिक्त, चार सहस्र थे।

३९ तब वह जनसमूह को विदा कर नौका पर चढ़े और मगदन की सीमा
में आए।

१६

चिह्न-दान की प्रार्थना अस्वीकार

१ फरीसियों और सदूकियों ने पास आकर परीक्षा करने के लिए उनसे
निवेदन किया, 'हमें आकाश से कोई चिन्ह दिखाइए।' २ उन्होंने उत्तर दिया,

When it is evening, ye say, It will be fair weather :
for the sky is red. 3 And in the morning, It will be
foul weather to day : for the sky is red and lowring.
O ye hypocrites, ye can discern the face of the sky ;
but can ye not discern the signs of the times ? 4 A
wicked and adulterous generation seeketh after a sign ;
and there shall no sign be given unto it, but the sign
of the prophet Jonas. And he left them, and departed.
5 And when his disciples were come to the other side,
they had forgotten to take bread.

HE REBUKES THE BLINDNESS OF THE DISCIPLES

6 Then Jesus said unto them, Take heed and beware
of the leaven of the Pharisees and of the Sadducees.
7 And they reasoned among themselves, saying, It is
because we have taken no bread. 8 Which when
Jesus perceived, he said unto them, O ye of little
faith, why reason ye among yourselves, because ye
have brought no bread ? 9 Do ye not yet under-
stand, neither remember the five loaves of the five
thousand, and how many baskets ye took up ? 10
Neither the seven loaves of the four thousand, and how
many baskets ye took up ? 11 How is it that ye do not
understand that I spake it not to you concerning bread,
that ye should beware of the leaven of the Pharisees
and of the Sadducees ? 12 Then understood they how
that he bade them not beware of the leaven of bread,
but of the doctrine of the Pharisees and of the Sadducees.

PETER'S CONFESSION OF JESUS AS THE CHRIST

13 When Jesus came into the coasts of Cæsarea
Philippi, he asked his disciples, saying, Whom do men
say that I the Son of man am ? 14 And they said,
Some say that thou art John the Baptist : some, Elias ;
and others, Jeremias, or one of the prophets. 15 He
saith unto them, But whom say ye that I am ?

16 And Simon Peter answered and said, Thou art
the Christ, the Son of the living God. 17 And Jesus
answered and said unto him, Blessed art thou, Simon

'संध्या होने पर तुम कहते हो, "दिन अच्छा रहेगा, क्योंकि आकाश लाल
है," ३ और प्रातःकाल होने पर "आज आंधी आएगी क्योंकि आकाश लाल और
धूमिल है।" तुम आकाश के लक्षण तो पहिचान लेते हो पर समय के लक्षण
नहीं पहिचान सकते। ४ दुष्ट और व्यभिचारिणी पीढ़ी चिह्न ढूंढ़ती है!
परंतु यूनुस के चिह्न के अतिरिक्त इसे कोई अन्य चिन्ह नहीं मिलेगा।' और
वह उन्हें छोड़कर चले गए।

अंतःकरण की अंधता पर शिष्यों को फटकार

५ जब शिष्य पार आए तो भोजन लाना भूल गए थे। ६ यीशु ने
उनसे कहा, 'देखो, फरीसियों और सदूकियों के खमीर से सावधान रहना।'
७ वे आपस में विचार करने लगे कि हम भोजन नहीं लाए। ८ यीशु ने यह
जानकर उनसे कहा, 'अल्पविश्वासियो, तुम इस सोच विचार में क्यों पड़े हो
कि हमारे पास भोजन नहीं है? ९ क्या अब भी तुम्हारी समझ में नहीं
आता? क्या तुम्हें पांच सहस्र के लिए पांच रोटियों की बात याद नहीं? तुमने
कितनी टोकरियां उठाई थीं? १० और चार सहस्र आदमियों के लिए सात
रोटियां; और तुमने कितने टोकरे उठाए थे? ११ तुम्हारी समझ में क्यों नहीं
आता कि मेरा कथन, "फरीसियों और सदूकियों के खमीर से सावधान
रहना" रोटियों के विषय में नहीं था।' १२ तब उनकी समझ में आया कि
उन्होंने रोटी के खमीर से नहीं वरन् फरीसियों और सदूकियों की शिक्षा
से सावधान रहने को कहा था।

पतरस का यीशु को ख्रिस्त स्वीकार करना

१३ जब यीशु कैसरिया फिलिप्पी के प्रदेश में आए तो अपने शिष्यों से
पूछा, 'मानव-पुत्र कौन है? इस विषय में लोग क्या कहते हैं?' १४
उन्होंने उत्तर दिया, 'कुछ यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले,' दूसरे, 'एलिय्याह' और
अन्य 'यिर्मयाह अथवा नबियों में से एक।' १५ यीशु ने कहा, 'पर मैं कौन
हूं? इस विषय में तुम क्या कहते हो?' १६ शमौन पतरस ने उत्तर दिया,
'आप जीवंत परमेश्वर के पुत्र ख्रिस्त हैं।' १७ यीशु ने कहा, 'धन्य हो तुम,
शमोन बारयोना, क्योंकि मांस और रक्त ने यह तुम पर प्रकाशित नहीं किया

Bar-jona : for flesh and blood hath not revealed it unto
thee, but my Father which is in heaven. 18 And I
say also unto thee, That thou art Peter, and upon this
rock I will build my church ; and the gates of hell shall
not prevail against it. 19 And I will give unto thee
the keys of the kingdom of heaven : and whatsoever
thou shalt bind on earth shall be bound in heaven :
and whatsoever thou shalt loose on earth shall be
loosed in heaven. 20 Then charged he his disciples
that they should tell no man that he was Jesus the
Christ.

JESUS FORETELLS HIS OWN DEATH AND RESURRECTION

21 From that time forth began Jesus to shew unto
his disciples, how that he must go unto Jerusalem, and
suffer many things of the elders and chief priests and
scribes, and be killed, and be raised again the third day.
22 Then Peter took him, and began to rebuke him, say-
ing, Be it far from thee, Lord : this shall not be unto
thee. 23 But he turned, and said unto Peter, Get thee
behind me, Satan : thou art an offence unto me : for
thou savourest not the things that be of God, but those
that be of men.

A CALL TO RENOUNCE SELF

24 Then said Jesus unto his disciples, If any man
will come after me, let him deny himself, and take up
his cross, and follow me. 25 For whosoever will save
his life shall lose it : and whosoever will lose his life
for my sake shall find it. 26 For what is a man pro-
fited, if he shall gain the whole world, and lose his
own soul ? or what shall a man give in exchange for
his soul ? 27 For the Son of man shall come in the
glory of his Father with his angels ; and then he shall
reward every man according to his works. 28 Verily
I say unto you, There be some standing here, which
shall not taste of death, till they see the Son of man
coming in his kingdom.

वरन् मेरे पिता ने जो स्वर्ग में हैं। १८ मैं तुमसे कहता हूं कि तुम "पतरस"
हो, और इस पत्थर पर मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा। नरक की शक्तियां*
इस पर विजयी न होंगी। १९ मैं तुम्हें स्वर्ग-राज्य की कुंजियां दूंगा। जो
कुछ तुम पृथ्वी पर बांधोगे, वह स्वर्ग में बंधेगा, और जो कुछ तुम पृथ्वी पर
खोलोगे वह स्वर्ग में खुलेगा।' २० तब उन्होंने शिष्यों को चेतावनी दी,
'किसी से मत कहना कि मैं ख्रिस्त हूं।'

मृत्यु और पुनरुत्थान के विषय में भविष्यवाणी

२१ उस समय से यीशु अपने शिष्यों को बताने लगे, 'यह अनिवार्य है कि
मैं यरूशलेम जाऊं, †धर्मवृद्धों, महापुरोहितों और शास्त्रियों द्वारा बहुत
दुःख उठाऊं, मार डाला जाऊं और तीसरे दिन जीवित उठाया जाऊं।'
२२ इस पर पतरस उन्हें अपने पास लेकर रोकने लगे, 'हे प्रभु, परमेश्वर ऐसा
न करें। आप पर यह कभी न बीतेगा।' २३ पर उन्होंने मुड़कर पतरस
से कहा, 'मुझ से दूर हो शैतान, मेरे लिए तू पतन का कारण है। तेरी भावना
परमेश्वर की सी नहीं वरन् मनुष्यों की सी है।'

स्वार्थ-त्याग पर शिक्षा

२४ तब यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, 'यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे
तो अपने आपका परित्याग करे, अपना क्रूस उठाए और मेरे पीछे हो ले, २५
क्योंकि जो कोई अपने प्राण बचाना चाहे वह उन्हें खोएगा, परंतु जो कोई
अपने प्राणों मेरे निमित्त खोएगा वह उन्हें पाएगा। २६ यदि कोई मनुष्य
समस्त जगत प्राप्त कर ले पर अपने प्राण गंवा दे तो इससे क्या लाभ? मनुष्य
अपने प्राणों के बदले में क्या देगा। २७ क्योंकि मानव-पुत्र अपने स्वर्गदूतों के
साथ अपने पिता की महिमा में आएगा, तब वह प्रत्येक को उसके कर्मों
के अनुसार फल देगा। २८ मैं तुमसे सच कहता हूं कि यहां कुछ व्यक्ति
खड़े हैं, जो जब तक मानव-पुत्र को अपने राज्य में आता हुआ न देख लें,
मृत्यु का स्वाद न चखेंगे।'

---

* मूल में, 'पाताल के फाटक'
† मूल में, 'प्रिस्बुतिरस'

THE TRANSFIGURATION

17 And after six days Jesus taketh Peter, James, and
John his brother, and bringeth them up into an
high mountain apart, 2 and was transfigured before
them : and his face did shine as the sun, and his rai-
ment was white as the light. 3 And, behold, there ap-
peared unto them Moses and Elias talking with him.
4 Then answered Peter, and said unto Jesus, Lord, it
is good for us to be here : if thou wilt, let us make
here three tabernacles ; one for thee, and one for Moses,
and one for Elias. 5 While he yet spake, behold, a
bright cloud overshadowed them : and behold a voice
out of the cloud, which said, This is my beloved Son, in
whom I am well pleased ; hear ye him. 6 And when
the disciples heard it, they fell on their face, and were
sore afraid. 7 And Jesus came and touched them, and
said, Arise, and be not afraid. 8 And when they had
lifted up their eyes they saw no man, save Jesus only.

9 And as they came down from the mountain, Jesus
charged them, saying, Tell the vision to no man, until
the Son of man be risen again from the dead. 10 And
his disciples asked him, saying, Why then say the scribes
that Elias must first come ? 11 And Jesus answered
and said unto them, Elias truly shall first come, and res-
tore all things. 12 But I say unto you, That Elias is
come already, and they knew him not, but have done
unto him whatsoever they listed. Likewise shall also
the Son of man suffer of them. 13 Then the disciples
understood that he spake unto them of John the
Baptist.

CURE OF AN AFFLICTED BOY

14 And when they were come to the multitude,
there came to him a certain man, kneeling down to him,
and saying, 15 Lord, have mercy on my son : for he is
lunatick, and sore vexed : for ofttimes he falleth into the
fire, and oft into the water. 16 And I brought him to thy
disciples, and they could not cure him. 17 Then Jesus
answered and said, O faithless and perverse generation,
how long shall I be with you ? how long shall I suffer

१७

दिव्य रूपांतर

१ छह दिन पश्चात् यीशु ने पतरस, याकूब और उनके भाई यूहन्ना को
अपने साथ लिया और उन्हें एक ऊंचे पर्वत पर एकांत में ले गए। २ वहां
उनके सामने यीशु का रूपांतर हो गया। उनका मुख सूर्य के सदृश दीप्तिवान्
हो उठा, और उनके वस्त्र प्रकाश के सदृश उज्ज्वल हो गए। ३ और वहां
उन्हें मूसा और एलिय्याह यीशु के साथ वार्तालाप करते दिखाई दिए। ४ तब
पतरस बोल उठे और यीशु से कहा, 'प्रभु, कैसी उत्तम बात है कि हम यहां
हैं। यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं यहां तीन मंडप बनाऊं, एक आपके लिए,
एक मूसा के लिए और एक एलिय्याह के लिए।' ५ वह यह बोल ही रहे थे
कि एक ज्योतिर्मय मेघ ने उनको आच्छादित कर लिया और मेघ में से वाणी
हुई, 'यह मेरा पुत्र, मेरा प्रिय है, जिससे मैं प्रसन्न हूं, इसकी सुनो।' ६ शिष्य
यह सुनकर मुंह के बल गिर पड़े और बहुत भयभीत हुए। ७ यीशु उनके
पास आए और उन्हें स्पर्श कर बोले, 'उठो, भयभीत न हो।' ८ तब उन्होंने
ऊपर दृष्टि की और यीशु के अतिरिक्त और किसी को न देखा।

९ पर्वत से उतरते समय यीशु ने उन्हें आज्ञा दी, 'जब तक मानव-पुत्र
मृतकों में से जीवित न हो उठे, किसी को इस दर्शन के संबंध में न बताना।'
१० इस पर उनके शिष्यों ने उनसे पूछा, 'शास्त्री क्यों कहते हैं कि पहिले
एलिय्याह का आना अनिवार्य है?' ११ उन्होंने उत्तर दिया, 'अवश्य, एलि-
य्याह आने को हैं और वह सब कुछ सुधारेंगे। १२ पर मैं तुमसे कहता हूं
कि एलिय्याह आ चुके हैं; लोगों ने उन्हें नहीं पहिचाना और उनके साथ
मनमाना व्यवहार किया। इसी प्रकार मानव-पुत्र उनके द्वारा दुःख उठाएगा।'
१३ तब शिष्य समझे कि वह उनसे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के संबंध में
कह रहे हैं।

अशुद्ध आत्मा-ग्रसित बालक को स्वस्थ करना

१४ जब वे जनसमूह के पास पहुंचे तो एक मनुष्य यीशु के पास आया
और घुटने टेक कर बोला, १५ 'प्रभु, मेरे पुत्र पर दया कीजिए। उसे मिरगी
आती है और वह रोगी है; वह बहुधा आग में गिर पड़ता है, और बहुधा
पानी में। १६ मैं उसे आपके शिष्यों के पास लाया था पर वे उसे स्वस्थ नहीं
कर सके।' १७ यीशु ने उत्तर दिया, 'अविश्वासी और भ्रष्ट पीढ़ी! कब तक
मैं तुम्हारे साथ रहूंगा? कब तक मैं तुम्हारी सहन करूंगा? उसे मेरे पास

you ? bring him hither to me. 18 And Jesus rebuked
the devil ; and he departed out of him : and the child
was cured from that very hour.

19 Then came the disciples to Jesus apart, and said,
Why could not we cast him out ? 20 And Jesus said
unto them, Because of your unbelief : for verily I say
unto you, If ye have faith as a grain of mustard seed,
ye shall say unto this mountain, Remove hence to
yonder place ; and it shall remove ; and nothing shall
be impossible unto you. 21 Howbeit this kind goeth
not out but by prayer and fasting.

A SECOND PREDICTION OF HIS OWN DEATH

22 And while they abode in Galilee, Jesus said unto
them, The Son of man shall be betrayed into the hands
of men : 23 and they shall kill him, and the third day
he shall be raised again. And they were exceeding
sorry.

HE PAYS THE TEMPLE TAX

24 And when they were come to Capernaum, they
that received tribute money came to Peter, and said,
Doth not your master pay tribute ? 25 He saith, Yes.
And when he was come into the house, Jesus preven-
ted him, saying, What thinkest thou, Simon ? of whom
do the kings of the earth take custom or tribute ?
of their own children, or of strangers ? 26 Peter saith
unto him, Of strangers. Jesus saith unto him, Then
are the children free. 27 Notwithstanding, lest we
should offend them, go thou to the sea, and cast an
hook, and take up the fish that first cometh up ; and
when thou hast opened his mouth, thou shalt find a
piece of money : that take, and give unto them for me
and thee.

A LESSON IN HUMILITY

18 At the same time came the disciples unto Jesus,
saying, Who is the greatest in the kingdom of
heaven ? 2 And Jesus called a little child unto him, and

यहां लाओ'। १८ यीशु ने उसे डांटा ; और भूत उसमें से निकल गया तथा
बालक उसी समय स्वस्थ हो गया। १९ तब शिष्यों ने एकांत में यीशु के पास
आकर पूछा, 'हम उसे क्यों नहीं निकाल सके ?' २० यीशु ने उनसे कहा,
'अपने अल्पविश्वास के कारण ! मैं तुमसे सच कहता हूं कि यदि तुममें राई के
दाने भर भी विश्वास हो तो तुम इस पहाड़ से कहोगे, "यहां से वहां हट जा;"
और वह हट जाएगा, और तुम्हारे लिए कुछ भी असंभव न होगा।
२१ (यह वर्ग प्रार्थना और उपवास के बिना नहीं निकल सकता।)'

मृत्यु और पुनरुत्थान के संबंध में यीशु की दूसरी भविष्यवाणी

२२ जब वे गलील में एकत्रित थे तो यीशु ने उनसे कहा, 'मानव-पुत्र
मनुष्यों के हाथ पकड़वाया जाएगा, २३ लोग उसे मारडालेंगे, पर तीसरे दिन
वह जीवित हो उठेगा।' इस पर वे बहुत व्यथित हुए।

मंदिर का कर

२४ जब वे कफरनहूम आए तो मंदिर का कर लेने वालों ने पतरस के
पास आकर कहा, 'क्या तुम्हारे गुरु मंदिर का कर नहीं देते ?' २५ उन्होंने
कहा, 'हां, देते हैं।' जब वह घर में आए तब यीशु ही पहले बोले, 'शमौन,
तुम्हारा क्या विचार है ? पृथ्वी के राजा चुंगी या व्यक्ति-कर किससे लेते हैं ?
अपने पुत्रों से अथवा परायों से ?' २६ पतरस बोले, 'परायों से।' यीशु ने
उनसे कहा, 'तो पुत्र मुक्त हैं। २७ पर ऐसा न हो कि हम उनके लिए पतन
का कारण हों, इसलिए सागर पर जाकर बंसी डालो और जो मछली पहिले
निकले उसे लो ; उसका मुंह खोलने पर तुम्हें एक मुद्रा* मिलेगी ; उसे लेकर
मेरे और अपने लिए उन्हें दे देना।'

१८

विनम्रता की शिक्षा

१ उस समय शिष्यों ने आकर यीशु से पूछा, 'स्वर्ग-राज्य में सबसे महान्
कौन है ?" २ यीशु ने एक बालक को अपने पास बुलाकर उनके बीच में

* मूल में 'स्तातेर' जिसका मूल्य लगभग तीन रुपया था।

set him in the midst of them, 3 and said, Verily I say unto you, Except ye be converted, and become as little children ye shall not enter into the kingdom of heaven. 4 Whosoever therefore shall humble himself as this little child, the same is greatest in the kingdom of heaven. 5 And whoso shall receive one such little child in my name receiveth me. 6 But whoso shall offend one of these little ones which believe in me, it were better for him that a millstone were hanged about his neck, and that he were drowned in the depth of the sea. 7 Woe unto the world because of offences! for it must needs be that offences come; but woe to that man by whom the offence cometh!

8 Wherefore if thy hand or thy foot offend thee, cut them off, and cast them from thee: it is better for thee to enter into life halt or maimed, rather than having two hands or two feet to be cast into everlasting fire. 9 And if thine eye offend thee, pluck it out and cast it from thee: it is better for thee to enter into life with one eye, rather than having two eyes to be cast into hell fire.

10 Take heed that ye despise not one of these little ones; for I say unto you, That in heaven their angels do always behold the face of my Father which is in heaven. 11 For the Son of man is come to save that which was lost.

THE LOST SHEEP

12 How think ye? if a man have an hundred sheep, and one of them be gone astray, doth he not leave the ninety and nine, and goeth into the mountains, and seeketh that which is gone astray? 13 And if so be that he find it, verily I say unto you, he rejoiceth more of that sheep, than of the ninety and nine which went not astray. 14 Even so it is not the will of your Father which is in heaven, that one of these little ones should perish.

HOW TO TREAT WRONGDOERS

15 Moreover if thy brother shall trespass against

खड़ा कर दिया ३ और कहा, 'मैं तुमसे सच कहता हूं कि जब तक तुम में
परिवर्तन न हो और तुम बालकों के समान न बनो, तुम स्वर्ग-राज्य में प्रवेश
नहीं करने पाओगे। ४ जो अपने आपको इस बालक के समान विनम्र
करेगा वह स्वर्ग-राज्य में महान् है। ५ जो कोई मेरे नाम से ऐसे एक बालक
को स्वीकार करता है, वह मुझे स्वीकार करता है। ६ पर जो कोई इन छोटों में
से, जो मुझ पर विश्वास करते हैं, किसी को फंसाए, उसके लिए अच्छा है कि
उसके गले में चक्की का पाट लटकाया जाए, और वह अथाह सागर में डुबा
दिया जाए। ७ प्रलोभनों के कारण संसार पर शोक! प्रलोभन तो होंगे,
पर शोक उस मनुष्य के लिए जिसके द्वारा प्रलोभन होता है।

८ 'यदि तुम्हारा हाथ अथवा पांव तुम्हें फंसाए तो उसे काट कर अलग
फेंक दो। लूले या लंगड़े होकर जीवन में प्रवेश करना इससे कहीं अच्छा है
कि दो हाथ पैर रहते हुए तुम अनंत अग्नि में डाले जाओ। ९ यदि तुम्हारी
आंख तुम्हें फंसाए तो उसे निकाल कर अलग फेंक दो। काने होकर जीवन
में प्रवेश करना इससे कहीं अच्छा है, कि दो आंखें होते हुए तुम अग्निमय
नरक में डाले जाओ।

१० 'देखो, इन छोटों में से किसी को तुच्छ न जानना, क्योंकि मैं तुमसे
कहता हूं, कि स्वर्ग में इनके दूत सदा स्वर्गिक पिता का मुख देखते हैं।
११ *क्योंकि मानव-पुत्र खोए हुओं को बचाने आया है।

भटकी हुई भेड़ का दृष्टांत

१२ 'तुम्हारा क्या विचार है? यदि किसी मनुष्य के पास सौ भेड़ें हों,
और उनमें से एक भेड़ भटक जाए, तो क्या वह निन्यानवे को पर्वत पर छोड़
कर उस भटकी हुई को ढूंढ़ने न जाएगा? १३ यदि वह भेड़ उसे मिल जाए,
तो मैं सच कहता हूं कि वह उसके लिए, निन्यानवे भेड़ों की अपेक्षा, जो
नहीं भटकीं थीं, अधिक आनंद मनाएगा। १४ इसी प्रकार तुम्हारे स्वर्गिक
पिता की इच्छा नहीं कि इन छोटों में से एक भी नष्ट हो।

अपराधियों के प्रति व्यवहार

१५ 'यदि तुम्हारा भाई तुम्हारे विरुद्ध पाप करे तो जाओ, और एकांत में

* कुछ प्राचीन प्रतियों में यह पद नहीं पाया जाता।

thee, go and tell him his fault between thee and him
alone : if he shall hear thee, thou hast gained thy
brother. 16 But if he will not hear thee, then take with
thee one or two more, that in the mouth of two or three
witnesses every word may be established. 17 And if he
shall neglect to hear them, tell it unto the church : but
if he neglect to hear the church, let him be unto thee as
an heathen man and a publican. 18 Verily I say unto
you, Whatsoever ye shall bind on earth shall be bound
in heaven : and whatsoever ye shall loose on earth shall
be loosed in heaven.

UNITED PRAYER

19 Again I say unto you, That if two of you shall
agree on earth as touching any thing that they shall ask,
it shall be done for them of my Father which is in
heaven. 20 For where two or three are gathered to-
gether in my name, there am I in the midst of them.

THE DUTY OF FORGIVENESS

21 Then came Peter to him, and said Lord, how oft
shall my brother sin against me, and I forgive him ? till
seven times ? 22 Jesus saith unto him, I say not unto
thee, Until seven times : but, Until seventy times seven.

23 Therefore is the kingdom of heaven likened unto
a certain king, which would take account of his servants.
24 And when he had begun to reckon, one was brought
unto him, which owed him ten thousand talents.
25 But forasmuch as he had not to pay, his lord com-
manded him to be sold, and his wife, and children, and
all that he had, and payment to be made. 26 The
servant therefore fell down, and worshipped him, saying,
Lord, have patience with me, and I will pay thee all.
27 Then the lord of that servant was moved with com-
passion, and loosed him, and forgave him the debt.
28 But the same servant went out, and found one of his
fellowservants, which owed him an hundred pence : and
he laid hands on him, and took him by the throat,
saying, Pay me that thou owest. 29 And his fellow-
servant fell down at his feet, and besought him, saying,

जहां वह और तुम ही हो, उसका दोष उसे समझा दो। यदि वह तुम्हारी सुन
ले तो तुमने अपने भाई को प्राप्त कर लिया। १६ परंतु यदि वह न सुने तो अपने
साथ एक अथवा दो और ले जाओ, जिससे दो या तीन साक्षियों के सम्मुख
प्रत्येक विषय निश्चित हो। १७ यदि वह उनकी भी न सुने तो कलीसिया
से कहो; और यदि वह कलीसिया की भी न सुने तो उसे अन्यजाति और
कर लेने वालों के सदृश समझो। १८ मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो कुछ
तुम पृथ्वी पर बांधोगे, वह स्वर्ग में बंधेगा; और जो तुम पृथ्वी पर खोल
दोगे, वह स्वर्ग में भी खुला रहेगा।

सामुदायिक प्रार्थना

१९ 'और भी, मैं तुमसे सच कहता हूं कि यदि तुममें से दो पृथ्वी पर किसी
बात के लिए एक-मत होकर उसे मांगें, तो मेरे स्वर्गिक पिता की ओर से
उनके लिए हो जाएगा। २० क्योंकि जहां दो या तीन मेरे नाम से एकत्र होते
हैं, वहां मैं उनके बीच में हूं।'

क्षमा धर्म

२१ तब पतरस ने पास आकर उनसे कहा, 'प्रभु, कितनी बार मेरा भाई
मेरे विरुद्ध पाप करे, और मैं उसे क्षमा करता रहूं? क्या सात बार?'
२२ यीशु बोले, 'मैं तुम से कहता हूं, सात बार नहीं, वरन् सात से सत्तर
गुने तक।

२३ 'अस्तु, स्वर्ग-राज्य की तुलना किसी राजा से हो सकती है, जिसने
अपने दासों से लेखा लेना चाहा। २४ जब वह लेखा लेने लगा, तो उसके
सामने एक मनुष्य लाया गया जिस पर दस सहस्र मुद्रा* का ऋण था।
२५ उसके पास देने को कुछ था नहीं, इसलिए स्वामी ने आज्ञा दी कि वह,
उसकी स्त्री, बच्चे तथा जो कुछ उसके पास है, बेच दिया जाए और ऋण चुका
लिया जाए। २६ इस पर वह दास उसके सामने गिर पड़ा और विनय करने
लगा, "प्रभु, धैर्य रखिए मैं आपको सब कुछ चुका दूंगा।" २७ उस दास के
स्वामी ने दया कर उसे मुक्त कर दिया, और उसका ऋण भी क्षमा कर दिया।
२८ परंतु वह दास बाहर निकला तो उसे अपना एक साथी-दास मिला, जिस
पर उसका सौ दीनार† ऋण था। वह उसे पकड़ कर उसका गला घोंटने लगा
और बोला, "जो कुछ तुझ पर ऋण है, वह लौटा।" २९ उसका साथी-दास

* मूल में, 'तलन्त'
† इस मुद्रा का मूल्य लगभग ५० नये पैसे था॥

Have patience with me, and I will pay thee all. 30 And
he would not : but went and cast him into prison, till he
should pay the debt. 31 So when his fellowservants saw
what was done, they were very sorry, and came and told
unto their lord all that was done. 32 Then his lord,
after that he had called him, said unto him, O thou
wicked servant, I forgave thee all that debt, because
thou desiredst me : 33 shouldest not thou also have had
compassion on thy fellowservant, even as I had pity on
thee ? 34 And his lord was wroth, and delivered him to
the tormentors, till he should pay all that was due unto
him. 35 So likewise shall my heavenly Father do also
unto you, if ye from your hearts forgive not every one
his brother their trespasses.

A QUESTION ABOUT DIVORCE

19 And it came to pass, that when Jesus had finished
these sayings, he departed from Galilee, and came
into the coasts of Judæa beyond Jordan ; 2 And great
multitudes followed him ; and he healed them there.

3 The Pharisees also came unto him, tempting him,
and saying unto him, Is it lawful for a man to put away
his wife for every cause ? 4 And he answered and said
unto them, Have ye not read, that he which made
them at the beginning

Made them male and female,

5 and said,

For this cause shall a man leave father and mother,
And shall cleave to his wife :
And they twain shall be one flesh ?

6 Wherefore they are no more twain, but one flesh.
What therefore God hath joined together, let not man
put asunder. 7 They say unto him, Why did Moses
then command to give a writing of divorcement, and to
put her away ? 8 He saith unto them, Moses because
of the hardness of your hearts suffered you to put
away your wives : but from the beginning it was not
so. 9 And I say unto you, Whosoever shall put away

उसके सामने गिर पड़ा, और निवेदन करने लगा, "धैर्य रखिए, मैं आपको सब
चुका दूंगा।" ३० पर वह न माना, और जाकर उसे कारागार में डाल
दिया, कि जब तक ऋण न चुका दे वहीं रहे। ३१ यह देखकर उसके साथी-
दास बहुत खिन्न हुए, और जाकर सब घटना स्वामी को बता दी। ३२ तब
उसके स्वामी ने उसे बुलाकर कहा, "दुष्ट दास, तेरे निवेदन करने पर मैंने तेरा
वह सब ऋण क्षमा कर दिया था। ३३ तो क्या यह उचित नहीं था कि जैसे
मैंने तुझ पर दया की, वैसे ही तू अपने साथी दास पर दया करता?"
३४ स्वामी ने क्रुद्ध होकर उसे दंड देने वालों के हाथ दे दिया कि जब तक सब
ऋण लौटा न दे, उनके हाथ में रहे। ३५ इसी प्रकार यदि तुम में से प्रत्येक
अपने भाई को हृदय से क्षमा न करे तो मेरा स्वर्गिक पिता तुम्हारे साथ वैसा
ही करेगा।'

१९

१ जब यीशु यह कथन समाप्त कर चुके तो गलील से बिदा हुए, और
यरदन पार यहूदिया की सीमा में आए। २ विशाल जनसमूह उनके पीछे हो
लिया और उन्होंने वहां लोगों को स्वस्थ किया।

तलाक का प्रश्न

३ इसके उपरांत फरीसी उनके पास आए और उनकी परीक्षा करने के
लिए बोले, 'क्या जिस किसी भी कारण से अपनी पत्नी को त्याग देना विहित
है?' ४ उन्होंने उत्तर दिया, 'क्या तुमने नहीं पढ़ा कि सृष्टिकर्त्ता ने आरम्भ
से ही

"उनको नर और नारी बनाया"

५ और कहा,

"इस कारण, पुरुष अपने माता-पिता को छोड़ेगा
और अपनी पत्नी के साथ रहेगा,
और वे दोनों एक तन होंगे।"

६ अस्तु, अब वे दो नहीं, वरन् एक तन हैं। इसलिए जिसे परमेश्वर ने जोड़ा
है, उसे मनुष्य पृथक् न करे।' ७ फरीसियों ने पूछा, 'फिर मूसा ने त्यागपत्र
देकर परित्याग करने की आज्ञा क्यों दी?' ८ यीशु ने उनसे कहा, 'तुम्हारे
मन की कठोरता के कारण उन्होंने तुमको पत्नी को त्याग देने की अनुमति
दी, परंतु आरम्भ से ऐसा नहीं था। ९ मैं तुमसे कहता हूं कि जो कोई

his wife, except it be for fornication, and shall marry
another, committeth adultery: and whoso marrieth her
which is put away doth commit adultery. 10 His
disciples say unto him, If the case of the man be so
with his wife, it is not good to marry. 11 But he
said unto them, All men cannot receive this saying,
save they to whom it is given. 12 For there are
some eunuchs, which were so born from their mother's
womb: and there are some eunuchs, which were made
eunuchs of men: and there be eunuchs, which have
made themselves eunuchs for the kingdom of heaven's
sake. He that is able to receive it, let him receive it.

JESUS BLESSES LITTLE CHILDREN

13 Then were there brought unto him little children,
that he should put his hands on them, and pray: and
the disciples rebuked them. 14 But Jesus said, Suffer
little children, and forbid them not, to come unto me:
for of such is the kingdom of heaven. 15 And he laid
his hands on them, and departed thence.

RICHES OR ETERNAL LIFE

16 And, behold, one came and said unto him, Good
Master, what good thing shall I do, that I may have
eternal life? 17 And he said unto him, Why callest
thou me good? there is none good but one, that is,
God: but if thou wilt enter into life, keep the commandments.
18 He saith unto him, Which? Jesus said,
Thou shalt do no murder, Thou shalt not commit
adultery, Thou shalt not steal, Thou shalt not bear false
witness, 19 Honour thy father and thy mother: and,
Thou shalt love thy neighbour as thyself. 20 The
young man saith unto him, All these things have I kept
from my youth up: what lack I yet? 21 Jesus said unto
him, If thou wilt be perfect, go and sell that thou hast,
and give to the poor, and thou shalt have treasure in
heaven: and come and follow me. 22 But when the
young man heard that saying, he went away sorrowful:
for he had great possessions.

व्यभिचार के अतिरिक्त और किसी कारण से अपनी पत्नी का त्याग दे, और
दूसरी से विवाह करे, तो वह व्यभिचार करता है।' १० शिष्यों ने उनसे
कहा, 'यदि पति-पत्नी का संबंध ऐसा है तो विवाह न करना ही अच्छा।'
११ यीशु ने उनसे कहा, 'सब इस शिक्षा को ग्रहण नहीं कर सकते, केवल
वही जिनको इसका वरदान मिला है; १२ क्योंकि कुछ लोग माता के गर्भ से
ही नपुंसक उत्पन्न हुए हैं, कुछ लोगों को मनुष्यों ने नपुंसक बना दिया है, किंतु
कुछ लोगों ने स्वर्ग-राज्य के निमित्त अपने आपको नपुंसक बना लिया है।
जो यह ग्रहण कर सकता है, ग्रहण करे।'

बालकों को आशीर्वाद

१३ तब लोग बालकों को उनके पास लाए कि वह उन पर हांथ रखें और
प्रार्थना करें, पर शिष्यों ने उन्हें रोका। १४ यीशु ने कहा, 'बालकों को मेरे
पास आने दो, मना न करो, क्योंकि स्वर्ग-राज्य ऐसों का ही है।' १५ और
वह उनके सिर पर हाथ रख वहां से चले गए।

धन या शाश्वत जीवन

१६ एक मनुष्य ने समीप आकर उनसे कहा, 'गुरु, मैं कौन सा अच्छा
कार्य करूं कि शाश्वत जीवन पाऊं।' १७ वह बोले, 'तू मुझसे अच्छाई के
संबंध में क्यों पूछता है? केवल एक अच्छा है। यदि तू जीवन में प्रवेश
करना चाहता है तो आज्ञाओं का पालन कर।' १८ वह बोला 'कौन सी
आज्ञाएं।' यीशु ने कहा, 'हत्या न कर, व्यभिचार न कर, चोरी न कर, झूठी
साक्षी न दे, १९ अपने माता-पिता का आदर कर और अपने पड़ोसी को
अपने समान प्रेम कर।' २० नवयुवक ने उत्तर दिया, 'इन सबको मैंने पालन
किया है, फिर मुझ में क्या कमी है?' २१ यीशु ने उससे कहा, 'यदि तू पूर्ण
होना चाहे तो अपनी संपत्ति बेचकर दरिद्रों को दे डाल, और स्वर्ग में तुझे धन
मिलेगा; तब आ और मेरा अनुयायी हो।' २२ वह युवक यह बचन सुन
कर व्यथित हो चला गया, क्योंकि उसके पास बहुत संपत्ति थी।

23 Then said Jesus unto his disciples, Verily I say
unto you, That a rich man shall hardly enter into the
kingdom of heaven. 24 And again I say unto you, It is
easier for a camel to go through the eye of a needle,
than for a rich man to enter into the kingdom of God.
25 When his disciples heard it, they were exceedingly
amazed, saying, who then can be saved ? 26 But Jesus
beheld them, and said unto them, With men this is
impossible ; but with God all things are possible.
27 Then answered Peter and said unto him, Behold, we
have forsaken all, and followed thee ; what shall we have
therefore ? 28 And Jesus said unto them, Verily I say
unto you, That ye which have followed me, in the
regeneration when the Son of man shall sit in the
throne of his glory, ye also shall sit upon twelve thrones,
judging the twelve tribes of Israel. 29 And every one
that hath forsaken houses, or brethren, or sisters, or
father, or mother, or wife, or children, or lands, for my
name's sake, shall receive an hundredfold, and shall
inherit everlasting life. 30 But many that are first shall
be last ; and the last shall be first.

THE LABOURERS IN THE VINEYARD

20 For the kingdom of heaven is like unto a man
that is an householder, which went out early in
the morning to hire labourers into his vineyard. 2 And
when he had agreed with the labourers for a penny a
day, he sent them into his vineyard. 3 And he went
out about the third hour, and saw others standing idle
in the marketplace, 4 and said unto them ; Go ye also
into the vineyard, and whatsoever is right I will give
you. And they went their way. 5 Again he went out
about the sixth and ninth hour, and did likewise.
6 And about the eleventh hour he went out, and found
others standing idle, and saith unto them, Why stand ye
here all the day idle ? 7 They say unto him, Because no
man hath hired us. He saith unto them, Go ye also
into the vineyard ; and whatsoever is right, that shall ye

२३ इस पर यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, 'मैं तुमसे सच कहता हूं कि
धनवान का स्वर्ग-राज्य में प्रवेश करना कठिन है। २४ मैं तुमसे फिर कहता
हूं स्वर्ग-राज्य में धनवान के प्रवेश करने की अपेक्षा ऊंट का सुई के छिद्र में
होकर निकल जाना अधिक सरल है।' यह सुनकर उनके शिष्य बहुत
चकित हुए, और कहने लगे, 'तो फिर उद्धार किसका हो सकता है?'
२६ यीशु ने उनकी ओर एकटक देखकर कहा, 'मनुष्यों के लिए तो यह असम्भव
है, पर परमेश्वर के लिए सब कुछ सम्भव है।' २७ तब पतरस ने उनसे
पूछा, 'देखिए, हम तो सब कुछ त्याग कर आपके अनुयायी हो गए हैं,
हमें क्या मिलेगा?' २८ यीशु ने कहा, 'मैं सच कहता हूं कि नई सृष्टि में जब
मानव-पुत्र अपने महिमामय सिंहासन पर बैठगा तो तुम, जिन्होंने मेरा अनु-
सरण किया है, बारह सिंहासनों पर बैठोगे और इस्राएल के बारह गोत्रों का
न्याय करोगे। २९ जिस किसी ने मेरे नाम के लिए घर, भाई, बहिन, पिता,
माता, संतान या भूमि का परित्याग किया है, वह कई गुना पाएगा, और
शाश्वत जीवन का अधिकारी होगा। ३० परंतु अनेक जो प्रथम हैं, अंतिम
होंगे; और जो अंतिम हैं, प्रथम।

२०

दाख उद्यान के श्रमिकों का दृष्टांत

१ 'स्वर्ग-राज्य उस गृहस्वामी के सदृश है जो प्रातःकाल निकला कि अपने
दाख-उद्यान में श्रमिक लगाए। २ उसने श्रमिकों को एक दीनार* प्रतिदिन
पर ठहरा कर अपने दाख-उद्यान में भेजा। फिर लगभग एक पहर दिन चढ़ने
पर वह बाहर आया तो औरों को बाजार में बेकार खड़े देखा। ४ उसने उनसे
कहा, "तुम भी दाख-उद्यान में जाओ और जो उचित होगा वह मैं तुम्हें दूंगा।"
५ वे चले गए। उसने फिर दूसरे और तीसरे पहर बाहर निकल कर वैसा
ही किया। ६ एक घड़ी दिन रहे वह फिर बाहर गया तथा औरों को वहां
खड़े पाया। उसने उनसे कहा, "तुम यहां दिन भर क्यों बेकार खड़े रहे?"
७ वे बोले, "क्योंकि किसी ने हमें मजदूरी पर नहीं लगाया।" उसने उनसे

*इस मुद्रा का मूल्य लगभग ५० नए पैसे था।

receive. 8 So when even was come, the lord of the
vineyard saith unto his steward, Call the labourers, and
give them their hire, beginning from the last unto the
first.

9 And when they came that were hired about the
eleventh hour, they received every man a penny.
10 But when the first came, they supposed that they
should have received more : and they likewise received
every man a penny. 11 And when they had received
it, they murmured against the goodman of the house,
12 saying, These last have wrought but one hour, and
thou hast made them equal unto us, which have borne
the burden and heat of the day. 13 But he answered
one of them, and said, Friend, I do thee no wrong : didst
not thou agree with me for a penny ? 14 Take that
thine is, and go thy way : I will give unto this last, even
as unto thee. 15 Is it not lawful for me to do what I
will with mine own ? Is thine eye evil, because I am
good ? 16 So the last shall be first, and the first last :
for many be called, but few chosen.

THE THIRD PREDICTION OF HIS OWN DEATH

17 And Jesus going up to Jerusalem took the twelve
disciples apart in the way, and said unto them, 18 Behold,
we go up to Jerusalem ; and the Son of man shall be
betrayed unto the chief priests and unto the scribes, and
they shall condemn him to death, 19 and shall deliver
him to the Gentiles to mock, and to scourge, and to
crucify him : and the third day he shall rise again.

A REQUEST FOR WORLDLY HONOUR

20 Then came to him the mother of Zebedee's chil-
dren with her sons, worshipping him, and desiring a
certain thing of him. 21 And he said unto her, What
wilt thou ? She saith unto him, Grant that these my
two sons may sit, the one on thy right hand, and the
other on the left, in thy kingdom. 22 But Jesus
answered and said, Ye know not what ye ask. Are ye
able to drink of the cup that I shall drink of, and to be
baptized with the baptism that I am baptized with ?

कहा, "तुम भी उद्यान में जाओ।" ८ सायंकाल होने पर दाख-उद्यान के
स्वामी ने प्रबंधकर्ता को बुलाकर कहा, "श्रमिकों को बुलाओ और अंत में
आनेवालों से आरंभ कर पहिले आनेवालों तक को उनका पारिश्रमिक दो।"
९ 'अस्तु, जब वे जो एक घड़ी दिन रहे लगाए गए थे, आए तो उन्हें एक
एक दीनार मिला। १० इस पर जो पहले आए थे, उन्होंने समझा कि हमें
अधिक मिलेगा ; परन्तु उन्हें भी एक-एक दीनार ही मिला। ११ उसे लेकर वे
गृह स्वामी पर कुड़कुड़ाने लगे, १२ और बोले, "इन पिछले लोगों ने एक ही
घड़ी काम किया था तो भी आपने इन्हें हमारे तुल्य कर दिया जिन्होंने दिन
भर का भार और धूप सहन की।" १३ उसने उनमें से एक को उत्तर दिया,
"मित्र, मैं तेरे साथ कोई अन्याय नहीं कर रहा। क्या तूने मुझसे एक दीनार
नहीं ठहराया था ? जो तेरा है, ले और चला जा। १५ मेरी इच्छा है कि
जितना तुझे दूं उतना ही इस पिछले को भी दूं। क्या मुझे अधिकार नहीं
कि जो मेरा है उससे मैं जो चाहूं करूं ? क्या मेरा उदार होना तेरी आंखों
में खटकता है ?" १६ इस प्रकार जो अंतिम हैं वे प्रथम होंगे ; और जो प्रथम
हैं, वे अंतिम।'

मृत्यु के संबंध में तीसरी भविष्यवाणी

१७ यरूसलेम जाते समय यीशु बारह को एकांत में ले गए और मार्ग में
उनसे कहने लगे, १८ 'देखो, हम यरूशलेम को जा रहे हैं ; और मानव-पुत्र
पुरोहितों और शास्त्रियों के हाथ में दे दिया जाएगा। वे उसे प्राण-दंड के
योग्य ठहराएंगे १९ और अन्यजातियों को सौंप देंगे कि लोग उसका उपहास
करें, उसे कोड़े लगाएं और क्रूस पर चढ़ाएं। परंतु तीसरे दिन वह जीवित
हो उठेगा।'

सांसारिक संमान

२० तब जबदी के पुत्रों की माता अपने पुत्रों के साथ यीशु के पास आई
और वंदना कर उनसे कुछ मांगना चाहा। २१ उन्होंने उससे कहा, 'क्या
चाहती हो ?' वह बोली, 'आज्ञा दीजिए कि आपके राज्य में मेरे ये दोनों
पुत्र, एक आपके दाहिने, और दूसरा बांए, बैठें।' २२ यीशु ने उत्तर दिया, 'तुम्हें
पता नहीं कि तुम क्या मांग रहे हो। क्या तुममें वह प्याला पीने की सामर्थ्य

They say unto him, We are able. 23 And he saith unto
them, Ye shall drink indeed of my cup, and be baptized
with the babtism that I am baptized with : but to sit on
my right hand, and on my left, is not mine to give, but
it shall be given to them for whom it is prepared of my
Father. 24 And when the ten heard it, they were
moved with indignation against the two brethren.

TRUE GREATNESS

25 But Jesus called them unto him, and said, Ye
know that the princes of the Gentiles exercise dominion
over them, and they that are great exercise authority
upon them. 26 But it shall not be so among you : but
whosoever will be great among you, let him be your
minister ; 27 and whosoever will be chief among you,
let him be your servant : 28 even as the Son of man
came not to be ministered unto, but to minister, and
to give his life a ransom for many.

TWO BLIND MEN RECEIVE SIGHT

29 And as they departed from Jericho, a great mul-
titude followed him. 30 And, behold, two blind men
sitting by the way side, when they heard that Jesus passed
by, cried out, saying, Have mercy on us, O Lord, thou
son of David. 31 And the multitude rebuked them,
because they should hold their peace : but they cried the
more, saying, Have mercy on us, O Lord, thou son of
David. 32 And Jesus stood still, and called them, and
said, What will ye that I shall do unto you ? 33 They
say unto him, Lord, that our eyes may be opened. 34 So
Jesus had compassion on them, and touched their eyes :
and immediately their eyes received sight, and they
followed him.

JESUS' TRIUMPHAL ENTRY INTO JERUSALEM

21 And when they drew nigh unto Jerusalem, and
were come to Bethphage, unto the mount of Olives,
then sent Jesus two disciples, 2 saying unto them, Go

है जो मैं पीनेवाला हूं ?' वे बोले, 'हां हममें है।' २३ यीशु ने कहा, 'मेरा प्याला तो तुम पियोगे, परंतु अपने दाहिने और बांए बैठाना मेरा काम नहीं है। यह उनके लिए है जिनके लिए मेरे पिता ने इसे प्रस्तुत किया है।' २४ अस्तु, जब दस ने यह सुना तो वे दोनों भाइयों पर रुष्ट हुए।

सेवा की भावना

२५ यीशु ने उन्हें बुलाकर कहा, 'तुम जानते हो कि अन्यजाति के शासक उन पर निरंकुश शासन करते हैं और उनके बड़े लोग उन पर अधिकार जमाते हैं। २६ परंतु तुम में ऐसा नहीं होगा; वरन् तुम में जो महान् बनना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने; २७ और जो तुममें प्रथम होना चाहे, वह तुम्हारा दास बने; जैसे मानव-पुत्र सेवा कराने नहीं वरन् सेवा करने और बहुतों के बदले, उनकी मुक्ति के मूल्य में, अपने प्राण देने आया।'

दो अंधों को दृष्टि दान

२९ जब वे यरीहो से निकल रहे थे तो विशाल जनसमूह यीशु के पीछे हो लिया। ३० मार्ग के किनारे बैठे हुए दो अंधों ने सुना कि यीशु जा रहे हैं, तो पुकार कर कहने लगे, 'हे प्रभु, दाऊद-पुत्र, हम पर दया कीजिए।' ३१ जनसमूह ने उनको रोका कि चुप हो जाएं, पर वे और भी उच्च स्वर में चिल्लाए, 'प्रभु, दाऊद-पुत्र, हम पर दया कीजिए।' ३२ यीशु खड़े हो गए और उनको बुलाकर कहा, 'तुम क्या चाहते हो ? मैं तुम्हारे लिए क्या करूं ?' ३३ वे बोले, 'प्रभु हमारी आंखें खुल जाएं।' ३४ यीशु ने दया से द्रवित होकर उनकी आंखें स्पर्श की। उसी क्षण उन्हें दिखाई देने लगा और वे उनके पीछे हो लिए।

२१

यरूशलेम में ख्रिस्त का प्रवेश

१ जब वे लोग यरूशलेम के निकट पहुंचे और जैतून पर्वत पर बेतफगे के समीप आए, तो यीशु ने दो शिष्यों को यह कह कर भेजा, २ 'अपने सामने के

into the village over against you, and straightway ye
shall find an ass tied, and a colt with her : loose them,
and bring them unto me. 3 And if any man say ought
unto you, ye shall say, The Lord hath need of them ;
and straightway he will send them. 4 All this was
done, that it might be fulfilled which was spoken by
the prophet saying,

5 Tell ye the daughter of Sion,
Behold, thy King cometh unto thee,
Meek, and sitting upon an ass,
And a colt the foal of an ass.

6 And the disciples went, and did as Jesus commanded
them, 7 and brought the ass, and the colt, and put on
them their clothes, and they set him thereon. 8 And
a very great multitude spread their garments in the
way ; others cut down branches from the trees, and
strawed them in the way. 9 And the multitudes that
went before, and that followed, cried, saying,

Hosanna to the son of David ;
Blessed is he that cometh in the name of the Lord ;
Hosanna in the highest.

10 And when he was come into Jerusalem, all the
city was moved, saying, Who is this ? 11 And the
multitude said, This is Jesus the prophet of Nazareth
of Galilee.

HE CLEANSES THE TEMPLE

12 And Jesus went into the temple of God, and
cast out all them that sold and bought in the temple,
and overthrew the tables of the moneychangers, and
the seats of them that sold doves, 13 and said unto
them, It is written, My house shall be called the house
of prayer ; but ye have made it a den of thieves.

14 And the blind and the lame came to him in the
temple ; and he healed them. 15 And when the chief
priests and scribes saw the wonderful things that he
did, and the children crying in the temple, and saying,

गांव में जाओ। वहां पहुंचते ही तुम एक गदही बंधी पाओगे और उसके साथ
एक बच्चा होगा। उनको खोलकर मेरे पास ले आओ। ३ यदि कोई तुमसे
कुछ बोले तो कह देना, "प्रभु को इनकी आवश्यकता है" और वह तुरंत उन्हें
भेज देगा।' ४ यह इसलिए हुआ कि नबी-कथित यह वचन पूरा हो,

५ 'सिय्योन की पुत्री से कहो,
देख, तेरे राजा तेरे समीप आते हैं,
वह विनम्र हैं, गदहे पर, उसके बच्चे पर,
वरन् लद्दू के बच्चे पर बैठे हैं।'

६ शिष्यों ने जाकर यीशु की आज्ञानुसार किया। ७ वे गदही और उसके
बच्चे को लाए, और उन पर अपने वस्त्र डाले, जिन पर यीशु बैठ गए।
८ जनसमूह में से बहुतों ने मार्ग में अपने वस्त्र बिछाए, और दूसरों ने वृक्षों से
डालियां काट-काट कर मार्ग में बिछाईं। ९ यीशु के आगे-आगे चलने
वाला जनसमूह जयघोष कर रहा था,

'दाऊद-पुत्र को होशाना!
प्रभु के नाम से आने वाले की स्तुति।
उच्चतम स्थानों में होशाना।'

१० जब उन्होंने यरूशलेम में प्रवेश किया तो समस्त नगर में हलचल मच
गई। लोग कहने लगे, 'यह कौन हैं?' ११ जनसमूह ने कहा, 'यह गलील
के नासरत-निवासी नबी यीशु हैं।'

मंदिर का परिष्कार

१२ यीशु ने मंदिर में प्रवेश किया और वहां से क्रय-विक्रय करने वाले सब
लोगों को बाहर निकाल दिया। उन्होंने मुद्रा-विनिमय करने वालों की मेजें और
कपोत बेचने वालों की गद्दियां उलट दीं; १३ और उनसे कहा, 'शास्त्र का लेख
है. "मेरा घर प्रार्थना का घर कहलाएगा" पर तुमने उसे "डाकुओं का अड्डा"
बना लिया है।'

१४ मंदिर में उनके समीप अंधे और लंगड़े आए; और यीशु ने उनको
स्वस्थ कर दिया। १५ उनके चमत्कारों को देख कर, और मंदिर में बालकों
से 'दाऊद-पुत्र को होशाना' यह चिल्लाते हुए सुनकर, महापुरोहित और शास्त्री

Hosanna to the son of David; they were sore dis-
pleased, 16 and said unto him, Hearest thou what these
say? And Jesus saith unto them, Yea; have ye never
read, Out of the mouth of babes and sucklings thou
hast perfected praise? 17 And he left them, and went
out of the city into Bethany; and he lodged there.

THE BARREN FIG TREE

18 Now in the morning as he returned into the
city, he hungered. 19 And when he saw a fig tree in
the way, he came to it, and found nothing thereon,
but leaves only, and said unto it, Let no fruit grow
on thee henceforward for ever. And presently the fig
tree withered away. 20 And when the disciples saw
it, they marvelled, saying, How soon is the fig tree
withered away! 21 Jesus answered and said unto them,
Verily I say unto you, If ye have faith, and doubt not,
ye shall not only do this which is done to the fig tree,
but also if ye shall say unto this mountain, Be thou
removed, and be thou cast into the sea; it shall be done.
22 And all things, whatsoever ye shall ask in prayer,
believing, ye shall receive.

JESUS' AUTHORITY QUESTIONED

23 And when he was come into the temple, the
chief priests and the elders of the people came unto him
as he was teaching, and said, By what authority doest
thou these things? and who gave thee this authority?
24 And Jesus answered and said unto them, I also will
ask you one thing, which if ye tell me, I in like wise
will tell you by what authority I do these things.
25 The baptism of John, whence was it? from heaven,
or of men? And they reasoned with themselves, saying,
If we shall say, From heaven; he will say unto us,
Why did ye not then believe him? 26 But if we shall
say, Of men; we fear the people; for all hold John as
a prophet. 27 And they answered Jesus, and said, We
cannot tell. And he said unto them, Neither tell I you
by what authority I do these things.

अत्यंत रुष्ट हुए, १६ और यीशु से बोले, 'क्या आप सुनते हैं कि ये क्या कह
रहे हैं?' यीशु ने कहा, 'हां, परंतु क्या तुमने नहीं पढ़ा, "बालकों और
शिशुओं के मुख से आपने अपनी स्तुति संपन्न कराई है।"' १७ और वह
उन्हें छोड़ कर बाहर बैतनी नगर को चले गए, एवं वहीं विश्राम किया।

फल-रहित अंजीर का वृक्ष

१८ प्रातःकाल नगर को लौटते समय उनको भूख लगी १९ तो वह मार्ग
के किनारे अंजीर का एक वृक्ष देख कर उसके पास गए; परंतु उसमें पत्तों को
छोड़कर कुछ नहीं पाया। उन्होंने उससे कहा, 'अब से तुझमें कभी फल
न लगें।' वह अंजीर का वृक्ष उसी क्षण सूख गया। २० यह देखकर शिष्यों
को आश्चर्य हुआ और वे बोले, 'यह अंजीर का वृक्ष तुरंत कैसे सूख गया?'
२१ यीशु ने उत्तर दिया, 'मैं तुमसे सच कहता हूं कि यदि तुम विश्वास करो
और संदेह न करो, तो तुम न केवल वह करोगे जो अंजीर के वृक्ष के साथ
हुआ, परंतु यदि तुम इस पर्वत को आज्ञा दोगे, "उठ और समुद्र में जा गिर,"
तो यह भी हो जाएगा। २२ और जो कुछ तुम प्रार्थना में विश्वास के साथ
मांगोगे वह तुम्हें मिलेगा।'

यीशु के अधिकार पर शंका

२३ जब वह मंदिर में प्रवेश कर उपदेश दे रहे थे तो महापुरोहितों और
धर्मवृद्धों ने उनके पास आकर कहा, 'किस अधिकार से आप ये कार्य करते
हैं? और किसने आपको यह अधिकार दिया है?' २४ यीशु ने उन्हें
उत्तर दिया, 'मैं भी तुमसे एक प्रश्न करता हूं; यदि तुम मुझे बताओगे, तो मैं
भी बता दूंगा कि किस अधिकार से ये कार्य करता हूं। २५ यूहन्ना का
बपतिस्मा किसकी ओर से था? स्वर्ग की ओर से या मनुष्यों की ओर से?'
वे आपस में तर्क-वितर्क करने लगे, 'यदि हम कहें "स्वर्ग की ओर से" तो वह
हमसे कहेंगे "फिर तुमने क्यों उनका विश्वास नहीं किया?" २६ परंतु हम
यदि कहें, "मनुष्य की ओर से," तो हमें जनता से डर लगता है, क्योंकि सब
यूहन्ना को नबी मानते हैं।' २७ अस्तु, उन्होंने यीशु को उत्तर दिया, 'हम
नहीं जानते।' इस पर उन्होंने भी उनसे कहा, 'मैं भी तुम्हें नहीं बताता कि
कि मैं किस अधिकार से ये कार्य करता हूं।

PARABLE OF THE TWO SONS

28 But what think ye ? A certain man had two sons;
and he came to the first, and said, Son, go work to day in
my vineyard. 29 He answered and said, I will not : but
afterward he repented, and went. 30 And he came to the
second, and said likewise. And he answered and said, I
go, sir : and went not. 31 Whether of them twain did
the will of his father ? They say unto him, The first.
Jesus saith unto them, Verily I say unto you, That the
publicans and the harlots go into the kingdom of God
before you. 32 For John came unto you in the way of
righteousness, and ye believed him not : but the publi-
cans and the harlots believed him : and ye, when ye had
seen it, repented not afterward, that ye might believe
him.

PARABLE OF THE VINEYARD

33 Hear another parable : There was a certain
householder, which planted a vineyard, and hedged it
round about, and digged a winepress in it, and built a
tower, and let it out to husbandmen, and went into a
far country : 34 and when the time of the fruit drew
near, he sent his servants to the husbandmen, that they
might receive the fruits of it. 35 And the husband-
men took his servants, and beat one, and killed another,
and stoned another. 36 Again, he sent other servants
more than the first : and they did unto them likewise.
37 But last of all he sent unto them his son, saying,
They will reverence my son. 38 But when the hus-
bandmen saw the son, they said among themselves,
This is the heir ; come, let us kill him, and let us seize
on his inheritance. 39 And they caught him, and cast
him out of the vineyard, and slew him. 40 When the
lord therefore of the vineyard cometh, what will he do
unto those husbandmen ? 41 They say unto him, He
will miserably destroy those wicked men, and will let
out his vineyard unto other husbandmen, which shall
render him the fruits in their seasons. 42 Jesus saith
unto them, Did ye never read in the scriptures,

दो पुत्रों का दृष्टांत

२८ 'तुम्हारा क्या विचार है ? एक मनुष्य के दो पुत्र थे। उसने पहिले
के पास जाकर कहा, "पुत्र आज दाख-उद्यान में जाकर काम करो।" २९
उसने उत्तर दिया, "पिताजी, मैं जाता हूं;" पर नहीं गया। ३० फिर
पिता ने दूसरे के पास जाकर ऐसा ही कहा। उसने उत्तर दिया, "मैं नहीं
जाता"; परंतु पीछे पछताया और चला गया। ३१ इनमें से किसने अपने
पिता की इच्छा पूरी की ?' वे बोले, 'दूसरे ने।' यीशु ने उनसे कहा, 'मैं
तुमसे सच कहता हूं कि कर लेनेवाले और वेश्याएं परमेश्वर के राज्य में तुमसे
पहिले प्रवेश कर रही हैं। ३२ क्योंकि यूहन्ना धर्म का मार्ग दिखाते हुए तुम्हारे
पास आए और तुमने उन पर विश्वास नहीं किया, परन्तु कर लेनेवालों और
वेश्याओं ने उन पर विश्वास किया। तुमने देखा, और फिर भी पश्चाताप
करके उन पर विश्वास नहीं किया।

दाख के उद्यान का दृष्टांत

३३ 'एक और दृष्टांत सुनो। एक गृहस्थ था जिसने दाख का उद्यान
लगाया; उसके चारों ओर बाड़ा बांधा, उसमें रस का कुंड खोदा एवं मचान
बनाया; और फिर उसे कृषकों को पट्टे पर देकर विदेश चला गया। ३४ जब
फल की ऋतु आई तो उसने कृषकों के पास अपने दास भेजे कि फल प्राप्त
करें। ३५ परंतु कृषकों ने उसके दासों को पकड़ कर किसी को पीटा, किसी
की हत्या की, और किसी को पत्थरों से मार डाला। ३६ तब उसने पहिले
से अधिक दासों को भेजा; परंतु उन्होंने उनके साथ भी वैसा ही किया।
३७ अंत में यह सोचकर कि ये लोग मेरे पुत्र का आदर करेंगे, उसने अपने
पुत्र को उनके पास भेजा। ३८ जब कृषकों ने पुत्र को देखा तो आपस में कहा,
"यह उत्तराधिकारी है; आओ, इसे मार डालें, और इसकी पैतृक संपति ले
लें।" ३९ उन्होंने उसे पकड़ा और दाख-उद्यान के बाहर निकाल कर मार
डाला। ४० जब दाख-उद्यान का स्वामी आएगा तो इन कृषकों के साथ क्या
करेगा ?' ४१ उन्होंने कहा, 'वह उन दुष्टों का विनाश करेगा और दाख-
उद्यान दूसरे कृषकों को दे देगा, जो ऋतु आने पर उसे फल का भाग दिया
करेंगे।' ४२ यीशु ने उनसे कहा, 'क्या तुमने शास्त्र में कभी नहीं पढ़ा,

The stone which the builders rejected,
The same is become the head of the corner :
This is the Lord's doing,
And it is marvellous in our eyes ?

43 Therefore say I unto you, The kingdom of God
shall be taken from you, and given to a nation bring-
ing forth the fruits thereof. 44 And whosoever shall
fall on this stone shall be broken : but on whom-
soever it shall fall, it will grind him to powder. 45 And
when the chief priests and Pharisees had heard his
parables, they perceived that he spake of them. 46 But
when they sought to lay hands on him, they feared the
multitude, because they took him for a prophet.

PARABLE OF THE MARRIAGE FEAST

22 And Jesus answered and spake unto them again
by parables, and said, 2 The kingdom of heaven
is like unto a certain king, which made a marriage for
his son, 3 and sent forth his servants to call them that
were bidden to the wedding : and they would not
come. 4 Again, he sent forth other servants, saying,
Tell them which are bidden, Behold, I have prepared
my dinner : my oxen and my fatlings are killed, and
all things are ready : come unto the marriage. 5 But
they made light of it, and went their ways, one to his
farm, another to his merchandise : 6 and the remnant
took his servants, and entreated them spitefully, and
slew them. 7 But when the king heard thereof, he was
wroth : and he sent forth his armies, and destroyed those
murderers, and burned up their city. 8 Then saith he to
his servants, The wedding is ready, but they which
were bidden were not worthy. 9 Go ye therefore into
the highways, and as many as ye shall find, bid to the
marriage. 10 So those servants went out into the high-
ways, and gathered together all as many as they found,
both bad and good : and the wedding was furnished
with guests. 11 And when the king came in to see
the guests, he saw there a man which had not on a

"जिस पत्थर को भवन-निर्माताओं ने निकृष्ट समझा,
वह मेहराब की केन्द्र शिला बना है ;
यह कार्य प्रभु का है
और हमारी दृष्टि में अद्भुत है।"

४३ इसलिए मैं तुमसे कहता हूं कि स्वर्ग-राज्य तुमसे ले लिया जाएगा
और उस जाति को दिया जाएगा जो इसका फल देती है। ४४ जो कोई इस
पत्थर पर गिरेगा वह चूर-चूर हो जाएगा, और जिस पर यह गिरेगा, उसे
यह कुचल डालेगा।'* ४५ महापुरोहित और फरीसी उनके दृष्टांतों को सुनकर
समझ गए कि वह उनके ही विषय में कह रहे हैं, ४६ और उन्हें बंदी बनाने
के उपाय सोचने लगे, पर लोगों से डरते थे क्योंकि वे यीशु को नबी
मानते थे।

२२

विवाह-भोज का दृष्टांत

१ यीशु ने फिर दृष्टांतों में उनसे कहा, २ 'स्वर्ग-राज्य की तुलना उस
राजा से की जा सकती है जिसने अपने पुत्र के विवाहोत्सव पर भोज दिया।
३ उसने अपने दासों को भेजा कि उत्सव में निमंत्रित लोगों को बुला लाएं ;
परंतु उन लोगों ने आना न चाहा। ४ उसने फिर अन्य दासों को यह कह
कर भेजा, "निमंत्रित व्यक्तियों से कहना, देखिए मैं भोज की तैयारी कर
चुका हूं, मेरे बैल और पले हुए पशु मारे जा चुके हैं, और सब कुछ तैयार है।
भोज में पधारिए।" ५ पर वे उपेक्षा कर चल दिए, एक अपने खेत को, और
दूसरा अपने व्यापार को। ६ शेष ने उसके दासों को पकड़ कर उनके साथ
दुर्व्यवहार किया और उन्हें मार डाला। ७ इस पर राजा ने क्रोधित होकर
अपनी सेनाएं भेजीं और उन हत्यारों को विनष्ट कर दिया तथा उनका नगर
जला डाला। ८ तब उसने अपने दासों से कहा, "विवाह-भोज तो तैयार है
पर निमंत्रित व्यक्ति योग्य नहीं थे, ९ इसलिए चौराहों पर जाओ और जितने
तुमको मिलें, सबको विवाहोत्सव में बुला लाओ।" १० वे दास सड़कों पर
गए और भले-बुरे जो मिले सबको एकत्रित कर लाए, यहां तक कि विवाह-
भवन अतिथियों से भर गया। ११ राजा अतिथियों को देखने भीतर आया तो

* कुछ प्रतियों में यह पद नहीं मिलता।

wedding garment : 12 and he saith unto him, Friend,
how camest thou in hither not having a wedding
garment ? And he was speechless. 13 Then said the
king to the servants, Bind him hand and foot, and take
him away, and cast him into outer darkness ; there
shall be weeping and gnashing of teeth. 14 For many
are called, but few are chosen.

A QUESTION ABOUT TRIBUTE

15 Then went the Pharisees, and took counsel how
they might entangle him in his talk. 16 And they
sent out unto him their disciples with the Herodians,
saying, Master, we know that thou art true, and
teachest the way of God in truth, neither carest thou
for any man : for thou regardest not the person of
men. 17 Tell us therefore, What thinkest thou ? Is
it lawful to give tribute unto Cæsar, or not ? 18 But
Jesus perceived their wickedness, and said, Why
tempt ye me, ye hypocrites ? 19 Shew me the
tribute money. And they brought unto him a penny.
20 And he saith unto them, Whose is this image
and superscription ? 21 They say unto him, Cæsar's.
Then saith he unto them, Render therefore unto Cæsar
the things which are Cæsar's ; and unto God the
things that are God's. 22 When they had heard these
words, they marvelled, and left him, and went their way.

A QUESTION ABOUT THE RESURRECTION

23 The same day came to him the Sadducees, which
say that there is no resurrection, and asked him,
24 saying, Master, Moses said, If a man die, having
no children, his brother shall marry his wife, and
raise up seed unto his brother. 25 Now there were
with us seven brethren : and the first, when he had
married a wife, deceased, and, having no issue, left
his wife unto his brother : 26 likewise the second
also, and the third, unto the seventh. 27 And last of
all the woman died also. 28 Therefore in the resurrec-
tion whose wife shall she be of the seven ? for

उसने वहां एक मनुष्य देखा जो विवाहोत्सव के उपयुक्त वस्त्र नहीं पहिने था।
१२ राजा ने उससे कहा, "हे मित्र, तुम विवाह-वस्त्र पहिने बिना यहां कैसे
आए ? १३ उसका मुंह बंद हो गया। तब राजा ने अपने सेवकों से कहा,
"इसके हाथ पांव बांधो और बाहर अंधकार में डाल दो ; वहां रोना और दांत
पोसना होगा।" १४ क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत हैं, पर चुने हुए थोड़े हैं।'

कैसर को कर देने का प्रश्न

१५ तब फरीसियों ने जाकर परामर्श किया कि किस प्रकार यीशु को
शब्द जाल में फंसाएं, १६ और उनके पास हेरोदियों एवं अपने शिष्यों को
भेजा। वे बोले, 'गुरुजी, हम जानते हैं कि आप सच्चे हैं, सच्चाई से परमेश्वर
के मार्ग का उपदेश देते हैं और आपको किसी का भय नहीं, क्योंकि आप
मुंह देखी नहीं कहते। १७ तो हमें बताइए कि आपका क्या विचार है ?
कैसर को कर देना विहित है या नहीं ?' १८ यीशु ने उनकी दुष्टता जानकर
कहा, 'पाखंडियों, मुझे क्यों परखते हो ? १९ मुझे राज-कर की मुद्रा तो
दिखाओ।' वे लोग उनके पास दीनार लाए २० तो उन्होंने प्रश्न किया, 'यह
किसकी छाप और किसका लेख है ?' २१ उन्होने उत्तर दिया, 'कैसर का'।
तब यीशु ने उनसे कहा, 'तो कैसर का कैसर को दो और परमेश्वर का परमेश्वर
को।' २२ यह सुनकर वे चकित रह गए और उन्हें छोड़कर चले गए।

पुनरुत्थान के संबंध में एक प्रश्न

२३ उसी दिन सदूकी, जो कहते हैं कि पुनरुत्थान नहीं होता, उनके पास
आए और पूछने लगे, २४ 'गुरुजी, मूसा का कथन है, "यदि कोई मनुष्य
निस्संतान मर जाए तो उसका भाई उसकी पत्नी से विवाह कर, अपने भाई
के लिए, संतान उत्पन्न करे।" २५ हमारे यहां सात भाई थे। पहिले ने
विवाह किया, मर गया और कोई संतान न होने के कारण अपनी पत्नी को
अपने भाई के लिए छोड़ गया। २६ इसी प्रकार दूसरे और तीसरे ने भी
किया, और सातों तक यही हुआ। २७ सब के अंत में वह स्त्री मर गई।
२८ तो पुनरुत्थान होने पर वह इन सातों में से किसकी पत्नी होगी ? क्योंकि

they all had her. 29 Jesus answered and said unto
them, Ye do err, not knowing the scriptures, nor the
power of God. 30 For in the resurrection they neither
marry, nor are given in marriage, but are as the
angels of God in heaven. 31 But as touching the
resurrection of the dead, have ye not read that which
was spoken unto you by God, saying, 32 I am the
God of Abraham, and the God of Isaac, and the God
of Jacob ? God is not the God of the dead, but of
the living. 33 And when the multitude heard this,
they were astonished at his doctrine.

THE GREATEST COMMANDMENT

34 But when the Pharisees had heard that he had
put the Sadducees to silence, they were gathered
together. 35 Then one of them, which was a lawyer,
asked him a question, tempting him, and saying, 36
Master, which is the great commandment in the law ?
37 Jesus said unto him, Thou shalt love the Lord
thy God with all thy heart, and with all the soul,
and with all thy mind. 38 This is the first and great
commandment. 39 And the second is like unto it, Thou
shalt love thy neighbour as thyself. 40 On these two
commandments hang all the law and the prophets.

A QUESTION ABOUT THE MESSIAH

41 While the Pharisees were gathered together,
Jesus asked them, 42 saying, What think ye of Christ ?
whose son is he ? They say unto him, The son of
David. 43 He saith unto them, How then doth David
in spirit call him Lord, saying,

44 The LORD said unto my Lord,
Sit thou on my right hand,
Till I make thine enemies thy footstool ?

45 If David then call him Lord, how is he his
son ? 46 And no man was able to answer him a
word, neither durst any man from that day forth ask
him any more questions.

वह सबकी पत्नी रही थी।' २९ यीशु ने उत्तर दिया, 'तुम धर्मशास्त्र से और
परमेश्वर की सामर्थ्य से परिचित नहीं, इसलिए भूल में पड़े हो। ३० पुन-
रुत्थान होने पर न तो वे विवाह करेंगे और न विवाह में दिए जाएंगे, वरन्
स्वर्गदूतों के सदृश होंगे। ३१ रहा मृतकों के पुनरुत्थान के संबंध में, तो क्या
तुमने यह बचन नहीं पढ़ा जो परमेश्वर ने कहा है, ३२ "मैं अब्रहाम का परमे-
श्वर, इजहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर हूं।"? वह मृतकों का नहीं
वरन् जीवितों का परमेश्वर है।' ३३ यह सुन कर जनसमूह उनकी शिक्षा
पर चकित रह गया।

प्रमुख आज्ञा

३४ जब फरीसियों ने सुना कि उन्होंने सदूकियों का मुंह बंद कर दिया
तो वे एकत्रित हुए ३५ और उनमें से व्यवस्था के एक आचार्य ने परीक्षा करने
के लिए उनसे पूछा, ३६ 'गुरुजी, व्यवस्था में कौन सी आज्ञा बड़ी है?'
३७ यीशु ने उससे कहा, 'तू प्रभु अपने परमेश्वर को अपने संपूर्ण मन, संपूर्ण
जीवन और संपूर्ण बुद्धि से प्रेम कर—३८ यही बड़ी और पहिली आज्ञा है।
३९ इसी के समान दूसरी यह है कि अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम कर।
४० इन्हीं दो आज्ञाओं पर समस्त व्यवस्था और नबी अवलम्बित हैं।'

दाऊद-पुत्र ख्रिस्त

४१ फरीसी अभी एकत्र ही थे कि यीशु ने उनसे पूछा, ४२ 'ख्रिस्त के
विषय में तुम्हारा क्या विचार है? वह किसका पुत्र है?' उन्होंने उत्तर दिया,
'दाउद का।' ४३ वह बोले, 'तो फिर दाऊद ने आत्मा की प्रेरणा से उसे
"प्रभु" क्यों कहा? उनका कथन है,

४४ "प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा,
जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों तले न लाऊं,
तू मेरे दाहिने हाथ पर बैठ।"

४५ यदि दाऊद उसे "प्रभु" कहते हैं तो वह उनका पुत्र कैसे हुआ?' ४६ इसके
उत्तर में कोई उनसे एक शब्द भी न कह सका, और न उस दिन से किसी को
उनसे प्रश्न करने का साहस हुआ।

JESUS DENOUNCES THE SCRIBES AND PHARISEES

23 Then spake Jesus to the multitude, and to his disciples, 2 saying, The scribes and the Pharisees sit in Moses' seat: 3 all therefore whatsoever they bid you observe, that observe and do; but do not ye after their works: for they say, and do not. 4 For they bind heavy burdens and grievous to be borne, and lay them on men's shoulders; but they themselves will not move them with one of their fingers. 5 But all their works they do for to be seen of men: they make broad their phylacteries, and enlarge the borders of their garments, 6 and love the uppermost rooms at feasts, and the chief seats in the synagogues, 7 and greetings in the markets, and to be called of men, Rabbi, Rabbi. 8 But be not ye called Rabbi: for one is your Master, even Christ; and all ye are brethren. 9 And call no man your father upon the earth: for one is your Father, which is in heaven. 10 Neither be ye called masters: for one is your Master, even Christ. 11 But he that is greatest among you shall be your servant. 12 And whosoever shall exalt himself shall be abased; and he that shall humble himself shall be exalted.

13 But woe unto you, scribes and Pharisees, hypocrites! for ye shut up the kingdom of heaven against men: for ye neither go in yourselves, neither suffer ye them that are entering to go in. 14 Woe unto you, scribes and Pharisees, hypocrites! for ye devour widows' houses, and for a pretence make long prayer: therefore ye shall receive the greater damnation. 15 Woe unto you, scribes and Pharisees, hypocrites! for ye compass sea and land to make one proselyte, and when he is made, ye make him twofold more the child of hell than yourselves. 16 Woe unto you, ye blind guides, which say, Whosoever shall swear by the temple, it is nothing; but whosoever shall swear by the gold of the temple, he is a debtor! 17 Ye fools and blind: for whether is greater, the gold, or the temple that sanctifieth the gold? 18 And, Whosoever shall swear by the altar, it is nothing; but whosoever sweareth by the gift that is

२३

शास्त्रियों और फरीसियों की भर्त्सना

१ तब यीशु ने जनसमूह एवं अपने शिष्यों से कहा, २ 'शास्त्री और फरीसी
मूसा की गद्दी पर बैठे हैं, ३ इसलिए जो कुछ वे तुमसे कहें वह करना और
मानना, परंतु उनके से काम न करना, क्योंकि वे कहते हैं पर करते नहीं।
४ वे भारी बोझ बांध कर लोगों के कन्धों पर लाद देते हैं, पर उसके खिसकाने
के लिए स्वयं अंगुली भी नहीं लगाना चाहते। ५ वे अपने सब काम लोगों
को दिखाने के लिए करते हैं। वे अपने तावीजों को चौड़ा बनाते हैं और
वस्त्रों की झालरों को बड़ा। ६ भोज में सम्मानित स्थान, सभागृहों में
प्रमुख आसन, ७ बाजारों में प्रणाम, और जनता के बीच 'रब्बी' कहलाना
उन्हें प्रिय लगता है। ८ पर तुम रब्बी न कहलाना, क्योंकि तुम्हारा गुरु एक
है, और तुम सब भाई हो। ९ पृथ्वी पर किसी को अपना पिता न कहना;
क्योंकि तुम्हारा पिता एक है, जो स्वर्ग में है। १० तुम नेता न कहलाना;
क्योंकि तुम्हारा नेता एक है, अर्थात् ख्रिस्त। ११ तुममें जो सबसे बड़ा है वह
तुम्हारा सेवक बने। १२ क्योंकि जो अपने आपको ऊंचा करेगा, वह नीचा किया
जायगा; किन्तु जो अपने आपको नीचा करेगा, वह ऊंचा किया जायगा।

१३ 'शास्त्रियो और फरीसियो, पाखंडियो, शोक तुम पर! तुम स्वर्ग-
राज्य का द्वार मनुष्यों के लिए बन्द कर देते हो; न तो स्वयं उसमें प्रवेश करते हो
और न प्रवेशार्थियों को करने देते हो। १४ शास्त्रियो और फरीसियो,
पाखंडियो, शोक तुम पर! तुम विधवाओं के घरों को निगल जाते हो और
दिखावे के लिए लंबी-लंबी प्रार्थनाएं करते हो। इस कारण तुम्हें अधिक
दण्ड मिलेगा*। १५ शास्त्रियो और फरीसियो, पाखंडियो, शोक तुम पर!
तुम एक मनुष्य को अपने मत में लाने के लिए जल-थल एक कर देते हो,
परंतु जब वह आ जाता है, तो उसे अपने से दूना नारकीय बना देते हो।
१६ अंधे पथ-प्रदर्शकों, शोक तुम पर! तुम कहते हो, "यदि कोई मंदिर की
शपथ ले तो कुछ नहीं, परंतु यदि मंदिर के स्वर्ण की शपथ ले तो उससे बंध
जाएगा।" १७ अरे मूर्खो और अंधो, क्या बड़ा है, स्वर्ण अथवा वह मंदिर
जिससे स्वर्ण पवित्र होता है? १८ और भी, तुम कहते हो, "यदि कोई वेदी की

---
* कुछ प्राचीन प्रतियों में यह पद नहीं मिलता।

upon it, he is guilty. 19 Ye fools and blind : for
whether is greater, the gift, or the altar that sanctifieth
the gift ? 20 Whoso therefore shall swear by the altar,
sweareth by it, and by all things thereon. 21 And
whoso shall swear by the temple, sweareth by it, and by
him that dwelleth therein. 22 And he that shall swear
by heaven, sweareth by the throne of God, and by him
that sitteth thereon. 23 Woe unto you, scribes and
Pharisees, hypocrites ! for ye pay tithe of mint and anise
and cummin, and have omitted the weightier matters of
the law, judgment, mercy, and faith : these ought ye to
have done, and not to leave the other undone. 24
Ye blind guides, which strain at a gnat, and swallow a
camel. 25 Woe unto you, scribes and Pharisees, hypo-
crites ! for ye make clean the outside of the platter, but
within they are full of extortion and excess. 26 Thou
blind Pharisee, clease first that which is within the cup
and platter, that the outside of them may be clean also.
27 Woe unto you, scribes and Pharisees, hypocrites !
for ye are like unto whited sepulchres, which indeed
appear beautiful outward, but are within full of dead
men's bones, and of all uncleanness. 28 Even so ye also
outwardly appear righteous unto men, but within ye are
full of hypocrisy and iniquity. 29 Woe unto you,
scribes and Pharisees, hypocrites ! because ye build the
tombs of the prophets, and garnish the sepulchres of the
righteous, 30 and say, If we had been in the days of our
fathers, we would not have been partakers with them in
the blood of the prophets. 31 Wherefore ye be witnes-
ses unto yourselves, that ye are the children of them
which killed the prophets. 32 Fill ye up then the
measure of your fathers. 33 Ye serpents, ye generation
of vipers, how can ye escape the damnation of hell ?
34 Wherefore, behold, I send unto you prophets, and
wise men, and scribes : and some of them ye shall kill
and crucify ; and some of them shall ye scourge in your
synagogues, and persecute them from city to city : 35
that upon you may come all the righteous blood shed
upon the earth, from the blood of righteous Abel unto

शपथ ले तो कुछ नहीं, परंतु यदि उस पर रखी भेंट की शपथ ले तो उससे
बंध जाएगा।" १९ अंधो, क्या बड़ी है, भेंट या वह वेदी जिससे भेंट पवित्र
होती है ? २० जो वेदी की शपथ लेता है, वह वेदी की और जो कुछ उस पर
है, उसकी शपथ लेता है ; २१ जो मंदिर की शपथ लेता है, वह मंदिर की और
जो उसमें रहता है, उसकी शपथ लेता है ; २२ जो स्वर्ग की शपथ लेता है,
वह परमेश्वर के सिंहासन की और जो उस पर विराजमान है, उसकी शपथ
लेता है। २३ शास्त्रियो और फरीसियो, पाखंडियो, शोक तुम पर ! तुम पोदीने,
सौंफ और जीरे का दसवां अंश तो देते हो, परंतु तुमने व्यवस्था की अधिक
आवश्यक बातों, न्याय, दया और विश्वास को छोड़ दिया है। चाहिए था
कि तुम इन्हें भी करते और उन्हें भी न छोड़ते। २४ अंधे पथ-प्रदर्शको, तुम
मच्छर को तो छान देते हो, परंतु ऊंट को निगल जाते हो। २५ शास्त्रियो और
फरीसियो, पाखंडियो, शोक तुम पर ! तुम कटोरे और थाली को बाहर-बाहर
तो मांजते हो पर भीतर लोलुपता और असंयम से भरे हो। २६ अंधे फरीसी,
कटोरे को पहिले भीतर से स्वच्छ कर, जिससे बाहर भी स्वच्छ हो जाए।
२७ शास्त्रियो और फरीसियो, पाखंडियो, शोक तुम पर ! तुम चूने से पुती हुई
कबरों के सदृश हो, जो बाहर से तो सुंदर दिखाई देती हैं, परंतु भीतर मुर्दों
की हड्डियों और सब प्रकार की मलिनता से भरी हैं ; २८ इसी प्रकार तुम
बाहर से मनुष्यों को धार्मिक दिखाई देते हो, परंतु भीतर पाखंड और
अव्यवस्था से भरे हो। २९ शास्त्रियो और फरीसियो, पाखंडियो, शोक तुम पर !
तुम नबियों की कबरें बनाते और धर्मात्माओं के स्मारक सजाते हो, ३० एवं
कहते हो, "यदि हम अपने पूर्वजों के युग में होते, तो नबियों की हत्या में
भागी न हुए होते।" ३१ इस प्रकार तुम स्वयं साक्षी देते हो कि तुम नबी-
घातकों की संतान हो। ३२ तो अपने पूर्वजों के पाप का घड़ा भर लो। ३३ हे
सर्पो, हे करैतों की संतान, तुम नरक के दंड से कैसे बचोगे ? ३४ सुनो, मैं
तुम्हारे पास नबियों, ज्ञानियों और शास्त्रियों को भेजता हूं; उनमें से कुछ
को तुम मार डालोगे, कुछ को क्रूस पर चढ़ाओगे, और कुछ को अपने सभा-
गृहों में कोड़े मारोगे तथा नगर-नगर उनका पीछा करोगे; ३५—जिससे
धर्मात्मा हाबील से लेकर बिरिक्याह के पुत्र जकरयाह तक जिसे तुमने मंदिर
और वेदी के मध्य मार डाला था—जितने धर्मात्माओं का रक्त पृथ्वी पर

the blood of Zacharias son of Barachias, whom ye slew
between the temple and the altar. 36 Verily I say
unto you, All these things shall come upon this gene-
ration.

JESUS LAMENTS THE FATE OF JERUSALEM

37 O Jerusalem, Jerusalem, thou that killest the pro-
phets, and stonest them which are sent unto thee, how
often would I have gathered thy children together, even
as a hen gathereth her chickens under her wings, and
ye would not! 38 Behold, your house is left unto you
desolate. 39 For I say unto you, Ye shall not see me
henceforth till ye shall say, Blessed is he that cometh
in the name of the Lord.

JESUS FORETELLS THE DESTRUCTION OF THE TEMPLE AND THE END OF THE AGE

24 And Jesus went out, and departed from the
temple : and his disciples came to him for to shew
him the buildings of the temple. 2 And Jesus said unto
them, See ye not all these things ? verily I say unto
you, There shall not be left here one stone upon an-
other, that shall not be thrown down.

3 And as he sat upon the mount of Olives, the
disciples came unto him privately, saying, Tell us, when
shall these things be ? and what shall be the sign of
thy coming, and of the end of the world ? 4 And Jesus
answered and said unto them, Take heed that no man
deceive you. 5 For many shall come in my name, saying,
I am Christ ; and shall deceive many. 6 And ye shall
hear of wars and rumours of wars : see that ye be not
troubled : for all these things must come to pass, but
the end is not yet. 7 For nation shall rise against nation,
and kingdom against kingdom : and there shall be fa-
mines, and pestilences, and earthquakes, in divers places.
8 All these are the beginning of sorrows.

9 Then shall they deliver you up to be afflicted,
and shall kill you : and ye shall be hated of all nations

बहाया गया है, सब तुम्हारे सिर पर पड़े। ३६ मैं तुमसे सच कहता हूं, ये
बातें इसी पीढ़ी के सिर पड़ेंगी।

यरूशलेम के लिए विलाप

३७ 'हे यरूशलेम, हे यरूशलेम, जो नबियों की हत्या करती है और
प्रेरितों को पत्थरों से मार डालती है, मैंने कितनी बार चाहा कि जैसे मुर्गी
अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे एकत्रित करती है, वैसे ही मैं भी तेरे
बच्चों को एकत्रित कर लूं। परंतु तूने न चाहा। ३८ देखो, "तुम्हारा घर
तुम्हारे लिए उजाड़ छोड़ा जाता है।" ३९ क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं कि तुम
मुझे उस समय तक नहीं देखोगे जब तक यह न कहो, "जो प्रभु के नाम से
आता है, उसकी स्तुति हो।"'

२४

मंदिर-विनाश और युगांत के संबंध प्रकाश

१ जब यीशु मंदिर से निकल कर जा रहे थे तो उनके शिष्य उनके
पास आए कि उन्हें मंदिर के भवन दिखाएं। २ यीशु ने उनसे कहा, 'तुम यह
सब देख रहे हो न! मैं तुमसे सच कहता हूं यहां पत्थर पर पत्थर भी न
बचेगा; सब ध्वस्त हो जाएगा।'

३ जब वह जैतून पर्वत पर बैठे थे तो शिष्य उनके पास आए और एकांत
में उनसे पूछा, 'हमें बताइए कि ये घटनाएं कब होंगी? आपके पुनरागमन
का और युगांत का चिह्न क्या होगा?' यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, 'सावधान!
कोई तुम्हें पथभ्रष्ट न करे। ४ अनेक मेरे नाम से आएंगे और यह कह कर
कि "मैं ख्रिस्त हूं," बहुतों को पथ-भ्रष्ट कर देंगे। ६ तुम युद्ध और युद्ध की
चर्चा सुनोगे। देखो, भयाकुल न होना क्योंकि यह सब होना अनिवार्य है पर
अंत अभी दूर है। ७ जाति जाति के विरुद्ध और राज्य राज्य के विरुद्ध उठ
खड़े होंगे और अनेक स्थलों पर अकाल पड़ेंगे तथा भूकम्प आएंगे। ८ ये सब
घटनाएं पीड़ाओं* का आरंभ मात्र होंगी।

९ उस समय लोग तुम्हें घोर यंत्रणाओं के निमित्त सौंप देंगे और मार

*अक्षरशः 'प्रसव पीड़ा'

for my name's sake. 10 And then shall many be offend-
ed, and shall betray one another, and shall hate one
another. 11 And many false prophets shall rise, and shall
deceive many. 12 And because iniquity shall abound,
the love of many shall wax cold. 13 But he that shall
endure unto the end, the same shall be saved. 14 And
this gospel of the kingdom shall be preached in all the
world for a witness unto all nations ; and then shall
the end come.

15 When ye therefore shall see the abomination of
desolation, spoken of by Daniel the prophet, stand in
the holy place, (whoso readeth, let him understand :)
16 then let them which be in Judæa flee into the
mountains : 17 let him which is on the housetop not
come down to take any thing out of his house : 18
neither let him which is in the field return back to
take his clothes. 19 And woe unto them that are
with child, and to them that give suck in those days !
20 But pray ye that your flight be not in the winter,
neither on the sabbath day : 21 for then shall be great
tribulation, such as was not since the beginning of the
world to this time, no, nor ever shall be. 22 And
except those days should be shortened, there should no
flesh be saved : but for the elect's sake those days shall
be shortened. 23 Then if any man shall say unto you,
Lo, here is Christ, or there ; believe it not. 24 For
there shall arise false Christs, and false prophets, and
shall shew great signs and wonders ; insomuch that, if
it were possible, they shall deceive the very elect.
25 Behold, I have told you before. 26 Wherefore if they
shall say unto you, Behold, he is in the desert ; go not
forth : behold, he is in the secret chambers ; believe it
not. 27 For as the lightning cometh out of the east,
and shineth even unto the west ; so shall also the
coming of the Son of man be.

28 For wheresoever the carcase is, there will the eagles
be gathered together.

29 Immediately after the tribulation of those days
Shall the sun be darkened,

डालेंगे। मेरे नाम के कारण सब जातियां तुमसे घृणा करेंगी। १० उन
दिनों बहुतों का पतन होगा ; वे एक दूसरे को पकड़वाएंगे और एक दूसरे से
घृणा करेंगे। ११ अनेक झूठे नबी उठ खड़े होंगे जो बहुतों को पथ-भ्रष्ट कर
देंगे, १२ और अव्यवस्था के बढ़ने से बहुतों का प्रेम ठंडा पड़ जाएगा ;
१३ पर जो अंत तक स्थिर रहेगा वह त्राण पाएगा। १४ राज्य के इस समा-
चार का प्रचार सारे संसार में किया जाएगा कि सब जातियों के लिए साक्षी
हो ; और तब अंत आ जाएगा।

१५ 'इसलिए जब तुम "विनाशकारी घृणित वस्तु" को, जिसके विषय में
दानिएल नबी ने कहा, पवित्र स्थान में खड़े देखो (पाठक इसे समझें) १६ तो
जो यहूदिया में हैं, वे पर्वतों पर भाग जाएं ; १७ जो छत पर है, वह घर से
कोई वस्तु लेने को नीचे न उतरे ; १८ और जो खेत में है, वह घर से कोई
वस्तु लेने के लिए पीछे न लौटे। १९ शोक उनके लिए जो उन दिनों गर्भिणी
होंगी या दूध पिलाती होंगी! २० प्रार्थना करो कि तुम्हें शीत ऋतु में अथवा
सबत के दिन भागना न पड़े। २१ उन दिनों ऐसी घोर "पीड़ा होगी, जैसी
संसार के आरंभ से अब तक, न हुई और न होगी।" २२ यदि वे दिन न
घटा दिए जाते तो कोई मनुष्य बचने न पाता, परंतु मनोनीत लोगों के कारण
वे दिन घटा दिए जाएंगे। २३ उस समय यदि कोई कहे, "देखो, ख्रिस्त यहां
हैं" अथवा "वहां" तो विश्वास न करना। २४ क्योंकि झूठे ख्रिस्त और
झूठे नबी उठ खड़े होंगे और चिह्न एवं चमत्कार दिखाएंगे कि यदि संभव हो
तो मनोनीत लोगों को भी पथ-भ्रष्ट कर दें। २५ देखो, मैंने पहिले से ही
बता दिया है। २६ यदि वे तुमसे कहें, "देखो वह निर्जन प्रदेश में हैं" तो
बाहर मत निकलना ; अथवा "देखो, वह कोठरियों में है" तो विश्वास न
करना। २७ क्योंकि जैसे बिजली पूर्व से निकलती और पश्चिम तक चमकती
है उसी प्रकार मानव-पुत्र का पुनरागमन होगा।

२८ 'जहां शव होगा, वहां गिद्ध भी इकट्ठे होंगे।

२९ 'उन दिनों इस पीड़ा के पश्चात् ही
"सूर्य अंधकारमय हो जाएगा,

And the moon shall not give her light,
And the stars shall fall from heaven,
And the powers of the heaven shall be shaken :

30 And then shall appear the sign of the Son of man in
heaven : and then shall all the tribes of the earth mourn,
and they shall see the Son of man coming in the clouds
of heaven with power and great glory. 31 And he shall
send his angels with a great sound of a trumpet, and
they shall gather together his elect from the four winds,
from one end of heaven to the other.

THE NEED FOR WATCHFULNESS

32 Now learn a parable of the fig tree ; When his
branch is yet tender, and putteth forth leaves, ye know
that summer is nigh : 33 so likewise ye, when ye shall
see all these things, know that it is near, even at the
doors. 34 Verily I say unto you, This generation shall
not pass, till all these things be fulfilled. 35 Heaven
and earth shall pass away, but my words shall not pass
away.

36 But of that day and hour knoweth no man, no,
not the angels of heaven, but my Father only. 37 But
as the days of Noe were, so shall also the coming of
the Son of man be. 38 For as in the days that were
before the flood they were eating and drinking, marrying
and giving in marriage, until the day that Noe entered
into the ark, 39 and knew not until the flood came,
and took them all away ; so shall also the coming of
the Son of man be. 40 Then shall two be in the field ;
the one shall be taken, and the other left. 41 Two
women shall be grinding at the mill ; the one shall
be taken, and the other left. 42 Watch therefore :
for ye know not what hour your Lord doth come.

PARABLE OF THE GOOD AND BAD SERVANTS

43 But know this, that if the goodman of the house
had known in what watch the thief would come, he
would have watched, and would not have suffered
his house to be broken up. 44 Therefore be ye also

चन्द्रमा प्रकाश न देगा,
आकाश से तारागण गिरेंगे,
एवं अंतरिक्ष की शक्तियां हिल जाएंगी।"
३० तब मानव-पुत्र का चिह्न आकाश में दिखाई देगा, पृथ्वी की सब
जातियां शोक मनाएंगी, और मानव-पुत्र को, सामर्थ्य एवं बड़ी महिमा के
साथ स्वर्ग से मेघों पर आते हुए, देखेंगी। ३१ वह तुरही की तुमुल ध्वनि के
साथ अपने दूतों को भेजेगा और वे "आकाश के इस सीमांत से उस सीमांत
तक चारों दिशाओं से उसके मनोनीत लोगों को एकत्रित करेंगे।"

जागरूकता की आवश्यकता

३२ 'अंजीर के वृक्ष से यह दृष्टांत सीखो। ज्यों ही उसकी शाखाएं
कोमल हुईं और उनमें पल्लव निकले, तुम जान लेते हो कि ग्रीष्म ऋतु निकट
है ; ३३ इसी प्रकार जब तुम इन सब बातों को होते देखो तो जान लेना कि
वह निकट है, वरन् द्वार पर है। ३४ मैं तुम से सच कहता हूं कि जब तक ये
सब बातें पूरी न हो जाएं, इस पीढ़ी का अंत न होगा। ३५ आकाश और
पृथ्वी टल जाएंगे पर मेरे बचन कदापि न टलेंगे।

३६ 'परंतु उस दिन और घड़ी के विषय में, पिता के अतिरिक्त और
कोई नहीं जानता, न स्वर्गदूत और न पुत्र। ३७ क्योंकि जैसे नूह के दिनों में
हुआ था, वैसा ही मानव-पुत्र के पुनरागमन काल में होगा। ३८ जिस प्रकार
जल-प्रलय से पहले के दिनों में, उस दिन तक जब नूह नौका में चढ़े, लोग
खाते-पीते और विवाह करते-कराते थे, ३९ और जब तक जल-प्रलय उन
सबको वहा न ले गया तब तक उन्हें कुछ ज्ञान न हुआ, इसी प्रकार मानव-पुत्र
का पुनरागमन भी होगा। ४० उस समय दो मनुष्य खेत में होंगे ; एक ले
लिया जाएगा, और दूसरा छोड़ दिया जाएगा। ४१ दो स्त्रियां चक्की
पीसती होंगी ; एक ले ली जाएगी, और दूसरी छोड़ दी जाएगी। ४२ इस
कारण जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारे प्रभु किस दिन आएंगे।

विश्वासपात्र दास और दुष्ट दास का दृष्टांत

४३ यह निश्चित है कि यदि गृहस्वामी को पता रहता कि किस पहर में
चोर आ रहा है, तो वह जागता रहता और अपने घर में सेंध न लगने देता।
४४ इस कारण तुम भी तैयार रहो, क्योंकि जिस घड़ी की तुम कल्पना भी

ready : for in such an hour as ye think not the Son
of man cometh.
45 Who then is a faithful and wise servant, whom
his lord hath made ruler over his household, to give
them meat in due season ? 46 Blessed is that servant,
whom his lord when he cometh shall find so doing.
47 Verily I say unto you, That he shall make him ruler
over all his goods. 48 But and if that evil servant shall
say in his heart, My lord delayeth his coming ; 49 and
shall begin to smite his fellowservants, and to eat
and drink with the drunken ; 50 the lord of that servant
shall come in a day when he looketh not for him, and in
an hour that he is not aware of, 51 and shall cut him
asunder, and appoint him his portion with the hypo-
crites : there shall be weeping and gnashing of teeth.

THE PARABLE OF THE TEN BRIDESMAIDS

25 Then shall the kingdom of heaven be likened
unto ten virgins, which took their lamps, and
went forth to meet the bride-groom. 2 And five of
them were wise, and five were foolish. 3 They that
were foolish took their lamps, and took no oil with
them : 4 but the wise took oil in their vessels with
their lamps. 5 While the bridegroom tarried, they all
slumbered and slept. 6 And at midnight there was
a cry made, Behold, the bridegroom cometh ; go ye
out to meet him. 7 Then all those virgins arose, and
trimmed their lamps. 8 And the foolish said unto
the wise, Give us of your oil ; for our lamps are gone
out. 9 But the wise answered, saying, Not so ; lest
there be not enough for us and you : but go ye rather
to them that sell, and buy for yourselves. 10 And while
they went to buy, the bridegroom came ; and they that
were ready went in with him to the marriage : and
the door was shut. 11 Afterward came also the other
virgins, saying, Lord, Lord, open to us. 12 But he
answered and said, Verily I say unto you, I know you

नहीं करते, उसी घड़ी मानव-पुत्र आ जाएगा।

४५ 'वह विश्वासपात्र और बुद्धिमान दास कौन है, जिसे उसका स्वामी
अपने परिवार पर नियुक्त करे कि उन्हें नियत समय पर भोजन दे? ४६ धन्य
है वह दास, जिसे उसका स्वामी आने पर ऐसा करते पाए! ४७ मैं तुमसे सच
कहता हूं कि वह उसे अपनी समस्त संपत्ति पर अधिकारी नियुक्त कर देगा।
४८ किंतु यदि वह दुष्ट दास अपने मन में कहे, "मेरे स्वामी के आने में देर है,"
४९ और अपने साथी दासों को पीटने लगे एवं शराबियों के साथ खाए-पिए,
५० तो उस दास का स्वामी ऐसे दिन आएगा, जब वह उसकी प्रतीक्षा न
करता होगा, और ऐसी घड़ी जिसे वह न जानता होगा। वह उसके टुकड़े-
टुकड़े कर डालेगा। इस प्रकार उसकी गणना पाखंडियों में होगी, वहां रोना
और दांत पीसना होगा।

२५

दस कुमारियों का दृष्टांत

१ 'स्वर्ग-राज्य की तुलना दस कुमारियों से की जाएगी, जो अपनी मशालें
लेकर दूलह से भेंट करने निकलीं। २ उनमें पांच मूर्ख थीं, और पांच
बुद्धिमती। ३ मूर्खों ने मशालें तो लीं, पर अपने साथ तेल न लिया, ४ परंतु
बुद्धिमतियों ने अपनी मशालों के साथ पात्रों में तेल भी लिया। ५ जब
दूलह के आने में देर हुई तो वे सब ऊंघने लगीं और सो गईं। ६ अधरात्रि
को धूम मची "देखो, दूलह आ रहा है, उससे मिलने चलो।" ७ तब सब
कुमारियां उठीं और अपनी अपनी मशालें संवारने लगीं। ८ अब मूर्खों ने
बुद्धिमतियों से कहा, "अपने तेल में से थोड़ा हमें भी दे दो, क्योंकि हमारी
मशालें बुझी जा रही हैं।" ९ पर बुद्धिमतियों ने उत्तर दिया, "नहीं, यह
कदाचित् हमारे और तुम्हारे लिए पूरा न हो। अच्छा हो कि तुम बेचनेवालों
के पास जाकर अपने लिए मोल ले लो।" १० जब वे मोल लेने जा रहीं
थीं तो दूलह आ पहुंचा। जो तैयार थीं वे उसके साथ विवाह-भवन में गईं
और द्वार बंद हो गया। ११ तब दूसरी कुमारियां आईं और कहने लगीं,
"प्रभु, प्रभु, हमारे लिए द्वार खोल दीजिए।" १२ पर दूलह ने उत्तर दिया,

not. 13 Watch therefore, for ye know neither the
day nor the hour wherein the Son of man cometh.

THE PARABLE OF THE TALENTS

14 For the kingdom of heaven is as a man travelling
into a far country, who called his own servants, and
delivered unto them his goods. 15 And unto one he
gave five talents, to another two ? and to another one;
to every man according to his several ability ; and
straightway took his journey. 16 Then he that had
received the five talents went and traded with the same,
and made them other five talents. 17 And likewise he
that had received two, he also gained other two. 18 But
he that had received one went and digged in the earth,
and hid his lord's money. 19 After a long time the lord
of those servants cometh, and reckoneth with them.
20 And so he that had received five talents came and
brought other five talents, saying, Lord, thou deliveredst
unto me five talents : behold, I have gained beside them
five talents more. 21 His lord said unto him, well done
thou good and faithful servant : thou hast been faith-
ful over a few things, I will make thee ruler over many
things : enter thou into the joy of thy lord. 22 He also
that had received two talents came and said, Lord,
thou deliveredst unto me two talents : behold, I have
gained two other talents beside them. 23 His lord said
unto him, Well done, good and faithful servant ; thou
hast been faithful over a few things, I will make thee
ruler over many things : enter thou into the joy of thy
lord. 24 Then he which had received the one talent came
and said. Lord, I knew thee that thou art an hard man,
reaping where thou hast not sown, and gathering where
thou hast not strawed : 25 and I was afraid, and went
and hid thy talent in the earth : lo, there thou hast
that is thine. 26 His lord answered and said unto him,
Thou wicked and slothful servant, thou knewest that
I reap where I sowed not, and gather where I have not
strawed : 27 thou oughtest therefore to have put my
money to the exchangers, and then at my coming I

"मैं तुमसे सच कहता हूं कि मैं तुम्हें नहीं जानता।" १३ इसलिए जागते
रहो क्योंकि तुम न उस दिन को जानते हो और न उस घड़ी को।

तलंतों का दृष्टांत

१४ 'बात कुछ ऐसी होगी जैसे एक मनुष्य ने अपने दासों को बुलाया
और अपनी संपत्ति उनको सौंप दी। १५ उसने एक को पांच तलंत* दिए, दूसरे
को दो, और तीसरे को एक—अर्थात् प्रत्येक को उसकी योग्यता के अनुसार
दिया और विदेश चला गया। १६ जिसे पांच तलंत मिले थे, उसने जाकर
उनसे व्यापार किया, और उसे पांच का लाभ हुआ। १७ इसी प्रकार जिसे
दो मिले थे, उसे दो का लाभ हुआ। १८ पर जिसे एक मिला था, उसने
जाकर भूमि खोदी, और अपने स्वामी का धन उसमें छिपा दिया।
१९ बहुत समय पश्चात् उन दासों का स्वामी आया और उनसे लेखा लेने
लगा। २० जिसे पांच तलंत मिले थे, उसने पांच तलंत और लाकर कहा,
"स्वामी आपने मुझे पांच तलंत दिए थे। देखिए, मुझे पांच का और लाभ
हुआ है।" २१ उसके स्वामी ने कहा, "धन्य-धन्य! उत्तम और विश्वासपात्र
दास, तुम थोड़ी वस्तुओं में विश्वासपात्र निकले, मैं तुमको बहुत वस्तुओं पर
अधिकार दूंगा। अपने स्वामी के आनंद में सहभागी हो।" २२ जिसे दो
तलत मिले थे वह भी आकर बोला, "स्वामी, आपने मुझे दो तलंत दिए थे,
देखिए, मुझे दो का और लाभ हुआ।" २३ स्वामी ने उससे कहा, धन्य-
धन्य! उत्तम और विश्वासपात्र दास, तुम थोड़ी वस्तुओं में विश्वासपात्र
निकले, मैं तुमको बहुत वस्तुओं पर अधिकार दूंगा। अपने स्वामी के आनंद
में सहभागी हो।" २४ परंतु जिसे एक तलंत मिला था, वह आकर बोला,
"स्वामी, मैं आपको जानता था कि आप कठोर व्यक्ति हैं! जहां आपने
बोया नहीं काटते हैं, और जहां बखेरा नहीं वहां बटोरते हैं। २५ तो डर के
मारे मैंने जाकर आपका तलंत भूमि में छिपा दिया। लीजिए अपनी वस्तु!"
२६ उसके स्वामी ने उत्तर दिया, "दुष्ट और आलसी दास! जब तू जानता
था कि जहां मैंने बोया नहीं वहां काटता हूं, और जहां बखेरा नहीं, वहां
बटोरता हूं, २७ तो क्या उचित नहीं था कि मेरा रुपया महाजनों के यहां रख

* मत्ती १८:२४ पर टिप्पणी देखिए।

should have received mine own with usury. 28 Take
therefore the talent from him, and give it unto him
which hath ten talents. 29 For unto every one that
hath shall be given, and he shall have abundance : but
from him that hath not shall be taken away even that
which he hath. 30 And cast ye the uprofitable servant
into outer darkness : there shall be weeping and
gnashing of teeth.

THE DAY OF JUDGMENT

31 When the Son of man shall come in his glory, and
all the holy angels with him, then shall he sit upon
the throne of his glory : 32 and before him shall be
gathered all nations ; and he shall separate them one
from another, as a shepherd divideth his sheep from
the goats : 33 and he shall set the sheep on his right
hand, but the goats on the left. 34 Then shall the
King say unto them on his right hand, Come, ye blessed
of my Father, inherit the kingdom prepared for you
from the foundation of the world : 35 for I was an
hungred, and ye gave me meat : I was thirsty, and ye
gave me drink : I was a stranger, and ye took me in :
36 naked, and ye clothed me : I was sick, and ye visi-
ted me : I was in prison, and ye came unto me. 37 Then
shall the righteous answer him, saying, Lord, when saw
we thee an hungred, and fed thee ? or thirsty, and
gave thee drink ? 38 When saw we thee a stranger,
and took thee in ? or naked, and clothed thee ? 39 Or
when saw we thee sick, or in prison, and came unto
thee ? 40 And the King shall answer and say unto
them, Verily I say unto you, Inasmuch as ye have done
it unto one of the least of these my brethren, ye have
done it unto me. 41 Then shall he say also unto them
on the left hand, Depart from me, ye cursed, into ever-
lasting fire, prepared for the devil and his angels : 42
for I was an hungred, and ye gave me no meat : I was
thirsty, and ye gave me no drink : 43 I was a stranger
and ye took me not in : naked, and ye clothed me not :
sick, and in prison, and ye visited me not. 44 Then
shall they also answer him, saying, Lord, when saw we

देता ; मैं आकर उसे ब्याज सहित ले लेता ? २८ अस्तु, इससे यह
तलत लो और जिसके पास दस तलंत हैं, उसे दे दो। २९ क्योंकि जिसके
पास है, उसे और दिया जाएगा और वह संपन्न हो जाएगा ; परंतु जिसके
पास नहीं है, उससे वह भी, जो उसके पास है, ले लिया जाएगा। ३० और
इस निकम्मे दास को बाहर अंधकार में फेंक दो, जहां रोना और दांत
पीसना होगा।"

न्याय का दिन

३१ 'जब मानव-पुत्र अपनी महिमा में आएगा और सब स्वर्गदूत उसके
साथ आएंगे तो वह अपने महिमामय सिंहासन पर बैठेगा। ३२ सभी जातियां
उसके संमुख एकत्रित की जाएंगी। और जैसे मेषपाल भेड़ों को बकरियों से
पृथक् करता है, वैसे ही वह उन्हें एक दूसरे से पृथक् करेगा। ३३ वह भेड़ों को
अपनी दाहिनी ओर, और बकरियों को बाईं ओर खड़ा करेगा। ३४ तब राजा
अपनी दाहिनी ओर के लोगों से कहेगा, "मेरे पिता के धन्य लोगो, आओ; उस
राज्य के उत्तराधिकारी हो, जो संसार की उत्पत्ति से तुम्हारे लिए प्रस्तुत किया
गया है। क्योंकि मैं भूखा था और तुमने मुझे भोजन कराया, प्यासा था
और तुमने मुझे पानी पिलाया, परदेशी था और तुमने मुझे अपनाया, ३६ नग्न
था और तुमने मुझे वस्त्र पहिनाए, रोगी था और तुमने मेरी देखभाल की,
बंदीगृह में था और तुम मुझसे मिलने आए।" ३७ तब धर्मात्मा उससे कहेंगे,
"प्रभु हमने आपको कब भूखा देखा और भोजन कराया, या प्यासा देखा और
पानी पिलाया ? ३८ हमने आपको कब परदेशी देखा और अपनाया, या नग्न
देखा और वस्त्र पहिनाए ? ३९ हमने आपको कब रोगी या बंदी देखा
और आपसे मिलने आए ?" ४० इस पर राजा उन्हें उत्तर देगा, "मैं तुमसे
सच कहता हूं, जो कुछ तुमने मेरे इन छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ
किया, वह मेरे साथ किया।" ४१ तब वह अपनी बाईं ओर के लोगों से कहेगा,
"शापित लोगो ! मुझसे दूर हो और अनंत-अग्नि में जा पड़ो जो शैतान और
उसके दूतों के लिए तैयार की गई है, ४२ क्योंकि मैं भूखा था और तुमने
मुझे भोजन नहीं कराया, प्यासा था और तुमने मुझे पानी नहीं पिलाया,
४३ परदेशी था और तुमने मुझे नहीं अपनाया, नग्न था और तुमने मुझे वस्त्र
नहीं पहिनाए, रोगी था और बंदीगृह में था और तुमने मेरी देखभाल नहीं
की।" ४४ इस पर वे कहेंगे, "प्रभु, हमने आपको कब भूखा, या प्यासा, या
परदेशी, या नग्न, या रोगी, या बंदीगृह में देखा और आपकी सेवा नहीं की ?"

thee an hungred, or athirst, or a stranger, or naked, or
sick, or in prison, and did not minister unto thee ? 45
Then shall he answer them, saying, Verily I say unto
you, Inasmuch as ye did it not to one of the least of
these, ye did it not to me. 46 And these shall go away
into everlasting punishment : but the righteous into
life eternal.

THE PLOT TO KILL JESUS

26 And it came to pass, when Jesus had finished all
these sayings, he said unto his disciples, 2 Ye
know that after two days is the feast of the passover,
and the Son of man is betrayed to be crucified.

3 Then assembled together the chief priests, and
the scribes, and the elders of the people, unto the
palace of the high priest, who was called Caiaphas, 4 and
consulted that they might take Jesus by subtilty, and
kill him. 5 But they said, Not on the feast day, lest
there be an uproar among the people.

THE ANOINTING OF JESUS AT BETHANY

6 Now when Jesus was in Bethany, in the house
of Simon the leper, 7 there came unto him a woman
having an alabaster box of very precious ointment, and
poured it on his head, as he sat at meat. 8 But when
his disciples saw it, they had indignation, saying, To
what purpose is this waste ? 9 For this ointment might
have been sold for much, and given to the poor.
10 When Jesus understood it, he said unto them, Why
trouble ye the woman ? for she hath wrought a good
work upon me. 11 For ye have the poor always with
you ; but me ye have not always. 12 For in that she
hath poured this ointment on my body, she did it for
my burial. 13 Verily I say unto you, Wheresoever
this gospel shall be preached in the whole world, there
shall also this, that this woman hath done, be told for
a memorial of her.

४५ तब राजा उत्तर देगा, "मैं तुमसे सच कहता हूं, जो तुमने मेरे इन छोटे से
छोटे भाइयों में से एक के साथ नहीं किया, वह मेरे साथ नहीं किया।"
४६ ये लोग अनंत-दंड भोगेंगे, परंतु धर्मात्मा शाश्वत जीवन में प्रवेश करेंगे।'

२६

यीशु की हत्या के लिए षड्यंत्र

१ यीशु ये सब कथन समाप्त कर अपने शिष्यों से बोले, २ 'तुम जानते
हो कि दो दिन पश्चात् फसह का पर्व है, जब मानव-पुत्र पकड़वाया जाएगा कि
क्रूस पर चढ़ाया जाए।'

३ तब काइफा नामक महापुरोहित के आंगन में महापुरोहित और जनता
के धर्मवृद्ध एकत्रित हुए, ४ और परामर्श करने लगे कि किस प्रकार यीशु को
छल से पकड़कर मार डालें; ५ परंतु वे कहते थे, 'पर्व के दिनों में नहीं, कहीं
ऐसा न हो कि जनता में उपद्रव हो जाए।'

बैतनिय्याह में गंध-रस से अभ्यंजन

६ जब यीशु बैतनिय्याह में शमौन कोढ़ी के निवास स्थान पर थे, तो
७ एक स्त्री संगमरमर के पात्र में बहुमूल्य गंध-रस लिए हुए आई, और भोजन
करते समय उनके सिर पर उड़ेल दिया। ८ शिष्य यह देख कर रुष्ट हुए और
कहने लगे, 'यह अपव्यय क्यों? ९ इसे तो अधिक मूल्य में बेचा और दरिद्रों
को दिया जा सकता था।' १० यह जानकर यीशु ने उनसे कहा, 'उस स्त्री को
क्यों सताते हो? एक सुन्दर काय उसने मेरे निमित्त किया है। ११ दरिद्र तो
तुम्हारे साथ सदा है पर मैं तुम्हारे साथ सदा नहीं रहूंगा। १२ मेरे गाड़े
जाने की तैयारी में उसने मेरे शरीर पर सुगंध का सिंचन किया है। १३ मैं
तुमसे सच कहता हूं कि समस्त संसार में जहां-जहां सुसमाचार का प्रचार
होगा, वहां इसकी स्मृति में, यह कथा कही जाएगी।'

THE TREACHERY OF JUDAS

14 Then one of the twelve, called Judas Iscariot,
went unto the chief priests, 15 and said unto them,
What will ye give me, and I will deliver him unto
you ? And they covenanted with him for thirty pieces
of silver. 16 And from that time he sought oppor-
tunity to betray him.

THE LAST SUPPER

17 Now the first day of the feast of unleavened
bread the disciples came to Jesus, saying unto him,
Where wilt thou that we prepare for thee to eat the
passover ? 18 And he said, Go into the city to such
a man, and say unto him, The Master saith, My time
is at hand ; I will keep the passover at thy house with
my disciples. 19 And the disciples did as Jesus had
appointed them ; and they made ready the passover.

20 Now when the even was come, he sat down with
the twelve. 21 And as they did eat, he said, Verily
I say unto you, that one of you shall betray me. 22 And
they were exceeding sorrowful, and began every one of
them to say unto him, Lord, is it I ? 23 And he
answered and said, He that dippeth his hand with me
in the dish, the same shall betray me. 24 The Son of
man goeth as it is written of him : but woe unto that
man by whom the Son of man is betrayed ! it had been
good for that man if he had not been born. 25 Then
Judas, which betrayed him, answered and said, Master,
is it I ? He said unto him, Thou hast said.

26 And as they were eating, Jesus took bread, and
blessed it, and brake it, and gave it to the disciples, and
said, Take, eat ; this is my body. 27 And he took the
cup, and gave thanks, and gave it to them, saying,
Drink ye all of it ; 28 for this is my blood of the new
testament, which is shed for many for the remission of
sins. 29 But I say unto you, I will not drink hence-
forth of this fruit of the vine, until that day when I
drink it new with you in my Father's kingdom.

यहूदा का बिश्वासघात

१४ तब बारह में से एक ने, जो यहूदा इस्करियोती कहलाता है, महा-
पुरोहितों के पास जाकर कहा, १५ 'यदि मैं उसे तुम्हारे हाथ पकड़वा दूं तो
तुम मुझे क्या दोगे ?' उन्होंने चांदी की तीस मुद्राएं तौल कर उसे दीं। १६ उस
समय से वह यीशु को पकड़वाने का अनुकूल अवसर ढूंढ़ने लगा।

अंतिम भोज

१७ अखमीरी रोटी के पर्व के प्रथम दिन शिष्यों ने यीशु के पास आकर
पूछा, 'आप कहां चाहते हैं कि हम आपके लिए फसह का भोजन तैयार करें ?'
१८ उन्होंने उत्तर दिया 'नगर में अमुक के पास जाकर उससे कहो कि गुरुजी
कहते हैं कि मेरा समय निकट आ पहुंचा है। मैं तुम्हारे यहां अपने शिष्यों
के साथ फसह का पर्व मनाऊंगा।' १९ जैसा यीशु ने आदेश दिया था
वैसा ही शिष्यों ने किया और फसह तैयार किया।

२० सायंकाल के समय वह बारह शिष्यों के साथ भोजन करने बैठे।
२१ जब वे भोजन कर रहे थे तो यीशु ने कहा, 'मैं तुमसे सच कहता हूं कि
तुममें से एक मुझे पकड़वाएगा।' २२ इस पर वे अत्यंत व्यथित हुए और
प्रत्येक उनसे पूछने लगा, 'प्रभु, मैं तो नहीं हूं ?' २३ उन्होंने उत्तर दिया,
'जो मेरे साथ थाली में हाथ डालता है, वही मुझे पकड़वाएगा। २४ मानव-
पुत्र तो, जैसा शास्त्र का उसके विषय में लेख है, जा रहा है : परंतु शोक उस
मनुष्य पर, जिसके द्वारा मानव-पुत्र पकड़वाया जा रहा है। उस मनुष्य के
लिए अच्छा होता कि वह उत्पन्न ही न हुआ होता,।' २५ तब उनके पकड़-
वानेवाले यहूदा ने कहा, 'गुरु, मैं तो नहीं हूं?' उन्होंने कहा, 'तुमने कह दिया।'

२६ भोजन करते समय यीशु ने रोटी ली, आशिष मांग कर तोड़ी और
उनको दी; और कहा, 'लो, खाओ, यह मेरी देह है।' २७ तब उन्होंने कटोरा
लिया, और धन्यवाद देकर उनको दिया और कहा, 'तुम सब इसमें से पियो,
२८ क्योंकि यह व्यवस्थान का मेरा रक्त है जो बहुतों की पाप-क्षमा के निमित्त
बहाया जा रहा है। २९ मैं कहता हूं कि दाख का यह रस अब से लेकर उस
दिन तक नहीं पिऊंगा, जब तक अपने पिता के राज्य में, तुम्हारे साथ नया
न पिऊं।'

JESUS PREDICTS THE DISCIPLES' DESERTION

30 And when they had sung an hymn, they went
out into the mount of Olives. 31 Then saith Jesus
unto them, All ye shall be offended because of me this
night : for it is written,

I will smite the shepherd,
And the sheep of the flock shall be scattered abroad.

32 But after I am risen again, I will go before you into
Galilee. 33 Peter answered and said unto him, Though
all men shall be offended because of thee, yet will I
never be offended. 34 Jesus said unto him, Verily I
say unto thee, That this night, before the cock crow,
thou shalt deny me thrice. 35 Peter said unto him,
Though I should die with thee, yet will I not deny
thee. Likewise also said all the disciples.

JESUS IN GETHSEMANE

36 Then cometh Jesus with them unto a place
called Gethsemane, and saith unto the disciples, Sit ye
here, while I go and pray yonder. 37 And he took
with him Peter and the two sons of Zebedee, and
began to be sorrowful and very heavy. 38 Then saith
he unto them, My soul is exceeding sorrowful, even
unto death : tarry ye here, and watch with me. 39 And
he went a little farther, and fell on his face, and prayed,
saying, O my Father, if it be possible, let this cup pass
from me : nevertheless not as I will, but as thou wilt.
40 And he cometh unto the disciples, and findeth them
asleep, and saith unto Peter, What, could ye not watch
with me one hour ? 41 Watch and pray, that ye enter
not into temptation : the spirit indeed is willing, but
the flesh is weak. 42 He went away again the second
time, and prayed, saying, O my Father, if this cup may
not pass away from me, except I drink it, thy will be
done. 43 And he came and found them asleep again :
for their eyes were heavy. 44 And he left them, and
went away again, and prayed the third time, saying the
same words. 45 Then cometh he to his disciples, and

शिष्यों के पलायन के संबंध में भविष्यवाणी

३० स्तोत्र गाने के पश्चात् वे जैतून पर्वत को चले गए। ३१ तब यीशु ने
उनसे कहा, आज रात्रि को तुम सबका मेरे विषय में पतन होगा, क्योंकि
शास्त्र का लेख हैं,

"मैं मेषपाल पर आघात करूंगा
और झुंड की भेंड़ें बिखर जाएंगी।"

३२ परंतु अपने पुनरुत्थान के पश्चात् तुम्हारे आगे गलील को जाऊंगा।'
३३ पतरस बोले, 'चाहे आपके विषय में सबका पतन हो जाए, पर मेरा पतन
कभी न होगा।' ३४ यीशु ने कहा, 'मैं तुमसे सच कहता हूं, इसी रात को
मुर्ग के बांग देने के पहले तुम तीन बार मुझे अस्वीकार करोगे।' ३५ पतरस
ने उनसे कहा, 'चाहे मुझे आपके साथ मरना पड़े, तो भी मैं आपको कदापि
अस्वीकार न करूंगा।' इसी प्रकार और सब शिष्यों ने भी कहा।

गतसमने में

३६ तब यीशु उनके साथ गतसमने नामक स्थान पर आए। वहां उन्होंने
अपने शिष्यों से कहा, 'जब तक मैं जाकर प्रार्थना करता हूं, तुम यहां बैठो।'
३७ वह पतरस और जबदी के दोनों पुत्रों को साथ ले गए, और व्यथित तथा
व्याकुल हो उठे। ३८ वह उनसे बोले, 'मेरे प्राण ऐसे व्याकुल हैं मानो निकले
जा रहे हों। तुम यहीं ठहरो और मेरे साथ जागते रहो।' ३९ तब वह थोड़ा
आगे बढ़े और मुंह के बल गिरकर प्रार्थना करने लगे, 'मेरे पिता, यदि संभव
हो तो यह कटोरा मुझसे टल जाए, तो भी मैं चाहता हूं वैसा नहीं, वरन् जैसा
तू चाहता है वैसा हो।' ४० जब वह शिष्यों के पास आए तो उन्हें सोते
पाकर पतरस से बोले, ४१ 'मेरे साथ एक घंटे जागने की भी सामर्थ्य तुममें
नहीं? तुम सब जागते रहो और प्रार्थना करते रहो कि परीक्षा में न पड़ो।
आत्मा तत्पर है, पर शरीर दुर्बल है।' ४२ वह फिर दूसरी बार गए और
प्रार्थना की, 'मेरे पिता, यदि यह मेरे पिए बिना नहीं टल सकता, तो तेरी
इच्छा पूरी हो।' ४३ परंतु लौटने पर फिर उन्हें सोते पाया क्योंकि उनकी
आंखें नींद से भारी हो रही थीं। ४४ उन्हें छोड़कर वह फिर गए और तीसरी
बार उन्हीं शब्दों में प्रार्थना की। ४५ तब वह शिष्यों के समीप आए और

saith unto them, Sleep on now, and take your rest:
behold, the hour is at hand, and the Son of man is
betrayed into the hands of sinners. 46 Rise, let us be
going : behold, he is at hand that doth betray me.

THE ARREST OF JESUS

47 And while he yet spake, lo, Judas, one of the
twelve, came, and with him a great multitude with
swords and staves, from the chief priests and elders of
the people. 48 Now he that betrayed him gave them
a sign, saying, Whomsoever I shall kiss, that same is
he : hold him fast. 49 And forthwith he came to Jesus,
and said, Hail, master ; and kissed him. 50 And Jesus
said unto him, Friend, wherefore art thou come ? Then
came they, and laid hands on Jesus, and took him.
51 And, behold, one of them which were with Jesus
stretched out his hand, and drew his sword, and struck
a servant of the high priest's, and smote off his ear.
52 Then said Jesus unto him, Put up again thy sword
into his place : for all they that take the sword shall
perish with the sword. 53 Thinkest thou that I cannot
now pray to my Father, and he shall presently give me
more than twelve legions of angels ? 54 But how then
shall the scriptures be fulfilled, that thus it must be?
55 In that same hour said Jesus to the multitudes, Are
ye come out as against a thief with swords and staves
for to take me ? I sat daily with you teaching in the
temple, and ye laid no hold on me. 56 But all this
was done, that the scriptures of the prophets might be
fulfilled. Then all the disciples forsook him, and fled.

THE TRIAL OF JESUS BEFORE THE HIGH PRIEST

57 And they that had laid hold on Jesus led him
away to Caiaphas the high priest, where the scribes
and the elders were assembled. 58 But Peter followed
him afar off unto the high priest's palace, and went in
and sat with the servants, to see the end. 59 Now the
chief priests, and elders, and all the council, sought false
witness against Jesus, to put him to death ; 60 but found

उनसे कहा, 'अब भी सो रहे हो! विश्राम कर रहे हो! देखो, समय आ
पहुंचा, मानव-पुत्र पापियों के हाथ पकड़वाया जा रहा है। ४६ उठो, हम चलें।
देखो, मेरा पकड़वाने वाला निकट आ गया।'

यीशु का बंदी होना

४७ वह बोल ही रहे थे कि बारह में से एक अर्थात् यहूदा आ गया।
उसके साथ तलवारें और लाठियां लिए बड़ा जनसमूह था जिसे महापुरोहितों
और धर्मवृद्धों ने भेजा था। ४८ पकड़वाने वाले ने उन्हें यह संकेत दिया था,
'जिसका मैं चुंबन करूं, वही है; उसे पकड़ लेना।' ४६ वह तुरंत यीशु के
समीप जाकर बोला, 'रब्बी, प्रणाम', और उनका चुंबन किया। ५० यीशु ने
उससे कहा, 'मित्र, जिस काम के लिए आए हो* उसे कर लो।' तब लोगों ने
पास आकर यीशु पर हाथ डाले और उन्हें पकड़ लिया। ५१ इस पर यीशु के
एक साथी ने हाथ बढ़ाकर अपनी तलवार खींची और महापुरोहित के दास पर
चलाकर उसका कान उड़ा दिदा। ५२ यीशु ने उससे कहा, 'अपनी तलवार
म्यान में रखो, क्योंकि जो तलवार उठाते हैं वे तलवार से ही मारे जाएंगे।
५३ क्या तुम सोचते हो कि मैं अपने पिता से निवेदन नहीं कर सकता? क्या
वह इसी क्षण मुझे स्वर्गदूतों की बारह सेनाओं से अधिक नहीं भेज देगा?
५४ परंतु तब शास्त्र का लेख कि "ऐसा होना अनिवाय है," कैसे पूरा होगा?'
५५ उस समय यीशु ने जनसमूह से कहा, 'क्या तुम तलवारें और लाठियां
लेकर मुझे बन्दी करने आए हो मानो मैं कोई डाकू हूं? मैंने प्रतिदिन मंदिर
में बैठकर तुम्हें उपदेश दिए पर तुमने मुझे नहीं पकड़ा। ५६ अस्तु, यह सब
इसलिए हुआ कि नबियों का लेख पूरा हो।' तब सब शिष्य उनको छोड़कर
भाग गए।

महापुरोहित के संमुख यीशु का बिचार

५७ यीशु के पकड़ने वाले उनको महापुरोहित काइफा के समीप ले गए,
जहां शास्त्री और धर्मवृद्ध एकत्रित थे। ५८ पतरस भी दूर-दूर यीशु के पीछे
महापुरोहित के आंगन तक गए और अंत देखने के लिए भीतर जाकर सेवकों
के साथ बैठ गए। ५६ इधर महापुरोहित और समस्त परिषद् ने यीशु को मार

* पाठांतर 'तुम क्या करने आए हो?'

none: yea, though many false witnesses came, yet
found they none. At the last came two false witnesses,
61 and said. This fellow said, I am able to destroy the
temple of God, and to build it in three days. 62 And
the high priest arose, and said unto him, Answerest
thou nothing? what is it which these witness against
thee? 63 But Jesus held his peace. And the high
priest answered and said unto him, I adjure thee by the
living God, that thou tell us whether thou be the Christ,
the Son of God. 64 Jesus saith unto him, Thou hast
said: nevertheless I say unto you, Hereafter shall ye
see the Son of man sitting on the right hand of power
and coming in the clouds of heaven. 65 Then the
high priest rent his clothes, saying, He hath spoken
blasphemy; what further need have we of witnesses?
behold, now ye have heard his blasphemy. 66 What
think ye? They answered and said, He is guilty of death.
67 Then did they spit in his face, and buffeted him;
and others smote him with the palms of their hands,
68 saying, Prophesy unto us, thou Christ, Who is he
that smote thee?

PETER'S DENIAL OF JESUS

69 Now Peter sat without in the palace: and a
damsel came unto him, saying, Thou also wast with
Jesus of Galilee. 70 But he denied before them all,
saying, I know not what thou sayest. 71 And when
he was gone out into the porch, another maid saw
him, and said unto them that were there, This fellow
was also with Jesus of Nazareth. 72 And again he
denied with an oath, I do not know the man. 73 And
after a while came unto him they that stood by, and
said to Peter, Surely thou also art one of them; for
thy speech bewrayeth thee. 74 Then began he to curse
and to swear, saying, I know not the man. And
immediately the cock crew. 75 And Peter remembered
the word of Jesus, which said unto him, Before the
cock crow, thou shalt deny me thrice. And he went
out, and wept bitterly.

डालने के लिए उनके विरुद्ध झूठी साक्षी ढूंढ़ी, ६० पर अनेक झूठे साक्षियों के
आने पर भी न मिली। ६१ अंत में दो मनुष्य आकर बोले, 'इसने कहा था
६२ कि मैं परमेश्वर के मंदिर को गिरा सकता हूं और तीन दिन में फिर बना
सकता हूं।' इस पर महापुरोहित ने खड़े होकर उनसे कहा, 'तू कुछ उत्तर
नहीं देता, ये लोग तेरे विरुद्ध क्या साक्षी दे रहे हैं ?' ६३ पर यीशु मौन रहे।
महापुरोहित ने कहा, 'मैं तुझे जीवंत परमेश्वर की शपथ देकर कहता हूं, कि यदि
तू परमेश्वर-पुत्र ख्रिस्त है तो हम से कह दे।' ६४ यीशु बोले, 'आपने कह
दिया। मैं आपसे यह भी कहता हूं कि अब से "तुम मानव-पुत्र को सर्व-
शक्तिमान् की दाहिनी ओर बैठा हुआ और आकाश के मेघों पर आता हुआ
देखोगे।"' ६५ इस पर महापुरोहित ने अपने वस्त्र फाड़े और कहा, 'इसने
परमेश्वर की निन्दा की है। क्या हमें अब भी साक्षियों की आवश्यकता है ?
६६ आप लोगों का क्या विचार है ?' उन्होंने उत्तर दिया, 'वह प्राणदंड के
योग्य है।' ६७ तब उन्होंने यीशु के मुंह पर थूका, और उन्हें घूंसे मारे ; कुछ ने
थप्पड़ मारकर उनसे कहा, 'ख्रिस्त ! हमें नबूवत करके बता कि किसने तुझे
मारा !'

पतरस की अस्वीकृति

६९ पतरस बाहर आंगन में बैठे थे कि एक दासी उनके पास आकर बोली,
'तू भी गलील-निवासी यीशु के साथ था।' ७० उन्होंने सबके सामने
अस्वीकार करते हुए कहा, 'मैं नहीं जानता कि तुम क्या कह रही हो।'
७१ जब वह बाहर ड्योढ़ी पर चले गए तो किसी और दासी ने उन्हें देखा एवं
वहां लोगों से कहा, 'यह नासरत-निवासी यीशु के साथ था।' ७२ पतरस ने
शपथ पूर्वक फिर अस्वीकार किया, 'मैं उस मनुष्य को नहीं जानता।'
७३ कुछ समय पश्चात् वहां खड़े हुए लोगों ने पतरस के समीप आकर कहा,
'निश्चय, तू उन्हीं में से है क्योंकि तेरी बोली ही तुझे प्रकट कर रही है।'
७४ तब वह अपने आपको शाप देने और शपथ पूर्वक कहने लगे, 'मैं उस
मनुष्य को नहीं जानता।' और तत्काल मुर्ग ने बांग दी। ७५ अब पतरस
को वे शब्द स्मरण हुए जो यीशु ने कहे थे, 'मुर्ग के बांग देने से पहले तुम मुझे
तीन बार अस्वीकार करोगे ;' और वह बाहर जाकर फूट फूट कर रोने लगे।

JESUS BEFORE PILATE, THE ROMAN GOVERNOR

27 When the morning was come, all the chief priests
and elders of the people took counsel against
Jesus to put him to death : 2 and when they had
bound him, they led him away, and delivered him to
Pontius Pilate the governor.

THE DEATH OF JUDAS

3 Then Judas, which had betrayed him, when he
saw that he was condemned, repented himself, and
brought again the thirty pieces of silver to the chief
priests and elders, 4 saying, I have sinned in that I
have betrayed the innocent blood. And they said,
What is that to us ? see thou to that. 5 And he cast
down the pieces of silver in the temple, and departed,
and went and hanged himself. 6 And the chief priests
took the silver pieces, and said, It is not lawful for to
put them into the treasury, because it is the price of
blood. 7 And they took counsel, and bought with them
the potter's field, to bury strangers in. 8 Wherefore
that field was called, The field of blood, unto this day.

9 Then was fulfilled that which was spoken by
Jeremy the prophet, saying,

And they took the thirty pieces of silver,
The price of him that was valued,
Whom they of the children of Israel did value ;
And gave them for the potter's field,
As the Lord appointed me.

JESUS BEFORE PILATE

11 And Jesus stood before the governor : and the
governor asked him, saying, Art thou the King of the
Jews ? And Jesus said unto him, Thou sayest. 12 And
when he was accused of the chief priests and elders, he
answered nothing. 13 Then said Pilate unto him,
Hearest thou not how many things they witness against
thee ?

14 And he answered him to never a word ; insomuch

२७

पिलातुस के संमुख

१ जब प्रात:काल हुआ तो सब महापुरोहितों और धर्मवृद्धों ने यीशु के
विरुद्ध मंत्रणा की कि उन्हें मरवा डालें, २ और उनको बांधकर ले गए तथा
राज्यपाल पिलातुस को सौंप दिया।

यहूदा इस्करियोती की मृत्यु

३ तब यहूदा, जिसने उनको पकड़वाया था, यह देखकर कि उनको दंड की
आज्ञा मिली है, पछताया। वह महापुरोहितों और धर्मवृद्धों के पास चांदी की
तीस मुद्राएं लेकर आया ४ और बोला, 'मैंने निर्दोष रक्त को सौंपकर पाप
किया है।' उन्होंने कहा, 'तुम जानो, इससे हमें क्या!' ५ तब वह चांदी
की मुद्राएं मंदिर में फेंककर चला गया और जाकर आत्महत्या कर ली।
६ महापुरोहितों ने उन मुद्राओं को लेकर कहा, 'इन्हें कोष में रखना उचित
नहीं, क्योंकि ये रक्त का मूल्य है।' ७ अत: आपस में मंत्रणा कर उन्होंने
परदेशियों को गाढ़ने के लिए कुम्हार का खेत मोल लिया। ८ इस कारण
वह खेत आज भी रक्त-क्षेत्र कहलाता है। ९ इस प्रकार यिर्मयाह नबी
का यह वचन पूरा हुआ,

'उन्होंने चांदी की तीस मुद्राएं लीं,
उसका मूल्य जिस पर इस्राएल के पुत्रों ने मूल्य लगाया था,
१० और कुम्हार के खेत लिए दे दीं,
जैसा प्रभु ने आदेश दिया।'

पिलातुस के संमुख यीशु

११ अब यीशु राज्यपाल के संमुख खड़े हुए। राज्यपाल ने उनसे पूछा,
'क्या तुम यहूदियों के राजा हो?' यीशु ने उत्तर दिया, 'आप स्वयं कह रहे
हैं।' १२ किंतु जब महापुरोहितों और धर्मवृद्धों ने उन पर अभियोग लगाए
तो उन्होंने कुछ उत्तर नहीं दिया। १३ पिलातुस ने कहा, 'क्या तुम नहीं सुन
रहे कि ये तुम्हारे विरुद्ध कितनी साक्षियां दे रहे हैं?' १४ पर उन्होंने एक
बात का भी उत्तर नहीं दिया; इससे राज्यपाल को बहुत आश्चर्य हुआ।

that the governor marvelled greatly. 15 Now at that
feast the governor was wont to release unto the people
a prisoner, whom they would. 16 And they had then
a notable prisoner, called Barabbas. 17 Therefore when
they were gathered together, Pilate said unto them,
Whom will ye that I release unto you ? Barabbas, or
Jesus which is called Christ ? 18 For he knew that for
envy they had delivered him. 19 When he was set
down on the judgment seat, his wife sent unto him,
saying, Have thou nothing to do with that just man :
for I have suffered many things this day in a dream
because of him. 20 But the chief priests and elders
persuaded the multitude that they should ask Barabbas,
and destroy Jesus. 21 The governor answered and said
unto them, Whether of the twain will ye that I release
unto you ? They said, Barabbas. 22 Pilate saith unto
them, What shall I do then with Jesus which is called
Christ ? They all say unto him, Let him be crucified.
23 And the governor said, Why, what evil hath he
done ? But they cried out the more, saying, Let him be
crucified.

24 When Pilate saw that he could prevail nothing,
but that rather a tumult was made, he took water, and
washed his hands before the multitude, saying, I am
innocent of the blood of this just person : see ye to it.
25 Then answered all the people, and said, His blood be
on us, and on our children.

26 Then released he Barabbas unto them : and when
he had scourged Jesus, he delivered him to be crucified.

THE CRUCIFIXION OF JESUS

27 Then the soldiers of the governor took Jesus into
the common hall, and gathered unto him the whole band
of soldiers. 28 And they stripped him, and put on him
a scarlet robe. 29 And when they had platted a crown
of thorns they put it upon his head, and a reed in his
right hand : and they bowed the knee before him, and
mocked him, saying, Hail, King of the Jews ! 30 And
they spit upon him, and took the reed, and smote him

१५ पर्व के समय राज्यपाल भीड़ की इच्छानुसार एक बंदी को मुक्त
किया करता था। १६ उस समय बरअब्बा नामक एक कुख्यात मनुष्य बंदी था।
१७ लोगों के एकत्रित होने पर पिलातुस ने उनसे कहा, 'तुम क्या चाहते हो, मैं
तुम्हारे लिए किसे मुक्त करूं? बरअब्बा को, अथवा यीशु को, जो ख्रिस्त कहलाते
हैं?' १८ क्योंकि यह जानता था कि उन्होंने यीशु को ईर्ष्यावश पकड़वाया है।
१९ इसके अतिरिक्त जब वह न्यायासन पर बैठा तो उसकी पत्नी ने कहला
भेजा था, 'उस धर्मात्मा मनुष्य के विषय में हस्तक्षेप न करना था, क्योंकि
मैंने आज स्वप्न में उसके कारण बहुत दुःख उठाया है।' २० परंतु महापुरोहितों
और धर्मवृद्धों ने जनसमूह को बहका दिया कि बरअब्बा की मुक्ति और यीशु
की मृत्यु की मांग करें। २१ राज्यपाल ने पूछा, 'तुम क्या चाहते हो? दोनों
में से किसे तुम्हारे लिए छोड़ दूं?' वे बोले, 'बरअब्बा को।' २२ पिलातुस
ने कहा, 'तो फिर यीशु का, जो ख्रिस्त कहलाते हैं, क्या करूं।' वे सब कहने
लगे, वह क्रूस पर चढ़ाया जाए।' २३ उसने पूछा, 'क्यों? उसने क्या
अपराध किया है?' इसपर वे और भी उच्च स्वर से चिल्लाए, 'वह क्रूस पर
चढ़ाया जाए।' २४ जब पिलातुस ने देखा कि उसे सफलता मिल नहीं रही
वरन् उपद्रव बढ़ता ही जाता है तो उसने जल लिया और लोगों के सामने
हाथ धोकर कहा, 'इस मनुष्य* के रक्त से मैं निर्दोष हूं, तुम्हीं जानो।'
२५ लोगों ने उत्तर दिया, 'इसका रक्त हम पर और हमारी संतान पर हो।'
२६ तब उसने बरअब्बा को उनके लिए मुक्त कर दिया, और यीशु को कोड़े
लगवाकर, क्रूस पर चढ़ाने के लिए सौंप दिया।

क्रूस

२७ तब राज्यपाल के सैनिक यीशु को प्रैतोरिउन† ले गए और समस्त
सैन्यदल एकत्रित किया। २८ उन्होंने यीशु के वस्त्र उतारकर उन्हें लाल
जामा पहिनाया, २९ कांटों का मुकुट गूंथकर उनके सिर पर रखा, नरकुल
उनके दाहिने हाथ में थमाया और उनके आगे घुटने टेक कर उपहास करने तथा
कहने लगे, 'यहूदियों के राजा आपकी जय हो।' ३० सैनिकों ने उन पर थूका

* कुछ प्रामाणिक प्रतियों में 'धर्मात्मा मनुष्य'
† अर्थात् राजभवन का प्रांगण।

on the head. 31 And after that they had mocked him,
they took the robe off from him, and put his own
raiment on him, and led him away to crucify him.

32 And as they came out, they found a man of
Cyrene, Simon by name : him they compelled to bear his
cross. 33 And when they were come unto a place
called Golgotha, that is to say, a place of a skull, 34
they gave him vinegar to drink mingled with gall : and
when he had tasted thereof, he would not drink.
35 And they crucified him, and parted his garments,
casting lots : that it might be fulfilled which was spoken
by the prophet, They parted my garments among them,
and upon my vesture did they cast lots. 36 And sitting
down they watched him there ; 37 and set up over his
head his accusation written, THIS IS JESUS THE
KING OF THE JEWS. 38 Then were there two
thieves crucified with him, one on the right hand, and
another on the left. 39 And they that passed by reviled
him, wagging their heads, 40 and saying, Thou that
destroyest the temple, and buildest it in three days,
save thyself. If thou be the Son of God, come down
from the cross. 41 Likewise also the chief priests
mocking him, with the scribes and elders, said, 42 He
saved others ; himself he cannot save. If he be the King
of Israel, let him now come down from the cross, and
we will believe him. 43 He trusted in God ; let him
deliver him now, if he will have him : for he said, I am
the Son of God. 44 The thieves also, which were
crucified with him, cast the same in his teeth.

THE DEATH OF JESUS

45 Now from the sixth hour there was darkness over
all the land unto the ninth hour. 46 And about the
ninth hour Jesus cried with a loud voice, saying, Eli, Eli,
lama sabachthani ? that is to say, My God, my God, why
hast thou forsaken me ? 47 Some of them that stood
there, when they heard that, said, This man calleth for
Elias. 48 And straightway one of them ran, and took
a spunge, and filled it with vinegar, and put it on a reed,

और वही नरकुल लेकर उनके सिर पर मारने लगे। ३१ जब वे उनका उपहास
कर चुके तो जामा उतार लिया और उनके कपड़े पहिना कर उन्हें क्रूस पर
चढ़ाने के लिए ले चले।

३२ बाहर जाते समय उनको शमौन नामक एक कुरैन-निवासी मिला;
उसे उन्होंने बेगार में पकड़ा कि उनका क्रूस उठा कर चले। ३३ जब वे
गुलगुता अर्थात् 'कपाल-स्थान' नामक स्थान पर पहुंचे ३४ तो उन्होंने यीशु को
पित्त-मिश्रित दाखरस पीने को दिया पर उन्होंने चखकर पीना न चाहा। ३५ तब
सैनिकों ने उनको क्रूस पर चढ़ाया, चिट्ठी डालकर उनके वस्त्रों को बांटा,
३६ और वहां बैठकर पहरा देने लगे। ३७ उन्होंने यीशु का अभियोगपत्र कि
यह यहूदियों का राजा यीशु है' उनके सिर के ऊपर लटका दिया। ३८
उनके साथ ही दो डाकू क्रूस पर चढ़ाये गए, एक उनकी दाहिनी और दूसरा
बाई ओर। ३९ उधर से आने-जाने वाले उनकी निन्दा कर रहे थे और शिर
हिलाकर ४० कहते थे, 'हे संदिर को गिराने वाले और तीन दिन में बनाने-
वाले; अपने को बचा। यदि तू परमेश्वर का पुत्र है; तो क्रूस से उतर आ।'
४१ इनी प्रकार महापुरोहित, शास्त्री और धर्मबृद्ध उपहास करते हुए कह रहे
थे, ४२ 'उसने दूसरों को बचाया, पर अपने को नहीं बचा सकता। वह तो
इस्राएल का राजा है; अब क्रूस से उतरे तो हम भी उस पर विश्वास करें।
४३ वह परमेश्वर पर निर्भर रहा, यदि वह इसे चाहते हैं तो अब इसे छुड़ाएं;
क्योंकि इसने कहा था "मैं परमेश्वर का पुत्र हूं।" ४४ इसी प्रकार डाकू भी,
जो उनके साथ क्रूस पर चढ़ाये गए थे, उन्हें बुरा भला कह रहे थे।

मृत्यु

४५ दोपहर से लेकर तीसरे पहर तक समस्त देश में अंधकार छाया रहा।
४६ लगभग तीसरे पहर यिशु ने उच्च स्वर से पुकारा, 'एली एली, लमा
सबक्तनी ?' अर्थात् ऐ परमेश्वर, ऐ मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया ?'
४७ यह सुनकर वहां खड़े लोगों में से बोले, 'वह ऐलिय्याह को पुकार रहा है;
४८ और उनमें से ऐक ने तुरंत दौड़कर स्पंज लिया और अम्ल-रस में

and gave him to drink. 49 The rest said, Let be, let us
see whether Elias will come to save him. 50 Jesus, when
he had cried again with a loud voice, yielded up the
ghost. 51 And, behold, the veil of the temple was rent
in twain from the top to the bottom ; and the earth did
quake, and the rocks rent ; 52 and the graves were
opened ; and many bodies of the saints which slept arose,
53 and came out of the graves after his resurrection,
and went into the holy city, and appeared unto many.
54 Now when the centurion, and they that were with
him, watching Jesus, saw the earthquake, and those
things that were done, they feared greatly, saying, Truly
this was the Son of God.

55 And many women were there beholding afar off
which followed Jesus from Galilee, ministering unto
him : 56 among which was Mary Magdalene, and Mary
the mother of James and Joses, and the mother of
Zebedee's children.

THE BURIAL OF JESUS

57 When the even was come, there came a rich man
of Arimathæa, named Joseph, who also himself was
Jesus' disciple : 58 he went to Pilate, and begged the
body of Jesus. Then Pilate commanded the body to be
delivered. 59 And when Joseph had taken the body,
he wrapped it in a clean linen cloth, 60 and laid it in
his own new tomb, which he had hewn out in the rock :
and he rolled a great stone to the door of the sepulchre,
and departed. 61 And there was Mary Magdalene, and
the other Mary, sitting over against the sepulchre.

62 Now the next day, that followed the day of the
preparation, the chief priests and Pharisees came to-
gether unto Pilate, 63 saying, Sir, we remember that
that deceiver said, while he was yet alive, After three
days I will rise again. 64 Command therefore that the
sepulchre be made sure until the third day, lest his
disciples come by night, and steal him away, and say
unto the people, He is risen from the dead : so the last
error shall be worse than the first. 65 Pilate said unto

डुबोकर तथा नरकुल में लगाकर उन्हें पीने को दिया। ४९ दूसरों ने कहा,
'ठहरो, देखें, एलिय्याह उसे बचाने आते हैं या नहीं।' ५० तब यीशु ने उच्च
स्वर से चिल्लाकर अपने प्राण त्याग दिये। ५१ और देखो, मंदिर का पट
ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया, पृथ्वी कंपित हो उठी, चट्टानें
तड़क गईं, ५२ कबरें खुल गई एवं निद्रा-मग्न अनेक संतों के शरीर जीवित
हो उठे, ५३ जो उनके जीवित होने के पश्चात् कबरों से निकलकर पवित्र नगर
में गये और बहुतों को दिखाई दिये। ५४ शतपति और उसके साथी, जो
यीशु पर पहरा दे रहे थे, भूकम्प एवं इन घटनाओं को देखकर अत्यंत भयभीत
हो उठे और बोले; 'निश्चय, यह परमेश्वर-पुत्र था।'

५५ बहुत सी स्त्रियां भी वहां दूर से देख रही थीं। ये गलील से यीशु
के पीछे उनकी सेवा करती हुई आईं थीं। ५६ इनमें मरियम मगदलीनी,
याकूब और योसेस की माता मरियम, और जबदी के पुत्रों की माता थीं।

कबर में रखा जाना

५७ सायंकाल होने पर अरिमतियाह के यूसुफ नामक एक धनवान् पुरुष
आए जो स्वयं यीशु के शिष्य थे। ५८ उन्होंने पिलातुस के पास जाकर यीशु
का शव मांगा। पिलातुस ने देने की आज्ञा दी। ५९ यूसुफ ने शव को लेकर
स्वच्छ मलमल की चादर में लपेटा ६० और अपनी नई कबर में रखा जो
उन्होंने चट्टान में खुदवाई थी, तथा कबर के द्वार पर भारी पत्थर लुढ़का कर
चले गए। ६१ मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम वहां कबर के संमुख
बैठीं थीं।

६२ दूसरे दिन, अर्थात् परास्केव-दिवस* के पश्चात् महापुरोहितों और
फरीसियों ने पिलातुस के संमुख एकत्रित हो ६३ उससे कहा, 'महाराज हमें
स्मरण है कि उस धूर्त ने, जब वह जीवित था, कहा था कि मैं तीन दिन पश्चात्
जीवित हो जाऊंगा। ६४ अतएव आज्ञा दीजिए कि तीसरे दिन तक कबर
की रक्षा की जाए; कहीं ऐसा न हो कि उसके शिष्य उसे चुरा ले जाएं
और लोगों से कहने लगें, "वह मृतकों में से जीवित हो उठे।" तब यह
अंतिम धोखा पहिले से भी बुरा होगा।' ६५ पिलातुस ने कहा, 'तुम्हारे पास

---

* सबत के पूर्व का दिवस।

them, Ye have a watch : go your way, make it as sure
as ye can. 66 So they went, and made the sepulchre
sure, sealing the stone, and setting a watch.

THE RESURRECTION OF JESUS

28 In the end of the sabbath, as it began to dawn
toward the first day of the week, came Mary
Magdalene and the other Mary to see the sepulchre.
2 And, behold, there was a great earthquake : for the
angel of the Lord descended from heaven, and came
and rolled back the stone from the door, and sat upon
it. 3 His countenance was like lightning, and his
raiment white as snow : 4 and for fear of him the
keepers did shake, and became as dead men. 5 And
the angel answered and said unto the women, Fear not
ye : for I know that ye seek Jesus, which was crucified.
6 He is not here : for he is risen, as he said. Come,
see the place where the Lord lay. 7 And go quickly,
and tell his disciples that he is risen from the dead ;
and, behold, he goeth before you into Galilee ; there
shall ye see him : lo, I have told you. 8 And they
departed quickly from the sepulchre with fear and great
joy ; and did run to bring his disciples word.

9 And as they went to tell his disciples, behold,
Jesus met them, saying, All hail. And they came and
held him by the feet, and worshipped him. 10 Then
said Jesus unto them, Be not afraid : go tell my brethren
that they go into Galilee, and there shall they see me.

11 Now when they were going, behold, some of the
watch came into the city, and shewed unto the chief
priests all the things that were done. 12 And when
they were assembled with the elders, and had taken
counsel, they gave large money unto the soldiers, 13 say-
ing, Say ye, His disciples came by night, and stole him
away while we slept. 14 And if this come to the
governor's ears, we will persuade him, and secure you.
15 So they took the money, and did as they were tau-

प्रहरी हैं। जाओ और जैसे समझो, रक्षा करो।' ६६ तब वे गए और पत्थर
पर मुहर लगाकर तथा प्रहरियों को बैठाकर कबर को सुरक्षित कर
दिया।

२८

यीशु का पुनरुत्थान

१ सबत के पश्चात्, सप्ताह के प्रथम दिन, उषा बेला में, मरियम मगदलीनी
और दूसरी मरियम कबर देखने आईं। २ और देखो, बड़ा भूकंप हुआ,
तथा प्रभु का एक दूत स्वर्ग से उतरा। उसने आकर पत्थर को लुढ़का दिया
और उस पर बैठ गया। ३ उसका रूप विद्युत् के सदृश था और उसके वस्त्र
हिम के सदृश श्वेत थे। ४ उसके भय से प्रहरी कांपने लगे और मृतप्राय हो गए
५ दूत ने स्त्रियों से कहा, 'डरो मत, मैं जानता हूं कि तुम क्रूसित यीशु को
ढूंढ़ रही हो। ६ वह यहां नहीं हैं, किन्तु अपने बचन के अनुसार जीवित हो
उठे हैं। आओ, और इस स्थान को देखो जहां वह लिटाए गए थे। ७ फिर
शीघ्र जाकर उनके शिष्यों से कहो कि वह जीवित हो उठे हैं, और तुमसे
आगे गलीलको जा रहे हैं; वहां तुम लोग उनके दर्शन करोगे। देखो, मैंने तुमसे
कह दिया है।' ८ वे भय और बड़े आनन्द के साथ तत्काल कबर से चल दी
और उनके शिष्यों को समाचार देने दौड़ीं। ९ और देखो, यीशु उनसे मिले
और बोले, 'प्रसन्न रहो।' वे उनके निकट गईं और उनके चरण पकड़कर वंदना
की। १० यीशु ने उनसे कहा, भयभीत न हो। जाकर मेरे भाइयों से कहो
कि गलील जाएं; वहां वे मुझे देखेंगे।'

११ वे मार्ग में ही थीं कि कई प्रहरियों ने नगर में जाकर महापुरोहितों
को सब घटनाएं सुनाईं। १२ उन्होंने धर्मवृद्धों को एकत्र कर मंत्रणा की
और सैनिकों को प्रचुर धन देकर कहा, १३ 'लोगों से कहना कि जब
हम रात को सोए हुए थे तो उसके शिष्य आकर उसे चुरा ले गए। १४ यदि
राज्यपाल के कान तक यह बात पहुंची तो हम उन्हें समझा लेंगे और तुम्हारे
लिए कोई चिन्ता की बात न होगी।' १५ उन्होंने धन लेकर, जैसे सिखाए गए

ght : and this saying is commonly reported among the
Jews until this day.

JESUS APPEARS TO THE APOSTLES IN GALILEE

16 Then the eleven disciples went away into Galilee
into a mountain where Jesus had appointed them. 17
And when they saw him, they worshipped him : but
some doubted. 18 And Jesus came and spake unto
them, saying, All power is given unto me in heaven
and in earth. 19 Go ye therefore, and teach all nations
baptizing them in the name of the Father, and of the
Son, and of the Holy Ghost : 20 teaching them to
observe all things whatsoever I have commanded you :
and, lo, I am with you alway, even unto the end of
the world. Amen.

थे, वैसा ही किया, और यही किंवदंती आज तक यहूदियों में प्रचलित है।

गलील में प्रेरितों को दर्शन

१६ इसके उपरांत ग्यारह शिष्य गलील में उस पर्वत पर गए जहां जाने
का यीशु ने उन्हें आदेश दिया था। १७ उनको देखकर शिष्यों ने उनकी
वंदना की, परंतु कुछ को संदेह हुआ। १८ तब यीशु ने उनके पास आकर
कहा, 'स्वर्ग और पृथ्वी का समस्त अधिकार मुझे दिया गया है। १९ इसलिए
जाकर तुम सब जातियों को शिष्य बनाओ, उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा
के नाम से बपतिस्मा दो, २० और जिन बातों की मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, उन
सब का पालन करना उन्हें सिखाओ; और देखो, युगांत पर्यन्त सर्वदा मैं
तुम्हारे साथ हूं। आमेन।'

THE GOSPEL

ACCORDING TO

ST. MARK

JOHN THE BAPTIST AND HIS MESSAGE

THE beginning of the gospel of Jesus Christ, the Son
of God ; 2 As it is written in the prophets,
Behold, I send my messenger before thy face,
Which shall prepare thy way before thee.
3 The voice of one crying in the wilderness,
Prepare ye the way of the Lord,
Make his paths straight.

4 John did baptize in the wilderness, and preach
the baptism of repentance for the remission of sins.
5 And there went out unto him all the land of Judæa,
and they of Jerusalem, and were all baptized of him in
the river of Jordan, confessing their sins. 6 And John
was clothed with camel's hair, and with a girdle of
a skin about his loins ; 7 and he did eat locusts and wild
honey ; and preached, saying, There cometh one migh-
tier than I after me, the latchet of whose shoes I
am not worthy to stoop down and unloose. 8 I indeed
have baptized you with water : but he shall baptize you
with the Holy Ghost.

THE BAPTISM OF JESUS

9 And it came to pass in those days, that Jesus
came from Nazareth of Galilee, and was baptized of
John in Jordan. 10 And straightway coming up out of
the water, he saw the heavens opened, and the Spirit
like a dove descending upon him : 11 and there came
a voice from heaven, saying,
Thou art my beloved Son,
In whom I am well pleased.

THE TEMPTATION

12 And immediately the spirit driveth him into
the wilderness, 13 And he was there in the wilderness

मरकुस रचित सुसमाचार

१

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले और उनका संदेश

१ परमेश्वर-पुत्र यीशु ख्रिस्त के सुसमाचार का आरम्भ २ यशायाह नबी
के इस लेख के अनुसार हुआ,

'देखो मैं तुम्हारे आगे अपना दूत भेज रहा हूं,
वह तुम्हारे लिए मार्ग निर्माण करेगा;
३ निर्जन प्रदेश में पुकारने वाले की वाणी
"प्रभु का मार्ग तैयार करो
उनके पथ सीधे बनाओ।" '

४ यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले निर्जन प्रदेश में आए ; वह पाप-क्षमा के
लिए हृदय-परिवर्तन के बपतिस्मा का प्रचार करते थे। ५ समस्त यहूदिया प्रदेश
और सब यरूशलेम निवासी उनके पास आने और अपने पापों का अंगीकार
कर यरदन नदी में बपतिस्मा लेने लगे। ६ यूहन्ना ऊंट के रोम के वस्त्र पहिनते
और कमर में चमड़े का कटिबंध बांधते थे। टिड्डी और वनमधु उनका
आहार था। ७ वह प्रचार करते थे 'मुझसे अधिक शक्तिमान् मेरे पीछे आ
रहा है। मैं इस योग्य भी नहीं कि झुक कर उसके जूतों के बंध खोलूं।
८ मैंने तुम्हें जल से बपतिस्मा दिया है, परंतु वह तुम्हें पवित्रात्मा से बपतिस्मा
देंगे।'

यीशु का बपतिस्मा और परीक्षा

९ उन दिनों यीशु ने गलील के नासरत से आकर यूहन्ना से यरदन में
बपतिस्मा लिया। १० वह जल से बाहर निकल ही रहे थे कि उन्होंने आकाश
को खुलते और आत्मा को कपोत सदृश अपने ऊपर उतरते देखा। ११ और
आकाशवाणी हुई।

'तू मेरा प्रिय पुत्र है*
मैं तुझ से प्रसन्न हूँ।'

१२ तुरंत आत्मा ने उन्हें निर्जन प्रदेश में जाने को बाध्य किया। १३ वहां

---

* अथवा 'तू मेरा एकमात्र पुत्र है'।

forty days, tempted of Satan ; and was with the wild
beasts ; and the angels ministered unto him.

JESUS BEGINS HIS WORK

14 Now after that John was put in prison, Jesus
came into Galilee, preaching the gospel of the kingdom
of God, 15 and saying, The time is fulfilled, and the
kingdom of God is at hand : repent ye, and believe
the gospel.

THE FIRST DISCIPLES CALLED

16 Now as he walked by the sea of Galilee, he saw
Simon and Andrew his brother casting a net into the
sea : for they were fishers. 17 And Jesus said unto
them, Come ye after me, and I will make you to become
fishers of men. 18 And straightway they forsook their
nets, and followed him. 19 And when he had gone a
little farther thence, he saw James the son of Zebedee,
and John his brother, who also were in the ship mend-
ing their nets. 20 And straightway he called them :
and they left their father Zebedee in the ship with the
hired servants, and went after him.

JESUS CURES A DEMONIAC IN CAPERNAUM

21 And they went into Capernaum ; and straightway
on the sabbath day he entered into the synagogue, and
taught. 22 And they were astonished at his doctrine :
for he taught them as one that had authority, and not
as the scribes.

23 And there was in their synagogue a man with an
unclean spirit ; and he cried out, 24 saying, Let us alone ;
what have we to do with thee, thou Jesus of Nazareth ?
art thou come to destroy us ? I know thee who thou
art, the Holy One of God. 25 And Jesus rebuked him,
saying, Hold thy peace, and come out of him. 26 And
when the unclean spirit had torn him, and cried with
a loud voice, he came out of him. 27 And they were
all amazed, insomuch that they questioned among them-
selves, saying, What thing is this ? what new doctrine
is this ? for with authority commandeth he even the

शैतान चालीस दिन तक उन्हें प्रलोभन देता रहा। वह वन पशुओं के साथ
रहे और स्वर्गदूत उनकी सेवा करते थे।

प्रथम शिष्यों का बुलाया जाना

१४ यूहन्ना के बंदी होने के पश्चात् यीशु गलील में आए और परमेश्वर
के सुसमाचार का प्रचार करने लगे। १५ उनका कथन था, 'समय पूरा हुआ
और परमेश्वर का राज्य निकट आ पहुंचा है। हृदय परिवर्तन करो और
सुसमाचार पर विश्वास करो।

१६ गलील सागर के तट तर चलते हुए उन्होंने शमौन और उनके भाई
अंद्रियास को सागर में जाल डालते देखा, क्योंकि वे मछुए थे। १७ यीशु
ने उनसे कहा, 'आओ, मेरे पीछे चलो, मैं तुम्हें मनुष्यों के मछुए बनाऊंगा।
१८ वे तुरंत जालों को त्याग कर उनके अनुयायी हो गए। १९ कुछ आगे
बढ़ने पर उन्हें ज़बदी के पुत्र याकूब और उनके भाई यूहन्ना दिखाई दिए; वे
नौका में जाल सुधार रहे थे। २० यीशु ने उन्हें तुरंत बुलाया। वे अपने
पिता जबदी को मजदूरों के साथ नौका में छोड़ यीशु के पीछे हो लिए।

कफरनहूम में उपदेश और आश्चर्यकर्म

२१ वे कफरनहूम आए, और सबत के दिन* वह सभागृह में जाकर
उपदेश देने लगे। २२ लोग उनकी शिक्षा पर चकित हुए क्योंकि वह शास्त्रियों
के समान नहीं वरन् अधिकारी के समान उपदेश देते थे।

२३ उनके सभागृह में एक मनुष्य था जिसमें अशुद्ध आत्मा थी। २४ वह
चिल्ला उठा, 'नासरत-निवासी यीशु, हमें आपसे क्या काम? हमें नष्ट करने
आए हैं आप? मैं जानता हूं कि आप कौन हैं, परमेश्वर के पवित्र व्यक्ति!'
२५ पर यीशु ने उसे रोक कर कहा, 'चुप रह और उसमेंसे निकल आ।' २६ अशुद्ध
आत्मा मनुष्य को झकझोर कर और उच्च स्वर से चिल्ला कर उसमें से निकल
गई। २७ इस पर सब चकित रह गए, यहां तक कि आपस में कहने लगे,
'यह क्या है? एक नवीन शिक्षा! अधिकार पूर्वक यह अशुद्ध आत्माओं

* अथवा 'विश्राम के दिन'।

unclean spirits, and they do obey him. 28 And imme-
diately his fame spread abroad throughout all the region
round about Galilee.

JESUS CURES PETER'S WIFE'S MOTHER, AND MANY OTHERS

29 And forthwith, when they were come out of the
synagogue, they entered into the house of Simon and
Andrew, with James and John. 30 But Simon's wife's
mother lay sick of a fever, and anon they tell him of
her. 31 And he came and took her by the hand, and
lifted her up ; and immediately the fever left her, and
she ministered unto them.

32 And at even, when the sun did set, they brought
unto him all that were diseased, and them that were
possessed with devils. 33 And all the city was gathered
together at the door. 34 And he healed many that were
sick of divers diseases, and cast out many devils ; and
suffered not the devils to speak, because they knew him.

JESUS RETIRES FOR PRAYER, AND LEAVES CAPERNAUM

35 And in the morning, rising up a great while
before day, he went out, and departed into a solitary
place, and there prayed. 36 And Simon and they that
were with him followed after him. 37 And when they
had found him, they said unto him, All men seek for
thee. 38 And he said unto them, Let us go into the
next towns, that I may preach there also : for therefore
came I forth. 39 And he preached in their synagogues
throughout all Galilee, and cast out devils.

CURE OF A LEPER

40 And there came a leper to him, beseeching him,
and kneeling down to him, and saying unto him, If thou
wilt, thou canst make me clean. 41 And Jesus, moved
with compassion, put forth his hand, and touched him,
and saith unto him, I will ; be thou clean. 42 And as
soon as he had spoken, immediately the leprosy departed
from him, and he was cleansed. 43 And he straitly
charged him, and forthwith sent him away ; 44 and saith

को आज्ञा देते हैं, और वे उनकी आज्ञा मान लेती हैं!' २८ अस्तु, उनका
यश शीघ्र ही गलील में सर्वत्र फैल गया।

पतरस की सास और अन्य लोगों को स्वस्थ करना

२९ वह सभागृह से निकल कर सीधे शमौन और अंद्रियास के घर गए।
याकूब और यूहन्ना उनके साथ थे। ३० वहां शमौन की सास ज्वर में पड़ी
थी। लोगों ने तुरंत उसके विषय में यीशु को बताया। ३१ वह समीप
आए और हाथ पकड़ कर उसे उठाया। उसका ज्वर उतर गया और वह
उनकी सेवा करने लगी।

३२ संध्या समय, सूर्यास्त के उपरांत, लोग सब रोगियों और भूत-
ग्रसितों को उनके पास लाने लगे, ३३ और समस्त नगर द्वार पर एकत्रित हो
गया। ३४ उन्होंने विविध रोगों से पीड़ित मनुष्यों को स्वस्थ किया और
अनेक भूतों को निकाला; परंतु उन भूतों को बोलने नहीं दिया क्योंकि वे
उन्हें पहिचानते थे।

कफरनहूम छोड़ना और प्रार्थना के लिये एकांत में जाना

३५ प्रातःकाल, जब अंधेरा ही था, वह उठे और बाहर निकल कर
किसी निर्जन स्थान में चले गए। वहां वह प्रार्थना करने लगे। ३६ उधर
शमौन और उनके साथी उनकी खोज में निकले और मिलने पर उनसे बोले,
'सब लोग आपको ढूंढ़ रहे हैं।' ३७ उन्होंने कहा, 'आओ हम समीप के अन्य
ग्रामों में चलें ३८ कि मैं वहां भी प्रचार करूं, क्योंकि इसीलिए मैं आया
हूं।' ३९ अस्तु, उन्होंने समस्त गलील में भ्रमण कर उनके सभागृहों में
प्रचार किया और भूतों को निकाला।

कोढ़ी को शुद्ध करना

४० एक कोढ़ी उनके पास आया और घुटने टेक कर निवेदन करने
लगा, 'यदि आप चाहें तो मुझे शुद्ध कर सकते हैं।' ४१ उन्होंने दया से
द्रवित* हो अपना हाथ बढ़ाया और उसे स्पर्श कर कहा, 'निश्चय, मैं चाहता
हूं तू शुद्ध हो जा।' ४२ तुरंत उसका कोढ़ दूर हो गया और वह शुद्ध हो गया।
४३ तब उन्होंने भावावेश में आकर उसे यह कहते हुए बाहर निकाल दिया,
४४ 'देखो, किसी से कुछ न कहना; जाओ, अपने आपको पुरोहित को

* पाठांतर—'क्रुद्ध'।

unto him, See thou say nothing to any man : but go thy
way, shew thyself to the priest, and offer for thy cleans-
ing those things which Moses commanded, for a
testimony unto them. 45 But he went out, and began
to publish it much, and to blaze abroad the matter,
insomuch that Jesus could no more openly enter into
the city, but was without in desert places : and they
came to him from every quarter.

CURE OF A PARALYSED MAN

2 And again he entered into Capernaum after some
days ; and it was noised that he was in the house.
2 And straightway many were gathered together, inso-
much that there was no room to receive them, no, not
so much as about the door : and he preached the word
unto them. 3 And they come unto him, bringing one
sick of the palsy, which was borne of four. 4 And
when they could not come nigh unto him for the press,
they uncovered the roof where he was : and when they
had broken it up, they let down the bed wherein the
sick of the palsy lay. 5 When Jesus saw their faith,
he said unto the sick of the palsy, Son, thy sins be
forgiven thee. 6 But there were certain of the scribes
sitting there, and reasoning in their hearts, 7 Why doth
this man thus speak blasphemies ? who can forgive sins
but God only ? 8 And immediately when Jesus perceived
in his spirit that they so reasoned within themselves,
he said unto them, Why reason ye these things in your
hearts ? 9 Whether is it easier to say to the sick of
the palsy, Thy sins be forgiven thee ; or to say, Arise,
and take up thy bed, and walk ? 10 But that ye may
know that the Son of man hath power on earth to
forgive sins, (he saith to the sick of the palsy,) 11 I say
unto thee, Arise, and take up thy bed, and go thy way
into thine house. 12 And immediately he arose, took
up the bed, and went forth before them all ; insomuch
that they were all amazed, and glorified God, saying,
We never saw it on this fashion.

दिखाओ और उनके प्रमाण के लिए मूसा की आज्ञानुसार शुद्धता संबंधी वस्तुएं
भेंट करो।' ४५ परन्तु वह बाहर जा, खुल कर इसकी चर्चा करने और
इस समाचार को जहां तहां बहुत फैलाने लगा। परिणाम यह हुआ कि यीशु
प्रकट रूप से नगरों में प्रवेश न कर सके वरन् निर्जन स्थानों में रहे। इस पर
भी चारों ओर से लोग उनके पास आते रहे।

२

अर्धांगी को स्वस्थ करना

१ कई दिन बाद जब यीशु पुनः कफरनहूम आए तो समाचार फैल गया
कि वह घर में हैं, २ और इतने लोग एकत्रित हुए कि द्वार के सामने भी जगह
न रही। ३ वह उन्हें सुसमाचार* सुना रहे थे कि लोग एक अर्धांगी को
चार मनुष्यों से उठवाकर उनके पास लाए: ४ परंतु जब भीड़ के कारण
वे यीशु के निकट न पहुंच सके तो उन्होंने वह छत, जिसके नीचे यीशु थे, खोद
कर खोल डाली; और शय्या को, जिस पर अर्धांगी लेटा था, नीचे लटका
दिया। ५ यीशु ने उनका विश्वास देखा तो अर्धांगी से बोले, 'पुत्र, तेरे पाप
क्षमा हुए।' ६ वहाँ कुछ शास्त्री बैठे हुए मन में तर्क-वितर्क कर रहे थे,
७ 'यह मनुष्य ऐसे क्यों बोलता है? यह परमेश्वर की निंदा करता है।
केवल एक अर्थात् परमेश्वर को छोड़ और कौन पाप क्षमा कर सकता है?'
८ यीशु अपनी आत्मा में जानकर कि वे इस प्रकार तर्क-वितर्क कर रहे हैं,
उनसे बोले, 'तुम अपने मन में इस प्रकार तर्क-वितर्क क्यों कर रहे हो?
९ सरल क्या है—अर्धांगी से कहना कि तेरे पाप क्षमा हुए अथवा यह कहना
कि उठ, अपनी शय्या उठा और चल फिर? १० परंतु जिससे तुम जानलो
कि मानव-पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है',—वह
अर्धांगी से बोले—११ 'मैं तुझसे कहता हूं, उठ, अपनी शय्या उठा और घर
को चला जा।' १२ वह उठा और तुरंत अपनी शय्या उठाकर उन सब के
देखते देखते बाहर चला गया। इस पर सब आश्चर्य-चकित हुए और परमेश्वर
की स्तुति करके कहने लगे, 'ऐसा हमने कभी नहीं देखा।'

* अक्षरशः 'शब्द'।

THE CALL OF LEVI

13 And he went forth again by the sea side;
and all the multitude resorted unto him, and he taught
them. 14 And as he passed by, he saw Levi the son of
Alphæus sitting at the receipt of custom, and said unto
him, Follow me. And he arose and followed him.

15 And it came to pass, that, as Jesus sat at meat
in his house, many publicans and sinners sat also to-
gether with Jesus and his disciples: for there were
many, and they followed him. 16 And when the scribes
and Pharisees saw him eat with publicans and sinners,
they said unto his disciples, How is it that he eateth
and drinketh with publicans and sinners? 17 When
Jesus heard it, he saith unto them, They that are whole
have no need of the physician, but they that are sick:
I came not to call the righteous, but sinners to re-
pentance.

THE QUESTION OF FASTING

18 And the disciples of John and of the Pharisees
used to fast: and they come and say unto him, Why
do the disciples of John and of the Pharisees fast, but
thy disciples fast not? 19 And Jesus said unto them,
Can the children of the bridechamber fast, while the
bridegroom is with them? as long as they have the
bridegroom with them, they cannot fast. 20 But the
days will come, when the bridegroom shall be taken
away from them, and then shall they fast in those days.
21 No man also seweth a piece of new cloth on an
old garment: else the new piece that filled it up taketh
away from the old, and the rent is made worse. 22 And
no man putteth new wine into old bottles: else the new
wine doth burst the bottles, and the wine is spilled,
and the bottles will be marred: but new wine must
be put into new bottles.

THE QUESTION OF SABBATH OBSERVANCE

23 And it came to pass, that he went through
the corn fields on the sabbath day; and his disciples

लेवी का बुलाया जाना

१३ वह फिर बाहर निकल कर सागर-तट पर गए। समस्त जन समूह
उनके पास आने लगा और वह उन्हें उपदेश देने लगे। १४ जाते हुए उन्होंने
हलफई के पुत्र लेवी को चुंगी की चौकी पर बैठे देखा और उनसे कहा, 'मेरा
अनुयायी हो।' लेवी उठे और उनके अनुयायी हो गए।

१५ वह उनके घर भोजन करने बैठे तो यीशु और उनके शिष्यों के
साथ अनेक कर लेनेवाले और पापी सम्मिलित हुए—उनकी संख्या बहुत
थी और वे उनके पीछे हो लिए थे। १६ फ़रीसी दल के शास्त्रियों ने उनको पापियों
और कर लेने वालों के साथ भोजन करते देखा, तो उनके शिष्यों से कहा,
'यह कर लेने वालों और पापियों के साथ क्यों खाते पीते हैं?' १७ यीशु
ने उनकी बात सुन कर कहा, 'स्वस्थ मनुष्यों को वैद्य की आवश्यकता नहीं
पर रोगियों को होती है; मैं धार्मिकों को नहीं वरन् पापियों को बुलाने
आया हूं।'

उपवास का प्रश्न

१८ यूहन्ना के शिष्य और फ़रीसी उपवास कर रहे थे। कुछ लोगों ने
आकर यीशु से पूछा, 'यूहन्ना के शिष्य और फ़रीसियों के शिष्य उपवास कर
रहे हैं, फिर आपके शिष्य क्यों नहीं करते?' १९ यीशु ने उनसे कहा, 'जब तक
दूलह साथ है, क्या बराती उपवास कर सकते हैं? जब तक दूलह साथ है
उपवास नहीं होता। २० पर समय आएगा जब दूलह उनसे ले लिया
जाएगा, तब, उस दिन, वे उपवास करेंगे। २१ कोरे कपड़े की थिगली पुराने
वस्त्र पर कोई नहीं लगाता, यदि लगाए तो नई थिगली उसमें से—अर्थात्,
पुराने वस्त्र में से फाड़ देगी—और वस्त्र पहिले से भी अधिक फट जाएगा।
२२ इसी प्रकार नवीन मदिरा को पुराने चर्मपात्र में कोई नहीं रखता, यदि
रखे तो मदिरा चर्मपात्र को फाड़ देगी और मदिरा तथा चर्मपात्र दोनों नष्ट हो
जाएंगे। नवीन मदिरा, नवीन पात्र!'

सबत पालन

२३ एक सबत के दिन वह खेतों में होकर जा रहे थे। उनके शिष्य

began, as they went, to pluck the ears of corn. 24 And
the Pharisees said unto him, Behold, why do they on the
sabbath day that which is not lawful ? 25 And he said
unto them, Have ye never read what David did, when
he had need, and was an hungred, he, and they that
were with him ? 26 How he went into the house of
God in the days of Abiathar the high priest, and did
eat the shewbread, which is not lawful to eat but for the
priests, and gave also to them which were with him ?
27 And he said unto them, The sabbath was made for
man, and not man for the sabbath : 28 therefore the Son
of man is Lord also of the sabbath.

THE CURE OF THE MAN WITH A WITHERED HAND

3 And he entered again into the synagogue ; and
there was a man there which had a withered
hand. 2 And they watched him, whether he would heal
him on the sabbath day ; that they might accuse
him. 3 And he saith unto the man which had the
withered hand, Stand forth. 4 And he saith unto
them, Is it lawful to do good on the sabbath days,
or to do evil ? to save life, or to kill ? But they
held their peace. 5 And when he had looked round
about on them with anger, being grieved for the hardness
of their hearts, he saith unto the man, Stretch forth
thine hand. And he stretched it out : and his hand
was restored whole as the other. 6 And the Pharisees
went forth, and straight-way took counsel with the
Herodians against him, how they might destroy him.

OTHER CURES

7 But Jesus withdrew himself with his disciples to
the sea : and a great multitude from Galilee followed
him, and from Judæa, 8 and from Jerusalem, and from
Idumæa, and from beyond Jordan ; and they about
Tyre and Sidon, a great multitude, when they had
heard what great things he did, came unto him. 9 And
he spake to his disciples, that a small ship should

चलते चलते अनाज की वालें तोड़ने लगे। २४ फ़रीसियों ने यीशु से कहा,
'देखिए, यह ऐसा काम क्यों करते हैं, जिसे करना सबत के दिन विहित
नहीं है ?' २५ यीशु ने उनसे कहा, 'क्या तुमने कभी नहीं पढ़ा कि जब
दाऊद और उनके साथियों को भूख लगी और उन्हें आवश्यकता पड़ी तो
दाऊद ने क्या किया था ? २६ उन्होंने अबियातर महापुरोहित के समय में
परमेश्वर के भवन में प्रवेश कर अर्पित की हुई रोटियां, जिनका खाना पुरोहितों
को छोड़ और किसी को विहित नहीं है, स्वयं खाईं और अपने साथियों को
भी दीं।' २७ उन्होंने यह भी कहा, 'सबत मनुष्य के लिए बनाया गया है न
कि मनुष्य सबत के लिए। २८ इसलिए मानव-पुत्र सबत का भी
स्वामी है।'

३

सूखे हाथ वाले मनुष्य का स्वस्थ किया जाना

१ वह पुनः सभागृह में गए। वहां एक मनुष्य था जिसका हाथ सूख
गया था। २ लोग ताक में थे कि यीशु उसे सबत के दिन स्वस्थ करते हैं, अथवा
नहीं जिससे उन पर अभियोग लगा सकें। ३ उन्होंने सूखे हाथ वाले मनुष्य
से कहा, 'उठ, बीच में खड़ा हो ;' ४ और फिर लोगों से बोले, 'सबत के दिन,
भलाई करना विहित है अथवा बुराई, प्राण बचाना अथवा नष्ट करना ?'
वे लोग चुप्पी साधे रहे। ५ इस पर उन्होंने रोष से चारों ओर दृष्टि डाली
और उनके मन की जड़ता पर व्यथित होकर उस मनुष्य से कहा, 'हाथ बढ़ा।'
उसने बढ़ा दिया और उसका हाथ पुनः ठीक हो गया। ६ तब फ़रीसी बाहर
निकले और तुरंत यीशु के विरुद्ध हेरोदेस-दल के साथ मंत्रणा करने लगे कि
किस प्रकार उनका विनाश करें।

अन्य व्यक्तियों का स्वास्थ्य लाभ

७ यीशु अपने शिष्यों सहित सागर की ओर निकल गए ; और गलील
८ यहूदिया, यरूशलेम, इदूमिया, यरदन पार, सूर और सैदा के, आस
पास के प्रदेश से विशाल जन समूह उनके कार्यों की गाथा सुन कर उनके
समीप आया। ९ यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, 'एक नौका मेरे लिये प्रस्तुत

wait on him because of the multitude, lest they should
throng him. 10 For he had healed many ; insomuch
that they pressed upon him for to touch him, as many
as had plagues. 11 And unclean spirits, when they
saw him, fell down before him, and cried, saying, Thou
art the Son of God. 12 And he straitly charged them
that they should not make him known.

JESUS CHOOSES THE TWELVE APOSTLES

13 And he goeth up into a mountain, and calleth
unto him whom he would : and they came unto him.
14 And he ordained twelve, that they should be with
him, and that he might send them forth to preach,
15 and to have power to heal sicknesses, and to cast
out devils : 16 and Simon he surnamed Peter ; 17 and
James the son of Zebedee, and John the brother
of James ; and he surnamed them Boanerges, which
is, The sons of thunder : 18 and Andrew, and Philip,
and Bartholomew, and Matthew, and Thomas, and
James the son of Alphæus, and Thaddæus, and Simon
the Canaanite, 19 and Judas Iscariot, which also betrayed
him : and they went into an house.

JESUS, REPLIES TO THE CHARGE THAT HE IS WORKING WITH SATAN'S HELP

20 And the multitude cometh together again, so
that they could not so much as eat bread. 21 And when
his friends heard of it, they went out to lay hold
on him : for they said, He is beside himself. 22 And
the scribes which came down from Jerusalem said,
He hath Beelzebub, and by the prince of the devils
casteth he out devils. 23 And he called them unto him,
and said unto them in parables, How can Satan
cast out Satan ? 24 And if a kingdom be divided against
itself, that kingdom cannot stand. 25 And if a house be
divided against itself, that house cannot stand. 26 And
if Satan rise up against himself, and be divided,
he cannot stand, but hath an end. 27 No man can
enter into a strong man's house, and spoil his goods,
except he will first bind the strong man ; and then

रहे कि मैं भीड़ से दब न जाऊँ,' १० क्योंकि उन्होंने बहुतों को स्वस्थ किया
था, परिणाम स्वरूप, रोग ग्रसित उन पर गिरे पड़ते थे कि उन्हें स्पर्श करें।
११ अशुद्ध आत्माएं भी जब उन्हें देखतीं तो उनके सामने गिर पड़तीं और
चिल्ला कर कहती थीं 'आप परमेश्वर-पुत्र हैं,' १२ पर वह उन्हें रोक कर कहते
थ, 'मुझे प्रकट मत करो।'

बारह प्रेरितों की नियुक्ति

१३ यीशु पर्वत पर चले गए और जिनको चाहा बुला लिया। वे उनके
पास आए। १४ उन्होंने बारह को नियुक्त किया कि उनके साथ रहें और वह
उनको प्रचार करने के लिए भेजें। उनको भूतों को निकालने का अधिकार भी
दिया। १५ इस प्रकार उन्होंने बारह को नियुक्त किया : १६ शमौन-इनका
नाम पतरस रखा, १७ जबदी के पुत्र-याकूब, और याकूब के भाई यूहन्ना-इनका
नाम रखा, बूअनरगिस अर्थात् गर्जन-पुत्र, १८ अंद्रियास, फिलिप्पुस, बरतुलमै,
मत्ती, थोमा, हलफई के पुत्र याकूब, तद्दी, शमौन कनानी १९ और यहूदा
इस्करियोती—जिसने उनको पकड़वाया।

शैतान की शक्ति या पवित्रात्मा की

वह घर आए, २० और फिर इतनी भीड़ एकत्रित हो गई कि वे लोग भोजन
भी न कर सके। २१ जब यीशु के कुटुंबियों ने सुना तो उन्हें पकड़ने के लिए
निकले क्योंकि उनका कथन था कि कि उसका मस्तिष्क विकृत हो गया है।
२२ यरूशलेम से आए हुए शास्त्रियों ने भी कहा, 'उसमें बालजबूल है' और
'भूतों के अधिपति की सहायता से वह भूत निकालता है।' २३ उनको यीशु
ने पास बुलाया और दृष्टांतों में कहा, 'शैतान शैतान को कैसे निकाल सकता
है ? २४ यदि किसी राज्य में फूट पड़ जाए तो वह राज्य स्थिर नहीं रह सकता,
२५ यदि किसी घर में फूट पड़ जाए तो वह घर स्थिर नहीं रह सकता, २६ और
यदि शैतान अपने ही विरुद्ध उठ खड़ा हो तो उसमें फूट पड़ गई वह स्थिर नहीं
रह सकता, वरन् उसका अंत हो जाता है। २७ कोई मनुष्य बलवान् के घर
में प्रवेश कर उसकी संपत्ति नहीं लूट सकता जब तक पहिले उस बलवान् को

he will spoil his house. 28 Verily I say unto you, All
sins shall be forgiven unto the sons of men, and
blasphemies wherewith soever they shall blaspheme: 29
but he that shall blaspheme against the Holy Ghost
hath never forgiveness, but is in danger of eternal
damnation: 30 because they said, He hath an unclean
spirit.

THE TRUE BROTHERHOOD

31 There came then his brethren and his mother,
and, standing without, sent unto him, calling him.
32 And the multitude sat about him, and they said unto
him, Behold, thy mother and thy brethren without
seek for thee. 33 And he answered them, saying,
Who is my mother, or my brethren? 34 And he looked
round about on them which sat about him, and said,
Behold my mother and my brethren! 35 For whosoever
shall do the will of God, the same is my brother, and
my sister, and mother.

PARABLE OF THE SOWER

4 And he began again to teach by the sea side: and
there was gathered unto him a great multitude,
so that he entered into a ship, and sat in the sea;
and the whole multitude was by the sea on the land.

2 And he taught them many things by parables,
and said unto them in his doctrine, 3 Hearken; Behold,
there went out a sower to sow: 4 and it came to
pass, as he sowed, some fell by the way side, and the
fowls of the air came and devoured it up. 5 And some
fell on stony ground, where it had not much earth;
and immediately it sprang up, because it had no depth of
earth: 6 but when the sun was up, it was scorched;
and because it had no root, it withered away. 7 And
some fell among thorns, and the thorns grew up, and
choked it. and it yielded no fruit. 8 And other fell on
good ground, and did yield fruit that sprang up and

बांध न ले ; इसके पश्चात् ही उसके घर को लूटेगा। २८ मैं तुमसे सच कहता
हूं, मनुष्य जाति को सब बातों की, सब पाप कर्म की और सब निंदा की जो वह
मुख से निकाले, क्षमा मिलेगी, २९ पर पवित्रात्मा के विरुद्ध निंदा करने वाले
को कदापि क्षमा नहीं मिलेगी, वह अनंत पाप का अपराधी है' ३० क्योंकि
उन्होंने कहा था, 'उसमें अशुद्ध आत्मा है।

सच्चा नाता

३१ तब उनकी माता और भाई आ पहुंचे और बाहर खड़े होकर उन्हें
बुलवा भेजा। ३२ जनसमूह उनके चारों ओर बैठा था। उन्हें समाचार
मिला, 'देखिए, आपकी माता, बहिनें और भाई बाहर आपसे मिलना चाहते
हैं।' ३३ उन्होंने उत्तर दिया, 'कौन है मेरी माता और मेरे भाई ?' ३४ फिर
आस-पास चारों ओर बैठे हुए लोगों पर दृष्टि डाली और बोले, 'देखो, ये
मेरी माता और मेरे भाई। ३५ जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार कार्य करे,
वही मेरा भाई, मेरी बहिन और मेरी माता है।'

४

बीज बोने वाले का दृष्टांत

१ यीशु फिर सागर तट पर उपदेश देने लगे तो उनके समीप इतना जन-
समूह एकत्रित हो गया कि उन्हें सागर में नौका पर चढ़कर बैठना पड़ा और
सब जनसमूह सागर की ओर मुख किए भूमि पर रहा। २ वह दृष्टांतों के
द्वारा उन्हें अनेक उपदेश देने लगे।

अपने उपदेशों के अंतर्गत उन्होंने कहा ३ 'सुनो, एक बोने वाला बीज बोने
निकला। ४ बोते समय कुछ मार्ग के किनारे गिरा और पक्षी आकर उसे
चुग गए। ५ कुछ पथरीली भूमि पर गिरा जहां उसे बहुत मिट्टी न मिली ;
मिट्टी के गहरे न होने के कारण वह शीघ्र अंकुरित हुआ, ६ पर जब सूर्य उदय
हुआ तो झुलस गया और जड़ न पकड़ने के कारण सूख गया। ७ कुछ
कटीली झाड़ियों में गिरा; झाड़ियों ने बढ़कर उसको दबा दिया और वह
निष्फल हुआ। ८ परंतु कुछ बीज अच्छी भूमि पर गिरे : वे अंकुरित और

increased ; and brought forth, some thirty, and some
sixty, and some an hundred. 9 And he said unto
them, He that hath ears to hear, let him hear.

10 And when he was alone, they that were about
him with the twelve asked of him the parable. 11 And
he said unto them, Unto you it is given to know the
mystery of the kingdom of God : but unto them that
are without, all these things are done in parables :

12 That seeing they may see, and not perceive ;
And hearing they may hear, and not understand ;
Lest at any time they should be converted,
And their sins should be forgiven them.

13 And he said unto them, Know ye not this parable ?
and how then will ye know all parables ?

14 The sower soweth the word. 15 And these are
they by the way side, where the word is sown ;
but when they have heard, Satan cometh immediately,
and taketh away the word that was sown in their
hearts. 16 And these are they likewise which are
sown on stony ground ; who, when they have heard
the word, immediately receive it with gladness ; 17 and
have no root in themselves, and so endure but for a
time : afterward, when affliction or persecution ariseth
for the word's sake, immediately they are offended.
18 And these are they which are sown among thorns;
such as hear the word, 19 and the cares of this world
and the deceitfulness of riches, and the lusts of other
things entering in, choke the word, and it becometh
unfruitful. 20 And these are they which are sown on
good ground ; such as hear the word, and receive it,
and bring forth fruit, some thirtyfold, some sixty, and
some an hundred.

LESSONS FROM A LAMP, AND FROM SEED

21 And he said unto them, Is a candle brought to
be put under a bushel, or under a bed ? and not to
be set on a candlestick ? 22 For there is nothing hid
which shall not be manifested ; neither was any thing

पल्लवित होकर फले—तीस गुने, साठ गुने और सौ गुने।' ९ उन्होंने कहा,
'जिसके सुनने के कान हों सुन ले।'
१० जब वह एकांत में थे तो उनके अनुयाइयों ने और बारह ने उनसे
दृष्टांतों के संबंध में पूछा। ११ उन्होंने कहा, 'परमेश्वर के राज्य का रहस्य
तुमको प्रदान किया गया है पर उनके लिए जो बाहर हैं, प्रत्येक बात 'पहेली*
है कि,

१२ "वे देखते हुए भी न देखें,
और सुनते हुए भी न समझें
कि कहीं ऐसा न हो कि उनमें परिवर्तन हो
और वे क्षमा प्राप्त करें।"

१३ यीशु ने उनसे कहा, 'तुम यह दृष्टांत नहीं समझे, तो अन्य सब
दृष्टांत कैसे समझोगे! १४ बोने वाला वचन बोता है। १५ "मार्ग के
किनारे" के वे हैं जिनमें वचन बोया जाता है, पर ज्योंही उन्होंने सुना शैतान
आकर उनमें से बोए हुए बीज को उठा ले जाता है। १६ इसी प्रकार वे हैं जो
"पथरीली भूमि" में बोए गए हैं। वे जब वचन को सुनते हैं तो तुरंत उसे
आनंद से ग्रहण करते है; १७ पर उनकी जड़ें गहरी नही होती, अतः वे अल्प
काल तक ही स्थिर रहते हैं, फिर वचन के कारण कष्ट पड़ने या अत्याचार होने
पर उनका तुरंत पतन हो जाता है। १८ दूसरे वे हैं जो "कटीली झाड़ियों"
में बोए गए हैं। यह वे लोग हैं जिन्होंने वचन सुना है, १९ पर सांसारिक
चिंताएं, धन का मोह एवं सब प्रकार की बुरी अभिलाषाएं आकर वचन को
को दबा देती है और वह फलने नहीं पाता। २० और जो "अच्छी भूमि"
में बोए गए, यह वे लोग हैं जो वचन को सुनते, सादर स्वीकार करते और
तीस गुने, साठ गुने और सौ गुने फल देते हैं।'

दीपक और बीज का दृष्टांत

२१ यीशु ने उनसे कहा, 'क्या दीपक को इसलिए जलाते हैं कि उसे
आढ़क† अथवा शय्या के नीचे रखें? क्या उसे दीवट पर नहीं रखते?
२२ ऐसी कोई वस्तु नहीं जो छिपी हो और प्रकाश में न लाई जाए, जो गुप्त

* मूल भाषा में यहाँ द्विअर्थक शब्द का प्रयोग हुआ हैं जिसके अर्थ 'दृष्टांत' और 'पहेली' दोनों हैं।

† मूल भाषा में "मौडियन" अर्थात् वह बरतन जिसमें डेढ़ मन अनाज मापा जाता हो। प्राचीन काल में बांट तराजू का व्यापक प्रचलन नहीं था।

kept secret, but that it should come abroad. 23 If any
man have ears to hear, let him hear.

24 And he said unto them, Take heed what ye hear:
with what measure ye mete, it shall be measured to
you: and unto you that hear shall more be given.
25 For he that hath, to him shall be given: and he
that hath not, from him shall be taken even that which
he hath.

26 And he said, so is the kingdom of God, as if a
man should cast seed into the ground; 27 and should
sleep and rise night and day, and the seed should spring
and grow up, he knoweth not how. 28 For the earth
bringeth forth fruit of herself; first the blade, then the
ear, after that the full corn in the ear. 29 But when
the fruit is brought forth, immediately he putteth in
the sickle, because the harvest is come.

30 And he said, Whereunto shall we liken the
kingdom of God? or with what comparison shall we
compare it? 31 It is like a grain of mustard seed,
which, when it is sown in the earth, is less than all
the seeds that be in the earth: 32 but when it is
sown, it groweth up, and becometh greater than all
herbs, and shooteth out great branches; so that the
fowls of the air may lodge under the shadow of it.

33 And with many such parables spake he the word
unto them, as they were able to hear it. 34 But without
a parable spake he not unto them: and when they were
alone, he expounded all things to his disciples.

JESUS STILLS A STORM

35 And the same day, when the even was come,
he saith unto them, Let us pass over unto the other
side. 36 And when they had sent away the multitude,
they took him even as he was in the ship. And there
were also with him other little ships. 37 And there
arose a great storm of wind, and the waves beat into
the ship, so that it was now full. 38 And he was in
the hinder part of the ship, asleep on a pillow: and

हो और प्रकट न की जाए। २३ यदि किसी के सुनने को कान हों
तो सुन ले।'

२४ यीशु ने उनसे कहा, 'जो कुछ सुनते हो' ध्यान से सुनो। जिस
माप से तुम मापते हो उसी माप से तुम्हारे लिए माप जाएगा, वरन् कुछ
अधिक तुम्हें दिया जायगा। २५ क्योंकि जिसके पास है उसे दिया जाएगा,
और जिसके पास नहीं है, उससे जो कुछ उसके पास है वह भी ले लिया
जाएगा।'

२६ उन्होंने कहा, 'परमेश्वर का राज्य ऐसा है मानों कोई मनुष्य भूमि
पर बीज बोए। २७ वह रात-दिन सोए जागे, उधर बीज उगे और बढ़ता
जाए। वह नहीं जानता कि यह कैसे होता है। २८ पृथ्वी अपने आप उगाती
है—प्रथम अंकुर, तब बालें और तब बालों में पूर्ण विकसित दाने। २९ पर
ज्योंही अनाज पका, वह काटना आरम्भ कर देता है क्योंकि कटनी का समय
आ पहुंचा है।

३० उन्होंने कहा, 'परमेश्वर के राज्य की उपमा हम किससे दें? किस
दृष्टांत द्वारा हम उसका वर्णन करें? ३१ वह राई के बीज के सदृश है।
जब वह भूमि में बोया जाता है तो पृथ्वी के सब बीजों से छोटा होता है,
३२ परंतु बोए जाने पर वह उगता है और समस्त वनस्पतियों से विशाल हो
जाता है; उसमें बड़ी बड़ी शाखाएँ निकल आती हैं यहां तक कि आकाश
के पक्षी उसकी छाया में बसेरा कर सकते हैं।'

३३ ऐसे अनेक दृष्टांतों के द्वारा वह उन्हें उनकी बुद्धि के अनुसार बचन
का उपदेश देते थे। ३४ वह दृष्टांतों के बिना बात नहीं करते थे, पर एकांत
में अपने शिष्यों को सब बातें स्पष्ट समझा देते थे।

आँधी को शांत करना

३५ उस दिन सायंकाल होने पर उन्होंने कहा, 'आओ हम उस पार
चलें।' ३६ शिष्यों ने भीड़ का साथ छोड़ कर उन्हें, जैसे थे वैसे ही, नौका
पर चढ़ा लिया। अन्य नौकाएं भी उनके साथ थी। ३७ और वायु प्रचंड
वेग से चलने लगी, लहरें लपकी और नौका से टकराने लगीं, यहां तक कि
नौका में पानी ही पानी हो गया : ३८ पर वह नौका के पिछले भाग में तकिया

they awake him, and say unto him, Master, carest thou
not that we perish ? 39 And he arose, and rebuked the
wind, and said unto the sea, Peace, be still. And the
wind ceased, and there was a great calm. 40 And he
said unto them, Why are ye so fearful ? how is it that
ye have no faith ? 41 And they feared exceedingly, and
said one to another, What manner of man is this, that
even the wind and the sea obey him ?

THE GERASENE DEMONIAC CURED

5 And they came over unto the other side of the
sea, into the country of the Gadarenes. 2 And
when he was come out of the ship, immediately there
met him out of the tombs a man with an unclean spirit,
3 who had his dwelling among the tombs ; and no man
could bind him, no, not with chains : 4 because that he
had been often bound with fetters and chains, and the
chains had been plucked asunder by him, and the fetters
broken in pieces : neither could any man tame him.
5 And always, night and day, he was in the mountains,
and in the tombs, crying, and cutting himself with
stones. 6 But when he saw Jesus afar off, he ran and
worshipped him, 7 and cried with a loud voice, and
said, What have I to do with thee, Jesus, thou Son of
the most high God ? I adjure thee by God, that thou
torment me not. 8 For he said unto him, Come out
of the man, thou unclean spirit. 9 And he asked him,
What is thy name ? And he answered, saying, My name
is Legion : for we are many. 10 And he besought him
much that he would not send them away out of the
country. 11 Now there was there nigh unto the
mountains a great herd of swine feeding. 12 And all
the devils besought him, saying, Send us into the swine,
that we may enter into them. 13 And forthwith Jesus
gave them leave. And the unclean spirits went out,
and entered into the swine : and the herd ran violently
down a steep place into the sea, (they were about two
thousand ;) and were choked in the sea.

लगाए निद्रा में मग्न थे। शिष्यों ने उनको जगाया और कहा, 'हे गुरु, आपको
कुछ भी चिन्ता नहीं ? हम तो मरे !' ३९ वह उठ बैठे और आँधी को रोक कर
सागर से कहा, 'शांत हो थम जा।' वायु मन्द पड़ गई और बड़ी स्तब्धता
छा गई। ४० फिर यीशु ने उनसे कहा, 'तुम इतने भयातुर क्यों हो? क्या
तुम्हें अब तक विश्वास नहीं है।' ४१ वे बड़े भयभीत हुए और आपस में
कहने लगे, 'न जाने यह कौन हैं कि वायु और सागर भी इनकी आज्ञा
मानते है !'

५

गिरासेन के अशुद्ध-आत्मा-ग्रसित को स्वस्थ करना

१ वे सागर के पार गिरासेनियों के प्रदेश में आए। २ जब यीशु नौका
से उतरे तो एक अशुद्ध आत्मा ग्रसित मनुष्य कबरों से निकल कर उनके सामने
आया। उसका निवास कबरों में था ३ और अब उसे कोई सांकलों से बांधकर
भी नहीं रख सकता था; ४ क्योंकि वह बार बार बेड़ियों और सांकलों से बांधा
गया, पर उसने सांकलें तोड़ डालीं और बेड़ियों के टुकड़े टुकड़े कर दिए:
किसी में इतनी सामर्थ्य नहीं थी कि उसे बस में कर सके। ५ वह रात-दिन
कबरों और पहाड़ों पर चिल्लाता और अपने आपको पत्थरों से आहत करता
रहता था। ६ यीशु को दूर से देखकर वह दौड़ा, उनके चरणों में गिरा
७ और उच्च स्वर से बोला, 'हे यीशु, सर्वोच्च परमेश्वर के पुत्र, मुझे आपसे
क्या काम ? परमेश्वर की शपथ मुझे न सताइए',—८ क्योंकि वह कह रहे
थे, 'हे अशुद्ध आत्मा इस मनुष्य में से निकल आ।' ९ उन्होंने उससे पूछा,
'तेरा क्या नाम है ?' उसने उत्तर दिया, 'मेरा नाम "सेना" है, क्योंकि
हम बहुत हैं,' १० उसने गिड़गिड़ा कर कहा, 'हमें इस प्रदेश से बाहर न
भेजिए।' ११ वहां समीप ही पहाड़ पर शूकरों का विशाल समूह चर रहा
था। १२ अशुद्ध आत्माओं ने उनसे निवेदन किया, 'हमें शूकरों में भेज
दीजिए कि उनमें प्रविष्ट हो जाएं।' १३ उन्होंने अनुमति दे दी। अशुद्ध
आत्माएं निकल कर शूकरों में प्रविष्ट हो गई और दो सहस्र का वह विशाल
समूह कगार से सागर की ओर झपटा और उसमें डूब गया।

14 And they that fed the swine fled, and told it in
the city, and in the country. And they went out to
see what it was that was done. 15 And they come to
Jesus, and see him that was possessed with the devil,
and had the legion, sitting, and clothed, and in his right
mind : and they were afraid. 16 And they that saw it
told them how it befell to him that was possessed with
the devil, and also concerning the swine. 17 And they
began to pray him to depart out of their coasts.

18 And when he was come into the ship, he that
had been possessed with the devil prayed him that he
might be with him. 19 Howbeit Jesus suffered him not,
but saith unto him, Go home to thy friends, and tell
them how great things the Lord hath done for thee,
and hath had compassion on thee. 20 And he departed,
and began to publish in Decapolis how great things
Jesus had done for him : and all men did marvel.

THE RAISING OF JAIRUS' DAUGHTER AND THE CURE OF THE WOMAN WITH AN ISSUE OF BLOOD

21 And when Jesus was passed over again by ship
unto the other side, much people gathered unto him :
and he was nigh unto the sea. 22 And, behold, there
cometh one of the rulers of the synagogue, Jairus by
name ; and when he saw him, he fell at his feet,
23 and besought him greatly, saying, My little daughter
lieth at the point of death : I pray thee, come and lay
thy hands on her, that she may be healed ; and she
shall live. 24 And Jesus went with him ; and much
people followed him, and thronged him.

25 And a certain woman, which had an issue of
blood twelve years, 26 and had suffered many things of
many physicians, and had spent all that she had, and
was nothing bettered, but rather grew worse, 27 when
she had heard of Jesus, came in the press behind, and
touched his garment. 28 For she said, If I may touch
but his clothes, I shall be whole. 29 And straightway
the fountain of her blood was dried up ; and she felt
in her body that she was healed of that plague.

१४ चरवाहे भागे और नगर एवं गावों में समाचार जा सुनाया। लोग देखने आए कि क्या बात है। १५ यीशु के पास आकर उन्होंने भूत ग्रसित को, जिसमें "सेना" थी, देखा कि वह बैठा हुआ है, कपड़े पहिने हुए और स्वस्थ-मन है। वे डर गए। १६ देखनें वालों ने उन्हें विस्तार से बताया कि भूत ग्रसित कैसे स्वस्थ हुआ और शूकरों पर क्या बीती। १७ तब वे लोग उनसे अनुरोध करने लगे कि उनकी सीमा से बिदा हो जाएं।

१८ जब वह नौका पर चढ़ रहे थे तो उस मनुष्य ने, जो पहिले भूत ग्रसित था, अनुरोध किया, 'मुझे अपने साथ रहने दीजिए।' १९ पर उन्होंने स्वीकार नहीं किया, वरन् उससे कहा, 'अपने घर अपने लोगों के पास जा, उन्हें समाचार सुना और जो कुछ प्रभु ने तेरे लिए किया है—जो कुछ तुझ पर दया हुई—वह सब उन्हें बता। २० वह चला गया और 'दशनगर' में प्रचार करने लगा कि यीशु ने उसके लिए क्या क्या किया; और सब लोग चकित रह गए।

याईर की पुत्री को जीवित करना और रक्तस्राव से पीड़ित स्त्री को नीरोग करना

२१ जब यीशु नौका से इस पार आए तो विशाल जनसमूह उनके समीप फिर एकत्रित हो गया। २२ वह सागर तट पर थे कि याईर नामक एक सभागृह-अधिकारी आया। वह उन्हें देखते ही उनके चरणों पर गिरा २३ और बहुत अनुनय करके बोला, 'मेरी पुत्री मृत्यु शय्या पर है, चल कर अपने हाथ उस पर रखिए कि वह स्वस्थ हो जाए और जीवित रहे।' २४ वह उसके साथ चले और एक विशाल जन समूह उनके पीछे हो लिया। लोग उन पर गिरे पड़ते थे।

२५ एक स्त्री बारह वर्ष से रक्तस्राव से पीड़ित थी। २६ उसने अनेक वैद्यों के हाथ बहुत दुःख उठाया था और अपना समस्त धन व्यय करने पर भी उसे कुछ लाभ प्राप्त नहीं हुआ था, वरन् दशा बिगड़ती ही गई। २७ यीशु के संबंध में सुन कर वह जन समूह में पीछे से आई और उनके वस्त्र को स्पर्श किया, २८ क्योंकि वह कहती थी, 'यदि मैं उनके वस्त्र भी छू लूंगी तो स्वस्थ हो जाऊंगी।' २९ तुरंत उसका रक्त प्रवाह बंद हो गया और उसने अपने

30 And Jesus, immediately knowing in himself that
virtue had gone out of him, turned him about in the
press, and said, Who touched my clothes? 31 And
his disciples said unto him, Thou seest the multitude
thronging thee, and sayest thou, Who touched me?
32 And he looked round about to see her that had
done this thing. 33 But the woman fearing and trem-
bling, knowing what was done in her, came and fell
down before him, and told him all the truth. 34 And
he said unto her, Daughter, thy faith hath made thee
whole; go in peace, and be whole of thy plague.

35 While he yet spake, there came from the ruler
of the synagogue's house certain which said, Thy
daughter is dead: why troublest thou the Master any
further? 36 As soon as Jesus heard the word that was
spoken, he saith unto the ruler of the synagogue, Be
not afraid, only believe. 37 And he suffered no man
to follow him, save Peter, and James, and John the
brother of James. 38 And he cometh to the house of
the ruler of the synagogue, and seeth the tumult, and
them that wept and wailed greatly. 39 And when he
was come in, he saith unto them, Why make ye this
ado, and weep? the damsel is not dead, but sleepeth.
40 And they laughed him to scorn. But when he had
put them all out, he taketh the father and the mother
of the damsel, and them that were with him, and
entereth in where the damsel was lying. 41 And he
took the damsel by the hand, and said unto her, Talitha
cumi; which is, being interpreted, Damsel, I say unto
thee, arise. 42 And straightway the damsel arose, and
walked; for she was of the age of twelve years. And
they were astonished with a great astonishment. 43 And
he charged them straitly that no man should know it;
and commanded that something should be given her to
eat.

JESUS IS REJECTED AT NAZARETH

6 And he went out from thence, and came into his
own country; and his disciples follow him. 2 And

शरीर में अनुभव किया कि वह रोग से मुक्त हो गई है। ३० उसी क्षण
यीशु ने भी अपने में अनुभव किया कि उनमें से शक्ति निकली है, और जन-
समूह में मुड़ कर पूछा, 'मेरा वस्त्र किसने छुआ ?' ३१ उनके शिष्यों ने कहा,
'आप देख रहे हैं कि भीड़ आप पर गिरी पड़ती है, और इस पर भी आप
पूछते हैं "किसने मुझे छुआ ?" ' ३२ किंतु वह चारों ओर दृष्टि दौड़ाते
रहे कि जिसने यह कार्य किया है उसे देखें। ३३ तब वह स्त्री, अपने में जो
कुछ हुआ था उसका अनुभव करके डरती कांपती आई, उनके सामने गिर
पड़ी और सब कुछ सच सच कह दिया। ३४ वह बोले, 'पुत्री, तेरे विश्वास
ने तुझे स्वस्थ किया है। शांति से जा और नीरोग रह।'

३५ वह यह कह ही रहे थे कि सभागृह-अधिकारी के निवासस्थान से
लोगों ने आकर कहा, 'आपकी पुत्री मर गई, अब गुरु को और कष्ट क्यों
देते हैं ?' ३६ यीशु ने उनकी बात पर ध्यान न दिया और सभागृह-अधिकारी
से बोले, 'डरो मत, केवल विश्वास रखो।' ३७ अब उन्होंने पतरस, याकूब
और याकूब के भाई यूहन्ना के अतिरिक्त अन्य किसी को अपने साथ नहीं
आने दिया। ३८ जब वे सभागृह-अधिकारी के निवास स्थान पर पहुंचे तो
उन्होंने देखा कि कोलाहल मचा है और बड़ा रोना चिल्लाना हो रहा है।
३९ वह भीतर गए और लोगों से बोले, 'क्यों रोते और कोलाहल करते हो ?
बालिका मरी नहीं वरन् सो रही है।' ४० लोग उनका उपहास करने लगे।
तब उन्होंने सबको बाहर निकाल दिया और बालिका के माता-पिता तथा
अपने साथियों को लेकर उस स्थान में प्रवेश किया जहाँ बालिका थी।
४१ वह बालिका का हाथ पकड़ कर बोले, 'तलीथा कूम' अर्थात्
'हे बालिका मैं तुझसे कहता हूं, उठ।' ४२ बालिका उसी क्षण
उठ बैठी और चलने फिरने लगी—क्योंकि वह बारह वर्ष की थी। लोग बड़े
आश्चर्यचकित हुए। ४३ उन्होंने दृढ़ता पूर्वक आदेश दिया, 'कोई यह
बात न जानने पाए' और कहा 'इसे कुछ खाने को दो।'

६

नासरत में निरादर

१ वह उस स्थान से चल कर अपने नगर में आए और शिष्यों ने उनका
अनुसरण किया। २ सबत के दिन वह सभागृह में उपदेश देने लगे तो बहुत

when the sabbath day was come, he began to teach in
the synagogue : and many hearing him were astonished,
saying, From whence hath this man these things ? and
what wisdom is this which is given unto him, that
even such mighty works are wrought by his hands ?
3 Is not this the carpenter, the son of Mary, the
brother of James, and Joses, and of Juda, and Simon ?
and are not his sisters here with us ? And they were
offended at him. 4 But Jesus said unto them, A pro-
phet is not without honour, but in his own country,
and among his own kin, and in his own house. 5 And
he could there do no mighty work, save that he laid
his hands upon a few sick folk, and healed them.

THE MISSION OF THE TWELVE APOSTLES

6 And he marvelled because of their unbelief. And
he went round about the villages, teaching.

7 And he called unto him the twelve, and began to
send them forth by two and two ; and gave them power
over unclean spirits ; 8 and commanded them that they
should take nothing for their journey, save a staff only ;
no scrip, no bread, no money in their purse : 9 but be
shod with sandals ; and not put on two coats. 10 And
he said unto them, In what place soever ye enter into an
house, there abide till ye depart from that place. 11 And
whosoever shall not receive you, nor hear you, when ye
depart thence, shake off the dust under your feet for a
testimony against them. Verily I say unto you, It shall
be more tolerable for Sodom and Gomorrha in the day
of judgment, than for that city. 12 And they went out,
and preached that men should repent. 13 And they cast
out many devils, and anointed with oil many that were
sick, and healed them.

THE DEATH OF JOHN THE BAPTIST

14 And king Herod heard of him ; (for his name was
spread abroad :) and he said, That John the Baptist was
risen from the dead, and therefore mighty works do
shew forth themselves in him. 15 Others said, That

से लोग सुनकर चकित रह गए, और कहने लगे, 'इसको यह बातें कहां से प्राप्त हुई ? यह कैसा ज्ञान है जो इसे मिला है ? यह ऐसे सामर्थ्य के काम कैसे कर लेता है ? ३ क्या यह वही बढ़ई नहीं जो मरियम का पुत्र और याकूब, योसेस, यहूदा और शमौन का भाई है ? क्या इसकी बहिनें हमारे बीच नहीं रहतीं ?' इस प्रकार लोगों को उनके सम्बन्ध में भ्रम हो गया। ४ यीशु ने उनसे कहा, 'अपने नगर, कुटुंब और घर को छोड़ कर और कहीं नबी का निरादर नहीं होता।' ५ वहां वह कोई सामर्थ्य के काम न कर सके, केवल कुछ अस्वस्थ व्यक्तियों पर हाथ रखकर उन्हें स्वस्थ किया। ६ लोगों के अविश्वास पर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ।

प्रेरितों का भेजा जाना

वह उपदेश देने के लिए ग्रामों में भ्रमण करने लगे।

७ उन्होंने बारह को बुलाया और उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार देकर, दो-दो करके भेजा। ८ उन्हें आज्ञा दी कि यात्रा में लाठी के अतिरिक्त कुछ साथ न लें—न रोटी, न झोली, और न थैली में पैसे। ६ वे चप्पल पहिनें, परंतु दो-दो कुरते न पहिनें। १० उन्होंने कहा, 'जहां कहीं तुम किसी घर में प्रवेश करो तो उस स्थान से विदा होने तक वहीं ठहरो। ११ यदि किसी स्थान पर तुम्हारा स्वागत न हो और लोग तुम्हारी बात न सुनें तो चलते समय उनके विरुद्ध प्रमाण के लिए अपने पैरों की धूल झाड़ दो*।' १२ उन्होंने जाकर लोगों में प्रचार किया कि हृदय परिवर्तन करें, १३ बहुत से भूत निकाले, और अस्वस्थ्य व्यक्तियों को तेल मल कर स्वस्थ किया।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की मृत्यु

१४ राजा हेरोदेस ने यह चर्चा सुनी; क्योंकि उनका नाम प्रसिद्ध हो चुका था। लोग कह रहे थे, 'यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले मृतकों में से जीवित हो उठे हैं, इस कारण उनमें यह शक्तियां क्रियाशील हैं।' १५ दूसरों का

* पाठांतर के लिए देखिए, मत्ती १० : १४।

it is Elias. And others said, That it is a prophet, or
as one of the prophets. 16 But when Herod heard
thereof, he said, It is John, whom I beheaded : he is
risen from the dead.

17 For Herod himself had sent forth and laid hold
upon John, and bound him in prison for Herodias' sake,
his brother Philip's wife : for he had married her.
18 For John had said unto Herod, It is not lawful for
thee to have thy brother's wife. 19 Therefore Herodias
had a quarrel against him, and would have killed him ;
but she could not : 20 for Herod feared John, knowing
that he was a just man and an holy, and observed him ;
and when he heard him, he did many things, and heard
him gladly. 21 And when a convenient day was came,
that Herod on his birthday made a supper to his lords,
high captains, and chief estates of Galilee ; 22 and when
the daughter of the said Herodias came in, and danced,
and pleased Herod and them that sat with him, the king
said unto the damsel, Ask of me whatsoever thou wilt,
and I will give it thee. 23 And he sware unto her,
Whatsoever thou shalt ask of me, I will give it thee,
unto the half of my kingdom. 24 And she went forth,
and said unto her mother, What shall I ask ? And she
said, The head of John the Baptist. 25 And she came
in straightway with haste unto the king, and asked,
saying, I will that thou give me by and by in a charger
the head of John the Baptist. 26 And the king was
exceeding sorry ; yet for his oath's sake, and for their
sakes which sat with him, he would not reject her.
27 And immediately the king sent an executioner, and
commanded his head to be brought : and he went and
beheaded him in the prison, 28 and brought his head
in a charger, and gave it to the damsel : and the damsel
gave it to her mother. 29 And when his disciples
heard of it, they came and took up his corpse, and
laid it in a tomb.

THE RETURN OF THE APOSTLES

30 And the apostles gathered themselves together

कथन था, 'यह एलिय्याह है'। अन्य कहते थे, 'नबियों के सदृश एक नबी
हैं।' १६ परंतु जब हेरोदेस ने सुना तो उसने कहा, 'यह यूहन्ना है, जिसका
सिर मैंने कटवाया था, वह जीवित हो उठा है।'

१७ क्योंकि हेरोदेस ने यूहन्ना को बुला भेजा था और बन्दी कर कारागार
में डाल दिया था। यह उसने अपने भाई फिलिप्पुस की पत्नी हेरोदियास के
कारण किया जिससे उसने विवाह कर लिया था। १८ यूहन्ना ने हेरोदेस से
कहा था कि तुझे अपने भाई कि पत्नी को रखना विहित नहीं। १९ इस कारण
हेरोदियास उनसे द्वेष करती थी और चाहती थी कि उन्हें मरवा डाले पर
कुछ कर नहीं सकती थी, २० क्योंकि हेरोदेस यूहन्ना को धर्मात्मा और पवित्र
पुरुष जानकर उनसे डरता था और उन्हें बचाए रखता था। वहुधा वह उनके
बचन सुनता और घबरा जाता था, तो भी प्रसन्नता से उनकी सुनता था।
२१ सुअवसर आने पर हेरोदेस ने अपने जन्म दिन पर दरबारियों, सेनापतियों
और गलील के मुख्य पुरुषों को भोज में आमंत्रित किया। २२ इस समय
उस हेरोदियास की पुत्री भीतर आई और नृत्य करके हेरोदेस और उसके
अतिथियों को प्रसन्न किया। राजा ने बाला से कहा, 'तू जो चाहे मांग, मैं
तुझे दूंगा।' २३ उसने शपथ खाकर कहा, 'यदि तू मांगेगी तो मैं अपना
आधा राज्य तक दे दूंगा।' २४ वह बाहर गई और अपनी माता से पूछा,
'मैं क्या मांगू?' उसने कहा, 'यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर।'
२५ वह वेगपूर्वक सीधी राजा के पास भीतर आई और प्रार्थना की, 'मैं
चाहती हूं कि आप यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर अभी एक थाल में
मुझे दें।' २६ राजा बहुत उदास हुआ पर अतिथिगण और अपनी शपथ
के कारण उसे निराश न करना चाहा। २७ राजा ने एक सैनिक भेजा कि
यूहन्ना का सिर ले आए। वह गया, कारागार में उनका सिर काटा २८ और
थाल में लाकर बाला को दिया और बाला ने अपनी माता को दे दिया।
२९ जब यूहन्ना के शिष्यों ने सुना तो आकर उनके शव को ले गए और उसे
कबर में रखा।

प्रेरितों का लौटना

३० प्रेरित यीशु के पास एकत्रित हुए और जो कुछ किया और सिखाया

unto Jesus, and told him all things, both what they had
done, and what they had taught. 31 And he said unto
them, Come ye yourselves apart into a desert place, and
rest a while : for there were many coming and going,
and they had no leisure so much as to eat. 32 And
they departed into a desert place by ship privately.
33 And the people saw them departing, and many knew
him, and ran afoot thither out of all cities, and outwent
them, and came together unto him. 34 And Jesus, when
he came out, saw much people, and was moved with
compassion toward them, because they were as sheep
not having a shepherd : and he began to teach them
many things.

JESUS FEEDS 5000 PEOPLE

35 And when the day was now far spent, his disciples
came unto him, and said, This is a desert place, and
now the time is far passed : 36 send them away, that
they may go into the country round about, and into the
villages, and buy themselves bread : for they have no-
thing to eat. 37 He answered and said unto them,
Give ye them to eat. And they say unto him, Shall
we go and buy two hundred pennyworth of bread, and
give them to eat ? 38 He saith unto them, How many
loaves have ye ? go and see. And when they knew,
they say, Five, and two fishes. 39 And he commanded
them to make all sit down by companies upon the green
grass. 40 And they sat down in ranks, by hundreds,
and by fifties. 41 And when he had taken the five
loaves and the two fishes, he looked up to heaven, and
blessed, and brake the loaves, and gave them to his
disciples to set before them ; and the two fishes
divided he among them all. 42 And they did all eat,
and were filled. 43 And they took up twelve baskets full
of the fragments, and of the fishes. 44 And they that
did eat of the loaves were about five thousand men.

JESUS WALKS ON THE SEA

45 And straightway he constrained his disciples
to get into the ship, and to go to the other side before

था, सब उनसे वर्णन किया। ३१ उन्होंने कहा, 'आओ अकेले निर्जन स्थान
में चलो और कुछ देर विश्राम कर लो'—क्योंकि आने जाने वालों की संख्या
इतनी अधिक थी कि उन्हें खाने का भी अवसर नहीं था। ३२ अस्तु, वे नौका
पर चुपचाप निर्जन स्थान में चले गए। ३३ लोगों ने उन्हें जाते हुए देखा और
पहिचान गए। वे सब नगरों से स्थल-मार्ग द्वारा दौड़-दौड़ कर उस स्थान
पर उनसे पहिले पहुंच गए। ३४ उन्होंने उतर कर उस विशाल जनसमूह को
देखा तो उस पर दया आई, क्योंकि ये लोग उन भेड़ों के सदृश थे जिनका
कोई मेषपाल न हो। वह उन्हें बहुत उपदेश देने लगे।

पांच सहस्र को भोजन कराना

३५ जब दिन बहुत ढल गया तो शिष्य उनके पास आए और बोले,
'यह निर्जन स्थान है और दिन बहुत ढल गया है, ३६ लोगों को विदा
कर दीजिए कि आस पास के क्षेत्रों और गावों में जाएं और अपने लिए कुछ
खाने को मोल लें।' ३७ परंतु उन्होंने उत्तर दिया, 'तुम्हीं इन्हें खाने को दो।'
वे बोले, 'क्या हम जाकर दो सौ दीनार की रोटियां लाएं, और उन्हें खाने
को दें?' ३८ उन्होंने पूछा, 'तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं, जाओ
देखो।' देख कर उन्होंने बताया, 'पांच, और दो मछलियां।' ३९ यीशु
ने उन्हें आज्ञा दी कि सब लोगों को हरी घास पर छोटे छोटे समूहों में बैठा
दें। ४० लोग पचास पचास और सौ सौ की पंक्तियों में बैठ गए। ४१ तब
उन्होंने पाँच रोटियां और दो मछलियां लीं, और ऊपर आकाश की ओर
देखकर आशिष मांगी। उन्होंने रोटियां तोड़ीं और शिष्यों को दी कि लोगों
को परोसें और दो मछलियां भी सब में बांटी। ४२ सबने भोजन किया
और तृप्त हुए। ४३ लोगों ने रोटी के टुकड़ों और मछलियों से भरी हुई
बारह टोकरियां उठाईं। ४४ भोजन करने वालों की संख्या पांच सहस्र
थी।

सागर पर चलना

४५ उसी क्षण उन्होंने अपने शिष्यों को नौका पर चढ़ने को बाध्य किया
कि वे उनसे पूर्व बैतसैदा पहुँच जायें और स्वयं जनसमूह को विसर्जित करने

unto Bethsaida, while he sent away the people. 46 And
when he had sent them away, he departed into a mount-
ain to pray. 47 And when even was come, the ship
was in the midst of the sea, and he alone on the land.
48 And he saw them toiling in rowing ; for the wind
was contrary unto them : and about the fourth watch
of the night he cometh unto them, walking upon the
sea, and would have passed by them. 49 But when
they saw him walking upon the sea, they supposed it
had been a spirit, and cried out : 50 for they all saw
him, and were troubled. And immediately he talked
with them, and saith unto them, Be of good cheer : it
is I ; be not afraid. 51 And he went up unto them
into the ship ; and the wind ceased : and they were
sore amazed in themselves beyond measure, and
wondered. 52 For they considered not the miracle of
the loaves : for their heart was hardened.

CURES AT GENNESARET

53 And when they had passed over, they came into
the land of Gennesaret, and drew to the shore. 54 And
when they were come out of the ship, straightway they
knew him, 55 and ran through that whole region round
about, and began to carry about in beds those that
were sick, where they heard he was. 56 And whither-
soever he entered, into villages, or cities, or country,
they laid the sick in the streets, and besought him
that they might touch if it were but the border of his
garment : and as many as touched him were made whole.

JESUS ANSWERS THE CRITICISM OF NEGLECTING CEREMONIAL

7 Then came together unto him the Pharisees, and
certain of the scribes, which came from Jerusalem.
2 And when they saw some of his disciples eat bread
with defiled, that is to say, with unwashen, hands, they
found fault. 3 For the Pharisees, and all the Jews,
except they wash their hands oft, eat not, holding the

के लिए रह गये। ४६ लोगों को विदा कर वह प्रार्थना करने के लिए पर्वत
पर चले गये। ४७ सायंकाल हुआ तो नौका सागर के मध्य में थी और वह
अकेले स्थल पर थे। ४८ उन्होंने शिष्यों को व्याकुल भाव से नौका खेते देखा
क्योंकि वायु विपरीत थी, और रात्रि के चौथे पहर में सागर पर चल कर
उनकी ओर आये। वह उनके समीप से निकले जा रहे थे, ४९ पर शिष्यों
ने उन्हें सागर पर चलते देख कर समझा कि कोई प्रेत है और चिल्लाने लगे;
५० क्योंकि सबने उन्हें देखा और घबरा गए। इस पर वह उनसे
बोले 'धैर्य रखो, मैं हूं, डरो मत।' ५१ वह उनके पास नौका में चढ़ आये
और वायु थम गई। वे आश्चर्य चकित हो गए, ५२ क्योंकि भोजन सम्बन्धी
घटना उनकी समझ में नहीं आई थी। उनका मन जड़ हो गया था।

गनासरत में रोगियों को स्वस्थ करना

५३ सागर पार करके वे गनासरत की भूमि पर आये और नौका किनारे
लगाई। ५४ वे नौका से उतरे ही थे कि लोगों ने उनको पहिचान लिया।
५५ वे समस्त प्रदेश में चारों ओर दौड़ गए और जहां जहां उन्होंने सुना कि
वह हैं वहीं शैया सहित रोगियों को लाने लगे। ५६ गांवों में, नगरों में और
बस्तियों में जहां कहीं वह जाते, लोग रोगियों को सार्वजनिक स्थानों में रख
देते और निवेदन करते थे कि अपने वस्त्र का सिरा ही उन्हें स्पर्श करने दें;
और जितनों ने उनको स्पर्श किया स्वस्थ हो गए।

७

परंपरा पालन का प्रश्न

१ फरीसी और यरूशलेम से आए हुये कुछ शास्त्री, उनके पास एकत्रित
हुए तो २ उन्होंने देखा कि उनके कुछ शिष्य 'अशुद्ध' अर्थात बिना धुले हाथों
से भोजन कर रहे हैं ३—क्योंकि फरीसी और सर्वसाधारण यहूदी प्राचीन-
पुरुषों की परंपरा का पालन करते हैं और विधि के अनुसार* हाथ धोए बिना

* मूल भाषा में शब्द 'पुग्मे' है, जिसके अनेक प्रस्तावित अर्थ जैसे—कुहनी, कलाई, मुट्ठी हथेली के बीच का भाग आदि, विचारणीय हैं।

tradition of the elders. 4 And when they come from
the market, except they wash, they eat not. And many
other things there be, which they have received to
hold, as the washing of cups, and pots, brasen vessels,
and of tables.

5 Then the Pharisees and scribes asked him, Why
walk not thy disciples according to the tradition of
the elders, but eat bread with unwashen hands? 6 He
answered and said unto them, Well hath Esaias prophe-
sied of you hypocrites, as it is written,

This people honoureth me with their lips,
But their heart is far from me.
7 Howbeit in vain do they worship me,
Teaching for doctrines the commandments of
men.

8 For laying aside the commandment of God, ye hold
the tradition of men, as the washing of pots and cups:
and many other such like things ye do.

9 And he said unto them, Full well ye reject the
commandment of God, that ye may keep your own
tradition. 10 For Moses said, Honour thy father and
thy mother; and, Whoso curseth father or mother,
let him die the death: 11 but ye say, If a man shall
say to his father or mother, It is Corban, that is to say,
a gift, by whatsoever thou mightest be profited by me;
he shall be free. 12 And ye suffer him no more to
do ought for his father or his mother; 13 making the
word of God of none effect through your tradition,
which ye have delivered: and many such like things
do ye.

14 And when he had called all the people unto him,
he said unto them, Hearken unto me every one of you,
and understand: 15 there is nothing from without a
man, that entering into him can defile him: but the
things which come out of him, those are they that
defile the man. 16 If any man have ears to hear, let
him hear.

17 And when he was entered into the house from the

भोजन नहीं करते। ४ वे बाजार से आने पर जब तक अपने आप पर जल
न छिड़क लें, भोजन नहीं करते : और भी अनेक परंपराएं हैं जिनका वे
पालन करते हैं; उदाहरण के लिए कटोरों; लोटों और कांसे के पात्रों का
धोना-मांजना—५ फ़रीसी और शास्त्रियों ने उनसे पूछा 'क्या कारण है
कि आपके शिष्य प्राचीनों की परंपरा के अनुसार आचरण नहीं करते वरन्
"अशुद्ध" हाथों से भोजन करते हैं ?' ६ उन्होंने उत्तर दिया, 'यशायाह
नबी ने तुम पाखंडियों के संबंध में ठीक ही नबूवत की थी। शास्त्र में उनका
लेख है :

"ये लोग ओठों से मेरा आदर करते हैं,
परंतु इनका हृदय मुझसे दूर है,
७ ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं
क्योंकि ये मनुष्य रचित नियमों को
ऐसे सिखाते हैं मानों धर्म सिद्धांत हों"

८ तुम मनुष्यों की परंपरा का तो पालन करते हो और परमेश्वर की
आज्ञा का उल्लंघन।'

९ उन्होंने उनसे यह भी कहा, 'अपनी परंपरा पालन के निमित्त तुम
परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किस सुन्दर रीति से करते हो! १० मूसा
का कथन है, "अपने माता पिता का आदर कर" और "जो माता पिता को
बुरा कहे उसे प्राण दंड दिया जाए" ११ परंतु तुम्हारा कथन है कि यदि
कोई मनुष्य अपने पिता अथवा अपनी माता से कहे, "मुझसे जो कुछ तुम्हें
प्राप्त होना था वह 'कुर्बान' अर्थात् अर्पित है" १२ तो फिर तुम उसे पिता
अथवा माता के लिए कुछ नहीं करने देते, १३ इस प्रकार तुम अपनी परंपरा
सिखाकर परमेश्वर के बचन का निराकरण करते हो। ऐसे ही अनेक कार्य
तुम करते हो।'

१४ उन्होंने जनसमूह को फिर अपने पास बुलाया और कहा, 'तुम सब
सुनो और समझो १५ ऐसी कोई वस्तु नहीं जो बाहर से मनुष्य में आकर उसे
अशुद्ध कर सके ; परंतु जो वस्तुएं मनुष्य में से बाहर निकलती हैं, वे उसे
अशुद्ध करती हैं।' १६ "जिसके सुनने को कान हों सुन ले।"*

१७ जब वह जनसमूह के पास से भीतर आए तो उनके शिष्यों ने इस

* कुछ प्रतियों में सोलहवाँ पद नहीं पाया जाता।

people, his disciples asked him concerning the parable.
18 And he saith unto them, Are ye so without under-
standing also ? Do ye not perceive, that whatsoever
thing from without entereth into the man, it cannot
defile him ; 19 because it entereth not into his heart,
but into the belly, and goeth out into the draught,
purging all meats ? 20 And he said, That which cometh
out of the man, that defileth the man. 21 For from
within, out of the heart of men, proceed evil thoughts,
adulteries, fornications, murders, 22 thefts, covetousness,
wickedness, deceit, lasciviousness, an evil eye, blasphemy,
pride, foolishness : 23 all these evil things come from
within, and defile the man.

CURE OF A GENTILE GIRL

24 And from thence he arose, and went into the
borders of Tyre and Sidon, and entered into an house,
and would have no man know it : but he could not be
hid. 25 For a certain woman, whose young daughter
had an uuclean spirit, heard of him, and came and fell
at his feet : 26 the woman was a Greek, a Syrophenician
by nation ; and she besought him that he would cast
forth the devil out of her daughter. 27 But Jesus
said unto her, Let the children first be filled : for it is
not meet to take the children's bread and to cast it unto
the dogs. 28 And she answered and said unto him, Yes,
Lord : yet the dogs under the table eat of the children's
crumbs. 29 And he said unto her, For this saying go
thy way ; the devil is gone out of thy daughter. 30 And
when she was come to her house, she found the devil
gone out, and her daughter laid upon the bed.

CURE OF A DEAF AND DUMB MAN

31 And again, departing from the coasts of Tyre
and Sidon, he came unto the sea of Galilee, through
the midst of the coasts of Decapolis. 32 And they
bring unto him one that was deaf and had an impedi-
ment in his speech ; and they beseech him to put his
hand upon him. 33 And he took him aside from the

दृष्टांत का अर्थ पूछा। १८ उन्होंने कहा, 'क्या तुम-भी इतने निर्बुद्धि हो ? क्या तुम्हारी समझ में नहीं आता कि कोई वस्तु जो बाहर से मनुष्य में जाती है, उसे अशुद्ध नहीं कर सकती, १९ क्योंकि वह उसके मन में नहीं वरन् उदर में प्रवेश करती है और मल द्वारा बाहर निकल जाती है'—इस प्रकार उन्होंने सब खाद्य पदार्थों को पवित्र ठहराया—२० उन्होंने आगे कहा, 'जो मनुष्य के भीतर से निकलता है वही उसे अशुद्ध करता है। २१ क्योंकि मनुष्य के भीतर से अर्थात् मन से बुरी बुरी योजनाएं निकलती हैं, व्यभिचार, चोरी, हत्या, परस्त्रीगमन, २२ लोभ और द्वेष के काम, कपट, निर्लज्जता, ईर्ष्या निन्दा, उद्दंडता और मूर्खता—२३ ये सब बुराइयां अन्तस् से निकलती हैं और मनुष्य को अशुद्ध करती हैं।'

अन्यजाति की बालिका को नीरोग करना

२४ तब वह उस स्थान को छोड़कर सूर की सीमा में आए और एक घर में प्रविष्ट हुए। उनकी इच्छा थी कि यह कोई न जाने, परन्तु वह छिपे न रह सके। २५ तत्काल एक स्त्री जिसकी पुत्री में अशुद्ध आत्मा थी उनके विषय में सुनकर आई और उनके चरणों में गिरी। २६ यह स्त्री यूनानी थी और जाति की सुरुफिनीकी। उसने उनसे निवेदन किया कि उसकी पुत्री में से भूत निकाल दें। २७ उन्होंने कहा, 'पहले बालकों को तृप्त होने दो क्योंकि यह ठीक नहीं है कि बालकों की रोटी कुत्तों के आगे डाली जाए।' २८ स्त्री ने उत्तर दिया, 'सत्य है प्रभु, पर कुत्तों को भी बच्चों के भोजन का चूरचार मेज के नीचे मिल ही जाता है। २९ उन्होंने कहा, 'इस कथन के कारण बिदा हो। तेरी पुत्री से भूत निकल गया।' ३० जब वह घर आई तो देखा कि बालिका शय्या पर लेटी हुई है और भूत उसमें से निकल गया है।

बहरे और गूंगे को स्वस्थ करना

३१ सूर के प्रदेश से लौटने पर वह, सिदोन के मार्ग से 'दशनगर' की सीमा में होते हुए, गलील सागर के तट पर पहुंचे। ३२ यहां लोग उनके पास एक मनुष्य को लाए, जो बहरा था और कठिनता से बोल सकता था, और उनसे अनुरोध किया कि अपना हाथ उस पर रखें। ३३ वह उसे जन-

multitude, and put his fingers into his ears, and he spit,
and touched his tongue ; 34 and looking up to heaven,
he sighed, and saith unto him, Ephphatha, that is, Be
opened. 35 And straightway his ears were opened,
and the string of his tongue was loosed, and he spake
plain. 36 And he charged them that they should tell
no man : but the more he charged them, so much the
more a great deal they published it ; 37 and were
beyond measure astonished, saying, He hath done all
things well : he maketh both the deaf to hear, and
the dumb to speak.

JESUS FEEDS FOUR THOUSAND

8 In those days the multitude being very great, and
having nothing to eat, Jesus called his disciples unto
him, and saith unto them, 2 I have compassion on
the multitude, because they have now been with me
three days, and have nothing to eat : 3 and if I send
them away fasting to their own houses, they will faint
by the way : for divers of them came from far. 4 And
his disciples answered him, From whence can a man
satisfy these men with bread here in the wilderness ?
5 And he asked them, How many loaves have ye ?
And they said, Seven. 6 And he commanded the
people to sit down on the ground : and he took the
seven loaves, and gave thanks, and brake, and gave
to his disciples to set before them ; and they did set
them before the people. 7 And they had a few small
fishes : and he blessed, and commanded to set them
also before them. 8 So they did eat, and were filled :
and they took up of the broken meat that was left
seven baskets. 9 And they that had eaten were about
four thousand : and he sent them away. 10 And
straightway he entered into a ship with his disciples,
and came into the parts of Dalmanutha.

HE REBUKES THE BLINDNESS OF THE DISCIPLES

11 And the Pharisees came forth, and began to ques-
tion with him, seeking of him a sign from heaven,

समूह से अलग एकान्त में ले गए, उसके कानों में अपनी अंगुलियां डालीं और
थूक कर उसकी जिह्वा को स्पर्श किया। ३४ फिर उन्होंने आकाश की ओर
देख कर निश्वास छोड़ा और उस मनुष्य से बोले, एफ़फ़था' अर्थात् 'खुलजा'।
३५ उसके कान खुल गए, उसकी जिह्वा के बंधन भी खुल गए और वह स्पष्ट
बोलने लगा। ३६ उन्होंने लोगों को आदेश दिया कि यह किसी को न बताएं;
परंतु जितना ही अधिक उन्होंने मना किया, उतना ही अधिक लोगोंने प्रचारित
किया। ३७ लोगों के आश्चर्य की सीमा न रही : वे कहने लगे, 'इन्होंने
सब काम कितनी सुन्दरता से पूर्ण किए हैं। इन्होंने बहरों को कान और
गूंगों को वाणी दी है।'

८

चार सहस्र को भोजन कराना

१ इन दिनों जब फिर विशाल जनसमूह एकत्रित हो गया—और उसके
पास भोजन करने को कुछ नहीं था—तो उन्होंने अपने शिष्यों को बुला कर
कहा, 'मुझे इस जनसमूह पर दया आती है; ये लोग अब तीन दिन से मेरे
पास हैं और उनके पास खाने को कुछ नहीं है। ३ यदि मैं उन्हें भूखा घर
भेजूँ तो वे मार्ग में शिथिल हो जाएंगे; उनमें से कुछ तो दूर से आए हैं।'
४ शिष्यों ने उत्तर दिया, 'यहां इस निर्जन प्रदेश में कोई कहां से उन्हें भोजन
से तृप्त कर सकेगा ?' ५ उन्होंने पूछा, 'तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं ?'
वे बोले, 'सात'। ६ उन्होंने जनसमूहको पृथ्वी पर बैठने की आज्ञा दी।
उन्होंने सातों रोटियां लीं, धन्यवाद करके तोड़ी और अपने शिष्यों को दीं कि
परोसें; और उन्होंने जनसमूह के संमुख रखीं। ७ उनके पास कुछ छोटी
मछलियां भी थीं। उन्होंने आशिष माँग कर उन्हें भी परोसने को कहा।
८ लोगों ने भोजन किया और तृप्त हुए; और उन्होंने बचे हुए टुकड़ों से
भरे सात टोकरे उठाए। ९ भोजन करनेवाले लगभग चार सहस्र थे। उन्होंने
उन लोगों को बिदा किया १० और तुरंत नौका पर चढ़कर अपने शिष्यों के
साथ दलमनूथा-प्रान्त में आए।

अंतःकरण की अंधता पर शिष्यों को फटकार

११ फरीसी आकर उनसे विवाद करने लगे और उनकी परीक्षा के लिए

tempting him. 12 And he sighed deeply in his spirit,
and saith, Why doth this generation seek after a sign ?
verily I say unto you, There shall no sign be given
unto this generation. 13 And he left them, and enter-
ing into the ship again departed to the other side.

14 Now the disciples had forgotten to take bread,
neither had they in the ship with them more than
one loaf. 15 And he charged them, saying, Take heed,
beware of the leaven of the Pharisees, and of the
leaven of Herod. 16 And they reasoned among them-
selves, saying, It is because we have no bread. 17 And
when Jesus knew it, he saith unto them, Why reason ye,
because ye have no bread ? perceive ye not yet, neither
understand ? have ye your heart yet hardened ?
18 Having eyes, see ye not ? and having ears, hear ye
not ? and do ye not remember ? 19 When I brake the
five loaves among five thousand, how many baskets
full of fragments took ye up ? They say unto him,
Twelve. 20 And when the seven among four thousand,
how many baskets full of fragments took ye up ? And
they said, Seven. 21 And he said unto them, How
is it that ye do not understand ?

HE CURES A BLIND MAN AT BETHSAIDA

22 And he cometh to Bethsaida ; and they bring a
blind man unto him, and besought him to touch him.
23 And he took the blind man by the hand, and led
him out of the town ; and when he had spit on his
eyes, and put his hands upon him, he asked him if he
saw ought. 24 And he looked up, and said, I see men
as trees, walking. 25 After that he put his hands again
upon his eyes, and made him look up : and he was
restored, and saw every man clearly. 26 And he sent
him away to his house, saying, Neither go into the
town, nor tell it to any in the town.

PETER'S CONFESSION OF JESUS AS THE CHRIST

27 And Jesus went out, and his disciples, into the
towns of Cæsarea Philippi : and by the way he asked

आकाश से कोई चिह्न माँगा। १२ उन्होंने आह भर कर कहा, 'इस पीढ़ी
के लोग चिह्न क्यों ढूंढ़ते हैं? मैं सच कहता हूं इस पीढ़ी को कोई चिह्न नहीं
मिलेगा।' १३ और वह उन लोगों को छोड़ कर पुनः नौका पर चढ़े और
दूसरी ओर चले।

१४ शिष्य भोजन लेना भूल गये थे, और नौका में उनके पास एक रोटी के
अतिरिक्त कुछ और न था। १५ उन्होंने* उनको चेतावनी देकर कहा, 'देखो
फरीसियों के खमीर और हेरोदेस के ख़मीर से सावधान रहना।' १६ वे
आपस में तर्क कर रहे थे कि उनके पास रोटी नहीं है। १७ यीशु ने यह जान
कर उनसे पूछा, 'तुम इस सोच विचार में क्यों पड़े हो कि तुम्हारे पास भोजन
नहीं है? क्या तुम्हें अब भी दिखाई नहीं देता? क्या अब भी तुम्हारी
समझ में नहीं आता? क्या तुम्हारा मन जड़ हो गया है? १८ आंखें होते
हुए भी तुम्हें दिखाई नहीं पड़ता? कान होते हुए भी तुम नहीं सुनते? क्या
तुन्हें स्मरण नहीं? १९ जब मैंने पांच सहस्र के बीच रोटियों को तोड़ा
था तो तुमने टुकड़ों से भरी कितनी टोकरियां उठाईं थीं?' उन्होंने उत्तर
दिया, 'बारह'। २० और 'जब चार सहस्र के बीच सात, तो टुकड़ों से
भरे कितने टोकरे उठाए थे?' उन्होंने उत्तर दिया, 'सात'। २१ उन्होंने
कहा, 'क्या तुम अब भी नहीं समझते?'

बैतसैदा के अंधे को दृष्टि-दान

२२ वे बैतसैदा आए। कुछ लोग यीशु के पास एक अंधे को लाए और
उनसे अनुरोध किया कि उसे स्पर्श करें। २३ वह अंधे का हाथ पकड़ कर
उसे गांव के बाहर ले गए, उसकी आंखों में थूक कर अपना हाथ उस पर रखा
और पूछा, 'क्या तुझे कुछ दिखाई देता है?' २४ उसने आंखें उठाकर कहा,
'मुझे मनुष्य दिखाई पड़ते हैं, वे वृक्षों के समान प्रतीत होते हैं, परंतु चल
फिर रहे हैं।' २५ तब उन्होंने फिर अपने हाथ उसकी आंखों पर रखे;
अंधे ने यत्नपूर्वक देखा और उसे दृष्टि पुनः प्राप्त हो गई, यहां तक कि दूर-
स्थित वस्तु भी उसे स्पष्ट दिखाई पड़ने लगीं। २६ उन्होंने उससे कहा,
'इस ग्राम में पांव न रखना', और उसे घर भेज दिया।

कैसरिया फिलिप्पी (पतरस का यीशु को ख्रिस्त स्वीकार करना)

२७ यीशु और उनके शिष्यों ने कैसरिया फिलिप्पी के ग्रामों की ओर

* यीशु ने।

his disciples, saying unto them, Whom do men say
that I am? 28 And they answered, John the Baptist:
but some say, Elias; and others, One of the prophets.
29 And he saith unto them, But whom say ye that I
am? And Peter answereth and saith unto him, Thou
art the Christ. 30 And he charged them that they
should tell no man of him.

JESUS FORETELLS HIS DEATH AND RESURRECTION

31 And he began to teach them, that the Son of
man must suffer many things, and be rejected of the
elders, and of the chief priests, and scribes, and be
killed, and after three days rise again. 32 And he
spake that saying openly. And Peter took him, and
began to rebuke him. 33 But when he had turned about
and looked on his disciples, he rebuked Peter, saying,
Get thee behind me, Satan: for thou savourest not the
things that be of God, but the things that be of men.

A CALL TO RENOUNCE SELF

34 And when he had called the people unto him
with his disciples also, he said unto them, Whosoever
will come after me, let him deny himself, and take
up his cross, and follow me. 35 For whosoever will
save his life shall lose it; but whosoever shall lose
his life for my sake and the gospel's, the same shall
save it. 36 For what shall it profit a man, if he shall
gain the whole world, and lose his own soul? 37 Or
what shall a man give in exchange for his soul?
38 Whosoever therefore shall be ashamed of me and
of my words in this adulterous and sinful generation;
of him also shall the Son of man be ashamed, when he
cometh in the glory of his Father with the holy angels.

9 And he said unto them, Verily I say unto you,
That there be some of them that stand here, which
shall not taste of death, till they have seen the kingdom
of God come with power.

प्रस्थान किया। मार्ग में उन्होंने अपने शिष्यों से पूछा, 'लोग क्या कहते हैं,
मैं कौन हूं ?' २८ उन्होंने उत्तर दिया, 'कुछ कहते हैं, "यहन्ना बपतिस्मा
देनेवाला" ; अन्य कहते हैं, "एलिय्याह" ; परंतु अन्य, "नबियों में
से एक"।' २९ उन्होंने पूछा, 'पर तुम क्या कहते हो कि मैं कौन हूं ?'
पतरस ने उत्तर दिया, 'आप ख्रिस्त हैं'। ३० इस पर उन्होंने शिष्यों को
चेतावनी दी कि उनके संबंध में किसी को न बताएँ।

अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के विषय में यीशु की पहली भविष्यवाणी

३१ वह उन्हें शिक्षा देने लगे कि यह अनिवार्य है कि मानव-पुत्र को बहुत
दुःख उठाने पड़ें ; प्राचीनों, महापुरोहितों और शास्त्रियों के द्वारा वह तुच्छ
समझा जाए, मार डाला जाए और तीन दिन पश्चात् वह जीवित हो उठे।
३२ उन्होंने यह बात स्पष्ट रूप से कही। ३३ इस पर पतरस उन्हें अपने पास
लेकर रोकने लगे ; परंतु उन्होंने मुड़कर अपने शिष्यों की ओर देखा और
पतरस को डांट कर कहा, 'मुझसे दूर हों, शैतान। तेरी भावना परमेश्वर की
सी नहीं वरन् मनुष्यों की सी है।'

स्वार्थ-त्याग पर शिक्षा

३४ उन्होंने शिष्यों सहित जनसमूह को बुलाया और कहा, 'यदि कोई
मेरे पीछे आना चाहे तो अपने आपका परित्याग करे, अपना क्रूस उठाए
और मेरे पीछे हो ले। ३५ क्योंकि जो कोई अपने प्राण बचाना चाहे वह
उन्हें खोएगा परंतु जो कोई अपने प्राण मेरे निमित्त और सुसमाचार के निमित्त
खोएगा वह उन्हें बचाएगा। ३६ यदि कोई मनुष्य समस्त जगत को प्राप्त
करले पर अपना प्राण गवां दे तो इससे क्या लाभ ? ३७ मनुष्य अपने प्राण
के बदले क्या देगा ? ३८ यदि कोई इस व्यभिचारी और पापी पीढ़ी में मुझसे
और मेरे वचनों से लज्जित होता है तो मानव पुत्र भी, जब वह अपने पिता की
महिमा में पवित्र दूतों के साथ आएगा, उससे लज्जित होगा।'

९

१ उन्होंने यह भी कहा, 'मैं तुम से सच कहता हूँ यहां कुछ व्यक्ति खड़े

THE TRANSFIGURATION

2 And after six days Jesus taketh with him Peter,
and James, and John, and leadeth them up into an high
mountain apart by themselves : and he was transfigured
before them. 3 And his raiment became shining, exceed-
ing white as snow ; so as no fuller on earth can white
them. 4 And there appeared unto them Elias with
Moses : and they were talking with Jesus. 5 And Peter
answered and said to Jesus, Master, it is good for us
to be here : and let us make three tabernacles ; one for
thee, and one for Moses, and one for Elias. 6 For he
wist not what to say ; for they were sore afraid. 7 And
there was a cloud that overshadowed them : and a voice
came out of the cloud, saying, This is my beloved Son :
hear him. 8 And suddenly, when they had looked
round about, they saw no man any more, save Jesus
only with themselves.

9 And as they came down from the mountain, he
charged them that they should tell no man what things
they had seen, till the Son of man were risen from the
dead. 10 And they kept that saying with themselves,
questioning one with another what the rising from the
dead should mean.

11 And they asked him, saying, Why say the scribes
that Elias must first come ? 12 And he answered and
told them, Elias verily cometh first, and restoreth all
things ; and how it is written of the Son of man, that
he must suffer many things, and be set at nought.
13 But I say unto you, That Elias is indeed come, and
they have done unto him whatsoever they listed, as it
is written of him.

HEALING OF A DEMONIAC BOY

14 And when he came to his disciples, he saw a
great multitude about them, and the scribes questioning
with them. 15 And straightway all the people, when
they beheld him, were greatly amazed, and running to
him saluted him. 16 And he asked the scribes, What

हैं, वे जब तक परमेश्वर के राज्य को सामर्थ्य सहित आया हुआ न देख लें, मृत्यु को न चखेंगे।'

दिव्य-रूपांतर

२ छह दिन बाद यीशु ने पतरस, याकूब और यूहन्ना को अपने साथ
लिया और उन्हें एक ऊंचे पर्वत पर एकान्त में पृथक् ले गए। वहां उनके
सामने यीशु का रूपांतर हो गया। ३ उनके वस्त्र अत्यन्त उज्वल हो जगमगाने
लगे—इतने उज्वल कि पृथ्वी पर कोई धोबी नहीं कर सकता। ४ वहां मूसा
सहित एलिय्याह उन्हें दृष्टिगोचर हुए; वे यीशु से वार्तालाप कर रहे थे।
५ तब पतरस बोल उठे और यीशु से कहा, 'गुरूजी, कैसी उत्तम बात है कि हम
यहां हैं। आइए हम तीन मंडप बनाएं एक आपके लिए, एक मूसा के लिए
और एक एलिय्याह के लिए।' ६ क्योंकि पतरस की समझ में नहीं आ रहा
था कि क्या कहें: वे सब भयभीत हो उठे थे। ७ तब एक मेघ ने उन्हें
आच्छादित कर लिया और मेघ में से वाणी हुई 'यह मेरा प्रिय पुत्र है, इसको
सुनो'। ८ उन्होंने जब एकाएक चारों ओर दृष्टि की तो यीशु के अतिरिक्त
और किसी को न देखा।

९ पर्वत से उतरते समय उन्होंने आदेश दिया, 'जब तक मानव-पुत्र
मृतकों में से जीवित न हो उठे तब तक यह जो तुमने देखा है किसी को न
बताना।' १० इन शब्दों को लेकर वे आपस में विवाद करने लगे कि 'मृतकों
में से जीवित होने' के क्या अर्थ हैं। ११ उन्होंने यीशु से पूछा, 'शास्त्री
क्यों कहते हैं कि पहले एलिय्याह का आना अनिवार्य है।' १२ उन्होंने उत्तर
दिया, 'ठीक है, एलिय्याह पहले आकर सब कुछ सुधारेंगे, परंतु मानव-पुत्र
के विषय में ऐसा लेख क्यों हैं कि "वह बहुत दुःख उठाएंगे और निकृष्ट समझे
जाएंगे ?" १३ मैं तुमसे कहता हूं कि एलिय्याह आ चुके और जैसा कि
उनके संबंध में शास्त्र का लेख है, जो कुछ उन्होंने चाहा उनके साथ किया।'

अशुद्ध आत्मा ग्रसित बालक को स्वस्थ करना

१४ जब वह शिष्यों के पास आए तो देखा कि उनके चारों ओर बड़ी
भीड़ लगी है और शास्त्री उनसे विवाद कर रहे हैं। १५ उनको देखते ही
समस्त जनसमूह चकित हुआ और दौड़कर उन्हें प्रणाम किया। १६ उन्होंने

question ye with them ? 17 And one of the multitude
answered and said, Master, I have brought unto thee
my son, which hath a dumb spirit ; 18 and wheresoever
he taketh him, he teareth him : and he foameth, and
gnasheth with his teeth, and pineth away : and I spake
to thy disciples that they should cast him out ; and
they could not. 19 He answereth him, and saith, O
faithless generation, how long shall I be with you ?
how long shall I suffer you ? bring him unto me. 20 And
they brought him unto him : and when he saw him,
straightway the spirit tare him ; and he fell on the
ground, and wallowed foaming. 21 And he asked his
father, How long is it ago since this came unto him ?
And he said, Of a child. 22 And ofttimes it hath cast
him into the fire, and into the waters, to destroy him ;
but if thou canst do anything, have compassion on us,
and help us. 23 Jesus said unto him, If thou canst
believe, all things are possible to him that believeth.
24 And straightway the father of the child cried out
and said with tears, Lord, I believe ; help thou mine
unbelief. 25 When Jesus saw that the people came
running together, he rebuked the foul spirit, saying
unto him, Thou dumb and deaf spirit, I charge thee,
come out of him, and enter no more into him. 26 And
the spirit cried, and rent him sore, and came out of
him : and he was as one dead ; insomuch that many
said, He is dead. 27 But Jesus took him by the hand
and lifted him up ; and he arose.

28 And when he was come into the house, his
disciples asked him privately, Why could not we cast
him out ? 29 And he said unto them, This kind can
come forth by nothing, but by prayer and fasting.

A SECOND PREDICTION OF HIS DEATH

30 And they departed thence, and passed through
Galilee ; and he would not that any man should know
it. 31 For he taught his disciples, and said unto them,
The Son of man is delivered into the hands of men,
and they shall kill him ; and after that he is killed,

पूछा, 'तुम इनसे क्या विवाद कर रहे हो ?' १७ समूह में से एक ने
उत्तर दिया 'गुरूजी मैं आपके पास अपने पुत्र को लाया जिसमें गूंगी आत्मा
का वास है। १८ जहां कहीं वह उसे पकड़ती है, पटक देती है। वह मुंह
में फेन भर लाता, दांत पीसने लगता और पीला पड़ जाता है* आपके शिष्यों
से मैंने उसे निकालने को कहा परंतु उनसे न बन पड़ा।' १९ उन्होंने कहा,
'हे अविश्वासी पीढ़ी कब तक मैं तुम्हारे साथ रहूंगा ? कब तक मैं तुम्हारी
सहन करूंगा ? लाओ उसे मेरे पास।' २० वे उसे उनके पास लाए।
उनको देखते ही आत्मा ने बालक को मरोड़ा : वह भूमि पर गिर पड़ा और
मुंह से फेन निकालते हुए लोटने लगा। २१ उन्होंने उसके पिता से पूछा,
'इसकी ऐसी दशा कब से है ?' उसने उत्तर दिया, 'बचपन से। २२ इसे
नष्ट करने के लिए उसने कई बार इसे कभी अग्नि में और कभी जल में
गिराया। यदि आप कर सकें तो दया कर हमारी सहायता कीजिए।'
२३ यीशु ने उससे कहा, "यदि आप कर सकें !" विश्वास करनेवाले के
लिये सब कुछ सम्भव है।' २४ इस पर बालक के पिता के मुख से आर्त्तनाद
निकला, 'मैं विश्वास करता हूं। मेरे अविश्वास में मेरी सहायता कीजिए।'
२५ यीशु ने देखा कि जनसमूह उमड़ता चला आ रहा है तो अशुद्ध आत्मा
को डांट कर कहा, 'ऐ गूंगी और बहरी आत्मा, मैं तुझे आज्ञा देता हूं कि इसमें
से निकल और फिर कभी प्रवेश मत कर।' २६ वह घोर शब्द कर और
उसे बहुत मरोड़ कर उसमें से निकल गई : बालक मृतकवत् हो गया, यहां
तक कि अनेक लोग कहने लगे कि वह मर गया। २७ परंतु यीशु ने उसे हाथ
पकड़ कर उठाया, और वह खड़ा हो गया।

२८ जब वह घर आए तो शिष्यों ने एकांत में उनसे पूछा, 'हम उसे क्यों
नहीं निकाल सके ?' २९ उन्होंने उत्तर दिया, 'यह वर्ग प्रार्थना के बिना और
किसी उपाय से नहीं निकल सकता।'

अपनी मृत्यु के संबंध में यीशु की दूसरी भविष्यवाणी

३० वे वहां से चले और गलील में होकर जा रहे थे। यीशु नहीं
चाहते थे कि किसी को इसका पता लगे ३१ क्योंकि वह अपने शिष्यों को
शिक्षा देने में लगे हुए थे। उनका कथन था, 'मानव-पुत्र मनुष्यों द्वारा
पकड़वाया जाने को है ; वे उसे मार डालेंगे, परंतु मरने के तीन दिन पश्चात्

* अथवा 'अकड़ जाता है'।

he shall rise the third day. 32 But they understood
not that saying and were afraid to ask him.

TEACHING ON HUMILITY

33 And he came to Capernaum: and being in the
house he asked them, What was it that ye disputed
among yourselves by the way? 34 But they held their
peace: for by the way they had disputed among them-
selves, who should be the greatest. 35 And he sat
down, and called the twelve, and saith unto them, If
any man desire to be first, the same shall be last of all,
and servant of all. 36 And he took a child, and set
him in the midst of them: and when he had taken him
in his arms, he said unto them, 37 Whosoever shall
receive one of such children in my name, receiveth
me: and whosoever shall receive me, receiveth not me,
but him that sent me.

ON TOLERATION

38 And John answered him, saying, Master, we saw
one casting out devils in thy name, and he followeth
not us: and we forbad him, because he followeth not
us. 39 But Jesus said, Forbid him not: for there is no
man which shall do a miracle in my name, that can
lightly speak evil of me. 40 For he that is not against
us is on our part. 41 For whosoever shall give you a
cup of water to drink in my name, because ye belong
to Christ, verily I say unto you, he shall not lose
his reward.

CAUTION AGAINST HINDERING OTHERS

42 And whosoever shall offend one of these little
ones that believe in me, it is better for him that a
millstone were hanged about his neck, and he were
cast into the sea. 43 And if thy hand offend thee, cut
it off: it is better for thee to enter into life maimed,
than having two hands to go into hell, into the fire
that never shall be quenched: 44 where their worm

वह फिर जीवित हो उठेगा।' ३२ इस कथन का अर्थ शिष्यों की समझ में न
आया, और पूछने से वे डरते थे।

नम्रता पर शिक्षा

३३ वे कफरनहूम आए : घर में प्रवेश करने पर यीशु ने उनसे पूछा,
'मार्ग में तुम क्या विवाद कर रहे थे ?' ३४ वे चुप रहे क्योंकि मार्ग में
उन्होंने विवाद किया था कि उनमें सब से बड़ा कौन है। ३५ बैठने के उपरांत
उन्होंने 'बारह' को बुलाया और कहा, 'यदि कोई प्रथम होना चाहता है
तो उसे चाहिए कि सब से अंतिम हो और सबका सेवक बने।'
३६ तब उन्होंने एक बालक को लेकर उनके बीच खड़ा किया और उसे
अंक में भरकर बोले, ३७ 'जो कोई मेरे नाम से ऐसे एक बालक को ग्रहण
करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; और जो मुझे ग्रहण करता है, वह मुझे
नहीं वरन् उसे ग्रहण करता है जिसने मुझे भेजा है।'

उदार विचार

३८ यूहन्ना ने उनसे कहा, 'गुरुजी, हमने एक मनुष्य को आपके नाम
से भूत निकालते देखा तो हमने उसे रोकने का प्रयास किया, क्योंकि वह
हमारा अनुसरण नहीं करता।' ३९ यीशु बोले, 'उसे मत रोको क्यों ऐसा कोई
व्यक्ति नहीं जो मेरे नाम से सामर्थ्य के काम करे और तुरंत ही मुझे बुरा कह
सके। ४० जो हमारे विरोध में नहीं वह हमारे पक्ष में है। ४१ यदि कोई
मेरे नाम से, इसलिए कि तुम ख्रिस्त के हो, तुम्हें एक कटोरा जल पिलाए
तो मैं तुमसे सच कहता हूं कि वह अपना पुरस्कार कदापि न खोएगा।

दूसरों को फंसाने वालों के लिए चेतावनी

४२ 'जो कोई इन छोटों में से एक को फंसाए, यह जो विश्वास
करते हैं, उसके लिये अच्छा है कि उसके गले में एक बड़ा चक्की का पाट बांधा
जाए और वह सागर में फेंक दिया जाए। ४३-४४ यदि तुम्हारा हाथ तुम्हें
प्रलोभन में फंसाए तो उसे काट डालो ; लूला होकर जीवन में प्रवेश करना

dieth not, and the fire is not quenched. 45 And if thy
foot offend thee, cut it off : it is better for thee to enter
halt into life, than having two feet to be cast into hell, in-
to the fire that never shall be quenched : 46 where their
worm dieth not, and the fire is not quenched. 47 And
if thine eye offend thee, pluck it out : it is better for
thee to enter into the kingdom of God with one eye,
than having two eyes to be cast into hell fire : 48 where
their worm dieth not, and the fire is not quenched.
49 For every one shall be salted with fire, and every
sacrifice shall be salted with salt. 50 Salt is good : but
if the salt have lost his saltness, wherewith will ye
season it ? Have salt in yourselves, and have peace one
with another.

A QUESTION ABOUT DIVORCE

10 And he arose from thence, and cometh into the
coasts of Judæa by the farther side of Jordan :
and the people resort unto him again ; and, as he was
wont, he taught them again. 2 And the Pharisees
came to him, and asked him, Is it lawful for a man
to put away his wife ? tempting him. 3 And he
answered and said unto them, What did Moses com-
mand you ? 4 And they said, Moses suffered to write
a bill of divorcement, and to put her away. 5 And
Jesus answered and said unto them, For the hardness
of your heart he wrote you this precept. 6 But from
the beginning of the creation

God made them male and female.

7 For this reason

Shall a man leave his father and mother,
And cleave to his wife ;
And they twain shall be one flesh.

8 So then they are no more twain, but one flesh.
9 What therefore God hath joined together, let not
man put asunder. 10 And in the house his disciples
asked him again of the same matter. 11 And he saith

इससे अच्छा है कि दो हाथ रहते हुए तुम नरक में, न बुझने वाली अग्नि में,
जाओ।* ४५-४६ यदि तुम्हारा पैर तुम्हें फंसाए तो उसे काट डालो ; लंगड़े
होकर जीवन में प्रवेश करना इससे कहीं अच्छा है कि दो पैर रहते हुए तुम नरक
में डाले जाओ।* ४७ यदि तुम्हारी आंख तुम्हें फंसाए तो उसे निकाल डालो;
काने होकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना इससे कहीं अच्छा है कि दो
आंख होते हुए तुम नरक में डाले जाओ ४८ जहां "उनका कीड़ा मरता नहीं
और न आग बुझती है"। ४९ प्रत्येक व्यक्ति अग्नि द्वारा सलोना किया
जाएगा। ५० नमक अच्छा है, पर यदि नमक अपना सलोनापन खो बैठ तो
उसे किस वस्तु से स्वादिष्ट करेंगे? अपने में नमक रखो और परस्पर
शांति पूर्वक रहो।'

१०

तलाक़ का प्रश्न

१ वहां से उठ कर यीशु यरदन के पार यहूदिया की सीमा में आए ;
और जनसमूह उनके समीप फिर एकत्रित हो गया। वह अपनी रीतिके अनुसार
उन्हें पुनः उपदेश देने लगे। २ फरीसियों ने आगे बढ़कर उनकी परीक्षा
करने के लिए प्रश्न किया, 'क्या किसी पुरुष के लिए अपनी स्त्री को त्याग
देना विहित है?' ३ उत्तर में यीशु ने पूछा, 'मूसा ने तुम्हें क्या आज्ञा दी
है?' ४ वे बोले, 'मूसा ने त्यागपत्र लिख कर त्याग देने की अनुमति दी है।'
५ यीशु ने उनसे कहा, 'तुम्हारे मन की कठोरता के कारण उन्होंने यह आज्ञा
लिखी, ६ अन्यथा सृष्टि के आरंभ से

"परमेश्वर ने उन्हें नर और नारी बनाया"

७ इस कारण

"पुरुष अपनी माता और अपने पिता को छोड़गा,
और अपनी पत्नी के साथ रहेगा ;
और वे दोनों एक तन होंगे"

८ अस्तु अब वे दो नहीं वरन् एक तन हैं। ९ इसलिए जिसे परमेश्वर ने
जोड़ा है उसे मनुष्य अलग न करे।' १० घर में शिष्यों ने इस संबंध में उनसे
फिर पूछा। ११ उन्होंने उत्तर दिया, 'जो कोई अपनी पत्नी को• त्यागकर

* कुछ प्राचीन प्रतियों में ४४ एवं ४६ पद पाये जाते है उनकी शब्दावली पद ४८ के समान है।

unto them, Whosoever shall put away his wife, and
marry another, committeth adultery against her. 12 And
if a woman shall put away her husband, and be married
to another, she committeth adultery.

JESUS BLESSES LITTLE CHILDREN

13 And they brought young children to him, that
he should touch them : and his disciples rebuked those
that brought them. 14 But when Jesus saw it, he was
much displeased, and said unto them, Suffer the little
children to come unto me, and forbid them not : for of
such is the kingdom of God. 15 Verily I say unto you,
Whosoever shall not receive the kingdom of God as
a little child, he shall not enter therein. 16 And he
took them up in his arms, put his hands upon them,
and blessed them.

A RICH YOUNG MAN SEEKS ETERNAL LIFE

17 And when he was gone forth into the way,
there came one running, and kneeled to him, and asked
him, Good Master, what shall I do that I may inherit
eternal life ? 18 And Jesus said unto him, Why callest
thou me good ? there is none good but one, that is, God.
19 Thou knowest the commandments, Do not commit
adultery, Do not kill, Do not steal, Do not bear false
witness, Defraud not, Honour thy father and mother.
20 And he answered and said unto him, Master, all
these have I observed from my youth. 21 Then Jesus
beholding him loved him, and said unto him, One thing
thou lackest : go thy way, sell whatsoever thou hast,
and give to the poor, and thou shalt have treasure in
heaven : and come, take up the cross, and follow me.
22 And he was sad at that saying, and went away
grieved : for he had great possessions.

THE OBSTACLE OF RICHES

23 And Jesus looked round about, and saith unto his
disciples, How hardly shall they that have riches enter
into the kingdom of God ! 24 And the disciples were
astonished at his words. But Jesus answereth again, and

दूसरी से विवाह करता है वह उसके विरुद्ध व्यभिचार करता है,
१२ और यदि स्त्री अपने पति को छोड़ कर दूसरे से विवाह करती है तो वह
व्यभिचार करती है।'

बालकों को आशीर्वाद

१३ लोग बालकों को उनके पास लाने लगे कि वह उन्हें स्पर्श करें, पर
शिष्यों ने उन्हें रोका। १४ यीशु ने यह देखा तो बहुत रुष्ट हुए और उनसे
कहा, 'बालकों को मेरे पास आने दो, उन्हें मना न करो क्योंकि परमेश्वर का
राज्य एसों का ही है। १५ मैं तुम से सच कहता हूं कि यदि कोई परमेश्वर के
राज्य को बालक की भांति स्वीकार न करे तो वह उसमें कदापि प्रवेश न करने
पाएगा'। १६ तब उन्होंने बालकों को गोद में लिया, उनके सिर पर हाथ
रखे और उन्हें आशीर्वाद दिया।

धन या शाश्वत जीवन ?

१७ वह निकलकर मार्ग की ओर जा रहे थे कि एक मनुष्य दौड़ता
हुआ आया और उनके आगे घुटने टेक कर उनसे प्रश्न किया, 'हे सद्गुरु,
शाश्वत जीवन का उत्तराधिकारी होने के लिए मैं क्या करूं ?' १८ यीशु ने
कहा, 'तू मुझे सत् क्यों कहता है। एक परमेश्वर को छोड़ कोई अन्य सत्
नहीं। १९ तुझे आज्ञाएं ज्ञात हैं : "हत्या न कर, व्यभिचार न कर, चोरी न
कर, झूठी साक्षी न दे, ठग मत, अपने माता पिता का आदर कर"। २० उसने
उत्तर दिया, "गुरुजी, इन सब का मैं अपनी बाल्यावस्था से पालन करता आया
हूं।" २१ यीशु ने उस पर एकटक दृष्टि की और उन्हें उस पर प्यार आया।
वह बोले, 'तुझमें एक वस्तु का अभाव है ; जा, जो कुछ तेरा है द्ररिदों को दे
डाल और स्वर्ग में तुझे धन मिलेगा, तब आ और मेरा अनुयायी हो।'
२२ यह सुनकर उसका मुख म्लान हो गया और वह व्यथित होकर चला
गया, क्योंकि उसके पास बहुत संपत्ति थी।

धन के कारण विघ्न

२३ यीशु ने चारों ओर दृष्टि डाली और अपने शिष्यों से कहा, 'संपत्ति-
शालियों का परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन है!'
२४ इन शब्दों को सुनकर शिष्य चकित हो गए। परंतु यीशु ने फिर कहा,

saith unto them, Children, how hard is it for them that
trust in riches to enter into the kingdom of God. 25 It
is easier for a camel to go through the eye of a needle,
than for a rich man to enter into the kingdom of God.
26 And they were astonished out of measure, saying
among themselves, Who then can be saved ? 27 And
Jesus looking upon them saith, With men it is impos-
sible, but not with God : for with God all things are
possible. 28 Then Peter began to say unto him, Lo, we
have left all, and have followed thee. 29 And Jesus
answered and said, Verily I say unto you, There is no
man that hath left house, or brethren, or sisters, or
father, or mother, or wife, or children, or lands, for my
sake, and the gospel's, 30 but he shall receive an hund-
redfold now in this time, houses, and brethren, and
sisters, and mothers, and children, and lands, with per-
secutions ; and in the world to come eternal life. 31 But
many that are first shall be last ; and the last first.

A THIRD PREDICTION OF HIS DEATH

32 And they were in the way going up to Jerusalem ;
and Jesus went before them : and they were amazed ;
and as they followed, they were afraid. And he took
again the twelve, and began to tell them what things
should happen unto him, 33 saying, Behold, we go up to
Jerusalem ; and the Son of man shall be delivered unto
the chief priests, and unto the scribes ; and they shall
condemn him to death, and shall deliver him to the
Gentiles : 34 and they shall mock him, and shall scourge
him, and shall spit upon him, and shall kill him : and
the third day he shall rise again.

THE REQUEST OF JAMES AND JOHN

35 And James and John, the sons of Zebedee, come
unto him, saying, Master, we would that thou shouldest
do for us whatsoever we shall desire. 36 And he said
unto them, What would ye that I should do for you ?
37 They said unto him, Grant unto us that we may
sit, one on thy right hand, and the other on thy left
hand, in thy glory. 38 But Jesus said unto them, Ye

'बालको, परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन है!
२५ परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने की अपेक्षा, ऊंट का सुई के
नाके में होकर निकल जाना अधिक सरल है।' २६ वे और भी विस्मित हुए
और आपस में कहने लगे तो फिर उद्धार किसका हो सकता है?
२७ यीशु ने उनकी ओर एकटक देख कर कहा, 'मनुष्यों के लिए यह असंभव
है पर परमेश्वर के लिए नहीं, क्योंकि परमेश्वर के लिए सब कुछ संभव है।'
२८ पतरस बोल उठे, 'देखिए हम तो सब कुछ त्याग कर आपके अनुयायी हो
गए हैं।' २९ यीशु ने कहा, 'मैं तुमसे सच कहता हूं, ऐसा कोई नहीं है जो
मेरे और सुसमाचार के लिए घर, भाई, बहन, माता, पिता, संतान या भूमि का
त्याग करे ३० और इस समय सौ गुना न पाए—घर-द्वार, भाई, बहन,
माता, पिता, संतान और भूमि—साथ साथ ही अत्याचार तथा आने वाले
युग में शाश्वत जीवन। ३१ परंतु अनेक जो प्रथम हैं, अंतिम होंगे, और जो
अंतिम हैं, प्रथम।'

अपनी मृत्यु के संबंध में यीशु की तीसरी भविष्यवाणी

३२ वे उस मार्ग पर चढ़ रहे थे जो यरूशलेम जाता है। यीशु आगे
चल रहे थे; शिष्य घबराये हुए थे; और पीछे आनेवाले भयभीत थे।
यीशु ने "बारह" को फिर अपने साथ लिया और उन्हें अपने ऊपर आने
वाली घटनाएं बताने लगे: ३३ 'देखो, हम यरूशलेम जा रहे हैं; वहां
मानव-पुत्र महापुरोहितों और शास्त्रियों के हाथ में दे दिया जाएगा; वे
उसे प्राण दण्ड के योग्य ठहराएंगे, और अन्यजाति को सौंप देंगे। ३४ वे
उसका उपहास करेंगे, उस पर थूकेंगे, उसे कोड़े लगाएंगे, उसे मार डालेंगे
और तीन दिन पश्चात् वह जी उठेगा।'

यूहन्ना और याक़ूब का दिवेदन

३५ जबदी के दोनों पुत्र, याक़ूब और यूहन्ना, उसके पास आए और
बोले, 'गुरुजी, हम चाहते हैं कि जो कुछ हम मांगने पर हैं, आप हमारे लिए
करें।' ३६ यीशु ने पूछा, 'तुम क्या चाहते हो; मैं तुम्हारे लिए क्या करूं?'
३७ उन्होंने उत्तर दिया, 'जब आपकी महिमा हो तो हममें से एक को अपने
दाहिने और दूसरे को बाएं बैठने का अधिकार दें।' ३८ यीशु ने उनसे कहा,

know not what ye ask : can ye drink of the cup that
I drink of ? and be baptized with the baptism that I
am baptized with ? 39 And they said unto him, We
can. And Jesus said unto them, Ye shall indeed drink
of the cup that I drink of ; and with the baptism that
I am baptized withal shall ye be baptized : 40 but to
sit on my right hand and on my left hand is not mine
to give ; but it shall be given to them for whom it is
prepared.

TRUE GREATNESS

41 And when the ten heard it, they began to be
much displeased with James and John. 42 But Jesus
called them to him, and saith unto them, Ye know that
they which are accounted to rule over the Gentiles
exercise lordship over them ; and their great ones exer-
cise authority upon them. 43 But so shall it not be
among you : but whosoever will be great among you,
shall be your minister : 44 and whosoever of you
will be the chiefest, shall be servant of all. 45 For even
the Son of man came not to be ministered unto, but
to minister, and to give his life a ransom for many.

CURE OF BLIND BARTIMAEUS

46 And they came to Jericho : and as he went out
of Jericho with his disciples and a great number of
people, blind Bartimæus, the son of Timæus, sat by the
highway side begging. 47 And when he heard that it
was Jesus of Nazareth, he began to cry out, and say,
Jesus, thou son of David, have mercy on me. 48 And
many charged him that he should hold his peace : but
he cried the more a great deal, Thou son of David, have
mercy on me. 49 And Jesus stood still, and commanded
him to be called. And they call the blind man, saying
unto him, Be of good comfort, rise ; he calleth thee.
50 And he, casting away his garment, rose, and came
to Jesus. 51 And Jesus answered and said unto him,
What wilt thou that I should do unto thee ? The blind
man said unto him, Lord, that I might receive my sight.

'तुम्हें पता नहीं कि तुम अपने लिए क्या मांग रहे हो। क्या तुममें वह प्याला पीने की सामर्थ्य है जो मैं पीने वाला हूं अथवा वह बपतिस्मा लेने की, जो मैं लेने वाला हूं ?' ३९ उन्होंने उत्तर दिया, 'हां सामर्थ्य है।' यीशु ने उनसे कहा, 'जो प्याला मैं पी रहा हूं, तुम पीओगे जो बपतिस्मा मैं सहन कर रहा हूं, तुम सहन करोगे, ४० पर अपने दाहिने और बाएं बैठाना मेरा काम नहीं है। ये स्थान उनके लिए हैं जिनके लिए प्रस्तुत किए गए हैं।'

महान कौन् है

४१ जब "दस" ने यह सुना तो वे याकूब और यूहन्ना पर बहुत रुष्ट हुए। ४२ यीशु ने उनको बुलाकर कहा, 'तुम जानते हो कि जो अन्य जाति में शासक माने जाते हैं वे उन पर निरंकुश शासन करते हैं और "बड़े लोग" उन पर अधिकार जताते हैं। ४३ परंतु तुममें ऐसा नहीं होगा ; वरन् तुम में जो महान् होना चाहे वह तुम्हारा सेवक बने ४४ और तुम में जो प्रधान होना चाहे वह सब का दास बने : ४५ क्योंकि मानव-पुत्र सेवा कराने नहीं वरन् सेवा करने और बहुतों के बदले उनकी मुक्ति के मूल्य में अपने प्राण देने आया।'

अंधे बरतिमाई को दृष्टिदान

४६ वे यरीहो पहुंचे ; शिष्यों और विशाल जनसमूह के साथ जब वह यरीहो से निकल रहे थे तो तिमाई का पुत्र बरतिमाई, एक अंधा भिखारी, मार्ग के किनारे बैठा हुआ था। ४७ जब उसने सुना कि नासरत निवासी यीशु हैं तो वह पुकार कर कहने लगा, 'हे दाऊद-पुत्र, हे यीशु, मुझ पर दया कीजिए।' ४८ बहुतों ने उसे रोका कि चुप रहे पर वह उच्च स्वर में और भी पुकारने लगा, 'हे दाऊद-पुत्र मुझ पर दया कीजिए।' ४९ यीशु रुक गए और आज्ञा दी 'उसे बुलाओ'। लोगों ने अंधे को बुलाया और कहा, 'धैर्य रख, उठ, वह तुझे बुला रहे हैं।' ५० इस पर वह अपने वस्त्र फेंक कर उछल पड़ा और यीशु के समीप आया। ५१ यीशु ने उससे पूछा, 'तू क्या चाहता है, मैं तेरे लिए क्या करूं ?' अंधे ने कहा, 'गुरुजी, मैं देखते पाऊं।'

52 And Jesus said unto him, Go thy way; thy faith
hath made thee whole. And immediately he received
his sight, and followed Jesus in the way.

JESUS' TRIUMPHAL ENTRY INTO JERUSALEM

11 And when they came nigh to Jerusalem, unto
Bethphage and Bethany, at the mount of Olives,
he sendeth forth two of his disciples, 2 and saith unto
them, Go your way into the village over against you:
and as soon as ye be entered into it, ye shall find a
colt tied, whereon never man sat; loose him, and bring
him. 3 And if any man say unto you, Why do ye
this? say ye that the Lord hath need of him; and
straightway he will send him hither. 4 And they went
their way, and found the colt tied by the door without
in a place where two ways met; and they loose him.
5 And certain of them that stood there said unto
them, What do ye, loosing the colt? 6 And they said
unto them even as Jesus had commanded: and they
let them go. 7 And they brought the colt to Jesus,
and cast their garments on him; and he sat upon him.
8 And many spread their garments in the way: and
others cut down branches off the trees, and strawed
them in the way. 9 And they that went before, and
they that followed, cried, saying,

Hosanna;
Blessed is he that cometh in the name of the Lord;
10 Blessed be the kingdom of our father David,
That cometh in the name of the Lord.
Hosanna in the highest.

11 And Jesus entered into Jerusalem, and into the
temple: and when he had looked round about upon
all things, and now the eventide was come, he went
out unto Bethany with the twelve.

THE BARREN FIG TREE

12 And on the morrow, when they were come
from Bethany, he was hungry: 13 and seeing a fig tree

५२ यीशु ने कहा, 'जा, तेरे विश्वास ने तुझे स्वस्थ किया।' उसी क्षण वह
देखने लगा और मार्ग में उनके पीछे हो लिया।

११

यरूशलेम में धूमधाम के साथ प्रवेश

१ जब वे यरूशलेम के निकट, जैतून पर्वत पर बैतफगे और बैतनिय्याह के
समीप आए तो उन्होंने अपने दो शिष्यों को यह कह कर भेजा, २ 'अपने
सामने के गांव में जाओ; प्रवेश करते ही वहां तुम्हें एक गदही का बच्चा बंधा
हुआ मिलेगा जिस पर अब तक कोई नहीं चढ़ा; उसे खोल कर ले आओ।
३ यदि कोई तुमसे कहे, "यह क्या कर रहे हो?" तो कहना "प्रभु को इसकी
आवश्यकता है; वह शीघ्र ही यहां लौटा देंगे".।' ४ वे गए और उन्होंने
गदही के बच्चे को बाहर, सड़क के किनारे, एक द्वार पर बंधा हुआ पाया। वे
उसे खोलने लगे। ५ वहां खड़े हुए लोगों ने पूछा, 'यह क्या कर रहे हो, गदही
के बच्चे को क्यों खोलते हो?' ६ उन्होंने वही उत्तर दिया जो यीशु ने
बताया था और उन्होंने ले जाने दिया। ७ वे गदही के बच्चे को यीशु के
पास लाए और उस पर अपने वस्त्र डाले। यीशु उस पर बैठ गए। ८ बहुतों
ने मार्ग में अपने वस्त्र बिछाए दूसरों ने खेतों से तोड़ कर पत्तियां बिछाईं।
९ उनके आगे और पीछे चलने वाले जय घोष कर रहे थे,

'होशाना!
प्रभु के नाम से आने वाले की स्तुति!
१० हमारे पिता दाऊद के आने वाले राज्य की स्तुति!
उच्चतम स्थानों में होशाना!'

११ यीशु ने यरूशलेम में आकर मंदिर में प्रवेश किया; और चारों
ओर सब कुछ देख कर संध्या हो जाने के कारण वह "बारह" के साथ
बैतनिय्याह चले गए।

फल रहित अंजीर का वृक्ष

१२ दूसरे दिन जब वे और उनके शिष्य बैतनिय्याह से बाहर आए तो
यीशु को भूख लगी। १३ वह दूर से एक पल्लवित अंजीर के वृक्ष को देख

afar off having leaves, he came, if haply he might find
any thing thereon : and when he came to it, he found
nothing but leaves ; for the time of figs was not yet.
14 And Jesus answered and said unto it, No man eat
fruit of thee hereafter for ever. And his disciples
heard it.

JESUS CLEANSES THE TEMPLE

15 And they come to Jerusalem ; and Jesus went
into the temple, and began to cast out them that sold
and bought in the temple, and overthrew the tables
of the moneychangers, and the seats of them that sold
doves ; 16 and would not suffer that any man should
carry any vessel through the temple. 17 And he taught,
saying unto them, Is it not written, My house shall
be called of all nations the house of prayer ? but ye
have made it a den of thieves. 18 And the scribes and
chief priests heard it, and sought how they might destroy
him : for they feared him, because all the people was
astonished at his doctrine.

19 And when even was come, he went out of
the city.

THE POWER OF FAITH

20 And in the morning, as they passed by, they saw
the fig tree dried up from the roots. 21 And Peter
calling to remembrance saith unto him, Master, behold,
the fig tree which thou cursedst is withered away.
22 And Jesus answering saith unto them, Have faith in
God. 23 For verily I say unto you, That whosoever
shall say unto this mountain, Be thou removed, and be
thou cast into the sea ; and shall not doubt in his heart,
but shall believe that those things which he saith shall
come to pass ; he shall have whatsoever he saith.
24 Therefore I say unto you, What things soever ye
desire, when ye pray, believe that ye receive them, and
ye shall have them. 25 And when ye stand praying,
forgive, if ye have ought against any : that your Father
also which is in heaven may forgive you your trespasses.

कर उसके पास गए कि कदाचित् उस पर कुछ मिल जाए, परंतु वहां पहुंचने
पर पत्तों के अतिरिक्त कुछ न पाया क्योंकि यह अंजीर फलने की ऋतु न थी।
१४ वह उससे बोले 'युगांत तक कोई तेरे फल न खाए।' शिष्य यह सुन
रहे थे।

मंदिर का परिष्करण

१५ वे यरूशलेम आए। यीशु ने मंदिर में प्रवेश किया और मंदिर में
क्रय-विक्रय करने वालों को वहां से निकालने लगे। उन्होंने सर्राफों की मेजें
और कपोत बेचने वालों की गद्दियां उलट दीं, १६ और किसी को भी मंदिर
में से पात्र आदि ले जाने की आज्ञा नहीं दी। १७ उन्होंने लोगों को उपदेश
भी दिया, 'क्या शास्त्र का लेख नहीं है,

"मेरा घर सब जातियों के लिए
प्रार्थना का घर कहलाएगा।"

किन्तु तुमने उसे "डाकुओं का अड्डा" बना लिया है।' १८ जब महा-
पुरोहितों और शास्त्रियों ने यह सुना तो उनको विनाश करने के उपाय ढूंढ़ने
लगे; पर वे डरते थे क्योंकि समस्त जनसमूह उनकी शिक्षाओं पर चकित था।
१९ सायंकाल होने पर वे नगर के बाहर चले गए।

श्रद्धा की सामर्थ्य

२० प्रातःकाल उधर से जाते हुए उन्होंने देखा कि अंजीर का वृक्ष जड़
से सूख गया है। २१ पतरस ने स्मरण कर कहा, 'गुरुजी, देखिए, आपके
द्वारा शापित अंजीर-वृक्ष सूख गया है' २२ यीशु ने उत्तर दिया, 'परमेश्वर पर
विश्वास करो। २३ मैं तुमसे सच कहता हूं, यदि कोई इस पर्वत से कहे, "यहाँ
से हट और सागर में जा गिर," और अपने मन में संशय न करे, पर विश्वास
करे कि "जो कुछ मैं कह रहा हूं वह हो रहा है" तो उसके लिए वह हो
जाएगा। २४ इसलिए मेरा कथन है कि जो कुछ भी तुम प्रार्थना में मांगो,
विश्वास करो कि वह तुम्हें मिल गया, और वह तुम्हें मिल जाएगा। २५ जब
तुम प्रार्थना के लिए खड़े हो उस समय यदि तुम्हारे हृदय में किसी के प्रति
बैर हो तो उसे क्षमा कर दो जिससे कि तुम्हारे स्वर्गिक पिता भी तुम्हारे

26 But if ye do not forgive, neither will your Father which is in heaven forgive your trespasses.

JESUS' AUTHORITY QUESTIONED

27 And they come again to Jerusalem : and as he
was walking in the temple, there come to him the chief
priests, and the scribes, and the elders, 28 and say unto
him, By what authority doest thou these things ? and
who gave thee this authority to do these things ?
29 And Jesus answered and said unto them, I will also
ask of you one question, and answer me, and I will tell
you by what authority I do these things. 30 The
baptism of John, was it from heaven, or of men ? answer
me. 31 And they reasoned with themselves, saying, If
we shall say, From heaven ; he will say, Why then did
ye not believe him ? 32 But if we shall say, Of men ;
they feared the people : for all men counted John, that
he was a prophet indeed. 33 And they answered and
said unto Jesus, We cannot tell. And Jesus answering
saith unto them, Neither do I tell you by what authority
I do these things.

PARABLE OF THE VINEYARD

12 And he began to speak unto them by parables.
A certain man planted a vineyard, and set an
hedge about it, and digged a place for the winefat, and
built a tower, and let it out to husbandmen, and went
into a far country. 2 And at the season he sent to the
husbandmen a servant, that he might receive from the
husbandmen of the fruit of the vineyard. 3 And they
caught him, and beat him, and sent him away empty.
4 And again he sent unto them another servant ; and at
him they cast stones, and wounded him in the head, and
sent him away shamefully handled. 5 And again he
sent another ; and him they killed, and many others ;
beating some, and killing some. 6 Having yet therefore
one son, his wellbeloved, he sent him also last unto
them, saying, They will reverence my son. 7 But those

अपराध क्षमा करें, । २६ पर यदि तुम क्षमा नहीं करोगे तो तुम्हारे स्वर्गिक
पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा नहीं करेंगे ।'

यीशु के अधिकार पर शंका

२७ वे पुनः यरूशलेम आए। जब वह मंदिर में टहल रहे थे तो
महापुरोहित, शास्त्री और धर्मवृद्ध उनके समीप आए २८ और प्रश्न किया,
'किस अधिकार से आप ये कार्य करते हैं, और किसने आपको अधिकार
दिया कि ये कार्य करें ?'
२९ यीशु ने उनसे कहा, 'मैं तुमसे एक प्रश्न करता हूं, उत्तर दो; फिर मैं
भी तुम्हें बताऊंगा कि मैं किस अधिकार से ये कार्य करता हूं। ३० यूहन्ना
का बपतिस्मा स्वग की ओर से था या मनुष्यों की ओर से ? उत्तर दो।'
३१ वे आपस में तर्क-वितर्क करने लगे, 'यदि हम कहें "स्वर्ग की ओर
से," तो यह कहेंगे "फिर क्यों तुमने उनका विश्वास नहीं किया ?" ३२ और
यदि कहें, "मनुष्यों की ओर से," वे जनता से डरते थे, क्योंकि सब
मानते थे कि यूहन्ना सचमुच नबी हैं।' ३३ इसलिए उन्होंने यीशु को उत्तर
दिया 'हम नहीं जानते।' इस पर यीशु ने कहा, 'मैं भी तुम्हें नहीं बताता
कि मैं किस अधिकार से ये कार्य करता हूं।'

१२

दाख उद्यान का दृष्टांत

१ यीशु उनसे दृष्टांतों में कहने लगे। 'एक मनुष्य ने दाख का
उद्यान लगाया: उसके चारों ओर बाड़ा बांधा, रस का कुंड खोदा और
मचान बनाई, और फिर उसे कृषकों को पट्टे पर देकर विदेश चला गया।
२ समय पर उसने एक दास कृषकों के पास भेजा कि दाखउद्यान
के फल से अपना भाग प्राप्त करे ; ३ पर कृषकों ने उसे पकड़कर पीटा और
खाली हाथ लौटा दिया। ४ उसने फिर अपने दूसरे दास को उनके पास
भेजा ; उन्होंने उसका सिर फोड़ दिया और उसे अपमानित किया। ५ उसने
एक और भेजा ; उन्होंने उसे मार डाला। इसी प्रकार अन्य अनेकों को
उन्होंने पीटा अथवा मार डाला। ६ उसके पास अब केवल एक था—अपना
प्रिय पुत्र।* उसने यह सोचकर कि "वे मेरे पुत्र का आदर करेंगे" अंत में उसे
उनके पास भेजा। ७ पर उन कृषकों ने आपस में कहा, "यह उत्तराधिकारी

* अथवा 'एकमात्र पुत्र'।

husbandmen said among themselves, This is the heir;
come, let us kill him, and the inheritance shall be our's.
8 And they took him, and killed him, and cast him out
of the vineyard. 9 What shall therefore the lord of
the vineyard do? he will come and destroy the husband-
men, and will give the vineyard unto others. 10 And
have ye not read this scripture:

The stone which the builders rejected
Is become the head of the corner:
11 This was the Lord's doing,
And it is marvellous in our eyes?

12 And they sought to lay hold on him, but feared the
people: for they knew that he had spoken the parable
against them: and they left him, and went their way.

A QUESTION ABOUT TRIBUTE TO CÆSAR

13 And they send unto him certain of the Pharisees
and of the Herodians, to catch him in his words.
14 And when they were come, they say unto him,
Master, we know that thou art true, and carest for no
man: for thou regardest not the person of men, but
teachest the way of God in truth: It is lawful to give
tribute to Cæsar, or not? 15 Shall we give, or shall we
not give? But he, knowing their hypocrisy, said
unto them, Why tempt ye me? bring me a penny, that
I may see it. 16 And they brought it. And he saith
unto them, Whose is this image and superscription?
And they said unto him, Cæsar's. 17 And Jesus
answering said unto them, Render to Cæsar the things
that are Cæsar's, and to God the things that are God's.
And they marvelled at him.

A QUESTION ABOUT THE RESURRECTION

18 Then come unto him the Sadducees, which say
there is no resurrection; and they asked him, saying,
19 Master, Moses wrote unto us, If a man's brother die,
and leave his wife behind him, and leave no children,
that his brother should take his wife, and raise up seed
unto his brother. 20 Now there were seven brethren:

है। आओ इसे मार डालें, फिर इसकी पैतृक संपत्ति हमारी हो जाएगी।"
८ अतः उन्होंने उसको पकड़कर मार डाला और उद्यान के बाहर फेंक दिया।
६ दाख उद्यान का स्वामी क्या करेगा? वह आकर कृषकों का विनाश
करेगा और दाख उद्यान दूसरों को दे देगा। १० क्या तुमने शास्त्र का यह
लेख नहीं पढ़ा :

"जिस पत्थर को भवन निर्माताओं ने निकृष्ट समझा
वह मेहराब की केन्द्र-शिला बना है
११ यह कार्य प्रभु का है
और हमारी दृष्टि में अद्‌भुत है"।'

१२ अब वे उन्हें बन्दी बनाने के उपाय सोचने लगे क्योंकि उन्हें विदित
हो गया था कि यीशु ने यह दृष्टान्त उनके संबंध में कहा था। पर वे लोगों
से डरते थे, अतः उन्हें छोड़ कर चले गए।

कैसर को कर देना उचित है या नहीं

१३ उन्होंने फरीसी और हेरोदेस दल के कुछ लोग यीशु के पास भेजे
कि उन्हें शब्द जाल में फंसाऐं। १४ उन्होंने आकर कहा, 'गुरुजी, हम
जानते हैं कि आप सच्चे हैं और आपको किसी का भय नहीं है। आप मुंह
देखी नहीं कहते पर सचाई से परमेश्वर के मार्ग का उपदेश देते हैं। कैसर
को कर देना विहित है या नहीं? १५ हम दें अथवा न दें?' यीशु ने उनकी
धूर्तता जान कर उनसे कहा, 'तुम मुझे क्यों परख रहे हो? एक दीनार लाओ
कि मैं देखूं।' १६ वे ले आए। यीशु ने प्रश्न किया, 'यह किसकी आकृति और
किसका लेख है? उन्होंने उत्तर दिया 'कैसर का'। १७ यीशु ने कहा,
'कैसर का कैसर को दो, और परमेश्वर का परमेश्वर को।' इस पर वे
चकित रह गए।

पुनरुत्थान के संबंध में प्रश्न

१८ उनके पास सदूकी आए, जो कहते हैं कि पुनरुत्थान नहीं होता।
उन्होंने प्रश्न किया : १६ 'गुरुजी हमारे लिए मूसा का लेख है कि यदि
किसी का भाई निस्संतान मर जाए और उसकी पत्नी जीवित रहे तो उसे
चाहिए कि उस स्त्री से विवाह कर अपने भाई के लिए संतान उत्पन्न करे।
२० सात भाई थे। पहले ने विवाह किया और निस्संतान मर गया।

and the first took a wife, and dying left no seed. 21
And the second took her, and died, neither left he any
seed : and the third likewise. 22 And the seven had
her, and left no seed : last of all the woman died also.
23 In the resurrection therefore, when they shall rise,
whose wife shall she be of them ? for the seven had her
to wife. 24 And Jesus answering said unto them, Do
ye not therefore err, because ye know not the scriptures,
neither the power of God ? 25 For when they shall
rise from the dead, they neither marry, nor are given in
marriage ; but are as the angels which are in heaven. 26
And as touching the dead, that they rise : have ye not
read in the book of Moses, how in the bush God spake
unto him, saying, I am the God of Abraham, and the
God of Issac, and the God of Jacob ? 27 He is not the
God of the dead, but the God of the living : ye therefore
do greatly err.

A QUESTION ABOUT THE GREATEST COMMANDMENT

28 And one of the scribes came, and having heard
them reasoning together, and perceiving that he had
answered them well, asked him, Which is the first com-
mandment of all ? 29 And Jesus answered him, The
first of all the commandments is, Hear, O Israel ; The
Lord our God is one Lord : 30 and thou shalt love the
Lord thy God with all thy heart, and with all thy soul,
and with all thy mind, and with all thy strength : this
is the first commandment. 31 And the second is like,
namely this, Thou shalt love thy neighbour as thyself.
there is none other commandment greater than these.
32 And the scribe said unto him, Well, Master, thou
hast said the truth : for there is one God ; and there is
none other but he : 33 and to love him with all the
heart, and with all the understanding, and with all the
soul, and with all the strength, and to love his neighbour
as himself, is more than all whole burnt offerings and
sacrifices. 34 And when Jesus saw that he answered
discreetly, he said unto him, Thou art not far from the
kingdom of God. And no man after that durst ask him
any question.

२१ दूसरे ने उस स्त्री से विवाह किया, वह भी निस्संतान मर गया और यही
दशा तीसरे की भी हुई। २२ इस प्रकार सातों निस्संतान मरे। सब के
अन्त में उस स्त्री का भी देहांत हो गया। २३ पुनरुत्थान होने पर जब वे
जीवित होंगे तब वह किसकी पत्नी होगी क्योंकि वह सातों की पत्नी रही थी।'
२४ यीशु ने उनसे कहा, 'क्या तुम इस कारण भूल में नहीं पड़े हो कि तुम
न तो धर्मशास्त्र से परिचित हो और न परमेश्वर की सामर्थ्य से? २५ लोग
जब मृतकों में से जी उठते हैं तो न वे विवाह करते और न वे विवाह में दिए
जाते हैं, वरन् वे स्वर्गदूतों के सदृश होते हैं। २६ रहा मृतकों में से जी उठने
के संबंध में : तो क्या तुमने मूसा की पुस्तक में झाड़ी के प्रकरण में नहीं
पढ़ा कि परमेश्वर ने मूसा से कहा, "मैं अब्रहाम का परमेश्वर, इज़हाक का
परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर हूं।" २७ वह मृतकों का नहीं वरन् जीवितों
का परमेश्वर है। तुम भारी भूल में हो।'

प्रमुख आज्ञा

२८ एक शास्त्री यह शास्त्रार्थ सुन रहा था। यह देख कर कि उन्होंने
कैसे सुंदर उत्तर दिए हैं वह आगे बढ़ा और प्रश्न किया : सबसे पहली
आज्ञा कौनसी है?' २९ यीशु ने उत्तर दिया, 'पहली आज्ञा यह है "हे
इस्राएल सुन, प्रभु हमारे परमेश्वर ही एकमात्र प्रभु हैं, ३० तू प्रभु अपने
परमेश्वर को अपने संपूर्ण मन, संपूर्ण प्राण, संपूर्ण बुद्धि और संपूर्ण शक्ति से
प्रेम कर।" ३१ दूसरी यह है, "अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम कर" इनसे
बड़ी और कोई आज्ञा नहीं है।' ३२ शास्त्री ने कहा, 'गुरुजी, क्या ही सुंदर!
आपने सत्य कहा कि परमेश्वर एक हैं, उनके अतिरिक्त और कोई ईश्वर नहीं।
३३ उन्हें अपने संपूर्ण मन, संपूर्ण बुद्धि और संपूर्ण शक्ति से प्रेम करना
तथा अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम करना समस्त होमों और बलिदानों
से बढ़कर है।' ३४ यीशु ने देखा कि उसने बुद्धिमत्ता का उत्तर दिया है तो
उससे बोले, 'तुम परमेश्वर के राज्य से दूर नहीं हो।' इसके पश्चात् किसी
को उनसे और कोई प्रश्न पूछने का साहस नहीं हुआ।

CHRIST THE SON OF DAVID

35 And Jesus answered and said, while he taught in
the temple, How say the scribes that Christ is the son
of David ? 36 For David himself said by the Holy
Ghost,

The LORD said to my Lord,
Sit thou on my right hand,
Till I make thine enemies thy footstool.

37 David therefore himself calleth him Lord ; and
whence is he then his son ? And the common people
heard him gladly.

A WARNING AGAINST THE SCRIBES

38 And he said unto them in his doctrine, Beware
of the scribes, which love to go in long clothing, and
love salutations in the marketplaces, 39 and the chief
seats in the synagogues, and the uppermost rooms at
feasts : 40 which devour widows' houses, and for a
pretence make long prayers : these shall receive greater
damnation.

THE WIDOW'S OFFERING

41 And Jesus sat over against the treasury, and be-
held how the people cast money into the treasury : and
many that were rich cast in much. 42 And there came
a certain poor widow, and she threw in two mites, which
make a farthing. 43 And he called unto him his disci-
ples, and saith unto them, Verily I say unto you, That
this poor widow hath cast more in, than all they which
have cast into the treasury : 44 for all they did cast in
of their abundance ; but she of her want did cast in all
that she had, even all her living.

JESUS FORETELLS THE DESTRUCTION OF THE TEMPLE AND THE END OF THE AGE

13 And as he went out of the temple, one of his
disciples saith unto him, Master, see what manner
of stones and what buildings are here ! 2 And Jesus

दाऊद-पुत्र ख्रिस्त

३५ यीशु मंदिर में उपदेश दे रहे थे। उन्होंने कहा, 'शास्त्री कैसे
कहते हैं कि ख्रिस्त दाऊद का पुत्र है, ३६ जब स्वयं दाऊद ने पवित्रआत्मा की
प्रेरणा से कहा है :

"प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा
जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों के तले न लाऊं
तू मेरी दाहिने हाथ पर बैठ"

३७ दाऊद स्वयं उसे "प्रभु" कहते हैं तो वह दाऊद का पुत्र कैसे हुआ ?'
विशाल जनसमूह यीशु की बातें सुनने में रस ले रहा था।

शास्त्रियों के विरुद्ध चेतावनी

३८ अपने उपदेश में उन्होंने कहा, 'शास्त्रियों से सावधान रहो क्योंकि
लंबे लंबे चोगे पहिनकर घमना, बाजार में प्रणाम, ३९ सभागृहों में प्रमुख
आसन और भोजों में सन्मानित स्थान उन्हें प्रिय हैं, ४० परंतु वे विधवाओं
के घर निगल जाते हैं और दिखावे के लिए लंबी लंबी प्रार्थनाएं करते हैं।
वे कठोर दंड के भागी होंगे।'

दरिद्र विधवा की दमड़ी

४१ वह कोष के संमुख बैठे हुए देख रहे थे कि किस प्रकार लोग कोष
में पैसा डाल रहे हैं। अनेक धनवान बहुत कुछ डाल रहे थे; ४२ इतने में
एक दरिद्र विधवा आई और दो ताम्रमुद्राएं, जिनका मूल्य लगभग एक पैसा
होता है, अर्पण कीं। ४३ यीशु ने अपने शिष्यों को बुलाकर कहा, 'मैं तुम से
सच कहता हूं, इस दरिद्र विधवा ने अन्य दाताओं की अपेक्षा कोष में अधिक
दिया है। ४४ क्योंकि अन्य सब ने अपनी समृद्धि से डाला, परंतु इसने अपनी
दरिद्रता में से जो कुछ इसके पास था सब, अपनी सारी जीविका, अर्पण कर
दी।'

१३

मंदिर-विनाश और युगांत के संबंध में भविष्यवाणी

१ जब वह मंदिर से निकल रहे थे तो उनके शिष्यों में से एक ने उनसे
कहा, 'गुरुजी, देखिए, कैसे विशाल पाषाण और कैसे भव्य भवन !' २ यीशु

answering said unto him, Seest thou these great build-
ings ? there shall not be left one stone upon another,
that shall not be thrown down.

3 And as he sat upon the mount of Olives over
against the temple, Peter and James and John and
Andrew asked him privately, 4 Tell us, when shall these
things be ? and what shall be the sign when all these
things shall be fulfilled ?

5 And Jesus answering them began to say, Take
heed lest any man deceive you : 6 for many shall come
in my name, saying, I am Christ ; and shall deceive
many. 7 And when ye shall hear of wars and rumours
of wars, be ye not troubled : for such things must needs
be ; but the end shall not be yet. 8 For nation shall
rise against nation, and kingdom against kingdom : and
there shall be earthquakes in divers places, and there
shall be famines and troubles : these are the beginnings
of sorrows.

9 But take heed to yourselves : for they shall deliver
you up to councils ; and in the synagogues ye shall be
beaten : and ye shall be brought before rulers and kings
for my sake, for a testimony against them. 10 And
the gospel must first be published among all nations.
11 But when they shall lead you, and deliver you up,
take no thought beforehand what ye shall speak, neither
do ye premeditate : but whatsoever shall be given you
in that hour, that speak ye : for it is not ye that speak,
but the Holy Ghost. 12 Now the brother shall betray
the brother to death and the father the son ; and
children shall rise up against their parents, and shall
cause them to be put to death. 13 And ye shall be
hated of all men for my name's sake : but he that shall
endure unto the end, the same shall be saved.

14 But when ye shall see the abomination of desola-
tion, spoken of by Daniel the prophet, standing where it
ought not, (let him that readeth understand,) then
let them that be in Judæa flee to the mountains : 15 and
let him that is on the housetop not go down into the

ने कहा, 'तुम इन विशाल भवनों को देख रहे हो! यहां पत्थर पर पत्थर भी न बचेगा जो ध्वस्त न हो जाए!'

३ जब यीशु मंदिर के सामने जैतून पर्वत पर बैठे हुए थे तो पतरस,
याकूब यूहन्ना और अन्द्रियास ने एकांत में उनसे पूछा, ४ 'हमें बताइए कि ये
घटनाएं कब होंगी? ये सब बातें पूरी होने को हैं—इसका क्या चिह्न
होगा?'

५ यीशु ने कहा, 'सावधान! कोई तुम्हें पथ-भ्रष्ट न करे। ६ अनेक
मेरे नाम से आएंगे और यह कहकर कि "मैं वही हूं" बहुतों को पथ-भ्रष्ट कर
देंगे। ७ जब तुम युद्ध और युद्ध की चर्चा सुनो तो व्याकुल न होना; ये
घटनाएं होना अनिवार्य हैं, पर अंत अभी दूर है। ८ "जाति जाति के विरुद्ध
और राज्य राज्य के विरुद्ध उठ खड़े होंगे," अनेक स्थलों पर भूकम्प आएंगे
और अकाल पड़ेंगे। ये घटनाएं पीड़ाओं* का आरम्भ मात्र होंगी।

९ 'अपने विषय में सावधान रहो; लोग तुम्हें पंचायतों को सौंप
देंगे, सभागृहों में पीटेंगे और मेरे कारण शासकों और राजाओं के समक्ष
खड़ा करेंगे कि तुम उनके लिए साक्षी हो। १० परंतु पहले सब जातियों
में सुसमाचार का प्रचार होना अनिवार्य है। ११ जब वे तुम्हें सौंपने के लिए
ले जाए तो पहले से चिंता न करना, "हम क्या कहेंगे"; समय आने पर
जो कुछ तुम्हें दिया जाए वह कहना, क्योंकि वक्ता तुम नहीं होगे वरन्
पवित्रआत्मा होगा। १२ भाई भाई को और पिता पुत्र को मृत्यु के निमित्त सौंप
देगा, संतान अपने माता पिता के विरुद्ध उठ खड़ी होगी और उन्हें मरवा
डालेगी। १३ और मेरे नाम के कारण सब तुमसे द्वेष करेंगे; परंतु जो
अंत तक स्थिर रहेगा, वह त्राण पाएगा।

१४ 'जब तुम "विनाशकारी घृणित वस्तु" को वहां खड़ा देखो जहां
उसे नहीं होना चाहिये (पाठक इसे समझें) तो जो यहूदिया में हैं वे पर्वतों
पर भाग जाएं; १५ जो छत पर है वह नीचे न उतरे और न कोई वस्तु

---

* अक्षरसः "प्रसव पीड़ा"।

house, neither enter therein, to take any thing out
of his house : 16 and let him that is in the field not
turn back again for to take up his garment. 17 But
woe to them that are with child, and to them that
give suck in those days ! 18 And pray ye that your flight
be not in the winter. 19 For in those days shall be
affliction, such as was not from the beginning of the
creation which God created unto this time, neither
shall be. 20 And except that the Lord had shortened
those days, no flesh should be saved : but for the elect's
sake, whom he hath chosen, he hath shortened the days.

21 And then if any man shall say to you, Lo,
here is Christ ; or, lo, he is there ; believe him not :
22 for false Christs and false prophets shall rise, and
shall shew signs and wonders, to seduce, if it were
possible, even the elect. 23 But take ye heed : behold,
I have foretold you all things.

24 But in those days, after that tribulation,
The sun shall be darkened,
And the moon shall not give her light,
25 And the stars of heaven shall fall,
And the powers that are in heaven shall be shaken.

26 And then shall they see the Son of man coming
in the clouds with great power and glory. 27 And then
shall he send his angels, and shall gather together his
elect from the four winds, from the uttermost part
of the earth to the uttermost part of heaven.

PARABLE OF THE FIG TREE

28 Now learn a parable of the fig tree ; When her
branch is yet tender, and putteth forth leaves, ye know
that summer is near : 29 so ye in like manner, when
ye shall see these things come to pass, know that it
is nigh, even at the doors. 30 Verily I say unto you,
that this generation shall not pass, till all these things
be done. 31 Heaven and earth shall pass away : but
my words shall not pass away. 32 But of that day and
that hour knoweth no man, no, not the angels which
are in heaven, neither the Son, but the Father.

लेने के लिए अपने घर में प्रवेश करे, १६ और जो खेत में है वह अपना वस्त्र
लेने के लिए पीछे न लौटे। १७ शोक उनके लिए जो उन दिनों गर्भिणी
होंगी या दूध पिलाती होंगी! १८ प्रार्थना करो कि ये घटनाएं शीत ऋतु में
न हों १६ क्योंकि उन दिनों "ऐसी पीड़ा होगी जैसी परमेश्वर रचित सृष्टि
के आरंभ से अब तक न कभी हुई और न होगी।" २० यदि प्रभु ने इन
दिनों को घटाया न होता तो कोई प्राणी बचने न पाता, परंतु उसने अपने
मनोनीत लोगों के लिए—जिनको उसने चुन लिया है—इन दिनों की संख्या
घटा दी है।

२१ 'तब यदि कोई तुमसे कहे, "देखो, ख्रिस्त यहां हैं," अथवा "वहां
हैं" तो विश्वास न करना। २२ क्योंकि झूठे ख्रिस्त और झूठे नबी उठ खड़े
होंगे और चिह्न एवं चमत्कार दिखाएंगे कि यदि संभव हो तो मनोनीत लोगों
को पथ-भ्रष्ट करें। २३ किन्तु तुम सावधान रहना; मैंने पहले ही तुम्हें
सब कुछ बता दिया है।

२४ उन दिनों इस पीड़ा के पश्चात्
"सूर्य अंधकारमय हो जाएगा,
चन्द्रमा अपना प्रकाश नहीं देगा,
२५ आकाश से तारागण गिरने लगेंगे
एवं अंतरिक्ष की शक्तियां हिल जायेंगी"
२६ तब वे मानव-पुत्र को बड़े सामर्थ्य एवं तेज के साथ मेघों पर आता
हुआ देखेंगे। २७ वह स्वर्गदूतों को भेज कर, पृथ्वी के इस छोर से लेकर
आकाश के उस छोर तक, चारों दिशाओं से अपने मनोनीत लोगों को एकत्रित
करेगा।

२८ 'अंजीर के वृक्ष से यह दृष्टांत सीखो। ज्यों ही उसकी शाखाएं
कोमल हुईं और उनमें पल्लव निकले, तुम जान लेते हो कि ग्रीष्म ऋतु निकट
है। २९ इसी प्रकार जब तुम ये घटनाएं होते देखो तो जान लेना कि वह
निकट है वरन् द्वार पर है' ३० मैं तुमसे सच कहता हूं कि जब तक ये सब
बातें न हो जाएं, इस पीढ़ी का अंत न होगा ३१ आकाश और पृथ्वी टल
जाएंगे, पर मेरे बचन नहीं टलेंगे। ३२ परंतु उस दिन और घड़ी के विषय
में पिता के अतिरिक्त कोई नहीं जानता, न स्वर्गदूत और न पुत्र।

33 Take ye heed, watch and pray : for ye know not
when the time is. 34 For the Son of man is as a man
taking a far journey, who left his house, and gave
authority to his servants, and to every man his work,
and commanded the porter to watch. 35 Watch ye
therefore : for ye know not when the master of the
house cometh, at even, or at midnight, or at the cock-
crowing, or in the morning : 36 lest coming suddenly he
find you sleeping. 37 And what I say unto you I say
unto all, Watch.

THE PLOT TO KILL JESUS

14 After two days was the feast of the passover,
and of unleavened bread : and the chief priests
and the scribes sought how they might take him by
craft, and put him to death. 2 But they said, Not on
the feast day, lest there be an uproar of the people.

THE ANOINTING OF JESUS AT BETHANY

3 And being in Bethany in the house of Simon the
leper, as he sat at meat, there came a woman having an
alabaster box of ointment of spikenard very precious ;
and she brake the box, and poured it on his head.
4 And there were some that had indignation within
themselves, and said, Why was this waste of the oint-
ment made ? 5 For it might have been sold for more
than three hundred pence, and have been given to the
poor. And they murmured against her. 6 And Jesus
said, Let her alone ; why trouble ye her ? she hath
wrought a good work on me. 7 For ye have the poor
with you always, and whensoever ye will ye may do
them good : but me ye have not always. 8 She hath
done what she could : she is come aforehand to anoint
my body to the burying. 9 Verily I say unto you,
Wheresoever this gospel shall be preached throughout
the whole world, this also that she hath done shall be
spoken of for a memorial of her.

३३ 'सावधान, जागृत रहो;* क्योंकि तुम्हें पता नहीं वह समय
कब आएगा। ३४ मानो कोई मनुष्य विदेश जाते समय अपना घर अपने
दासों के हाथ में छोड़ जाए, प्रत्येक दास को उसका काम बता जाए और द्वार-
पालको आज्ञा दे जाए कि जागृत रहे। ३५ जागते रहो क्योंकि पता नहीं कि
गृह स्वामी कब आएगा—सायंकाल, मध्यरात्रि, मुर्ग के बांग देते समय अथवा
प्रातःकाल। ३६ ऐसा न हो कि वह अचानक आ जाए और तुम्हें निद्रित
पाए। ३७ जो मैं तुमसे कहता हूं वही सबसे कहता हूं : "जागृत रहो"।*

१४

यीशु की हत्या के लिए षड्यन्त्र

१ फसह और अखमीरी रोटी के पर्व को दो दिन शेष थे। महापुरोहित
और शास्त्री इस प्रयत्न में थे कि किस प्रकार छल से यीशु को पकड़े और
मार डालें। २ परंतु वे कहते थे 'पर्व के दिनों में नहीं, कहीं ऐसा न हो कि
जनता उपद्रव कर बैठे।"

बैतनिय्याह में सुगंधित द्रव्य द्वारा अभ्यंजन

३ यीशु बैतनिय्याह में शमौन कोढ़ी के निवास स्थान पर थे। वह
भोजन करने बैठे थे कि एक स्त्री संगमरमर के पात्र में जटामांसी का बहुमूल्य
और विशुद्ध गंधरस लिए हुए आई। उसने पात्र तोड़ा और गंधरस उनके
सिर पर उंडेल दिता। ४ इस पर कुछ लोग रुष्ट होकर आपस में कहने
लगे, 'यह गंधरस किस लिए नष्ट किया गया। ५ यह तीन सौ दीनार से
अधिक मूल्य में बेचा और प्राप्त-धन दरिद्रों को दिया जा सकता था;'
वे उसे बहुत झिड़कने लगे। ६ परंतु यीशु ने कहा, 'रहने दो, उसे क्यों सताते
हो? एक सुंदर कार्य उसने मेरे निमित्त किया है। ७ दरिद्र तो तुम्हारे
साथ सदा हैं और जब तुम चाहो उनकी सहायता कर सकते हो; पर मैं
तुम्हारे साथ सदा नहीं रहूंगा। ८ जितना वह कर सकती थी उसने किया।
मेरे गाड़े जाने के लिए उसने पहले से ही मेरे शरीर पर गंधरस का लेप किया
है। ९ मैं तुमसे सच कहता हूं कि समस्त संसार में जहां जहां सुसमाचार
का प्रचार होगा वहां इसकी स्मृति में इस कार्य की कथा कही जाएगी।'

* कुछ प्राचीन प्रेतियों में ये शब्द भी पाए जाते हैं 'और प्रार्थना करते रहो'

THE TREACHERY OF JUDAS

10 And Judas Iscariot, one of the twelve, went unto
the chief priests, to betray him unto them. 11 And
when they heard it, they were glad, and promised to
give him money. And he sought how he might con-
veniently betray him.

THE LAST SUPPER

12 And the first day of unleavened bread, when
they killed the passover, his disciples said unto him,
Where wilt thou that we go and prepare that thou
mayest eat the passover ? 13 And he sendeth forth two
of his disciples, and saith unto them, Go ye into the
city, and there shall meet you a man bearing a pitcher
of water : follow him. 14 And wheresoever he shall
go in, say ye to the goodman of the house, The Master
saith, Where is the guestchamber, where I shall eat the
passover with my disciples ? 15 And he will shew
you a large upper room furnished and prepared : there
make ready for us. 16 And his disciples went forth,
and came into the city, and found as he had said unto
them : and they made ready the passover.

17 And in the evening he cometh with the twelve.
18 And as they sat and did eat, Jesus said, Verily I say
unto you, One of you which eateth with me shall betray
me. 19 And they began to be sorrowful, and to say
unto him one by one, Is it I ? and another said, Is it I ?
20 And he answered and said unto them, It is one of
the twelve, that dippeth with me in the dish. 21 The
Son of man indeed goeth, as it is written of him : but
woe to that man by whom the Son of man is betrayed !
good were it for that man if he had never been born.

22 And as they did eat, Jesus took bread, and blessed,
and brake it, and gave to them, and said, Take, eat :
this is my body. 23 And he took the cup, and when
he had given thanks, he gave it to them : and they all
drank of it. 24 And he said unto them, This is my
blood of the new testament, which is shed for many.
25 Verily I say unto you, I will drink no more of the

यहूदा का विश्वासघात

१० तब "बारह" में से एक, यहूदा इस्करियोती, महापुरोहितों के
पास गया कि यीशु को उनके हाथ पकड़वाए। ११ जब उन्होंने सुना कि वह
क्यों आया है तो बहुत प्रसन्न हुए और उसे धन देने का वचन दिया। वह
यीशु को पकड़वाने का अवसर ढूंढ़ने लगा।

अंतिम भोज

१२ अखमीरी रोटी के पर्व के प्रथम दिन, जब फ़सह का बलिदान हुआ
करता था, शिष्यों ने उनसे पूछा, 'आप कहाँ चाहते हैं कि जाकर आपके लिए
फ़सह का भोजन तैयार करें ?' १३ उन्होंने दो शिष्यों को यह कह कर भेजा,
'नगर में जाओ, वहां तुम्हें एक मनुष्य मिलेगा जो जल भरा घड़ा लिए जा
रहा होगा। उसके पीछे पीछे जाना १४ और जहां वह प्रवेश करे, वहां
के गृह स्वामी से कहना कि गुरुका कथन है, "वह अतिथिशाला कहां है जहां
मैं अपने शिष्यों के साथ फ़सह खाऊं ?" १५ वह तुम्हें एक बड़ा सुसज्जित
ऊपरी कक्ष दिखाएगा। वहीं तुम हमारे लिए तैयारी करना।' १६ शिष्य
गए, नगर में आकर जैसा उन्होंने कहा था वैसा ही पाया और फ़सह तैयार
किया।

१७ सायंकाल के समय वह "बारह" के साथ आए। १८ जब वे
भोजन कर रहे थे तो यीशु ने कहा, 'मैं तुम से सच कहता हूं कि तुममें से
एक, जो मेरे साथ भोजन कर रहा है, मुझे पकड़वाएगा।' १९ वे इस पर
व्यथित हुए और एक एक करके उनसे पूछने लगे, 'क्या मैं तो नहीं हूं ?'
२० उन्होंने कहा, 'वह बारह में से एक है और मेरे साथ एक ही थाली में
हाथ डाल रहा है। २१ मानव-पुत्र तो जैसा शास्त्र का उसके विषय
में लेख है जा रहा है, पर शोक उस मनुष्यपर जिसके द्वारा मानव-पुत्र पकड़वाया
जा रहा है। उस मनुष्य के लिए अच्छा होता कि वह उत्पन्न ही न हुआ
होता।'

२२ भोजन करते समय यीशु ने रोटी ली, आशिष मांग कर तोड़ी और
उनको दी; और कहा, 'लो, यह मेरी देह है।' २३ फिर उन्होंने कटोरा
लिया और धन्यवाद देकर उनको दिया और सब ने उसमें से पिया।
२४ तब उन्होंने कहा, 'यह व्यवस्थान का मेरा रक्त है जो बहुतों के लिये बहाया
जा रहा है। २५ मैं तुमसे सच सकता हूं मैं दाख का रस उस दिन तक

fruit of the vine, until that day that I drink it new in
the kingdom of God. 26 And when they had sung an
hymn, they went out into the mount of Olives.

JESUS FORETELLS THE DISCIPLES' DESERTION

27 And Jesus saith unto them, All ye shall be
offended because of me this night : for it is written,

I will smite the shepherd,
And the sheep shall be scattered.

28 But after that I am risen, I will go before you into
Galilee. 29 But Peter said unto him, Although all
shall be offended, yet will not I. 30 And Jesus saith
unto him, Verily I say unto thee, That this day, even
in this night, before the cock crow twice, thou shalt
deny me thrice. 31 But he spake the more vehemently,
If I should die with thee, I will not deny thee in any
wise. Likewise also said they all.

JESUS IN GETHSEMANE

32 And they came to a place which was named
Gethsemane : and he saith to his disciples, Sit ye here,
while I shall pray. 33 And he taketh with him Peter
and James and John, and began to be sore amazed, and
to be very heavy ; 34 and saith unto them, My soul is
exceeding sorrowful unto death : tarry ye here, and
watch. 35 And he went forward a little, and fell on
the ground, and prayed that, if it were possible, the
hour might pass from him. 36 And he said, Abba,
Father, all things are possible unto thee ; take away
this cup from me : nevertheless not what I will, but
what thou wilt. 37 And he cometh, and findeth them
sleeping, and saith unto Peter, Simon, sleepest thou ?
couldest not thou watch one hour ? 38 Watch ye and
pray, lest ye enter into temptation. The spirit truly
is ready, but the flesh is weak. 39 And again he went
away, and prayed, and spake the same words. 40 And
when he returned, he found them asleep again, (for
their eyes were heavy,) neither wist they what to

नहीं पीऊंगा जबतक कि परमेश्वर के राज्य में नया न पीऊं ।'
२६ स्तोत्र गाने के पश्चात् वे जैतून पर्वत को चले गए ।

शिष्यों के संबंध में भविष्यवाणी

२७ तब यीशु ने उससे कहा, 'तुम सब का पतन होगा, क्योंकि शास्त्र का लेख है—

"मैं मेषपाल पर आघात करूंगा,
और भेड़ें बिखर जाएंगी"

२८ तो भी मैं जी उठने के पश्चात् तुम्हारे आगे गलील को जाऊंगा ।'
२९ पतरस ने कहा, 'चाहे सब का पतन हो जाए, पर मेरा पतन नहीं हो
सकता ।' ३० यीशु ने उत्तर दिया, 'मैं तुमसे सच कहता हूं आज, इसी रात
को, मुर्ग के बांग देने से पहले, तुम तीन बार मुझे अस्वीकार करोगे ।'
३१ किंतु पतरस बार बार दृढ़ता से यही कहते रहे, 'चाहे मुझे आपके साथ
मरना पड़े तो भी मैं आपको कदापि अस्वीकार नहीं करूंगा ।' इसी प्रकार
और सबने भी कहा ।

गतसमनी में

३२ वे गतसमनी नामक स्थान पर आए तो यीशु ने अपने शिष्यों से
कहा, 'जब तक मैं प्रार्थना करता हूं, तुम यहां बैठो ।' ३३ उन्होंने पतरस,
याकूब और यूहन्ना को अपने साथ लिया । यीशु संत्रस्त और व्याकुल हो उठे
३४ और उनसे बोले, 'मेरा अंतर इतना व्यथित है मानों प्राण निकले जा
रहे हों ; यहीं ठहरो और जागते रहो ।' ३५ अब वह थोड़ा आगे बढ़े और भूमि
पर गिर कर प्रार्थना करने लगे, 'यदि संभव हो तो यह घड़ी मुझसे टल जाए',
३६ और कहा, 'अब्बा, पिता, तेरे लिए सब कुछ संभव है, यह कटोरा मुझसे
हटा ले, किंतु मेरी इच्छा नहीं, तेरी इच्छा पूर्ण हो ।' ३७ वह लौटे तो
उन को सोते पाया । वह पतरस से बोले 'शमौन, सो रहे हो ? क्या एक घड़ी
जागने की भी तुममें सामर्थ्य नहीं ! ३८ तुम सब जागते रहो और प्रार्थना
करो कि परीक्षा में न पड़ो । आत्मा तो तत्पर है, पर शरीर दुर्बल है ।'
३९ वह फिर चले गए और उन्हीं शब्दों में प्रार्थना की । ४० लौटने पर उन्हें
फिर सोते पाया क्योंकि उनकी आंखें नींद से भारी हो रहीं थीं और वे नहीं

answer him. 41 And he cometh the third time, and saith unto them, Sleep on now, and take your rest: it is enough, the hour is come; behold, the Son of man is betrayed into the hands of sinners. 42 Rise up, let us go; lo, he that betrayeth me is at hand.

THE ARREST OF JESUS

43 And immediately, while he yet spake, cometh Judas, one of the twelve, and with him a great multitude with swords and staves, from the chief priests and the scribes and the elders. 44 And he that betrayed him had given them a token, saying, Whomsoever I shall kiss, that same is he; take him, and lead him away safely. 45 And as soon as he was come, he goeth straightway to him, and saith, Master, master; and kissed him. 46 And they laid their hands on him, and took him. 47 And one of them that stood by drew a sword, and smote a servant of the high priest, and cut off his ear. 48 And Jesus answered and said unto them, Are ye come out, as against a thief, with swords and with staves to take me? 49 I was daily with you in the temple teaching, and ye took me not: but the scriptures must be fulfilled. 50 And they all forsook him, and fled.

51 And there followed him a certain young man, having a linen cloth cast about his naked body; and the young men laid hold on him: 52 and he left the linen cloth, and fled from them naked.

THE TRIAL OF JESUS BEFORE THE HIGH PRIEST

53 And they led Jesus away to the high priest: and with him were assembled all the chief priests and the elders and the scribes. 54 And Peter followed him afar off, even into the palace of the high priest: and he sat with the servants, and warmed himself at the fire. 55 And the chief priests and all the council sought for witness against Jesus to put him to death; and

जानते थे कि क्या उत्तर दें। ४१ उन्होंने तीसरी बार आकर कहा, 'अब भी सो रहे हो! विश्राम कर रहे हो! बहुत हुआ, समय आ पहुंचा है। देखो, मानव-पुत्र पापियों के हाथ पकड़वाया जा रहा है। ४२ उठो, चलें; देखो, मुझे पकड़वाने वाला निकट आ गया है।'

यीशु का बंदी होना

४३ वह बोल ही रहे थे कि बारह में एक, अर्थात्, यहूदा आ पहुंचा। उसके साथ तलवारें और लाठियां लिए एक जन समूह था जिसे महापुरोहितों, शास्त्रियों और धर्मवृद्धों ने भेजा था। ४४ पकड़ने वाले ने उन्हें यह चिह्न दिया था 'जिसका मैं चुंबन करूं, समझना कि वही है। उसे पकड़ लेना और सावधानी से ले जाना।' ४५ आते ही वह आगे बढ़ा और बोला, 'गुरुजी' और उनका चुंबन किया। ४६ लोगों ने हाथ बढ़ाकर उन्हें पकड़ लिया। ४७ इस पर पास खड़े लोगों में से एक ने तलवार खींची और महापुरोहित के दास पर चला कर, उसका कान उड़ा दिया। ४८ यीशु ने उनसे कहा, 'तुम तलवारें और लाठियां लेकर मुझे बंदी करने आए हो मानो मैं कोई डाकू हूं। ४९ मैं प्रति दिन मंदिर में उपदेश करते हुए तुम्हारे साथ रहा पर, तुमने मुझे नहीं पकड़ा; परंतु शास्त्र का लेख पूरा होना है।' ५० वे सब उन्हें छोड़ कर भाग गए।

५१ एक नवयुवक अपने नग्न शरीर पर मलमल की चादर लपेटे यीशु के साथ हो लिया था। लोग उसे पकड़ने लगे, ५२ पर वह चादर छोड़ कर नंगा ही निकल भागा।

महापुरोहित के संमुख यीशु का विचार

५३ वे यीशु को महापुरोहित के पास ले गए; वहां सब महापुरोहित, धर्मवृद्ध और शास्त्री एकत्रित हुए। ५४ पतरस दूर दूर यीशु के पीछे गए और महापुरोहित के आंगन तक पहुंच गए; वहां वे सेवकों के साथ बैठकर आग तापने लगे। ५५ महापुरोहित और समस्त परिषद् यीशु के विरुद्ध

found none. 56 For many bare false witness against
him, but their witness agreed not together. 57 And
there arose certain, and bare false witness against him,
saying, 58 We heard him say, I will destroy this temple
that is made with hands, and within three days I will
build another made without hands. 59 But neither so
did their witness agree together.

60 And the high priest stood up in the midst, and
asked Jesus, saying, Answerest thou nothing ? what is it
which these witness against thee ? 61 But he held his
peace, and answered nothing. Again the high priest
asked him, and said unto him, Art thou the Christ, the
Son of the Blessed ? 62 And Jesus said, I am : and ye
shall see the Son of man sitting on the right hand of
power, and coming in the clouds of heaven. 63 Then
the high priest rent his clothes, and saith, What need
we any further witnesses ? 64 Ye have heard the blas-
phemy : what think ye ? And they all condemned him
to be guilty of death. 65 And some began to spit on
him, and to cover his face, and to buffet him, and to say
unto him, Prophesy : and the servants did strike him
with the palms of their hands.

PETER DENIES JESUS

66 And as Peter was beneath in the palace, there
cometh one of the maids of the high priest : 67 and
when she saw Peter warming himself, she looked upon
him, and said, And thou also wast with Jesus of
Nazareth. 68 But he denied, saying, I know not, neither
understand I what thou sayest. And he went out into
the porch ; and the cock crew. 69 And a maid saw
him again, and began to say to them that stood by, This
is one of them. 70 And he denied it again. And a little
after, they that stood by said again to Peter, Surely thou
art one of them : for thou art a Galilæan, and thy
speech agreeth thereto. 71 But he began to curse and
to swear, saying, I know not this man of whom ye speak.
72 And the second time the cock crew. And Peter
called to mind the word that Jesus said unto him,

साक्षी ढूंढ़ रहे थे कि उन्हें मार डालें, किंतु न पा सके। ५६ अनेक लोगों ने उनके विरुद्ध झूठी साक्षी दी पर उनकी साक्षियों में संगति नहीं बैठती थी। ५७ कुछ लोगों ने खड़े होकर उनके विरुद्ध यह झूठी साक्षी दी, ५८ 'हमने स्वयं उसे यह कहते सुना है "मैं हाथ के बनाए मंदिर को ध्वंस कर दूंगा और तीन दिन में दूसरा खड़ा कर दूंगा जो हाथ का बना न होगा"।' ५९ पर इस संबंध में भी उनकी साक्षी में असंगति थी।

६० तब महापुरोहित ने बीच में खड़े होकर यीशु से पूछा, 'क्या तुझे कुछ उत्तर नहीं देना? ये लोग तेरे विरुद्ध क्या साक्षी दे रहे हैं?' ६१ पर वह मौन रहे और कुछ उत्तर न दिया। महापुरोहित ने फिर पूछा, 'क्या तू परम स्तुत्य का पुत्र ख्रिस्त है?' ६२ यीशु ने कहा, 'मैं हूं, और तुम मानव-पुत्र को सर्वशक्तिमान् के दाहिने ओर बैठा हुआ और स्वर्ग से मेघों के साथ आता हुआ देखोगे।'' ' ६३ इस पर महापुरोहित ने अपने वस्त्र फाड़ कर कहा, 'क्या हमें अब भी साक्षियों की आवश्यकता है? ६४ तुम परमेश्वर की निन्दा सुन चुके हो। तुम्हारा क्या विचार है?' उन सबने निर्णय दिया कि यीशु प्राण दण्ड के योग्य हैं। ६५ तब कई ने उन पर थूका और उनका मुंह ढांक कर उन्हें घूंसे लगाए और कहने लगे, 'नबूवत कर'। सेवकों ने भी लेकर उनको थप्पड़ मारे।

पतरस की अस्वीकृति

६६ इस समय पतरस नीचे आंगन में थे। महापुरोहित की एक दासी वहां आई। ६७ वह पतरस को आग तापते देख उन पर आंख गड़ा कर बोली, 'तू भी तो उस नासरत वाले यीशु के साथ था।' ६८ उन्होंने अस्वीकार करते हुए कहा, 'मैं नहीं जानता, मैं नहीं समझता कि तुम क्या कर रही हो।' वह बाहर ड्योढ़ी पर चले गए। ६९ वह दासी उन्हें देखकर पास खड़े हुए लोगों से फिर कहने लगी, 'यह भी उन्हीं में से है।' ७० उन्होंने पुनः अस्वीकार किया। कुछ समय पश्चात् समीप खड़े हुए लोग भी पतरस से बोले, 'तू निश्चय उन्हीं में से है, क्योंकि तू गलील निवासी है।' ७१ इस पर वह अपने को धिक्कारने और शपथ खाने लगे, 'जिस मनुष्य के विषय में तुम बातें कर रहे हो उसे मैं जानता तक नहीं।' तत्काल मुर्ग ने दूसरी बार बांग दी। ७२ अब पतरस को यीशु के शब्द स्मरण हुए, 'मुर्ग के

Before the cock crow twice, thou shalt deny me thrice.
And when he thought thereon, he wept.

JESUS BEFORE PILATE THE ROMAN GOVERNOR

15 And straightway in the morning the chief priests
held a consultation with the elders and scribes
and the whole council, and bound Jesus, and carried him
away, and delivered him to Pilate. 2 And Pilate asked
him, Art thou the King of the Jews ? And he answer-
ing said unto him, Thou sayest it. 3 And the chief
priests accused him of many things : but he answered
nothing. 4 And Pilate asked him again, saying, Answer-
est thou nothing ? behold how many things they witness
against thee. 5 But Jesus yet answered nothing ; so
that Pilate marvelled.

6 Now at that feast he released unto them one
prisoner, whomsoever they desired. 7 And there was
one named Barabbas, which lay bound with them that
had made insurrection with him, who had committed
murder in the insurrection. 8 And the multitude
crying aloud began to desire him to do as he had ever
done unto them. 9 But Pilate answered them, saying,
Will ye that I release unto you the King of the
Jews ? 10 For he knew that the chief priests had
delivered him for envy. 11 But the chief priests moved
the people, that he should rather release Barabbas unto
them. 12 And Pilate answered and said again unto
them, What will ye then that I shall do unto him whom
ye call the King of the Jews ? 13 And they cried
out again, Crucify him. 14 Then Pilate said unto them,
Why, what evil hath he done ? And they cried out
the more exceedingly, Crucify him. 15 And so Pilate,
willing to content the people, released Barabbas unto
them, and delivered Jesus, when he had scourged him
to be crucified.

THE SOLDIERS MOCK JESUS

16 And the soldiers led him away into the hall,

दो वार बांग देने से पहले तुम तीन बार मुझे अस्वीकार करोगे' और वह
फूट फूट कर रोने लगे।

१५

पिलातुस के संमुख यीशु

१ प्रातःकाल होते ही महापुरोहितों ने धर्मवृद्धों, शास्त्रियों और समस्त
परिषद् के साथ मंत्रणा की ; वे यीशु को बांध कर ले गए और उन्हें पिलातुस
को सौंप दिया। २ पिलातुस ने पूछा, 'क्या तुम यहूदियों के राजा हो?'
यीशु ने उत्तर दिया, ' आप स्वयं कह रहे है।' ३ महापुरोहित उन पर अनेक
अभियोग लगाने लगे ४ तो पिलातुस ने फिर पूछा, 'देखो ये तुम पर बहुत
से अभियोग लगा रहे हैं। क्या तुम कुछ उत्तर नहीं देते ?' ५ पर यीशु
ने आगे कुछ उत्तर न दिया, इससे पिलातुस को आश्चर्य हुआ।

६ वह पर्व के समय जनता की प्रार्थना के अनुसार एक बंदी को मुक्त
किया करता था। ७ संयोगवश विद्रोहियों के साथ, जिन्होंने विद्रोह
के समय हत्या की थी, बरअब्बा नामक मनुष्य बंदी था। ८ ऊपर जाकर
जन-समूह पिलातुस से प्रार्थना करने लगा कि वह उसके लिए अपनी प्रथा के
अनुसार करे। ९ पिलातुस ने पूछा, 'तुम क्या चाहते हो ; क्या मैं तुम्हारे
लिए यहूदियों के राजा को छोड़ दूं ?'—क्योंकि १० वह जानता था कि
महापुरोहितों ने उन्हें ईर्ष्यावश पकड़वाया है। ११ परंतु महापुरोहितों ने
जनता को उत्तेजित किया कि वह उनके लिए बरअब्बा ही को छोड़े। १२ तब
पिलातुस ने उनसे फिर पूछा, 'जिसे तुम "यहूदियों का राजा" कहते हो,
उसको मैं क्या करूं ?' १३ वे फिर चिल्लाए, 'उसे क्रूस पर चढ़ा दो।'
१४ 'क्यों उसने क्या अपराध किया है ?' पिलातुस ने उनसे पूछा। वे और
भी उच्च स्वर से चिल्लाने लगे, 'उसे क्रूस पर चढ़ाओ।' १५ तब पिलातुस
ने जन समूह को संतुष्ट करने की इच्छा से बरअब्बा को छोड़ दिया ; और
यीशु को कोड़े लगवाकर क्रूस पर चढ़ने के लिए सौंप दिया।

सैनिकों द्वारा उपहास

१६ सैनिक उनको 'प्रैतोरिउन' नामक आंगन में ले गए। वहां उन्होंने

called Prætorium ; and they call together the whole
band. 17 And they clothed him with purple, and platted
a crown of thorns, and put it about his head, 18 and
began to salute him, Hail, King of the Jews ! 19
And they smote him on the head with a reed, and did
spit upon him, and bowing their knees worshipped him.
20 And when they had mocked him, they took off the
purple from him, and put his own clothes on him, and
led him out to crucify him.

THE CRUCIFIXION OF JESUS

21 And they compel one Simon a Cyrenian, who
passed by, coming out of the country, the father of
Alexander and Rufus, to bear his cross. 22 And they
bring him unto the place Golgotha, which is, being
interpreted, The place of a skull. 23 And they gave
him to drink wine mingled with myrrh : but he received
it not. 24 And when they had crucified him, they
parted his garments, casting lots upon them, what every
man should take.

25 And it was the third hour, and they crucified
him. 26 And the superscription of his accusation was
written over, THE KING OF THE JEWS. 27 And
with him they crucify two thieves ; the one on his
right hand, and the other on his left. 28 And the
scripture was fulfilled, which saith, And he was number-
ed with the transgressors.

29 And they that passed by railed on him, wagging
their heads, and saying, Ah thou that destroyest the
temple, and buildest it in three days, 30 save thyself, and
come down from the cross. 31 Likewise also the chief
priests mocking said among themselves with the scribes,
He saved others ; himself he cannot save. 32 Let
Christ the King of Israel descend now from the cross,
that we may see and believe. And they that were
crucified with him reviled him.

THE DEATH OF JESUS

33 And when the sixth hour was come, there was

सब सैन्यदल एकत्रित किया। १७ उन्होंने यीशु को बैंजनी वस्त्र पहिनाया और कांटों का मुकुट गूंथकर उनके सिर पर रखा। १८ तब वे उनको प्रणाम करके कहने लगे कि 'यहूदियों के राजा आपकी जय हो।' १९ उन्होंने यीशु के सिर पर नरकुल मारे, उन पर थूका, और उनके संमुख घुटने टेक कर उनकी वंदना की। २० जब वे उनका उपहास कर चुके तो बैंजनी वस्त्र उतार लिया और उनके अपने कपड़े पहिना दिए। तब वे उन्हें क्रूस पर चढ़ाने के लिए बाहर ले गए।

क्रूस

२१ सिकंदर और रूफ़स का पिता, शमौन कुरैनी नामक मनुष्य, जो खेत से आ रहा था, उधर से निकला। उसे उन लोगों ने बेगार में पकड़ा कि यीशु का क्रूस उठा कर चले। २२ वे यीशु को गुलगुता नामक स्थान (जिसका अर्थ है 'कपाल का स्थान') पर लाए २३ और उनको गंधरस मिश्रित दाख का रस देने लगे परंतु उन्होंने न लिया। २४ तब उन्होंने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया और उनके वस्त्रों को, चिट्ठी डाल कर कि कौन क्या ले, बांट लिया।

२५ पहले प्रहर के समय उन्होंने उनको क्रूस पर चढ़ाया। २६ उनके अभियोग पत्र पर लिखा हुआ था 'यहूदियों का राजा।' २७ उनके साथ उन्होंने दो डाकुओं को भी क्रूस पर चढ़ाया, एक उनकी दाहिनी और दूसरा बाईं ओर। २८ इस प्रकार शास्त्र का यह बचन पूरा हुआ : 'वह अपराधियों के साथ गिने गए।'

२९ उधर से निकलने वाले उनकी निंदा कर रहे थे और सिर हिलाकर कहते थे, 'वाह मंदिर को गिराने वाले और तीन दिन में बनाने वाले! क्रूस से उतर ३० और अपने को बचा!' ३१ इसी प्रकार महापुरोहित भी आपस में और शास्त्रियों के साथ उनका उपहास करते हुए एक दूसरे से कह रहे थे, 'उसने दूसरों को बचाया, अपने को नहीं बचा सकता। ३२ इस्राएल का राजा, ख्रिस्त, अब क्रूस से उतरे कि हम भी देखें और विश्वास करें।' जो उनके साथ क्रूस पर चढ़ाए गए वे भी उन्हें बुरा भला कह रहे थे।

मृत्यु

३३ दोपहर होने पर समस्त देश में अंधकार छा गया, और तीसरे पहर

darkness over the whole land until the ninth hour.
34 And at the ninth hour Jesus cried with a loud voice,
saying, Eloi, Eloi, lama sabachthani? which is, being
interpreted, My God, my God, why hast thou forsaken
me? 35 And some of them that stood by, when they
heard it, said, Behold, he calleth Elias. 36 And one
ran and filled a spunge full of vinegar, and put it on
a reed, and gave him to drink, saying, Let alone; let us
see whether Elias will come to take him down. 37 And
Jesus cried with a loud voice, and gave up the ghost.
38 And the veil of the temple was rent in twain from
the top to the bottom. 39 And when the centurion,
which stood over against him, saw that he so cried out,
and gave up the ghost, he said, Truly this man was
the Son of God.

40 There were also women looking on afar off:
among whom was Mary Magdalene, and Mary the
mother of James the less and of Joses, and Salome;
41 (who also, when he was in Galilee, followed him,
and ministered unto him;) and many other women
which came up with him unto Jerusalem.

THE BURIAL OF JESUS

42 And now when the even was come, because it
was the preparation, that is, the day before the sabbath,
43 Joseph of Arimathæa, an honourable counsellor,
which also waited for the kingdom of God, came, and
went in boldly unto Pilate, and craved the body of
Jesus. 44 And Pilate marvelled if he were already
dead: and calling unto him the centurion, he asked
him whether he had been any while dead. 45 And
when he knew it of the centurion, he gave the body
to Joseph. 46 And he bought fine linen, and took him
down, and wrapped him in the linen, and laid him in
a sepulchre which was hewn out of a rock, and rolled
a stone unto the door of the sepulchre. 47 And Mary
Magdalene and Mary the mother of Joses beheld where
he was laid.

तक बना रहा। ३४ तीसरे पहर यीशु ने उच्च स्वर में कहा, 'इलोई इलोई
लामा सबक्तनी' जिसका अर्थ है 'हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे
क्यों छोड़ दिया।' ३५ यह सुन कर पास खड़े लोगों में से कुछ बोले,
'देखो, वह एलिय्याह को पुकार रहा है।' ३६ एक ने दौड़ कर अम्ल-रस
में स्पंज डुबाया, और नरकुल में लगाकर उन्हें पीने को दिया और कहा,
'ठहरो, देखें, एलिय्याह उसे उतारने आता है या नहीं।' ३७ तब यीशु ने
ऊंचे स्वर से चिल्लाकर प्राण त्याग दिए। ३८ और मंदिर का पट ऊपर से
नीचे तक फट कर दो टुकड़े हो गया। ३९ एक शतपति उनके संमुख खड़ा
था। वह इस प्रकार उनको प्राण त्याग करते देखकर बोला, 'निस्संदेह यह
मनुष्य परमेश्वर का पुत्र था।'
४० कई स्त्रियां भी दूर से देख रहीं थीं। इनमें मरियम मगदलीनी,
छोटे याकूब और योसेस की माता मरियम, और शलोमी थी—४१ जब वह
गलील में थे तो ये उनके पीछे हो ली थीं और उनकी सेवा किया करतीं थी—
और भी अनेक स्त्रियां उनके साथ यरूशलेम से आई थीं।

कबर में रखा जाना

४२ अब संध्या हो गई थी। यह 'परास्केव' अर्थात् सबत से पूर्व का
दिन था, ४३ इस कारण अरिमतिया निवासी यूसुफ़, जो परिषद् के प्रतिष्ठित
सदस्य थे और जो परमेश्वर के राज्य की प्रतीक्षा में थे, साहस करके भीतर
पिलातुस के पास गए और उससे यीशु का सब मांगा। ४४ पिलातुस को
आश्चर्य हुआ कि उन की मृत्यु इतनी शीघ्र हो गई। उसने शतपति को
बुलाकर पूछा कि क्या उनको मरे देर हो गई, ४५ और शतपति से वृत्तांत
जान कर यूसुफ़ को शव दिला दिया। ४६ अस्तु, यूसुफ ने मलमल की चादर
मोल ली और शव को उतार कर उसमें लपेटा तथा चट्टान में खुली हुई क़बर
में रख दिया। क़बर के द्वार पर उन्होंने एक भारी पत्थर लुढ़का कर लगा
दिया। ४७ मरियम मगदलीनी और योसेस की माता मरियम देख रही
थीं कि वह कहां रखा गया है।

THE RESURRECTION OF JESUS

16 And when the sabbath was past, Mary Magdalene, and Mary the mother of James, and Salome, had bought sweet spices, that they might come and anoint him.
2 And very early in the morning the first day of the week, they came unto the sepulchre at the rising of the sun.
3 And they said among themselves, Who shall roll us away the stone from the door of the sepulchre ?
4 And when they looked, they saw that the stone was rolled away : for it was very great.
5 And entering into the sepulchre, they saw a young man sitting on the right side, clothed in a long white garment ; and they were affrighted.
6 And he saith unto them, Be not affrighted : Ye seek Jesus of Nazareth, which was crucified : he is risen ; he is not here : behold the place where they laid him.
7 But go your way, tell his disciples and Peter that he goeth before you into Galilee : there shall ye see him, as he said unto you.
8 And they went out quickly, and fled from the sepulchre ; for they trembled and were amazed : neither said they any thing to any man ; for they were afraid.

9 Now when Jesus was risen early the first day of the week, he appeared first to Mary Magdalene, out of whom he had cast seven devils.
10 And she went and told them that had been with him, as they mourned and wept.
11 And they, when they had heard that he was alive, and had been seen of her, believed not.
12 After that he appeared in another form unto two of them, as they walked, and went into the country.
13 And they went and told it unto the residue : neither believed they them.
14 Afterward he appeared unto the eleven as they sat at meat, and upbraided them with their unbelief and hardness of heart, because they believed not them which had seen him after he was risen.
15 And he said unto them, Go ye into all the world, and preach the gospel to every creature.
16 He that believeth and is baptized shall be saved ; but he that believeth not shall be damned.
17 And these

१६

पुनरुत्थान

१ सबत समाप्त होने पर मरियम मगदलीनी, याक़ूब की माता मरियम,
और शलोमी ने सुगंधित द्रव्य मोल लिए कि जाकर उन पर लगाएं।
२ सप्ताह के पहिले दिन, जब कि सूर्य उदय ही हुआ था, वे क़बर पर आई।
३ वे आपस में कह रहीं थीं, 'हमारे लिए क़बर के द्वार से पत्थर कौन
लुढ़काएगा ?' ४ पर जब उन्होंने ऊपर दृष्टि की तो देखा कि पत्थर हटा
हुआ है। यह पत्थर बहुत विशाल था। ५ क़बर में प्रविष्ट होने पर उन्होंने
देखा कि एक श्वेत वस्त्रधारी नवयुवक दाहिनी ओर विराजमान है। वे
आश्चर्यचकित रह गइ। ६ पर उस नवयुवक ने उनसे कहा, 'आश्चर्यचकित
मत हो। तुम नासरत-निवासी क्रूसित यीशु को ढूंढ रही हो। वह जीवित
हो उठे हैं; वह यहां नहीं हैं; देखो यह स्थान जहां लोगों ने उनको रखा
था। ७ परंतु जाओ और उनके शिष्यों और पतरस से कहो, "वह
तुम से आगे गलील को जा रहे हैं। वहां उनके कथनानुसार तुम उनके
दर्शन करोगे"।' ८ वे क़बर से निकल कर भागीं क्योंकि वे भय-कंपित और
आश्चर्यचकित हो रही थीं। उन्होंने किसी से कुछ नहीं कहा क्योंकि वे
भयभीत थीं।

९ सप्ताह के पहले दिन, प्रातःकाल जी उठने पर उन्होंने प्रथम मरियम
मगदलीनी को दर्शन दिए जिसमें से उन्होंने सात भूत निकाले थे। १० उसने
जाकर यह समाचार रोते हुए और शोकमग्न साथियों को सुनाया। ११ जब
उन्होंने सुना कि वह जीवित हैं और उसे उनके दर्शन मिले हैं तो उन्होंने
विश्वास नहीं किया। १२ इसके पश्चात् उनमें से दो मनुष्य किसी गांव की
ओर चले जा रहे थे। यीशु ने उन्हें मार्ग में भिन्न रूप में दर्शन दिए।
१३ उन्होंने लौट कर शेष व्यक्तियों से कहा, परंतु फिर भी उन्हें विश्वास
नहीं हुआ। १४ इसके अनंतर "ग्यारह" को भोजन करते समय उन्होंने दर्शन
दिया और उनके अविश्वास और मन कि कठोरता पर उन्हें उलाहना दिया,
'जिन्होंने मुझे जीवित देखा उनका भी तुमने विश्वास नहीं किया।'
१५ फिर उनसे कहा, 'समस्त जगत में जाओ और सारी सृष्टि में सुसमाचार
का प्रचार करो। १६ जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसका उद्धार
होगा, परंतु जो विश्वास न करे वह दोषी ठहरेगा। १७ विश्वास करने वालों

signs shall follow them that believe ; In my name shall
they cast out devils ; they shall speak with new tongues ;
18 they shall take up serpents ; and if they drink any
deadly thing, it shall not hurt them ; they shall lay
hands on the sick, and they shall recover.

19 So then after the Lord had spoken unto them,
he was received up into heaven, and sat on the right
hand of God. 20 And they went forth, and preached
every where, the Lord working with them, and confirm-
ing the word with signs following. Amen.

के साथ ये चिह्न होंगे; वे मेरे नाम से भूतों को निकालेंगे, नवीन भाषाएं
बोलेंगे, १८ सर्पों को उठा लेंगे और यदि वे विष पान कर लें तो भी उनकी
कुछ हानि न होगी; वे रोगियों पर हाथ रखेंगे और वे स्वस्थ हो जाएंगे।'

१९ प्रभु यीशु; उनसे बातें करने के अनंतर, ऊपर स्वर्ग में ले लिए गए
और परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठे। २० तब शिष्यों ने बाहर जाकर
सर्वत्र प्रचार किया; प्रभु उनके सहकर्मी रहे और चिह्नों के द्वारा जो साथ
होते थे, वचन को प्रमाणित करते रहे।

THE GOSPEL
ACCORDING TO
ST. LUKE

PREFACE

FORASMUCH as many have taken in hand to set
forth in order a declaration of those things which are
most surely believed among us, 2 even as they delivered
them unto us, which from the beginning were eye-
witnesses, and ministers of the word ; 3 it seemed good
to me also, having had perfect understanding of all
things from the very first, to write unto thee in order,
most excellent Theophilus, 4 that thou mightest know
the certainty of those things, wherein thou hast been
instructed.

PREDICTION OF THE BIRTH OF JOHN THE BAPTIST

5 There was in the days of Herod, the king of
Judæa, a certain priest named Zacharias, of the course
of Abia : and his wife was of the daughters of Aaron,
and her name was Elisabeth. 6 And they were both
righteous before God, walking in all the commandments
and ordinances of the Lord blameless. 7 And they
had no child, because that Elisabeth was barren, and
they both were now well stricken in years.

8 And it came to pass, that while he executed
the priest's office before God in the order of his course,
9 according to the custom of the priest's office, his
lot was to burn incense when he went into the temple
of the Lord. 10 And the whole multitude of the
people were praying without at the time of incense.
11 And there appeared unto him an angel of the
Lord standing on the right side of the altar of incense.
12 And when Zacharias saw him, he was troubled,
and fear fell upon him.

13 But the angel said unto him, Fear not, Zacharias :

लूका रचित सुसमाचार

१

प्रस्तावना

१ अनेक लेखकों ने प्रयास किया है कि हमारे बीच में सम्पन्न हुई घटनाओं
का विवरण प्रस्तुत करें, २ जैसा कि हमें उनसे प्राप्त हुआ है जो आरंभ से ही
प्रत्यक्षदर्शी और वचन के सेवक थे; अतः ३ हे थियुफिलुस महोदय, सब बातों का
आरंभ से सावधानी पूर्वक अनुशीलन करने के पश्चात् मैंने भी उचित समझा
कि आपके लिए क्रमानुसार विवरण लिखूं ४ कि जिन बातों की शिक्षा आपको
मिली है, उनकी सत्यता के संबंध में आप जान सकें।

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के जन्म के संबंध में भविष्यवाणी

५ यहूदिया के राजा हेरोदेस के समय में अबिय्याह के दल में जकरयाह
नामक पुरोहित थे। उनकी पत्नी हारून-वंश की थीं और उनका नाम इलीशिबा
था। ६ वे दोनों परमेश्वर की दृष्टि में धर्मात्मा थे और उनका आचरण प्रभु
की समस्त आज्ञाओं और विधियों के अनुसार था। ७ पर उनके कोई संतान
नहीं थी क्योंकि इलीशिबा बांझ थीं और दोनों की आयु ढल चुकी थी।

८ जब जकरयाह अपने दल की पारी पर परमेश्वर के सामने पुरोहित का
कार्य कर रहे थे, ९ तो पुरोहितों की प्रथा के अनुसार उनके नाम पर चिट्ठी
निकली कि प्रभु के मंदिर में जाकर धूप-दान दें। १० धूप-दान के समय लोगों
का समस्त समुदाय बाहर प्रार्थना कर रहा था। ११ तब प्रभु का दूत धूप की
वेदी की दाहिनी ओर खड़ा हुआ उनको दिखाई दिया। १२ उसे देखकर
जकरयाह व्याकुल और भयभीत हो उठे।

१३ स्वर्गदूत ने उनसे कहा, 'जकरयाह, मत डरो, क्योंकि तुम्हारी प्रार्थना
स्वीकृत हुई है। तुम्हारी पत्नी इलीशिबा से एक पुत्र उत्पन्न होगा; तुम उसका.

for thy prayer is heard; and thy wife Elisabeth shall bear
thee a son, and thou shalt call his name John.

14 And thou shalt have joy and gladness;
And many shall rejoice at his birth.
15 For he shall be great in the sight of the Lord,
And shall drink neither wine nor strong drink;
And he shall be filled with the Holy Ghost,
Even from his mother's womb.
16 And many of the children of Israel shall he
Turn to the Lord their God.
17 And he shall go before him in the spirit and
Power of Elias,
To turn the hearts of the fathers to the children,
And the disobedient to the wisdom of the just;
To make ready a people prepared for the Lord.

18 And Zacharias said unto the angel, Whereby shall
I know this? for I am an old man, and my wife well
stricken in years. 19 And the angel answering said
unto him, I am Gabriel, that stand in the presence of
God; and am sent to speak unto thee, and to shew
thee these glad tidings. 20 And, behold, thou shalt be
dumb, and not able to speak, until the day that these
things shall be performed, because thou believest not
my words which shall be fulfilled in their season.

21 And the people waited for Zacharias, and marvel-
led that he tarried so long in the temple. 22 And when
he came out, he could not speak unto them: and they
perceived that he had seen a vision in the temple: for
he beckoned unto them, and remained speechless.
23 And it came to pass, that, as soon as the days of his
ministration were accomplished, he departed to his own
house.

24 And after those days his wife Elisabeth conceived,
and hid herself five months, saying, 25 Thus hath the
Lord dealt with me in the days wherein he looked
on me, to take away my reproach among men.

PREDICTION OF THE BIRTH OF JESUS

26 And in the sixth month the angel Gabriel was

नाम यूहन्ना रखना।

१४ तुमको हर्ष और उल्लास होगा,
उसके जन्म से बहुत से लोग आनन्द मनाएंगे,
१५ क्योंकि वह प्रभु की दृष्टि में महान् होगा।
वह दाख रस और मदिरा नहीं पिएगा,
वरन् माता के गर्भ से ही पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होगा।
१६ वह इस्राएल के अनेक वंशजों को अपने प्रभु परमेश्वर की ओर
फेरेगा।
१७ वह एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ्य में उनके आगे चलेगा
जिससे कि पितरों के मन संतान की ओर फेरे,
आज्ञा उल्लंघन करनेवालों को धार्मिकों की मनोवृत्ति दे,
और प्रभु के लिए सुयोग्य प्रजा तैयार करे।'

१८ जकरयाह ने स्वर्गदूत से कहा, 'मैं यह कैसे जानूं? मैं स्वयं वृद्ध हूं और
मेरी पत्नी की आयु भी ढल चुकी है।' १९ स्वर्गदूत ने उत्तर दिया, 'मैं
जिब्राएल हूं जो परमेश्वर के समक्ष उपस्थित रहता हूं। मैं तुमसे बातें करने
और तुमको यह शुभ समाचार सुनाने भेजा गया हूं। २० देखो, जिस दिन तक
ये बातें पूरी न हो जाए, तुम गूंगे रहोगे और बोल न सकोगे, क्योंकि तुमने
मेरे बचन पर, जो समय आने पर अवश्य पूरा होगा, विश्वास नहीं किया।'

२१ लोग जकरयाह की प्रतीक्षा कर रहे थे और चकित थे कि उन्हें मंदिर
में इतना विलम्ब क्यों हो रहा है। २२ जब वह बाहर निकले तो लोगों से बोल
न सके। वे समझ गये कि उन्हें मंदिर में दर्शन हुआ है। वह संकेत करते रहे
एवं मूक रह गए। २३ अपनी सेवा की अवधि समाप्त हो जाने पर वह
अपने घर चले आए।

२४ कुछ दिनों पश्चात् उनकी पत्नी इलीशिवा गर्भवती हुई और पांच
महीने तक अपने को यह कह कर छिपाए रहीं, २५ 'लोक में मेरा कलंक मिटाने
के लिए, अपनी कृपादृष्टि के दिनों में प्रभु ने मेरे निमित्त यह किया है।"

प्रभु यीशु खिस्त के जन्म के संबंध में भविष्यवाणी

२६ छठे महीने में परमेश्वर की ओर से स्वर्गदूत जिब्राएल गलील के

sent from God unto a city of Galilee, named Nazareth,
27 to a virgin espoused to a man whose name was
Joseph, of the house of David ; and the virgin's name
was Mary. 28 And the angel came in unto her, and
said, Hail, thou that art highly favoured, the Lord
is with thee : blessed art thou among women. 29 And
when she saw him, she was troubled at his saying,
and cast in her mind what manner of salutation this
should be. 30 And the angel said unto her, Fear not,
Mary : for thou hast found favour with God. 31 And,
behold, thou shalt conceive in thy womb, and bring
forth a son, and shalt call his name JESUS. 32 He shall
be great, and shall be called the Son of the Highest :
and the Lord God shall give unto him the throne
of his father David : 33 and he shall reign over the
house of Jacob for ever ; and of his kingdom there
shall be no end. 34 Then said Mary unto the angel,
How shall this be, seeing I know not a man ? 35 And
the angel answered and said unto her, The Holy Ghost
shall come upon thee, and the power of the Highest
shall overshadow thee : therefore also that holy thing
which shall be born of thee shall be called the Son
of God. 36 And, behold, thy cousin Elisabeth, she
hath also conceived a son in her old age : and this
is the sixth month with her, who was called barren.
37 For with God nothing shall be impossible. 38 And
Mary said, Behold the handmaid of the Lord ; be it
unto me according to thy word. And the angel departed
from her.

MARY VISITS ELIZABETH

39 And Mary arose in those days, and went into
the hill country with haste, into a city of Juda ; 40 and
entered into the house of Zacharias, and saluted
Elisabeth. 41 And it came to pass, that, when Elisabeth
heard the salutation of Mary, the babe leaped in her
womb ; and Elisabeth was filled with the Holy Ghost :
42 and she spake out with a loud voice, and said,
Blessed art thou among women, and blessed is the
fruit of thy womb. 43 And whence is this to me,

नासरत नगर में २७ एक कुंवारी के पास भेजे गए, जिनकी मंगनी दाऊद के
वंशज यूसुफ नामक पुरुष से हुई थी। उस कुंवारी का नाम मरियम था।
२८ स्वर्गदूत ने उनके पास जाकर कहा, 'अनुग्रह की पात्र, आनंदित हो! प्रभु
तुम्हारे साथ हैं।' २९ वह इस कथन से वहुत घवरा गई और सोचने लगीं
कि यह कैसा अभिवादन है। ३० तव स्वर्गदूत ने उनसे कहा, 'मरियम,
भयभीत न हो, क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुम पर हुआं है। ३१ देखो, तुम
गर्भवती होगी और पुत्र को जन्म दोगी, उनका नाम तुम यीशु रखना।
३२ वह महान् होंगे, और सर्वोच्च का पुत्र कहलाएंगे। प्रभु परमेश्वर उनके
पूर्वज दाऊद का सिंहासन उन्हें प्रदान करेंगे। ३३ वह याकूव के सिंहासन
पर सर्वदा शासन करेंगे तथा उनके राज्य का अन्त नहीं होगा।' ३४ तव
मरियम ने स्वर्गदूत से पूछा, 'यह कैसे संभव होगा, क्योंकि मैं पुरुष को नहीं
जानती ?' ३५ स्वर्गदूत ने उत्तर दिया, 'पवित्र आत्मा तुम पर उतरेगा, और
सर्वोच्च की सामर्थ्य तुम पर छाया करेगी। इस कारण जो जन्म लेंगे* वह
पवित्र और परमेश्वर-पुत्र कहलाएंगे। ३६ देखो, वृद्धावस्था में तुम्हारी
कुटुम्बिनी इलीशिया के भी गर्भ में पुत्र है। यह उनका जो बांझ कहलाती
थीं छठा महीना है, ३७ परमेश्वर के लिए कुछ भी असंभव नहीं।
३८ तव मरियम ने कहा, 'देखिए, मैं प्रभु की दासी हूं। आपके वचन के
अनुसार मेरे लिए हो।' इसके पश्चात् स्वर्गदूत उनसे विदा हो गए।

मरियम इलीशिवा मिलन

३९ उन दिनों मरियम उठीं और पहाड़ी प्रदेश में यहूदा के एक नगर
को शीघ्रता से गईं। ४० उन्होंने जकरयाह के घर में प्रवेश कर इलीशिवा को
नमस्कार किया ४१ जव इलीशिवा ने मरियम का नमस्कार सुना तो उनकी
कोख में वालक उछल पड़ा और इलीशिवा पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गई,
४२ और ऊंचे स्वर में बोल उठीं, 'नारियों में आप कीर्तनीय हैं, और कीतनीय
है आपकी कोख का फल। ४३ मुझ पर यह अनुग्रह कैसे हुआ कि मेरे प्रभु

* पाठांतर 'जो तुमसे जन्म लेंगे'।

that the mother of my Lord should come to me?
44 For, lo, as soon as the voice of thy salutation sounded
in mine ears, the babe leaped in my womb for joy.
45 And blessed is she that believed: for there shall
be a performance of those things which were told her
from the Lord.

'THE MAGNIFICAT'

46 And Mary said,
My soul doth magnify the Lord,
47 And my spirit hath rejoiced in God my Saviour.
48 For he hath regarded the low estate of his
handmaiden:
For, behold, from henceforth all generations shall
call me blessed.
49 For he that is mighty hath done to me great
things;
And holy is his name.
50 And his mercy is on them that fear him
From generation to generation.
51 He hath shewed strength with his arm;
He hath scattered the proud in the imagination
of their hearts.
52 He hath put down the mighty from their seats,
And exalted them of low degree.
53 He hath filled the hungry with good things;
And the rich he hath sent empty away.
54 He hath holpen his servant Israel,
In remembrance of his mercy;
55 As he spake to our fathers,
To Abraham, and to his seed for ever.
56 And Mary abode with her about three months, and
returned to her own house.

THE BIRTH OF JOHN THE BAPTIST: THE 'BENEDICTUS'

57 Now Elisabeth's full time came that she should
be delivered; and she brought forth a son. 58 And
her neighbours and her cousins heard how the Lord
had shewed great mercy upon her; and they rejoiced

की माता यहां पधारीं। ४४ देखिए, आपके अभिवादन की वाणी ज्योंही मेरे
कानों में आई, बालक मेरी कोख में उल्लास के कारण उछल पड़ा। ४५ धन्य
है वह नारी जिसने विश्वास किया कि जो कुछ प्रभु ने उससे कहा है वह
पूर्ण होगा।'

मरियम का स्तोत्र

४६ इस पर मरियम ने कहा,
'मेरे प्राण प्रभु का गुणगान करते हैं,
४७ मेरी आत्मा अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर में उल्लसित है,
४८ क्योंकि उन्होंने अपनी दासी की दीनता पर दया-दृष्टि की है।
देखिए, अब से सब पीढ़ियां मुझे धन्य कहेंगी,
४९ क्योंकि शक्तिमान् ने मेरे लिये महान् कार्य किए हैं।
'पवित्र' है उनका नाम,
५० और उनकी दया, उन पर जो उनसे डरते हैं,
पीढ़ी से पीढ़ी तक रहती है।
५१ उन्होंने अपना बाहुबल प्रदर्शित किया है,
और उन अहंकारियों को जो मन में अपने को कुछ समझते थे
उन्होंने तितर-बितर कर डाला है।
५२ उन्होंने शक्तिशालियों को सिंहासनों से उतारा है,
और दीनों को महान् बनाया है
५३ उन्होंने भूखों को अच्छी वस्तुओं से तृप्त किया है,
और धनवानों को रिक्तहस्त लौटा दिया है।
५४ उन्होंने अपनी दया का स्मरण कर
अपने दास इस्राएल को संभाला है,
५५ जैसा उन्होंने हमारे पूर्वज,
अब्रहाम तथा उनकी संतान से सदा कहा था।'

५६ मरियम प्रायः तीन महीने इलीशिबा के साथ रह कर अपने घर लौट
गईं।

यूहन्ना का जन्म, जकरयाह का गान

५७ प्रसवकाल आने पर इलीशिबा के एक पुत्र उत्पन्न हुआ। ५८ जब
उनके पड़ोसियों और संबंधियों ने सुना कि उन पर प्रभु की बड़ी दया हुई है तो

with her. 59 And it came to pass, that on the eighth
day they came to circumcise the child ; and they called
him Zacharias, after the name of his father. 60 And his
mother answered and said, Not so ; but he shall be
called John. 61 And they said unto her, There is
none of thy kindred that is called by this name.
62 And they made signs to his father, how he would
have him called. 63 And he asked for a writing table,
and wrote, saying, His name is John. And they
marvelled all.

64 And his mouth was opened immediately, and his
tongue loosed, and he spake, and praised God. 65 And
fear came on all that dwelt round about them : and all
these sayings were noised abroad throughout all the hill
country of Judæa. 66 And all they that heard them laid
them up in their hearts, saying, What manner of child
shall this be ! And the hand of the Lord was with him.

67 And his father Zacharias was filled with the
Holy Ghost, and prophesied, saying,

68 Blessed be the Lord God of Israel ;
For he hath visited and redeemed his people,
69 And hath raised up an horn of salvation for us
In the house of his servant David ;
70 As he spake by the mouth of his holy prophets,
which have been since the world began :
71 That we should be saved from our enemies, and
from the hand of all that hate us ;
72 To perform the mercy promised to our fathers,
And to remember his holy covenant ;
73 The oath which he sware to our father Abraham,
74 That he would grant unto us, that we being
delivered out of the hand of our enemies
Might serve him without fear,
75 In holiness and righteousness before him, all the
days of our life.
76 And thou, child, shalt be called the prophet of
the Highest :
For thou shalt go before the face of the Lord to
prepare his ways ;

उनके साथ आनन्द मनाया। ५६ आठवें दिन वे बालक का खतना करने आए
और उसके पिता के नाम पर उसका नाम जकरयाह रखने लगे, ६० परंतु उसकी
माता ने कहा, 'नहीं, उसका नाम यूहन्ना रखा जाएगा।' ६१ लोगों ने कहा,
'यह नाम आपके कुटुम्ब में किसी का नहीं है', ६२ और उसके पिता से संकेत
कर पूछा, 'आप इसका नाम क्या रखना चाहते हैं?' ६३ उन्होंने पट्टी मांग
कर लिखा, 'उसका नाम यूहन्ना है।' इस पर सब चकित हुए।

६४ उसी क्षण जकरयाह का मुख तथा वाणी खुल गई और वह परमेश्वर
की स्तुति करने लगे। ६५ इससे पड़ोसियों पर भय छा गया, और इन सब
बातों की चर्चा यहूदिया के समस्त पर्वत-प्रदेश में फैल गई। ६६ सब सुनने
वालों ने ये बातें मन में रखीं और कहा, 'कौन जाने यह बालक क्या बनेगा?'
क्योंकि सचमुच उस पर प्रभु का हाथ था।

६७ उसके पिता जकरयाह पवित्रआत्मा से परिपूर्ण होकर नबूवत करने लगे,

६८ 'इस्राएल के प्रभु परमेश्वर की स्तुति हो।
क्योंकि उन्होंने अपनी प्रजा की सुधि ली, और उसकी मुक्ति की।
६९ उन्होंने अपने सेवक दाऊद के वंश में
हमारे लिए शक्तिशाली उद्धारकर्ता* को उत्पन्न किया है।
७० जैसा-उन्होंने अपने पवित्र नबियों द्वारा;
प्राचीन काल से ही कहा था,
७१ कि वह हमारे शत्रुओं से
और सब द्वेषियों के हाथ से
हमारा उद्धार करेंगे।
७२ वह हमारे पूर्वजों के साथ दयापूर्ण व्यवहार करेंगे,
और अपने पवित्र व्यवस्थान को स्मरण करेंगे—
७३ उस शपथ को जो उन्होंने हमारे पूर्वज अब्रहाम से खाई थी
७४-७५ कि हम अपने शत्रुओं के हाथ से मुक्त होकर
निर्भयता, पवित्रता और धार्मिकता के साथ
जीवन भर उनकी सेवा करें।
७६ और हे बालक, तू सर्वोच्च का नबी कहलाएगा
क्योंकि तू प्रभु के आगे आगे चलेगा
कि उनके मार्ग तैयार करे,

* अक्षरशः 'उद्धार का सींग'

77 To give knowledge of salvation unto his people
By the remission of their sins,
78 Through the tender mercy of our God ;
Whereby the dayspring from on high hath
visited us,
79 To give light to them that sit in darkness and
in the shadow of death,
To guide our feet into the way of peace.
80 And the child grew, and waxed strong in spirit,
and was in the deserts till the day of his shewing
unto Israel.

THE BIRTH OF JESUS

2 And it came to pass in those days, that there went
out a decree from Cæsar Augustus, that all the
world should be taxed. 2 (And this taxing was first
made when Cyrenius was governor of Syria.) 3 And
all went to be taxed, every one into his own city.
4 And Joseph also went up from Galilee, out of the
city of Nazareth, into Judæa, unto the city of David,
which is called Bethlehem ; (because he was of the
house and lineage of David :) 5 to be taxed with Mary
his espoused wife, being great with child. 6 And
so it was, that, while they were there, the days were
accomplished that she should be delivered. 7 And she
brought forth her firstborn son, and wrapped him in
swaddling clothes, and laid him in a manger ; because
there was no room for them in the inn. 8 And there
were in the same country shepherds abiding in the
field, keeping watch over their flock by night. 9 And,
lo, the angel of the Lord came upon them, and the
glory of the Lord shone round about them : and they
were sore afraid. 10 And the angel said unto them,
Fear not : for, behold, I bring you good tidings of great
joy, which shall be to all people. 11 For unto you is
born this day in the city of David a Saviour, which is
Christ the Lord. 12 And this shall be a sign unto
you ; Ye shall find the babe wrapped in swaddling

७७ और उनकी प्रजा को पाप-क्षमा द्वारा
उद्धार का ज्ञान प्रदान करे।
७८ हमारे परमेश्वर के सदय हृदय होने के कारण
हम पर स्वर्ग से प्रातःकालीन प्रकाश का उदय होगा,
७९ कि वह अंधकार और मृत्यु की छाया में
बैठे हुओं पर प्रकाशित हो
और हमारे चरणों को शांति के पथ पर सीधे चलाए।
८० वह बालक बढ़ता गया और आत्मा में सबल होता गया। इस्राएल के
सामने प्रकट होने के दिन तक वह निर्जन प्रदेश में रहा।

(२)

यीशु का जन्म

१ उन दिनों ओगुस्तुस कैसर ने आदेश निकाला कि समस्त साम्राज्य की
जनगणना की जाए। २ यह पहिली जनगणना उस समय हुई जब करेनियुस
सूरिया का राज्यपाल था। ३ सब लोग नाम लिखवाने अपने-अपने नगर को
जाने लगे। ४ यूसुफ भी, क्योंकि वह दाऊद के कुटुंब और वंश के थे, गलील
के नासरत नगर से, यहूदिया में दाऊद के नगर बैतलहम को गए, ५ कि अपनी
मंगेतर मरियम के साथ जो गर्भवती थीं नाम लिखवाएं। ६ जब वे वहां थे तो
मरियम का प्रसवकाल आ गया, ७ और उन्होंने अपने पहिलौठे पुत्र को जन्म
दिया तथा उन्हें वस्त्र में लपेट कर चरनी में लिटाया, क्योंकि उनके लिए सराय
में स्थान नहीं था। ८ उस प्रदेश में चरवाहे थे जो रात को मैदान में
रह कर अपने झुंड की रखवाली कर रहे थे। ९ सहसा प्रभु का दूत उनके
समीप आ खड़ा हुआ और प्रभु का तेज उनके चारों ओर चमकने लगा। वे
अत्यंत भयभीत हो उठे। १० स्वर्गदूत ने उनसे कहा, 'डरो मत, देखो मैं तुम्हें
बड़े आनंद का सुसमाचार सुनाता हूं, जो सब लोगों के लिए होगा : ११ कि आज
दाऊद के नगर में तुम्हारे लिए एक उद्धारकर्ता ने जन्म लिया ; यही प्रभु
ख्रिस्त हैं। १२ तुम्हारे लिये चिह्न यह होगा कि तुम एक नवजात बालक को

clothes, lying in a manger. 13 And suddenly there
was with the angel a multitude of the heavenly host
praising God, and saying,

14 Glory to God in the highest,
And on earth peace, good will toward men,

15 And it came to pass, as the angels were gone away
from them into heaven, the shepherds said one to
another, Let us now go even unto Bethlehem, and see
this thing which is come to pass, which the Lord hath
made known unto us. 16 And they came with haste,
and found Mary, and Joseph, and the babe lying in
a manger. 17 And when they had seen it, they made
known abroad the saying which was told them con-
cerning this child. 18 And all they that heard it
wondered at those things which were told them by
the shepherds. 19 But Mary kept all these things,
and pondered them in her heart. 20 And the shep-
herds returned, glorifying and praising God for all the
things that they had heard and seen, as it was told
unto them.

21 And when eight days were accomplished for
the circumcising of the child, his name was called JESUS,
which was so named of the angel before he was con-
ceived in the womb.

THE PRESENTATION OF JESUS IN THE TEMPLE

22 And when the days of her purification according
to the law of Moses were accomplished, they brought
him to Jerusalem, to present him to the Lord ; 23 (as
it is written in the law of the Lord, Every male that
openeth the womb shall be called holy to the Lord ;)
24 and to offer a sacrifice according to that which is
said in the law of the Lord, A pair of turtledoves, or
two young pigeons.

SIMEON AND THE 'NUNC DIMITTIS'

25 And, behold, there was a man in Jerusalem,
whose name was Simeon ; and the same man was just
and devout, waiting for the consolation of Israel : and

वस्त्र में लिपटे और चरनी में लेटे पाओगे।' १३ तब एकाएक उस स्वर्गदूत
के साथ स्वर्गीय सेना का समूह दिखाई पड़ा जो परमेश्वर की स्तुति कर रहा था,

१४ 'आकाश में परमेश्वर की महिमा,
पृथ्वी पर उन मनुष्यों में जिनसे वह प्रसन्न है शांति*।'

१५ जब स्वर्गदूत उनसे विदा होकर स्वर्ग को चले गए तो, चरवाहे आपस में
कहने लगे, 'आओ, हम बैतलहम चलें और यह घटना देखें जो प्रभु ने हम पर
प्रकट की है।' १६ वे शीघ्रतापूर्वक गए और पता लगाने पर मरियम, यूसुफ
एवं चरनी में लेटे बालक को पाया। १७ यह देखकर उन्होंने बालक के संबंध
में कही गई बातें प्रकट कर दीं। १८ चरवाहों के कथन पर सब सुननेवालों
को आश्चर्य हुआ, १९ पर मरियम सब बातें मन में रखे रहीं और चिंतन
करती रहीं। २० चरवाहे, जैसा उनसे कहा था वैसा ही सब सुन कर और
देखकर, परमेश्वर की महिमा और स्तुति करते हुए लौट गए।

२१ आठ दिन की समाप्ति पर जब बालक का खतना हुआ तो उनका
नाम यीशु रखा गया। यही नाम उनके गर्भ में आने के पूर्व स्वर्गदूत ने उनको
दिया था।

यीशु का मंदिर में समर्पित किया जाना

२२ मूसा की व्यवस्था के अनुसार शुद्धीकरण के दिन पूरे हुए तो वे
बालक को यरूशलेम ले गए कि उन्हें प्रभु को अर्पित करें ; २३ (जैसा प्रभु की
व्यवस्था में लिखा है कि प्रत्येक पहिलौठा प्रभु के लिए पवित्र माना जाएगा)
२४ और प्रभु की व्यवस्था के अनुसार 'एक जोड़ा पंडुक या कबूतर के दो
बच्चों की बलि दें।'

शमौन का गीत

२५ यरूशलेम में शमौन नामक एक धर्मात्मा और श्रद्धालु मनुष्य थे, जो
इस्राएल के आश्वासन की प्रतीक्षा कर रहे थे। पवित्र आत्मा उन पर था।

* अथवा 'पृथ्वी पर उनके कृपापात्र जनों में शांति' ;
अथवा 'पृथ्वी पर शांति और मनुष्यों में सद्भावना'

the Holy Ghost was upon him. 26 And it was revealed
unto him by the Holy Ghost, that he should not see
death, before he had seen the Lord's Christ. 27 And
he came by the Spirit into the temple : and when the
parents brought in the child Jesus, to do for him after
the custom of the law, 28 then took he him up in his
arms, and bleseed God, and said,

29 Lord, now lettest thou thy servant depart in peace,
According to thy word :
30 For mine eyes have seen thy salvation,
31 Which thou hast prepared before the face
of all people ;
32 A light to lighten the Gentiles,
And the glory of thy people Israel.

33 And Joseph and his mother marvelled at those
things which were spoken of him. 34 And Simeon
blessed them, and said unto Mary his mother, Behold, this
child is set for the fall and rising again of many in Israel ;
and for a sign which shall be spoken against ; 35 (yea, a
sword shall pierce through thy own soul also,) that the
thoughts of many hearts may be revealed.

ANNA

36 And there was one Anna, a prophetess, the
daughter of Phanuel, of the tribe of Aser : she was of
a great age, and had lived with an husband seven years
from her virginity ; 37 and she was a widow of about
fourscore and four years, which departed not from the
temple, but served God with fastings and prayers night
and day. 38 And she coming in that instant gave
thanks likewise unto the Lord and spake of him to all
them that looked for redemption in Jerusalem.

JESUS' BOYHOOD

39 And when they had performed all things accord-
ing to the law of the Lord, they returned into Galilee
to their own city Nazareth. 40 And the child grew,
and waxed strong in spirit, filled with wisdom : and
the grace of God was upon him.

२६ उन्हें पवित्र आत्मा से यह प्रकाश मिला था कि जब तक प्रभु के ख्रिस्त
का दर्शन न कर लें उनकी मृत्यु न होगी। २७ वह आत्मा की प्रेरणा से मंदिर
में आए ; और जब माता-पिता बालक-यीशु को भीतर लाए कि उनके लिए
व्यवस्था की विधि पूरी करें २८ तो शमौन ने बालक को गोद में लिया तथा
परमेश्वर की स्तुति कर कहा,

२९ 'हे स्वामी, अब अपने दास को अपने बचन के
अनुसार शांति से बिदा कीजिए,
३० क्योंकि मेरी आंखों ने आपके उद्धार को देख लिया,
३१ जिसे आपने सब लोगों के संमुख प्रस्तुत किया है।
३२ यह अन्य जातियों को प्रकाश
और आपकी प्रजा को गौरव देनेवाली ज्योति है।'

३३ यीशु के संबंध में ये बातें सुनकर उनके माता-पिता चकित हुए।
३४ शमौन ने उन्हें आशीर्वाद देकर उनकी माता मरियम से कहा, 'देखिए
यह बालक एक ऐसा प्रतीक होगा जिसका लोग विरोध करेंगे ; और यह
तलवार आपके प्राणों को आर-पार बेध देगी। इसके कारण इस्राएल में
बहुतों का उत्थान और पतन होगा, और इस प्रकार अनेक मनुष्यों के मनोभाव
प्रकट हो जाएंगे।'

हन्नाह

३६ हन्नाह नामक एक नबिया थीं जो अशेर वंश के फनूएल की पुत्री थीं।
वह बहुत बूढ़ी थीं, विवाह* के पश्चात् वह सात वर्ष पति के साथ रहीं,
३७ और अब चौरासी वर्ष की विधवा थी। उन्होंने मंदिर कभी नहीं छोड़ा
और दिन रात उपवास तथा प्रार्थना करते हुए परमेश्वर की सेवा में लगी
रहीं। ३८ वह भी उसी क्षण आ पहुंचीं और परमेश्वर को धन्यवाद देने
तथा ख्रिस्त के विषय में उन सबको बताने लगीं, जो इस्राएल की मुक्ति की
प्रतीक्षा में थे।

यीशु का बाल्य काल

३९ जब वे प्रभु की व्यवस्था के अनुसार सब कुछ कर चुके तो गलील में
अपने नगर नासरत को लौट आए। ४० बालक बढ़ कर बलिष्ठ हुए, बुद्धि
से परिपूर्ण होते गए, और परमेश्वर का अनुग्रह उन पर था।

* अक्षरशः 'कौमार्य'

CHILD JESUS IN THE TEMPLE

41 Now his parents went to Jerusalem every year
at the feast of the passover. 42 And when he was
twelve years old, they went up to Jerusalem after the
custom of the feast. 43 And when they had fulfilled
the days, as they returned, the child Jesus tarried behind
in Jerusalem ; and Joseph and his mother knew not of
it. 44 But they, supposing him to have been in the
company, went a day's journey ; and they sought him
among their kinsfolk and acquaintance. 45 And when
they found him not, they turned back again to Jeru-
salem, seeking him. 46 And it came to pass, that after
three days they found him in the temple, sitting in the
midst of the doctors, both hearing them, and asking
them questions. 47 And all that heard him were asto-
nished at his understanding and answers. 48 And when
they saw him, they were amazed : and his mother said
unto him, Son, why hast thou thus dealt with us ?
behold, thy father and I have sought thee sorrowing.
49 And he said unto them, How is it that ye sought
me ? wist ye not that I must be about my Father's
business ?

50 And they understood not the saying which he
spake unto them. 51 And he went down with them,
and came to Nazareth, and was subject unto them : but
his mother kept all these sayings in her heart.

52 And Jesus increased in wisdom and stature, and
in favour with God and man.

JOHN THE BAPTIST AND HIS MESSAGE

3 Now in the fifteenth year of the reign of Tiberius
Cæsar, Pontius Pilate being governor of Judæa, and
Herod being tetrarch of Galilee, and his brother Philip
tetrarch of Ituræa and of the region of Trachonitis, and
Lysanias the tetrarch of Abilene, 2 Annas and Caiaphas
being the high priests, the word of God came unto John
the son of Zacharias in the wilderness.

बालक यीशु का मंदिर में पाया जाना

४१ उनके माता-पिता प्रति वर्ष फसह के पर्व पर यरूशलेम की यात्रा किया
करते थे। ४२ जब यीशु बारह वर्ष के हुए तो वे लोग अपनी प्रथा के अनुसार
वहां पर्व मनाने गए। ४३ जब वे उन दिनों को पूर्ण कर लौटे तो बालक यीशु
यरूशलेम में ही रह गए। उनके माता-पिता यह नहीं जानते थे ४४ और यह
समझ कर कि वह यात्रियों के दल में होंगे एक दिन का पड़ाव निकल गए, और
तब उन्हें अपने कुटुम्बियों और परिचितों में ढूंढ़ने लगे। ४५ उनको
न पाकर ढंढ़ते हुए वे यरूशलेम लौटे। ४६ तीन दिनके पश्चात् उन्होंने
यीशु को मंदिर में उपदेशकों के बीच बैठे, उनकी बातें सुनते और उनसे प्रश्न
करते हुए पाया। ४७ सब श्रोता गण उनकी बुद्धि और उनके उत्तरों पर विस्मित
थे। ४८ यीशु को देखकर वे चकित हो गए। उनकी माता ने कहा, 'पुत्र, तुमने
हमारे साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया ? देखो, तुम्हारे पिता और मैं व्यथित
होकर ढंढ़ रहे थे।' ४९ उन्होंने कहा, आप मुझे क्यों ढूंढ़ रहे थे ? क्या
आप नहीं जानते थे कि मुझे अपने पिता के घर में होना ही है ?'

५० पर जो बात उन्होंने कहीं उसे वे न समझे। ५१ तब वह उनके
साथ नासरत गए और उनके अधीन रहे। उनकी माता ने सब बातें अपने
मन में रखीं।

५२ यीशु बुद्धि में, डील डौल में और परमेश्वर तथा मनुष्यों के अनुग्रह
में बढ़ते गए।

३

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले और उनका उपदेश

१ तिबिरियुस कैसर के शासन काल के पंद्रहवें वर्ष में जब पुंतियुस
पिलातुस यहूदिया का राज्यपाल था, और गलील में हेरोदेस, इतूरैया एवं
त्रखोनीतिस में उसका भाई फिलिप्पुस, और अबिलेने में लिसानियास* राजा
थे, २ और हन्ना तथा कैफा महापुरोहित थे, उस समय परमेश्वर का बचन

*मूल में तित्रिअर्खेस

3 And he came into all the country about Jordan,
preaching the baptism of repentance for the remission of
sins; 4 as it is written in the book of the words of
Esaias the prophet, saying,

The voice of one crying in the wilderness,
Prepare ye the way of the Lord,
Make his paths straight.
5 Every valley shall be filled,
And every mountain and hill shall be brought low;
And the crooked shall be made straight,
And the rough ways shall be made smooth;
6 And all flesh shall see the salvation of God.

7 Then said he to the multitude that came forth to
be baptized of him, O generation of vipers, who hath
warned you to flee from the wrath to come? 8 Bring
forth therefore fruits worthy of repentance, and begin
not to say within yourselves, We have Abraham to our
father: for I say unto you, That God is able of these
stones to raise up children unto Abraham. 9 And now
also the axe is laid unto the root of the trees: every tree
therefore which bringeth not forth good fruit is hewn
down, and cast into the fire.

10 And the people asked him, saying, What shall we
do then? 11 He answereth and saith unto them, He
that hath two coats, let him impart to him that hath
none; and he that hath meat, let him do likewise.
12 Then came also publicans to be baptized, and said
unto him, Master, what shall we do? 13 And he said
unto them, Exact no more than that which is appointed
you. 14 And the soldiers likewise demanded of him,
saying, And what shall we do? And he said unto them,
Do violence to no man, neither accuse any falsely; and
be content with your wages.

15 And as the people were in expectation, and all
men mused in their hearts of John, whether he were the
Christ, or not; 16 John answered, saying unto them all,
I indeed baptize you with water; but one mightier than
I cometh, the latchet of whose shoes I am not worthy to

निर्जन प्रदेश में जकरयाह के पुत्र यूहन्ना के पास पहुंचा। ३ वह यरदन के आसपास समस्त प्रदेश में पाप-क्षमा के लिए हृदय-परिवर्तन के बपतिस्मा का प्रचार करने लगे, ४ जैसा यशायाह नबी की पुस्तक में लेख है,

'निर्जन प्रदेश में पुकारनेवाले की वाणी
"प्रभु का मार्ग तैयार करो,
उनके पथ सीधे बनाओ,
५ प्रत्येक घाटी भर दी जाएगी,
प्रत्येक पहाड़ और पहाड़ी नीची की जाएगी
टेढ़ें पथ सीधे और विषम मार्ग समतल बनेंगे
६ तथा सब प्राणी परमेश्वर के उद्धार के दर्शन करेंगे।"

७ जो जनसमूह उनसे बपतिस्मा लेने आता था वह उससे कहते थे, हे साँप के बच्चो, किसने तुमको आगामी प्रकोप से भागने की सूचना दी है। ८ हृदय परिवर्तन के अनुरूप आचरण करो और अपने मन में यह कहो कि अब्रहाम हमारे पिता हैं, ९ मैं तुमसे कहता हूं कि परमेश्वर इन पत्थरों से अब्रहाम के लिए संतान उत्पन्न कर सकते हैं। अब कुल्हाड़ी वृक्षों की जड़ पर रखी जा चुकी है। अस्तु, जो वृक्ष उत्तम फल नहीं देता, वह काटा और आग में झोंका जाएगा।'

१० लोगों ने उनसे पूछा, 'तो हम क्या करें ?' ११ यूहन्ना ने उत्तर दिया, 'जिसके पास दो कुरते हों, वह एक उसको दे दे, जिसके पास नहीं है : और जिसके पास भोजन हो, वह भी ऐसा करे।' १२ कर लेने वाले भी बपतिस्मा लेने आए और उनसे पूछा, 'हे गुरु हम क्या करें ?' १३ उन्होंने उत्तर दिया, 'जितना तुम्हारे लिये निश्चित है, उससे अधिक मत लो।' १४ सैनिकों ने भी उनसे पूछा, 'और हम लोग क्या करें ?' वह बोले, 'अत्याचार से अथवा झूठे मुकदमे चलाकर रुपया मत लो, और अपने वेतन से संतुष्ट रहो।'

१५ जनता में उत्सुकता थी और सब यूहन्ना के विषय में मन ही मन तर्क-वितर्क कर रहे थे कि कहीं यह ख्रिस्त न हों। १६ यूहन्ना ने सबसे कहा, मैं तो तुम्हें जल से बपतिस्मा देता हूं, पर एक मुझसे अधिक शक्तिमान् आ रहे हैं; मैं इस योग्य भी नहीं कि उनके जूतों के बंध खोलूं ; वह तुम्हें पवित्र आत्मा

unloose : he shall baptize you with the Holy Ghost and
with fire : 17 whose fan is in his hand, and he will
throughly purge his floor, and will gather the wheat into
his garner ; but the chaff he will burn with fire unquen-
chable. 18 And many other things in his exhortation
preached he unto the people.

19 But Herod the tetrarch, being reproved by him
for Herodias his brother Philip's wife, and for all the
evils which Herod had done, 20 added yet this above all,
that he shut up John in prison.

THE BAPTISM OF JESUS

21 Now when all the people were baptized, it came
to pass, that Jesus also being baptized, and praying, the
heaven was opened ; 22 and the Holy Ghost descended
in a bodily shape like a dove upon him, and a voice came
from heaven, which said, Thou art my beloved Son ; in
thee I am well pleased.

THE GENEALOGY OF JESUS

23 And Jesus himself began to be about thirty years
of age, being (as was supposed) the son of Joseph, which
was the son of Heli, 24 which was the son of Matthat,
which was the son of Levi, which was the son of
Melchi, which was the son of Janna, which was the
son of Joseph, 25 which was the son of Mattathias,
which was the son of Amos, which was the son of
Naum, which was the son of Esli, which was the son
of Nagge, 26 which was the son of Maath, which
was the son of Mattathias, which was the son of
Semei, which was the son of Joseph, which was
the son of Juda, 27 which was the son of Joanna,
which was the son of Rhesa, which was the son of
Zorobabel, which was the son of Salathiel, which
was the son of Neri, 28 which was the son of Melchi,
which was the son of Addi, which was the son of
Cosam, which was the son of Elmodam, which was
the son of Er, 29 which was the son of Jose, which
was the son of Eliezer, which was the son of Jorim,

और आग से बपतिस्मा देंगे। १७ उनका सूप उनके हाथ में है कि अपना
खलिहान भलीभांति स्वच्छ करें और गेहूं को कोठार में एकत्रित करें।
वह भूसी को उस अग्नि में भस्म कर देंगे जो बुझने की नहीं।' १८ ऐसी
ही अनेक बातों से वह जनता को प्रोत्साहित करते और सुसमाचार
सुनाते थे।

१९ परंतु जब उन्होंने राजा हेरोदेस को उसके भाई की पत्नी हेरोदियास
तथा अन्य सब कुकर्मों के विषय में फटकारा, तो २० उसने अपने कुकर्मों
में यह और वृद्धि कर ली कि यूहन्ना को कारागार में डाल दिया।

यीशु का बपतिस्मा

२१ जब सब लोगों ने बपतिस्मा ले लिया और यीशु भी बपतिस्मा लेकर
प्रार्थना कर रहे थे तो आकाश खुल गया २२ और पवित्र आत्मा कपोत के
रूप में उन पर सदेह उतरा एवं आकाशवाणी हुई,

'तू मेरा प्रिय* पुत्र है, मैं तुझ से प्रसन्न हूं।'

ख्रिस्त की वंशावली

२३ यीशु इस समय लगभग तीस वर्ष के थे। ऐसा माना जाता था कि
वह यूसुफ के पुत्र थे, वह एली के, २४ वह मत्तात के, वह लेवी के वह मलकी
के, वह यन्ना के, वह यूसुफ के, २५ वह मत्तित्याह के, वह आमोस के, वह नहूम
के, वह असल्याह के, वह शिमी के, वह योसेख के, वह योदाह के। २७ वह
यूहन्ना के वह रेसा के, वह जरुब्बाबिल के, वह शालतिएल के, नह नेरी के,
२८ वह मलकी के, वह अद्दी के, वह कोसाम के, इलमोदान के, वह एर के,
२९ वह येशू के, वह इलाजार के, वह योरीम के, वह मत्तात के, वह लेवी के,

* अथवा 'एकमात्र'

which was the son of Matthat, which was the son
of Levi, 30 which was the son of Simeon, which was
the son of Juda, which was the son of Joseph,
which was the son of Jonan, which was the son of
Eliakim, 31 which was the son of Melea, which was
the son of Menan, which was the son of Mattatha, which
was the son of Nathan, which was the son of David,
32 which was the son of Jesse, which was the son of
Obed, which was the son of Booz, which was the son
of Salmon, which was the son of Naasson, 33 which
was the son of Aminadab, which was the son of Aram,
which was the son of Esrom, which was the son of
Phares, which was the son of Juda, 34 which was the son
of Jacob, which was the son of Isaac, which was the
son of Abraham, which was the son of Thara, which
was the son of Nachor, 35 which was the son of Saruch,
which was the son of Ragau, which was the son of
Phalec, which was the son of Heber, which was the
son of Sala, 36 which was the son of Cainan, which
was the son of Arphaxad, which was the son of Sem,
which was the son of Noe, which was the son of
Lamech, 37 which was the son of Mathusala, which
was the son of Enoch, which was the son of Jared,
which was the son of Maleleel, which was the son
of Cainan, 38 which was the son of Enos, which
was the son of Seth, which was the son of Adam,
which was the son of God.

THE TEMPTATION OF JESUS

4 And Jesus being full of the Holy Ghost returned
from Jordan, and was led by the Spirit into the
wilderness, 2 being forty days tempted of the devil.
And in those days he did eat nothing: and when they
were ended, he afterward hungered. 3 And the devil
said unto him, If thou be the Son of God, command
this stone that it be made bread. 4 And Jesus answered
him, saying, It is written,

That man shall not live by bread alone,
But by every word of God.

३० वह शमौन के, वह यहूदाह के, वह यूसुफ के, वह योनान के, वह इलयाकीम
के, ३१ वह मलेआह के, वह सिन्नाह के, वह मत्तात के, वह नातान के, वह
दाऊद के, ३२ वह यिशै के, वह ओबेद के, वह बोअज के, वह सलमोन के,
वह नहशोन के, ३३ वह अम्मीनादाब के, वह अरनी के, वह हिस्रोन के, वह
फिरिस के, वह यहूदाह के, ३४ वह याकूब के, वह इसहाक के, वह अब्राहम के,
वह तिरह के, वह नाहोर के, ३५ वह सरूग के, वह रऊ के, वह फिलिग
के, वह एबिर के, वह शिलह के, ३६ वह केनान के, वह अफरहद के, वह शेम
के, वह नूह के, वह लिमिक के, ३७ वह मयूशिलह के, वह हनोक के, वह यिरिद
के, वह यहललेल के, वह केनान के, ३८ वह इनोश के, वह शेत के, वह आदम
के और वह परमेश्वर के।

४

खिस्त की परीक्षा

१ यीशु पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर यरदन से लौटे तो आत्मा उन्हें
निर्जन प्रदेश में ले गया। २ वहां इबलीस चालीस दिन तक उन्हें प्रलोभन
देता रहा। ३ उन दिनों उन्होंने कुछ नहीं खाया; पर उनके बीत जाने पर उन्हें
भूख लगी। ४ तब इबलीस ने उनसे कहा, 'यदि आप परमेश्वर के पुत्र हैं
तो इस पत्थर से कहिए कि यह रोटी बन जाए।' यीशु ने उत्तर दिया,
'शास्त्र लेख है,

"मनुष्य केवल रोटी से ही जीवित न रहेगा"।'

5 And the devil, taking him up into an high mountain,
shewed unto him all the kingdoms of the world in a
moment of time. 6 And the devil said unto him, All
this power will I give thee, and the glory of them:
for that is delivered unto me; and to whomsoever I
will I give it. 7 If thou therefore wilt worship me, all
shall be thine. 8 And Jesus answered and said unto
him, Get thee behind me, Satan: for it is written,

Thou shalt worship the Lord thy God,
And him only thou shalt serve.

9 And he brought him to Jerusalem, and set him on
a pinnacle of the temple, and said unto him, If thou be
the Son of God, cast thyself down from hence: for
it is written,

10 He shall give his angels charge over thee,
To keep thee;
11 And
In their hands they shall bear thee up.
Lest at any time thou dash thy foot against a stone,
12 And Jesus answering said unto him, It is said,
Thou shalt not tempt the Lord thy God.

13 And when the devil had ended all the temptation,
he departed from him for a season.

JESUS IN NAZARETH

14 And Jesus returned in the power of the Spirit
into Galilee: and there went out a fame of him through
all the region round about. 15 And he taught in
their synagogues, being glorified of all.

16 And he came to Nazareth, where he had been
brought up: and, as his custom was, he went into
the synagogue on the sabbath day, and stood up for
to read. 17 And there was delivered unto him the book
of the prophet Esaias. And when he had opened the
book, he found the place where it was written,

18 The Spirit of the Lord is upon me,
Because he hath anointed me to preach the gospel
to the poor;

५ तब इबलीस उनको ऊपर ले गया और क्षण भर में संसार के सब राज्य
दिखा कर ६ उनसे कहा, 'मैं आपको इन सबका अधिकार और वैभव दूंगा,
क्योंकि यह सब मुझे मिला है, और मैं जिसे चाहूं उसे देता हूं ७ यदि आप
मेरी वंदना करें तो यह सब आपका हो जाएगा।' ८ यीशु ने उत्तर दिया,
'शास्त्र का लेख है,

"तू अपने प्रभु परमेश्वर की वंदना कर
और केवल उन्हींको सेवा अर्पित कर"।'

९ तब वह यीशु को यरूशलेम में ले गया और मंदिर के शिखर पर खड़ा
कर उनसे कहा, 'यदि आप परमेश्वर के पुत्र हैं तो यहां से नीचे कूद पड़िए,
१० क्योंकि शास्त्र का लेख है,

"वह आपके लिए अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देंगे कि वे आपकी
रक्षा करें",

११ और

"वह आपको अपने हाथों पर उठा लेंगे
कि कहीं ऐसा न हो कि आपके चरणों में पत्थर से ठेस लगे।"'

१२ यीशु ने उत्तर दिया, 'यह भी कहा गया है,

"प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा मत कर"।'

१३ जब इबलीस ने इस प्रकार उनकी परीक्षा कर ली तो अवसर आने तक के
लिए चला गया।

नासरत में उपदेश

१४ यीशु आत्मा की सामर्थ्य से भरकर गलील लौटे तो उनका नाम आस
पास प्रदेश में फैल गया। वह उनके सभागृहों में उपदेश देते थे और सब
लोग उनकी प्रशंसा करते थे।

१६ वह नासरत आए जहां उनका पालन पोषण हुआ था और अपनी
रीति के अनुसार सबत के दिन सभागृह में गए। वह पढ़ने के लिए उठे १७ तो
उन्हें यशायाह नबी की पुस्तक दी गई। पुस्तक खोल कर उन्होंने वह स्थान
निकाला जहां लिखा है,

१८ 'प्रभु का आत्मा मुझ पर है,
उन्होंने मुझको अभिषिक्त किया है,

He hath sent me to heal the broken-hearted, to
preach deliverance to the captives,
And recovering of sight to the blind,
To set at liberty them that are bruised,
19 To preach the acceptable year of the Lord.

20 And he closed the book, and he gave it again to the
minister, and sat down. And the eyes of all them that
were in the synagogue were fastened on him. 21 And
he began to say unto them, This day is this scripture
fulfilled in your ears. 22 And all bare him witness, and
wondered at the gracious words which proceeded out of
his mouth. And they said, Is not this Joseph's son ?
23 And he said unto them, Ye will surely say unto me
this proverb, Physician, heal thyself : whatsoever we
have heard done in Capernaum, do also here in thy
country. 24 And he said, Verily I say unto you, No
prophet is accepted in his own country. 25 But I tell
you of a truth, many widows were in Israel in the days
of Elias, when the heaven was shut up three years and
six months, when great famine was throughout all the
land ; 26 but unto none of them was Elias sent, save
unto Sarepta, a city of Sidon, unto a woman that was a
widow. 27 And many lepers were in Israel in the time
of Eliseus the prophet ; and none of them was cleansed,
saving Naaman the Syrian. 28 And all they in the
synagogue, when they heard these things, were filled
with wrath, 29 And rose up, and thrust him out of the
city, and led him unto the brow of the hill whereon
their city was built, that they might cast him down
headlong.

CURE OF A DEMONIAC

30 But he passing through the midst of them went
his way, 31 and came down to Capernaum, a city of
Galilee, and taught them on the sabbath days. 32 And
they were astonished at his doctrine : for his word was
with power.

33 And in the synagogue there was a man, which
had a spirit of an unclean devil, and cried out with a

कि दीन जनों को सुसमाचार सुनाऊं
उन्होंने मुझे भेजा है कि बंदियों को मुक्त कर
और अंधों को दृष्टि प्राप्ति का संदेश दूं,
दलितों को स्वतंत्रता प्रदान करूं,
१९ तथा प्रभु की प्रसन्नता के वर्ष का प्रचार करूं ।"

२० उन्होंने पुस्तक बंद करके सेवक को दी और बैठ गए। सभागृह में
सब लोगों की आंखें उनकी ओर लगी थीं। २१ तब वह लोगों से बोले,
'शास्त्र का यह लेख आज तुम्हारे संमुख पूरा हुआ है।' २२ सब लोगों ने
उनकी सराहना की और उनके मुख से निकले अनुग्रहपूर्ण बचनों पर विस्मित
हुए, और पूछने लगे, 'क्या यह यूसुफ के पुत्र नहीं हैं ?' २३ यीशु ने उनसे कहा,
निस्संदेह तुम मेरे विषय में यह कहावत कहोगे कि "हे वैद्य अपनी चिकित्सा
कर", हमने जो कुछ सुना है कि आपने कफरनहूम में किया, वह यहां अपने
नगर में भी कीजिए" ।' २४ उन्होंने फिर कहा, 'मैं तुमसे सच कहता हूं कि
नबी का स्वागत अपने नगर में नहीं होता। २५ सचाई की बात तो यह है कि
एलिय्याह के दिनों में जब साढ़े तीन वर्ष तक आकाश बंद रहा और सारे
देश में भयानक अकाल पड़ा, उस समय इस्राएल में बहुत विधवाएं थीं,
२६ पर सैदा के सारफत में रहनेवाली विधवा को छोड़ अन्य किसी के पास
एलिय्याह नहीं भेजे गए। २७ और इलीशा नबी के समय में इस्राएल में बहुत
कोढ़ी थे, पर सूरिया निवासी नामान के अतिरिक्त कोई और रोग-मुक्त नहीं
हुआ।' २८ ये बचन सुन कर सभागृह के लोग अत्यन्त क्रुद्ध हुए, २९ उनको
नगर के बाहर निकाला और जिस पहाड़ पर उनलोगों का नगर निर्मित था
उसकी चोटी पर ले चले कि नीचे ढकेल दें। ३० परंतु वह उनके बीच में से
निकल कर चले गए।

अशुद्ध आत्मा-ग्रसित को स्वस्थ करना

३१ अब यीशु गलील के नगर कफरनहूम में आए और सबत के दिन
सभागृह में जाकर उपदेश देने लगे। ३२ लोग उनकी शिक्षा पर चकित थे
क्योंकि उनका उपदेश अधिकारपूर्ण था।

३३ सभागृह में अशुद्ध आत्मा से ग्रसित एक मनुष्य था। वह उच्च स्वर

loud voice, 34 saying, Let us alone ; what have we to
do with thee, thou Jesus of Nazareth ? art thou come
to destroy us ? I know thee who thou art ; the Holy
One of God. 35 And Jesus rebuked him, saying, Hold
thy peace, and come out of him. And when the devil
had thrown him in the midst, he came out of him, and
hurt him not. 36 And they were all amazed, and spake
among themselves, saying, What a word is this ! for
with authority and power he commandeth the unclean
spirits, and they come out. 37 And the fame of him
went out into every place of the country round about.

CURE OF SIMON'S WIFE'S MOTHER AND OTHERS

38 And he arose out of the synagogue, and entered
into Simon's house. And Simon's wife's mother was
taken with a great fever ; and they besought him for
her. 39 And he stood over her, and rebuked the
fever ; and it left her : and immediately she arose and
ministered unto them.

40 Now when the sun was setting, all they that had
any sick with divers diseases brought them unto him ;
and he laid his hands on every one of them, and healed
them. 41 And devils also came out of many, crying
out, and saying, Thou art Christ the Son of God. And
he rebuking them suffered them not to speak : for they
knew that he was Christ.

42 And when it was day, he departed and went
into a desert place : and the people sought him, and
came unto him, and stayed him, that he should not
depart from them. 43 And he said unto them, I must
preach the kingdom of God to other cities also : for
therefore am I sent. 44 And he preached in the syna-
gogues of Galilee.

THE CALL OF THE FIRST DISCIPLES

5 And it came to pass, that, as the people pressed
upon him to hear the word of God, he stood by
the lake of Gennesaret, 2 and saw two ships standing

से चिल्ला उठा, ३४ 'हे यीशु, नासरत-निवासी, आपको हमसे क्या काम ?
हमें नष्ट करने आए हैं आप? मैं जानता हूं कि आप कौन हैं ? परमेश्वर
के पवित्र व्यक्ति ।' ३५ यीशु ने उसे रोक कर कहा, 'चुप रह और उसमें से
निकला जा ।' भूत ने मनुष्य को बीच में पटका और बिना हानि पहुंचाए उसमें
से निकल गया । ३६ इस पर सब भय-चकित रह गए और आपस में कहने
लगे, 'यह क्या बात है ? यह अधिकार और सामर्थ्य के साथ अशुद्ध आत्माओं
को आज्ञा देते हैं और वे निकल जाती हैं ।' ३७ अस्तु, आसपास के सब स्थानों
में उनकी चर्चा फैल गई ।

पतरस की सास तथा अन्य लोगों को स्वस्थ करना

३८ वह सभागृह से उठकर शमौन के घर आए । शमौन की सास को
तीव्र ज्वर चढ़ा था; उसके लिए लोगों ने उनसे निवेदन किया । ३९ उन्होंने
उसके समीप खड़े होकर ज्वर को रोका और उसका ज्वर दूर हो गया । वह
वह उसी क्षण उठी और उन लोगों की सेवा करने लगी ।

४० सूर्यास्त के समय जिन-जिन के यहां विविध रोगों से पीड़ित रोगी थे,
वे सब उनको यीशु के पास लाने लगे । यीशु ने उनमें से प्रत्येक पर हाथ
रखकर स्वस्थ कर दिया । ४१ बहुतों में से भूत ऊंचे स्वर से यह कहते हुए
निकले, 'आप परमेश्वर-पुत्र हैं;' यीशु ने उन्हें रोका और बोलने न दिया
क्योंकि वे पहिचानते थे कि यही ख्रिस्त हैं ।

४२ जब दिन हुआ तो यीशु किसी निर्जन स्थान में चले गए । भीड़ उन्हें
ढूंढ़ती हुई उनके पास पहुंची और उनको रोकने लगी कि उससे पृथक् न हों ।
४३ तब उन्होंने लोगों से कहा, 'यह अनिवार्य है कि मैं अन्य नगरों में भी
परमेश्वर के राज्य का समाचार सुनाऊं, क्योंकि मैं इसीलिए भेजा गया हूं ।'
४४ और वह यहूदियों* के सभागृहों में प्रचार करने लगे ।

५

प्रथम शिष्यों का बुलाया जाना

१ एक बार यीशु गन्नेसरत सरोवर के तट पर खड़े थे, और जनता परमेश्वर
का बचन सुनने के लिए उन पर टूटी पड़ती थी । २ उन्होंने सरोवर तट

*कुछ प्रतियों में 'गलील'

by the lake : but the fishermen were gone out of them,
and were washing their nets. 3 And he entered into
one of the ships, which was Simon's, and prayed him
that he would thrust out a little from the land. And
he sat down, and taught the people out of the ship.
4 Now when he had left speaking, he said unto Simon,
Launch out into the deep, and let down your nets
for a draught. 5 And Simon answering said unto him,
Master, we have toiled all the night, and have taken
nothing : nevertheless at thy word I will let down
the net. 6 And when they had this done, they in-
closed a great multitude of fishes : and their net brake.
7 And they beckoned unto their partners, which were
in the other ship, that they should come and help
them. And they came, and filled both the ships, so
that they began to sink. 8 When Simon Peter saw
it, he fell down at Jesus' knees, saying, Depart from
me ; for I am a sinful man, O Lord. 9 For he was
astonished, and all that were with him, at the draught
of the fishes which they had taken : 10 and so was
also James, and John, the sons of Zebedee, which were
partners with Simon. And Jesus said unto Simon,
Fear not ; from henceforth thou shalt catch men. 11 And
when they had brought their ships to land, they forsook
all, and followed him.

CURE OF A LEPER

12 And it came to pass, when he was in a certain
city, behold a man full of leprosy : who seeing Jesus
fell on his face, and besought him, saying, Lord, if
thou wilt, thou canst make me clean. 13 And he put
forth his hand, and touched him, saying, I will : be
thou clean. And immediately the leprosy departed from
him. 14 And he charged him to tell no man : but
go, and shew thyself to the priest, and offer for thy
cleansing, according as Moses commanded, for a testi-
mony unto them. 15 But so much the more went
there a fame abroad of him : and great multitudes
came together to hear, and to be healed by him of

पर दो नौकाएं देखीं जिनसे उतर कर मछुए जाल धो रहे थे। ३ वह उनमें से
एक नौका पर, जो शमौन की थी, चढ़ गए और कहा, नौका को तट से कुछ
दूर ले चलो।' वह बैठ गए और नौका से लोगों को उपदेश देने लगे।
४ जब उन्होंने बोलना समाप्त किया तो शमौन से बोले, गहरे में ले चलो और
मछली पकड़ने के लिये जाल डालो।' ५ शमौन ने उत्तर दिया, 'स्वामी, हमने
रात भर परिश्रम किया, पर कुछ भी हाथ न लगा; फिर भी आपके कहने पर
जाल फेंकता हूं।' ६ यह करने पर बहुत मछलियां घिर आईं, यहां तक कि
उनके जाल फटने लगे। ७ इस पर उन्होंने अपने साथियों को, जो दूसरी
नौका पर थे, संकेत किया कि आकर उनकी सहायता करें। वे आए और
उन्होंने दोनों नौकाएं इतनी भर लीं कि वे डूबने लगीं। ८ यह देखकर
शमौन पतरस यीशु के चरणों पर गिरे और बोले, 'हे प्रभु, मेरे पास से चले
जाइए, मैं पापी हूं।' ९ क्योंकि इतनी मछलियों के पकड़े जाने से वह और
उनके साथी भय-चकित हो गए थे। १० यही दशा याकूब और यूहन्ना की
हुई जो जबदी के पुत्र और शमौन के साझेदार थे। यीशु ने शमौन से कहा,
'डरो मत, अब से तुम मनुष्यों को जीवित पकड़ोगे।' ११ उन्होंने नौकाओं को
किनारे से लगा दिया और सब कुछ परित्याग कर यीशु के अनुयायी
हो गए।

कोढ़ी को शुद्ध करना

१२ जब यीशु किसी नगर में थे तो कोढ़ से भरा एक मनुष्य आया। वह
यीशु को देख कर मुंह के बल गिर पड़ा और विनय करने लगा, 'प्रभु, यदि आप
चाहें तो मुझे शुद्ध कर सकते हैं।' १३ उन्होंने हाथ बढ़ाया और उसे स्पर्श
कर कहा, 'मैं चाहता हूं, शुद्ध हो जा।' उसी क्षण उसका कोढ़ दूर हो गया।
१४ यीशु ने आज्ञा दी, 'किसी से न कहना, परंतु आओ, अपने आपको पुरोहित
को दिखाओ और अपने शुद्धीकरण के लिए मूसा की आज्ञानुसार भेंट चढ़ाओ
जिससे यह उनके लिये साक्षी रहे।' १५ फिर भी उनकी चर्चा अधिकाधिक
फैलती गई और विशाल जनसमूह उन्हें सुनने और रोगों से स्वस्थ होने के

their infirmities. 16 And he withdrew himself into
the wilderness, and prayed.

CURE OF A PARALYTIC

17 And it came to pass on a certain day, as he
was teaching, that there were Pharisees and doctors of
the law sitting by, which were come out of every
town of Galilee, and Judæa, and Jerusalem : and the
power of the Lord was present to heal them. 18 And,
behold, men brought in a bed a man which was taken
with a palsy : and they sought means to bring him
in, and to lay him before him. 19 And when they
could not find by what way they might bring him
in because of the multitude, they went upon the house-
top, and let him down through the tiling with his
couch into the midst before Jesus. 20 And when he
saw their faith, he said unto him, Man, thy sins are
forgiven thee. 21 And the scribes and the Pharisees
began to reason, saying, Who is this which speaketh
blasphemies ? Who can forgive sins, but God alone ?
22 But when Jesus perceived their thoughts, he answer-
ing said unto them, What reason ye in your hearts ? 23
Whether is easier, to say, Thy sins be forgiven thee ;
or to say, Rise up and walk ? 24 But that ye may
know that the Son of man hath power upon earth
to forgive sins, (he said unto the sick of the palsy,)
I say unto thee, Arise, and take up thy couch, and
go into thine house. 25 And immediately he rose up
before them, and took up that whereon he lay, and
departed to his own house, glorifying God. 26 And
they were all amazed, and they glorified God, and were
filled with fear, saying, We have seen strange things
to day.

THE CALL OF LEVI

27 And after these things he went forth, and saw
a publican, named Levi, sitting at the receipt of custom :
and he said unto him, Follow me. 28 And he left
all, rose up, and followed him. 29 And Levi made
him a great feast in his own house : and there was

लिए उनके पास एकत्रित होने लगा। १६ परंतु यीशु प्रायः निर्जन स्थान में
जाकर प्रार्थना किया करते थे।

अर्द्धांगी को स्वस्थ करना

१७ एक दिन यीशु उपदेश दे रहे थे, और स्वस्थ करने के लिए प्रभु का
सामर्थ्य उनके साथ था। फरीसी और व्यवस्था के अध्यापक, जो गलील और
यहूदिया के प्रत्येक ग्राम से और यरूशलेम से आए थे, उनके समीप बैठे हुए
थें। १८ इसी समय कई लोग एक अर्द्धांगी को शय्या पर लेकर आए और उसे
भीतर लाने एवं उनके संमुख रखने की चेष्टा करने लगे; १६ परंतु जब भीड़
के कारण भीतर लाने का कोई उपाय न सूझा तो छत पर चढ़ गए और खपरैल
हटा कर उसे शय्या सहित बीच में यीशु के संमुख उतार दिया। २० उनका
विश्वास देखकर यीशु ने कहा, 'हे मनुष्य, तेरे पाप क्षमा हुए।' २१ इस पर
शास्त्री और फरीसी मन में तर्क-वितर्क करने लगे, 'कौन है यह जो परमेश्वर की
निंदा करता है? केवल एक अर्थात् परमेश्वर को छोड़कर और कौन पाप
क्षमा कर सकता है?' २२ उनके तर्क-वितर्क को जान कर यीशु ने उनसे कहा,
'तुम अपने मन में तर्क-वितर्क क्यों कर रहे हो? २३ सरल क्या है, यह
कहना कि तेरे पाप क्षमा हुए, अथवा यह कहना कि उठ, चल फिर?
२४ परंतु जिससे तुम जान लो कि मानव-पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने
का अधिकार है'—वह अर्द्धांगी से बोले—'मैं तुझसे कहता हूं, उठ, अपनी
शय्या उठा और अपने घर जा।' २५ वह उन लोगों के सामने उसी क्षण
उठा और जिस पर पड़ा था उसे उठा कर, परमेश्वर की स्तुति करता हुआ अपने
घर चला गया। २६ वे सबके सब आश्चर्य चकित हो परमेश्वर की स्तुति
करने लगे और भयभीत होकर कहने लगे, 'आज हमने अद्भुत कार्य देखे हैं।'

मत्ती का आह्वान

२७ इसके अनंतर यीशु बाहर गये तो उन्होंने लेवी नामक कर लेने वाले
को चुंगी की चौकी पर बैठा देखा तथा उनसे कहा, 'मेरा अनुयायी हो।'
२८ लेवी उठे और सब कुछ त्याग कर उनके अनुयायी हो गए। २९ लेवी ने
उनके लिए अपना यहां बड़ा भोज दिया। कर लेने वालों का बृहत् समूह और

a great company of publicans and of others that sat
down with them. 30 But their scribes and Pharisees
murmured against his disciples, saying, Why do ye eat
and drink with publicans and sinners? 31 And Jesus
answering said unto them, They that are whole need not
a physician; but they that are sick. 32 I came not to
call the righteous, but sinners to repentance.

THE QUESTION OF FASTING

33 And they said unto him, Why do the disciples of
John fast often, and make prayers, and likewise the
disciples of the Pharisees; but thine eat and drink?
34 And he said unto them, Can ye make the children of
the bridechamber fast, while the bridegroom is with
them? 35 But the days will come, when the bride-
groom shall be taken away from them, and then shall
they fast in those days.

36 And he spake also a parable unto them; No man
putteth a piece of a new garment upon an old; if
otherwise, then both the new maketh a rent, and the
piece that was taken out of the new agreeth not with
the old. 37 And no man putteth new wine into old
bottles; else the new wine will burst the bottles, and
be spilled, and the bottles shall perish. 38 But new
wine must be put into new bottles; and both are
preserved. 39 No man also having drunk old wine
straightway desireth new: for he saith, The old is better.

SABBATH OBSERVANCE

6 And it came to pass on the second sabbath after
the first, that he went through the corn fields; and
his disciples plucked the ears of corn, and did eat,
rubbing them in their hands. 2 And certain of the
Pharisees said unto them, Why do ye that which is
not lawful to do on the sabbath days? 3 And Jesus
answering them said, Have ye not read so much as this,
what David did, when himself was an hungred, and they

अन्य लोग उनके साथ भोज में सम्मिलित हुए। ३० इस पर फरीसी और
शास्त्री बड़बड़ाने लगे और उनके शिष्यों से बोले, 'तुम लोग कर लेने वालों
और पापियों के साथ क्यों खाते-पीते हो ?' ३१ यीशु ने उत्तर दिया, 'स्वस्थ
मनुष्यों को वैद्य की आवश्यकता नहीं, पर रोगियों को होती है। ३२ मैं
धार्मिकों को नहीं, पर पापियों को बुलाने आया हूं कि वे हृदय-परिवर्त्तन
करें।'

उपवास का प्रश्न

३३ उन्होंने कहा, 'यूहन्ना के शिष्य तो बार-बार उपवास करते और प्रार्थना
में लगे रहते हैं और फरीसियों के भी ऐसा ही करते हैं, पर आपके शिष्य
खाते-पीते हैं।' ३४ यीशु ने उनसे कहा, 'जब तक दूलह साथ है, क्या आप
बरातियों से उपवास करा सकते हैं ? ३५ पर समय आएगा जब दूलह उनसे
छीन लिया जाएगा, तब उन दिनों वे उपवास करेंगे।'

३६ उन्होंने एक दृष्टांत भी कहा, कोई मनुष्य नए वस्त्र से थिगली
फाड़ कर पुराने वस्त्र पर नहीं लगता; यदि लगाए तो नया वस्त्र तो फटेगा
ही, साथ ही पुराने वस्त्र पर वह थिगली शोभा नहीं देगी। ३७ इसी प्रकार
नवीन मदिरा को पुराने चर्मपात्रों में कोई नहीं रखता ; यदि रखे तो नवीन
मदिरा चर्मपात्रों को फाड़ देगी, मदिरा बह जाएगी और चर्मपात्र नष्ट हो
जाएंगे। ३८ नवीन मदिरा को नवीन चर्मपात्रों में ही रखना चाहिये।
३९ पुरानी मदिरा पी लेने पर कोई भी नवीन मदिरा नहीं चाहता, क्योंकि वह
कहता है कि पुरानी ही उत्तम है।'

६

सबत-पालन

१ एक सबत के दिन जब वह खेतों में होकर जा रहे थे तो उनके शिष्य
अनाज की बालें तोड़ने और हाथ से मसल-मसल कर खाने लगे। २ कुछ
फरीसियों ने कहा, 'तुम लोग ऐसा काम क्यों कर रहे हो जिसे सबत के दिन
करना विहित नहीं है।' ३ यीशु ने उत्तर दिया, 'क्या तुमने नहीं पढ़ा कि
जब दाऊद और उनके साथियों को भूख लगी तो दाऊद ने क्या किया था ?

which were with him ; 4 how he went into the house
of God, and did take and eat the shewbread, and gave
also to them that were with him ; which it is not
lawful to eat but for the priests alone ? 5 And he said
unto them, That the Son of man is Lord also of the
sabbath.

6 And it came to pass also on another sabbath, that
he entered into the synagogue and taught : and there
was a man whose right hand was withered. 7 And
the scribes and Pharisees watched him, whether he would
heal on the sabbath day ; that they might find an
accusation against him. 8 But he knew their thoughts,
and said to the man which had the withered hand,
Rise up, and stand forth in the midst. And he arose
and stood forth. 9 Then said Jesus unto them, I will
ask you one thing ; Is it lawful on the sabbath days to
do good, or to do evil ? to save life, or destroy it ?
10 And looking round about upon them all he said
unto the man, Stretch forth thy hand. And he did
so : and his hand was restored whole as the other.
11 And they were filled with madness ; and communed
one with another what they might do to Jesus.

THE TWELVE APOSTLES

12 And it came to pass in those days, that he went
out into a mountain to pray, and continued all night in
prayer to God. 13 And when it was day, he called
unto him his disciples : and of them he chose twelve,
which also he named apostles ; 14 Simon, (whom he also
named Peter,) and Andrew his brother, James and John
Philip and Bartholomew, 15 Matthew and Thomas,
James the son of Alphæus, and Simon called Zelotes,
16 and Judas the brother of James, and Judas Iscariot
which also was the traitor.

17 And he came down with them, and stood in
the plain, and the company of his disciples, and a great
multitude of people out of all Judæa and Jerusalem, and
from the sea coast of Tyre and Sidon, which came to
hear him, and to be healed of their diseases ; 18 and

४ कैसे वह परमेश्वर के भवन में गए और अर्पित की हुई रोटियां लेकर
खाईं जिनका खाना पुरोहितों को छोड़ और किसी को विहित नहीं है, और
अपने साथियों को भी दीं।' ५ तब यीशु ने उनसे कहा, 'मानव-पुत्र सबत
का भी स्वामी है।'

६ वह किसी दूसरे सबत को सभागृह में आकर उपदेश देने लगे।
वहां एक मनुष्य था जिसका दाहिना हाथ सूख गया था। ७ शास्त्री और
फरीसी इस ताक में थे कि वह सबत के दिन स्वस्थ करते हैं या नहीं, जिससे
उन पर अभियोग लगा सकें। ८ यीशु उनके विचारों को जानते थे इसलिए
सूखे हाथ वाले मनुष्य से बोले, 'उठ, बीच में खड़ा हो।' वह उठ कर खड़ा
हो गया। ९ तब यीशु ने उन लोगों से कहा, 'मैं तुमसे पूछता हूं कि सबत
के दिन भलाई करना विहित है अथवा बुराई, जीवन बचाना अथवा नष्ट
करना?' १० फिर उन्होंने चारों ओर सब पर दृष्टि डाली और उससे कहा,
'अपना हाथ बढ़ा।' उसने ऐसा ही किया और उसका हाथ पुनः ठीक हो
गया। ११ इस पर वे लोग क्रोधोन्मत्त हो गए और आपस में तर्क-वितर्क
करने लगे कि यीशु का क्या करें?

बाँरह प्रेरित

१२ उन दिनों वह पर्वत पर प्रार्थना करने गए और रात भर परमेश्वर से
प्रार्थना करने में लीन रहे। १३ जब दिन निकला तो उन्होंने अपने शिष्यों
को बुलाया और उनसे बारह को चुन कर उन्हें 'प्रेरित' नाम दिया; १४ शमौन
जिनका नाम उन्होंने पतरस रखा, और उसके भाई अन्द्रियास, याकूब और
यूहन्ना, फिलिप्पुस और बरतुलमे, १५ मत्ती और थोमा, हलफई के पुत्र यूहन्ना
और शमौन जो जेलोतेस कहलाते हैं, १६ याकूब के पुत्र यहूदा, और यहूदा
इस्करियोती जो विश्वासघाती निकला।

१७ वह उनके साथ उतर कर मैंदान में खड़े हुए जहाँ उनके शिष्यों
का विशाल समूह और लोगों की बड़ी भीड़ थी। वे लोग समस्त यहूदिया
से, यरूशलेम से और सूर और सैदा के समुद्र तट से आये थे कि उनका उपदेश
सुनें और अपने रोगों मुक्त हों। १८ अशुद्ध आत्माओं से पीड़ित व्यक्ति

they that were vexed with unclean spirits : and they
were healed. 19 And the whole multitude sought to
touch him : for there went virtue out of him, and healed
them all.

BEATITUDES AND WOES

20 And he lifted up his eyes on his disciples and said,
Blessed be ye poor ; for yours is the kingdom
of God
21 Blessed are ye that hunger now : for ye shall
be filled
Blessed are ye that weep now : for ye shall
laugh.
22 Blessed are ye, when men shall hate you, and
when they shall separate you from their
company, and shall reproach you, and cast
out your name as evil, for the Son of man's
sake.
23 Rejoice ye in that day, and leap for joy ; for,
behold, your reward is great in heaven : for
in the like manner did their fathers unto
the prophets.
24 But woe unto you that are rich !
For ye have received your consolation
25 Woe unto you that are full !
For ye shall hunger
Woe unto you that laugh now !
For ye shall mourn and weep.
26 Woe unto you when all men shall speak well
of you !
For so did their fathers to the false prophets.

LOVE OF ENEMIES

27 But I say unto you which hear, Love your enemies,
do good to them which hate you, 28 bless them that
curse you, and pray for them which despitefully use you.
29 And unto him that smiteth thee on the one cheek
offer also the other ; and him that taketh away thy
cloke forbid not to take thy coat also. 30 Give to every

स्वस्थ हो रहे थे। १९ सब लोग उनको स्पर्श करने का प्रयत्न कर रहे थे,
क्योंकि उनसे सामर्थ्य निकल कर सबको स्वस्थ कर रही थी।

आशीर्वचन और अभिशाप

२० उन्होंने अपने शिष्यों की ओर दृष्टि उठा कर कहा :
'धन्य हो तुम जो दीन हो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य तुम्हारा है!
२१ 'धन्य हो तुम जो अभी भूखे हो, क्योंकि तृप्त होगे।
'धन्य हो तुम जो अब रोते हो, क्योंकि हँसोगे।

२२ 'धन्य हो तुम जब लोग मानव-पुत्र के कारण तुमसे द्वेष करें,
तुम्हारा बहिष्कार करें, तुम्हें बुरा भला कहें और तुम्हारा नाम बुरा समझ कर
काट दें। २३ उस दिन आनन्द मनाओ और उछलो-कूदो, क्योंकि स्वर्ग में
तुम्हारे लिए बड़ा फल है : उनके पूर्वजों ने नबियों के साथ ऐसा ही किया था।

२४ 'परंतु शोक तुम पर जो धनवान् हो,
क्योंकि तुम्हें सुख का भाग प्राप्त हो गया।
२५ शोक तुम पर जो अब तृप्त हो,
'क्योंकि तुम भूख से पीड़ित होगे।
'शोक तुम जो अब हंसते हो,
क्योंकि तुम शोक मनाओगे और रोओगे।
२६ 'शोक तुम पर जब सब मनुष्य तुम्हारी प्रशंसा करते हैं,
क्योंकि उनके पूर्वजों ने झूठे नबियों के साथ ऐसा ही व्यवहार
किया था।

शत्रुओं से प्रेम

२७ 'अस्तु, मैं तुम सुननेवालों से कहता हूं, अपने शत्रुओं से प्रेम करो;
जो तुमसे द्वेष करते हैं, उनकी भलाई करो; २८ जो तुम्हें शाप देते हैं,
उन्हें आशीर्वाद हो; जो तुम्हारे साथ दुर्व्यवहार करते हैं, उनके लिए
प्रार्थना करो। २९ जो तुम्हारे एक गाल पर तमाचा लगाता है, उसकी
ओर दूसरा भी फेर दो; जो तुम्हारा अंगरखा छीन रहा है, उसे अपना
कुरता भी ले लेने दो। ३० जो कोई तुमसे मांगे, उसे दो; और जो कोई तुम्हारी

man that asketh of thee ; and of him that taketh away
thy goods ask them not again. 31 And as ye would
that men should do to you, do ye also to them likewise.

32 For if ye love them which love you, what thank
have ye ? for sinners also love those that love them.
33 And if ye do good to them which do good to you,
what thank have ye ? for sinners also do even the same.
34 And if ye lend to them of whom ye hope to receive,
what thank have ye ? for sinners also lend to sinners, to
receive as much again. 35 But love ye your enemies,
and do good, and lend, hoping for nothing again ;
and your reward shall be great, and ye shall be the
children of the Highest : for he is kind unto the
unthankful and to the evil. 36 Be ye therefore merci-
ful, as your Father also is merciful.

ON JUDGING OTHERS

37 Judge not, and ye shall not be judged : condemn
not, and ye shall not be condemned : forgive, and ye
be forgiven : 38 give, and it shall be given unto you ;
good measure, pressed down, and shaken together, and
running over, shall men give into your bosom. For
with the same measure that ye mete withal it shall
be measured to you again.

39 And he spake a parable unto them, Can the
blind lead the blind ? shall they not both fall into
the ditch ? 40 The disciple is not above his master :
but every one that is perfect shall be as his master.

41 And why beholdest thou the mote that is in
thy brother's eye, but perceivest not the beam that
is in thine own eye ? 42 Either how canst thou say
to thy brother, Brother, let me pull out the mote
that is in thine eye, when thou thyself beholdest not
the beam that is in thine own eye ? Thou hypocrite,
cast out first the beam out of thine own eye, and
then shalt thou see clearly to pull out the mote that
is in thy brother's eye.

43 For a good tree bringeth not forth corrupt fruit ;

वस्तु छीन ले, उससे फिर न मांगो। ३१ जैसा तुम चाहते हो कि मनुष्य
तुम्हारे साथ करें, वैसा ही तुम उनके साथ किया करो।

३२ 'यदि तुम उन्हीं को प्रेम करते हो जो तुमसे प्रेम करते हैं तो तुम्हें
क्या श्रेय! क्योंकि पापी भी अपने से प्रेम करनेवालों के साथ प्रेम करते हैं।
३३ यदि तुम उन्हीं की भलाई करते हो जो तुम्हारे साथ भलाई करते हैं, तो
तुम्हें क्या श्रेय! ऐसा तो पापी भी करते हैं। ३४ यदि तुम उन्हीं को उधार
देते हो जिनसे पाने की आशा रखते हो, तो तुम्हें क्या श्रेय! पापी भी तो
उधार देते हैं कि उतना ही पुनः प्राप्त कर लें। ३५ परंतु तुम अपने शत्रुओं से
प्रेम करो, उनकी भलाई करो और पुनः पाने की आशा न रख कर उधार दो,
तो तुम्हारा पुरस्कार बड़ा होगा और तुम सर्वोच्च के संतान होगे, क्योंकि वह
कृतघ्नों और दुष्टों पर भी कृपालु हैं। ३६ दयालु बनो, जैसे तुम्हारे पिता
दयालु हैं।

दूसरों पर दोष लगाना

३७ 'दोष न लगाओ, तो तुम पर भी दोष न लगाया जाएगा। किसी के
विरुद्ध निर्णय मत दो, तो तुम्हारे विरुद्ध भी निर्णय नहीं होगा। क्षमा करो,
तो तुम्हें भी क्षमा प्राप्त होगी। ३८ दो और तुम्हें भी दिया जाएगा; लोग दबा
दबा कर, हिला हिला कर, बाहर गिरता हुआ माप तुम्हारी गोद में डालेंगे,
क्योंकि जिस माप से तुम मापते हो उसी माप से तुम्हारे लिए मापा जाएगा।

३९ यीशु ने उनसे एक दृष्टांत कहा, 'अंधा अंधे को मार्ग दिखा सकता
है? क्या दोनों ही गड्ढे में नहीं गिरेंगे? ४० शिष्य गुरु से बढ़ कर नहीं हैं,
पर शिक्षा द्वारा वह गुरु जैसा हो जाता है।

४१ तुम अपने भाई की आंख का तिनका क्यों देखते हो? अपनी आंख
का लट्ठा तुम्हें नहीं सूझता? ४२ जब स्वयं अपनी आंख का लट्ठा नहीं देखते
तो तुम अपने भाई से कैसे कह सकते हो, "भाई, लाओ, मैं तुम्हारी आंख का
तिनका निकाल दूं।" ऐ पाखंडी, पहले अपनी आंख का लट्ठा निकाल ले, तभी
अपने भाई की आंख का तिनका निकालने के लिए ठीक ठीक देख सकेगा।

४३ उत्तम वृक्ष पर निकृष्ट फल नहीं लगते और न निकृष्ट वृक्ष पर उत्तम

neither doth a corrupt tree bring forth good fruit.
44 For every tree is known by his own fruit. For of
thorns men do not gather figs, nor of a bramble
bush gather thy grapes. 45 A good man out of the
good treasure of his heart bringeth forth that which
is good ; and an evil man out of the evil treasure
of his heart bringeth forth that which is evil : for
of the abundance of the heart his mouth speaketh.

HEARING AND DOING

46 And why call ye me, Lord, Lord, and do not
the things which I say ? 47 Whosoever cometh to me,
and heareth my sayings, and doeth them, I will shew
you to whom he is like ; 48 he is like a man which
built an house, and digged deep, and laid the foundation
on a rock : and when the flood arose, the stream beat
vehemently upon that house, and could not shake it :
for it was founded upon a rock. 49 But he that heareth,
and doeth not, is like a man that without a foundation
built an house upon the earth ; against which the stream
did beat vehemently, and immediately it fell ; and the
ruin of that house was great.

CURE OF A CENTURION'S SERVANT

7 Now when he had ended all his sayings in the
audience of the people, he entered into Capernaum.
2 And a certain centurion's servant, who was dear
unto him, was sick, and ready to die. 3 And when
he heard of Jesus, he sent unto him the elders of the
Jews, beseeching him that he would come and heal his
servant. 4 And when they came to Jesus, they besought
him instantly, saying, That he was worthy for whom he
should do this : 5 for he loveth our nation, and he hath
built us a synagogue. Then Jesus went with them. And
when he was now not far from the house, the centurion
sent friends to him, saying unto him, Lord, trouble
not thyself : for I am not worthy that thou shouldest
enter under my roof : 7 wherefore neither thought

फल। ४४ प्रत्येक वृक्ष की पहिचान उसके फल से होती है। लोग कांटों
से अंजीर एकत्र नहीं करते और न कटीली झाड़ियों से अंगूर के गुच्छे।
४५ उत्तम मनुष्य अपने हृदय के उत्तम कोष से उत्तम वस्तुएं निकालता है,
और बुरा मनुष्य बुरे भंडार से बुरी वस्तुएं; क्योंकि जो मन में भरा है वही
मुंह पर आता है।

सुनना और करणा

४६ जब तुम मेरा कहना नहीं मानते तो मुझे "प्रभु, प्रभु" क्यों कहते हो ?
४७ मैं तुम्हें बताता हूं कि जो मेरे पास आता है और मेरे बचनों को सुनता
तथा उन पर चलता है, वह किसके समान है। ४८ वह ऐसे मनुष्य के समान
है जिसने घर बनाते समय गहरा खोदा और चट्टान पर नींव डाली। जब
बाढ़ आई और जल की धाराएं घर से टकराईं तो वे उसे हिला न सकीं, क्योंकि
वह सुदृढ़ बना था। ४९ परंतु यदि कोई सुनता है और करता नहीं तो वह
उस मनुष्य के समान है जिसने बिना नींव डाले भूमि पर घर बनाया ; उससे
जलकी धाराएं टकराईं और वह तुरंत गिर पड़ा; उस घर का ध्वंस भीषण था।'

७

शतपति के दास को स्वस्थ करना

१ जब वह अपने सब बचन लोगों को सुना चुके तो कफरनहूम आए।
२ वहां किसी शतपति का अत्यन्त प्रिय दास रोगी था और मृत्यु शैया पर पड़ा
था। ३ यीशु का समाचार पाकर शतपति ने यहूदियों के धर्मवृद्धों को उनके
पास भेजा और निवेदन किया कि आकर उसके दास को स्वस्थ करें। ४ वे लोग
उनके पास आकर आग्रह पूर्वक विनय करने लगे, 'वह इसका पात्र है कि आप
यह उस पर कृपा करें, ५ क्योंकि वह हमारी जाति से प्रेम करता है और उसी
ने हमारे लिए सभागृह बनवा दिया है।' ६ इस पर यीशु उनके साथ चले।
जब वे उसके घर से अधिक दूर नहीं थे, तो शतपति ने अपने मित्रों से
कहला भेजा, 'हे प्रभु, कष्ट न कीजिए। मैं इस योग्य नहीं कि आप मेरी छत
के नीचे आएं। ७ इसी लिए तो मैंने अपने को इस योग्य नहीं समझा कि आपके

I myself worthy to come unto thee : but say in a word,
and my servant shall be healed. 8 For I also am a
man set under authority, having under me soldiers, and
I say unto one, Go, and he goeth ; and to another,
Come, and he cometh ; and to my servant, Do this,
and he doeth it. 9 When Jesus heard these things,
he marvelled at him, and turned him about, and said
unto the people that followed him, I say unto you,
I have not found so great faith, no, not in Israel.
10 And they that were sent, returning to the house,
found the servant whole that had been sick.

RAISING OF THE SON OF A WIDOW AT NAIN

11 And it came to pass the day after, that he went
into a city called Nain ; and many of his disciples went
with him, and much people. 12 Now when he came
nigh to the gate of the city, behold, there was a dead
man carried out, the only son of his mother, and she
was a widow : and much people of the city was with her.
13 And when the Lord saw her, he had compassion
on her, and said unto her, Weep not. 14 And he came
and touched the bier : and they that bare him stood
still. And he said, Young man, I say unto thee, Arise.
15 And he that was dead sat up, and began to speak.
And he delivered him to his mother. 16 And there
came a fear on all : and they glorified God, saying, That
a great prophet is risen up among us ; and, That God
hath visited his people. 17 And this rumour of him
went forth throughout all Judæa, and throughout all
the region round about.

JOHN THE BAPTIST

18 And the disciples of John shewed him of all these
things. 19 And John calling unto him two of his
disciples sent them to Jesus, saying, Art thou he that
should come ? or look we for another ? 20 When the
men were come unto him, they said, John Baptist hath
sent us unto thee, saying, Art thou he that should
come ? or look we for another ? 21 And in that same
hour he cured many of their infirmities and plagues,

पास आऊं। एक शब्द कह दीजिए, मेरा सेवक स्वस्थ हो जायगा। ८ मैं
स्वयं शासन के अधीन हूं, और सैनिक मेरे अधीन हैं। मैं एक से कहता हूं,
"जा" तो वह जाता है, दूसरे से कहता हूं, "आ" तो वह आता है, और अपने
दास से, "यह कर" तो वह कर देता है।' ९ यह सुनकर यीशु को उस पर
आश्चर्य हुआ और उन्होंने अपने पीछे आती हुई भीड़ की ओर मुड़ कर कहा,
'मुझे ऐसा विश्वास इस्राएल में भी नहीं मिला।' १० जब भेजे हुए लोग घर
लौटे तो उन्होंने दास को स्वस्थ पाया।

नाईन की विधवा

११ इसके कुछ समय पश्चात् यीशु नाईन नगर को गए। उनके साथ
उनके शिष्य और एक विशाल जनसमूह जा रहा था। १२ जब वह नगरद्वार पर
पहुँचे तो लोग एक मृतक को बाहर ले जा रहे थे। वह अपनी माता का एक-
मात्र पुत्र था, और वह विधवा थी। नगर का एक बड़ा जनसमूह उसके साथ
था। माता को देखकर प्रभु को दया आई। १३ उन्होंने उससे कहा, 'रोओ
मत'; १४ और आगे बढ़ कर अर्थी को छुआ। कंधा देनेवाले रुक गए। तब
यीशु ने कहा, 'नवयुवक मैं कहता हूं उठ।' १५ मृतक उठ बैठा और बोलने
लगा। यीशु ने उसे माता को सौंप दिया। १६ सब लोग डर गए और
परमेश्वर की स्तुति कर कहने लगे, 'हमारे बीच एक महान् नबी उठे हैं;
परमेश्वर ने अपनी प्रजा की सुधि ली है।' १७ उनके संबंध में यह समाचार
समस्त यहूदिया तथा आसपास के सारे देश में फैल गया।

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का प्रश्न

१८ यूहन्ना के शिष्यों ने उनको इन सब बातों का समाचार दिया तो
१९ उन्होंने दो शिष्यों को बुलाया और प्रभु के पास यह पूछने के लिए
भेजा, 'क्या आनेवाले आप ही हैं, अथवा हम किसी दूसरे की प्रतीक्षा करें?'
२० उन्होंने यीशु के पास जाकर कहा, 'यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने हमको
आपके पास यह पूछने भेजा है कि क्या आनेवाले आप ही हैं, अथवा हम किसी
दूसरे की प्रतीक्षा करें?' २१ उसी क्षण यीशु ने अनेक लोगों को रोगों,
पीड़ाओं और दुष्टात्माओं से स्वस्थ किया, और अनेक अंधों को दृष्टि प्रदान

and of evil spirits ; and unto many that were blind he
gave sight. 22 Then Jesus answering said unto them,
Go your way, and tell John what things ye have seen
and heard ; how that the blind see, the lame walk, the
lepers are cleansed, the deaf hear, the dead are raised,
to the poor the gospel is preached. 23 And blessed is
he, whosoever shall not be offended in me.

24 And when the messengers of John were departed,
he began to speak unto the people concerning John,
What went ye out into the wilderness for to see ? A
reed shaken with the wind ? 25 But what went ye out
for to see ? A man clothed in soft raiment ? Behold, they
which are gorgeously apparelled, and live delicately, are
in kings' courts. 26 But what went ye out for to see ?
A prophet ? Yea, I say unto you, and much more than
a prophet. 27 This is he, of whom it is written,

Behold I shall send my messenger before thy face,
Which shall prepare thy way before thee.

28 For I say unto you, Among those that are born
of women there is not a greater prophet than John
the Baptist ; but he that is least in the kingdom of God
is greater than he. 29 And all the people that heard
him, and the publicans, justified God, being baptized
with the baptism of John. 30 But the Pharisees and
lawyers rejected the counsel of God against themselves,
being not baptized of him.

31 And the Lord said, Whereunto then shall I
liken the men of this generation ? and to what are
they like ? 32 They are like unto children sitting in
the marketplace, and calling one to another, and saying,

We have piped unto you, and ye have not danced ;
We have mourned to you and ye have not wept.

33 For John the Baptist came neither eating bread nor
drinking wine ; and ye say, He hath a devil. 34 The
Son of man is come eating and drinking ; and ye say,
Behold a gluttonous man, and a winebibber, a friend of
publicans and sinners ! 35 But wisdom is justified of
all her children.

की। २२ तब उन्होंने उत्तर दिया, ,जाओ, जो कुछ तुमने देखा और सुना है
उसका समाचार यूहन्ना को दो कि अंधे देखते हैं, लंगड़े चलते हैं, कोढ़ी शुद्ध
किए जाते हैं, बहरे सुनते हैं, मृतक जीवित किए जाते हैं, और दीनों को
सुसमाचार सुनाया जाता है। २३ धन्य है वह जो मेरे विषय भ्रम में नहीं पड़ता।'

२४ यूहन्ना के संदेहवाहकों के चले जाने पर यीशु यूहन्ना के विषय में
जनसमूह से कहने लगे, 'तुम निर्जन प्रदेश में क्या देखने निकले थे? नरकुल
को जो वायु से प्रकंपित होता है? २५ फिर तुम क्या देखने निकले थे?
ऐसे मनुष्य को जो कोमल वस्त्र धारण करता है? जो राजसी वस्त्र धारण करते
और विलास का जीवन बिताते हैं, वे राजभवनों में रहते हैं। २६ तो फिर तुम
क्या देखने निकले थे? नबी को देखने? हां, मैं तुमसे कहता हूं, नबी से
भी महान् व्यक्ति को! २७ उन्हीं के विषय में शास्त्र का लेख है :

"देखो मैं तुम्हारे आगे अपना दूत भेज रहा हूं,
वह तुम्हारे आगे तुम्हारा मार्ग निर्माण करेगा।"

२८ 'मैं तुमसे कहता हूं कि जो स्त्रियों से उत्पन्न हुए हैं उनमें यूहन्ना से
महान् कोई नहीं, तो भी परमेश्वर के राज्य का छोटे से छोटा व्यक्ति
उनसे अधिक महान् है।' २९ सर्व साधारण ने और कर लेनेवालों ने जब यह
सुना तो यूहन्ना का बपतिस्मा लेने के कारण परमेश्वर की धार्मिकता स्वीकार
की, *३० परंतु फरीसियों और व्यवस्थाचार्यों ने उनका बपतिस्मा न लेने के
कारण अपने विषय में परमेश्वर की योजना व्यर्थ कर दी।

३१ 'मैं इस पीढ़ी के लोगों की तुलना किससे करूं? ये किसके समान
हैं? ३२ ये लोग बाजार में बैठे हुए बालकों के समान हैं जो एक दूसरे को
पुकार कर कहते हैं,

"हमने तुम्हारे लिए बांसुरी बजाई, पर तुम न नाचे;
हमने विलाप किया पर तुम न रोए।"

'३३ क्योंकि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले न रोटी खाते और न दाखरस पीते
आए, इस पर भी तुम कहते हो, "वह भूत-ग्रस्त है।" ३४ पर मानव-पुत्र खाता
और पीता आया है; और तुम कहते हो, "देखो, पेटू और पियक्कड़ मनुष्य, कर
लेनेवालों और पापियों का मित्र।" ३५ अस्तु बुद्धि अपनी सब संतानों द्वारा
प्रमाणित होती है?"

---

* अथवा 'परमेश्वर की स्तुति की'

THE ANOINTING OF JESUS' FEET AND THE PARABLE OF THE TWO DEBTORS

36 And one of the Pharisees desired him that he
would eat with him. And he went into the Pharisee's
house, and sat down to meat. 37 And, behold, a
woman in the city, which was a sinner, when she knew
that Jesus sat at meat in the Pharisee's house, brought
an alabaster box of ointment, 38 and stood at his feet
behind him weeping, and began to wash his feet with
tears, and did wipe them with the hairs of her head, and
kissed his feet, and anointed them with the ointment.
39 Now when the Pharisee which had bidden him saw
it, he spake within himself, saying, This man, if he were
a prophet, would have known who and what manner of
woman this is that toucheth him : for she is a sinner.
40 And Jesus answering said unto him, Simon, I have
somewhat to say unto thee. And he saith, Master,
say on.

41 There was a certain creditor which had two
debtors : the one owed five hundred pence, and the
other fifty. 42 And when they had nothing to pay,
he frankly forgave them both. Tell me therefore, which
of them will love him most ? 43 Simon answered and
said, I suppose that he, to whom he forgave most.
And he said unto him, Thou hast rightly judged. 44
And he turned to the woman, and said unto Simon,
Seest thou this woman ? I entered into thine house,
thou gavest me no water for my feet : but she hath
washed my feet with tears, and wiped them with the
hairs of her head. 45 Thou gavest me no kiss : but
this woman since the time I came in hath not ceased
to kiss my feet. 46 My head with oil thou didst not
anoint : but this woman hath anointed my feet with
ointment. 47 Wherefore I say unto thee, Her sins,
which are many, are forgiven ; for she loved much :
but to whom little is forgiven, the same loveth little.
48 And he said unto her, Thy sins are forgiven. 49
And they that sat at meat with him began to say
within themselves, Who is this that forgiveth sins

चरण अभ्यंजन, दो ऋणियों का दृष्टांत

३६ किसी फरीसी ने उनको अपने साथ भोजन करने के लिए निमंत्रित
किया। वह उस फरीसी के घर आए और भोजन करने बैठे। ३७ उस नगर
की एक पापिनी स्त्री यह जान कर कि वह फरीसी के यहां भोजन करने बैठे
हैं, संगमरमर के पात्र में सुगंधित द्रव्य लेकर आई। ३८ वह रोती हुई उनके
पीछे, चरणों के समीप, खड़ी हो गई और अपने आँसुओं से उनके चरण धोने
और सिर के बालों से उन्हें पोंछने लगी। वह बार-बार उनके चरणों का
चुंबन करती एवं उन पर सुगंधित द्रव्य लगाती थी। ३६ यह देख कर वह
फरीसी जिसने उनको निमंत्रण दिया था, सोचने लगा कि यदि यह नबी होते
तो जान जाते कि यह स्त्री जो उन्हें छू रही है, कौन है और कैसी है, क्योंकि यह
पापिनी है। ४० इस पर यीशु ने उससे कहा, 'शमौन, मुझे तुमसे कुछ कहना
है।' वह बोला, 'गुरु कहिए।' ४१ 'किसी महाजन के दो के ऋणी थे। एक
पर उसका पांच सौ दीनार ऋण था और दूसरे पर पचास। ४२ इन दोनों के
पास ऋण चुकाने के लिए कुछ नहीं था, इसलिए उसने दोनों को क्षमा कर
दिया। अब उनमें से कौन उससे अधिक प्रेम करेगा?' ४३ शमौन ने उत्तर
दिया, 'मेरी समझ में वह, जिसका अधिक ऋण क्षमा हुआ।' उन्होंने कहा,
'तुम्हारा निष्कर्ष ठीक है।' ४४ तब उस स्त्री की ओर मुड़ कर उन्होंने शमौन
से कहा, 'इस स्त्री को देखते हो? मैं तुम्हारे घर आया; तुमने मेरे पावों के
लिए जल नहीं दिया, पर इसने आँसुओं से मेरे पांव भिगोए और अपने बालों
से उन्हें पोंछा। ४५ तुमने मेरा चुंबन नहीं किया, परंतु जब से यह भीतर
आई है इसने मेरे पावों का चुंबन लेना नहीं छोड़ा। ४६ तुमने मेरे सिर पर
तेल नहीं डाला, परंतु इसने मेरे पांवों पर सुगंधित द्रव्य लगाया है। ४७ इस
कारण मैं तुमसे कहता हूं कि इसके पाप, जो बहुत हैं, क्षमा हुए क्योंकि इसने
बहुत प्रेम किया है। अस्तु, जिसे थोड़ा क्षमा किया गया है, वह प्रेम भी थोड़ा
करता है।' ४८ तब उन्होंने स्त्री से कहा, 'तेरे पाप क्षमा हुए।' ४९ जो
उनके साथ भोजन पर बैठे थे वे आपस में कहने लगे, 'यह कौन हैं जो पापों को

also ? 50 And he said to the woman, Thy faith hath
saved thee ; go in peace.

8 And it came to pass afterward, that he went
throughout every city and village, preaching and
shewing the glad tidings of the kingdom of God : and
the twelve were with him, 2 and certain women, which
had been healed of evil spirits and infirmities, Mary
called Magdalene, out of whom went seven devils,
3 and Joanna, the wife of Chuza Herod's steward, and
Susanna, and many others, which ministered unto him
of their substance.

PARABLE OF THE SOWER

4 And when much people were gathered together,
and were come to him out of every city, he spake
by a parable : 5 A sower went out to sow his seed :
and as he sowed, some fell by the way side ; and it
was trodden down, and the fowls of the air devoured
it. 6 And some fell upon a rock ; and as soon as
it was sprung up, is withered away, because it lacked
moisture. 7 And some fell among thorns ; and the
thorns sprang up with it, and choked it. 8 And other
fell on good ground, and sprang up, and bare fruit
an hundredfold. And when he had said these things,
he cried, He that hath ears to hear, let him hear.
9 And his disciples asked him, saying, What might
this parable be ? 10 And he said, Unto you it is given
to know the mysteries of the kingdom of God : but
to others in parables ; that

Seeing they might not see,
And hearing they might not hear.

11 Now the parable is this : The seed is the word
of God. 12 Those by the way side are they that hear ;
then cometh the devil, and taketh away the word out
of their hearts, lest they should believe and be saved.
13 They on the rock are they, which, when they hear,
receive the word with joy ; and these have no root,

भी क्षमा करते हैं ? ५० उन्होंने स्त्री से कहा, 'तेरे विश्वास ने तेरा उद्धार किया
है ; शांति से जा।'

८

१ इसके उपरांत यीशु प्रचार करते और परमेश्वर के राज्य का सुसमा-
चार सुनाते हुए नगर-नगर और गाँव-गाँव में विचरण करने लगे। उनके साथ
"बारह" थे, २ और कुछ स्त्रियां भी जो दुष्टात्माओं और रोगों से स्वस्थ
हो गई थीं : मरियम उपनाम मगदलीनी जिनसे सात भूत निकले थे, ३ योअन्ना
जो हेरोदेस के गृहप्रबंधक खूजा की धर्मपत्नी थीं, सुसन्नाह तथा अन्य अनेक
स्त्रियां जो अपनी संपत्ति से उन लोगों की सेवा करती थीं।

बीज बोनेवाले का दृष्टांत

४ विशाल जनसमूह एकत्रित हो गया और नगर-नगर से लोग उनके पास
चले आ रहे थे। तब उन्होंने दृष्टांत कहा, ५ 'एक बोनेवाला अपने बीज बोने
निकला। बोते समय कुछ बीज मार्ग के किनारे गिरा और पैरों से रुंद गया
तथा पक्षियों ने आकर उसे चुग लिया। ६ कुछ चट्टान पर गिरा और नमी
न होने के कारण उगते ही सूख गया। ७ कुछ कांटों के बीच गिरा और कांटों
ने साथ-साथ बढ़कर उसे दबा दिया। ८ पर कुछ अच्छी भूमि पर गिरा
और बढ़कर सौगुना फलीभूत हुआ।' यह कहकर वह उच्च स्वर से बोले,
'जिसके सुनने के कान हों सुन ले।'

९ उनके शिष्यों ने उनसे पूछा, 'इस दृष्टांत का क्या अर्थ है ? १० उन्होंने
कहा, 'परमेश्वरके राज्य के रहस्यों का ज्ञान तुम्हें दिया गया है ; पर दूसरों
के लिए पहेलियां हैं कि,

"वे देखते हुए भी न देखें
और सुनते हुए भी न समझें।"

११ दृष्टांत यह है : "बीज" परमेश्वर का बचन है। १२ "मार्ग के किनारे"
के वे हैं जिन्होंने बचन को सुना है ; पर शैतान आकर उस बचन को उनके
हृदय से उठा ले जाता है कि कहीं ऐसा न हो कि वे विश्वास करें और उनका
उद्धार हो जाए। १३ "चट्टान पर" के वे हैं जो बचन को सुनने पर उसे आनंद से
ग्रहण करते है; पर उनमें जड़ें नहीं होतीं। वे कुछ काल के लिए विश्वास

which for a while believe, and in time of temptation
fall away. 14 And that which fell among thorns are
they, which, when they have heard, go forth, and are
choked with cares and riches and pleasures of this life,
and bring no fruit to perfection. 15 But that on the
good ground are they, which in an honest and good
heart, having heard the word, keep it, and bring forth
fruit with patience.

LESSON FROM A LAMP

16 No man, when he hath lighted a candle, covereth
it with a vessel, or putteth it under a bed ; but setteth
it on a candlestick, that they which enter in may see
the light. 17 For nothing is secret, that shall not be
made manifest ; neither any thing hid, that shall not
be known and come abroad. 18 Take heed therefore
how ye hear : for whosoever hath, to him shall be
given ; and whosoever hath not, from him shall be
taken even that which he seemeth to have.

THE TRUE BROTHERHOOD

19 Then came to him his mother and his brethren,
and could not come at him for the press. 20 And
it was told him by certain which said, Thy mother
and thy brethren stand without, desiring to see thee.
21 And he answered and said unto them, My mother
and my brethren are these which hear the word of
God, and do it.

JESUS STILLS A STORM

22 Now it came to pass on a certain day, that he
went into a ship with his disciples : and he said unto
them, Let us go over unto the other side of the lake.
And they launched forth. 23 But as they sailed he fell
asleep : and there came down a storm of wind on the
lake ; and they were filled with water, and were in
jeopardy. 24 And they came to him, and awoke him,
saying, Master, master, we perish. Then he arose, and
rebuked the wind and the raging of the water : and they

करते हैं पर परीक्षा के समय उनका पतन हो जाता है। १४ "कांटों के बीच
गिरा" यह वे हैं जिन्होंने वचन को सुना है, पर आगे चल कर चिन्ताओं, धन-
संपत्ति और जीवन के सुखभोग से दब जाते हैं और परिपक्व नहीं होने पाते।
१५ और जो "अच्छी भूमि पर" गिरे यह वे हैं जो वचन को सुनकर उसे अपने
सुंदर एवं अच्छे मन में सुरक्षित रखते और धीरता पूर्वक फल देते हैं।

दीपक से शिक्षा

१६ 'कोई मनुष्य दीपक जलाकर उसे वर्तन से नहीं ढकता और न शय्या
के नीचे रखता है, वरन् दीवट पर रखता है कि भीतर आनेवालों को प्रकाश
मिले। १७ क्योंकि कोई वस्तु छिपी नहीं जो प्रकाश में न लाई जाए और
न कोई वस्तु गुप्त है जो ज्ञात एवं प्रकाशित न हो। १८ तो सावधान रहो कि
तुम कैसे सुनते हो! क्योंकि जिसके पास है, उसे दिया जाएगा, और जिसके
पास नहीं है, उससे वह भी ले लिया जाएगा जिसे वह अपना समझता है।'

सच्चा नाता

१९ उनकी माता और भाई उनके पास आए, पर भीड़ के कारण उनसे
भेंट न कर सके। २० उन्हें बताया गया, 'आपकी माता और आपके भाई
बाहर खड़े हैं और आपसे मिलना चाहते हैं।' २१ इसपर यीशु ने उन्हें
उत्तर दिया, 'मेरी माता और मेरे भाई वे हैं जो परमेश्वर का वचन सुनते और
मानते हैं।'

आंधी को शांत करना

२२ एक दिन वह अपने शिष्यों के साथ नौका पर चढ़े और उनसे बोले,
'आओ, हम सरोवर के पार चलें।' उन लोगों ने नौका खोल दी।
२३ जब नाव चली जा रही थी, तो यीशु सो गए। इसी बीच सरोवर में आंधी
चलने लगी; लोग जल से आप्लावित होने लगे और संकट में पड़ गए।
२४ वे यीशु के पास गए और उन्हें जगाकर कहा, 'स्वामी, स्वामी, हम तो
मरे!' वह उठे और आंधी एवं लहरों को रोका। वे थम गईं और स्तब्धता

ceased, and there was a calm. 25 And he said unto
them, Where is your faith? And they being afraid
wondered, saying one to another, What manner of man
is this! for he commandeth even the winds and water,
and they obey him.

CURE OF A GERASENE DEMONIAC

26 And they arrived at the country of the Gada-
renes, which is over against Galilee. 27 And when he
went forth to land, there met him out of the city a
certain man, which had devils long time, and ware no
clothes, neither abode in any house, but in the tombs.
28 When he saw Jesus, he cried out, and fell down
before him, and with a loud voice said, What have I to
do with thee, Jesus, thou Son of God most high?
I beseech thee, torment me not. 29 (For he had com-
manded the unclean spirit to come out of the man.
For oftentimes it had caught him: and he was kept
bound with chains and in fetters; and he brake the
bands, and was driven of the devil into the wilderness.)
30 And Jesus asked him, saying, What is thy name?
And he said, Legion: because many devils were entered
into him. 31 And they besought him that he would
not command them to go out into the deep. 32 And
there was there an herd of many swine feeding on the
mountain: and they besought him that he would suffer
them to enter into them. And he suffered them. 33
Then went the devils out of the man, and entered into
the swine: and the herd ran violently down a steep
place into the lake, and were choked.

34 When they that fed them saw what was done,
they fled, and went and told it in the city and in the
country. 35 Then they went out to see what was done;
and came to Jesus, and found the man, out of whom the
devils were departed, sitting at the feet of Jesus, clothed,
and in his right mind: and they were afraid. 36 They
also which saw it told them by what means he that was
possessed of the devils was healed. 37 Then the whole
multitude of the country of the Gadarenes round about

छा गई। २५ तब वह शिष्यों से बोले, 'कहां हैं तुम्हारा विश्वास ?' पर
वे लोग भयभीत और चकित हो आपस में कहने लगे, 'यह न जाने कौन
हैं जो वायु और जल को आज्ञा देते हैं, और वे इनकी मान लेते हैं।'

गिरासेनी को स्वस्थ करना

२६ तब वे गिरासेनियों के प्रदेश में पहुंचे, जो गलील के सामने दूसरे तट
पर है। २७ जैसे ही यीशु भूमि पर उतरे, उनकी भेंट उस नगर के एक मनुष्य
से हो गई जिसमें भूत थे। वह बहुत दिनों से वस्त्र नहीं पहिनता था और
घर में न रह कर कबरों में रहा करता था। २८ वह यीशु को देखते ही
चिल्लाया, उनके संमुख गिर पड़ा एवं उच्च स्वर से बोला, 'हे यीशु,
सर्वोच्च परमेश्वर के पुत्र, आपको मुझ से क्या काम। मेरी विनय है कि मुझे
न सताइए।' २९ क्योंकि यीशु अशुद्ध आत्मा को मनुष्य में से निकल जाने की
आज्ञा दे रहे थे—कारण कि वह बार बार उस मनुष्य को पकड़ लेता था; लोग
सांकलों और बेड़ियों से बांध कर उसे पहरे में रखते थे, परंतु वह बंधनों को
तोड़ देता था और भूत उसे निर्जन प्रदेश भगा ले जाता था। ३० यीशु ने
उससे पूछा, 'तेरा नाम क्या है ?' उसने उत्तर दिया, 'सेना', क्योंकि उसमें
अनेक भूत घुस आए थे। ३१ वे गिड़गिड़ाकर कहने लगे, 'हमें अथाह गर्त
में जाने की आज्ञा न दीजिए।' वहीं पहाड़ पर शूकरों का विशाल समूह चर
रहा था। ३२ उन्होंने निवेदन किया, 'हमें इनमें प्रविष्ट होने की अनुमति
दीजिए।' उन्होंने अनुमति दे दी। ३३ तब भूत उस मनुष्य से निकल कर
शूकरों में प्रविष्ट हो गए और शूकर-समूह कगार से सरोवर की ओर झपटा
और डूब मरा।

३४ चरवाहे यह घटना देखकर भागे और नगर एवं गांवों में समाचार
जा सुनाया। ३५ लोग बाहर निकलकर देखने आए कि क्या बात है।
उन्होंने यीशु के पास आकर देखा कि जिस मनुष्य में से भूत निकल गए थे,
वह वस्त्र पहने हुए है और स्वस्थ-मन यीशु के चरणों में बैठा है। वे डर गए।
३६ देखने वालों ने उनको बताया कि भूतग्रसित कैसे स्वस्थ हुआ। ३७ तब
गिरासेन के आसपास के सब लोगों ने उनसे कहा, 'हमारे यहां से जाइए',

besought him to depart from them ; for they were taken
with great fear ; and he went up into the ship, and
returned back again. 38 Now the man out of whom
the devils were departed besought him that he might be
with him : but Jesus sent him away, saying, 39 Return
to thine own house, and shew how great things God
hath done unto thee. And he went his way, and pub-
lished throughout the whole city how great things Jesus
had done unto him. 40 And it came to pass, that, when
Jesus was returned, the people gladly received him : for
they were all waiting for him.

THE RAISING OF JAIRUS' DAUGHTER AND THE CURE OF WOMAN WITH AN ISSUE OF BLOOD

41 And, behold, there came a man named Jairus, and
he was a ruler of the synagogue : and he fell down at
Jesus' feet, and besought him that he would come into
his house : 42 for he had one only daughter, about
twelve years of age, and she lay a dying. But as he went
the people thronged him.

43 And a woman having an issue of blood twelve
years, which had spent all her living upon physicians,
neither could be healed of any, 44 came behind him,
and touched the border of his garment : and immediate-
ly her issue of blood stanched. 45 And Jesus said, Who
touched me ? When all denied, Peter and they that
were with him said, Master, the multitude throng thee
and press thee, and sayest thou, Who touched me ?
46 And Jesus said, Somebody hath touched me : for I
perceive that virtue is gone out of me. 47 And when
the woman saw that she was not hid, she came tremb-
ling, and falling down before him, she declared unto him
before all the people for what cause she had touched
him, and how she was healed immediately. 48 And he
said unto her, Daughter, be of good comfort : thy faith
hath made thee whole ; go in peace.

49 While he yet spake, there cometh one from the
ruler of the synagogue's house, saying to him, Thy
daughter is dead : trouble not the Master. 50 But

क्योंकि वे बहुत डर गये थे। यीशु नौका पर चढ़ कर लौट गए। ३८ जिस मनुष्य से भूत निकल गए थे वह प्रार्थना करने लगा कि मुझे अपने साथ रहने दीजिए, परंतु उन्होंने उसे विदा किया और कहा, ३९ 'अपने घर जा, और परमेश्वर ने जो कुछ तेरे लिए किया है उसका वर्णन कर।' वह चला गया और सब नगर में प्रचार करने लगा कि यीशु ने उसके लिए क्या क्या किया।

याईर की पुत्री को जीवित करना और रक्तश्राव से पीड़ित स्त्री को नीरोग करना

४० यीशु के लौटने पर जनसमूह ने उनका स्वागत किया क्योंकि सब उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। ४१ याईर नामक एक मनुष्य जो सभागृह का अधिकारी था, आया और यीशु के चरणों में गिरकर अनुनय करने लगा कि वह उसके घर चलें ४२ क्योंकि उसकी एकमात्र पुत्री, जो लगभग बारह वर्ष की थी, मरणासन्न थी।

जब वह जा रहे थे तो भीड़ ने उन्हें प्रायः दबा ही दिया। ४३ और एक स्त्री जिसे बारह वर्ष से रक्तश्राव था और जिसे कोई स्वस्थ नहीं कर सका था, ४४ पीछे से आई और उनके वस्त्र के सिरे को स्पर्श किया। तत्काल उसका रक्तश्राव बंद हो गया। ४५ यीशु ने कहा, 'मुझे किसने छुआ?' सबके अस्वीकार करने पर पतरस बोले, 'स्वामी, आप भीड़ से घिरे हैं और लोग आप पर गिरे पड़ते हैं।' ४६ इस पर यीशु ने कहा, 'किसीने मुझे छुआ अवश्य है क्योंकि मैं जानता हूं कि मुझसे सामर्थ्य निकली है।' ४७ जब स्त्री ने देखा कि वह छिपी नहीं रह सकती तो कांपती हुई आई, और उनके चरणों पर गिर कर सब लोगों के सामने बताया कि उसने किस कारण उनको स्पर्श किया और कैसे वह तत्काल स्वस्थ हो गई। ४८ उन्होंने कहा, 'पुत्री, तेरे विश्वास ने तुझे स्वस्थ किया है। शांति से जा।'

४९ वह यह कह ही रहे कि सभागृह-अधिकारी के निवास-स्थान से एक मनुष्य आया और बोला, 'आपकी पुत्री की मृत्यु हो गई, गुरु को अब कष्ट न दीजिए।' ५० यीशु ने यह सुन कर उत्तर दिया, 'डरो मत; केवल

when Jesus heard it, he answered him, saying, Fear not :
believe only, and she shall be made whole.

51 And when he came into the house, he suffered
no man to go in, save Peter, and James, and John,
and the father and the mother of the maiden. 52 And
all wept, and bewailed her : but he said, Weep not ;
she is not dead, but sleepeth. 53 And they laughed
him to scorn, knowing that she was dead. 54 And he
put them all out, and took her by the hand, and called,
saying, Maid arise. 55 And her spirit came again,
and she arose straightway : and he commanded to
give her meat. 56 And her parents were astonished :
but he charged them that they should tell no man what
was done.

THE MISSION OF THE TWELVE APOSTLES

9 Then he called his twelve disciples together, and
gave them power and authority over all devils, and
to cure diseases. 2 And he sent them to preach the
kingdom of God, and to heal the sick. 3 And he said
unto them, Take nothing for your journey, neither
staves, nor scrip, neither bread, neither money ; neither
have two coats apiece. 4 And whatsoever house ye
enter into, there abide, and thence depart. 5 And
whosoever will not receive you, when ye go out of that
city, shake off the very dust from your feet for a
testimony against them. 6 And they departed, and
went through the towns, preaching the gospel, and
healing everywhere.

HEROD'S PERPLEXITY

7 Now Herod the tetrarch heard of all that was
done by him : and he was perplexed, because that it
was said of some, that John was risen from the dead ;
8 and of some, that Elias had appeared ; and of others,
that one of the old prophets was risen again. 9 And
Herod said, John have I beheaded : but who is this,
of whom I hear such things ? And he desired to see him.

विश्वास करो, वह स्वस्थ हो जाएगी।'

५१ घर आने पर उन्होंने पतरस, यूहन्ना, याकूब और बालिका के माता-
पिता के अतिरिक्त अन्य किसी को अपने साथ भीतर नहीं आने दिया।
५२ सब लोग रो रहे थे और उसके लिये विलाप कर रहे थे। यीशु ने उनसे
कहा, 'रोओ मत, वह मरी नहीं किन्तु सो रही है।' ५३ लोग यह
जान कर कि वह मर गई है, उनका उपहास करने लगें। ५४ पर यीशु ने
उसका हाथ पकड़कर पुकारा, 'हे बालिका, उठ।' ५५ उसके प्राण लौट
आए और वह तत्काल उठ बैठी। उन्होंने आदेश दिया कि उसे कुछ खाने
को दिया जाए। ५६ उसके माता-पिता आश्चर्यचकित हो गए, पर यीशु ने
उन्हें आज्ञा दी कि यह घटना किसी को न बताएं।

९

प्रेरितों का भेजा जाना

१ उन्होंने "बारह" को एक साथ बुलाया, उन्हें सब भूतों और रोगों को
दूर करने की सामर्थ्य और अधिकार दिया, २ तथा परमेश्वर के राज्यका प्रचार
करने एवं रोगियों को स्वस्थ करने भेजा। ३ यीशु ने उससे कहा, 'यात्रा में
कुछ भी साथ न लो, न लाठी, न झोली, न रोटी, न रुपए ; और न दो कुरते रखो।
४ जिस घर में प्रवेश करो, वहीं रहो, और वहीं से विदा हो। ५ जो तुम्हारा
स्वागत न करें, तो नगर से निकलने समय, उनके विरुद्ध प्रमाण के लिए अपने
पैरों की धूल झाड़ दो।' ६ वे गए और गांव-गांव सुसमाचार सुनाते और
सब कहीं लोगों को स्वस्थ करते हुए भ्रमण करने लगे।

हेरोदेस उलझन में पड़ा

७ राजा* हेरोदेस ने ये सब घटनाएं सुनीं तो दुविधा में पड़ गया, क्योंकि
कुछ लोगों का कथन था, 'यूहना मृतकों में से जीवित हो उठे हैं,' ८ कुछ कहते
थे, 'एलिय्याह प्रकट हुए हैं,' और अन्य कहते थे, 'प्राचीन नबियों में से कोई
जीवित हो उठे हैं।' ९ हेरोदेव ने कहा, 'यूहन्ना का तो मैंने सिर कटवा दिया ;
फिर यह कौन है जिसके संबंध में ये बातें सुन रहा हूं ?' वह उनसे मिलने की
चेष्टा करने लगा।

---

* मूल में — 'तित्रअर्खेस'

THE FEEDING OF THE FIVE THOUSAND

10 And the apostles, when they were returned, told him all that they had done. And he took them, and went aside privately into a desert place belonging to the city called Bethsaida. 11 And the people, when they knew it, followed him : and he received them, and spake unto them of the kingdom of God, and healed them that had need of healing. 12 And when the day began to wear away, then came the twelve, and said unto him, Send the multitude away, that they may go into the towns and country round about, and lodge, and get victuals : for we are here in a desert place. 13 But he said unto them, Give ye them to eat. And they said, We have no more but five loaves and two fishes ; except we should go and buy meat for all this people. 14 For they were about five thousand men. And he said to his disciples, Make them sit down by fifties in a company. 15 And they did so, and made them all sit down. 16 Then he took the five loaves and the two fishes, and looking up to heaven, he blessed them, and brake, and gave to the disciples to set before the multitude. 17 And they did eat, and were all filled : and there was taken up of fragments that remained to them twelve baskets.

PETER'S CONFESSION THAT JESUS IS THE CHRIST

18 And it came to pass, as he was alone praying, his disciples were with him : and he asked them, saying, Whom say the people that I am ? 19 They answering said, John the Baptist ; but some say, Elias ; and others say, that one of the old prophets is risen again. 20 He said unto them, But whom say ye that I am ? Peter answering said, The Christ of God.

JESUS FORETELLS HIS DEATH AND RESURRECTION

21 And he straitly charged them, and commanded them to tell no man that thing ; 22 saying, The Son of man must suffer many things, and be rejected of

पांच सहस्र को भोजन कराना

१० प्रेरितों ने लौट कर जो कुछ भी किया था यीशु को बताया। वह उनको लेकर एकांत में, बैतसैदा नामक नगर में चले गए। ११ जब लोगों को इसका पता चला तो वे उनके पीछे-पीछे आए। यीशु ने उसका स्वागत किया, उन्हें परमेश्वर के राज्य के संबंध में बताया और जिन्हें रोगमुक्त होने की आवश्यकता थी उनको स्वस्थ किया। १२ अब दिन ढलने लगा था; इसलिए "बारह" ने पास आकर उनसे कहा, 'जनसमूह को विदा कीजिए कि आसपास के गांवों और क्षेत्रों में जाकर ठहरने और खाने का प्रबंध करें, क्योंकि यहां हम निर्जन स्थान में हैं।' १३ उन्होंने कहा, 'तुम्ही इन्हें खाने को दो। वे बोले, 'हमारे पास पांच रोटियों और दो मछलियों से अधिक कुछ नहीं हैं। हां, यदि हम जाकर इन सब लोगों के लिए भोजन मोल लें तो काम चले।' १४ क्योंकि वहाँ पांच सहस्त्र के लगभग पुरुष थे। यीशुने अपने शिष्यों से कहा, 'इनको पचास-पचास की पंक्तियों में बैठा दो।' १५ उन लोगों ने ऐसा ही किया और सबको बैठा दिया। १६ तब उन्होंने पांच रोटियां और दो मछलियां लीं और ऊपर आकाश की ओर देखकर उन्हें आशिष दी, फिर उनको तोड़ा और शिष्यों को दिया कि लोगों को परोसें। १७ सबने भोजन किया और तृप्त हुए; और उन्होंने बचे हुए टुकड़ों से भरी हुई बारह टोकरियां उठाईं।

पतरस की स्वीकारोक्ति

१८ एक बार जब वह एकांत में प्रार्थना कर रहे थे और शिष्य उनके साथ थे तो उन्होंने पूछा, 'जनता क्या कहती है, मैं कौन हूं?' १९ उन्होंने उत्तर दिया, 'यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला; कुछ कहते हैं एलिय्याह; और अन्य, 'प्राचीन नबियों में से कोई जीवित हो उठा है।' २० तब उन्होंने कहा, 'परंतु तुम क्या कहते हो कि मैं कौन हूं?' पतरस ने उत्तर दिया, 'परमेश्वर के ख्रिस्त।'

मृत्यु एवं पुनरुत्थान संबंधी प्रथम भविष्यवाणी

२१ इस पर उन्होंने सब को चेतावनी एवं आज्ञा दी कि यह बात किसी से न कहें २२ और बताया, 'यह अनिवार्य है कि मानव पुत्र को बहुत दुःख सहने पड़ें, वह धर्मवृद्धों महापुरोहितों और शास्त्रियों द्वारा तुच्छ समझा जाए, मार डाला जाए और तीसरे दिन मृतकों में से जीवित हो उठे।'

the elders and chief priests and scribes, and be slain,
and be raised the third day.

A CALL TO RENOUNCE SELF

23 And he said to them all, If any man will come
after me, let him deny himself, and take up his cross
daily, and follow me. 24 For whosoever will save
his life shall lose it : but whosoever will lose his life
for my sake, the same shall save it. 25 For what
is a man advantaged, if he gain the whole world, and
lose himself, or be cast away ? 26 For whosoever shall
be ashamed of me and of my words, of him shall the
Son of man be ashamed, when he shall come in his
own glory, and in his Father's, and of the holy angels.
27 But I tell you of a truth, there be some standing
here, which shall not taste of death, till they see the
kingdom of God.

THE TRANSFIGURATION

28 And it came to pass about an eight days after
these sayings, he took Peter and John and James, and
went up into a mountain to pray. 29 And as he
prayed, the fashion of his countenance was altered,
and his raiment was white and glistering. 30 And,
behold, there talked with him two men, which were
Moses and Elias : 31 who appeared in glory, and spake
of his decease which he should accomplish at Jerusalem.
32 But Peter and they that were with him were heavy
with sleep : and when they were awake, they saw his
glory, and the two men that stood with him. 33 And it
came to pass, as they departed from him, Peter said
unto Jesus, Master, it is good for us to be here : and
let us make three tabernacles ; one for thee, and one
for Moses, and one for Elias : not knowing what he
said. 34 While he thus spake, there came a cloud,
and overshadowed them : and they feared as they
entered into the cloud. 35 And there came a voice out
of the cloud, saying, This is my beloved Son : hear him.
36 And when the voice was past, Jesus was found

स्वार्थ-त्याग पर शिक्षा

२३ उन्होंने सबसे कहा, 'यदि कोई मेरे पीछे जाना चाहे तो अपने आपका
परित्याग करे, प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए और मेरे पीछे हो ले। २४ क्योंकि
जो कोई अपने प्राण बचाना चाहें वह उन्हें खोएगा और जो कोई
आपने प्राण मेरे निमित खोएगा, वह उन्हें बचाएगा। २५ यदि कोई मनुष्य
समस्त जगत को प्राप्त करे परंतु अपने आप को नष्ट कर दे अथवा गंवा दे
तो उसे क्या लाभ ? २६ क्योंकि जो कोई मुझसे और मेरे बचनों से लज्जित
होता है तो मानव-पुत्र भी—जब वह अपनी, पिता की और पवित्र स्वर्गदूतों की
महिमा में आएगा—उससे लज्जित होगा। २७ मैं तुमसे सच कहता हूं कि
यहां कुछ व्यक्ति खड़े हैं, वे जब तक परमेश्वर का राज्य न देख लें मृत्यु को
न चखेंगे।'

दिव्य रूपांतर

२८ इस कथन के कोई आठ दिन पश्चात् यीशु ने पतरस यूहन्ना और
याकूब को लिया और पर्वत पर प्रार्थना करने गए। २९ जब वह प्रार्थना कर
रहे थे तो उनके मुख का रूप कुछ और ही हो गया और उनके वस्त्र उज्वल
हो जगमगाने लगे। ३० देखो, दो पुरुष, मूसा और एलिय्याह, उनसे वार्तालाप
कर रहे थे। ३१ वे दोनों तेजोमय दीख पड़े और यीशु के निर्गमन* के विषय
चर्चा करने लगे जिसे वह यरूशलेम में संपन्न करने वाले थे। ३२ पतरस और
उनके साथी निद्रा से आक्रान्त थे पर जब सचेत हुए तो उन्होंने यीशु के तेज
को और उन दो पुरुषों को जो उनके साथ थे देखा। ३३ जब वे दोनों उनसे बिदा
होने लगे तो पतरस ने यीशु से कहा, 'स्वामी, कैसी उत्तम बात कि हम यहां
हैं। आइए हम तीन मंडप बनाएं, एक आप के लिए, एक मूसा के लिए और
एक एलिय्याह के लिए'—परंतु वह नहीं जानते थे कि क्या कह रहे थे। ३४ वह
इस प्रकार बोल ही रहे थे कि एक मेघ ने उन्हें आच्छादित कर लिया। मेघ
में प्रवेश करते समय वे डर गए। ३५ और मेघ में से वाणी हुई, 'यह
मेरा पुत्र है, मेरा चुना हुआ, इसको सुनो।' ३६ वाणी के पश्चात् यीशु मात्र
ही दिखाई दिए। शिष्य चुप रहे और जो कुछ उन्होंने देखा था उसके संबंध में
एक शब्द भी उन दिनों किसी से न बोले।

* अर्थात् मृत्यु

alone. And they kept it close, and told no man in
those days any of those things which they had seen.

HEALING OF A DEMONIAC BOY

37 And it came to pass, that on the next day, when
they were come down from the hill, much people met
him. 38 And, behold, a man of the company cried out,
saying, Master, I beseech thee, look upon my son:
for he is mine only child. 39 And, lo, a spirit taketh
him, and he suddenly crieth out; and it teareth him
that he foameth again, and bruising him hardly
departeth from him. 40 And I besought thy disciples
to cast him out; and they could not. 41 And Jesus
answering said, O faithless and perverse generation,
how long shall I be with you, and suffer you? Bring
thy son hither. 42 And as he was yet a coming, the
devil threw him down, and tare him. And Jesus
rebuked the unclean spirit, and healed the child, and
delivered him again to his father. 43 And they were
all amazed at the mighty power of God.

JESUS' SECOND PREDICTION OF HIS DEATH

But while they wondered every one at all things
which Jesus did, he said unto his disciples, 44 Let
these sayings sink down into your ears: for the Son
of man shall be delivered into the hands of men. 45 But
they understood not this saying, and it was hid from
them, that they perceived it not: and they feared
to ask him of that saying.

ON HUMILITY AND TOLERATION

46 Then there arose a reasoning among them, which
of them should be greatest. 47 And Jesus, perceiving
the thought of their heart, took a child, and set him
by him, 48 and said unto them, Whosoever shall receive
this child in my name receiveth me: and whosoever
shall receive me receiveth him that sent me: for he
that is least among you all, the same shall be great.

अशुद्ध-आत्मा ग्रसित बालक को स्वस्थ करना

३७ दूसरे दिन जब वे लोग पर्वत से उतरे तो एक बड़ी भीड़ यीशु को
मिली। ३८ भीड़ में से एक मनुष्य ने उच्च स्वर से कहा, 'गुरुजी, मेरी आपसे
प्रार्थना है कि मेरे पुत्र पर दया-दृष्टि करें; यह मेरा एकमात्र पुत्र है, ३९ एक
आत्मा इसे पकड़ लेती है और यह एकाएक चिल्लाने लगता है। वह इसे
ऐसा मरोड़ती है कि यह मुंह से झाग डालने लगता है; वह इसे क्षत-विक्षत
करती है और बड़ी कठिनाई से छोड़ती है। ४० मैंने आपके शिष्यों से
निवेदन किया कि उसे निकालें पर वे नहीं निकाल सके।' ४१ यीशु ने उत्तर
दिया, 'हे अविश्वासी और भ्रष्ट पीढ़ी, कब तक मैं तुम्हारे साथ रहूंगा और
तुम्हारी सहन करूंगा? अपने पुत्र को यहां लाओ।' ४२ अस्तु, बालक
पास आ ही रहा था कि भूत ने उसे पटक दिया और उसे मरोड़ने लगा। यीशु
ने अशुद्ध आत्मा को रोका तथा बालक को स्वस्थ करके पिता को सौंप दिया।
४३ परमेश्वर का प्रताप देखकर सब लोग विस्मय आश्चर्य चकित रह गए।

मृत्यु संबंधी द्वितीय भविष्यवाणी

सारी जनता उनके इन सब कर्मों को देखकर विस्मित थी, तो उन्होंने
अपने शिष्यों से कहा, ४४ 'कान खोल कर ये शब्द सुन लो; मानव-पुत्र मनुष्यों
के हाथ पकड़वाया जाने को है।' ४५ यह बात उन लोगों की समझ में न
आई; उनसे छिपी रही कि कहीं वे उसे समझ न लें। और वे इस संबंध में
पूछने से डरते थे।

नम्रता और सहिष्णुता पर शिक्षा

४६ उनके बीच यह विवाद छिड़ा कि हम में बड़ा कौन है। ४७ यीशु
ने उनके हृदय के विचार जानकर एक बालक को लिया; और उसे अपने समीप
खड़ा कर ४८ उनसे कहा, 'जो कोई मेरे नाम से इस बालक का स्वागत करता
है, वह मेरा स्वागत करता है, और जो मेरा स्वागत करता है, वह मेरे भेजनेवाले
का स्वागत करता है; क्योंकि जो तुम सब में छोटा है, वही बड़ा है।'

49 And John answered and said, Master, we saw one casting out devils in thy name ; and we forbad him, because he followeth not with us. 50 And Jesus said unto him, Forbid him not : for he that is not against us is for us.

JESUS SETS OUT FOR JERUSALEM : INHOSPITABLE SAMARITANS

51 And it come to pass, when the time was come that he should be received up, he stedfastly set his face to go to Jerusalem, 52 and sent messengers before his face : and they went, and entered into a village of the Samaritans, to make ready for him. 53 And they did not receive him, because his face was as though he would go to Jerusalem. 54 And when his disciples James and John saw this, they said, Lord, wilt thou that we command fire to come down from heaven, and consume them, even as Elias did ? 55 But he turned and rebuked them, and said, Ye know not what manner of spirit ye are of. 56 For the Son of man is not come to destroy men's lives, but to save them. And they went to another village.

WOULD-BE DISCIPLES TESTED

57 And it came to pass, that, as they went in the way, a certain man said unto him, Lord, I will follow thee whithersoever thou goest. 58 And Jesus said unto him, Foxes have holes, and birds of the air have nests ; but the Son of man hath not where to lay his head. 59 And he said unto another, Follow me. But he said, Lord, suffer me first to go and bury my father. 60 Jesus said unto him, Let the dead bury their dead : but go thou and preach the kingdom of God. 61 And another also said, Lord, I will follow thee ; but let me first go bid them farewell, which are at home at my house. 62 And Jesus said unto him, No man, having put his hand to the plough, and looking back, is fit for the kingdom of God.

४९ यूहन्ना ने कहा, 'स्वामी, हमने एक मनुष्य को आपके नाम से भूत निकालते देखा तो उसे रोकने का प्रयास किया, क्योंकि वह हमारा सह अनुयायी नहीं है।' ५० यीशु ने कहा, 'उसे मत रोको, क्योंकि जो तुम्हारे विरोध में नहीं, वह तुम्हारे पक्ष में है।'

यरूशलेम-यात्रा का आरंभ

सामरियों द्वारा निरादर

५१ जब यीशु के स्वर्गारोहण के दिन निकट आए तो उन्होंने यरूशलेम जाने का दृढ़ निश्चय किया और संदेशवाहकों को अपने आगे भेजा। ५२ वे आगे गए कि सामरियों के एक गांव में प्रवेश कर यीशु के लिए तैयारी करें। ५३ पर वहां लोगों ने उनका स्वागत नहीं किया क्योंकि यरूशलेम जा रहे थे। ५४ जब उनके शिष्य याकूब और यूहन्ना ने यह देखा तो बोल उठे, 'क्या आप चाहते हैं कि हम आज्ञा दें कि आकाश से आग गिरे और इन्हें भस्म कर दे?' ५५ यीशु ने पीछे मुड़ कर उनको रोका,* ५६ और वे दूसरे गांव को चले गए।

शिष्य बनने की उत्सुकता

५७ जब वे मार्ग में जा रहे थे तो किसी ने यीशु से कहा, 'जहां कहीं आप जाएंगे, मैं आपका अनुसरण करूंगा।' ५८ उन्होंने उत्तर दिया 'लोमड़ियों के मांदें हैं और आकाश के पक्षियों के घोंसले, परंतु मानव-पुत्र के लिए सिर रखने को भी स्थान नहीं।' ५९ एक अन्य से उन्होंने कहा, 'मेरा अनुसरण करो।' पर उसने उत्तर दिया, 'मुझे पहले जाकर अपने पिता को गाड़ने की अनुमति दीजिए।' ६० उन्होंने उससे कहा, 'मुरदों को अपने मुरदे गाड़ने दो; परंतु तुम जाओ और परमेश्वर के राज्य का समाचार सुनाओ।' ६१ कोई दूसरा बोला, 'प्रभु, मैं आपका अनुसरण करूंगा, परंतु पहले मुझे अनुमति दीजिए कि अपने कुटुंबियों से विदा ले आऊं।' ६२ यीशु ने उससे कहा, 'जो हल पर हाथ रख कर पीछे देखता है वह परमेश्वर के राज्य के उपयुक्त नहीं है।'

* कुछ प्राचीन प्रतियों में ये शब्द भी पाये जाते हैं—और कहा, 'तुम नहीं जानते कि तुम कैसी आत्मा के हो क्योंकि मानव-पुत्र मनुष्यों का जीवन नष्ट करने नहीं वरन् उनका उद्धार करने आया है।'

THE MISSION OF THE SEVENTY DISCIPLES

10 After these things the Lord appointed other
seventy also, and sent them two and two before
his face into every city and place, whither he himself
would come. 2 Therefore said he unto them, The
harvest truly is great, but the labourers are few : pray
ye therefore the Lord of the harvest, that he would
send forth labourers into his harvest. 3 Go your ways :
behold, I send you forth as lambs among wolves. 4 Carry
neither purse, nor scrip, nor shoes : and salute no man
by the way. 5 And into whatsoever house ye enter,
first say, Peace be to this house. 6 And if the son of
peace be there, your peace shall rest upon it : if not,
it shall turn to you again. 7 And in the same house
remain, eating and drinking such things as they give :
for the labourer is worthy of his hire. Go not from
house to house. 8 And into whatsoever city ye
enter, and they receive you, eat such things as are set
before you : 9 and heal the sick that are therein, and
say unto them, The kingdom of God is come nigh
unto you. 10 But into whatsoever city ye enter, and
they receive you not, go your ways out into the streets
of the same, and say, 11 Even the very dust of your
city, which cleaveth on us, we do wipe off against you :
notwithstanding be ye sure of this that the kingdom
of God is come nigh unto you. 12 But I say unto
you, that it shall be more tolerable in that day for
Sodom, than for that city. 13 Woe unto thee, Chorazin !
woe unto thee, Bethsaida ! for if the mighty works had
been done in Tyre and Sidon, which have been done
in you, they had a great while ago repented, sitting in
sackcloth and ashes. 14 But it shall be more tolerable
for Tyre and Sidon at the judgment, than for you.
15 And thou, Capernaum, which art exalted to heaven,
shalt be thrust down to hell. 16 He that heareth you
heareth me ; and he that despiseth you despiseth me ;
and he that despiseth me despiseth him that sent me.

१०

बहत्तर शिष्यों का भेजा जाना

१ इसके अनंतर प्रभु ने अन्य*बहत्तर व्यक्ति नियुक्त किए और प्रत्येक
नगर या स्थान को, जहां वह स्वयं जाने वाले थे, उन्हें दो-दो करके आगे
भेजा; २ और उनसे कहा, 'पके खेत तो बहुत हैं पर श्रमिक थोड़े हैं, इसलिए
खेत के स्वामी से प्रार्थना करो कि वह अपने खेत काटने के लिए श्रमिक भेजे।
३ जाओ, मैं तुम्हें भेड़ियों के बीच मेमनों के सदृश भेज रहा हूं। ४ न बटुआ
लो, न झोली, न जूते। मार्ग में किसी को नमस्कार न करो। ५ जब किसी
घर में प्रवेश करो तो पहले कहो, "इस घर में शांति हो।" ६ यदि वहां कोई
शांति का पात्र† होगा तो शांति उसमें विराजेगी, और नहीं तो तुम्हारे
पास लौट आएगी। ७ उसी घर में ठहरे रहो, जो कुछ उनसे मिले वही
खाओ-पीओ, क्योंकि श्रमिक को अपना पारिश्रमिक मिलना चाहिए। ८ जब
तुम किसी नगर में प्रवेश करो और लोग तुम्हारा स्वागत करें तो जो कुछ
तुम्हारे संमुख रखा जाए, खाओ। ९ वहां के रोगियों को स्वस्थ करो और
कहो, "परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ पहुंचा है।" १० परंतु यदि किसी
नगर में प्रवेश करो और लोग तुम्हारा स्वागत न करें तो बाहर वहां की
सड़कों पर निकल जाओ और कहो, ११ "तुम्हारे नगर की धूल भी जो हमारे
पैरों से लगी है हम तुम्हारे सामने झाड़े देते हैं। पर यह जान लो कि परमेश्वर
का राज्य निकट आ गया है।" १२ मैं कहता हूं कि उस दिवस उस नगर की
अपेक्षा सदोम की दशा अधिक सहनीय होगी। १३ हाय खुराजीन! हाय
बैतसैदा! जो सामर्थ्य के काम तुममें किए गए, वे यदि सूर और सैदा में
किए जाते, तो उन्होंने बहुत पहले ही टाट ओढ़कर और राख में बैठकर हृदय-
परिवर्तन कर लिया होता। १४ अस्तु, न्याय के दिन तुम्हारी दशा से सूर
और सैदा की दशा अधिक सहनीय होगी। १५ और तू, हे कफरनहूम, क्या
तू आकाश तक उठेगा? तू तो पाताल में गिरेगा! १६ जो तुम्हारी सुनता
है, वह मेरी सुनता है, जो तुम्हारी उपेक्षा करता है, वह मेरी उपेक्षा करता है,
और जो मेरी उपेक्षा करता है, वह उसकी उपेक्षा करता है जिसने मुझे
भेजा है।'

---

* कुछ प्राचीन प्रतियों में 'सत्तर'

† अक्षरशः 'शांति-पुत्र'

THEIR RETURN

17 And the seventy returned again with joy, saying,
Lord, even the devils are subject unto us through thy
name. 18 And he said unto them, I beheld Satan as
lightning fall from heaven. 19 Behold, I give unto you
power to tread on serpents and scorpions, and over
all the power of the enemy : and nothing shall by any
means hurt you. 20 Notwithstanding in this rejoice
not, that the spirits are subject unto you ; but rather
rejoice, because your names are written in heaven.

JESUS' THANKSGIVING

21 In that hour Jesus rejoiced in spirit, and said,
I thank thee, O Father, Lord of heaven and earth, that
thou hast hid these things from the wise and prudent,
and hast revealed them unto babes : even so, Father ;
for so it seemed good in thy sight. 22 All things are
delivered to me of my Father : and no man knoweth
who the Son is, but the Father ; and who the Father
is, but the Son, and he to whom the Son will reveal
him.

23 And he turned him unto his disciples, and said
privately, Blessed are the eyes which see the things that
ye see : 24 for I tell you, that many prophets and kings
have desired to see those things which ye see, and have
not seen them ; and to hear those things which ye hear,
and have not heard them.

HOW TO SECURE ETERNAL LIFE

25 And, behold, a certain lawyer stood up, and
tempted him, saying, Master, what shall I do to inherit
eternal life ? 26 He said unto him, What is written in
the law ? how readest thou ? 27 And he answering
said, Thou shalt love the Lord thy God with all thy
heart, and with all thy soul, and with all thy strength,
and with all thy mind ; and thy neighbour as thyself.
28 And he said unto him, Thou hast answered right :
this do, and thou shalt live.

बहत्तर शिष्यों का लौटना

१७ बहत्तर बड़े आनंद में लौटे और कहने लगे, 'प्रभु, आपके नाम से
भूत भी हमारे अधीन हैं।' १८ यीशु ने उनसे कहा, 'मैंने शैतान को बिजली
के सदृश आकाश से गिरा हुआ देखा। १९ मैंने तुम्हें सर्पों और बिच्छुओं
को कुचलने की सामर्थ्य एवं शत्रु की समस्त शक्ति पर अधिकार दिया है, और
कोई भी तुम्हारा बाल बांका न करेगा। २० तो भी इस कारण आनंद न मनाओ
कि आत्माएं तुम्हारे अधीन हैं, परंतु इसलिए आनंदित हो कि तुम्हारे नाम
स्वर्ग में लिखे हैं।'

यीशु का धन्यवाद देना

२१ उसी समय उन्होंने पवित्र आत्मा में उल्लसित होकर कहा, 'हे पिता
स्वर्ग और पृथ्वी के स्वामी, मैं तुझे धन्यवाद देता हूं कि तूने ये बातें ज्ञानियों
और बुद्धिमानों से गुप्त रखीं और शिशुओं पर प्रकाशित कीं। हां, हे पिता,
क्योंकि तुझे यही अच्छा लगा। २२ मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सौंपा है और
कोई नहीं जानता कि पुत्र कौन है पर केवल पिता; और न कोई जानता है कि
पिता कौन है पर केवल पुत्र, और वह जिस पर पुत्र उसे प्रकाशित करना चाहे।'

२३ तब उन्होंने शिष्यों की ओर मुड़कर व्यक्तिगत रूप से कहा, 'धन्य हैं वे
नत्र जो ये बातें देखते हैं जिन्हें तुम देख रहे हो। २४ मैं तुमसे कहता हूं कि
अनेक नबियों और राजाओं ने चाहा कि जो बातें तुम देख रहे हो देखें, पर
न देख न सके; और जो बातें तुम सुन रहे हो सुनें, पर न सुन सके।'

शाश्वत जीवन की प्राप्ति का उपाय

२५ तब एक व्यवस्थाचार्य उठा और उसने यीशु की परीक्षा करने के लिए
पूछा, 'गुरुजी, शाश्वत जीवन का उत्तराधिकारी होने के लिए मैं क्या करूं?'
२६ उन्होंने कहा, 'व्यवस्था में क्या लिखा है? तुम्हारा क्या अध्ययन
है?' २७ उसने उत्तर दिया, 'तू प्रभु अपने परमेश्वर को अपने संपूर्ण मन,
संपूर्ण जीवन, संपूर्ण शक्ति और संपूर्ण बुद्धि से प्रेम कर, और अपने पड़ोसी
को अपने समान।' २८ उन्होंने उससे कहा, 'तुमने ठीक उत्तर दिया।
यही करो, और तुम जीवित रहोगे।'

THE PARABLE OF THE GOOD SAMARITAN

29 But he, willing to justify himself, said unto Jesus,
And who is my neighbour ? 30 And Jesus answering
said, A certain man went down from Jerusalem to
Jericho, and fell among thieves, which stripped him of
his raiment, and wounded him, and departed, leaving
him half dead. 31 And by chance there came down a
certain priest that way : and when he saw him, he
passed by on the other side. 32 And likewise a Levite,
when he was at the place, came and looked on him, and
passed by on the other side. 33 But a certain Samaritan,
as he journeyed, came where he was : and when he saw
him, he had compassion on him, 34 and went to him,
and bound up his wounds, pouring in oil and wine, and
set him on his own beast, and brought him to an inn,
and took care of him. 35 And on the morrow when he
departed, he took out two pence, and gave them to the
host, and said unto him, Take care of him ; and what-
soever thou spendest more, when I come again, I will
repay thee. 36 Which now of these three, thinkest
thou, was neighbour unto him that fell among the
thieves ? 37 And he said, He that shewed mercy on
him. Then said Jesus unto him, Go, and do thou
likewise.

MARTHA AND MARY

38 Now it came to pass, as they went, that he
entered into a certain village : and a certain woman
named Martha received him into her house. 39 And
she had a sister called Mary, which also sat at Jesus' feet,
and heard his word. 40 But Martha was cumbered
about much serving, and came to him, and said, Lord,
dost thou not care that my sister hath left me to serve
alone ? bid her therefore that she help me. 41 And
Jesus answered and said unto her, Martha, Martha, thou
art careful and troubled about many things : 42 but one
thing is needful : and Mary hath chosen that good
part, which shall not be taken away from her.

दयालु सामरी

२९ परंतु उसने अपने को ठीक प्रमाणित करने के लिए यीशु से पूछा,
'मेरा पड़ोसी कौन है ?' ३० यीशु ने उत्तर दिया, कि 'कोई मनुष्य यरूशलेम
से यरीहो जा रहा था। वह डाकुओं से घिर गया। उन्होंने उसे लूट लिया
और मार पीट कर तथा अधमरा छोड़कर चलते बने। ३१ संयोग वश एक
पुरोहित उसी मार्ग से जा रहा था; उसने उसे देखा तो कतरा कर चला गया।
३२ इसी प्रकार एक लेवी भी उस स्थान पर आया, उसे देखा और कतरा कर
चला गया। ३३ तब एक सामरी यात्री उसके समीप से निकला। वह उसे देखकर
दया से द्रवित हो उठा, ३४ उसके निकट गया और उसके घावों पर तेल
तथा दाखरस डालकर पट्टियां बांधी; तब उसे अपनी सवारी पर बैठा कर एक
सराय में ले गया और वहां उसकी सेवा-सुश्रूषा की। ३५ दूसरे दिन उसने दो
दीनार* निकाल कर सराय के स्वामी को दीं और कहा, "इसकी सेवा-सुश्रूषा
करना; यदि तुम्हारा अधिक व्यय हो जाए तो लौटने पर मैं तुम्हें चुका दूंगा।"
३६ तुम्हारे विचार में इन तीनों में से कौन डाकुओं के हाथ पड़े मनुष्य का
पड़ोसी सिद्ध हुआ।' ३७ उसने कहा, 'जिसने उसके प्रति दया दिखाई।'
यीशु ने उससे कहा, 'जाओ, तुम भी ऐसा ही करो।'

मार्था और मरियम

३८ जब वे लोग यात्रा कर रहे थे तो यीशु किसी गांव में आए। और वहां
मार्था नामक स्त्री ने उनका अपने घर पर अतिथि-सत्कार किया। ३९ उसके
एक बहिन थी जिसका नाम मरियम था। वह प्रभु के चरणों में बैठी उनके
वचन सुन रही थी, ४० जब कि मार्था अनेक सेवा-कार्यों में उलझी हुई थी।
४१ उसने पास आकर कहा, 'प्रभु, आपको कुछ चिन्ता नहीं कि मुझे मेरी
बहिन ने सेवा-सत्कार करने के लिए अकेली छोड़ दिया है। उससे कहिए
कि मेरा हाथ बंटाए;' प्रभु ने उसे उत्तर दिया, 'मार्था, मार्था, तुम बहुत सी
वस्तुओं के लिए चिंतित और व्याकुल हो। परंतु थोड़ी ही वस्तुओं की
आवश्यकता है, ४२ वरन् एक ही की। मरियम ने उस उत्तम भाग को चुन
लिया है जो उससे छीना न जाएगा।'

---

* अतिथि-सत्कार

THE LORD'S PRAYER

11 And it came to pass, that, as he was praying in a
certain place, when he ceased, one of his disciples
said unto him, Lord, teach us to pray, as John also
taught his disciples. 2 And he said unto them, When ye
pray, say,

Our Father, which art in heaven,
Hallowed be thy name.
Thy kingdom come.
Thy will be done, as in heaven, so in earth.
3 Give us day by day our daily bread.
4 And forgive us our sins ;
For we also forgive every one that is indebted to us.
And lead us not into temptation ; but deliver us from evil.

PRESISTENT PRAYER AND THE PARABLE OF THE FRIEND AT MIDNIGHT

5 And he said unto them, Which of you shall have
a friend, and shall go unto him at midnight, and say
unto him, Friend, lend me three loaves ; 6 for a friend
of mine in his journey is come to me, and I have nothing
to set before him ? 7 And he from within shall
answer and say, Trouble me not : the door is now shut,
and my children are with me in bed ; I cannot rise and
give thee. 8 I say unto you, Though he will not rise
and give him, because he is his friend, yet because of his
importunity he will rise and give him as many as he
needeth. 9 And I say unto you, Ask, and it shall be
given you ; seek, and ye shall find ; knock, and it shall
be opened unto you. 10 For every one that asketh
receiveth ; and he that seeketh findeth ; and to him that
knocketh it shall be opened. 11 If a son shall ask bread
of any of you that is a father will he give him a stone ?
or if he ask a fish, will he for a fish give him a serpent ?
12 Or if he shall ask an egg, will he offer him a scor-
pion ? 13 If ye then, being evil, know how to give

११

प्रभु की प्रार्थना

१ एक समय किसी स्थान पर वह प्रार्थना कर रहे थे। जब समाप्त कर चुके
तो उनके एक शिष्य ने कहा, 'प्रभु, जैसे यूहन्ना ने अपने शिष्यों को प्रार्थना
करना सिखाया, आप भी हमें सिखाइए।' २ उन्होंने कहा, 'जब तुम प्रार्थना
करते हो तो कहो,

"पिता,
आपका नाम पवित्र माना जाए,
आपका राज्य आए।
३ हमारे दिन भर की रोटी प्रति दिन हमें दिया कीजिए;
४ हमारे पाप हमें क्षमा कीजिए,
क्योंकि हम भी अपने प्रत्येक ऋणी को क्षमा करते हैं।
और हमें परीक्षा में न डालिए।"

आग्रहपूर्ण प्रार्थना

अर्द्धरात्रि में आनेवाले मित्र का दृष्टांत

५ उन्होंने यह भी कहा, 'मान लो तुममें से किसी का एक मित्र है। वह
आधी रात को उसके पास जाकर कहता है, "मित्र, मुझे तीन रोटियां दो,
६ क्योंकि मेरा एक मित्र यात्रा करके मेरे पास आया है और मेरे पास उसे
भोजन कराने के लिए कुछ भी नहीं है।" ७ और मान लो वह भीतर से उत्तर
दे, "मुझे कष्ट न दो, द्वार बंद हो चुका है, मेरे बालक मेरे पास बिछौने पर हैं,
मैं उठकर तुम्हें दे नहीं सकता।" ८ मैं तुमसे कहता हूं कि यदि उसका मित्र
होने के कारण, वह उठकर उसे कुछ नहीं देगा, तो कम से कम लज्जा
छोड़कर मांगने के कारण, वह उठेगा और उसकी आवश्यकता पूरी करेगा।
९ मैं तुमसे कहता हूं, मांगो तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूंढ़ो तो तुम पाओगे;
खटखटाओ तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा; १० क्योंकि जो मांगता है उसे
मिलता है, जो ढूंढ़ता है वह पाता है, और जो खटखटाता है उसके लिए खोला
जाएगा। ११ तुममें से ऐसा कौन पिता है कि यदि उसका पुत्र मछली माँगे
तो वह उसे मछली के स्थान पर सांप देगा, १२ अथवा यदि अंडा मांगे तो
क्या वह बिच्छू देगा? १३ जब तुम बुरे होकर भी अपने बालकों को उत्तम

good gifts unto your children : how much more shall
your heavenly Father give the Holy Spirit to them that
ask him ?

JESUS ANSWERS THE CHARGE THAT HE IS ACTING BY SATAN'S HELP

14 And he was casting out a devil, and it was dumb.
And it came to pass, when the devil was gone out, the
dumb spake ; and the people wondered. 15 But some
of them said, He casteth out devils through Beelze-
bub the chief of the devils. 16 And others, tempting
him, sought of him a sign from heaven. 17 But he,
knowing their thoughts, said unto them, Every
kingdom divided against itself is brought to desola-
tion ; and a house divided against a house falleth.
18 If Satan also be divided against himself, how shall
his kingdom stand ? because ye say that I cast out
devils through Beelzebub. 19 And if I by Beelzebub
cast out devils, by whom do your sons cast them out ?
therefore shall they be your judges. 20 But if I with
the finger of God cast out devils, no doubt the king-
dom of God is come upon you. 21 When a strong
man armed keepeth his palace, his goods are in peace :
22 but when a stronger than he shall come upon him,
and overcome him, he taketh from him all his armour
wherein he trusted, and divideth his spoils. 23 He
that is not with me is against me : and he that gathereth
not with me scattereth. 24 When the unclean spirit
is gone out of a man, he walketh through dry places,
seeking rest ; and finding none, he saith, I will return
unto my house whence I came out. 25 And when he
cometh, he findeth it swept and garnished. 26 Then
goeth he, and taketh to him seven other spirits more
wicked than himself ; and they enter in, and dwell there :
and the last state of that man is worse than the first.

27 And it came to pass, as he spake these things,
a certain woman of the company lifted up her voice,
and said unto him, Blessed is the womb that bare thee,
and the paps which thou hast sucked. 28 But he said,

उपहार देना जानते हो तो स्वर्गिक पिता, मांगनेवालों को पवित्र आत्मा
क्यों न देंगे !'

शैतान की शक्ति अथवा पवित्र आत्मा की

१४ वह एक भूत को जो गूंगा था निकाल रहे थे। भूत के निकलते
ही गूंगा बोलने लगा, इस पर लोग चकित रह गए। १५ परंतु उनमें से कई
कहने लगे, 'यह भूतों के अधिपति बालजबूल की सहायता से भूतों को
निकालता है।' १६ दूसरों ने परीक्षा करने के लिए उनसे आकाश का कोई
चिह्न मांगा। १७ यीशु ने उनके विचार जानकर उनसे कहा, 'जिस राज्य
में फूट पड़ जाए वह उजड़ जाता है, और जिस घर में फूट पड़ जाए वह
ढह जाता है। १८ यदि शैतान स्वयं अपना विरोधी हो जाए तो उसका राज्य
कैसे स्थिर रहेगा ? तुम कह रहे हो कि मैं बालजबूल द्वारा भूत निकालता
हूं। १९ अच्छा, यदि मैं बालजबूल द्वारा भूत निकालता हूं तो तुम्हारे पुत्र
किसके द्वारा निकालते हैं ? फलतः वे ही तुम्हारे न्यायकर्ता होंगे। २० परंतु
यदि मैं परमेश्वर की सामर्थ्य* से भूत को निकालता हूं तो परमेश्वर का
राज्य तुम्हारे समीप आ पहुंचा है। २१ यदि कोई बलवान सशस्त्र होकर
अपने भवन का पहरा देता है तो उसकी संपत्ति सुरक्षित रहती है। २२ परंतु
यदि कोई उससे भी बलवान उस पर टूट पड़े और उसे जीत ले तो उसके वे
शस्त्र जिन पर उसे भरोसा था, छीन लेता और लूटी हुई संपत्ति बांट देता है।
२३ जो मेरे साथ नहीं, वह मेरे विरोध में है ; और जो मेरे साथ नहीं बटोरता,
वह बखेरता है। २४ जब अशुद्ध आत्मा मनुष्य में से निकल जाती है तो
निर्जन स्थानों में विश्राम की खोज में घूमती है; और न मिलने पर कहती है
कि, मैं अपने घर को जहां से मैं आई थी लौट जाऊंगी, २५ और आकर उसे
स्वच्छ एवं सुसज्जित पाती है। २६ तब वह जाकर अपने से अधिक दुष्ट सात
आत्माएं और ले आती है जो वहां प्रवेश कर रहने लगती हैं ; और उस मनुष्य
की पिछली दशा पहले से भी बुरी हो जाती; ।'

२७ वह ये बातें कह ही रहे थे कि जनसमूह में से एक स्त्री ने उच्च
स्वर में उनसे कहा, 'धन्य है वह गर्भ जिसने आपको धारण किया और वे
स्तन जिनसे आपने पीया।' २८ इस पर यीशु ने कहा, 'परंतु अधिक धन्य हैं वे

* अक्षरशः 'अंगुली'

Yea rather, blessed are they that hear the word of God, and keep it.

WARNING AGAINST SEEKING SIGNS

29 And when the people were gathered thick together, he began to say, This is an evil generation: they seek a sign; and there shall no sign be given it, but the sign of Jonas the prophet. 30 For as Jonas was a sign unto the Ninevites, so shall also the Son of man be to this generation. 31 The queen of the south shall rise up in the judgment with the men of this generation, and condemn them: for she came from the utmost parts of the earth to hear the wisdom of Solomon; and, behold, a greater than Solomon is here. 32 The men of Nineve shall rise up in the judgment with this generation, and shall condemn it: for they repented at the preaching of Jonas; and, behold, a greater than Jonas is here.

LESSONS FROM A LAMP

33 No man, when he hath lighted a candle, putteth it in a secret place, neither under a bushel, but on a candlestick, that they which come in may see the light. 34 The light of the body is the eye: therefore when thine eye is single, thy whole body also is full of light; but when thine eye is evil, thy body also is full of darkness. 35 Take heed therefore that the light which is in thee be not darkness. 36 If thy whole body therefore be full of light, having no part dark, the whole shall be full of light, as when the bright shining of a candle doth give thee light.

JESUS DENOUNCES PHARISEES AND SCRIBES

37 And as he spake, a certain Pharisee besought him to dine with him: and he went in, and sat down to meat. 38 And when the Pharisee saw it, he marvelled that he had not first washed before dinner. 39 And the Lord said unto him, Now do ye Pharisees make clean the outside of the cup and the platter; but your

जो परमेश्वर का बचन सुनते हैं और उसका पालन करते हैं।'

चिह्न ढूंढ़ने के विरुद्ध चेतावनी

२९ जब और भी जनसमूह एकत्रित हो गया तो वह कहने लगे, 'यह पीढ़ी दुष्ट है। यह चिह्न मांगती है परंतु इसे यूनुस के चिह्न के अतिरिक्त कोई अन्य चिह्न न मिलेगा। ३० क्योंकि जिस प्रकार यूनुस नीनवे निवासियों के लिए चिह्न बने वैसे ही मानव-पुत्र इस पीढ़ी के लिये होगा। ३१ दक्षिण देश की रानी इस पीढ़ी के लोगों के साथ न्याय में खड़ी होगी और इन्हें दंडनीय बताएगी, क्योंकि वह पृथ्वी के छोर से सुलेमान की बुद्धिमत्तापूर्ण बातें सुनने के लिये आई थी, और देखो, यहां वह है जो सुलेमान से भी महान् है। ३२ नीनवे के लोग इस पीढ़ी के साथ न्याय में खड़े होंगे और इसे दंडनीय बताएंगे ; क्योंकि उन्होंने यूनुस का संदेश सुन कर हृदय-परिवर्तन किया, और देखो, यहां वह है जो यूनुस से भी महान् है।

दीपक से शिक्षा

३३ 'कोई मनुष्य दीपक को जलाकर तलघर में अथवा आढ़क के नीचे नहीं रखता, वरन् दीवट पर रखता है कि भीतर आने वालों को प्रकाश मिले। ३४ शरीर का दीपक तुम्हारी आँख है। यदि तुम्हारी आँखें ठीक हों तो तुम्हारा समस्त शरीर प्रकाश में रहता है, किन्तु यदि वे रोगी हो जाएं तो तुम अंधकार में पड़ जाते हो। ३५ सजग रहो कि कहीं तुम्हारा प्रकाश अंधकार में परिणत न हो जाए। ३६ यदि तुम्हारा सब शरीर प्रकाश में है, और उसका कोई अंश अंधकार में नहीं, तो वह सर्वथा दीप्तिवान् रहेगा ; जैसे दीपक अपने आलोक से तुम्हें दीप्तवान् रखता है।

फरीसी एवं शास्त्रियों की भर्त्सना

३७ वह बोल ही रहे थे कि एक फरीसी ने उनसे निवेदन किया कि उसके साथ भोजन करें। वह भीतर जाकर भोजन करने बैठे। ३८ फरीसी को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उन्होंने भोजन से पूर्व हाथ-पांव नहीं धोए। ३९ प्रभु ने उससे कहा, 'तुम फरीसी लोग कटोरों और थालियों को बाहर-बाहर तो मांजते हो पर तुम्हारे भीतर लोलुपता और दुष्टता भरी हैं।

inward part is full of ravening and wickedness. 40
Ye fools, did not he that made that which is without
make that which is within also ? 41 But rather give
alms of such things as ye have ; and, behold, all things
are clean unto you.

42 But woe unto you, Pharisees ! for ye tithe mint
and rue and all manner of herbs, and pass over judgment
and the love of God : these ought ye to have done,
and not to leave the other undone. 43 Woe unto you,
Pharisees ! for ye love the uppermost seats in the
synagogues, and greetings in the markets. 44 Woe unto
you, scribes and Pharisees, hypocrites ! for ye are as
graves which appear not, and the men that walk over
them are not aware of them.

45 Then answered one of the lawyers, and said unto
him, Master, thus saying thou reproachest us also.
46 And he said, Woe unto you also, ye lawyers ! for ye
lade men with burdens grievous to be borne, and ye
yourselves touch not the burdens with one of your
fingers. 47 Woe unto you ! for ye build the sepulchres
of the prophets, and your fathers killed them. 48 Truly
ye bear witness that ye allow the deeds of your fathers :
for they indeed killed them, and ye build their sepulchres.
49 Therefore also said the wisdom of God, I will send
them prophets and apostles, and some of them they
shall slay and persecute : 50 that the blood of all the
prophets, which was shed from the foundation of the
world, may be required of this generation ; 51 from
the blood of Abel unto the blood of Zacharias, which
perished between the alter and the temple : verily I
say unto you, It shall be required of this generation.
52 Woe unto you, lawyers ! for ye have taken away
the key of knowledge : ye entered not in yourselves,
and them that were entering in ye hindered.

53 And as he said these things unto them, the
scribes and the Pharisees began to urge him vehemently,
and to provoke him to speak of many things ; 54 laying
wait for him, and seeking to catch something out of
his mouth, that they might accuse him.

४० हे निर्बुद्धियो, जिसने बाहरी भाग बनाया है उसने क्या भीतरी भाग नहीं बनाया? ४१ भीतरी वस्तुएं दान कर दो, और तुम्हारे लिए सब कुछ शुद्ध हो जायगा।

४२ 'परंतु फरीसियो, शोक तुम पर! तुम पोदीने, सुदाब और सब प्रकारके शाकपात का दसवां अंश तो देते हो परंतु न्याय और परमेश्वर के प्रेम की उपेक्षा करते हो। चाहिये था कि इन्हें भी करते और उन्हें भी न छोड़ते। ४३ फरीसियो, शोक तुम पर, सभागृहों में प्रमुख आसन और बाजारों में प्रणाम लेना तुम्हें प्रिय है। ४४ शोक तुम पर, तुम उन अदृश्य कबरों के समान हो जिन पर लोग अनजाने चलते फिरते हैं।'

४५ एक व्यवस्थाचार्य ने उन्हें उत्तर दिया, 'गुरु, ऐसी बातें कहकर आप हमारा भी अपमान कर रहे हैं।' ४६ उन्होंने कहा, ऐ व्यवस्था के आचार्यों, तुम पर भी शोक! तुम मनुष्यों पर दुर्वह बोझ लादते हो पर स्वयं उस बोझ को उठाने के लिए एक अंगुली भी नहीं लगाते। ४७ शोक तुम पर, तुम उन नबियों की कबरें बनाते हो जिनको तुम्हारे पूर्वजों ने मार डाला। ४८ इस प्रकार तुम अपने पूर्वजों के कर्मों के साक्षी हो एवं उनसे सहमत हो, क्योंकि उन्होंने नबियों को मार डाला और तुम उनकी कबरें बनाते हो। ४९ इसी कारण परमेश्वर की प्रज्ञा ने कहा है, "मैं उनके पास नबियों और प्रेरितों को भेजूंगी; उनमें से कुछ को वे मार डालेंगे और कुछ पर अत्याचार करेंगे," ५० जिससे सभी नबियों के रक्त का, जो संसार के आरंभ से बहाया गया, लेखा इस पीढ़ी से लिया जाए। ५१ मैं सच कहता हूं कि हाबिल के रक्त से लेकर, वेदी और मंदिर के मध्य मारे गए, जकरयाह के रक्त तक—इस सबका लेखा इस पीढ़ी से लिया जाएगा। ५२ शोक तुम व्यस्था-चार्यों पर! क्योंकि तुमने ज्ञान की कुंजी तो ली है; तुमने स्वयं प्रवेश नहीं किया, और प्रवेश करनेवालों को भी रोक दिया है।'

५३ जब यीशु वहां से चले तो व्यवस्थाचार्य और फरीसी बुरी तरह उनके पीछे पड़ गये, और बहुत सी बातों के संबंध में उनसे प्रश्न पर प्रश्न करने लगे। ५४ वे इस घात में थे कि उनके मुंह की कोई बात पकड़ें।

JESUS WARNS HIS DISCIPLES AGAINST HYPOCRISY

12 In the mean time, when there were gathered
together an innumerable multitude of people,
insomuch that they trode one upon another, he began to
say unto his disciples first of all, Beware ye of the leaven
of the Pharisees, which is hypocrisy. 2 For there is
nothing covered, that shall not be revealed; neither
hid, that shall not be known. 3 Therefore whatsoever
ye have spoken in darkness shall be heard in the light;
and that which ye have spoken in the ear in closets
shall be proclaimed upon the housetops.

HE ENCOURAGES HIS DISCIPLES

4 And I say unto you my friends, Be not afraid
of them that kill the body, and after that have no
more that they can do. 5 But I will forewarn you
whom ye shall fear: Fear him, which after he hath
killed hath power to cast into hell; yea, I say unto
you, Fear him. 6 Are not five sparrows sold for two
farthings, and not one of them is forgotten before God?
7 But even the very hairs of your head are all numbered.
Fear not therefore: ye are of more value than many
sparrows.

8 Also I say unto you, Whosoever shall confess
me before men, him shall the Son of man also confess
before the angels of God: 9 but he that denieth me
before men shall be denied before the angels of God.
10 And whosoever shall speak a word against the son of
man, it shall be forgiven him: but unto him that
blasphemeth against the Holy Ghost it shall not be
forgiven. 11 And when they bring you unto the
synagogues, and unto magistrates, and powers, take ye
no thought how or what thing ye shall answer, or what
ye shall say: 12 for the Holy Ghost shall teach you
in the same hour what ye ought to say.

COVETOUSNESS, AND THE PARABLE OF THE RICH FOOL

13 And one of the company said unto him, Master,
speak to my brother, that he divide the inheritance with

१२

पाखंड के विरुद्ध शिक्षा

१ इतने में सहस्रों की भीड़ लग गई यहां तक कि लोग एक दूसरे को कुचलने लगे। तब यीशु ने पहले अपने शिष्यों से कहा, 'फरीसियों के खमीर अर्थात् कपट से सावधान रहना। २ ऐसा कुछ नहीं जो ढका हो और खोला न जाएगा; जो छिपा हो और जाना न जाएगा। ३ तुमने जो कुछ अंधकार में कहा है वह प्रकाश में सुना जाएगा, और जो कोठरियों में कानाफूसी की है वह छतों से प्रचारित की जाएगी।

अभय-भावना

४ 'मैं तुमसे, अपने मित्रों से, कहता हूं कि उनसे मत डरो जो शरीर को मार डालते हैं, परंतु उसके पश्चात् कुछ नहीं कर सकते। ५ मैं तुम्हें बताता हूं कि तुम्हें किससे डरना चाहिए। उससे डरो जिसे तुम्हें मार कर नरक में डालने की शक्ति है। हां, मैं तुमसे कहता हूं कि उससे डरो। ६ क्या दो पैसे में पांच गौरैयां नहीं बिकतीं? परंतु परमेश्वर उनमें से एक को भी नहीं भूलता। ७ तुम्हारे तो सिर के बाल भी सब गिने हुए हैं। डरो मत, तुम अनेक गौरैयों से श्रेष्ठ हो।

८ 'मैं तुमसे कहता हूं कि जो कोई मनुष्यों के संमुख मुझे अंगीकार करता है, उसे मानव-पुत्र भी परमेश्वर के दूतों के संमुख अंगीकार करेगा। ९ परंतु जो मुझे मनुष्योंके संमुख अंगीकार नहीं करता, वह परमेश्वर के दूतों के संमुख अंगीकृत न होगा। १० जो मानव-पुत्र के विरुद्ध शब्द कहे उसे क्षमा मिल जाएगी, परंतु जो पवित्र आत्मा की निंदा करे उसे क्षमा नहीं मिलेगी। ११ जब वे तुम्हें सभागृहों, शासकों और अधिकारियों के संमुख ले जाएं तो चिंता न करना कि तुम कैसे और क्या उत्तर दोगे; १२ क्योंकि उस समय पवित्र आत्मा तुम्हें सिखा देगा कि तुम्हें क्या कहना चाहिये।'

लोभ : मूर्ख धनवान का दृष्टांत

१३ जनसमूह में से किसी ने कहा, 'गुरुजी, मेरे भाई से कहिए कि मेरे

me. 14 And he said unto him, Man, who made me a
judge or a divider over you ? 15 And he said unto
them, Take heed, and beware of covetousness : for a
man's life consisteth not in the abundance of the things
which he possesseth. 16 And he spake a parable unto
them, saying, The ground of a certain rich man brought
forth plentifully : 17 and he thought within himself,
saying, What shall I do, because I have no room where
to bestow my fruits ? 18 And he said, This will I do :
I will pull down my barns, and build greater ; and there
will I bestow all my fruits and my goods. 19 And I will
say to my soul, Soul, thou hast much goods laid up
for many years ; take thine ease, eat, drink, and be
merry. 20 But God said unto him, Thou fool, this
night thy soul shall be required of thee : then whose
shall those things be, which thou hast provided ? 21 So
is he that layeth up treasure for himself, and is not rich
toward God.

WARNING AGAINST WORRY

22 And he said unto his disciples, Therefore I say
unto you, Take no thought for your life, what ye
shall eat ; neither for the body, what ye shall put
on. 23 The life is more than meat, and the body is
more than raiment. 24 Consider the ravens : for they
neither sow nor reap ; which neither have storehouse
nor barn ; and God feedeth them : how much more are
ye better than the fowls ? 25 And which of you with
taking thought can add to his stature one cubit ? 26 If
ye then be not able to do that thing which is least, why
take ye thought for the rest ? 27 Consider the lilies
how they grow : they toil not, they spin not ; and yet
I say unto you, that Solomon in all his glory was not
arrayed like one of these. 28 If then God so clothe
the grass, which is to day in the field, and to morrow
is cast into the oven ; how much more will he clothe
you, O ye of little faith ? 29 And seek not ye what
ye shall eat, or what ye shall drink, neither be ye of
doubtful mind. 30 For all these things do the nations

साथ पैतृक संपत्ति का बंटवारा कर ले। १४ उन्होंने उत्तर दिया, 'ऐ
मनुष्य, किसने मुझे तुम्हारा पंच या बंटवारा करनेवाला नियुक्त किया है ?'
१५ और फिर उनसे बोले, 'सावधान, प्रत्येक प्रकार के लोभ से बचो, क्योंकि
संपत्ति की संपन्नता में मनुष्य का जीवन नहीं है।' १६ यीशु ने उन्हें एक
दृष्टांत सुनाया, 'किसी धनवान की भूमि में बहुत अच्छी उपज हुई। १७ उसने
मन ही मन सोचा "मैं क्या करूं ? मेरे पास अपनी उपज रखने के लिए
स्थान नहीं है।" १८ तब वह बोला, "मैं यह करूंगा। मैं अपने कोठार
तोड़कर उन्हें और भी बड़े बनाऊंगा, और वहां अपना सब अन्न और संपत्ति
रखूंगा। १९ मैं अपने प्राण से कहूंगा, प्राण तेरे पास बहुत वर्षों के लिए
प्रचुर संपत्ति रखी है ; चैन से रह, खा, पी और आनंद कर।" २० परंतु
परमेश्वर ने उससे कहा, "हे निर्बुद्धि, इसी रात्रि को तेरे प्राण तुझसे ले लिए
जायेंगे, तब जो कुछ तूने एकत्र किया है वह किसका होगा ?" २१ ऐसा ही
वह है जो अपने लिए धन संचय करता है परंतु परमेश्वर के यहां धनी नहीं।'

चिंता-उन्मूलन

२२ फिर उन्होंने अपने शिष्यों से कहा, 'इस कारण मैं तुमसे कहता
हूं कि जीवन की चिंता न करना कि हम क्या खाएंगे, और न शरीर की कि
हम क्या पहनेंगे। २३ भोजन की अपेक्षा प्राण और वस्त्र की अपेक्षा शरीर
अधिक मूल्यवान् है। २४ कौवों पर ध्यान दो : वे न बोते हैं और न काटते
हैं ; उनके न भंडार है और न कोठार ; फिर भी परमेश्वर उन्हें पालता है।
तुम पक्षियों से कितने अधिक मूल्यवान् हो। २५ चिंता करके तुममें से
कौन अपनी आयु की एक घड़ी भी बढ़ा सकता है ?* २६ तो यदि तुम
इतना छोटा काम भी नहीं कर सकते तो फिर दूसरी बातों की चिंता क्यों करते
हो ? २७ पुष्पों पर ध्यान दो,† न तो वे काटते हैं और न बुनते, फिर भी
मैं तुमसे कहता हूं कि स्वयं सुलेमान भी अपने समस्त वैभव में उनमें से किसी
के समान विभूषित नहीं थे। २८ तो यदि परमेश्वर घास को, जो आज मैदान
में है और कल अग्नि में झोंकी जाएगी, इस प्रकार पहिनाते हैं तो हे अल्प
विश्वासियों, तुमको कितना अधिक न पहिनाएंगे। २९ तुम इस खोज में न
रहो कि हम क्या खाएंगे अथवा क्या पिएंगे और न चिंतित हो, ३० क्योंकि

* देखिए मत्ती ६ : २७ की टिप्पणी
† कुछ प्रतियों में ये शब्द भी पाए जाते हैं-वे किस प्रकार खिलते हैं

of the world seek after : and your Father knoweth that
ye have need of these things. 31 But rather seek ye
the kingdom of God ; and all these things shall be
added unto you. 32 Fear not, little flock ; for it is
your Father's good pleasure to give you the kingdom.
33 Sell that ye have, and give alms ; provide yourselves
bags which wax not old, a treasure in the heavens that
faileth not, where no thief approacheth, neither moth
corrupteth. 34 For where your treasure is, there will
your heart be also.

THE NEED OF WATCHFULNESS

35 Let your loins be girded about, and your lights
burning ; 36 and ye yourselves like unto men that wait
for their lord, when he will return from the wedding ;
that when he cometh and knocketh, they may open
unto him immediately. 37 Blessed are those servants,
whom the lord when he cometh shall find watching :
verily I say unto you, that he shall gird himself, and
make them to sit down to meat, and will come forth
and serve them. 38 And if he shall come in the second
watch, or come in the third watch, and find them so,
blessed are those servants. 39 And this know, that if
the goodman of the house had known what hour the
thief would come, he would have watched, and not
have suffered his house to be broken through. 40 Be ye
therefore ready also : for the Son of man cometh at an
hour when ye think not.

THE PARABLE OF THE FAITHFUL STEWARD

41 Then Peter said unto him, Lord, speakest thou
this parable unto us, or even to all ? 42 And the Lord
said, Who then is that faithful and wise steward, whom
his lord shall make ruler over his household, to give
them their portion of meat in due season ? 43 Blessed
is that servant, whom his lord when he cometh shall
find so doing. 44 Of a truth I say unto you, that
he will make him ruler over all that he hath. 45 But
and if that servant say in his heart, My lord delayeth

इन वस्तुओं की खोज तो संसार की अन्य सब जातियां करती हैं; और तुम्हारे
पिता जानते हैं कि तुम्हें इनकी आवश्यकता है। ३१ अस्तु, उसके राज्य की
खोज में रहो और ये वस्तुएं भी तुम्हारी हो जाएंगी। ३२ हे छोटे झुंड, मत
डर, तुम्हारे पिता की प्रसन्नता इसमें है कि तुम्हें राज्य प्रदान करें। ३३ अपनी
संपति बेचो और दान कर दो; अपने लिये ऐसे बटुए बनाओ जो कभी पुराने
नहीं होते। स्वर्ग में अक्षय धन एकत्रित करो जहां न चोर पहुंचता है और न
कीड़े लगते हैं; ३४ क्योंकि जहां तुम्हारा धन है, वहां तुम्हारा मन भी होगा।

सदैव जागृत रहो

३५ 'तुम्हारी कमर कसी रहे और दीपक जलते रहें। ३६ तुम उन लोगों
के सदृश बनो जो अपने स्वामी की प्रतीक्षा करते हैं कि वह विवाहोत्सव से कब
लौटे, कि जैसे ही वह आए और खटखटाए, तो तुरंत उसके लिये द्वार खोल
दें। ३७ धन्य हैं वे दास जिन्हें स्वामी आकर जागते पाए। मैं तुमसे सच
कहता हूं कि वह अपनी कमर कसेगा, उन्हें भोजन करने के लिए बैठाएगा
और घूम घूम कर उनकी सेवा करेगा। ३८ यदि वह रात्रि में दूसरे या
तीसरे पहर आकर भी उन्हें इसी प्रकार पाए तो धन्य हैं वे दास। ३९ इतना
जान रखो कि यदि गृहस्वामी को पता रहता कि चोर किस घड़ी आ रहा है
तो वह अपने घर में सेंध न लगने देता। ४० तुम भी तैयार रहो क्योंकि जिस
घड़ी की तुम कल्पना भी नहीं करते, उसी घड़ी मानव-पुत्र आ जाएगा।

विश्वासपात्र भंडारी

४१ पतरस ने पूछा, 'प्रभु, आप यह दृष्टांत हमसे कह रहे हैं या सबसे ?'
४२ प्रभु ने कहा, 'तो कौन है वह विश्वासपात्र और बुद्धिमान् भंडारी जिसे
उसका स्वामी अपने दासों पर नियुक्त करे कि नियत समय पर उन्हें निर्दिष्ट
आहार दे? ४३ धन्य है वह दास जिसे उसका स्वामी आने पर ऐसा करते पाए
४४ मैं तुमसे सच कहता हूं कि वह उसे अपनी समस्त संपति पर अधिकारी
नियुक्त करेगा। ४५ परंतु यदि वह दास अपने मन में कहे कि मेरे स्वामी के

his coming ; and shall begin to beat the menservants and
maidens, and to eat and drink, and to be drunken ;
46 the lord of that servant will come in a day when
he looketh not for him, and at an hour when he is
not aware, and will cut him in sunder, and will appoint
him his portion with the unbelievers. 47 And that
servant, which knew his lord's will, and prepared not
himself, neither did according to his will, shall be beaten
with many stripes. 48 But he that knew not, and
did commit things worthy of stripes, shall be beaten
with few stripes. For unto whomsoever much is given,
of him shall be much required : and to whom men have
committed much, of him they will ask the more.

SIGNS OF THE TIMES

49 I am come to send fire on the earth ; and what
will I, if it be already kindled ? 50 But I have a baptism
to be baptized with ; and how am I straitened till it
be accomplished ! 51 Suppose ye that I am come to give
peace on earth ? I tell you, Nay ; but rather division :
52 for from henceforth there shall be five in one house
divided, three against two, and two against three. 53 The
father shall be divided against the son, and the son
against the father ; the mother against the daughter,
and the daughter against the mother ; the mother in law
against her daughter in law, and the daughter in law
against her mother in law.

54 And he said also to the people, When ye see
a cloud rise out of the west, straightway ye say, There
cometh a shower ; and so it is. 55 And when ye see
the south wind blow, ye say, There will be heat ; and
it cometh to pass. 56 Ye hypocrites, ye can discern the
face of the sky and of the earth ; but how is it that
ye do not discern this time ? 57 Yea, and why even
of yourselves judge ye not what is right ? 58 When thou
goest with thine adversary to the magistrate, as thou
art in the way, give diligence that thou mayest be
delivered from him ; lest he hale thee to the judge,
and the judge deliver thee to the officer, and the officer

आने में देर है, और सेवक सेविकाओं को पीटने, खाने-पीने और नशे में चूर होने
लगे, ४६ तो उस दास का स्वामी ऐसे दिन आ जाएगा जब वह उसकी प्रतीक्षा
नहीं करता होगा और ऐसी घड़ी जिसे वह नहीं जानता होगा। वह उसके
टुकड़े-टुकड़े कर डालेगा और उसकी गणना अविश्वासियों में करेगा।
४७ वह दास जो अपनी स्वामी की इच्छा जानते हुए भी तैयार नहीं रहा और
न उसकी इच्छा पर चला, वह बहुत मार खाएगा; ४८ परंतु जिसने अनजाने
में मार खाने का काम किया है वह थोड़ी मार खायेगा। जिसे बहुत मिला है,
उससे बहुत मांगा जाएगा : और जिसे बहुत सौंपा गया है, उससे बहुत सा
लिया जाएगा।

समय के लक्षण

४६ 'मैं पृथ्वी पर आग लगाने आया हूं, और चाहता हूं कि वह अभी
प्रज्वलित हो उठती। ५० मुझे एक बपतिस्मा लेना है, और जब तक वह पूर्ण
नहीं हो जाता, मुझे बड़ी आकुलता है। ५१ क्या तुम समझते हो कि मैं पृथ्वी
पर शांति कराने आया हूं ? मैं कहता हूं, नहीं वरन् फूट डालने आया हूं ?
५२ क्यों कि अब से एक ही घर के पांच व्यक्ति एक दूसरे के विरुद्ध हो जाएंगे
तीन के विरुद्ध दो, और दो के विरुद्ध तीन। ५३ वे एक दूसरे का विरोध
करेंगे—पिता पुत्र का और पुत्र पिता का, पुत्री माता का और माता पुत्री का,
पुत्रवधू सास का और सास पुत्रवधू का।'

५४ उन्होंने जनसमूह से यह भी कहा, 'पश्चिम में मेघ उठते देखकर
तुम तुरंत कह देते हो कि वर्षा होगी, और ऐसा ही होता है ; ५५ और दक्षिणी
वायु चलते देखकर कहते हो कि लू, चलेगी और ऐसा ही होता है। ५६ पाखं-
डियो, पृथ्वी और आकाश के लक्षणों की पहिचान तो तुम कर लेते हो, फिर इस
काल के लक्षणों को क्यों नहीं पहिचानते ? ५७ तुम अपने आपही निर्णय
क्यों नहीं कर लेते कि उचित क्या है ? ५८ ज़ब तुम वादी के साथ शासक
के पास जा रहे हो, तो मार्ग में ही उससे समझौता करने की चेष्टा करो।
ऐसा न हो कि वह तुम्हें न्यायाधीश के पास खींच ले जाए, और न्यायाधीश

cast thee into prison. 59 I tell the, thou shalt not
depart thence, till thou hast paid the very last mite.

EXHORTATIONS TO REPENTANCE

13 There were present at that season some that told
him of the Galilæans, whose blood Pilate had
mingled with their sacrifices. 2 And Jesus answering
said unto them, Suppose ye that these Galilæans were
sinners above all the Galilæans, because they suffered
such things ? 3 I tell you, Nay : but, except ye repent,
ye shall all likewise perish. 4 Or those eighteen, upon
whom the tower in Siloam fell, and slew them, think ye
that they were sinners above all men that dwelt in
Jerusalem ? 5 I tell you, Nay : but, except ye repent,
ye shall all likewise perish.

THE PARABLE OF THE BARREN FIG TREE

6 He spake also this parable ; A certain man had a
fig tree planted in his vineyard ; and he came and sought
fruit thereon, and found none. 7 Then said he unto the
dresser of his vineyard, Behold, these three years I come
seeking fruit on this fig tree, and find none : cut it
down ; why cumbereth it the ground ? 8 And he
answering said unto him, Lord, let it alone this year also,
till I shall dig about it, and dung it : 9 and if it bear
fruit, well : and if not, then after that thou shalt cut
it down.

A WOMAN HEALED ON THE SABBATH

10 And he was teaching in one of the synagogues on
the sabbath. 11 And, behold, there was a woman which
had a spirit of infirmity eighteen years, and was bowed
together, and could in no wise lift up herself. 12 And
when Jesus saw her, he called her to him, and said unto
her, Woman, thou art loosed from thine infirmity.
13 And he laid his hands on her : and immediately she
was made straight, and glorified God. 14 And the ruler
of the synagogue answered with indignation, because

तुम्हें अधिकारी को सौंप दे ; और वह तुम्हें कारागार में डाल दे। ५९ मैं तुमसे कहता हूं कि जब तक तुम पैसा-पैसा न चुका दोगे, वहां से निकलने नहीं पाओगे।'

१३

हृदय - परिवर्तन के लिए उपदेश

१ उस समय कुछ लोग उपस्थित थे जिन्होंने यीशु को उन गलील निवासियों के संबंध में सूचना दी जिनका रक्त पिलातुस ने उन्हींके बलिदानों के साथ मिलाया था। २ यीशु ने उत्तर दिया, 'क्या तुम्हारा विचार है कि ये गलील निवासी अन्य सब गलील निवासियों से अधिक पापी थे कि उन्हें यह सहना पड़ा? ३ मैं तुमसे कहता हूं, नहीं ; परंतु यदि हृदय-परिवर्तन न करो तो तुम सब भी इस प्रकार नष्ट हो जाओगे। ४ अथवा क्या तुम्हारा विचार है कि वे अठारह, जो शीलोह के बुर्ज के गिरने से दबकर मर गए, यरूशलेम के अन्य सब निवासियों से अधिक अपराधी थे? ५ मैं कहता हूं, नहीं ; परन्तु यदि हृदय-परिवर्तन न करो तो तुम सब भी इसी प्रकार नष्ट हो जाओगे।'

फलहीन अंजीर का वृक्ष

६ फिर उन्होंने यह दृष्टांत कहा, 'किसी मनुष्य के दाख-उद्यान में अंजीरका वृक्ष लगा था। वह उससे फल तोड़ने आया परंतु उसे कुछ न मिला। ७ इस पर उसने माली से कहा, "देखो, तीन वर्ष से मैं इस अंजीर के वृक्ष से फल तोड़ने आ रहा हूं पर मुझे कुछ नहीं मिलता। इसे काट डालो, यह भूमि को व्यर्थ क्यों घेरे हुए है?" ८ उसने उत्तर दिया, "प्रभु, इसे इस वर्ष और रहने दीजिए। तब तक मैं इसके आसपास खोदकर खाद डालूं। ९ यदि यह आगे फल दे तो ठीक ; यदि न दे तो काट डालिए।"

कुबड़ी को सबत के दिन स्वस्थ करना

१० सबत के दिन वह एक सभागृह में उपदेश दे रहे थे। ११ वहां एक स्त्री थी जिसे अठारह वर्ष से एक निर्बल करनेवाली आत्मा लगी थी। वह झुक कर दुहरी हो गई थी और अपने आपको पूरी तरह सीधा नहीं कर सकती थी। १२ यीशु ने यह देखकर उसे बुलाया और कहा, 'हे नारी, तुम अपनी निर्बलता से मुक्त हो गईं।' १३ तब उन्होंने उसे स्पर्श किया; और वह उसी क्षण सीधी हो गई और परमेश्वर की स्तुति करने लगी। १४ इस पर

that Jesus had healed on the sabbath day, and said unto
the people, There are six days in which men ought to
work : in them therefore come and be healed, and not
on the sabbath day. 15 The Lord then answered him,
and said, Thou hypocrite, doth not each one of you on
the sabbath loose his ox or his ass from the stall, and
lead him away to watering ? 16 And ought not this
woman, being a daughter of Abraham, whom Satan hath
bound, lo, these eighteen years, be loosed from this bond
on the sabbath day ? 17 And when he had said these
things, all his adversaries were ashamed : and all the
people rejoiced for all the glorious things that were done
by him.

PARABLES OF MUSTARD SEED AND LEAVEN

18 Then said he, Unto what is the kingdom of God
like ? and whereunto shall I resemble it ? 19 It is like
a grain of mustard seed, which a man took, and cast into
his garden, and it grew, and waxed a great tree ; and the
fowls of the air lodged in the branches of it.

20 And again he said, Whereunto shall I liken the
kingdom of God ? 21 It is like leaven, which a woman
took and hid in three measures of meal, till the whole
was leavened.

THE NARROW ENTRANCE INTO LIFE

9.53 22 And he went through the cities and villages,
(4) teaching, and journeying toward Jerusalem. 23 Then
12.33f said one unto him, Lord, are there few that be saved ?
And he said unto them, 24 Strive to enter in at the
strait gate : for many, I say unto you, will seek to enter
in, and shall not be able. 25 When once the master of
the house is risen up, and hath shut to the door, and ye
begin to stand without, and to knock at the door, saying,
Lord, Lord, open unto us ; and he shall answer and say
unto you, I know you not whence ye are : 26 then shall
ye begin to say, We have eaten and drunk in thy
presence, and thou hast taught in our streets. 27 But he
shall say, I tell you, I know you not whence ye are ;

सभागृह का अधिकारी रुष्ट हो गया, क्योंकि यीशु ने उसे सबत दिन स्वस्थ
किया था। वह लोगों से बोला, 'छः दिन है जिनमें काम करना उचित है;
उन दिनों में आओ और स्वस्थ हो, सबत के दिन नहीं।' १५ प्रभु ने उसे
उत्तर दिया, 'पाखंडियो, क्या सबत के दिन तुममें से प्रत्येक अपने बैल या
गदहे को थान से खोलकर पानी पिलाने नहीं ले जाता? १६ फिर यह तो
अब्रहाम की पुत्री है, जो इस अठारह वर्षों से शैतान के बंधन में थी! क्या
सबत के दिन इसे बंधन-मुक्त करना अनुचित है?' १७ उनके इस कथन
से उनके विरोधी लज्जित हो गए, पर और सब लोग उनके महिमामय
कार्यों के कारण आनन्दित हुए।

राई के दाने और खमीर का दृष्टांत

१८ तब उन्होंने कहा, 'परमेश्वर का राज्य किसके सदृश है? उसकी
उपमा मैं किससे दूं? १९ वह राई के बीज के सदृश है जिसे किसी मनुष्य
ने लेकर अपने उद्यान में बो दिया। वह बढ़ा और वृक्ष हो गया, तथा आकाश
के पक्षी आकर उसकी शाखाओं में बसेरा करने लगे।'

२० उन्होंने फिर कहा, 'परमेश्वर के राज्य की उपमा मैं किससे दूं?
२१ वह खमीर के सदृश है जिसे किसी स्त्री ने लेकर तीन पसेरी मैदा में
मिला दिया, और होते-होते सब मैदा में खमीर उठ आया।'

संकीर्ण पथ

२२ वह नगर-नगर और गांव-गांव भ्रमण कर उपदेश देते हुए यरूसलेम
की ओर जा रहे थे। २३ किसी ने उनसे पूछा, 'प्रभु, क्या उद्धार पानेवाले
थोड़े हैं?' उन्होंने कहा, २४ 'संकीर्ण द्वार से प्रवेश करने का प्रयत्न करो;
क्योंकि मैं कहता हूं कि बहुत लोग प्रवेश करने की चेष्टा करेंगे। पर नहीं
कर सकेंगे। २५ जब एक बार गृहस्वामी ने उठकर द्वार बंद कर लिया तो
तुम लोग बाहर खड़े हुए खटखटाओगे और कहोगे, "हे प्रभु, हमारे लिए
द्वार खोलिए।" वह उत्तर देगा, "मैं नहीं जानता कि तुम कहां से आए
हो।" २६ तब तुम कहने लगोगे, "हमने आपके समक्ष खाया-पीया और
आपने हमारे मार्गों में उपदेश दिया।' २७ परंतु वह तुमसे कहेगा, "मैं
नहीं जानता कि तुम कहां से आए हो; हे सब कुकर्मियो, मुझ से दूर हो।"

depart from me, all ye workers of iniquity. 28 There shall be weeping and gnashing of teeth, when ye shall see Abraham, and Isaac, and Jacob, and all the prophets, in the kingdom of God, and you yourselves thrust out. 29 And they shall come from the east, and from the west, and from the north, and from the south, and shall sit down in the kingdom of God. 30 And, behold, there are last which shall be first, and there are first which shall be last.

THE ENMITY OF HEROD

31 The same day there came certain of the Pharisees, saying unto him, Get thee out, and depart hence : for Herod will kill thee. 32 And he said unto them, Go ye, and tell that fox, Behold, I cast out devils, and I do cures to day and to morrow, and the third day I shall be perfected. 33 Nevertheless I must walk to day, and to morrow, and the day following : for it cannot be that a prophet perish out of Jerusalem.

LAMENT OVER JERUSALEM

34 O Jerusalem, Jerusalem, which killest the prophets, and stonest them that are sent unto thee ; how often would I have gathered thy children together, as a hen doth gather her brood under her wings, and ye would not ! 35 Behold, your house is left unto you desolate : and verily I say unto you, Ye shall not see me, until the time come when ye shall say, Blessed is he that cometh in the name of the Lord.

DROPSY CURED ON A SABBATH

14 And it came to pass, as he went into the house of one of the chief Pharisees to eat bread on the sabbath day, that the watched him. 2 And, behold, there was a certain man before him which had the dropsy. 3 And Jesus answering spake unto the lawyers and Pharisees, saying, Is it lawful to heal on the sabbath day ? 4 And they held their peace. And he took him,

२८ जब तुम अब्रहाम, इसहाक, याकूब और सब नबियों को परमेश्वर के राज्य
में देखोगे और अपने आपको बाहर निकाला हुआ पाओगे तब वहां रोना और
दांत पीसना होगा। २६ पूर्व और पश्चिम, उत्तर और दक्षिण से लोग
आएंगे और परमेश्वर के राज्य में भोजन करेंगे। ३० परंतु देखो, जो अंतिम
हैं वे प्रथम होंगे, और जो प्रथम हैं वे अंतिम।'

हेरोदेस की शत्रुता

३१ उसी समय कुछ फरीसी आकर उनसे कहने लगे, 'आप विदा हों और
यहां से चले जाएं, क्योंकि हेरोदेस आपको मार डालना चाहता है।' ३२ यीशु
ने उनसे कहा, 'जाकर उस लोमड़ी से कह दो, "मैं आज और कल भूतों को
निकालता और रोगियों को स्वस्थ करता रहूंगा और तीसरे दिन मेरा कार्य
पूरा हो जाएगा। ३३ परंतु आज, कल और परसों मुझे चलते रहना है, क्योंकि
हो नहीं सकता कि कोई नबी यरूशलेम के बाहर मारा जाए।"

यरूशलेम पर विलाप

३४ 'हे यरूशलेम, हे यरूशलेम, जो नबियों की हत्या करती और प्रेरितों
को पत्थरों से मार डालती है, मैंने कितनी बार चाहा कि जैसे मुर्गी अपने
बच्चों को पंखों के नीचे एकत्रित करती है, वैसे ही मैं भी तेरे बच्चों को
एकत्रित कर लूं पर तूने न चाहा। ३५ देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिए
उजाड़ छोड़ा जाता है। मैं तुमसे कहता हूं कि तुम मुझे नहीं देखोगे जब तक
कहने न लगो, "जो प्रभु के नाम जाता है उसकी स्तुति हो।"

१४

जलोदर-पीड़ित को सबत के दिन स्वस्थ करना

१ वह एक सबत के दिन किसी फरीसी अधिकारी के घर भोजन करने गए
तो लोग उनकी घात में लगे थे। २ और देखो, जलोदर से पीड़ित एक मनुष्य
यीशु के सामने था। ३ यीशु ने व्यवस्थाचार्यों और फरीसियों से पूछा, 'सबत
के दिन स्वस्थ करना विहित है या नहीं?' पर वे चुप रहे। ४ अस्तु, उन्होंने

and healed him, and let him go ; 5 and answered them,
saying, Which of you shall have an ass or an ox fallen
into a pit, and will not straightway pull him out on
the sabbath day ? 6 And they could not answer him
again to these things.

HUMILITY AND HOSPITALITY

7 And he put forth a parable to those which were
bidden, when he marked how they chose out the chief
rooms ; saying unto them, 8 When thou art bidden of
any man to a wedding, sit not down in the highest
room ; lest a more honourable man than thou be bidden
of him ; 9 and he that bade thee and him come and
say to thee, Give this man place ; and thou begin with
shame to take the lowest room. 10 But when thou art
bidden, go and sit down in the lowest room ; that when
he that bade thee cometh, he may say unto thee, Friend,
go up higher : then shalt thou have worship in the
presence of them that sit at meat with thee. 11 For
whosoever exalteth himself shall be abased ; and he that
humbleth himself shall be exalted.

12 Then said he also to him that bade him, When
thou makest a dinner or a supper, call not thy friends,
nor thy brethren, neither thy kinsmen, nor thy rich
neighbours ; lest they also bid thee again, and a recom-
pence be made thee. 13 But when thou makest a feast,
call the poor, the maimed, the lame, the blind : 14 and
thou shalt be blessed ; for they cannot recompense thee ;
for thou shalt be recompensed at the resurrection of
the just.

PARABLE OF THE MARRIAGE FEAST

15 And when one of them that sat at meat with
him heard these things, he said unto him, Blessed is he
that shall eat bread in the kingdom of God. 16 Then
said he unto him, A certain man made a great supper,
and bade many : 17 and sent his servant at supper time
to say to them that were bidden, Come ; for all things
are now ready. 18 And they all with one consent began

रोगी को ले कर स्वस्थ किया और जाने दिया ; ५ और तब उन लोगों से कहा, 'तुममें से ऐसा कौन है जिसका पुत्र या बैल कुएं में गिर जाए और वह सबत के दिन उसे तत्काल बाहर न निकाल ले ?' ६ वे इसका कुछ उत्तर न दे सके।

नम्रता और आतिथ्य

७ जब उन्होंने आमंत्रितों को मुख्य-मुख्य स्थान चुनते देखा तो उनसे यह दृष्टांत कहा : ८ 'जब कोई तुम्हें विवाहोत्सव में निमंत्रित करे तो मुख्य स्थानों पर मत बैठो। कहीं ऐसा न हो कि उसने तुमसे भी अधिक सम्माननीय व्यक्ति को निमंत्रित किया हो ; ९ और जिसने तुम्हें और उसे निमंत्रित किया है, वह आकर तुमसे कहे, "इनको स्थान दीजिए।" तब तुमको लज्जित होकर सबसे नीचे स्थान पर बैठना पड़ेगा। १० अतएव जब तुम्हें निमंत्रित किया जाए तो जाकर सबसे नीचे स्थान पर बैठो कि जब तुम्हें निमंत्रण देनेवाला आए तो तुमसे कहे, "आगे बढ़कर बैठिए।" इससे सब अतिथियों के समक्ष तुम्हारी प्रतिष्ठा होगी, ११ क्योंकि प्रत्येक मनुष्य जो अपने आपको ऊंचा करता है वह नीचा किया जाएगा, और जो अपने आपको नीचा करता है वह ऊंचा किया जाएगा।'

१२ उन्होंने निमंत्रण देनेवाले से भी कहा, 'जब तुम मध्याह्न अथवा रात्रि का भोज दो तो अपने मित्रों, भाइयों, संबंधियों या धनवान पड़ौसियों को मत बुलाओ ; ऐसा न हो कि वे भी तुम्हें निमंत्रित करें और तुम्हें प्रतिदान मिल जाए। १३ जब तुम भोज दो तो कंगालों, अपंगों, लंगड़ों और अंधों को निमंत्रित करो ; १४ तब तुम धन्य होगे, क्योंकि वे प्रतिदान नहीं कर सकते और तुम्हें धर्मात्माओं के पुनरुत्थान के समय इसका प्रतिदान मिलेगा।'

भोज का दृष्टांत

१५ यह सुनकर साथ बैठा हुआ कोई अतिथि बोला, 'धन्य है वह जो परमेश्वर के राज्य में भोजन करेगा।' १६ यीशु ने उससे कहा, 'किसी मनुष्य ने बड़ा भोज दिया और बहुतों को निमंत्रित किया। १७ भोज का समय होने पर उसने निमंत्रित व्यक्तियों को अपने दास द्वारा कहला भेजा, "पधारिए, क्योंकि सब कुछ तैयार है।" १८ पर वे सब के सब बहाना करने लगे। पहले ने कहा, "मैंने एक खेत मोल लिया है और उसे देखने के लिए मेरा जाना आवश्यक है। निवेदन है कि मेरी ओर से क्षमा मांग लेना।"

to make excuse. The first said unto him, I have bought
a piece of ground, and I must needs go and see it:
I pray thee have me excused. 19 And another said, I
have bought five yoke of oxen, and I go to prove them:
I pray thee have me excused. 20 And another said, I
have married a wife, and therefore I cannot come. 21 So
that servant came, and shewed his lord these things.
Then the master of the house being angry said to his
servant, Go out quickly into the streets and lanes of
the city, and bring in hither the poor, and the maimed,
and the halt, and the blind. 22 And the servant said,
Lord, it is done as thou hast commanded, and yet there
is room. 23 And the lord said unto the servant, Go
out into the highways and hedges, and compel them
to come in, that my house may be filled. 24 For I say
unto you, That none of those men which were bidden
shall taste of my supper.

THE COST OF DISCIPLESHIP

25 And there went great multitudes with him: and
he turned, and said unto them. 26 If any man come to
me, and hate not his father, and mother, and wife, and
children, and brethren, and sisters, yea, and his own
life also, he cannot be my disciple. 27 And whoso-
ever doth not bear his cross, and come after me, cannot
be my disciple. 28 For which of you, intending to
build a tower, sitteth not down first, and counteth the
cost, whether he have sufficient to finish it? 29 Lest
haply, after he hath laid the foundation, and is not
able to finish it, all that behold it begin to mock him,
30 saying, This man began to build, and was not able
to finish. 31 Or what king, going to make war against
another king, sitteth not down first, and consulteth
whether he be able with ten thousand to meet him
that cometh against him with twenty thousand? 32 Or
else, while the other is yet a great way off, he sendeth
an ambassage, and desireth conditions of peace. 33 So
likewise, whosoever he be of you that forsaketh not all
that he hath, he cannot be my disciple. 34 Salt is

१९ दूसरे ने कहा, "मैंने पांच जोड़े बैल मोल लिए हैं और उनको परखने जा
रहा हूं। निवेदन है कि मेरी ओर से क्षमा मांग लेना।" २० एक और बोला
"मैंने विवाह किया है, इसलिए नहीं आ सकता।" २१ दास ने लौट कर ये
बातें अपने स्वामी को कह सुनाईं। तब गृहस्वामी ने क्रुद्ध होकर अपने दास
से कहा, "तुरंत नगर के मार्गों और गलियों में जाओ और कंगालों, लंगड़ों
एवं अंधों को यहां ले आओ।" २२ दास ने बताया, "स्वामी, आपने जो आज्ञा
दी थी वह पूरी हो चुकी, और फिर भी स्थान है।" २३ इस पर स्वामी ने दास
से कहा, "सड़कों और बाड़ों की ओर जाओ और लोगों को भीतर आने के लिए
बाध्य करो कि मेरा घर भर जाए। २४ क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं कि उन
निमंत्रित व्यक्तियों में से कोई भी मेरे भोज का स्वाद न लेने पाएगा।"'

शिष्यों के लिए आत्मत्याग की आवश्यकता

२५ अब विशाल जनसमूह उनके साथ चल रहा था; वह घूमकर उनसे
कहने लगे, २६ 'यदि कोई मेरे पास आता है और अपने माता-पिता, पत्नी
और बच्चों, भाइयों और बहनों, यहां तक कि अपने प्राणों से भी बैर नहीं करता
वह मेरा शिष्य नहीं हो सकता। २७ जो अपना क्रूस नहीं उठाता और मेरे
पीछे नहीं चलता, वह मेरा शिष्य नहीं हो सकता। २८ तुममें से ऐसा कौन
है जो गढ़ बनाना चाहता हो और पहले बैठकर व्यय का विचार न कर ले
कि उसे पूरा करने के साधन उसके पास हैं या नहीं? २९ ऐसा न हो कि नींव
डालने पर वह उसे पूरा न कर सके और देखनेवाले उसका उपहास करें कि
३० इस मनुष्य ने निर्माण कार्य आरंभ किया पर उसे पूर्ण न कर सका।
३१ अथवा कौन ऐसा राजा है कि दूसरे राजा से युद्ध करने निकले, और
पहले बैठकर अच्छी तरह विचार न कर ले कि जो बीस सहस्र लेकर मुझ पर
चढ़ा आता है, क्या मैं दस सहस्र के साथ उसका सामना कर सकूंगा?
३२ यदि नहीं तो उसके दूर रहते ही राजदूत भेजकर वह उससे संधि की चर्चा
करेगा। ३३ इसी प्रकार तुममें से जो अपना सर्वस्व त्याग न करे वह मेरा
शिष्य नहीं हो सकता।

३४ नमक अच्छा है, परंतु यदि नमक अपना सलोनापन खो बैठे तो

good : but if the salt have lost his savour, wherewith
shall it be seasoned ? 35 It is neither fit for the land,
nor yet for the dunghill ; but men cast it out. He that
hath ears to hear, let him hear.

THE LOST SHEEP

15 Then drew near unto him all the publicans and
sinners for to hear him. 2 And the Pharisees
and scribes murmured, saying, This man receiveth
sinners, and eateth with them. 3 And he spake this
parable unto them, saying, 4 What man of you, having
an hundred sheep, if he lose one of them, doth not
leave the ninety and nine in the wilderness, and go
after that which is lost, until he find it ? 5 And when
he hath found it, he layeth it on his shoulders, rejoicing.
6 And when he cometh home, he calleth together his
friends and neighbours, saying unto them, Rejoice with
me ; for I have found my sheep which was lost. 7 I
say unto you, that likewise joy shall be in heaven over
one sinner that repenteth, more than over ninety and
nine just persons, which need no repentance.

THE LOST COIN

8 Either what woman having ten pieces of silver, if
she lose one piece, doth not light a candle, and sweep
the house, and seek diligently till she find it ? 9 And
when she hath found it, she calleth her friends and her
neighbours together, saying, Rejoice with me ; for I have
found the piece which I had lost. 10 Likewise, I say
unto you, there is joy in the presence of the angels of
God over one sinner that repenteth.

THE PRODIGAL SON

11 And he said, A certain man had two sons :
12 and the younger of them said to his father, Father,
give me the portion of goods that falleth to me. And
he divided unto them his living. 13 And not many
days after the younger son gathered all together, and

वह किससे स्वादिष्ट किया जायगा ? ३५ वह न तो भूमि के उपयोग का
रहता है और खाद के। लोग उसे बाहर फेंक देते हैं। जिसके सुनने के
कान हों, सुन ले।'

१५

खोई हुई भेड़

१ सब कर लेनेवाले और पापी उनके पास आ रहे थे कि उनकी बातें
सुनें। २ इस पर फरीसी और शास्त्री बड़बड़ाने लगे, 'यह तो पापियों का
स्वागत करता और उनके साथ खाता है।' ३ तब यीशु ने उनसे यह दृष्टांत
कहा, ४ 'तुममें से कौन है जिसकी सौ भेड़ हों और उनमें से एक खो जाए
तो निन्नानबे को निर्जन प्रदेश में छोड़कर खोई हुई भेड़ को, जब तक वह
मिल न जाए, ढूंढ़ता न रहे ? ५ मिल जाने पर वह आनंदपूर्वक उसे कंधे पर
पर उठा लेता है, ६ और घर आकर अपने मित्रों तथा पड़ोसियों को एकत्रित
करता और कहता है; "मेरे साथ आनंद मनाओ, क्योंकि मेरी खोई हुई
भेड़ मिल गई है।" ७ मैं तुमसे कहता हूं कि इसी प्रकार, हृदय-परिवर्तन
करनेवाले एक पापी के विषय में जितना आनन्द स्वर्ग में मनाया जाएगा उतना
निन्नानवे ऐसे धार्मिकों के विषय नहीं, जिन्हें हृदय-परिवर्तन की आवश्यकता
नहीं है।

खोई हुई मुद्रा

८ 'अथवा, कौन स्त्री होगी जिसके पास दस मुद्राएं* हों और उनमें से
एक खो जाए, तो दीपक जलाकर घर को नहीं बुहारे, और जब तक मिल न
जाए, मन लगाकर उसे ढूंढ़ती न रहे ? ९ मिल जाने पर वह सहेलियों और
पड़ोसियों को एकत्रित कर कहती है, "मेरे साथ आनन्द मनाओ, क्योंकि मेरी
खोई हुई मुद्रा मिल गई।" १० मैं तुमसे कहता हूं कि इसी प्रकार हृदय-
परिवर्तन करनेवाले एक पापी के विषय में स्वर्गदूतों के समक्ष आनंद
मनाया जाता है।'

उड़ाऊ पुत्र का दृष्टांत

११ उन्होंने कहा, 'किसी मनुष्य के दो पुत्र थे। १२ उनमें से छोटे ने
पिता से कहा, "पिता जी, संपत्ति से मेरा अंश मुझे दीजिए।" उसने संपत्ति
उनमें बांट दी। १३ बहुत दिन न बीते थे कि छोटा पुत्र अपना सब कुछ

* मूल में 'द्राख्मा'

took his journey into a far country, and there wasted
his substance with riotous living. 14 And when he
had spent all, there arose a mighty famine in that land;
and he began to be in want. 15 And he went and
joined himself to a citizen of that country; and he sent
him into his fields to feed swine. 16 And he would
fain have filled his belly with the husks that the swine
did eat: and no man gave unto him. 17 And when
he came to himself, he said, How many hired servants
of my father's have bread enough and to spare, and I
perish with hunger! 18 I will arise and go to my father,
and will say unto him, Father, I have sinned against
heaven, and before thee, 19 and am no more worthy to
be called thy son: make me as one of thy hired servants.
20 And he arose, and came to his father. But when
he was yet a great way off, his father saw him, and
had compassion, and ran, and fell on his neck, and
kissed him. 21 And the son said unto him, Father, I
have sinned against heaven, and in thy sight, and am
no more worthy to be called thy son. 22 But the father
said to his servants, Bring forth the best robe, and put
it on him; and put a ring on his hand, and shoes on
his feet: 23 and bring hither the fatted calf, and kill
it; and let us eat, and be merry: 24 for this my son
was dead, and is alive again; he was lost, and is found.
And they began to be merry.

25 Now his elder son was in the field: and as he
came and drew nigh to the house, he heard musick and
dancing. 26 And he called one of the servants, and
asked what these things meant. 27 And he said unto
him, Thy brother is come; and thy father hath killed
the fatted calf, because he hath received him safe and
sound. 28 And he was angry, and would not go in:
therefore came his father out, and intreated him. 29 And
he answering said to his father, Lo, these many years
do I serve thee, neither transgressed I at any time thy
commandment: and yet thou never gavest me a kid,
that I might make merry with my friends: 30 but as
soon as this thy son was come, which hath devoured thy

एकत्र कर किसी दूसरे देश को चला गया और वहां भोग-विलास में अपनी
संपत्ति उड़ादी । १४ वह अपना सब कुछ व्यय कर चुका तो उस देश में
भयंकर अकाल पड़ा और वह कंगाल हो गया । १५ इस लिए उसने उस देश
के एक नागरिक के यहां आश्रय लिया, जिसने उसे अपने खेतों में सूअर
चराने भेजा । १६ जो फलियां सूअर खाते थे, उनसे अपना पेट भरने के लिए
वह तरसता था, पर उसे कोई कुछ नहीं देता था । १७ तब वह अपने आपे में
आया और कहने लगा, "मेरे पिता के घर में कितने ही श्रमिकों को प्रचुर भोजन
मिलता है, और मैं यहां भूखों मर रहा हूं । १८ मैं उठकर अपने पिता के पास
जाऊंगा और उनसे कहूंगा, "पिताजी, मैंने स्वर्ग के विरुद्ध और आपके प्रति
पाप किया है । १९ अब मैं इस योग्य नहीं कि आपका पुत्र कहलाऊं ।
मुझे एक श्रमिक के समान रख लीजिए ।" २० तब वह उठा और अपने पिता
के पास चला । अभी वह दूर ही था कि उसके पिता ने उसे देखा और दया
से द्रवित हो उठा । उसने दौड़कर उसे गले लगा लिया और उसका चुंबन
किया । २१ पुत्र ने उससे कहा, "पिताजी, मैंने स्वर्ग के विरुद्ध और आपके प्रति
पाप किया है, अब मैं इस योग्य नहीं कि आपका पुत्र कहलाऊं ।" २२ परंतु
पिता ने अपने दासों से कहा, "शीघ्रता करो, अच्छे से अच्छा वस्त्र निकाल
कर इसे पहिनाओ, तथा इसके हाथ में अंगूठी और पांव में जूते पहिनादो ;
२३ और पाला हुआ बछड़ा लाकर काटो कि हम खाएं और आनन्द मनाएं ।
२४ क्योंकि मेरा पुत्र मर गया था, परंतु फिर जी गया है, खो गया था, और
फिर मिल गया है ।" अस्तु, वे आमोद-प्रमोद करने लगे ।

२५ 'उसका जेष्ठ पुत्र खेत में था । लौटते समय घर के समीप
पहुंचने पर उसे संगीत और नृत्य का शब्द सुनाई पड़ा । २६ उसने
एक सेवक को बुलाकर पूछा, "यह सब क्या हो रहा है ?" २७ उसने बताया,
"आपके भाई आए हैं, और आपके पिताजी ने पला हुआ बछड़ा काटा है
क्योंकि उन्होंने उनको सकुशल पाया है ।" २८ वह क्रुद्ध हुआ और भीतर
नहीं जाना चाहता था । इसपर उसका पिता बाहर आकर उसे मनाने लगा ।
२९ उसने अपने पिता से कहा, "देखिए, मैं इतने वर्षों से आपकी सेवा कर रहा
हूं, और मैंने कभी आपकी आज्ञा नहीं टाली ; तो भी आपने मुझे कभी बकरी
का बच्चा तक न दिया कि मैं अपने मित्रों के साथ आमोद-प्रमोद करता,
३० परंतु जब आपका यह पुत्र, जिसने आपकी संपत्ति वेश्याओं में उड़ा दी है,

living with harlots, thou hast killed for him the fatted
calf. 31 And he said unto him, Son, thou art ever
with me, and all that I have is thine. 32 It was meet
that we should make merry, and be glad : for this thy
brother was dead, and is alive again ; and was lost,
and is found.

THE UNJUST STEWARD

16 And he said also unto his disciples, There was a
certain rich man, which had a steward ; and the
same was accused unto him that he had wasted his
goods. 2 And he called him, and said unto him, How
is it that I hear this of thee ? give an account of thy
stewardship ; for thou mayest be no longer steward.
3 Then the steward said within himself, What shall I
do ! for my lord taketh away from me the stewardship :
I cannot dig ; to beg I am ashamed. 4 I am resolved
what to do, that, when I am put out of the steward-
ship, they may receive me into their houses. 5 So
he called every one of his lord's debtors unto him,
and said unto the first, How much owest thou unto
my lord ? 6 And he said, An hundred measures of
oil. And he said unto him, Take thy bill, and sit
down quickly, and write fifty. 7 Then said he to
another, And how much owest thou ? And he said,
An hundred measures of wheat. And he said unto
him, Take thy bill, and write fourscore. 8 And the
lord commended the unjust steward, because he had
done wisely : for the children of this world are in
their generation wiser than the children of light. 9 And
I say unto you, Make to yourselves friends of the
mammon of unrighteousness ; that, when ye fail, they
may receive you into everlasting habitations.

THE RIGHT USE OF WEALTH

10 He that is faithful in that which is least is faith-
ful also in much : and he that is unjust in the least
is unjust also in much. 11 If therefore ye have not
been faithful in the unrighteous mammon, who will
commit to your trust the true riches ? 12 And if ye

आया तो उसके लिए आपने पला हुआ बछड़ा कटवाया ।" ३१ पिताने उससे
कहा, "पुत्र,तुम तो सदा मेरे साथ हो ; और जो कुछ मेरा है वह तुम्हारा है ।
३२ परन्तु हमें आमोद-प्रमोद करना और आनंद मनाना उचित था क्योंकि
तुम्हारा यह भाई मर गया था, फिर जी गया है ; खो गया था, और
फिर मिल गया है ।"

१६

अधर्मी भंडारी

१ उन्होंने शिष्यों से यह कहा, 'किसी धनी पुरुष का एक भंडारी था ।
स्वामी के संमुख उस पर अभियोग लगाया गया, "वह मनुष्य आपकी संपत्ति
उड़ा रहा है ।" २ स्वामी ने उसे बुलाकर पूछा, "मैं तुम्हारे विषय में यह क्या
सुन रहा हूं ? अपने भंडारीपन का लेखा दो, क्योंकि अब तुम भंडारी नहीं
रह सकते ।" ३ भंडारी ने अपने मन में कहा, "अब मैं क्या करूं ? स्वामी
मुझ से भंडारीपन छीन रहे हैं । मिट्टी खोदने की सामर्थ्य मुझमें है नहीं और
भीख मांगने में मुझे लज्जा आती है । ४ समझा ! मुझे क्या करना है कि
भंडारीपन से पृथक् किए जाने पर भी लोगोंके घरों में मेरा स्वागत हो ?" ५ उसने
स्वामी के ऋणियों को एक-एक कर बुलाया और पहले से पूछा, "तुम पर मेरे
स्वामी का कितना ऋण है ?"" ६ उसने कहा, "सौ मन तेल ।" तब वह उससे
बोला, "यह अपना ऋणपत्र लो, बैठो और शीघ्र पचास लिख दो ।" ७ तब
उसने दूसरे से पूछा, "तुम पर कितना ऋण है ?" उसने उत्तर दिया, "सौ मन
गेहूं ।" तब वह उससे बोला, "अपना ऋणपत्र लो और अस्सी लिख दो ।"
८ स्वामी ने उस अधर्मी भंडारी की सराहना की कि उसने चतुराई से काम
लिया । क्योंकि इस युग की संतान अपनी पीढ़ी के प्रति, ज्योति की संतान की
अपेक्षा, अधिक चतुर है । ९ इसलिए मैं तुमसे कहता हूं कि अधर्म के धन से
अपने लिए मित्र बनालो कि जब वह जाता रहे तो शाश्वत-निवास में तुम्हारा
स्वागत हो ।

धन का उपयोग

१० 'जो थोड़े में विश्वासपात्र होता है, वह बहुत में भी विश्वासपात्र निकलता
है, और जो थोड़े में अधर्मी होता है वह बहुत में अधर्मी निकलता है । ११ इस
लिए यदि तुम अधर्म के धन में विश्वासपात्र न हुए तो तुमको सच्चा धन कौन
सौंपेगा ? १२ और यदि तुम पराए धन में विश्वासपात्र न हुए तो तुम्हें तुम्हारा

have not been faithful in that which is another man's,
who shall give you that which is your own ? 13 No
servant can serve two masters : for either he will hate
the one, and love the other ; or else he will hold
to the one, and despise the other. Ye cannot serve
God and mammon.

THE PHARISEES REBUKED

14 And the Pharisees also, who were covetous,
heard all these things : and they derided him. 15 And
he said unto them, Ye are they which justify yourselves
before men ; but God knoweth your hearts : for that
which is highly esteemed among men is abomination in
the sight of God.

16 The law and the prophets were until John : since
that time the kingdom of God is preached, and every
man presseth into it. 17 And it is easier for heaven
and earth to pass, than one tittle of the law to fail.

18 Whosoever putteth away his wife, and marrieth
another, committeth adultery : and whosoever marrieth
her that is put away from her husband committeth
adultery.

THE RICH MAN AND THE BEGGAR LAZARUS

19 There was a certain rich man, which was clothed
in purple and fine linen, and fared sumptuously every
day : 20 and there was a certain beggar named Lazarus,
which was laid at his gate, full of sores, 21 and desiring
to be fed with the crumbs which fell from the rich
man's table : moreover the dogs came and licked his
sores. 22 And it came to pass, that the beggar died,
and was carried by the angels into Abraham's bosom :
the rich man also died, and was buried ; 23 and in
hell he lift up his eyes, being in torments, and seeth
Abraham afar off, and Lazarus in his bosom. 24 And
he cried and said, Father Abraham, have mercy on
me, and send Lazarus, that he may dip the tip of
his finger in water, and cool my tongue ; for I am
tormented in this flame. 25 But Abraham said, Son,

अपना धन कौन देगा ? १३ कोई सेवक दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक के प्रति द्वेष रखेगा और दूसरे से प्रेम करेगा ; अथवा एक के प्रति भक्ति रखेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा। तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।' १४ धन के लोभी फरीसी ये सब बातें सुनकर उनका उपहास करने लगे। १५ यीशु ने उनसे कहा, 'मनुष्यों के सामने अपने को तुम धर्मात्मा जताते हो, परंतु परमेश्वर तुम्हारे हृदय को जानता है, क्योंकि जो मनुष्यों के लिये महान् है वह परमेश्वर की दृष्टि में घृणित है।

१६ 'व्यवस्था और नबी यूहन्ना तक रहे; उस समय से परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार का प्रचार हो रहा है और प्रत्येक व्यक्ति उसमें बलपूर्वक प्रवेश करने का प्रयत्न कर रहा है। १७ व्यवस्था की एक मात्रा के मिटनेकी अपेक्षा आकाश और पृथ्वी का टल जाना अधिक सरल है।

१८ 'जो कोई अपनी पत्नी को त्याग कर दूसरी से विवाह करे, वह व्यभिचार करता है और जो पति द्वारा परित्यक्त स्त्री से विवाह करता है, वह भी व्यभिचार करता है।

धनवान मनुष्य और निर्धन लाजर

१६ 'एक धनी मनुष्य था जो बैंजनी वस्त्र तथा मलमल पहिनता था, और ऐश्वर्य के साथ नित्य आमोद-प्रमोद किया करता था। २० उसके द्वार पर लाजर नामक एक दरिद्र मनुष्य घावों से भरा हुआ पड़ा रहता था। २१ वह उस धनवान की मेज से गिरी चूरचार से पेट भरने को तरसता था, और कुत्ते तक आकर उसके घाव चाटा करते थे। २२ अब ऐसा हुआ कि वह दरिद्र मनुष्य मर गया और स्वर्गदूतों ने उसे जाकर अब्रहाम की गोद में पहुंचाया। वह धनवान भी मरा और गाड़ा गया। २३ पाताल में उसने अपने आंख ऊपर उठाईं, दूर से ही अब्रहाम को देखा एवं उनकी गोद में लाजर को। २४ तब वह पुकार उठा, "पिता अब्रहाम, मुझ पर दया कीजिए। लाजर को भेजिए कि वह अपनी अंगुली का सिरा जल में डुबा कर जीभ को ठंडा करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूं।" २५ अब्रहाम ने उससे कहा, "पुत्र, स्मरण करो कि तुम अपने जीवन में अच्छी अच्छी वस्तुएं प्राप्त कर

remember that thou in thy lifetime receivedst thy good
things, and likewise Lazarus evil things : but now he
is comforted, and thou art tormented. 26 And beside
all this, between us and you there is a great gulf fixed :
so that they which would pass from hence to you
cannot ; neither can they pass to us, that would come
from thence. 27 Then he said, I pray thee therefore,
father, that thou wouldest send him to my father's
house : 28 for I have five brethren ; that he may testify
unto them, lest they also come into this place of tor-
ment. 29 Abraham saith unto him, They have Moses
and the prophets ; let them hear them. 30 And he
said, Nay, father Abraham : but if one went unto them
from the dead, they will repent. 31 And he said unto
him, If they hear not Moses and the prophets, neither
will they be persuaded, though one rose from the dead.

SOME SAYINGS OF JESUS

17 Then said he unto the disciples, It is impossible
but that offences will come : but woe unto him,
through whom they come ! 2 It were better for him
that a millstone were hanged about his neck, and he cast
into the sea, than that he should offend one of these
little ones. 3 Take heed to yourselves : If thy brother
trespass against thee, rebuke him ; and if he repent,
forgive him. 4 And if he trespass against thee seven
times in a day, and seven times in a day turn again to
thee, saying, I repent ; thou shalt forgive him.

5 And the apostles said unto the Lord, Increase our
faith. 6 And the Lord said, If ye had faith as a grain
of mustard seed, ye might say unto this sycamine tree,
Be thou plucked up by the root, and be thou planted in
the sea ; and it should obey you.

7 But which of you, having a servant plowing or
feeding cattle, will say unto him by and by, when he is
come from the field, Go and sit down to meat ? 8 And
will not rather say unto him, Make ready wherewith

चुके हो और इसी प्रकार लाजर बुरी। परंतु अब यह यहां शांति में है और
तुम यंत्रणा में। २६ इसके अतिरिक्त हमारे और तुम्हारे बीच एक बड़ी
खाई है, इससे यदि कोई यहां से तुम्हारे पास जाना चाहे तो नहीं जा सकता,
और न वहां से कोई हमारे पास आ सकता है।" २७ इस पर उसने
कहा, "तब पिता, मैं निवेदन करता हूं कि उसे मेरे पिता के घर भेजिए,
२८ क्योंकि मेरे पांच भाई हैं; वह उन्हें चेतावनी दे कि वे भी इस यंत्रणा के
स्थान में न आएं।" २६ अब्रहाम ने कहा, "मूसा और नबियों की पुस्तकें
उनके पास हैं। वे उनकी सुनें।" ३० वह बोला, "नहीं, पिता अब्रहाम ;
परंतु यदि मृतकों में से कोई उनके पास जाए तो उनके हृदय-परिवर्त्तन होंगे।"
३१ अब्रहाम ने उत्तर दिया, "जब वे मूसा और नबियों की नहीं सुनते तो यदि
कोई मृतकों में से भी जी उठे तो उसकी भी नहीं मानेंगे।'

१७

यीशु के कुछ उपदेश

१ उन्होंने अपने शिष्यों से कहा, 'यह असंभव है कि प्रलोभन न आएं,
परंतु शोक उस पर जिसके द्वारा वे आते हैं। २ जो इन छोटों में से किसी
को फंसाता है उसके लिए यह कहीं अच्छा होता कि चक्की का पाट उसके
गले में लटकाया जाता और वह समुद्र में डाल दिया जाता। ३ सावधान
रहो! यदि तुम्हारा भाई अपराध करे तो उसे रोको, और यदि वह हृदय-
परिवर्तन कर ले तो उसे क्षमा कर दो। ४ यदि वह दिन में सात बार तुम्हारे
विरुद्ध अपराध करे और सातों बार आकर तुमसे कहे कि मैं हृदय-परिवर्तन
करता हूं, तो तुम्हें चाहिए कि उसे क्षमा कर दो।

५ प्रेरितों ने प्रभु से कहा, 'हमारा विश्वास बढ़ाइए।' ६ प्रभु ने उत्तर
दिया, 'यदि तुममें राई के बीज के बराबर भी विश्वास हो और इस शहतूत
के वृक्ष कहो कि उखड़ जा और समुद्र में लग जा, तो वह तुम्हारी आज्ञा
मान लेगा।

७ 'तुम में ऐसा कौन है जिसका दास हल चलाकर अथवा भेड़ें चराकर
खेत से आए तो उससे कहे, "शीघ्र आ और भोजन कर ले ;" ८ और यह
न कहे, "भोजन तैयार कर ; और जब तक मैं खा-पी न लूं कमर कसकर

I may sup, and gird thyself, and serve me, till I have
eaten and drunken ; and afterward thou shalt eat and
drink ? 9 Doth he thank that servant because he did
the things that were commanded him ? I trow not. 10 So
likewise ye, when ye shall have done all those things
which are commanded you, say, We are unprofitable
servants : we have done that which was our duty to do.

JESUS CURES TEN LEPERS

11 And it came to pass, as he went to Jerusalem,
that he passed through the midst of Samaria and Galilee.
12 And as he entered into a certain village, there met
him ten men that were lepers, which stood afar off :
13 and they lifted up their voices, and said, Jesus,
Master, have mercy on us. 14 And when he saw them,
he said unto them, Go shew yourselves unto the priests.
And it came to pass, that, as they went, they were
cleansed. 15 And one of them, when he saw that he
was healed, turned back, and with a loud voice glorified
God, 16 and fell down on his face at his feet, giving him
thanks : and he was a Samaritan. 17 And Jesus answer-
ing said, Were there not ten cleansed ? but where are
the nine ? 18 There are not found that returned to
give glory to God, save this stranger. 19 And he said
unto him, Arise, go thy way : thy faith hath made thee
whole.

THE COMING OF THE KINGDOM

20 And when he was demanded of the Pharisees,
when the kingdom of God should come, he answered
them and said, The kingdom of God cometh not with
observation : 21 neither shall they say, Lo here ! or,
lo there ! for, behold, the kingdom of God is within
you. 22 And he said unto the disciples, The days will
come, when ye shall desire to see one of the days of the
Son of man, and ye shall not see it. 23 And they shall
say to you, See here ; or, see there : go not after them,
nor follow them. 24 For as the lightning, that lighte-
neth out of the one part under heaven, shineth unto the

मेरी सेवा कर, उसके पश्चात् तू भी खा-पी लेना।" ९ क्या वह दास का
अनुगृहीत होगा कि उसने इन आज्ञाओं का पालन किया ? १० इसी प्रकार
तुम भी सब आज्ञाओं का पालन कर लेने पर कहो, "हम अयोग्य दास हैं, हमने
केवल वही किया जो हमें करना चाहिए था।"'

दस कोढ़ियों का स्वस्थ किया जाना

११ यरूशलेम जाते समय वह सामरिया और गलील के बीच से होकर
निकले। १२ किसी गांव में प्रवेश करते समय उनकी दस कोढ़ियों से भेंट
हुई, १३ जिन्होंने दूर खड़े होकर ऊंचे स्वर में कहा, 'हे यीशु, हे स्वामी, हम
पर दया कीजिए।' १४ उनको देखकर यीशु ने कहा, 'जाओ और अपने आप
को पुरोहितों को दिखाओ।' जाते-जाते वे लोग शुद्ध हो गए। १५ तब
उनमें से एक यह देखकर कि मैं स्वस्थ हो गया हूं उच्च स्वर से परमेश्वर की
स्तुति करता हुआ लौटा। १६ वह मुंह के बल उनके चरणों पर गिरा और
उन्हें धन्यवाद देने लगा। वह सामरी था। १७ तब यीशु ने कहा, 'क्या दसों
शुद्ध नहीं हुए थे ? तो फिर नौ कहां हैं ? १८ क्या इस विदेशी के अतिरिक्त
और कोई ऐसा न निकला जो लौटकर परमेश्वर की स्तुति करता ?'
१९ तब उन्होंने उससे कहा, 'उठो और जाओ ; तुम्हारे विश्वास ने तुम्हें
स्वस्थ किया है।'

परमेश्वर का राज्य

२० फरीसियों के पूछने पर कि परमेश्वर का राज्य कब आ रहा है,
उन्होंने उत्तर दिया, 'परमेश्वर के राज्य का आगमन आंख का विषय नहीं
है ; २१ लोग यह नहीं कहेंगे, "देखो, यहां है" अथवा "वहां है", क्योंकि
परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में है।' २२ फिर उन्होंने शिष्यों से कहा
'वे दिन आ रहे हैं जब तुम मानव-पुत्र के दिनों में से एक दिन देखने को
तरसोगे और देख न सकोगे। २३ लोग तुमसे कहेंगे, "देखो, वहां ! देखो,
यहां !" पर तुम न जाना, और उनके पीछे मत लगना। २४ क्योंकि जैसे
बिजली कौंधकर आकाश में एक ओर से दूसरी ओर तक आलोकित हो उठती

other part under heaven ; so shall also the Son of man
be in his day. 25 But first must he suffer many things,
and be rejected of this generation. 26 And as it
was in the days of Noe, so shall it be also in
the days of the Son of man. 27 They did eat, they
drank, they married wives, they were given in mar-
riage, until the day that Noe entered into the ark, and
the flood came, and destroyed them all. 28 Likewise
also as it was in the days of Lot ; they did eat, they
drank, they bought, they sold, they planted, they builded ;
29 but the same day that Lot went out of Sodom it
rained fire and brimstone from heaven, and destroyed
them all. 30 Even thus shall it be in the day when
the Son of man is revealed. 31 In that day, he
which shall be upon the housetop, and his stuff in
the house, let him not come down to take it
away : and he that is in the field, let him like-
wise not return back. 32 Remember Lot's wife.
33 Whosoever shall seek to save his life shall lose it ;
and whosoever shall lose his life shall preserve it.
34 I tell you, in that night there shall be two men in one
bed ; the one shall be taken, and the other shall be left.
35 Two women shall be grinding together ; the one
shall be taken, and the other left. 36 Two men shall
be in the field ; the one shall be taken, and the other
left. 37 And they answered and said unto him, Where,
Lord ? And he said unto them, Wheresoever the body
is, thither will the eagles be gathered together.

THE UNRIGHTEOUS JUDGE

18 And he spake a parable unto them to this end,
that men ought always to pray, and not to faint ;
2 saying, There was in a city a judge, which feared not
God, neither regarded man : 3 and there was a widow
in that city ; and she came unto him, saying, Avenge
me of mine adversary. 4 And he would not for a
while : but afterward he said within himself, Though

है उसी प्रकार मानव-पुत्र अपने दिन में होगा। २५ परंतु इससे पहले यह
अनिवार्य है कि उसे बहुत दुःख उठाने पड़ें और वह इस पीढ़ी द्वारा तुच्छ
समझा जाए २६ जैसा नूह के दिनों में हुआ वैसा ही मानव-पुत्र के दिन में भी
होगा। २७ नूह के नौका पर चढ़ने के दिन तक लोग खाते-पीते और विवाह
करते कराते रहे; तब जल-प्रलय हुआ और सब नष्ट हो गए। २८ इसी
प्रकार लूत के दिनों में हुआ, लोग खाते-पीते क्रय-विक्रय करते, वृक्ष लगाते और
घर बनाते रहे, २९ परंतु जिस दिन लूत सदोम से निकला उसी दिन आकाश
से अग्नि और गंधक की वर्षा हुई और सब नष्ट हो गए। ३० मानव-पुत्र के
प्रकट होने के दिन भी ऐसा ही होगा। ३१ उस दिन यदि कोई छत पर हो
और उसकी संपत्ति घर में हो तो वह उसे नीचे न उतरे ; इसी प्रकार जो खेत
में हो वह पीछे की ओर न मुड़े। ३२ लूत की पत्नी को स्मरण रखो। ३३ जो
अपने प्राण बचाने का प्रयत्न करे वह उन्हें खोएगा, और जो खोए वह उन्हें
जीवित रखेगा। ३४ मैं तुमसे कहता हूं, उस रात दो मनुष्य एक शय्या पर
होंगे, एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा ; ३५ दो स्त्रियों
साथ-साथ चक्की पीसती होंगी, एक ले ली जाएगी और दूसरी छोड़ दी
जाएगी ; ३६ खेत में दो मनुष्य होंगे, एक ले लिया जायगा और दूसरा छोड़
दिया जायगा।' ३७ उन्होंने पूछा, 'हे प्रभु, कहाँ ?' यीशु ने कहा, 'जहां
शव पड़ा है वहीं गिद्ध एकत्रित होंगे।"

१८

अधर्मी न्यायाधीश

१ उन्होंने यह बतलाने के लिए कि सदा प्रार्थना में लगे रहना चाहिए
और हतोत्साहित न होना चाहिए, उनसे एक दृष्टांत कहा। २ 'किसी नगर में
एक न्यायाधीश रहता था जो न परमेश्वर से डरता था ओर न मनुष्यों का
मान करता था। ३ उसी नगर में एक विधवा रहती थी जो उसके पास
आ-आकर कहा करती थी, "न्याय कीजिए और मेरे प्रतिवादी से मुझे
बचाइए।" ४ कुछ समय तक तो वह न माना ; पर पीछे उसने अपने मन
में कहा, "यद्यपि मैं न परमेश्वर से डरता हूं और न मनुष्यों का मान करता

I fear not God, nor regard man ; 5 yet because this
widow troubleth me, I will avenge her, lest by her
continual coming she weary me. 6 And the Lord said,
Hear what the unjust judge saith. 7 And shall not
God avenge his own elect, which cry day and night
unto him, though he bear long with them ? 8 I tell you
that he will avenge them speedily. Nevertheless when
the Son of man cometh, shall he find faith on the earth ?

THE PHARISEE AND THE PUBLICAN

9 And he spake this parable unto certain which
trusted in themselves that they were righteous, and
despised others : 10 Two men went up into the temple
to pray ; the one a Pharisee, and the other a publican.
11 The Pharisee stood and prayed thus with himself,
God, I thank thee, that I am not as other men are,
extortioners, unjust, adulterers, or even as this publican.
12 I fast twice in the week, I give tithes of all that I
possess. 13 And the publican, standing afar off, would
not lift up so much as his eyes unto heaven, but smote
upon his breast, saying, God be merciful to me a sinner.
14 I tell you, this man went down to his house justified
rather than the other : for every one that exalteth
himself shall be abased ; and he that humbleth himself
shall de exalted.

JESUS BLESSES LITTLE CHILDREN

15 And they brought unto him also infants, that he
would touch them : but when his disciples saw it, they
rebuked them. 16 But Jesus called them unto him, and
said, Suffer little children to come unto me, and forbid
them not : for of such is the kingdom of God. 17 Verily
I say unto you, Whosoever shall not receive the king-
dom of God as a little child shall in no wise enter
therein.

ETERNAL LIFE AND THE OBSTACLE OF WEALTH

18 And a certain ruler asked him, saying, Good
Master, what shall I do to inherit eternal life ? 19 And
Jesus said unto him, Why callest thou me good ? none

हूं, ५ परंतु यह विधवा मुझे सताती है, इसलिए मैं इसका न्याय कर दूंगा
जिससे घड़ी-घड़ी आकर यह मुझे कष्ट न दे।" ६ प्रभु ने कहा, 'सुनो, इस
अधर्मी न्यायाधीश ने क्या कहा। ७ तो क्या परमेश्वर अपने मनोनीत लोगों
का, जो दिन रात उनकी दुहाई देते हैं, न्याय नहीं करेंगे? क्या वह उनके
लिए देर करेंगे? ८ मैं कहता हूं कि वह शीघ्र ही उनका न्याय करेंगे। अस्तु,
जब मानव-पुत्र आएगा तो क्या वह पृथ्वी पर विश्वास पाएगा?

फरीसी और कर लेनेवालों की प्रार्थनाएं

९ फिर यीशु ने कुछ ऐसे लोगों से, जिन्हें अपने विषय अभिमान था कि
हम धार्मिक हैं और अन्य सभी को तुच्छ समझते थे, यह दृष्टांत कहा:
१० 'दो मनुष्य मंदिर में प्रार्थना करने गए। एक फरीसी था और दूसरा
कर लेनेवाला। ११ फरीसी खड़ा होकर मन ही मन यों प्रार्थना करने लगा,
"हे परमेश्वर, मैं आपको धन्यवाद देता हूं कि मैं अन्य लोगों—अत्याचारियों,
अधर्मियों और व्यभिचारियों* के सदृश नहीं हूं; और न इस कर लेनेवाले
के सदृश हूं। १२ मैं सप्ताह में दो बार उपवास करता हूं; मैं अपनी समस्त
आय का दसवां अंश दान करता हूं।" १३ किंतु कर लेनेवाले ने दूर खड़े
होकर स्वग की ओर आंखे तक न उठाई, वरन् छाती पीट कर कहा "हे
परमेश्वर, मुझ पापी पर दया कीजिए।" १४ मैं तुमसे कहता हूं कि वह
नहीं, वरन् यह मनुष्य धार्मिक गिना जाकर अपने घर लौटा। अस्तु, प्रत्येक
मनुष्य जो अपने आपको नीचा करता है, वह ऊंचा किया जाएगा।'

बच्चों को आशीर्वाद

१५ लोग बच्चों को उनके पास लाने लगे कि वह उन्हें स्पर्श करें, और
शिष्यों ने यह देखकर लोगों को रोका। १६ पर यीशु ने बच्चों को अपने
पास बुलाया और कहा, 'बच्चों को मेरे पास आने दो, उन्हें मना न करो,
क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है। १७ मैं तुमसे सच कहता हूं
कि यदि कोई परमेश्वर के राज्य को बालक की भांति स्वीकार न करे तो वह
उसमें कदापि प्रवेश न करने पाएगा।'

शाश्वत जीवन में धन से बाधा

१८ एक अधिकारी ने उनसे पूछा, 'हे सद्गुरु, शाश्वत जीवन का उत्तरा-
धिकारी होने के लिए मैं क्या करूं?' १९ यीशु ने उससे कहा, 'तुम मुझे

* कुछ प्रतियो में ये चार शब्द नहीं पाए जाते।

is good, save one, that is, God. 20 Thou knowest the
commandments, Do not commit adultery, Do not kill,
Do not steal, Do not bear false witness, Honour thy
father and thy mother. 21 And he said, All these have I
kept from my youth up. 22 Now when Jesus heard these
things, he said unto him, Yet lackest thou one thing : sell
all that thou hast, and distribute unto the poor, and
thou shalt have treasure in heaven : and come, follow
me. 23 And when he heard this, he was very sorrowful :
for he was very rich. 24 And when Jesus saw that he
was very sorrowful, he said, How hardly shall they
that have riches enter into the kingdom of God ! 25 For
it is easier for a camel to go through a needle's eye, than
for a rich man to enter into the kingdom of God.
26 And they that heard it said, Who then can be
saved ? 27 And he said, The things which are im-
possible with men are possible with God. 28 Then
Peter said, Lo, we have left all, and followed thee.
29 And he said unto them, Verily I say unto you, There
is no man that hath left house, or parents, or brethren,
or wife, or children, for the kingdom of God's sake,
30 who shall not receive manifold more in this present
time, and in the world to come life everlasting.

JESUS FORETELLS HIS DEATH A THIRD TIME

31 Then he took unto him the twelve, and said
unto them, Behold, we go up to Jerusalem, and all
things that are written by the prophets concerning the
Son of man shall be accomplished. 32 For he shall be
delivered unto the Gentiles, and shall be mocked, and
spitefully entreated, and spitted on : 33 and they shall
scourge him, and put him to death : and the third day
he shall rise again. 34 And they understood none of
these things : and this saying was hid from them,
neither knew they the things which were spoken.

JESUS CURES A BLIND MAN

35 And it came to pass, that as he was come nigh
unto Jericho, a certain blind man sat by the way side

सत् क्यों कहते हो ? एक परमेश्वर को छोड़ कोई अन्य सत् नहीं। २० तुम्हें
आज्ञाएं ज्ञात हैं : "व्यभिचार न कर, चोरी न कर, झूठी साक्षी न दे, अपने
माता पिता का आदर कर।" ' २१ उसने उत्तर दिया, 'इन सबका मैंने अपनी
बाल्यावस्था से पालन किया।' २२ यह सुनकर यीशु ने उससे कहा, 'तुम
में अभी एक बात की कमी है ; जाओ, अपना सब कुछ बेचकर दरिद्रों को दे
डालो और स्वर्ग में तुम्हें धन मिलेगा, तब आओ और मेरे अनुयायी हो।'
२३ यह सुनकर उसे व्यथा हुई क्योंकि वह बहुत धनवान था। २४ यीशु ने
उसे देखकर कहा, 'संपत्तिशालियों का परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना
कितना कठिन है ! २५ परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने की
अपेक्षा, ऊंट का सुई के नाके में होकर निकल जाना अधिक सरल है।'
२६ इस पर सुननेवालों ने पूछा, 'तो फिर किसका उद्धार हो सकता है ?'
२७ उन्होंने कहा, 'जो बातें मनुष्यों के लिए असंभव है, वे परमेश्वर के लिए
संभव हैं।' २८ पतरस बोले, 'देखिए, हम घर-बार छोड़कर आपके अनुयायी
हो गए हैं।' २९ उन्होंने सब से कहा, 'मैं तुमसे सच कहता हूं कि ऐसा
कोई नहीं जो परमेश्वर के राज्य के लिए घर, पत्नी, भाई, माता-पिता या
संतान का परित्याग करे ३० और इस समय में उसे कई गुना न मिले तथा
आनेवाले युग में शाश्वत जीवन प्राप्त न हो।'

मृत्यु संबंधी तृतीय भविष्यवाणी

३१ फिर उन्होंने बारह को साथ लेकर उनसे कहा, 'देखो, हम यरूशलेम
की यात्रा कर रहे हैं ; और जो बातें नबियों ने मानव-पुत्र के विषय में लिखी
हैं वे सब पूर्ण होंगी। ३२ लोग उसे अन्य जातियों के हाथ सौंप देंगे ; वे
उसका उपहास और अपमान करेंगे, उस पर थूकेंगे, और कोड़ों से पीटने के
पश्चात् उसे मार डालेंगे।' ३३ उन्हें ये बातें समझ में नहीं आईं।
३४ यह कथन उनके लिए रहस्य ही रहा और वे इसका तात्पर्य नहीं समझ पाए।

अंधों को दृष्टिदान

३५ वह यरीहो के निकट पहुंचे। वहां एक अंधा मार्ग के किनारे बैठा

begging : 36 and hearing the multitude pass by, he asked
what it meant. 37 And they told him, that Jesus of
Nazareth passeth by. 38 And he cried, saying, Jesus,
thou son of David, have mercy on me. 39 And they
which went before rebuked him, that he should hold
his peace : but he cried so much the more, Thou son of
David, have mercy on me. 40 And Jesus stood, and
commnaded him to be brought unto him : and when he
was come near, he asked him, 41 saying, What wilt thou
that I shall do unto thee ? And he said, Lord, that I
may receive my sight. 42 And Jesus said unto him,
Receive thy sight : thy faith hath saved thee. 43 And
immediately he received his sight, and followed him,
glorifying God : and all the people, when they saw it,
gave praise unto God.

ZACCHAEUS

19 And Jesus entered and passed through Jericho.
2 And, behold, there was a man named Zacchæus,
which was the chief among the publicans, and he was
rich. 3 And he sought to see Jesus who he was ; and
could not for the press, because he was little of stature.
4 And he ran before, and climbed up into a sycomore
tree to see him : for he was to pass that way. 5 And
when Jesus came to the place, he looked up, and saw
him, and said unto him, Zacchæus, make haste, and
come down ; for to day I must abide at thy house.
6 And he made haste, and came down, and received
him joyfully. 7 And when they saw it, they all
murmured, saying, That he was gone to be guest with
a man that is a sinner. 8 And Zacchæus stood, and
said unto the Lord ; Behold, Lord, the half of my goods
I give to the poor ; and if I have taken any thing
from any man by false accusation, I restore him fourfold.
9 And Jesus said unto him, This day is salvation come
to this house, forsomuch as he also is a son of Abraham.
10 For the Son of man is come to seek and to save
that which was lost.

भीख मांग रहा था। ३६ वह जनसमूह के चलने का शब्द सुनकर पूछने
लगा कि क्या बात है। ३७ लोगों ने बताया कि नासरत निवासी यीशु
जा रहे हैं। ३८ इस पर वह पुकार उठा, 'हे यीशु, हे दाऊद-पुत्र, मुझ पर
दया कीजिए।' ३९ आगे चलनेवाले लोगों ने उसे रोका कि चुप रहे पर वह
और भी उच्च स्वर में पुकारने लगा, 'हे दाऊद-पुत्र मुझ पर दया कीजिए।'
४० यीशु खड़े हो गए और उसे अपने पास लाने की आज्ञा दी। जब वह
समीप आया तो उन्होंने उससे पूछा, ४१ 'तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे
लिए करूं?' उसने कहा, 'प्रभु, मैं देखने पाऊं'। ४२ यीशु ने उससे कहा,
'तुम पुनः देखने लगो। तुम्हारे विश्वास ने तुम्हें स्वस्थ किया।' ४३ उसी
क्षण वह देखने लगा और परमेश्वर की स्तुति करते हुए उनके
पीछे हो लिया। यह देख कर सारी जनता भी परमेश्वर की स्तुति
करने लगी।

१९

जक्कई

१ वह यरीहो में प्रवेश करके मार्ग में जा रहे थे। २ वहां जक्कई नामक
एक व्यक्ति था; जो कर लेनेवालों का मुखिया था और धनवान था।
३ वह यीशु को देखने के प्रयत्न में था कि वह कौन हैं, किंतु जनसमूह के
कारण देख न पाता था क्योंकि वह नाटा था। ४ अतः वह आगे दौड़ा
और उन्हें देखने के निमित्त एक गूलर के वृक्ष पर चढ़ गया, क्योंकि यीशु
उसी मार्ग से जाने वाले थे। ५ जब यीशु उस स्थान पर पहुंचे तो ऊपर
देखकर उससे बोले, 'जक्कई, शीघ्र उतरो, क्योंकि आज मुझे तुम्हारे घर
रहना है।' ६ वह तत्काल उतर आया और सहष उनका आतिथ्य किया।
७ यह देखकर सब बड़बड़ाने लगे कि वह एक पापी पुरुष के यहां अतिथि
हुए हैं। ८ जक्कई ने खड़े होकर प्रभु से कहा, 'प्रभु, देखिए, मैं अपनी
आधी संपत्ति दरिद्रों को दिए देता हूं और यदि मैंने किसी से अन्यायपूर्वक
कुछ किया है तो उसे चौगुना लौटा देता हूं।' ९ यीशु ने उससे कहा,
'आज इस घर में उद्धार आया है, क्योंकि यह मनुष्य भी अब्रहाम का पुत्र
है। १० मानव-पुत्र खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने
आया है।'

PARABLE OF THE TALENTS

18.31 11 And as they heard these things, he added and
(8) spake a parable, because he was nigh to Jerusalem, and
19.28 because they thought that the kingdom of God should
immediately appear. 12 He said therefore, A certain
nobleman went into a far country to receive for himself
a kingdom, and to return. 13 And he called his ten
servants, and delivered them ten pounds, and said unto
them, Occupy till I come. 14 But his citizens hated
him, and sent a message after him, saying, We will
not have this man to reign over us. 15 And it came to
pass, that when he was returned, having received the
kingdom, then he commanded these servants to be called
unto him, to whom he had given the money, that he
might know how much every man had gained by trading.
16 Then came the first, saying, Lord, thy pound hath
gained ten pounds. 17 And he said unto him, Well,
thou good servant : because thou hast been faithful in
a very little, have thou authority over ten cities.
18 And the second came, saying, Lord, thy pound hath
gained five pounds. 19 And he said likewise to him,
Be thou also over five cities. 20 And another came,
saying, Lord, behold, here is thy pound, which I have
kept laid up in a napkin : 21 for I feared thee, because
thou art an austere man : thou takest up that thou
layedst not down, and reapest that thou didst not sow.
22 And he saith unto him, Out of thine own mouth will
I judge thee, thou wicked servant. Thou knewest that
I was an austere man, taking up that I laid not down,
and reaping that I did not sow : 23 wherefore then gavest
not thou my money into the bank, that at my coming I
might have required mine own with usury ? 24 And
he said unto them that stood by, Take from him the
pound, and give it to him that hath ten pounds.
25 (And they said unto him, Lord, he hath ten pounds.)
26 For I say unto you, That unto every one which
hath shall be given ; and from him that hath not, even
that he hath shall be taken away from him. 27 But
those mine enemies, which would not that I should

मुद्राओं का दृष्टांत

११ लोग ये बातें सुन रहे थे तो यीशु ने एक दृष्टांत भी कहा, क्योंकि वह यरूशलेम के निकट थे और वे लोग समझते थे कि परमेश्वर का राज्य अभी प्रकट होने वाला है। १२ उन्होंने कहा, 'एक कुलीन मनुष्य दूर देश को चला कि राज्याधिकार प्राप्त करे और लौट आए। १३ उसने अपने दस दासों को बुलाकर उन्हें दस मुद्राएं* दीं और कहा, "मेरे लौटने तक इनसे व्यापार करो।" १४ उसके नगर निवासी उससे द्वेष करते थे, इसलिए उन्होंने उसके पीछे दूत-मंडल भेजकर कहा, "हम नहीं चाहते कि यह व्यक्ति हम पर राज्य करे।" १५ जब वह राज्याधिकार प्राप्त कर लौटा तो उसने यह जानने के लिए कि किसने कैसा व्यापार किया है उन दासों को अपने पास बुलवाया। १६ पहिले ने आकर बताया, "स्वामी, आपकी मुद्रा से मैंने दस मुद्राएं और कमाई हैं।" १७ उसने उससे कहा, "बहुत ठीक, उत्तम दास। तुम थोड़े में विश्वासपात्र रहे इसलिए तुम दस नगरों पर अधिकारी हुए।" १८ दूसरे ने आकर बताया, "स्वामी, आपकी मुद्रा से मैंने पांच मुद्राएं और कमाई हैं।" १९ उसने कहा, "तुम भी पांच नगरों के अधिकारी हुए।" २० तब एक और ने आकर बताया, "स्वामी, यह है आपकी मुद्रा, जिसे मैंने अंगोछे में छिपा रखा था; २१ मैं आपसे डरता था, क्योंकि आप कठोर मनुष्य हैं; जो आपने नहीं रखा उसे ले लेते हैं, और जो नहीं बोया उसे काटते हैं।" २२ उसने कहा, "अरे दुष्ट दास! मैं तेरे मुंह से ही तुझे दोषी प्रमाणित करता हूं। तू जानता था कि मैं कठोर मनुष्य हूं; जो मैंने नहीं रखा उसे ले लेता हूं, और जो नहीं बोया उसे काटता हूं; २३ तो तूने मेरा धन महाजन के पास क्यों नहीं रख दिया कि मैं उसे ब्याज सहित प्राप्त कर लेता?" २४ तब उसने समीप खड़े लोगों से कहा, "वह मुद्रा उससे ले लो, और उसे दे दो जिसके पास दस मुद्राएं हैं।" २५ लोगों ने उससे कहा, "स्वामी, उसके पास तो दस मुद्राएं हैं।" २६ "मैं तुमसे कहता हूं कि जिसके पास है, उसे और मिलेगा; और जिसके पास नहीं है, उससे वह भी जो उसके पास है छीन लिया जाएगा २७ अच्छा, अब मेरे बैरियों को, जो नहीं चाहते थे कि मैं उन पर राज्य करूं यहां लाओ और उन्हें मेरे सामने मार डालो।"

* मूल में 'मीना'

reign over them, bring hither, and slay them before me.

THE TRIUMPHAL ENTRY

19.11 (9)

28 And when he had thus spoken, he went before,
ascending up to Jerusalem. 29 And it came to pass,
when he was come nigh to Bethphage and Bethany, at
the mount called the mount of Olives, he sent two of
his disciples, 30 saying, Go ye into the village over against
you ; in the which at your entering ye shall find a colt
tied, whereon yet never man sat : loose him, and bring
him hither. 31 And if any man ask you, Why do ye
loose him ? thus shall ye say unto him, Because the
Lord hath need of him. 32 And they that were sent
went their way, and found even as he had said unto
them. 33 And as they were loosing the colt, the
owners thereof said unto them, Why loose ye the colt ?
34 And they said, The Lord hath need of him. 35 And
they brought him to Jesus : and they cast their
garments upon the colt, and they set Jesus thereon.
36 And as he went, they spread their clothes in the
way. 37 And when he was come nigh, even now at
the descent of the mount of Olives, the whole multi-
tude of the disciples began to rejoice and praise God
with a loud voice for all the mighty works that they
had seen ; 38 saying,

Blessed be the king that cometh in the name
of the Lord :
Peace in heaven and glory in the highest.

39 And some of the Pharisees from among the multi-
tude said unto him, Master, rebuke thy disciples. 40 And
he answered and said unto them, I tell you that, if
these should hold their peace, the stones would imme-
diately cry out.

LAMENTS OVER JERUSALEM

41 And when he was come near, he beheld the
city, and wept over it, 42 saying, If thou hadst known,
even thou, at least in this thy day, the things which
belong unto thy peace ! but now they are hid from

यरूशलेम में धूमधाम के साथ प्रवेश

२८ ये बातें कहकर वह आगे बढे और यरूशलेम की ओर चढ़ना आरंभ
किया। २९ जब वह जैतून पर्वत पर बैतफगे और बैतनिय्याह के समीप आए
तो उन्होंने दो शिष्यों को यह कह कर भेजा, ३० 'सामने केगांव में जाओं।
उसमें प्रवेश करते समय तुम्हें एक गदही का बच्चा बंधा हुआ मिलेगा जिस
पर कभी कोई नहीं चढ़ा। उसे खोलकर ले आओ। ३१ यदि कोई तुमसे
पूछे कि क्यों खोलते हो तो कहना, "प्रभु को इसकी आवश्यकता है।" ३२ जो
लोग भेजे गए थे, गए और उन्होंने कथन के अनुसार ही पाया। ३३ जब
वे गदही के बच्चे को खोल रहे थे तो उसके स्वामियों ने कहा, 'तुम गदही के
बच्चे को क्यों खोल रहे हो ?' ३४ उन्होंने कहा, 'प्रभु को इसकी आवश्य-
कता है।' ३५ वे उसे यीशु के पास लाए, और उस पर अपने वस्त्र डालकर
यीशु को उस पर बैठा दिया। ३६ जैसे जैसे वह आगे बढ़ते थे, लोग मार्ग में
अपने वस्त्र बिछाते चलते थे। ३७ जब, वह जैतून पर्वत के निकट उतार पर
पहुंचे तो शिष्यों का विशाल समुदाय आंखों देखे सामर्थ्य के कामों के लिए
आनंदित और उल्लासित हो उच्च स्वर से परमेश्वर की स्तुति करने लगा:

३८ 'प्रभु के नाम में आनेवाले
राजा की स्तुति !'
स्वर्ग में शांति और उच्चतम स्थानों में महिमा !'

३९ इस पर जनसमूह में से कुछ फरीसियों ने कहा, 'गुरु, अपने शिष्यों को
रोकिए।' ४० उन्होंने उत्तर दिया, 'मैं तुमसे कहता हूं कि यदि ये चुप रहे
तो पत्थर चिल्ला उठेंगे।'

यरूशलेम पर विलाप

४१ जब यीशु निकट आए और नगर को देखा तो उस पर रो पड़े
४२ और बोले, 'क्या ही अच्छा होता कि तू, हां तू, आज के दिन जानता कि

thine eyes. 43 For the days shall come upon thee, that
thine enemies shall cast a trench about thee, and compass
thee round, and keep thee in on every side, 44 and shall
lay thee even with the ground, and thy children
within thee ; and they shall not leave in thee one stone
upon another ; because thou knewest not the time of
thy visitation.

JESUS CLEANSES THE TEMPLE

45 And he went into the temple, and began to cast
out them that sold therein, and them that bought;
46 saying unto them, It is written, My house is the
house of prayer : but ye have made it a den of thieves.

47 And he taught daily in the temple. But the chief
priests and the scribes and the chief of the people
sought to destroy him, 48 and could not find what
they might do : for all the people were very attentive
to hear him.

JESUS' AUTHORITY QUESTIONED

20 And it came to pass, that on one of those days, as
he taught the people in the temple, and preached
the gospel, the chief priests and the scribes came upon
him with the elders, 2 and spake unto him, saying, Tell
us, by what authority doest thou these things ? or who
is he that gave thee this authority ? 3 And he an-
swered and said unto them, I will also ask you one
thing ; and answer me : 4 The baptism of John, was
it from heaven, or of men ? 5 And they reasoned with
themselves, saying, If we shall say, From heaven ;
he will say Why then believed ye him not ? 6 But
and if we say, Of men ; all the people will stone us :
for they be persuaded that John was a prophet. 7 And
they answered, that they could not tell whence it was.
8 And Jesus said unto them, Neither tell I you by what
authority I do these things.

PARABLE OF THE VINEYARD

9 Then began he to speak to the people this parable ;

शांति किन बातों में है; परंतु अभी ये बातें तेरी आंखों से छिपी हैं। ४३ पर
तेरे लिए ऐसे दिन आएंगे कि शत्रु मोर्चा बांध कर तुझे घेर लगे और चारों
ओर से तुझे दबाएंगे। ४४ वे तुझे और तुझमें निवास करनेवाली तेरी
संतान को मिट्टी में मिला देंगे, और तुझमें पत्थर पर पत्थर भी न छोड़ेंगे,
क्योंकि तूने अनुग्रहपूर्ण-आगमन का अवसर नहीं पहिचाना।'

मंदिर का परिष्करण

४५ तब यीशु ने मंदिर में प्रवेश किया और बेचने वालों को यह कह
कर बाहर निकालने लगे, ४६ 'शास्त्र का लेख है, मेरा घर प्रार्थना काघर
होगा, परंतु तुमने उसे डाकुओं का अड्डा बना रखा है।'

४७ वह मंदिर में प्रतिदिन उपदेश दिया करते थे। उधर महापुरोहित
शास्त्री तथा जनता के प्रमुख व्यक्ति इस प्रयत्न में थे कि कैसे उनका विनाश
करें; ४८ उनकी समझ में नहीं आता था कि क्या करें, क्योंकि जनता यीशु
की बातें सुनकर मुग्ध थी।

२०

यीशु के अधिकार पर शंका

१ एक दिन वह मंदिर में शिक्षा दे रहे थे और सुसमाचार सुना रहे थे
कि धर्मवृद्धों के साथ महापुरोहित एवं शास्त्री आए और पूछने लगे, २ 'हमें
बताइए कि किस अधिकार से आप ये कार्य करते हैं, अथवा वह कौन है
जिसने आपको यह अधिकार दिया है?' ३ उन्होंने उत्तर दिया, 'मैं भी
तुमसे एक प्रश्न करता हूं; मुझे बताओ, ४ यूहन्ना का बपतिस्मा स्वर्ग
की ओर से था या मनुष्यों की ओर से?' ५ वे आपस में कहने लगे, 'यदि
हम कहें "स्वर्ग की ओर से" तो यह कहेंगे, "तुमने उनका विश्वास क्यों
नहीं किया?" ६ परंतु यदि कहें, "मनुष्यों की ओर से" तो समस्त जनता
हमें पत्थरों से मार डालेगी,' क्योंकि लोगों की धारणा थी कि यूहन्ना नबी हैं।
७ इसलिए उन्होंने उत्तर दिया, 'हम नहीं जानते कि वह किसकी ओर से था।'
८ इस पर यीशु ने उनसे कहा, 'मैं भी तुम्हें नहीं बताता कि मैं किस अधिकार
से ये कार्य करता हूं।'

दाख-उद्यान का दृष्टांत

९ उन्होंने लोगों से यह दृष्टांत कहा : 'किसी मनुष्य ने दाख का उद्यान

A certain man planted a vineyard, and let it forth
to husbandmen, and went into a far country for a
long time. 10 And at the season he sent a servant
to the husbandmen, that they should give him of the
fruit of the vineyard : but the husbandmen beat him,
and sent him away empty. 11 And again he sent
another servant : and they beat him also, and entreated
him shamefully, and sent him away empty. 12 And
again he sent a third : and they wounded him also,
and cast him out. 13 Then said the lord of the vine-
yard, What shall I do ? I will send my beloved son :
it may be they will reverence him when they see him.
14 But when the husbandmen saw him, they reasoned
among themselves, saying, This is the heir : come, let
us kill him, that the inheritance may be ours. 15 So
they cast him out of the vineyard, and killed him.
What therefore shall the lord of the vineyard do unto
them ? 16 He shall come and destroy these husband-
men, and shall give the vineyard to others. And when
they heard it, they said, God forbid. 17 And he beheld
them, and said, What is this then that is written,

The stone which the builders rejected,
The same is become the head of the corner ?

18 Whosoever shall fall upon that stone shall be broken ;
but on whomsoever it shall fall, it will grind him to
powder. 19 And the chief priests and the scribes the
same hour sought to lay hands on him ; and they
feared the people : for they perceived that he had spoken
this parable against them.

A QUESTION ABOUT TRIBUTE

20 And they watched him, and sent forth spies,
which should feign themselves just men, that they might
take hold of his words, that so they might deliver him
unto the power and authority of the governor. 21 And
they asked him, saying, Master, we know that thou
sayest and teachest rightly, neither acceptest thou the
person of any, but teachest the way of God truly :
22 is it lawful for us to give tribute unto Cæsar, or
no ? 23 But he perceived their craftiness, and said unto

लगाया, और उसे कृषकों को पट्टे पर देकर बहुत दिनों के लिए विदेश चला
गया। १० ऋतु आने पर उसने एक दास को कृषकों के पास भेजा कि वे
दाख-उद्यान के फलों का कुछ भाग उसे दें, पर कृषकों ने उसे पीटा और खाली
हाथ लौटा दिया। ११ उसने एक और दास भेजा, उन्होंने उसे भी पीटा
और अपमानित कर खाली हाथ लौटा दिया। १२ उसने एक तीसरे को भी
भेजा ; पर उन्होंने उसे घायल कर बाहर निकाल दिया। १३ इस पर दाख-
उद्यान के स्वामी ने कहा, "मैं क्या करूं ? मैं अपने प्रिय पुत्र* को भेजूंगा।
संभवतः वे उसका आदर करें।" १४ किंतु उसे देखकर कृषकों ने आपस में
परामर्श किया, "यह उत्तराधिकारी है। आओ इसे मार डालें जिससे इसकी
पतृक संपत्ति हमारी हो जाए।" १५ इसलिए उन्होंने उसे दाख-उद्यान से
बाहर निकाल कर मार डाला। तो दाख-उद्यान का स्वामी उनके साथ क्या
करेगा ? १६ वह आकर कृषकों का विनाश करेगा और दाख-उद्यान दूसरों
को दे देगा।' यह सुनकर लोग बोल उठे, 'ईश्वर न करे कि ऐसा हो।'
१७ यीशु ने उनकी ओर देखकर कहा, 'तो फिर शास्त्र में क्या लिखा है।

"जिस पत्थर को भवन निर्माताओं ने निकृष्ट समझा
वह मेहराब की केन्द्र शिला बना है"

१८ जो कोई इस पत्थर पर गिरेगा वह खंड-खंड हो जाएगा और जिस पर
यह गिरेगा, उसको कुचल देगा।' १९ शास्त्रियों और महापुरोहितों ने उनको
उसी समय पकड़ना चाहा, क्योंकि वे समझ गए कि उन्होंने यह दृष्टांत उन्हीं
के संबंध में कहा था।

कैसर को कर देना विहित है या नहीं

२० उन लोगों ने अवसर देखकर गुप्तचर भेजे कि धार्मिक होने का ढोंग
रचें और यीशु को किसी न किसी बात में पकड़ें कि उन्हें राज्यपाल के शासन
तथा अधिकार में दे सकें। २१ इन लोगों ने निवेदन किया, 'गुरुजी, हमें
ज्ञात है कि आप ठीक बात बोलते और सिखाते हैं ; आप मुंह देखी नहीं कहते,
पर सचाई से परमेश्वर के मार्ग का उपदेश देते हैं। २२ हमें कैसर को कर देना
विहित है या नहीं ?' २३ यीशु ने उनकी धूर्तता समझ ली और बोले,

* अथवा, 'एकमात्र पुत्र'

them, Why tempt ye me ? 24 Shew me a penny. Whose
image and superscription hath it ? They answered and
said, Cæsar's. 25 And he said unto them, Render
therefore unto Cæsar the things which be Cæsar's, and
unto God the things which be God's. 26 And they
could not take hold of his words before the people:
and they marvelled at his answer, and held their peace.

A QUESTION ABOUT THE RESURRECTION

27 Then came to him certain of the Sadducees,
which deny that there is any resurrection ; and they
asked him, 28 saying, Master, Moses wrote unto us, If
any man's brother die, having a wife, and he die without
children, that his brother should take his wife, and
raise up seed unto his brother. 29 There were therefore
seven brethren : and the first took a wife, and died
without children. 30 And the second took her to
wife, and he died childless. 31 And the third took her ;
and in like manner the seven also : and they left no
children, and died. 32 Last of all the woman died also.
33 Therefore in the resurrection whose wife of them
is she ? for seven had her to wife. 34 And Jesus answer-
ing said unto them, The children of this world marry,
and are given in marriage : 35 but they which shall be
accounted worthy to obtain that world, and the resur-
rection from the dead, neither marry, nor are given in
marriage : 36 neither can they die any more : for they
are equal unto the angels ; and are the children of God,
being the children of the resurrection. 37 Now that
the dead are raised, even Moses shewed at the bush,
when he calleth the Lord the God of Abraham, and
the God of Isaac, and the God of Jacob. 38 For he
is not a God of the dead, but of the living : for all live
unto him. 39 Then certain of the scribes answering
said, Master, thou hast well said. 40 And after that
they durst not ask him any question at all.

IS CHRIST DAVID'S SON ?

41 And he said unto them, How say they that
Christ is David's son ? 42 And David himself saith
in the book of Psalms,

२४ 'मुझे एक दीनार दिखाओ। इस पर किसकी आकृति और लेख है?' उन्होंने
कहा, 'कैसर का।' २५ यीशु ने कहा, 'तो कैसर का कैसर को दो, और
परमेश्वर का परमेश्वर को।' २६ इस प्रकार वे लोगों के समक्ष उनको इस बात
में न पकड़ सके, और उनके उत्तर पर स्तंभित हो चुप रह गए।

पुनरुत्थान का प्रश्न

२७ इसके पश्चात् कुछ सदूकी आए तो पुनरुत्थान को नहीं मानते।
२८ उन्होंने प्रश्न किया, 'गुरुजी, हमारे लिए मूसा का लेख है कि यदि किसी
का भाई अपनी पत्नी के रहते हुए निस्संतान मर जाए तो उसे* चाहिए कि
उस स्त्री से विवाह कर अपने भाई के लिए संतान उत्पन्न करे।' २९ सात
भाई थे। पहले ने विवाह किया और निस्संतान मर गया। ३० और दूसरे,
३१ फिर तीसरे ने उस स्त्री से विवाह किया और इसी प्रकार सातों निस्संतान
मर गए। ३२ अंत में वह स्त्री भी मर गई। ३३ तो पुनरुत्थान होने पर वह
स्त्री इसमें से किसकी पत्नी होगी? क्योंकि वह सातों की पत्नी रही थी।'
३४ यीशु ने उनसे कहा, 'इस युग के संतान विवाह करते और विवाह में दिए
जाते हैं; ३५ पर जो इस योग्य गिने जाते हैं कि उस युग को और मृतकों
के पुनरुत्थान को प्राप्त करें, वे न विवाह करते और न विवाह में दिए जाते
हैं, ३६ क्योंकि वे तब मरने के नहीं, वे स्वर्गदूतों के तुल्य हैं और पुनरुत्थान
के संतान होने के कारण परमेश्वरके संतान हैं। ३७ किंतु मृतक जी उठते
हैं—यह तो मूसा ने भी झाड़ी के प्रकरण में दिखाया है, जहां, वह प्रभु को
"अब्रहाम का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर" कहते हैं। ३८ अस्तु,
परमेश्वर मृतकों का नहीं, परंतु जीवितों का परमेश्वर है; क्योंकि उसके लिए
सब जीवित हैं।' ३९ इस पर कई शास्त्रियों ने उत्तर दिया, 'गुरुजी, आपने
बहुत अच्छा कहा।' ४० फिर उन्हें और कोई प्रश्न पूछने का साहस
नहीं हुआ।

दाऊदपुत्र ख्रिस्त

४१ यीशु ने उनसे कहा, 'लोग कैसे कहते हैं कि ख्रिस्त दाऊद का पुत्र
है? ४२ क्योंकि स्वयं दाऊद ने भजन-संहिता में कहा है,

* अक्षरशः 'भाई को'

The LORD said unto my Lord,
Sit thou on my right hand,
43 Till I make thine enemies thy footstool.
44 David therefore calleth him Lord, how is he then his son ?

WARNING AGAINST SCRIBES

45 Then in the audience of all the people he said
unto his disciples, 46 Beware of the scribes, which
desire to walk in long robes, and love greetings in the
markets, and the highest seats in the synagogues, and
the chief rooms at feasts ; 47 which devour widows'
houses, and for a shew make long prayers : the same
shall receive greater damnation.

THE WIDOW'S MITE

21 And he looked up, and saw the rich men casting
their gifts into the treasury. 2 And he saw also
a certain poor widow casting in thither two mites.
3 And he said, Of a truth I say unto you, that this poor
widow hath cast in more than they all : 4 for all these
have of their abundance cast in unto the offerings of
God : but she of her penury hath cast in all the living
that she had.

JESUS FORETELLS THE DESTRUCTION OF JERUSALEM AND THE END OF THE AGE

5 And as some spake of the temple, how it was
adorned with goodly stones and gifts, he said, 6 As
for these things which ye behold, the days will come,
in the which there shall not be left one stone upon
another, that shall not be thrown. 7 And they asked
him, saying, Master, but when shall these things be ?
and what sign will there be when these things shall
come to pass ?

8 And he said, Take heed that ye be not deceived :
for many shall come in my name, saying, I am Christ ;
and the time draweth near : go ye not therefore after

"प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा,
४३ जब तक मै तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों के तले न लाऊं
तू मेरे दाहिने हाथ बैठ।"
४४ इस प्रकार दाऊद उसे प्रभु कहते हैं तो वह उनका पुत्र कैसा हुआ ?'

शास्त्रियों के विरुद्ध चेतावनी

४५ उन्होंने सब लोगों को सुना कर अपने शिष्यों से कहा, ४६ 'शास्त्रियों
से सावधान रहो जिन्हें लंबे चोगे पहिनकर घूमना अच्छा लगता है, और जिन्हें
बाजारों में प्रणाम, सभागृहों में प्रमुख आसन, और भोजों मे सम्मानित स्थान
प्रिय हैं। ४७ वे विधवाओं के घर निगल जाते हैं और दिखावे के लिए
लंबी-लंबी प्रार्थनाएं करते हैं। वे कठोर दंड के भागी होंगे।'

२१

दरिद्र विधवा की दमड़ी

१ यीशु ने देखा कि धनवान अपनी-अपनी भेंट मंदिर के कोष में डाल
रहे हैं: २ वहाँ एक दरिद्र विधवा ने भी दो तीन मुद्राएं अर्पण कीं।
उन्होंने यह देखकर कहा, ३ 'मैं तुमसे सच कहता हूं कि इस दीन विधवा
ने सबसे अधिक अर्पण किया है, ४ क्योंकि अन्य सबने अपनी समृद्धि से भेंट
दी, परंतु इसने अपनी दरिद्रता में से जो कुछ इसके पास था, अर्थात् अपनी
सारी जीविका अर्पण कर दी।

मंदिर-विनाश और युगांत के संबंध में भविष्यवाणी

५ कुछ लोग मंदिर के विषय में कह रहे थे कि वह सुंदर पत्थरों और
समर्पित वस्तुओं से सुसज्जित है। ६ इस पर यीशु ने उनसे कहा, 'ये
वस्तुएं तुम देख रहे हो। ऐसे दिन आएंगे जब यहां पत्थर पर पत्थर
तक नहीं बचेगा ; सब ध्वस्त हो जाएगा।' ७ उन्होंने पूछा, 'गुरुजी, ये घटनाएं
कब होंगी ? ये बातें होने को हैं इसका क्या चिह्न होगा।'

८ उन्होंने कहा, 'सावधान ! पथभ्रष्ट न होना। अनेक मेरे नाम से आएंगे
और कहेंगे, "मैं वही हूं !' और "समय निकट आ पहुंचा है।" परन्तु तुम

them. 9 But when ye shall hear of wars and commotions,
be not terrified : for these things must first come to
pass ; but the end is not by and by.

10 Then said he unto them, Nation shall rise against
nation, and kingdom against kingdom : 11 and great
earthquakes shall be in divers places, and famines, and
pestilences ; and fearful sights and great signs shall there
be from heaven. 12 But before all these, they shall lay
their hands on you, and persecute you, delivering you
up to the synagogues, and into prisons, being brought
before kings and rulers for my name's sake. 13 And it
shall turn to you for a testimony. 14 Settle it there-
fore in your hearts, not to meditate before what ye
shall answer: 15 for I will give you a mouth and wisdom,
which all your adversaries shall not be able to gainsay
nor resist. 16 And ye shall be betrayed both by parents,
and brethren, and kinsfolks, and friends ; and some of
you shall they cause to be put to death. 17 And ye
shall be hated of all men for my name's sake. 18 But
there shall not an hair of your head perish. 19 In your
patience possess ye your souls.

20 And when ye shall see Jerusalem compassed with
armies, then know that the desolation thereof is nigh.
21 Then let them which are in Judæa flee to the
mountains ; and let them which are in the midst of it
depart out ; and let not them that are in the countries
enter thereinto. 22 For these be the days of vengeance,
that all things which are written may be fulfilled.
23 But woe unto them that are with child, and to them
that give suck, in those days ! for there shall be great
distress in the land, and wrath upon this people.
24 And they shall fall by the edge of the sword, and
shall be led away captive into all nations : and Jerusalem
shall be trodden down of the Gentiles, until the times
of the Gentiles be fulfilled. 25 And there shall be
signs in the sun, and in the moon, and in the stars ;
and upon the earth distress of nations, with perplexity ;
the sea and the waves roaring ; 26 men's hearts failing
them for fear, and for looking after those things which

उनके पीछे न जाना। ९ जब तुम युद्धों और विद्रोहों की चर्चा सुनो तो
भयाकुल न होना। पहिले इन बातों का होना अनिवार्य है पर अंत शीघ्र
न होगा।'

१० तब वह उनसे कहने लगे, 'जाति के विरुद्ध जाति और राज्य के विरुद्ध
राज्य उठ खड़े होंगे; ११ बड़े बड़े भूकंप होंगे, अनेक स्थलों पर अकाल
पड़ेंगे और महामारियां होंगी; भयंकर दृश्य और आकाश में बड़े-बड़े चिह्न
दीख पड़ेंगे, परंतु यह सब होने के पूर्व १२ लोग मेरे नाम के कारण तुम पर
अत्याचार करेंगे, तुम्हें सभागृहों में सौपेंगे, कारागारों में डलवाएंगे, और
राजाओं और राज्यपालों के संमुख उपस्थित करेंगे। १३ यह तुम्हारे लिए
साक्षी देने का अवसर होगा। १४ इसलिये मन में निश्चय कर लो कि
प्रतिवाद के विषय में पहले से न सोचोगे; १५ क्योंकि मैं तुम्हें ऐसे शब्द और
बुद्धि प्रदान करूंगा कि कोई विरोधी न तुम्हारा सामना कर सकेगा और न
खंडन। १६ माता, पिता, भाई, संबंधी और मित्र भी तुमको पकड़वाएंगे
और तुममें से कुछ को मरवा डालेंगे। १७ और मेरे नाम के कारण सब
तुमसे द्वेष करेंगे। १८ पर तुम्हारे सिर का बाल भी बांका न होगा। १९ स्थिरता
द्वारा तुम अपना प्राण सुरक्षित रखोगे।

२० 'जब तुम यरूशलेम को सेनाओं से घिरा देखो तो जान लेना कि
उसका विनाश निकट है। २१ उस समय जो यहूदिया में हों वे पर्वत पर भाग
जाएं, जो नगर में हों वे बाहर निकल जाएं, और जो गांवों में हों, वे नगर में
न जाएं, २२ क्योंकि वे प्रतिशोध के दिन होंगे जिनमें शास्त्र में लिखी सब बातें
पूरी होंगी। २३ शोक उनके लिये जो उन दिनों गर्भिणी होंगी अथवा दूध
पिलाती होंगी, क्योंकि पृथ्वी पर घोर संकट आएगा और इस प्रजा पर
प्रकोप होगा। २४ लोग तलवार के घाट उतारे जाएंगे, और बंदी बना कर सब
जातियों में ले जाएंगे; और जब तक अन्य जाति का समय पूरा न हो जाए,
वह यरूशलेम को रौंदती रहेगी। २५ सूर्य, चन्द्रमा और तारागण में चिह्न
दिखाई देंगे, पृथ्वी की जातियों पर संकट पड़ेगा और वे समुद्र तथा लहरों
के गर्जन से व्याकुल हो उठेंगी, २६ लोग विश्व पर आने वाले संकटों और भय

are coming on the earth : for the powers of heaven shall
be shaken. 27 And then shall they see the Son of man
coming in a cloud with power and great glory. 28 And
when these things begin to come to pass, then look up,
and lift up your heads ; for your redemption draweth
nigh.

THE NEED FOR WATCHFULNESS

29 And he spake to them a parable ; Behold the fig
tree, and all the trees ; 30 when they now shoot forth,
ye see and know of your own selves that summer is
now nigh at hand. 31 So likewise ye, when ye see
these things come to pass, know ye that the kingdom of
God is nigh at hand. 32 Verily I say unto you, This
generation shall not pass away, till all be fulfilled.
33 Heaven and earth shall pass away : but my words
shall not pass away.

34 And take heed to yourselves, lest at any time
your hearts be overcharged with surfeiting, and drunk-
enness, and cares of this life, and so that day come
upon you unawares. 35 For as a snare shall it come
on all them that dwell on the face of the whole earth.
36 Watch ye therefore, and pray always, that ye may
be accounted worthy to escape all these things that
shall come to pass, and to stand before the Son of man.

37 And in the day time he was teaching in the
temple ; and at night he went out, and abode in the
mount that is called the mount of Olives. 38 And all the
people came early in the morning to him in the temple,
for to hear him.

THE TREACHERY OF JUDAS

22 Now the feast of unleavened bread drew nigh,
which is called the Passover. 2 And the chief
priests and scribes sought how they might kill him ;
for they feared the people. 3 Then entered Satan into
Judas surnamed Iscariot, being of the number of the
twelve. 4 And he went his way, and communed with

के कारण अपनी चेतना खो बैठेंगे और अंतरिक्ष की शक्तियां हिल
जाएंगी।" २७ तब वे मानव पुत्र को अपार सामर्थ्य और तेज के साथ मेघों
पर आता हुआ देखेंगे। २८ जब ये बातें होने लगें तो सीधे खड़े होकर अपना
सिर ऊंचा करो, क्योंकि तुम्हारी मुक्ति निकट होगी।'

जागरूकता की आवश्यकता

२९ उन्होंने एक दृष्टांत कहा, 'अंजीर के वृक्ष अथवा किसी अन्य वृक्ष को
देखो ; ३० ज्योंही उसमें पल्लव निकले, तुम देखकर अपने आप जान लेते
हो कि ग्रीष्म ऋतु निकट है। ३१ इसी प्रकार जब तुम ये घटनाएं होतीं
देखो तो जान लेना कि परमेश्वर का राज्य निकट है। ३२ मैं तुमसे सच कहता
हूं कि जब तक ये सब बातें न हो जाएं, इस पीढ़ी का अंत न होगा।
३३ आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, पर मेरे बचन नहीं टलेंगे।

३४ 'अपने विषय सावधान रहो, ऐसा न हो कि तुम्हारा मन दुराचार,
मतवालेपन और जीवन की चिंताओं से शिथिल हो जाए और वह दिन एकाएक
तुम पर फंदे के सदृश आ पड़े, ३५ क्योंकि वह संपूर्ण पृथ्वी के सब निवासियों
पर आएगा। ३६ इसलिए सदा जागते रहो और प्रार्थना करो कि तुम इन
सब आनेवाली बातों से बचने और मानव-पुत्र के समक्ष खड़े होने में समर्थ
हो सको।'

३७ दिन को वह मंदिर में उपदेश देते और रात्रि को बाहर जाकर जैतून
नामक पर्वत पर रहते थे। ३८ सब लोग उषाकाल में उठ जाते थे कि उपदेश
सुनने के लिए मंदिर में उनके पास जाएं।

२२

यहूदा का विश्वासघात

१ अखमीरी रोटी का पर्व जो फसह कहलाता है निकट आ रहा था २ और
महापुरोहित एवं शास्त्री इस प्रयत्न में थे कि किस प्रकार उनको मार डालें,
पर उन्हें जनता से भय था। ३ तब शैतान ने यहूदा में, जो इस्करियोती
कहलाता था और जिसकी गणना 'बारह' में होती थी, प्रवेश किया। ४ उसने

the chief priests and captains, how he might betray
him unto them. 5 And they were glad, and covenanted
to give him money. 6 And he promised, and sought
opportunity to betray him unto them in the absence
of the multitude.

PREPARATION FOR THE LAST SUPPER

7 Then came the day of unleavened bread, when
the passover must be killed. 8 And he sent Peter and
John, saying, Go and prepare us the passover, that we
may eat. 9 And they said unto him, Where wilt thou
that we prepare ? 10 And he said unto them, Behold,
when ye are entered into the city, there shall a man
meet you, bearing a pitcher of water ; follow him into
the house where he entereth in. 11 And ye shall say
unto the goodman of the house, The Master saith unto
thee, Where is the guestchamber, where I shall eat
the passover with my disciples ? 12 And he shall shew
you a large upper room furnished : there make ready.
13 And they went, and found as he had said unto
them : and they made ready the passover.

THE LAST SUPPER

14 And when the hour was come, he sat down,
and the twelve apostles with him. 15 And he said
unto them, With desire I have desired to eat this
passover with you before I suffer : 16 for I say unto you,
I will not any more eat thereof, until it be fulfilled
in the kingdom of God. 17 And he took the cup,
and gave thanks, and said, Take this, and divide it
among yourselves : 18 for I say unto you, I will not
drink of the fruit of the vine, until the kingdom of
God shall come. 19 And he took bread, and gave
thanks, and brake it, and gave unto them, saying, This
is my body which is given for you : this do in re-
membrance of me. 20 Likewise also the cup after supper,
saying, This cup is the new testament in my blood,
which is shed for you. 21 But, behold, the hand of him
that betrayeth me is with me on the table. 22 And

जाकर महापुरोहितों और सेनापतियों से बातचीत की कि यीशु को किस
प्रकार उनके हाथ पकड़वाएं। ५ वे बहुत प्रसन्न हुए और उसे धन देने को
सहमत हो गए ! ६ उसने भी वचन दिया और अवसर ढूंढ़ने लगा कि भीड़
की अनुपस्थिति में यीशु को उनके हाथ पकड़वाए।

प्रभु-भोज की तैयारी

७ अब अखमीरी रोटी का दिन आ पहुंचा जब कि फसह का बलिदान देना
होता। ८ यीशु ने पतरस और यूहन्ना को यह कहकर भेजा, 'जाओ और हमारे
खाने के लिए फसह का भोजन तैयार करो।' ९ उन्होंने पूछा, 'आप उसे
किस स्थान पर तैयार करवाना चाहते हैं?' १० वह बोले, 'नगर में प्रवेश करते
ही तुम्हें एक मनुष्य मिलेगा जो जल भरा घड़ा लिए जा रहा होगा। जिस
घर में वह प्रवेश करे, उसमें तुम उसके पीछे पीछे जाना ११ और गृह-स्वामी
से कहना, १२ "गुरुजी ने आपसे कहा है कि वह अतिथिशाला कहां है जहां मैं
अपने शिष्यों के साथ फसह खाऊं?" और वह तुम्हें घरके ऊपरीभागमें एक बड़ा
और सुसज्जित कक्ष दिखा देगा। वहीं तुम तैयारी करना।' १३ जैसा
यीशु ने उनसे कहा था उन्होंने वैसा ही जाकर पाया और फसह तैयार किया।

प्रभु-भोज

१४ जब समय हुआ तो वह प्रेरितों के साथ भोजन करने बैठे,
१५ और उनसे कहा, 'मेरी प्रबल अभिलाषा थी कि दुःखभोग से पूर्व
तुम्हारे साथ फसह खाऊं; १६ क्योंक मैं तुमसे कहता हूं कि जब
तक परमेश्वर के राज्य में यह पूर्ण न हो जाए, मैं इसे फिर न खाऊंगा।'
१७ तब उन्होंने कटोरा लेकर धन्यवाद दिया और कहा, 'इसे लो और आपस
में बांट लो; १८ क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं कि आज से लेकर जब तक
परमेश्वर का राज्य नहीं आ जाता; मै दाख का रस न पीऊंगा। १९ तब उन्होंने
रोटी ली धन्यवाद देकर तोड़ी और उनको यह कहते हुए दी, 'यह मेरी देह है
जो तुम्हारे लिए दी जाती है। मेरी स्मृति में यह किया करो।' २० इसी प्रकार
भोजन के पश्चात् उन्होंने कटोरा भी यह कहते हुए दिया, 'यह कटोरा मेरे
रक्त में जो तुम्हारे लिए बहाया जाता है नया व्यवस्थान है। २१ पर देखो,
मुझे पकड़वाने वाले का हाथ मेरे साथ मेज पर है। २२ मानव-पुत्र तो जैसा

truly the Son of man goeth, as it was determined: but woe unto that man by whom he is betrayed!
23 And they began to enquire among themselves, which of them it was that should do this thing.

TRUE GREATNESS

24 And there was also a strife among them, which of
them should be accounted the greatest. 25 And he said
unto them, The kings of the Gentiles exercise lordship over them; and they that exercise authority upon them are called benefactors. 26 But ye shall not be so: but he that is greatest among you, let him be as the younger; and he that is chief, as he that doth serve. 27 For whether is greater, he that sitteth at meat, or he that serveth? is not he that sitteth at meat? but I am among you as he that
serveth. 28 Ye are they which have continued with me in my temptations. 29 And I appoint unto you a kingdom, as my Father hath appointed unto me;
30 that ye may eat and drink at my table in my kingdom, and sit on thrones judging the twelve tribes of Israel.

PETER'S DENIAL FORETOLD

31 And the Lord said, Simon, Simon, behold, Satan hath desired to have you, that he may sift you as wheat:
32 but I have prayed for thee, that thy faith fail not: and when thou art converted, strengthen thy brethren.
33 And he said unto him, Lord, I am ready to go with thee, both into prison, and to death. 34 And he said,
I tell thee, Peter, the cock shall not crow this day, before that thou shalt thrice deny that thou knowest me.
35 And he said unto them, When I sent you without purse, and scrip, and shoes, lacked ye any thing? And they said, Nothing. 36 Then said he unto them, But
now, he that hath a purse, let him take it, and likewise his scrip: and he that hath no sword, let him sell his garment, and buy one. 37 For I say unto you, that this
that is written must yet be accomplished in me, And

उसके लिए निश्चित किया गया जाता है, परंतु शोक उस मनुष्य पर जो उसे
पकड़वा रहा है।' २३ इस पर वे एक दूसरे से पूछने लगे कि हममें ऐसा
कौन है जो यह काम करेगा।

बड़ा कौन है

२४ उनमें विवाद उठ खड़ा हुआ कि उनमें बड़ा कौन समझा जाए।
२५ यीशु ने उनसे कहा, 'अन्यजातियों के राजा उन पर प्रभुता करते हैं, और
उनके अधिकारी, उपकारी कहाते हैं। २६ परंतु तुम ऐसा न करना;
वरन् जो तुममें बड़ा हो वह सब से छोटा बने और जो नेता हो, वह सेवक।
२७ कौन बड़ा है? वह जो भोजन करने बैठा है, अथवा वह जो सेवा कर
रहा है? क्या भोजन करने वाला बड़ा नहीं? पर मैं तुम्हारे बीच एक सेवक
के सदृश हूं। २८ तुम ही हो जो मेरे संकटों में मेरा साथ देते रहे हो;
२९ जैसे मेरे पिता ने मेरे लिए राज्य निर्दिष्ट किया है, वैसे ही मैं तुम्हारे लिए
निर्दिष्ट करता हूं ३० कि तुम मेरे राज्य में मेरी मेज पर खाओगे, पीओगे
और सिंहासनों पर बैठ कर इस्राएल के बारह वंशों का न्याय करोगे।

पतरस के अस्वीकरण के विषय में भविष्यवाणी

३१ शमौन, शमौन शैतान ने तुम सबकी मांग की है कि तुम्हें गेहूं की
तरह फटके; ३२ पर मैंने तुम्हारे लिए प्रार्थना की है कि तुम्हारा विश्वास
विनष्ट न हो। समय आने पर जब तुम फिरो तो अपने भाइयों को स्थिर
करना।' ३३ उन्होंने कहा, 'प्रभुजी, मैं आपके साथ कारागार जाने वरन्
मरने के लिए तैयार हूं।' ३४ उन्होंने कहा, 'पतरस, मैं तुमसे कहता हूं कि
आज, मुर्ग के बांग देने से पहले, तुम तीन बार अस्वीकार कर दोगे कि मुझे
जानते हो।' ३५ फिर उन्होंने उनसे पूछा, 'जब मैंने तुमको बटुए, झोली
और जूतों के बिना भेजा तो क्या तुम्हें किसी वस्तु का अभाव रहा?' उन्होंने
उत्तर दिया, 'नहीं।' ३६ उन्होंने कहा, 'परंतु अब जिसके पास बटुआ है
वह उसे ले ले, इसी प्रकार झोली भी; और जिसके पास तलवार नहीं है
वह अपना वस्त्र बेच कर मोल ले। ३७ क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं यह
अनिवार्य है कि शास्त्र का यह लेख मुझमें पूर्ण हो, "और वह अपराधियों

he was reckoned among the transgressors: for the
things concerning me have an end. 38 And they said,
Lord, behold, here are two swords. And he said unto
them, It is enough.

GETHSEMANE

39 And he came out, and went, as he was wont,
to the mount of Olives; and his disciples also followed
him. 40 And when he was at the place, he said unto
them, Pray that ye enter not into temptation. 41 And
he was withdrawn from them about a stone's cast, and
kneeled down, and prayed, 42 saying, Father, if thou be
willing, remove this cup from me: nevertheless not
my will, but thine, be done. 43 And there appeared
an angel unto him from heaven, strengthening him.
44 And being in an agony he prayed more earnestly:
and his sweat was as it were great drops of blood falling
down to the ground. 45 And when he rose up from
prayer, and was come to his disciples, he found them
sleeping for sorrow, 46 and said unto them, Why sleep
ye? rise and pray, lest ye enter into temptation.

THE ARREST OF JESUS

47 And while he yet spake, behold a multitude,
and he that was called Judas, one of the twelve, went
before them, and drew near unto Jesus to kiss him.
48 But Jesus said unto him, Judas, betrayest thou the
Son of man with a kiss? 49 When they which were
about him saw what would follow, they said unto him,
Lord, shall we smite with the sword? 50 And one
of them smote the servant of the high priest, and cut off
his right ear. 51 And Jesus answered and said, Suffer
ye thus far. And he touched his ear, and healed him.
52 Then Jesus said unto the chief priests, and captains
of the temple, and the elders, which were come to him,
Be ye come out, as against a thief, with swords and
staves? 53 When I was daily with you in the temple,
ye stretched forth no hands against me: but this is
your hour, and the power of darkness.

में गिना गया।" जो कुछ मेरे विषय में लिखा है वह पूरा होना ही है।'
३८ वे बोले, 'प्रभु देखिए, यहां दो तलवारें हैं।' उन्होंने कहा, 'पर्याप्त है।'

गतसमने में

३९ वह वहां से निकलकर अपने अभ्यास के अनुसार जैतून पर्वत पर चले
गए और शिष्य उनके पीछे हो लिए। ४० उस स्थान पर पहुँचकर उन्होंने कहा,
'प्रार्थना करते रहो जिससे परीक्षा में न पड़ो।' ४१ फिर वह उनसे ढेला
फेंकने की दूरी तक गए और घुटने टेक कर प्रार्थना करने लगे, ४२ 'पिता यदि
तू चाहे तो इस कटोरेको, मुझसे हटा ले;परंतु मेरी नहीं, तेरी इच्छा पूरी हो।'
४३ तब स्वर्ग से एक दूत उनको दिखाई दिया जो उन्हें बल प्रदान कर रहा
था,' ४४ और वेदना में वह और भी आग्रह पूर्वक प्रार्थना करने लगे;
उनका पसीना रक्त की बूदों के सदृश पृथ्वी पर गिर रहा था। ४५ जब
वह प्रार्थना से उठकर शिष्यों के पास आए तो उन्हें शोक के कारण सोते
हुए पाया, ४६ और उनसे कहा, 'सोते क्यों हो? उठो, प्रार्थना करो
कि परीक्षा में न पड़ो।'

यीशु का बंदी होना

४७ वह बोल ही रहे थे कि एक भीड़ आ पहुँची, और बारह में से एक,
जिसका नाम यहूदा था, उनके आगे था। वह यीशु के समीप आया कि उनका
चुंबन करे। ४८ यीशु ने उससे कहा, 'यहूदा, क्या तुम चुंबन द्वारा मानव-पुत्र
को पकड़वा रहे हो?' ४९ पास खड़े लोगों ने जब देखा कि क्या होनेवाला
है तो पूछा, 'प्रभु, क्या हम तलवार-चलाएं?' ५० और उनमें से एक ने
महापुरोहित के दास पर प्रहार कर उसका दाहिना कान उड़ा दिया। ५१ इस
पर यीशु ने कहा, 'बस, बहुत हुआ' और उस मनुष्य का कान छूकर उसे स्वस्थ
कर दिया। ५२ फिर यीशु ने महापुरोहितों, मंदिर के सेना-नायकों
और धर्मवृद्धों से, जो उन पर चढ़ आए थे, कहा, "क्या तुम मुझे डाकू समझ
कर तलवार और लाठियों सहित निकले हो? ५३ जब मैं मंदिर में
प्रतिदिन तुम्हारे साथ था तब तुमने मुझ पर हाथ नहीं डाला। पर यह
तुम्हारा समय है, और अंधकार का अधिकार।'

PETER DENIES JESUS

54 Then took they him, and led him, and brought
him into the high priest's house. And Peter
followed afar off. 55 And when they had kindled a fire
in the midst of the hall, and were set down together,
Peter sat down among them. 56 But a certain maid
beheld him as he sat by the fire, and earnestly looked
upon him, and said, This man was also with him.
57 And he denied him, saying, Woman, I know him
not. 58 And after a little while another saw him,
and said, Thou art also of them. And Peter said,
Man, I am not. 59 And about the space of one hour
after another confidently affirmed, saying, Of a truth
this fellow also was with him : for he is a Galilæan.
60 And Peter said, Man, I know not what thou sayest.
And immediately, while he yet spake, the cock crew.
61 And the Lord turned, and looked upon Peter. And
Peter remembered the word of the Lord, how he had
said unto him, Before the cock crow, thou shalt deny
me thrice. 62 And Peter went out, and wept bitterly.

63 And the men that held Jesus mocked him, and
smote him. 64 And when they had blindfolded him,
they struck him on the face, and asked him, saying,
Prophesy, who is it that smote thee ? 65 And many
other things blasphemously spake they against him.

JESUS BEFORE THE CHIEF PRIESTS

66 And as soon as it was day, the elders of the
people and the chief priests and the scribes came to-
gether, and led him into their council, saying, 67 Art
thou the Christ ? tell us. And he said unto them,
If I tell you, ye will not believe : 68 and if I also ask
you ye will not answer me, nor let me go. 69 Hereafter
shall the Son of man sit on the right hand of the
power of God. 70 Then said they all, Art thou then
the Son of God ? And he said unto them, Ye say that
I am. 71 And they said, What need we any further
witness ? for we ourselves have heard of his own
mouth.

पतरस का अस्वीकरण

५४ वे लोग उन्हें बंदी बनाकर ले चले और महापुरोहित के भवन में लाए।
पतरस दूर ही दूर पीछे चल रहे थे। ५५ जब लोग आंगन में आग जलाकर
उसके चारों ओर बैठे, तो पतरस भी उनके बीच बैठ गए। ५६ एक दासी ने
प्रकाश में उन्हें बैठे देखा और उनकी ओर एकटक देखती हुई बोली, 'यह
भी उसके साथ था।' ५७ परंतु उन्होंने यह कहकर अस्वीकार किया, 'ऐ
नारी, मैं उसे नहीं जानता।' ५८ थोड़ी देर पश्चात् कोई दूसरा उन्हें देखकर
बोला, 'तू भी तो उन्हीं में से है।' पतरस ने कहा, 'भले मनुष्य, मैं नहीं हूं।'
५९ लगभग एक घंटे के अनन्तर किसी दूसरे ने दृढ़तापूर्वक कहा, 'निश्चय
ही यह मनुष्य उसके साथ था, क्योंकि यह गलील निवासी है।' ६० पतरस
बोले, 'भले मानुस, मेरी समझ में नहीं आता कि तुम क्या कह रहे हो।'
और तत्काल—जब कि वह बोल ही रहे थे—मुर्ग ने बांग दी। ६१ प्रभु ने
मुड़कर पतरस की ओर देखा। तब प्रभु के कहे हुए शब्द पतरस को स्मरण
हुए, 'आज मुर्ग के बांग देने से पूर्व तुम मुझे तीन बार अस्वीकार करोगे।'
६२ और वह बाहर जाकर फूट-फूट कर रोने लगे।

६३ अब यीशु के प्रहरी उनका उपहास करने और उन्हें पीटने लगे।
६४ वे उनकी आंखें ढक कर पूछते थे, नबूवत कर, तुझे किसने मारा?'
६५ और उनके विरुद्ध ऐसी ही अन्य अनेक अपमानपूर्ण बातें कहते थे।

महापुरोहितों के संमुख यीशु का विचार

६६ जब दिन हुआ तो जनता के धर्मवृद्ध, महापुरोहितों और शास्त्री एक-
त्रित हुए और अपनी परिषद् में उनको लाकर कहने लगे, ६७ 'यदि तू ख्रिस्त
है तो हमसे कह।' ६८ उन्होंने कहा, 'यदि मैं तुमसे कहूं तो भी तुम विश्वास
नहीं करोगे; और यदि मैं तुमसे कुछ पूछूं तो तुम उत्तर नहीं दोगे। ६९ परंतु
अब से मानव-पुत्र सर्वशक्तिमान परमेश्वर* की दाहिनी ओर बैठेगा।'
७० इस पर सब बोल उठे, 'तो क्या तू परमेश्वर का पुत्र है?' उन्होंने
उनसे कहा, 'तुम कहते हो कि मैं हूं' ७१ इस पर वे बोले, 'क्या हमें
अब साक्षी की आवश्यकता है? हम स्वयं इसी के मुंह से सुन चुके हैं।'

* अक्षरशः परमेश्वर की सामर्थ्य

JESUS BEFORE PILATE

23 And the whole multitude of them arose, and
led him unto Pilate. 2 And they began to
accuse him, saying, We found this fellow perverting
the nation, and forbidding to give tribute to Cæsar,
saying that he himself is Christ a King. 3 And Pilate
asked him, saying, Art thou the King of the Jews?
And he answered him and said, Thou sayest it. 4 Then
said Pilate to the chief priests and to the people,
I find no fault in this man. 5 And they were the
more fierce, saying, He stirreth up the people, teaching
throughout all Jewry, beginning from Galilee to this
place.

JESUS BEFORE HEROD

6 When Pilate heard of Galilee, he asked whether
the man were a Galilæan. 7 And as soon as he knew
that he belonged unto Herod's jurisdiction, he sent
him to Herod, who himself also was at Jerusalem at
that time. 8 And when Herod saw Jesus, he was exceed-
ing glad: for he was desirous to see him of a long season,
because he had heard many things of him; and he hoped
to have seen some miracle done by him. 9 Then he
questioned with him in many words; but he answered
him nothing. 10 And the chief priests and scribes stood
and vehemently accused him. 11 And Herod with his
men of war set him at nought, and mocked him, and
arrayed him in a gorgeous robe, and sent him again to
Pilate. 12 And the same day Pilate and Herod were
made friends together: for before they were at enmity
between themselves.

PILATE, BARABBAS AND JESUS

13 And Pilate, when he had called together the chief
priests and the rulers and the people, 14 said unto them,
Ye have brought this man unto me, as one that perver-
teth the people: and, behold, I, having examined him
before you, have found no fault in this man touching

२३

पिलातुस के संमुख यीशु

१ तव सारी सभा उठी और उन्हें पिलातुस के पास ले गई। २ वे उन
पर यह कहकर अभियोग लगाने लगे, 'हमने इसे हमारी जाति को पथभ्रष्ट
करते, कैसर को कर देने से मना करते, और अपने आपको ख्रिस्त, राजा,
कहते सुना है।' ३ पिलातुस ने उनसे पूछा, 'क्या तुम यहूदियों के राजा
हो?' उन्होंने उत्तर दिया, 'आप स्वयं कह रहे हैं।' ४ तब पिलातुस ने
महापुरोहितों और लोगों से कहा, 'मैं इस व्यक्ति में कोई दोष नहीं
पाता।' ५ वे लोग और भी दृढ़तापूर्वक बोले, 'यह गलील से लेकर
इसी स्थान तक—समस्त यहूदिया में—जनता को व्याख्यानों द्वारा उत्तेजित
करता है।'

यीशु हेरोदेस के दरबार में

६ यह सुनकर पिलातुस ने पूछा, 'क्या यह गलील निवासी है?'
७ और यह जानकर कि वह हेरोदेस के क्षेत्र से हैं, उन्हें हेरोदेस के पास भेज
दिया जो उन दिनों यरूशलेम में ही था। ८ हेरोदेस यीशु को देखकर
वहुत प्रसन्न हुआ। वह उन्हें बहुत दिनों से देखना चाहता था क्योंकि उसने
उनके विषय में सुन रखा था और कुछ चमत्कार देखने की आशा करता था।
९ वह उनसे बहुत सी बातें पूछता रहा, पर उन्होंने उसे कुछ भी उत्तर न
दिया। १० इस बीच महापुरोहित और शास्त्री वहां खड़े हुए उन पर उग्रता-
पूर्वक अभियोग लगा रहे थे। ११ तब अपने सैन्य दल के साथ हेरोदेस ने
उनका निरादर तथा उपहास किया और भड़कीला वस्त्र पहनाकर उन्हें
पिलातुस के पास फिर भेज दिया। १२ उस दिन से हेरोदेस और पिला-
तुस परस्पर मित्र बन गए; इससे पूर्व उनमें शत्रुता थी।

पिलातुस, बरअब्बा और यीशु

१३ तब पिलातुस ने महापुरोहितों, शासकों और जनता को बुला कर
१४ कहा, 'तुम ने मेरे संमुख इस मनुष्य पर जनता को उत्तेजित करने का
अभियोग लगाया। मैंने तुम्हारे सामने इसकी जांच की है, और इस मनुष्य

those things whereof ye accuse him : 15 No, nor yet
Herod : for I sent you to him ; and, lo, nothing worthy
of death is done unto him. 16 I will therefore chastise
him, and release him. 17 (For of necessity he must
release one unto them at the feast.)

18 And they cried out all at once, saying, Away
with this man, and release unto us Barabbas : 19 (who
for a certain sedition made in the city, and for murder,
was cast into prison.) 20 Pilate therefore, willing to
release Jesus, spake again to them. 21 But they cried,
saying, Crucify him, crucify him. 22 And he said
unto them the third time, Why, what evil hath he
done ? I have found no cause of death in him :
I will therefore chastise him, and let him go. 23 And
they were instant with loud voices, requiring that he
might be crucified. And the voices of them and of the
chief priests prevailed. 24 And Pilate gave sentence
that it should be as they required. 25 And he released
unto them him that for sedition and murder was cast
into prison, whom they had desired ; but he delivered
Jesus to their will.

THE CRUCIFIXION OF JESUS

26 And as they led him away, they laid hold upon
one Simon, a Cyrenian, coming out of the country, and
on him they laid the cross, that he might bear it after
Jesus. 27 And there followed him a great company of
people, and of women, which also bewailed and lamented
him. 28 But Jesus turning unto them said, Daughters
of Jerusalem, weep not for me, but weep for yourselves,
and for your children. 29 For, behold, the days are
coming, in the which they shall say, Blessed are the
barren, and the wombs that never bare, and the paps
which never gave suck. 30 Then shall they begin to
say to the mountains, Fall on us ; and to the hills, Cover
us. 31 For if they do these things in a green tree, what
shall be done in the dry ? 32 And there were also
two other, malefactors, led with him to be put to death.

33 And when they were come to the place, which

पर जो अभियोग लगाए गए हैं, उनके विषय इसे दोषी नहीं पाया। १५ न हेरोदेस
ने ही इसे दोषी पाया, क्योंकि उन्होंने इसे हमारे पास लौटा दिया है।
इसने मृत्युदंड के योग्य कोई काम नहीं किया। १६ इसलिए मैं इसे कोड़े
लगाकर छोड़ देता हूं।'*

१८ इस पर वे सब एक साथ चिल्ला उठे, 'इसे हटाओ, और हमारे लिए
बरअब्बा को छोड़ दो'—१९ यह बरअब्बा नगर में हुए किसी विद्रोह तथा
हत्या के कारण कारागार में पड़ा था। २० पिलातुस ने यीशु को मुक्त
करने की इच्छा से लोगों को फिर समझाया; २१ पर वे चिल्ला उठे, 'क्रूस पर
चढ़ाओ, उसे क्रूस पर चढ़ाओ।' २२ उसने उनसे तीसरी बार कहा, 'क्यों,
इसने क्या अपराध किया है? मैं इसमें मृत्युदंड के योग्य कोई दोष नहीं
पाता। इसलिए मैं इसे कोड़े लगवा कर छोड़े देता हूं।' २३ परंतु वे
चिल्ला-चिल्ला कर पीछे पड़ गए 'उसे क्रूस पर चढ़ाओ।' और उनका चिल्लाना
प्रबल सिद्ध हुआ। २४ पिलातुस ने निर्णय दिया कि उनकी मांग पूरी की
जाए। २५ उसने उस मनुष्य को तो मुक्त कर दिया जो विद्रोह तथा हत्या के
कारण कारागार में बंद था, और जिन्हें लोग मांग रहे थे, अर्थात् यीशु को,
उनकी इच्छा पर छोड़ दिया।

क्रूस

२६ जब वे लोग यीशु को लिए जा रहे थे, तो उन्होंने ग्राम से आते हुए
शमौन नामक एक कुरैन-निवासी को पकड़ा और उस पर क्रूस लाद दिया कि
यीशु के पीछे ले चले। २७ जनता की और स्त्रियों की भारी भीड़ उनके पीछे
हो ली। स्त्रियां उनके लिए छाती पीटतीं और विलाप करतीं थीं। २८ यीशु
ने उनकी ओर मुड़कर कहा, 'यरूशलेम की पुत्रियो, मेरे लिए मत रोओ, पर
अपने लिए और अपने बच्चों के लिए रोओ; २९ क्योंकि देखो, वे दिन आते हैं
जब लोग कहेंगे, "धन्य हैं वे जो बाँझ हैं, धन्य हैं वे गर्भ जिन्होंने जन्म नहीं
दिया और वे स्तन जिन्होंने दूध नहीं पिलाया।" ३० तब लोग पर्वतों से
कहेंगे, "हम पर गिर पड़ो" और पहाड़ियों से "हमें ढक लो।" ३१ जब हरे
वृक्ष के साथ ऐसा होता हैं तो सूखे के साथ क्या होगा?' ३२ वे अन्य दो
मनुष्यों को भी, जो कुकर्मी थे, उनके साथ मृत्युदंड के लिए ले चले।

३३ जब वे उस स्थान पर आए जो 'कपाल' कहलाता है तो उन्होंने वहां

* कुछ प्रतियों में निम्नलिखित पद भी पाया जाता है: १७ "पर्व के समय उसे किसी को उनके लिए मुक्त करना पड़ता था।"

is called Calvary, there they crucified him, and the
malefactors, one on the right hand, and the other on the
left. 34 Then said Jesus, Father, forgive them; for
they know not what they do.

And they parted his raiment, and cast lots. 35 And
the people stood beholding. And the rulers also with
them derided him, saying, He saved others; let him
save himself, if he be Christ, the chosen of God. 36 And
the soldiers also mocked him, coming to him, and offer-
ing him vinegar, 37 and saying, If thou be the king
of the Jews, save thyself. 38 And a superscription also
was written over him in letters of Greek, and Latin,
and Hebrew, THIS IS THE KING OF THE JEWS.

39 And one of the malefactors which were hanged
railed on him, saying, If thou be Christ, save thyself and
us. 40 But the other answering rebuked him, saying,
Dost not thou fear God, seeing thou art in the same
condemnation? 41 And we indeed justly; for we receive
the due reward of our deeds: but this man hath done
nothing amiss. 42 And he said unto Jesus, Lord, re-
member me when thou comest into thy kingdom. 43
And Jesus said unto him, Verily I say unto thee, To day
shalt thou be with me in paradise.

THE DEATH OF JESUS

44 And it was about the sixth hour, and there was
a darkness over all the earth until the ninth hour. 45
And the sun was darkened, and the veil of the temple
was rent in the midst. 46 And when Jesus had cried
with a loud voice, he said, Father, into thy hands I
commend my spirit: and having said thus, he gave up
the ghost. 47 Now when the centurion saw what was
done, he glorified God, saying, Certainly this was a
righteous man. 48 And all the people that came together
to that sight, beholding the things, which were done,
smote their breasts, and returned. 49 And all his
acquaintance, and the women that followed him from
Galilee, stood afar off, beholding these things.

यीशु को क्रूस पर चढ़ाया और उन कुकर्मियों को भी, एक को दाहिनी ओर
और दूसरे को बांई ओर। ३४ यीशु ने कहा, 'पिता इन्हें क्षमा कर, क्योंकि
ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं।'

उन्होंने चिट्ठियां डालकर यीशु के वस्त्र बांट लिए। ३५ लोग खड़े-खड़े यह
सब देख रहे थे। अधिकारी उपहास करते हुए कह रहे थे, 'इसने दूसरे को
बचाया; यदि यह परमेश्वर का ख्रिस्त और मनोनीत है तो अपने को
बचाए।' ३६ सैनिकों ने भी उनका उपहास किया; वे उनके पास आए,
उन्हें अम्लरस पीने को दिया और बोले, ३७ 'यदि तू यहूदियों का राजा है
तो स्वयं को बचा।' ३८ उनके ऊपर यह अभियोग-पत्र भी लगा था, 'यह
यहूदियों का राजा है।'

३९ क्रूस पर टंगा एक अपराधी उनकी निंदा करने लगा, 'क्या तू
ख्रिस्त नहीं है? तो फिर हमें और अपने को बचा।' ४० पर दूसरे ने उसे
रोक कर कहा, 'क्या तुझे परमेश्वर का भय नहीं, क्योंकि तू भी तो वही दंड
पा रहा है? ४१ और हमारा दंड तो न्याय-संगत है, क्योंकि हम अपनी
करनी का फल भोग रहे हैं, पर इन्होंने कोई अनुचित काम नहीं किया।'
४२ तब वह बोला, 'हे यीशु, जब आप अपने राज्य में आएं तो मुझे स्मरण
कीजिए।' ४३ यीशु ने उससे कहा, 'मैं तुझसे सच कहता हूं कि आज
ही तू मेरे साथ स्वर्ग-धाम* में होगा।'

मृत्यु

४४ लगभग दोपहर का समय था, और उस समय से तीसरे पहर तक
सारे देश में अंधकार छाया रहा; ४५ सूर्य का प्रकाश जाता रहा और मंदिर
का पट बीच से फट गया। ४६ तब यीशु ने उच्च स्वर से कहा, 'पिता, मैं
अपनी आत्मा तेरे हाथ सौंपता हूं'; और यह कहकर प्राण त्याग दिए।
४७ यह घटना देखकर शतपति ने परमेश्वर की स्तुति की और कहा,
'निश्चय, यह मनुष्य धर्मात्मा था।' ४८ सब लोग जो यह दृश्य देखने
को एकत्रित हो गए थे, इन घटनाओं को देखकर छाती पीटते हुए लौट
गए। ४९ यीशु के सब परिचित व्यक्ति और स्त्रियां, जो गलील से उनके
पीछे आई थीं, दूर खड़ीं यह सब देख रही थीं।

---

* मूल में 'परादेस'

THE BURIAL OF JESUS

50 And, behold, there was a man named Joseph, a
counsellor ; and he was a good man, and a just : 51
(the same had not consented to the counsel and deed of
them ;) he was of Arimathæa, a city of the Jews : who
also himself waited for the kingdom of God. 52 This
man went unto Pilate, and begged the body of Jesus.
53 And he took it down, and wrapped it in linen, and
laid it in a sepulchre that was hewn in stone, wherein
never man before was laid.

54 And that day was the preparation, and the sab-
bath drew on. 55 And the women also, which came
with him from Galilee, followed after, and beheld the
sepulchre, and how his body was laid. 56 And they
returned, and prepared spices and ointments ; and rested
the sabbath day according to the commandment.

THE RESURRECTION

24 Now upon the first day of the week, very early
in the morning, they came unto the sepulchre,
bringing the spices which they had prepared, and certain
others with them. 2 And they found the stone rolled
away from the sepulchre. 3 And they entered in, and
found not the body of the Lord Jesus. 4 And it came
to pass, as they were much perplexed thereabout, behold,
two men stood by them in shining garments : 5 and as
they were afraid, and bowed down their faces to the
earth, they said unto them, Why seek ye the living
among the dead ? 6 He is not here, but is risen : re-
member how he spake unto you when he was yet in
Galilee, 7 saying, The Son of man must be delivered
into the hands of sinful men, and be crucified, and the
third day rise again. 8 And they remembered his words,
9 and returned from the sepulchre, and told all these
things unto the eleven, and to all the rest. 10 It was
Mary Magdalene, and Joanna, and Mary the mother of
James, and other women that were with them, which

कबर में रखना

५० यूसुफ नामक एक व्यक्ति महासभा के सदस्य थे। वह सज्जन और धार्मिक पुरुष थे-५१ उन्होंने लोगों की इस योजना और कार्य में मत नहीं दिया था। वह यहूदिया के नगर अरिमतिया के निवासी थे और परमेश्वर से राज्य की प्रतीक्षा कर रहे थे। ५२ उन्होंने पिलातुस के पास जाकर यीशु का शव मांग लिया, ५३ उसे उतार कर मलमल की चादर में लपेटा और चट्टान में खुदी कबर में रख दिया, जिसमें कभी कोई नहीं रखा गया था।

५४ यह 'परास्केव'* का दिन था और सबत प्रारम्भ हो रहा था। ५५ जो स्त्रियां गलील से यीशु के साथ आई थीं, उन्होंने पीछे पीछे जाकर कबर को देखा और यह भी कि उनका शव किस प्रकार रखा गया है। ५६ तब उन्होंने लौटकर सुगंधित द्रव्य और गंधरस तैयार किया और ईश्वरीय आज्ञा के अनुसार सबत के दिन विश्राम किया।

२४

प्रभु ख्रिस्त का पुनरुत्थान

१ सप्ताह के पहले दिन उषाकाल में वे उन सुगंधित द्रव्यों को, जो उन्होंने तैयार किए थे, लेकर कबर पर आईं। २ उन्होंने पत्थर को कबर से लुढ़का हुआ पाया, ३ किंतु भीतर आने पर उन्हें प्रभु यीशु का शव नहीं मिला। ४ जब वे इस बात से घबरा रही थीं तो देखो चमचमाते वस्त्र पहिने दो पुरुष उनके पास आ खड़े हुए! ५ वे डर गईं और पृथ्वी की ओर देखने लगीं। पुरुषों ने उनसे कहा, 'तुम जीवित को मृतकों में क्यों ढूंढ़ रही हो? वह यहां नहीं हैं। ६ परंतु जीवित हो उठे हैं। स्मरण करो कि उन्होंने गलील में रहते हुए तुमसे कहा था ७ कि मानव-पुत्र का पापियों के हाथ सौंपा जाना, क्रूस पर चढ़ाया जाना, और तीसरे दिन जी उठना अनिवार्य है।' ८ अब उन्हें यीशु के बचन स्मरण हुए ९ और वे कबर से लौट पड़ीं तथा ग्यारह को तथा अन्य सबको सारी बातें कह सुनाईं। १० जिन्होंने प्रेरितों से ये बातें कहीं, वे मरियम मगदलीनी, योहन्ना, याकूब की माता

* देखिए, मरकुस १५ : ४२

told these things unto the apostles. 11 And their words
seemed to them as idle tales, and they believed them not.
12 Then arose Peter, and ran unto the sepulchre ; and
stooping down, he beheld the linen clothes laid by them-
selves, and departed, wondering in himself at that which
was come to pass.

JESUS APPEARS ON THE WAY TO EMMAUS

13 And, behold, two of them went that same day
to a village called Emmaus, which was from Jerusalem,
about threescore furlongs. 14 And they talked to-
gether of all these things which had happened. 15 And
it came to pass, that, while they communed together
and reasoned, Jesus himself drew near, and went with
them. 16 But their eyes were holden that they should
not know him. 17 And he said unto them, what
manner of communications are these that ye have one
to another, as ye walk, and are sad ? 18 And the one
of them, whose name was Cleopas, answering said
unto him, Art thou only a stranger in Jerusalem, and
hast not known the things which are come to pass
there in these days ? 19 And he said unto them, What
things ? And they said unto him, Concerning Jesus
of Nazareth, which was a prophet mighty in deed and
word before God and all the people : 20 and how the
chief priests and our rulers delivered him to be con-
demned to death, and have crucified him. 21 But we
trusted that it had been he which should have redeemed
Israel : and beside all this, to day is the third day since
these things were done. 22 Yea, and certain women
also of our company made us astonished, which were
early at the sepulchre ; 23 and when they found not
his body, they came, saying, that they had also seen a
vision of angels, which said that he was alive. 24 And
certain of them which were with us went to the
sepulchre, and found it even so as the women had said :
but him they saw not. 25 Then he said unto them,
O fools, and slow of heart to believe all that the
prophets have spoken : 26 ought not Christ to have

मरियम तथा उनके साथ की अन्य स्त्रियां थीं ११ परंतु उन लोगों को ये
शब्द प्रलाप मात्र प्रतीत हुए और उन्होंने उन स्त्रियों का विश्वास नहीं किया।
१२ फिर भी पतरस उठे और कबर तक दौड़ गए। वहां उन्होंने झुक कर
देखा तो केवल कफ़न दिखाई दिया, और वह इस घटना पर आश्चर्य करते
हुए लौट आए।*

इम्माऊस के मार्ग में शिष्यों को दर्शन

१३ उसी दिन दो व्यक्ति इम्माऊस नामक गांव को जा रहे थे, जो
यरूशलेम से लगभग चार कोस† दूर था, १४ और इन सब बीती घटनाओं
के संबंध में आपस में बातचीत कर रहे थे। १५ जब वे बातचीत और विचार
विमर्श कर रहे थे तो स्वयं यीशु उनके समीप आए और साथ-साथ चलने लगे,
१६ परंतु उन लोगों की आंखें उन्हें पहिचानने में असमर्थ रहीं। १७ यीशु ने
उनसे पूछा, 'तुम चलते-चलते आपस में किस विषय पर बातचीत कर रहे हो?'
इस पर वे उदास खड़े रह गए। १८ तब उनमें से एक, जिसका नाम
क्लियुपास था, बोला, 'क्या यरूशलेम में केवल आप ही प्रवासी हैं जिन्हें नहीं
ज्ञात कि इन दिनों वहां क्या-क्या हुआ है?' १९ उन्होंने पूछा, 'क्या
हुआ है?' वे बोले, 'नासरत निवासी यीशु के विषय में जो परमेश्वर और
समस्त जनता की दृष्टि में कर्म एवं बचन से समर्थ नबी थे; २० किस प्रकार
हमारे महापुरोहितों और अधिकारियों ने उन्हें प्राणदंड के लिए सौंपा और
क्रूस पर चढ़ा दिया। २१ हमें तो आशा थी कि यही हैं जो इस्राएल की
मुक्ति करेंगे। इन सब बातों के अतिरिक्त एक बात और: इस घटना को हुए
तीसरा दिन है। २२ अब हम लोगों में से कुछ स्त्रियों ने हमें आश्चर्य में
डाल दिया है। वे उषाकाल में कबर पर गईं २३ और वहां उनका शव नहीं
पाया; वे आकर बोलीं, "हमें स्वर्गदूत दिखाई दिए जो कहते थे कि वह
जीवित हैं।" २४ इस पर हमारे कुछ साथी कबर पर गए, और जैसा स्त्रियों
ने कहा था वैसा ही पाया; परंतु यीशु को नहीं देखा।' २५ तब यीशु ने दोनों
से कहा; 'हे निर्बुद्धियो! नबियों के सब बचनों पर विश्वास न करने वाले मंद-
मतियो! २६ क्या यह अनिवार्य नहीं था कि ख्रिस्त ये दुःख उठाए और

---

* कुछ प्रतियों में यह पद नहीं पाया जाता।

† मूल में, 'स्तदियन'

suffered these things, and to enter into his glory ?
27 And beginning at Moses and all the prophets, he
expounded unto them in all the scriptures the things
concerning himself. 28 And they drew nigh unto the
village, whither they went : and he made as though he
would have gone further. 29 But they constrained him,
saying, Abide with us : for it is toward evening,
and the day is far spent. And he went in to tarry
with them.

30 And it came to pass, as he sat at meat with them,
he took bread, and blessed it, and brake, and gave to
them. 31 And their eyes were opened, and they knew
him ; and he vanished out of their sight. 32 And they
said one to another, Did not our heart burn within us,
while he talked with us by the way, and while he
opened to us the scriptures ? 33 And they rose up the
same hour, and returned to Jerusalem, and found the
eleven gathered together, and them that were with
them, 34 saying, The Lord is risen indeed, and hath
appeared to Simon. 35 And they told what things were
done in the way, and how he was known of them in
breaking of bread.

JESUS APPEARS TO THE APOSTLES

36 And as they thus spake, Jesus himself stood in
the midst of them, and saith unto them, Peace be unto
you. 37 But they were terrified and affrighted, and
supposed that they had seen a spirit. 38 And he said
unto them, Why are ye troubled ? and why do thoughts
arise in your hearts ? 39 Behold my hands and my feet,
that it is I myself : handle me, and see ; for a spirit hath
not flesh and bones, as ye see me have. 40 And when
he had thus spoken, he shewed them his hands and his
feet. 41 And while they yet believed not for joy, and
wondered, he said unto them, Have ye here any meat ?
42 And they gave him a piece of a broiled fish, and of
an honeycomb. 43 And he took it, and did eat before
them.

44 And he said unto them, These are the words

अपनी महिमा में प्रविष्ट हो ?' २७ तब उन्होंने मूसा एवं समस्त नबियों से
आरंभ कर सम्पूर्ण धर्मशास्त्र में अपने विषय लिखी बातों की व्याख्या उनसे
की। २८ इतने में वे उस गांव के निकट पहुंचे जहां उन्हें जाना था और ऐसा
प्रतीत हुआ कि यीशु आगे जाना चाहते हैं। २९ इस पर उन्होंने आग्रह
किया, 'हमारे साथ रहिए क्योंकि संध्या हो रही है और दिन अब ढल चुका
है।' अस्तु, वह उनके साथ ठहरने के लिए भीतर गए।

३० जब यीशु उनके साथ भोजन करने बैठे तो उन्होंने रोटी लेकर आशिष
मांगी और उसे तोड़कर उन्हें देने लगे। ३१ तब उनकी आंखें खुल गईं और
उन्होंने यीशु को पहिचान लिया। पर वह उनकी दृष्टि से ओझल हो गए।
३२ इस पर वे दोनों आपस में कहने लगे, 'जब वह मार्ग में हमारे साथ बातचीत
कर रहे थे और हमें शास्त्र समझा रहे थे तो क्या हमारे हृदय उल्लसित
नहीं थे ?' ३३ और वे उसी समय उठे और यरूशलेम को लौट पड़े। उन्होंने
ग्यारह एवं उनके साथियों को एकत्र पाया; ३४ वे कह रहे थे, 'प्रभु सचमुच
जीवित हो उठे हैं और शमौन को दिखाई दिए हैं।' ३५ तब उन्होंने भी
मार्ग में हुई घटनाएं बतलाईं और कहा, 'हमने उनको रोटी तोड़ते समय
पहिचाना।'

यीशु का प्रेरितों को दर्शन देना

३६ वे लोग ये बातें कर ही रहे थे कि स्वयं यीशु उनके बीच आ खड़े
हुए और उनसे कहा, 'तुम्हें शांति मिले।' ३७ पर वे सहम गए और भयभीत
होकर सोचने लगे कि हम कोई भूत देख रहे हैं। ३८ यीशु ने उनसे कहा,
'तुम क्यों घबराते हो ? तुम्हारे मन में संदेह क्यों उठते हैं ? ३९ मेरे हाथ
और मेरे पांव देखो कि मैं ही हूं। मुझे टटोल कर देखो, क्योंकि भूत के मांस
और हड्डियां नहीं होती जैसी तुम मुझमें देख रहे हो।' ४० यह कहकर
उन्होंने उनको अपने हाथ-पांव दिखाए*। ४१ शिष्यों को जब आनन्द
के मारे विश्वास नहीं हुआ और आश्चर्य में पड़े रहे तो उन्होंने कहा, 'क्या
तुम्हारे पास यहां कुछ भोजन है ?' ४२ उन्होंने उनको भूनी मछली का एक
टुकड़ा दिया। ४३ यीशु ने उसे लेकर उनके सामने खाया।

४४ फिर उन्होंने कहा, 'जब मैं तुम्हारे साथ था तो मैंने तुमसे कहा था

* कुछ प्रतियों में यह पद नहीं पाया जाता

which I spake unto you, while I was yet with you, that
all things must be fulfilled, which were written in the
law of Moses, and in the prophets, and in the psalms,
concerning me. 45 Then opened he their understand-
ing, that they might understand the scriptures, 46 and
said unto them, Thus it is written, and thus it behoved
Christ to suffer, and to rise from the dead the third
day : 47 and that repentance and remission of sins
should be preached in his name among all nations, begin-
ning at Jerusalem. 48 And ye are witnesses of these
things. 49 And, behold, I send the promise of my
Father upon you : but tarry ye in the city of Jerusalem,
until ye be endued with power from on high.

THE ASCENSION

50 And he led them out as far as to Bethany, and he
lifted up his hands, and blessed them. 51 And it came
to pass, while he blessed them, he was parted from them,
and carried up into heaven. 52 And they worshipped
him, and returned to Jerusalem with great joy : 53
and were continually in the temple, praising and blessing
God. Amen.

कि मूसा की व्यवस्था, नबियों की पुस्तकों और भजन-संहिता में जो कुछ
मेरे संबंध में लिखा है वह सब पूरा होना अनिवार्य है।' ४५ तब
उन्होंने उनकी बुद्धि खोल दी कि वे धर्मशास्त्र को समझ सकें, ४६ और उनसे
कहा, 'धर्मशास्त्र का लेख है कि ख्रिस्त दुःख उठाएगा, तीसरे दिन मृतकों
में से जीवित हो उठेगा ४७ और यरूशलेम से आरम्भ कर सभी जातियों में
उसके नाम से हृदय-परिवर्तन और पाप-क्षमा का प्रचार किया जाएगा।
४८ तुम इन बातों के साक्षी हो। ४९ देखो, मेरे पिता ने जिसकी प्रतिज्ञा
की है उसे मैं तुम पर भेजूंगा ; पर जब तक तुम ऊपर के सामर्थ्य से विभूषित
न हो जाओ नगर में ठहरे रहो।'

स्वर्गारोहण

५० फिर वह उन्हें बैतनिय्याह तक ले गए और अपने हाथ उठाकर उन्हें
आशीर्वाद दिया। ५१ आशीर्वाद देते हुए वह उनसे पृथक् हो गए और
स्वर्ग में उठा लिए गए। ५२ वे लोग अत्यन्त आनन्दपूर्वक यरूशलेम लौट
आए ५३ और सदा मंदिर में उपस्थित रहकर परमेश्वर की स्तुति करने लगे।

THE GOSPEL

ACCORDING TO

ST. JOHN

PROLOGUE

IN the beginning was the Word, and the Word was
with God, and the Word was God. 2 The same was
in the beginning with God. 3 All things were made by
him ; and without him was not any thing made that was
made. 4 In him was life ; and the life was the light
of men. 5 And the light shineth in darkness ; and the
darkness comprehended it not.

6 There was a man sent from God, whose name
was John. 7 The same came for a witness, to bear
witness of the Light, that all men through him might
believe. 8 He was not that Light, but was sent to
bear witness of that Light.

9 That was the true Light, which lighteth every
man that cometh into the world. 10 He was in the
world, and the world was made by him, and the world
knew him not. 11 He came unto his own, and his
own received him not. 12 But as many as received
him, to them gave he power to become the sons
of God, even to them that believe on his name :
13 which were born, not of blood, nor of the will of
the flesh, nor of the will of man, but of God. 14 And
the Word was made flesh, and dwelt among us, (and
we beheld his glory, the glory as of the only begotten
of the Father,) full of grace and truth.

15 John bare witness of him, and cried, saying, This
was he of whom I spake, He that cometh after me
is preferred before me : for he was before me. 16 And
of his fulness have all we received, and grace for grace.
17 For the law was given by Moses, but grace and truth
came by Jesus Christ. 18 No man hath seen God at
any time ; the only begotten Son, which is in the bosom
of the Father, he hath declared him.

यूहन्ना रचित सुसमाचार

१

प्रस्तावना

१ आदि में शब्द* था ; शब्द परमेश्वर के साथ था और शब्द परमेश्वर
था। २ वह आदि में परमेश्वर के साथ था। ३ उसके द्वारा सब वस्तुओं की
उत्पत्ति हुई, †और जो कुछ भी उत्पन्न हुआ उसमें से एक भी वस्तु उसके
बिना उत्पन्न नहीं हुई। ४ उसमें जीवन था† और यह जीवन मनुष्यों की
ज्योति था। ५ ज्योति अंधकार में प्रकाश करती रही है परंतु अंधकार उस
पर कभी विजयी नहीं हुआ।

६ परमेश्वर द्वारा भेजे हुए एक व्यक्ति थे, जिनका नाम यूहन्ना था। ७ वह
साक्षी के लिए आए कि ज्योति की साक्षी दें कि सब उनके द्वारा विश्वास
करें। ८ वह स्वयं ज्योति नहीं थे, किंतु ज्योति के संबंध में साक्षी देने आए थे।

९ सच्ची ज्योति, जो प्रत्येक मनुष्य को प्रकाशित करती है, संसार में आने को
थी। १० वह संसार में थे, और संसार उनके द्वारा उत्पन्न हुआ, किंतु संसार
ने उनको नहीं जाना। ११ वह अपने स्थान पर आए और उनके अपनों ने ही
उनको ग्रहण नहीं किया ; १२ किंतु जितनों ने उनको ग्रहण किया और उनके
नाम पर विश्वास किया, उनको उन्होंने परमेश्वर की संतान बनने का अधिकार
दिया। १३ उनकी उत्पत्ति न तो रक्त‡ से न शारीरिक इच्छा से और न किसी
पुरुष के संकल्प से हुई, वरन् परमेश्वर से हुई। १४ अस्तु, शब्द देहधारी हुआ
और उसने अनुग्रह एवं सत्य से परिपूर्ण होकर हमारे मध्य निवास किया, और
हमने उसकी ऐसी महिमा देखी जैसी पिता के इकलौते पुत्र की महिमा।

१५ उसके संबंध में यूहन्ना की साक्षी है ; वह उच्च स्वर से कह चुके हैं,
'यह वही हैं जिनके संबंध में मैंने कहा था, "मेरे पीछे आनेवाला मुझसे श्रेष्ठ
है क्योंकि वह मुझसे पहिले था"।' १६ हम सबको उनकी परिपूर्णता में से
अनुग्रह पर अनुग्रह प्राप्त हुआ है ; १७ क्योंकि व्यवस्था मूसा के द्वारा प्रदान
की गई, परंतु अनुग्रह और सत्य यीशु ख्रिस्त के द्वारा आए। १८ परमेश्वर
को कभी किसी ने नहीं देखा, स्वयं एकलौते-पुत्र परमेश्वर ने, जो पिता के अंक
में हैं, उनका प्रकाशन किया है।

---

* अथवा, 'बचन'। † अथवा, 'उसके बिना एक वस्तु उत्पन्न नहीं हुई। ४ जो कुछ भी उत्पन्न हुआ है उसमें वह जीवन था।' ‡ अक्षरशः 'रक्तों से'।

THE TESTIMONY OF JOHN THE BAPTIST

19 And this is the record of John, when the Jews
sent priests and Levites from Jerusalem to ask him,
Who art thou ? 20 And he confessed, and denied not ;
but confessed, I am not the Christ. 21 And they asked
him, What then ? Art thou Elias ? And he saith, I
am not. Art thou that prophet ? And he answered,
No. 22 Then said they unto him, Who art thou ? that
we may give an answer to them that sent us. What
sayest thou of thyself ? 23 He said, I am the voice of
one crying in the wilderness, Make straight the way
of the Lord, as said the prophet Esaias.

24 And they which were sent were of the Pharisees.
25 And they asked him, and said unto him, Why
baptizest thou then, if thou be not that Christ, nor
Elias, neither that prophet ? 26 John answered them,
saying, I baptize with water : but there standeth one
among you, whom ye know not ; 27 he it is, who
coming after me is preferred before me, whose shoe's
latchet I am not worthy to unloose. 28 These things
were done in Bethabara beyond Jordan, where John
was baptizing.

29 The next day John seeth Jesus coming unto him,
and saith, Behold the Lamb of God, which taketh away
the sin of the world. 30 This is he of whom I said,
After me cometh a man which is preferred before me :
for he was before me. 31 And I knew him not : but
that he should be made manifest to Israel, therefore
am I come baptizing with water. 32 And John bare
record, saying, I saw the Spirit descending from heaven
like a dove, and it abode upon him. 33 And I knew
him not : but he that sent me to baptize with water,
the same said unto me, Upon whom thou shalt see
the Spirit descending, and remaining on him, the same
is he which baptizeth with the Holy Ghost. 34 And
I saw, and bare record that this is the Son of God.

THE BAPTIST'S DISCIPLES AND JESUS

35 Again the next day after John stood, and two

यूहन्ना की साक्षी

१९ यूहन्ना की साक्षी यह है : जब यरूशलेम से यहूदियों ने पुरोहित
और लेवी भेजे कि उनसे पूछें, 'आप कौन हैं,' २० तो उन्होंने मुक्त कंठ से
स्वीकार किया—अस्वीकार नहीं किया वरन् स्वीकार किया, 'मैं ख्रिस्त नहीं
हूं'। २१ उन्होंने पूछा, 'तो फिर आप कौन हैं ? क्या आप एलिय्याह हैं ?'
उन्होंने कहा, 'नहीं'। 'तो क्या नबी हैं ?' उन्होंने उत्तर दिया, 'नहीं।' २२ इस
पर वे बोले, 'कौन हैं आप ? हमें बताइए कि हम अपने भेजने वालों को उत्तर
दे सकें। आपको अपने विषय में क्या कहना है ? २३ उन्होंने कहा, 'यशायाह
नबी के लेखानुसार मैं निर्जन प्रदेश में पुकारनेवाले की वाणी हूं कि प्रभु का
मार्ग सीधा बनाओ।'

२४ ये लोग फरीसियों में से भेजे गए थे। २५ उन्होंने पूछा, यदि आप
ख्रिस्त नहीं हैं, एलिय्याह नहीं हैं और न वह नबी हैं, तो फिर आप बपतिस्मा
क्यों देते हैं ?' २६ यूहन्ना ने उत्तर दिया, 'मैं जल से* बपतिस्मा देता हूं परंतु
तुम्हारे बीच एक व्यक्ति खड़ा है, जिसे तुम नहीं पहिचानते २७ और जो मेरे
पीछे आनेवाला है। मैं उसके जूतों के बंधन तक खोलने योग्य नहीं हूं।'
२८ ये बातें यरदन के पार बैतनिय्याह में हुई जहां यूहन्ना बपतिस्मा दे रहे थे।

२९ दूसरे दिन उन्होंने यीशु को अपनी ओर आते देखा। वह बोले,
'देखो, परमेश्वर का मेम्ना ! संसार के पापों का वहनकर्ता ! ३० यह वही है
जिसके विषय में मैंने कहा था, "मेरे पीछे एक पुरुष आ रहा है जो मुझ
से श्रेष्ठ है क्योंकि वह मुझसे पहले था।" ३१ मैं स्वयं उसे नहीं पहिचानता
था, परंतु मैं इस कारण जल से* बपतिस्मा देता हुआ आया कि वह इस्राएल
पर प्रकट हो जाए।' ३२ यूहन्ना ने साक्षी दी, 'मैंने आत्मा को स्वर्ग
से कपोत के सदृश उतरते देखा और वह उन पर ठहर गया। ३३ मैं उनको
नहीं पहिचानता था पर जिसने मुझे जल से बपतिस्मा देने भेजा था उसने
मुझे बताया "जिस पर तुम पवित्र, आत्मा उतरते और ठहरते देखो, वही है जो
पवित्र, आत्मा से बपतिस्मा देने वाला है।" ३४ मैंने स्वयं देखा और मेरी
साक्षी है कि यह परमेश्वर के पुत्र हैं।'

यूहन्ना के शिष्य और यीशु

३५ दूसरे दिन फिर यूहन्ना और उनके दो शिष्य खड़े हुए† थे।

---

* अथवा, जल में। † अर्थात्, यूहन्ना ने

of his disciples ; 36 and looking upon Jesus as he walked,
he saith, Behold the Lamb of God ! 37 And the two
disciples heard him speak, and they followed Jesus.
38 Then Jesus turned, and saw them following, and
saith unto them, What seek ye ? They said unto him,
Rabbi, (which is to say, being interpreted, Master,)
where dwellest thou ? 39 He saith unto them, Come
and see. They came and saw where he dwelt, and
abode with him that day : for it was about the tenth
hour. 40 One of the two which heard John speak,
and followed him, was Andrew, Simon Peter's brother.
41 He first findeth his own brother Simon, and saith
unto him, We have found the Messias, which is, being
interpreted, the Christ. 42 And he brought him to
Jesus. And when Jesus beheld him, he said, Thou
art Simon the son of Jona : thou shalt be called Cephas,
which is by interpretation, A stone.

43 The day following Jesus would go forth into
Galilee, and findeth Philip, and saith unto him, Follow
me. 44 Now Philip was of Bethsaida, the city of
Andrew and Peter. 45 Philip findeth Nathanael,
and saith unto him, We have found him, of whom
Moses in the law, and the prophets, did write, Jesus
of Nazareth, the son of Joseph. 46 And Nathanael
said unto him, Can there any good thing come out
of Nazareth ? Philip saith unto him, Come and see.
47 Jesus saw Nathanael coming to him, and saith of
him, Behold an Israelite indeed, in whom is no guile!
48 Nathanael saith unto him, Whence knowest thou
me ? Jesus answered and said unto him, Before that
Philip called thee, when thou wast under the fig tree,
I saw thee. 49 Nathanael answered and saith unto
him, Rabbi, thou art the Son of God ; thou art the
King of Israel. 50 Jesus answered and said unto him
Because I said unto thee, I saw thee under the fig tree
believest thou ? thou shalt see greater things than these.
51 And he saith unto him, Verily, verily, I say unto you,
Hereafter ye shall see heaven open, and the angels of
God ascending and descending upon the Son of man.

३६ उन्होंने यीशु को जाते देखा और कहा, 'देखो ! परमेश्वर का मेम्ना !'
३७ उन दोनों शिष्यों ने उन्हें यह कहते सुना और यीशु के पीछे हो लिए।
३८ जब यीशु मुड़े और उनको अपनी पीछे आते देखा तो उनसे पूछा, 'तुम क्या
चाहते हो ?' उन्होंने कहा, 'हे रब्बी (अर्थात् गुरु) आप कहां रहते हैं ?'
३९उन्होंने उत्तर दिया, 'आओ और देखो।' तब उन्होंने जाकर उनका
निवास स्थान देखा और उस दिन उनके साथ रहे। उस समय लगभग
दसवां घंटा था। ४० उन दोनों में से एक, जो यूहन्ना की बात सुनकर उनके
पीछे हो लिये थे, शमौन पतरस के भाई अन्द्रियास थे। ४१ पहले वह अपने
भाई शमौन से मिले और उनसे कहा, 'हमने मसीह अर्थात् ख्रिस्त को पा
लिया है' ४२ और वह उनको यीशु के पास लाए। यीशु ने उन्हें ध्यानपूर्वक
देखा और कहा, 'तुम यूहन्ना के पुत्र शमौन हो; तुम कैफा अर्थात् पतरस
कहलाओगे।'

४३ दूसरे दिन उन्होंने गलील जाने का निश्चय किया। यीशु फिलिप्पुस
से मिले और उनसे कहा, 'मेरा अनुसरण करो।' ४४ फिलिप्पुस, अन्द्रियास
और पतरस के नगर बैतसेदाके निवासी थे। ४५ फिलिप्पुस ने नतनएल
से मिल कर कहा, 'जिनके विषय मूसा ने व्यवस्था में तथा नबियों ने लिखा
है, वह यूसुफ के पुत्र, नासरत-निवासी यीशु, हमें मिल गए।' ४६ नतनएल
बोल उठे 'क्या नासरत से कोई अच्छी वस्तु निकल सकती है ?'
४७ फिलिप्पुस ने कहा, 'आओ और देखो।' यीशु ने नतनएल को अपनी
ओर आते देखा तो उनके संबंध में कहा, 'देखो, यह वास्तविक इस्राएली
है, इसमें कोई कपट नहीं !' ४८ नतनएल ने उनसे पूछा, 'आप मुझे कैसे
जानते हैं ?' यीशु ने उत्तर दिया, 'इससे पहले कि फिलिप्पुस तुम्हें बुलाएं,
मैंने तुम्हें अंजीर के वृक्ष के नीचे देखा।' ४९ नतनएल बोले, 'रब्बी,
(गुरु) आप परमेश्वर-पुत्र हैं, आप इस्राएल के राजा हैं।' ५० यीशु
ने उत्तर दिया, 'क्या तुम यह इसलिए कहते हो कि मैंने तुमसे कहा, "तुमको
मैंने अंजीर वृक्ष के नीचे देखा, "तुम इससे भी महान् कार्य देखोगे।
५१ उन्होंने यह भी कहा, 'मैं तुम लोगों से सच सच सच कहता हूं कि तुम
स्वर्ग को अनावृत्त और परमेश्वर के दूतों को मानव-पुत्र पर आरोहण और
अवरोहण करते देखोगे।'

THE MARRIAGE AT CANA

2 And the third day there was a marriage in Cana
of Galilee ; and the mother of Jesus was there :
2 and both Jesus was called, and his disciples, to the
marriage. 3 And when they wanted wine, the mother
of Jesus saith unto him, They have no wine. 4 Jesus
saith unto her, Woman, what have I to do with thee ?
mine hour is not yet come. 5 His mother saith unto the
servants, Whatsoever he saith unto you, do it.

6 And there were set there six waterpots of stone,
after the manner of the purifying of the Jews, containing
two or three firkins apiece. 7 Jesus saith unto them,
Fill the waterpots with water. And they filled them up
to the brim. 8 And he saith unto them, Draw out
now, and bear unto the governor of the feast. And
they bare it. 9 When the ruler of the feast had tasted
the water that was made wine, and knew not whence
it was : (but the servants which drew the water knew ;)
the governor of the feast called the bridegroom, 10 and
saith unto him, Every man at the beginning doth set
forth good wine ; and when men have well drunk, then
that which is worse : but thou hast kept the good
wine until now. 11 This beginning of miracles did
Jesus in Cana of Galilee, and manifested forth his
glory ; and his disciples believed on him.

THE CLEANSING OF THE TEMPLE

12 After this he went down to Capernaum, he,
and his mother, and his brethren, and his disciples :
and they continued there not many days. 13 And
the Jews' passover was at hand, and Jesus went up
to Jerusalem, 14 and found in the temple those that
sold oxen and sheep and doves, and the changers of
money sitting : 15 and when he had made a scourge
of small cords, he drove them all out of the temple,
and the sheep, and the oxen ; and poured out the
changers' money, and overthrew the tables ; 16 and said
unto them that sold doves, Take these things hence ;

२

काना में विवाहोत्सव

१ तीसरे दिन गलील के काना में विवाह था। यीशु की माता वहां थीं
२ और यीशु एवं उनके शिष्य भी विवाह में निमंत्रित थे। ३ दाखरस कम
पड़ने पर यीशु की माता ने कहा, 'उनके पास दाखरस नहीं है।'
४ यीशु ने उत्तर दिया, 'हे महिला, मुझे आपसे क्या काम ! मेरे लिए
अभी समय नहीं आया है।' ५ माता सेवकों से बोलीं, 'जो कुछ वह तुमने
कहें वही करना।'

६ वहां यहूदियों के शुद्धिकरण के लिए पत्थर के छः पात्र रखे थे
जिनमें दो-दो, तीन-तीन मन जल आता था। ७ यीशु ने उनसे कहा, 'पात्रों
को जल से भर दो।' उन्होंने उनको मुंह तक भर दिया। ८ तब वह बोले, 'अब
निकालकर भोज के प्रधान के पास ले जाओ।' वे ले गए। ९ प्रधान ने वह
जल चखा जो दाखरस बन गया था, और नहीं जाना कि यह कहां से आया
है (किंतु सेवक, जिन्होंने जल निकाला था, जानते थे)। तब भोज के प्रधान
ने दूलह को बुलाया १० और कहा 'प्रत्येक मनुष्य पहले उत्तम दाखरस देता
है, और लोगों के तृप्त हो जाने पर मध्यम, पर तुमने उत्तम दाखरस अब
तक रख छोड़ा है।' ११ गलील के 'काना' में इस प्रकार यीशु ने अपने चिह्नों
का आरंभ कर अपनी महिमा प्रकट की; एवं उनके शिष्यों ने उनपर
विश्वास किया।

मंदिर का परिष्कार करना

१२ इसके अनंतर वह, उनकी माता, भाई एवं उनके शिष्य कफरन-
हूम गए और वहां कुछ दिन निवास किया! १३ यहूदियों का फसह समीप
आने पर यीशु यरूशलेम गए। १४ वहां उन्होंने मंदिर में बैल, भेड़ और कपोत
बेचनेवालों और सर्राफों को बैठे पाया १५ तथा रस्सियों का कोड़ा बनाकर
उन्होंने भेड़ों और बैलों सहित सबको मंदिर से बाहर कर दिया, मुद्रा
विनिमय करनेवालों की मुद्राएं बिखेर दीं और उनकी गद्दियां उलट दीं।
१६ वह कपोत बेचनेवालों से बोले, 'इन्हें यहां से ले जाओ; मेरे पिता के

make not my Father's house an house of merchandise.
17 And his disciples remembered that it was written,
The zeal of thine house hath eaten me up.

18 Then answered the Jews and said unto him,
What sign shewest thou unto us, seeing that thou doest
these things ? 19 Jesus answered and said unto them,
Destroy this temple, and in three days I will raise it up.
20 Then said the Jews, Forty and six years was this
temple, in building, and wilt thou rear it up in three
days ? 21 But he spake of the temple of his body.
22 When therefore he was risen from the dead, his
disciples remembered that he had said this unto them ;
and they believed the scripture, and the word which
Jesus had said.

23 Now when he was in Jerusalem at the passover,
in the feast day, many believed in his name, when they
saw the miracles which he did. 24 But Jesus did not
commit himself unto them, because he knew all men,
25 and needed not that any should testify of man : for
he knew what was in man.

CONVERSATION WITH NICODEMUS

3 There was a man of the Pharisees, named Nico-
demus, a ruler of the Jews : 2 the same came to
Jesus by night, and said unto him, Rabbi, we know
that thou art a teacher come from God : for no man
can do these miracles that thou doest, except God be
with him. 3 Jesus answered and said unto him, Verily,
verily, I say unto thee, Except a man be born again, he
cannot see the kingdom of God. 4 Nicodemus saith
unto him, How can a man be born when he is old ?
can he enter the second time into his mother's womb,
and be born ? 5 Jesus answered, Verily, verily, I say
unto thee, Except a man be born of water and of the
Spirit, he cannot enter into the kingdom of God.
6 That which is born of the flesh is flesh ; and that
which is born of the Spirit is spirit. 7 Marvel
not that I said unto thee, Ye must be born again.

भवन को व्यापार का घर मत बनाओ।' १७ उनके शिष्यों को स्मरण हुआ कि
शास्त्र में लिखा है, 'तेरे भवन की धुन मुझे खा जाएगी।'

१८ तब यहूदियों ने कहा, 'यह जो आप कर रहे हैं, इसके लिये आप हमें
क्या चिह्न दिखाते हैं ?' १९ यीशु ने उत्तर दिया, 'इस मंदिर को नष्ट कर दो
और मैं इसे तीन दिन में खड़ा कर दूंगा।' २० यहूदी बोले, 'इस मंदिर के
निर्माण में छियालीस वर्ष लगे और क्या आप इसे तीन दिन में खड़ा कर
देंगे ?' २१ परंतु वह तो अपने देह रूपी मंदिर के विषय में कह रहे थे।
२२ जब वह मृतकों में से जीवित हो उठे तो उनके शिष्यों को स्मरण हुआ कि
उन्होंने ऐसा कहा था, और उन्होंने शास्त्र के लेख पर एवं उन शब्दों पर जो
यीशु ने कहे थे विश्वास किया।

२३ जब वह यरूशलेम में फसह के अवसर पर उत्सव में थे
तो बहुत लोगों ने उन चिह्नों को, जिन्हें वह दिखाते थे, देखकर उनके नाम पर
विश्वास किया ; २४ परंतु यीशु ने अपने आपको उनके भरोसे पर
नहीं छोड़ा २५ क्योंकि वह सबको जानते थे और उनको यह आवश्यकता नहीं
थी कि कोई व्यक्ति मनुष्य के विषय में साक्षी दे ; कारण, उन्हें पता था कि
मनुष्य के मन में क्या है।

३

निकोदिमुस को उपदेश

१ फरीसियों में निकोदिमुस नामक एक व्यक्ति यहूदियों में अधिकारी
थे। २ वह रात्रि में उनके पास आए और बोले 'रब्बी, हम जानते हैं कि
आप गुरु हैं और परमेश्वर की ओर से गुरु होकर आए हुए हैं ; क्योंकि
यदि परमेश्वर साथ न हों तो जो चिह्न आप दिखाते हैं, कोई नहीं दिखा
सकता।' ३ यीशु ने उत्तर दिया, 'मैं आप से सच सच कहता हूं कि जब तक
कोई नया* जन्म न ले, परमेश्वर के राज्य के दर्शन नहीं कर सकता।''
४ निकोदिमुस ने पूछा, 'मनुष्य वृद्ध होकर जन्म कैसे ले सकता है ?' क्या
वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश कर जन्म ले सकता है ?' ५ यीशु
ने उत्तर दिया, 'मैं आपसे सच सच कहता हूं कि जब तक कोई जल और
आत्मा द्वारा जन्म न ले, वह परमेश्वरके राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।
६ जो शरीर से जन्म लेता है, वह शरीर है ; पर जो आत्मा से जन्म लेता है,
वह आत्मा है। ७ जब मैं कहता हूं कि आपको नया जन्म लेनेकी आवश्यकता

* अथवा, ऊपर से।

8 The wind bloweth where it listeth, and thou hearest
the sound thereof, but canst not tell whence it cometh,
and whither it goeth : so is every one that is born of
the Spirit.

9 Nicodemus answered and said unto him, How
can these things be ? 10 Jesus answered and said unto
him, Art thou a master of Israel, and knowest not
these things ? 11 Verily, verily, I say unto thee, We
speak that we do know, and testify that we have seen ;
and ye receive not our witness. 12 If I have told you
earthly things, and ye believe not, how shall ye believe,
if I tell you of heavenly things ? 13 And no man hath
ascended up to heaven, but he that came down from
heaven, even the Son of man which is in heaven.
14 And as Moses lifted up the serpent in the wilder-
ness, even so must the Son of man be lifted up :
15 that whosoever believeth in him should not perish,
but have eternal life.

16 For God so loved the world, that he gave his
only begotten Son, that whosoever believeth in him
should not perish, but have everlasting life. 17 For
God sent not his Son into the world to condemn the
world ; but that the world through him might be
saved. 18 He that believeth on him is not condemned :
but he that believeth not is condemned already, because
he hath not believed in the name of the only begotten
Son of God. 19 And this is the condemnation, that
light is come into the world, and men loved darkness
rather than light, because their deeds were evil. 20 For
every one that doeth evil hateth the light, neither
cometh to the light, lest his deeds should be reproved.
21 But he that doeth truth cometh to the light, that
his deeds may be made manifest, that they are wrought
in God.

THE BAPTIST'S FURTHER TESTIMONY TO JESUS

22 After these things came Jesus and his disciples
into the land of Judæa ; and there he tarried with them,
and baptized. 23 And John also was baptizing in

है तो चकित न होइए। ८ वायु* जिधर चाहती है, चलती है; आप उसका
शब्द सुनते हैं, पर नहीं जानते कि वह कहां से आ रही है और किधर जा रही
है। जो कोई आत्मा से जन्म लेता है वह ऐसा ही है।'
९ निकोदिमुस ने कहा, 'यह कैसे हो सकता है?' १० यीशु ने उत्तर
दिया, 'आप इस्राएल के गुरु हैं! फिर भी यह नहीं समझते। ११ मैं आप
से सच सच कहता हूं कि जिसको हम जानते हैं, उसे बताते हैं; और जिसका
हमने दर्शन किया है, उसकी साक्षी देते हैं; पर आप सब हमारी साक्षी
स्वीकार नहीं करते। १२ जब मैंने आपसे पृथ्वी की बातें कहीं और आप
उन पर विश्वास नहीं कर रहे, फिर यदि मैं स्वर्ग की बातें कहूं तो कैसे
विश्वास करेंगे? १३ केवल एक अर्थात् मानव-पुत्र को छोड़कर, जो स्वर्ग
से उतरा, और कोई व्यक्ति स्वर्ग पर नहीं चढ़ा; १४ और जैसे मूसा ने
निर्जन प्रदेश में सर्प को ऊंचा उठाया, उसी प्रकार मानव-पुत्र का ऊंचा उठाया
जाना अनिवार्य है १५ कि जो उस पर विश्वास करे, वह शाश्वत जीवन प्राप्त
करे।'
१६ क्योंकि परमेश्वर ने संसार से ऐसा प्रेम रखा कि अपना एकलौता
पुत्र दे दिया, कि जो कोई उस पर विश्वास करे, नष्ट न हो, परंतु शाश्वत
जीवन पाए। १७ परमेश्वर ने अपने पुत्र को संसार में इसलिए नहीं भेजा कि
संसार को दंड की आज्ञा दे वरन् इसीलिए कि उसके द्वारा संसार का उद्धार
हो। १८ जो उस पर विश्वास करता है उस पर दंड की आज्ञा नहीं, परंतु जो
उस पर विश्वास नहीं करता है उस पर दंड की आज्ञा हो चुकी है, क्योंकि
उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र पर विश्वास नहीं किया। १९ दंड की आज्ञा
का कारण यह है : ज्योति संसार में आई है, परंतु मनुष्यों ने ज्योति की अपेक्षा
अंधकार से प्रेम किया, क्योंकि उनके कार्य बुरे थे। २० प्रत्येक दुराचारी
ज्योति से बैर रखता है, वह ज्योति के समीप नहीं आता कि कहीं उसके
कार्यों के दोष प्रकट न हो जाएं; २१ परंतु सत्य पर आचरण करने वाला
ज्योति के समीप आता है, जिससे उसके कार्य प्रकट हो जाएं कि वे परमेश्वर में
किए गए हैं।

यूहन्ना की अंतिम साक्षी

२२ इसके अनंतर यीशु अपने शिष्यों के साथ यहूदिया प्रदेश में आए
और वहां उनके साथ रहकर बपतिस्मा देने लगे। २३ यूहन्ना भी शलेम के

* मूल यूनानी शब्द में श्लेष है। उसके अर्थ (१) वायु और (२) आत्मा दोनों हैं।

Ænon near to Salim, because there was much water
there : and they came, and were baptized. 24 For John
was not yet cast into prison.

25 Then there arose a question between some of
John's disciples and the Jews about purifying. 26 And
they came unto John, and said unto him, Rabbi, he
that was with thee beyond Jordan, to whom thou barest
witness, behold, the same baptizeth, and all men come
to him. 27 John answered and said, A man can receive
nothing, except it be given him from heaven. 28 Ye
yourselves bear me witness, that I said, I am not the
Christ, but that I am sent before him. 29 He that
hath the bride is the bridegroom : but the friend of
the bridegroom, which standeth and heareth him, re-
joiceth greatly because of the bridegroom's voice : this
my joy therefore is fulfilled. 30 He must increase, but
I must decrease.

31 He that cometh from above is above all : he that
is of the earth is earthly, and speaketh of the earth :
he that cometh from heaven is above all. 32 And what
he hath seen and heard, that he testifieth ; and no man
receiveth his testimony. 33 He that hath received
his testimony hath set to his seal that God is true.
34 For he whom God hath sent speaketh the words of
God : for God giveth not the Spirit by measure unto
him. 35 The Father loveth the Son, and hath given
all things into his hand. 36 He that believeth on
the Son hath everlasting life : and he that believeth
not the Son shall not see life ; but the wrath of God
abideth on him.

JESUS AND THE WOMAN OF SAMARIA

4 When therefore the Lord knew how the Pharisees
had heard that Jesus made and baptized more
disciples than John, 2 (though Jesus himself baptized
not, but his disciples,) 3 he left Judæa, and departed
again into Galilee. 4 And he must needs go through
Samaria. 5 Then cometh he to a city of Samaria, which

समीप एनोन में बपतिस्मा दे रहे थे, क्योंकि वहां जल अधिक था और लोग
आकर बपतिस्मा ले रहे थे। २४ यूहन्ना अभी कारागार में नहीं डाले गए थे।
२५ यूहन्ना के शिष्यों का किसी यहूदी के साथ शुद्धिकरण के विषय में
विवाद उठ खड़ा हुआ। २६ उन्होंने यूहन्ना के पास जाकर कहा, 'रब्बी
देखिए, यरदन पार जो आपके साथ थे और जिनके संबंध में आपने साक्षी
दी थी, वह बपतिस्मा देने लगे हैं और सब उनके पास जा रहे हैं।' २७ यूहन्ना
ने उत्तर दिया, 'जबतक स्वर्ग से न दिया जाए, मनुष्य कुछ भी प्राप्त नहीं कर
सकता। २८ तुम स्वयं साक्षी हो कि मैंने कहा था, मैं ख्रिस्त नहीं हूं, किंतु
उनसे पहले भेजा गया हूं"। २९ जिसकी दुलहिन, वह दूलह। दूलह का
मित्र, उसके पास खड़ा हुआ उसकी सुनता है, और दूलह की वाणी से
आनन्दित होता है। अस्तु, मेरा यह आनन्द पूर्ण हुआ है। ३० यह
अनिवार्य है कि वह बढ़े और मैं घटूं।'
३१ जो ऊपर से आता है वह सर्वोपरि है। जो पृथ्वी से है वह पृथ्वी
का है और वह पृथ्वी की ही कहता है; पर जो स्वर्ग से आता है वह सर्वोपरि
है। ३२ जो कुछ उसने देखा और सुना है, उसकी वह साक्षी देता है, तो भी
कोई उसकी साक्षी ग्रहण नहीं करता। ३३ जो उसकी साक्षी ग्रहण करता
है, वह इस बात पर छाप लगा चुका कि परमेश्वर सत्य हैं। ३४ जिसे
परमेश्वर ने भेजा है वह परमेश्वर की बातें कहता है, क्योंकि परमेश्वर नाप
तौल कर पवित्र आत्मा नहीं देते। ३५ पिता पुत्र से प्रेम करते हैं और उनके
हाथ में उन्होंने सब कुछ दे दिया है। ३६ जो पुत्र पर विश्वास करता है,
शाश्वत जीवन उसका है; और जो पुत्र को नहीं मानता वह जीवन का दर्शन
नहीं करेगा, परंतु परमेश्वर का कोप उस पर रहता है।

४

सामरी स्त्री

१ जब प्रभु को विदित हुआ कि फरीसियों ने सुन लिया है कि यूहन्ना की
अपेक्षा यीशु अधिक शिष्य बनाते और बपतिस्मा देते हैं—२ यद्यपि स्वयं यीशु
नहीं उनके शिष्य बपतिस्मा देते थे - ३ तो उन्होंने यहूदिया को छोड़ दिया
और पुनः गलील को प्रस्थान किया। ४ सामरिया में होकर जाना ही था
५ अतः वह सामरिया के सुखार नगर में उस भूमि के समीप आए जो याकूब

is called Sychar, near to the parcel of ground that Jacob
gave to his son Joseph. 6 Now Jacob's well was there.
Jesus therefore, being wearied with his journey, sat
thus on the well : and it was about the sixth hour.

7 There cometh a woman of Samaria to draw water :
Jesus saith unto her, Give me to drink. 8 (For his
disciples were gone away unto the city to buy meat.)
9 Then saith the woman of Samaria unto him, How is
it that thou, being a Jew, askest drink of me, which am a
woman of Samaria ? for the Jews have no dealings with
the Samaritans. 10 Jesus answered and said unto her,
If thou knewest the gift of God, and who it is that
saith to thee, Give me to drink ; thou wouldest have
asked of him, and he would have given thee living
water. 11 The woman saith unto him, Sir, thou hast
nothing to draw with, and the well is deep : from
whence then hast thou that living water ? 12 Art thou
greater than our father Jacob, which gave us the well,
and drank thereof himself, and his children, and his
cattle ? 13 Jesus answered and said unto her, Whosoever
drinketh of this water shall thirst again : 14 but who-
soever drinketh of the water that I shall give him shall
never thirst ; but the water that I shall give him shall
be in him a well of water springing up into everlasting
life. 15 The woman saith unto him, Sir, give me this
water, that I thirst not, neither come hither to draw.

16 Jesus saith unto her, Go, call thy husband, and
come hither. 17 The woman answered and said, I have
no husband. Jesus said unto her, Thou hast well said,
I have no husband : 18 for thou hast had five husbands ;
and he whom thou now hast is not thy husband :
in that saidst thou truly. 19 The woman saith unto
him, Sir, I perceive that thou art a prophet. 20 Our
fathers worshipped in this mountain ; and ye say, that
in Jerusalem is the place where men ought to worship.
21 Jesus saith unto her, Woman, believe me, the
hour cometh, when ye shall neither in this mountain,
nor yet at Jerusalem, worship the Father. 22 Ye wor-

ने अपने पुत्र यूसुफ को दी थी। ६ वहां याकूब का कुआ था। यीशु यात्रा
से थक कर, जैसे थे वैसे ही, कुए पर बैठ गए। यह लगभग छठे घंटे
का समय था।

७ इतने में सामरिया की एक स्त्री जल भरने आई। यीशु ने उससे
कहा, 'मुझे पीने को जल दो।' ८ क्योंकि उनके शिष्य भोजन मोल लेने के
लिए नगर में गए हुए थे। ९ सामरी स्त्री ने उनसे कहा, 'आप यहूदी होकर
मुझसे, जो सामरिया की स्त्री हूं, जल कैसे मांगते हैं?' (कारण यह कि
यहूदी सामरियों के पात्रों का प्रयोग नहीं करते।) १० यीशु ने उत्तर दिया,
'यदि तुम परमेश्वर के वरदान को जानतीं और यह जानतीं कि वह कौन
है जो तुमसे कह रहा है, "मुझे पीने को जल दो," तो तुम उससे माँगतीं,
और वह तुम्हें जीवन-जल देता।' ११ स्त्री ने कहा; 'महोदय, आपके पास
जल भरने को कुछ नहीं है, और कुआ गहरा है; जीवन-जल आपके पास
कहां से आया? १२ आप हमारे पिता याकूब से महान् तो हैं नहीं! उन्होंने
हमको यह कुआ प्रदान किया और उसमें से स्वयं उन्होंने, उनके पुत्रों ने
एवं उनके पशुओं ने भी पिया।' १३ यीशु ने उत्तर दिया, 'जो इस जल में से
पिएगा वह फिर प्यासा होगा। १४ किंतु जो कोई उस जल में से पिएगा
जिसे मैं दूंगा वह कदापि प्यासा न होगा; वरन् वह जल जो मैं पीने को
दूंगा, उसमें शाश्वत जीवन तक उमड़ने वाला जल स्रोत बन जाएगा।'
१५ स्त्री ने कहा, 'महोदय, मुझे वह जल दीजिए कि मैं फिर प्यासी न होऊं
और न यहां जल भरने आऊं।'

१६ यीशु बोले, 'जाओ, अपने पति को बुला लाओ।' १७ स्त्री ने उत्तर
दिया, 'मेरे पति नहीं हैं। यीशु ने कहा, 'तुमने सत्य कहा, "मेरे पति नहीं
हैं", १८ क्योंकि तुम पांच पति कर चुकी हो, और अब जो तुम्हारे पास है,
वह तुम्हारा पति नहीं; यह तुमने सत्य कहा है।' १९ स्त्री बोली, 'महोदय,
अब मैं समझी आप कोई नबी हैं। २० हमारे पूर्वजों ने इस पर्वत पर आरा-
धना की, और आप लोग कहते हैं कि यरूशलेम में ही वह स्थान है जहां
आराधना करनी चाहिए।' २१ यीशु ने कहा, 'महिला मेरा विश्वास करो।
वह समय आ रहा है जब तुम लोग न इस पर्वत पर और न यरूशलेम में
पिता की आराधना करोगे। २२ तुम उसकी आराधना करते हो जिसे नहीं

ship ye know not what : we know what we worship :
for salvation is of the Jews. 23 But the hour cometh,
and now is, when the true worshippers shall worship the
Father in spirit and in truth : for the Father seeketh
such to worship him. 24 God is a Spirit : and they
that worship him must worship him in spirit and in
truth. 25 The woman saith unto him, I know that
Messias cometh, which is called Christ : when he is
come, he will tell us all things. 26 Jesus saith unto
her, I that speak unto thee am he.

27 And upon this came his disciples, and marvelled
that he talked with the woman : yet no man said, What
seekest thou ? or, Why talkest thou with her ? 28 The
woman then left her waterpot, and went her way
into the city, and saith to the men, 29 Come, see a man,
which told me all things that ever I did : is not this the
Christ ? 30 Then they went out of the city, and came
unto him.

31 In the mean while his disciples prayed him,
saying, Master, eat. 32 But he said unto them, I have
meat to eat that ye know not of. 33 Therefore said
the disciples one to another, Hath any man brought him
ought to eat ? 34 Jesus saith unto them, My meat is
to do the will of him that sent me, and to finish his
work. 35 Say not ye, There are yet four months, and
then cometh harvest ? behold, I say unto you, Lift up
your eyes, and look on the fields ; for they are white
already to harvest. 36 And he that reapeth receiveth
wages, and gathereth fruit unto life eternal : that both
he that soweth and he that reapeth may rejoice together.
37 And herein is that saying true, One soweth, and
another reapeth. 38 I sent you to reap that whereon
ye bestowed no labour : other men laboured, and ye
are entered into their labours.

39 And many of the Samaritans of that city believed
on him for the saying of the woman, which testified,
He told me all that ever I did. 40 So when the
Samaritans were come unto him, they besought him

जानते ; हम उसकी आराधना करते हैं जिसे जानते हैं, क्योंकि उद्धार
यहूदियों में से है । २३ फिर भी वह समय आ रहा है, वरन् वर्तमान है, जब
सच्चे आराधक पिता की आराधना आत्मा और सत्य में करेंगे; क्योंकि
पिता ऐसे ही आराधक चाहता है । २४ परमेश्वर आत्मा है ; और यह आव-
श्यक है कि उसके आराधक आत्मा और सत्य से उसकी आराधना करें ।'
२५ स्त्री ने कहा, 'मैं जानती हूं कि मसीह जो ख्रिस्त कहलाता है आनेवाला
है । जब वह आएगा, हमें सब बातें स्पष्ट कर देगा ।' २६ यीशु बोले,
'मैं जो तुमसे बात कर रहा हूं, वही हूं ।'

२७ इस समय उनके शिष्य आ गए और आश्चर्य करने लगे कि वह
एक स्त्री से बात कर रहे हैं ; पर तो भी किसी ने नहीं पूछा, 'आप क्या
चाहते हैं' अथवा 'आप इस स्त्री से क्यों बात कर रहे हैं ।' २८ उस स्त्री ने
अपना घड़ा वहीं छोड़ा और नगर में जाकर लोगों से कहा, २९ 'आओ तो
एक मनुष्य को देखो, जिसने सब कुछ जो मैंने किया मुझे बता दिया । कहीं
यह ख्रिस्त तो नहीं !' ३० वे नगर से निकले और उनकी ओर [illegible] लगे ; ।

३१ इसी बीच में उनके शिष्यों ने निवेदन किया, 'रब्बी, भोजन कर
लीजिए', ३२ पर उन्होंने उत्तर दिया, मेरे पास खाने को वह भोजन है
जिसे तुम नहीं जानते ।' ३३ शिष्य आपस में कहने लगे, 'कोई इनके लिए
भोजन तो नहीं लाया ?' ३४ यीशु ने उनसे कहा, 'मेरा भोजन यह है कि अपने
भेजनेवाले की इच्छा के अनुसार चलूं और उसका कार्य पूर्ण करूं । ३५ क्या
तुम नहीं कहते, "चार महीने और हैं कि कटनी आई" मैं कहता हूं कि
आंखें उठाओ, और खेतों पर दृष्टि करो ; वे कटनी के लिए पक चुके
हैं । ३६ काटने वाला पारिश्रमिक प्राप्त कर शाश्वत जीवन के लिए फल
संग्रह कर रहा है,जिससे कि बोनेवाला और काटने वाले दोनों आनंद मनाएं ।
३७ अस्तु, यहां यह कहावत सच्ची उतरती है, "बोनेवाला और है, काटने-
वाला और" । ३८ जिसके लिए तुमने कोई परिश्रम नहीं किया, उसे काटने
के लिए मैंने तुम्हें भेजा ; दूसरों ने परिश्रम किया और उनके परिश्रम का
फल तुम्हें प्राप्त है ।'

३९ उस नगर के अनेक सामरियों ने उन पर विश्वास किया, क्योंकि
उस स्त्री का, जिसने साक्षी दी थी, कथन था, 'जो कुछ मैंने किया, वह सब
उन्होंने मुझे बता दिया ।' ४० इन सामरिया निवासियों ने आकर उनसे
निवेदन किया कि हमारे साथ रहिए ; और वह उनके साथ दो दिन रहे ।

that he would tarry with them : and he abode there
two days. 41 And many more believed because of his
own word ; 42 and said unto the woman, Now we
believe, not because of thy saying : for we have heard
him ourselves, and know that this is indeed the Christ,
the Saviour of the world.

JESUS CURES THE SON OF THE KING'S OFFICER IN GALILEE

43 Now after two days he departed thence, and went
into Galilee. 44 For Jesus himself testified, that a pro-
phet hath no honour in his own country. 45 Then
when he was come into Galilee, the Galilæans received
him, having seen all the things that he did at
Jerusalem at the feast : for they also went unto the
feast.

46 So Jesus came again into Cana of Galilee, where
he made the water wine. And there was a certain
nobleman, whose son was sick at Capernaum. 47
When he heard that Jesus was come out of Judæa into
Galilee, he went unto him, and besought him that he
would come down, and heal his son : for he was at the
point of death. 48 Then said Jesus unto him, Except
ye see signs and wonders, ye will not believe. 49 The
nobleman saith unto him, Sir, come down ere my child
die. 50 Jesus saith unto him, Go thy way ; thy son liveth.
And the man believed the word that Jesus had spoken
unto him, and he went his way. 51 And as he was now
going down, his servants met him, and told him, saying,
Thy son liveth. 52 Then enquired he of them the hour
when he began to amend. And they said unto him,
Yesterday at the seventh hour the fever left him. 53
So the father knew that it was at the same hour, in the
which Jesus said unto him, Thy son liveth : and himself
believed, and his whole house. 54 This is again the
second miracle that Jesus did, when he was come out of
Judæa into Galilee.

४१ उनके उपदेशों के कारण और बहुतों ने उन पर विश्वास किया। ४२ वे
उस स्त्री से बोले, 'हम अब तेरे कथन के कारण विश्वास नहीं करते; हमने
स्वयं उनको सुना हैं और हम जानते हैं कि वह वास्तव में संसार के
उद्धारकर्ता हैं।'

राज्य कर्मचारी के पुत्र को स्वस्थ करना

४३ दो दिन के उपरांत यीशु वहां से निकल कर गलील को गए।
४४ क्योंकि उन्होंने स्वयं साक्षी दी थी कि नबी का अपनी मातृभूमि में
आदर नहीं होता। ४५ जब वह गलील पहुंचे तो गलील निवासियों ने उनका
स्वागत किया, क्योंकि वे उन सब कामों को देख चुके थे जो यीशु ने पर्व के
अवसर पर यरूशलेम में किए थे, कारण कि वे लोग भी पर्व पर गए थे।

४६ तब वह पुनः गलील के काना में आए जहां उन्होंने जल को दाखरस
बनाया था। वहां एक राज्याधिकारी था जिसका पुत्र कफरनहूम में रोगी था।
४७ जब उसने सुना कि यीशु यहूदिया से गलील में आए हुए हैं तो उनके
निकट आकर निवेदन किया कि जाकर उसके पुत्र को स्वस्थ करें, क्योंकि
वह मरने पर था। ४८ यीशु ने उससे कहा, 'जब तक तुम चिह्न और चमत्कार
नही देखोगे, विश्वास न करोगे!' ४९ अधिकारी ने कहा, 'प्रभु, मेरे बालक
की मृत्यु होने से पूर्व आइए।' ५० यीशु ने उससे कहा, 'जाओ, तुम्हारा पुत्र
जीवित है।' मनुष्य ने यीशु के कथन पर विश्वास किया और चला गया।
५१ वह मार्ग में ही था कि उसे दास मिले जिन्होंने उससे कहा, 'आप
का बालक जीवित है।' ५२ उसने उनसे पूछा, 'किस समय से उसकी दशा
सुधरने लगी?' वे बोले, 'कल सातवें घंटे से उसका ज्वर दूर हो गया।'
५३ तब पिता ने जाना कि उसी समय यीशु ने कहा था, 'तुम्हारा पुत्र जीवित
है', और उसने तथा उसके परिवार ने विश्वास किया। ५४ यह दूसरा
चिह्न था जो यीशु ने यहूदिया से आकर गलील में दिखाया।

THE CRIPPLE AT THE POOL OF BETHESDA

5 After this there was a feast of the Jews; and Jesus
went up to Jerusalem. 2 Now there is at Jerusalem
by the sheep market a pool, which is called in the
Hebrew tongue Bethesda, having five porches. 3 In
these lay a great multitude of impotent folk, of blind,
halt, withered, waiting for the moving of the water.
4 For an angel went down at a certain season into the
pool, and troubled the water: whosoever then first after
the troubling of the water stepped in was made whole
of whatsoever disease he had. 5 And a certain man
was there, which had an infirmity thirty and eight years.
6 When Jesus saw him lie, and knew that he had been
now a long time in that case, he saith unto him, Wilt
thou be made whole? 7 The impotent man answered
him, Sir, I have no man, when the water is troubled, to
put me into the pool: but while I am coming, another
steppeth down before me. 8 Jesus saith unto him,
Rise, take up thy bed, and walk. 9 And immediately
the man was made whole, and took up his bed, and
walked: and on the same day was the sabbath.

10 The Jews therefore said unto him that was
cured, It is the sabbath day: it is not lawful for thee to
carry thy bed. 11 He answered them, He that made
me whole, the same said unto me, Take up thy bed, and
walk. 12 Then asked they him, What man is that
which said unto thee, Take up thy bed, and walk? 13
And he that was healed wist not who it was: for Jesus
had conveyed himself away, a multitude being in that
place. 14 Afterward Jesus findeth him in the temple,
and said unto him, Behold, thou art made whole: sin no
more, lest a worse thing come unto thee. 15 The man
departed, and told the Jews that it was Jesus, which had
made him whole. 16 And therefore did the Jews perse-
cute Jesus, and sought to slay him, because he had done
these things on the sabbath day. 17 But Jesus answered
them, My Father worketh hitherto, and I work. 18
Therefore the Jews sought the more to kill him, because

५

बेतसहदा के कुंड पर पंगुपुरुष

१ इसके अनंतर यहूदियों के एक पर्व पर यीशु यरूशलेम गए।
२ यरूशलेम में मेषकुंड* है जो इब्रानी में बेतसहदा कहलता है। उसके पांच
मंडप हैं। ३ इनमें अनेक रोगी-अंधे, लंगड़े और अर्द्धांगी-(जल के हिलने
की प्रतीक्षा में) पड़े रहते थे। (४ क्योंकि समय समय पर एक स्वर्गदूत
कुंड में उतरता और जल को हिलाता था। जल हिलते ही जो व्यक्ति
पहले डूबकी लगाता, वह चाहे किसी रोग से ग्रस्त क्यों न हो, स्वस्थ हो जाता
था।)† ५ वहां एक मनुष्य था जो अड़तीस वर्ष से रोगी था। ६ यीशु ने उसे
पड़े देखकर और यह जानकर कि वह बहुत काल से रोगी है, उससे कहा,
'क्या तुम स्वस्थ होना चाहते हो?' ७ रोगी ने उत्तर दिया, 'महोदय, मेरा
कोई ऐसा नहीं है जो जल के हिलने पर मुझे कुंड में उतारे, मेरे जाते-जाते
मुझ से पहले कोई अन्य व्यक्ति उतर जाता है।' ८ यीशु ने कहा, 'उठो, अपना
बिस्तर उठाओ और चलो।' ९ वह मनुष्य तुरंत स्वस्थ हो गया और बिस्तर
उठाकर चलने फिरने लगा।

१० उस दिन सबत था इसलिए यहूदियों ने स्वस्थ हुए व्यक्ति से कहा,
'आज सबत है, बिस्तर उठाना तुम्हारे लिए विहित नहीं।' ११ उसने उत्तर
दिया 'जिसने मुझे स्वस्थ किया, उसने मुझसे कहा, "अपना बिस्तर उठाओ
और चलो"।' १२ उन्होंने पूछा, 'वह कौन मनुष्य है जिसने तुमसे कहा,
बिस्तर उठाओ और चलो" ? १३ स्वस्थ हुआ व्यक्ति नहीं जानता था
कि वह कौन हैं, क्योंकि उस स्थान पर भीड़ होने के कारण यीशु वहां
से चले गए थे। १४ कुछ समय पश्चात् यीशु उसे मंदिर में मिले और
उससे बोले, 'देखो तुम स्वस्थ हो गए हो, आगे पाप न करना। कहीं ऐसा न
हो कि तुम्हारा अधिक अनिष्ट हो जाए।' १५ उस मनुष्य ने जाकर यहूदियों
से कहा, 'वह जिन्होंने मुझे स्वस्थ किया यीशु हैं।' १६ इस कारण यहूदी
यीशु को सताने लगे कि वह सबत के दिन ऐसे कार्य करते थे। १७ यीशु
ने उनसे कहा, 'मेरा पिता अब तक कार्य कर रहा है, और मैं भी कर
रहा हूं।' १८ अब यहूदी उनको मार डालने का और भी प्रयत्न करने लगे,

*पाठांतर : 'मेषद्वार के समीप एक कुंड है।'
†कुछ प्राचीन प्रामाणिक प्रतियों में कोष्टांकित शब्द नहीं पाए जाते।

he not only had broken the sabbath, but said also that
God was his Father, making himself equal with God.

JESUS EXPLAINS HIS DEPENDENCE ON THE FATHER

19 Then answered Jesus and said unto them, Verily,
verily, I say unto you, The Son can do nothing of him-
self, but what he seeth the Father do : for what things
soever he doeth, these also doeth the Son likewise. 20
For the Father loveth the Son, and sheweth him all
things that himself doeth and he will shew him
greater works than these, that ye may marvel. 21 For
as the Father raiseth up the dead, and quickeneth
them ; even so the Son quickeneth whom he will.
22 For the Father judgeth no man, but hath committed
all judgment unto the Son : 23 that all men should
honour the Son, even as they honour the Father. He
that honoureth not the Son honoureth not the Father
which hath sent him. 24 Verily, verily, I say unto you,
He that heareth my word, and believeth on him that
sent me, hath everlasting life, and shall not come into
condemnation ; but is passed from death unto life.

25 Verily, verily, I say unto you, The hour is com-
ing, and now is, when the dead shall hear the voice of
the Son of God : and they that hear shall live. 26 For
as the Father hath life in himself ; so hath he given to
the Son to have life in himself ; 27 and hath given him
authority to execute judgment also, because he is the
Son of man. 28 Marvel not at this ; for the hour is
coming, in the which all that are in the graves shall hear
his voice, 29 and shall come forth ; they that have
done good, unto the resurrection of life ; and they that
have done evil, unto the resurrection of damnation.

THE WITNESS BORNE TO JESUS

30 I can of mine own self do nothing : as I hear, I
judge : and my judgment is just ; because I seek not
mine own will, but the will of the Father which hath
sent me. 31 If I bear witness of myself, my witness is
not true. 32 There is another that beareth witness of

क्योंकि वह सबत का ही उल्लंघन नहीं करते थे, परंतु परमेश्वर को अपना पिता कह कर अपने आपको परमेश्वर के तुल्य भी बनाते थे।

पिता के प्रति यीशु की अधीनता

१९ यीशु ने उनसे कहा, 'मैं तुमसे सच कहता हूं कि पुत्र स्वतंत्र
रूप से कुछ नहीं कर सकता ; जैसे पिता को करते देखता है, करता है; जैसा
पिता करता है, ठीक वैसा ही पुत्र भी करता है। २० पिता पुत्र से प्रीति
करता है, और जो कुछ करता है, वह सब उसे दिखाता है ; और इनसे भी
बड़े कार्य उसे दिखाएगा कि तुम्हें आश्चर्य हो। २१ क्योंकि जिस प्रकार
पिता मृतकों को उठाता और उन्हें जीवन देता है, उसी प्रकार पुत्र भी जिसे
चाहे जीवन देता है। २२ सच तो यह है कि पिता किसी का न्याय नहीं करता
उसने न्याय करने का सब अधिकार पुत्र को दिया है कि जैसे सब पिता
का आदर करते हैं पुत्र का भी आदर करें। २३ जो पुत्र का आदर नहीं करता
वह पिता का भी, जिसने उसे भेजा है, आदर नहीं करता। २४ मैं तुमसे सच
सच कहता हूं कि जो मेरे वचन सुनता और मेरे भेजनेवाले पर विश्वास
करता है, वह शाश्वत जीवन प्राप्त करता है ; वह दंड का भागी नहीं होता,
वरन् मृत्यु को पार कर जीवन में प्रवेश कर चुका है।

२५ 'मैं तुमसे सच-सच कहता हूं कि वह समय आ रहा है, वरन् वर्तमान
है, जब मृतक परमेश्वर-पुत्र की वाणी सुनेंगे, और जो सुनेंगे वे जीवन
प्राप्त करेंगे। २६ क्योंकि जैसे पिता स्वयं में जीवन धारण किए हुए है,
वैसे ही उसने पुत्र को भी स्वयं जीवन धारण करने का अधिकार दिया है ;
२७ और उसे मानव पुत्र होने के कारण दंड देने का अधिकार भी दिया है।
२८ इस बात पर तुम्हें चकित नहीं होना चाहिए, क्योंकि समय आ रहा है कि
सब जो कबरों में है, उसकी वाणी सुनकर २९ निकल आएंगे—सुकर्म करने
वालों का जीवन के लिए पुनरुत्थान होगा और कुकर्मियों का दंड के लिए।

यीशु के संबंध में साक्षी

३० 'मैं अपने आप कुछ नहीं कर सकता, जैसा सुनता हूं, वैसा न्याय करता
हूं ; और मेरा न्याय ठीक होता है क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं वरन् अपने
भेजने वाले की इच्छा पूरी करना चाहता हूं। ३१ यदि मैं स्वयं अपने संबंध
में साक्षी दूं तो मेरी साक्षी सत्य नहीं। ३२ एक और है जो मेरे संबंध में
साक्षी देता है, और मैं जानता हूं कि मेरे संबंध में उसकी साक्षी सत्य है।

me ; and I know that the witness which he witnesseth
of me is true. 33 Ye sent unto John, and he bare wit-
ness unto the truth. 34 But I receive not testimony
from man : but these things I say, that ye might be
saved. 35 He was a burning and a shining light : and
ye were willing for a season to rejoice in his light.
36 But I have greater witness than that of John : for
the works which the Father hath given me to finish,
the same works that I do, bear witness of me, that the
Father hath sent me. 37 And the Father himself,
which hath sent me, hath borne witness of me. Ye
have neither heard his voice at any time, nor seen his
shape. 38 And ye have not his word abiding in you :
for whom he hath sent, him ye believe not. 39 Search
the scriptures ; for in them ye think ye have eternal
life : and they are they which testify of me. 40 And
ye will not come to me, that ye might have life.

41 I receive not honour from men. 42 But I know
you, that ye have not the love of God in you. 43 I am
come in my Father's name, and ye receive me not :
if another shall come in his own name, him ye will
receive. 44 How can ye believe, which receive honour
one of another, and seek not the honour that cometh
from God only ? 45 Do not think that I will accuse
you to the Father : there is one that accuseth you,
even Moses, in whom ye trust. 46 For had ye be-
lieved Moses, ye would have believed me : for he wrote
of me. 47 But if ye believe not his writings, how
shall ye believe my words ?

THE FEEDING OF THE FIVE THOUSAND

6 After these things Jesus went over the sea of
Galilee, which is the sea of Tiberias. 2 And a great
multitude followed him, because they saw his miracles
which he did on them that were diseased. 3 And Jesus
went up into a mountain, and there he sat with his
disciples. 4 And the passover, a feast of the Jews, was
nigh. 5 When Jesus then lifted up his eyes, and saw a

३३ तुमने यूहन्ना से पुछवाया, और सत्य के संबंध में उन्होंने साक्षी दी है।
३४ यह नहीं कि मुझे मनुष्य की साक्षी की आवश्यकता है, किंतु मैं यह
इसलिए कहता हूं कि तुम्हारा उद्धार हो। ३५ यूहन्ना प्रज्वलित और प्रकाश-
मान दीपक थे। उनके प्रकाश में कुछ काल तक आनंद मना लेना तुम्हें अच्छा
लगा। ३६ परंतु जो साक्षी मुझे प्राप्त है, वह उनकी साक्षी से महान् है।
ये कार्य जो पिता ने मुझे पूर्ण करने के लिए दिए हैं—ये कार्य जो मैं कर
रहा हूं—मेरे संबंध में साक्षी हैं कि पिता ने मुझे भेजा है। ३७ पिता ने भी
—जिसने मुझे भेजा है—मेरे संबंध में साक्षी दी है। ३८ तुमने कभी उसकी
वाणी नहीं सुनी, न उसका स्वरूप देखा है और न उसका वचन तुममें रहता
है, क्योंकि जिसे उसने भेजा है, उस पर तुम विश्वास नहीं करते। ३९ शास्त्रों
का तुम अध्ययन करते हो क्योंकि तुम्हारी धारणा है कि उनमें तुम्हें शाश्वत
जीवन मिलता है और वह मेरे संबंध में साक्षी देते हैं; ४० फिर भी तुम
जीवन प्राप्त करने के लिए मेरे पास नहीं आना चाहते।

४१ 'मुझे मनुष्यों का संमान नहीं चाहिए। ४२ पर मैं तुम्हें जानता हूं
कि तुममें परमेश्वर का प्रेम नहीं है। ४३ मैं अपने पिता के नाम में आया हूं
परंतु तुम मुझे स्वीकार नहीं करते; यदि कोई अन्य अपने नाम से आए तो
उसको तुम स्वीकार करोगे। ४४ तुम्हें विश्वास कैसे हो सकता है जब कि
तुम आपस में एक दूसरे से संमान चाहते हो और उस संमान की खोज नहीं
करते जो केवल एक अद्वैत परमेश्वर से प्राप्त होता है। ४५ यह मत सोचो
कि पिता के संमुख मैं तुम पर अभियोग लगाऊंगा। तुम पर अभियोग लगाने
वाले तो मूसा हैं जिन पर तुमने आशा बांध रखी है। ४६ यदि तुम मूसा
पर विश्वास करते तो मुझ पर भी विश्वास करते क्योंकि उन्होंने मेरे संबंध
में लिखा है; ४७ परंतु यदि तुम उनके लेख पर विश्वास नहीं करते तो
मेरे कथन पर कैसे विश्वास करोगे?'

६

पांच सहस्र को भोजन कराना

१ इसके अनंतर यीशु गलील अर्थात् तिबिरियास सागर के पास चले
गए, २ और विशाल जनसमूह ने उनका अनुसरण किया, क्योंकि उसने वे चिह्न
देखे थे जो उन्होंने रोगियों पर दिखाए थे। ३ यीशु पर्वत पर गए और वहां
शिष्यों के साथ बैठ गए। ४ यहूदियों के फसह का पर्व निकट था। ५ यीशु

great company come unto him, he saith unto Philip,
Whence shall we buy bread, that these may eat ? 6 And
this he said to prove him : for he himself knew what he
would do. 7 Philip answered him, Two hundred penny-
worth of bread is not sufficient for them, that every one
of them many take a little. 8 One of his disciples,
Andrew, Simon Peter's brother, saith unto him, 9
There is a lad here, which hath five barley loaves, and
two small fishes : but what are they among so many ?
10 And Jesus said, Make the men sit down. Now there
was much grass in the place. So the men sat down, in
number about five thousand. 11 And Jesus took the
loaves ; and when he had given thanks, he distributed
to the disciples, and the disciples to them that were set
down ; and likewise of the fishes as much as they would.
12 When they were filled, he said unto his disciples,
Gather up the fragments that remain, that nothing be
lost. 13 Therefore they gathered them together, and
filled twelve baskets with the fragments of the five
barley loaves, which remained over and above unto them
that had eaten. 14 Then those men, when they had
seen the miracle that Jesus did, said, This is of a truth
that prophet that should come into the world. 15 When
Jesus therefore perceived that they would come and
take him by force, to make him a king, he departed
again into a mountain himself alone.

JESUS WALKS ON THE WATER

16 And when even was now come, his disciples went
down unto the sea, 17 and entered into a ship, and
went over the sea toward Capernaum. And it was now
dark, and Jesus was not come to them. 18 And the sea
arose by reason of a great wind that blew. 19 So when
they had rowed about five and twenty or thirty furlongs,
they see Jesus walking on the sea, and drawing nigh
unto the ship : and they were afraid. 20 But he saith
unto them, It is I ; be not afraid. 21 Then they willingly
received him into the ship : and immediately the ship
was at the land whither they went.

ने आंखें उठाइं और एक विशाल जनसमूह को अपनी ओर आते देख कर फिलिप्पुस से बोले, 'हम इनको खिलाने के लिए कहां से भोजन मोल लाएं ?' ६ उन्होंने यह उनकी परीक्षा करने के लिये कहा, क्योंकि वह जानते थे कि क्या करने को थे। ७ फिलिप्पुस ने उन्हें उत्तर दिया, 'दो सौ दीनार की रोटियां भी उनके लिए पर्याप्त न होंगी कि प्रत्येक को थोड़ी थोड़ी मिल जाए।' ८ शमौन पतरस के भाई अन्द्रियास, जो उनके शिष्य थे, बोले, ९ 'यहां एक बालक है जिसके पास जौ की पांच रोटियां और दो मछलियां हैं ; पर इनसे इतनों के लिए क्या होता है !' १० यीशु ने कहा, 'लोगों को बैठाओ।' उस स्थान पर बहुत घास थी। अतः पुरुष जिनकी संख्या लगभग पांच सहस्र थी, बैठ गए। ११ तब यीशु ने रोटियां लीं और धन्यवाद देकर बैठे हुओं में वितरित कीं और इसी प्रकार, यथेष्ट मछलियां भी। १२ जब लोग तृप्त हो गए तो उन्होंने अपने शिष्यों से कहा, 'बचे हुए टुकड़ों को एकत्रित करो कि कुछ भी व्यर्थ न जाए।' १३ उन्होंने एकत्रित किए, और जौ की पांच रोटियों के टुकड़ों से, जो भोजन करनेवालों से बचे थे, बारह टोकरियां भरीं। १४ तब लोग उनके द्वारा प्रदर्शित चिह्न को देखकर कहने लगे, 'यह वास्तव में वह नबी है जो संसार में आनेवाले हैं।' १५ यीशु यह जानकर कि लोग उन्हें राजा बनाने के लिए आकर पकड़ना चाहते हैं, फिर पर्वत पर एकान्त में चले गए।

सागर पर चलना

१६ जब संध्या हुई तो उनके शिष्य सागर तट पर आए १७ और नौका पर चढ़कर सागर की दूसरी ओर कफरनहूम को जाने लगे। अंधेरा हो चुका था और यीशु अभी तक उनके पास नहीं आए थे। १८ उधर आंधी चलने लगी और सागर में लहरें उठने लगीं। १९ जब वे एक-दो *कोस खे चुके तो उन्होंने यीशु को सागर पर चलते और नौका के समीप आते देखा। वे डर गए। २० उन्होंने कहा, 'मैं हूं, डरो मत।' २१ तब वे उन्हें नौका में लेने को उद्यत हुए, और नौका तुरंत उस स्थल पर आ लगी जहां वे जा रहे थे।

*मूल में, 'स्तादियन' जो ६०६ फट का होता था।

THE PEOPLE DESIRE A SIGN

22 The day following, when the people which stood
on the other side of the sea saw that there was none
other boat there, save that one whereinto his disciples
were entered, and that Jesus went not with his disciples
into the boat, but that his disciples were gone away
alone ; 23 (howbeit there came other boats from Tiberias
nigh unto the place where they did eat bread, after
that the Lord had given thanks :) 24 when the people
therefore saw that Jesus was not there, neither his
disciples, they also took shipping, and came to Caper-
naum, seeking for Jesus.

THE BREAD OF LIFE

25 And when they had found him on the other side
of the sea, they said unto him, Rabbi, when camest thou
hither ? 26 Jesus answered them and said, Verily, verily,
I say unto you, Ye seek me, not because ye saw the
miracles, but because ye did eat of the loaves, and were
filled. 27 Labour not for the meat which perisheth,
but for that meat which endureth unto everlasting life,
which the Son of man shall give unto you : for him
hath God the Father sealed. 28 Then said they unto
him, What shall we do, that we might work the works
of God ? 29 Jesus answered and said unto them, This
is the work of God, that ye believe on him whom he
hath sent. 30 They said therefore unto him, What
sign shewest thou then, that we may see, and believe
thee ? what dost thou work ? 31 Our fathers did eat
manna in the desert ; as it is written, He gave them
bread from heaven to eat. 32 Then Jesus said unto
them, Verily, verily, I say unto you, Moses gave you
not that bread from heaven ; but my Father giveth
you the true bread from heaven. 33 For the bread
of God is he which cometh down from heaven, and
giveth life unto the world. 34 Then said they unto
him, Lord, evermore give us this bread. 35 And Jesus
said unto them, I am the bread of life : he that cometh
to me shall never hunger ; and he that believeth on

चिह्न की मांग

२२ दूसरे दिन सागर पार खड़े हुए जनसमूह ने देखा कि यहां तो एक
को छोड़कर कोई दूसरी नौका नहीं थी, और यीशु अपने शिष्यों के साथ
नौका पर नहीं चढ़े थे, केवल उनके शिष्य ही विदा हुए थे। २३ अब तिबि-
रियास से अन्य नौकाएं उस स्थान के समीप आ गई, जहां उन्होंने प्रभु के
धन्यवाद देने के पश्चात् भोजन किया था। २४ जब जनसमूह ने देखा कि न
तो यीशु वहां हैं और न उनके शिष्य, तो वे नौकाओं पर चढ़कर यीशु की
खोज में कफरनहूम गए।

जीवन की रोटी

२५ जनसमूह ने सागर की दूसरी ओर उनको पाकर पूछा 'रब्बी, आप
यहां कब से हैं?' २६ यीशु ने उत्तर दिया, 'मैं सच कहता हूं कि तुम मुझे
इसलिए नहीं खोज रहे कि तुमने चिह्न देखे, वरन् इसलिए कि तुम
रोटियां खाकर तृप्त हुए। २७ नाशवान् भोजन के लिए श्रम न करो, वरन्
उस भोजन के लिए जो शाश्वत जीवन तक रहता है, जिसे मानव-पुत्र तुम्हें
देगा, क्योंकि पिता परमेश्वर ने उस पर अपनी छाप लगाई है।' २८ लोगोंने
पूछा, 'परमेश्वर के कार्य करने के लिए हम क्या करें?' २९ यीशु ने उत्तर
दिया, परमेश्वर का कार्य यह है कि जिसे उसने भेजा है, उस पर विश्वास
करो।' ३० तब उन्होंने कहा, 'तो आप कौन सा चिह्न दिखाते हैं? ३१ हमारे
पूर्वजों ने तो मरुभूमि में मन्ना खाया; जैसा कि शास्त्र में लिखा है, "उसने
उनके खाने के लिए स्वर्ग से रोटी दी"।' ३२ यीशु ने उत्तर दिया, 'मैं तुम
से सच सच कहता हूं कि मूसा ने तुम्हें स्वर्ग से रोटी नहीं दी; मेरा पिता
स्वर्ग से सच्ची रोटी तुमको दे रहा है। ३३ परमेश्वर की रोटी वह है जो स्वर्ग
से उतर कर संसार को जीवन देती है।' ३४ उन्होंने कहा, 'हे प्रभु, हमको
यह रोटी सदैव दीजिए।' ३५ यीशु ने कहा, 'जीवन की रोटी मैं हूं; जो मेरे
पास आता है वह कभी भूखा न होगा, और जो मुझ पर विश्वास करता है

me shall never thirst. 36 But I said unto you, That
ye also have seen me, and believe not. 37 All that
the Father giveth me shall come to me ; and him that
cometh to me I will in no wise cast out. 38 For I came
down from heaven, not to do mine own will, but the
will of him that sent me. 39 And this is the Father's
will which hath sent me, that of all which he hath
given me I should lose nothing, but should raise it up
again at the last day. 40 And this is the will of him
that sent me, that every one which seeth the Son, and
believeth on him, may have everlasting life : and I will
raise him up at the last day.

41 The Jews then murmured at him, because he said,
I am the bread which came down from heaven. 42 And
they said, Is not this Jesus, the son of Joseph, whose
father and mother we know ? how is it then that he
saith, I came down from heaven ? 43 Jesus therefore
answered and said unto them, Murmur not among
yourselves. 44 No man can come to me, except the
Father which hath sent me draw him : and I will raise
him up at the last day. 45 It is written in the prophets,
And they shall be all taught of God. Every man
therefore that hath heard, and hath learned of the
Father, cometh unto me. 46 Not that any man hath
seen the Father, save he which is of God, he hath seen
the Father. 47 Verily, verily, I say unto you, He that
believeth on me hath everlasting life. 48 I am that
bread of life. 49 Your fathers did eat manna in the
wilderness, and are dead. 50 This is the bread which
cometh down from heaven, that a man may eat thereof,
and not die. 51 I am the living bread which came down
from heaven : if any man eat of this bread, he shall live
for ever : and the bread that I will give is my flesh,
which I will give for the life of the world.

52 The Jews therefore strove among themselves,
saying, How can this man give us his flesh to eat ?
53 Then Jesus said unto them, Verily, verily, I say unto
you, Except ye eat the flesh of the Son of man, and
drink his blood, ye have no life in you. 54 Whoso

वह कभी प्यास न होगा। ३६ पर मैं तुम से कह चुका हूं कि तुमने मुझे देख
लिया है फिर भी मुझ पर विश्वास नहीं करते। ३७ जो मेरा पिता मुझे देता
है, वह सब मेरे पास आएगा; और जो कोई मेरे पास आएगा, उसको मैं
कभी बाहर नहीं निकालूंगा। ३८ क्योंकि मैं अपनी नहीं वरन् अपने भेजने
वाले की इच्छा पूर्ण करने स्वर्ग से उतरा हूं; ३९ और मेरे भेजनेवाले की
इच्छा यह है कि जो उसने मुझे दिया है उस सब में से कुछ भी न खोऊं
वरन् अंतिम दिन उसे उठाऊं। ४० मेरे पिता की इच्छा यह है कि जो
पुत्र को देखे और उस पर विश्वास करे, वह शाश्वत जीवन पाए; और अंतिम
दिन मैं उसे पुनः जीवत उठाऊंगा।'

४१ उन्होंने कहा था, 'स्वर्ग से उतरी हुई रोटी मैं ही हूं,' इसलिए यहूदी
आपस में बुड़बुड़ाने लगे। ४२ वे बोले, 'क्या यह यूसुफ का पुत्र यीशु नहीं
है, जिसके माता-पिता को हम जानते हैं? तो यह कैसे कहता है कि मैं
स्वर्ग से उत्तर आया हूं।' ४३ यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, 'आपस में मत
बुड़बुड़ाओ। ४४ जब तक पिता, जिसने मुझे भेजा है, आकर्षित न करें,
कोई मेरे पास नहीं आ सकता; और मैं उसे अंतिम दिन फिर उठाऊंगा।
४५ नबियों की पुस्तकों में लिखा है: "वे सब परमेश्वर के द्वारा शिक्षित
होंगे।" जिस किसी ने पिता से सुना और सीखा है वह मेरे पास आता है।
४६ यह नहीं कि किसी ने पिता को देखा है; केवल उसी ने, जो परमेश्वर
की ओर से है, पिता को देखा है। ४७ मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि जो
विश्वास करता है, उसे जीवन शाश्वत प्राप्त है। ४८ जीवन की रोटी मैं हूं।
४९ तुम्हारे पूर्वजों ने मरुभूमि में मन्ना खाया और मर गए। ५० यह रोटी
वह है जो स्वर्ग से उतरी है, जो इसमें से खाए वह मरने का नहीं। ५१ स्वर्ग
से उतरी हुई जीवित रोटी मैं हूं: यदि कोई इस रोटी में से खाएगा वह सदैव
जीवित रहेगा। और जो रोटी संसार के जीवन के लिए मैं दूंगा, वह मेरी
देह है।

५२ इस पर यहूदी आपस में वाद-विवाद करने लगे, 'वह हमें खाने के
लिए अपनी देह कैसे दे सकते हैं?' ५३ यीशु ने कहा, मैं तुमसे सच सच
कहता हूं, कि जब तक तुम मानव-पुत्र की देह न खाओ और उसका रक्त न
पीओ तुम में जीवन नहीं। ५४ जो मेरी देह खाता और मेरा रक्त पीता है,

eateth my flesh, and drinketh my blood, hath eternal life;
and I will raise him up at the last day. 55 For my flesh
is meat indeed, and my blood is drink indeed. 56 He
that eateth my flesh and drinketh my blood, dwelleth in
me, and I in him. 57 As the living Father hath sent me,
and I live by the Father : so he that eateth me, even
he shall live by me. 58 This is that bread which came
down from heaven : not as your fathers did eat manna,
and are dead ; he that eateth of this bread shall live
for ever.

DOUBTING DISCIPLES

59 These things said he in the synagogue, as he
taught in Capernaum.

60 Many therefore of his disciples, when they had
heard this, said, This is an hard saying ; who can hear
it ? 61 When Jesus knew in himself that his disciples
murmured at it, he said unto them, Doth this offend
you ? 62 What and if ye shall see the Son of man
ascend up where he was before ? 63 It is the spirit
that quickeneth ; the flesh profiteth nothing : the
words that I speak unto you, they are spirit, and they
are life. 64 But there are some of you that believe not.
For Jesus knew from the beginning who they were
that believed not, and who should betray him. 65 And
he said, Therefore said I unto you, that no man can
come unto me, except it were given unto him of my
Father.

PETER CONFESSES JESUS TO BE THE CHRIST

66 From that time many of his disciples went back,
and walked no more with him. 67 Then said Jesus
unto the twelve, Will ye also go away ? 68 Then Simon
Peter answered him, Lord, to whom shall we go ? thou
hast the words of eternal life. 69 And we believe and
are sure that thou art that Christ, the Son of the
living God. 70 Jesus answered them, Have not I chosen
you twelve, and one of you is a devil ? 71 He spake
of Judas Iscariot the son of Simon : for he it was that
should betray him, being one of the twelve.

शाश्वत जीवन उसका है ; मैं अंतिम दिन उसे उठाऊंगा। ५५ मेरी देह
सच्चा भोजन है और मेरा रक्त सच्चा पेय है। ५६ जो मेरी देह खाता और
रक्त पीता है वह मुझमें रहता है और मैं उसमें। ५७ जैसे जीवित पिता ने
मुझे भेजा और मैं पिता के कारण जीवित हूं, इसी प्रकार जो मुझे खाता है
वह मेरे कारण जीवित रहेगा। ५८ स्वर्ग से उतरी हुई यह रोटी ऐसी नहीं
जैसी पूर्वजों ने खाई और मर गए : जो यह रोटी खाएगा वह सदैव जीवित
रहेगा।'

अल्प विश्वासी शिष्य

५९ उन्होंने शिक्षा देते हुए कफरनहूम के सभागृह में यह कहा।
६० यह सुनकर उनके बहुत से शिष्य बोले, 'ये वचन कठोर हैं। इनको
कौन सुन सकता है?' ६१ यीशु ने मन में जाना कि मेरे शिष्य मेरे संबंध
में बुड़बुड़ा रहे हैं और कहा, 'क्या इतने से ही तुम्हारा पतन होता है!
६२ और यदि तुम मानव-पुत्र को, जहां वह पहले था, वहां आरोहण करते
देखो तो क्या होगा! ६३ आत्मा जीवन-दाता है, शरीर से कुछ लाभ नहीं;
जो वचन मैंने तुमसे कहे हैं, वे आत्मा और जीवन हैं। ६४ फिर भी तुम में
से अनेक हैं जिनको विश्वास नहीं।' क्योंकि यीशु को आरंभ से पता था कि वे
कौन हैं जो उनपर विश्वास नहीं करते, और वह कौन है जो उनको पकड़वायेगा।
६५ और वह बोले, 'इसी कारण मैंने तुमसे कहा था कि जब तक पिता वरदान
न दे कोई मेरे समीप नहीं आ सकता।'

पतरस का यीशु को खिस्त स्वीकार करना

६६ इसके पश्चात् उनके बहुत से शिष्य पीछे हट गए और फिर
उनका साथ नहीं दिया। ६७ तब यीशु ने बारह से कहा, 'क्या तुम तो मुझे
नहीं छोड़ना चाहते!' ६८ शमौन पतरस ने उत्तर दिया, 'प्रभु, हम किसके
पास जाएं? आपके पास शाश्वत जीवन के वचन हैं। ६९ हमने विश्वास किया
है और हम जान चुके हैं कि आप परमेश्वर के पवित्र व्यक्ति हैं'* ७० यीशु
ने कहा, 'क्या मैंने तुमको नहीं चुना है?' फिर भी तुममें से एक इबलीस
है।' ७१ यह उन्होंने शमौन इस्करियोती के पुत्र यहूदा के संबंध में कहा
था, जो बारह में एक था, क्योंकि वह उन्हें पकड़वाने को था।

*पाठांतर : आप जीवंत परमेश्वर के पुत्र खिस्त हैं

JESUS AND HIS BROTHERS

7 After these things Jesus walked in Galilee : for he
would not walk in Jewry, because the Jews sought
to kill him. 2 Now the Jews' feast of tabernacles was
at hand. 3 His brethren therefore said unto him,
Depart hence, and go into Judæa, that thy disciples also
may see the works that thou doest. 4 For there is no
man that doeth any thing in secret, and he himself
seeketh to be known openly. If thou do these things,
shew thyself to the world. 5 For neither did his breth-
ren believe in him. 6 Then Jesus said unto them, My
time is not yet come : but your time is alway ready.
7 The world cannot hate you ; but me it hateth, be-
cause I testify of it, that the works thereof are evil.
8 Go ye up unto this feast : I go not up yet unto this
feast ; for my time is not yet full come. 9 When he
had said these words unto them, he abode still in Galilee.

10 But when his brethren were gone up, then went
he also up unto the feast, not openly, but as it were in
secret. 11 Then the Jews sought him at the feast, and
said, Where is he ? 12 And there was much murmur-
ing among the people concerning him : for some said,
He is a good man : others said, Nay ; but he deceiveth
the people. 13 Howbeit no man spake openly of him
for fear of the Jews.

JESUS TEACHES THAT HE HAS COME FROM GOD

14 Now about the midst of the feast Jesus went up
into the temple, and taught. 15 And the Jews mar-
velled, saying, How knoweth this man letters, having
never learned ? 16 Jesus answered them, and said, My
doctrine is not mine, but his that sent me. 17 If any
man will do his will, he shall know of the doctrine,
whether it be of God, or whether I speak of myself.
18 He that speaketh of himself seeketh his own glory :
but he that seeketh his glory that sent him, the same
is true, and no unrighteousness is in him. 19 Did not
Moses give you the law, and yet none of you keepeth

७

यीशु और उनके भाई

१ इसके अनंतर यीशु गलील में भ्रमण करने लगे। वह यहूदिया में
भ्रमण करना नहीं चाहते थे, क्योंकि यहूदी उन्हें मार डालने के उपाय सोच
रहे थे। २ यहूदियों का मंडप-पर्व निकट था; ३ अतः उनके भाइयों ने
यीशु से कहा, 'यहां से निकलकर यहूदिया चले जाइए कि जो कार्य आप
करते हैं उन्हें आपके शिष्य देखें, ४ क्योंकि ऐसा कोई नहीं जो प्रसिद्ध होना
चाहे और गुप्त रह कर कार्य करे। यदि आप ऐसे कार्य करते हैं तो अपने
आपको संसार के समक्ष प्रकट कीजिए।' ५ कारण उनके भाई भी उन पर
विश्वास नहीं करते थे। ६ यीशु ने उनसे कहा, 'अभी तक मेरा समय नहीं
आया है, पर तुम्हारा समय सदा है। ७ संसार तुमसे बैर नहीं रख सकता,
परंतु मुझसे रखता है, क्योंकि मैं उसके संबंध में साक्षी देता हूं कि उसके
कार्य बुरे हैं। ८ तुम पर्व पर जाओ। मैं इस पर्व पर अभी नहीं जा रहा,
क्योंकि मेरा समय अभी पूरा नहीं हुआ।' ९ यह कहकर वह गलील में
रह गए।

१० जब उनके भाई पर्व पर चले गए तो वह भी, प्रकाश्यरूप से नहीं, गुप्तरूप
से गए। ११ पर्व पर यहूदी उनको ढूंढ़ रहे थे और कह रहे थे, 'वह कहां है?'
१२ और जनता में उनके संबंध में बड़ी चर्चा थी। कुछ कहते थे, 'वह भला
मनुष्य है;' और कुछ कहते थे, 'नहीं, वह जनता को पथभ्रष्ट करता है।' १३ तो
भी यहूदियों से भयभीत होने के कारण कोई उनके संबंध में खुल कर नहीं
बोलता था।

यीशु परमेश्वर की ओर से हैं

१४ जब पर्व आधा समाप्त हो चुका था तो यीशु मंदिर में गए और
शिक्षा देने लगे। १५ यहूदियों ने आश्चर्य चकित होकर कहा, 'इसको
शिक्षण के बिना शास्त्र का ज्ञान कहां से मिला।' १६ यीशु ने उत्तर दिया,
'मेरी शिक्षा मेरी नहीं, वरन् मेरे भेजनेवाले की है। १७ यदि कोई उसकी
इच्छा पूर्ण करने का संकल्प करे तो वह इस शिक्षा के संबंध में जान
जाएगा कि यह परमेश्वर की ओर से है, अथवा मैं अपनी ओर से बोल रहा
हूं। १८ जो अपनी ओर से बोलता है, वह अपना संमान चाहता है, पर जो
अपने भेजनेवाले का संमान चाहता है, वह सच्चा है, उसमें कोई छल नहीं।
१९ क्या मूसा ने तुम्हें व्यवस्था नहीं दी है? पर तुममें से कोई व्यवस्था पर

the law ? Why go ye about to kill me ? 20 The people
answered and said, Thou hast a devil : who goeth about
to kill thee ? 21 Jesus answered and said unto them,
I have done one work, and ye all marvel. 22 Moses
therefore gave unto you circumcision ; (not because it is
of Moses, but of the fathers ;) and ye on the sabbath
day circumcise a man. 23 If a man on the sabbath day
receive circumcision, that the law of Moses should not
be broken ; are ye angry at me, because I have made a
man every whit whole on the sabbath day ? 24 Judge
not according to the appearance, but judge righteous
judgment.

25 Then said some of them of Jerusalem, Is not
this he, whom they seek to kill ? 26 But, lo, he speaketh
boldly, and they say nothing unto him. Do the rulers
know indeed that this is the very Christ ? 27 Howbeit
we know this man whence he is : but when Christ
cometh, no man knoweth whence he is. 28 Then cried
Jesus in the temple as he taught, saying, Ye both know
me, and ye know whence I am : and I am not come of
myself, but he that sent me is true, whom ye know not.
29 But I know him : for I am from him, and he hath
sent me. 30 Then they sought to take him : but no
man laid hands on him, because his hour was not yet
come. 31 And many of the people believed on him,
and said, When Christ cometh, will he do more miracles
than these which this man hath done ?

32 The Pharisees heard that the people murmured
such things concerning him ; and the Pharisees and the
chief priests sent officers to take him. 33 Then said
Jesus unto them, Yet a little while am I with you, and
then I go unto him that sent me. 34 Ye shall seek
me, and shall not find me : and where I am, thither ye
cannot come. 35 Then said the Jews among themselves,
Whither will he go, that we shall not find him ? will
he go unto the dispersed among the Gentiles, and teach
the Gentiles ? 36 What manner of saying is this that
he said, Ye shall seek me, and shall not find me : and
where I am, thither ye cannot come ?

आचरण नहीं करता। तुम मुझे मार डालने के उपाय क्यों कर रहे हो ?'
२० जनसमूह ने उत्तर दिया, 'तुम में भूत है; तुमको कौन मार डालना
चाहता है ?' २१ यीशु ने उनको उत्तर दिया, 'मैंने एक कार्य किया है और
तुम इस पर चकित हो। २२ सुनो, निश्चय मूसा ने तुम्हारे लिए खतने का
विधान किया—यद्यपि इसका आरंभ मूसा से नहीं वरन् पूर्वजों से हुआ—
और सबत के दिन तुम मनुष्य का खतना करते हो। २३ यदि सबत के दिन
मनुष्य का खतना होता है कि मूसा का नियम न टूटे, तो तुम मुझसे रुष्ट
क्यों हो कि मैंने सबत के दिन एक मनुष्य को सर्वांग स्वस्थ कर दिया ?
२४ ऊपरी दृष्टि से निर्णय करना छोड़ो। न्यायोचित निर्णय करो।

२५ इस पर यरूशलेम के कुछ व्यक्ति कहने लगे, 'क्या यह वही नहीं
जिनको वे लोग मार डालने का प्रयत्न कर रहे हैं ? २६ परंतु देखो, यह तो यहां
खुलकर बोल रहे हैं, फिर भी कोई इनसे कुछ नहीं कहता। कहीं ऐसा
तो नहीं अधिकारियों ने सचमुच मान लिया है कि यह ख्रिस्त हैं ? २७ पर
इनको तो हम जानते हैं कि यह कहां से हैं; किंतु जब ख्रिस्त आएंगे
तो किसी को ज्ञात नहीं होगा कि वह कहां से हैं।' २८ तब यीशु ने
मंदिर में शिक्षा देते हुए ऊंचे स्वर से कहा, 'तुम मुझे जानते हो ! क्या तुम
जानते हो कि मैं कहां से आया हूं ? मैं अपनी ओर से नहीं आया; जिसने
मुझे भेजा है वह सच्चा है, और तुम उसको नहीं जानते। २९ मैं उसको
जानता हूं, क्योंकि मैं उसकी ओर से हूं और उसने मुझे भेजा है।' ३० इस
पर वे यीशु को पकड़ने का प्रयत्न करने लगे, परंतु किसी ने उन्हें हाथ
नहीं लगाया, क्योंकि उनका समय अभी नहीं आया था। ३१ तो भी जनता
में से बहुत से लोगों ने उन पर विश्वास किया। उन्होंने कहा, 'जब ख्रिस्त
आएंगे, तो क्या वह इस व्यक्ति की अपेक्षा अधिक चिह्न दिखाएंगे ?'

३२ फरीसियों ने उनके विषय में जनता को चर्चा करते सुना, और
महापुरोहितों और फरीसियों ने प्रहरियों को भेजा कि उन्हें पकड़ें। ३३ इस
पर यीशु बोले, 'थोड़ी देर के लिए मैं तुम्हारे साथ हूं, फिर मै उसके पास
जाता हूं जिसने मुझे भेजा है ! ३४ तुम मुझे ढूंढ़ोगे और न पाओगे।
जहां मैं हूं, वहां तुम नहीं आ सकते।' ३५ यहूदियों ने आपस में कहा, 'यह
कहां जाने को है कि हम इसे नहीं पायेंगे ? क्या यह यूनानियों में प्रवासी-
यहूदियों के पास जाने को है और यूनानियों को भी शिक्षा देगा ? ३६ यह
क्या बात है जो उसने कही कि "तुम मुझे ढूंढ़ोगे और न पाओगे; तथा जहां मैं
हूं, वहां तुम नहीं आ सकते।" '

THE LIVING WATER

37 In the last day, that great day of the feast, Jesus
stood and cried, saying, If any man thirst, let him
come unto me, and drink. 38 He that believeth on
me, as the scripture hath said, out of his belly shall
flow rivers of living water. 39 (But this spake he of
the Spirit, which they that believe on him should
receive : for the Holy Ghost was not yet given ; because
that Jesus was not yet glorified.) 40 Many of the peo-
ple therefore, when they heard this saying, said, Of a
truth this is the Prophet. 41 Others said, This is the
Christ. But some said, Shall Christ come out of Galilee ?
42 Hath not the scripture said, That Christ cometh of
the seed of David, and out of the town of Bethlehem,
where David was ? 43 So there was a division among
the people because of him. 44 And some of them
would have taken him ; but no man laid hands on him.

45 Then came the officers to the chief priests and
Pharisees ; and they said unto them, Why have ye not
brought him ? 46 The officers answered, Never man
spake like this man. 47 Then answered them the
Pharisees, Are ye also deceived ? 48 Have any of the
rulers or of the Pharisees believed on him ? 49 But
this people who knoweth not the law are cursed.
50 Nicodemus saith unto them, (he that came to Jesus
by night, being one of them,) 51 Doth our law judge
any man, before it hear him, and know what he doeth ?
52 They answered and said unto him, Art thou also of
Galilee ? Search, and look : for out of Galilee ariseth
no prophet. 53 And every man went unto his own
house.

THE WOMAN TAKEN IN ADULTERY

8 Jesus went unto the mount of Olives. 2 And early
in the morning he came again into the temple, and
all the people came unto him ; and he sat down, and
taught them. 3 And the scribes and Pharisees brought
unto him a woman taken in adultery ; and when they

जीवन-जल

३७ पर्व के अंतिम और प्रधान दिन यीशु ने खड़े होकर उच्च स्वर से
कहा, 'यदि कोई प्यासा है तो मेरे पास आए, और पिए। ३८ जैसे शास्त्र का
कहना है "जो मुझ पर विश्वास करे उसके अंतस् से जीवन-जल की सरिताएं
प्रवाहित होंगी।" ३९ यह उन्होंने आत्मा के संबंध में कहा, जिसे उन
पर विश्वास करने वाले पाने को थे, कारण कि आत्मा अभी तक प्रदान नहीं
किया गया था, क्योंकि यीशु अभी तक महिमान्वित नहीं हुए थे। ४० ये
बचन सुनकर जनता में से कुछ लोगों ने कहा, 'यह सचमुच नबी हैं,' ४१ दूसरे
कहने लगे 'यह ख्रिस्त हैं,' परंतु कुछने कहा, 'ख्रिस्त का आगमन गलील से
तो होगा नहीं ? ४२ क्या शास्त्र नहीं कहता कि दाऊद के वंश से और
दाऊद के ग्राम बैतलहम से ख्रिस्त का आगमन होगा ?' ४३ इस प्रकार
उनके कारण जनसमूह में मतभेद हो गया। ४४ कुछ लोग उन्हें पकड़ना
चाहते थे, पर किसी ने उन्हें हाथ न लगाया।

४५ तब मंदिर के कर्मचारी फरीसियों और महापुरोहितों के पास आए
जिन्होंने उनसे पूछा, 'उसे तुम क्यों नहीं लाए ?' ४६ कर्मचारियों ने उत्तर
दिया, 'जैसे यह मनुष्य बोलता है उस प्रकार कोई कभी नहीं बोला !'
४७ फरीसियों ने प्रत्युत्तर में कहा, 'तुम भी तो भ्रम में नहीं पड़ गए ! ४८ क्या
हमारे अधिकारियों अथवा फरीसियों में से किसी ने उस पर विश्वास किया है ?
४९ रही यह व्यवस्था से अनभिज्ञ जनता—यह शापित है।' ५० उनमें
से एक व्यक्ति, निकोदिमुस जो पहले एक बार यीशु के पास आ चुके थे,
उनसे बोले, ५१ 'क्या हमारी व्यवस्था किसी मनुष्य को, जब तक पहिले
उसकी सुन न ले और जान न ले कि वह क्या करता है, उसे दोषी ठहराती
है ?' ५२, उन्होंने उत्तर दिया, 'तुम गलील से तो नहीं हो ! शास्त्रों का
अध्ययन कर देखो कि गलील में कोई नबी उत्पन्न नहीं होता।' ५३ तब
प्रत्येक मनुष्य अपने घर चला गया।

८

व्यभिचारिणी का उद्धार

१ परंतु यीशु जैतून पर्वत को गए। २ प्रातःकाल वह फिर मंदिर में
आए तो सारी जनता उनके पास आई और वह बैठकर उसे शिक्षा देने लगे।
३ तब शास्त्री और फरीसी एक स्त्री को लाए जो व्यभिचार में पकड़ी गई

had set her in the midst, 4 they say unto him, Master,
this woman was taken in adultery, in the very act.
5 Now Moses in the law commanded us, that such
should be stoned : but what sayest thou ? 6 This
they said, tempting him, that they might have to
accuse him. But Jesus stooped down, and with his finger
wrote on the ground, as though he heard them not.
7 So when they continued asking him, he lifted up
himself, and said unto them, He that is without sin
among you, let him first cast a stone at her. 8 And
again he stooped down, and wrote on the ground.
9 And they which heard it, being convicted by their
own conscience, went out one by one, beginning at
the eldest, even unto the last : and Jesus was left alone,
and the woman standing in the midst. 10 When
Jesus had lifted up himself, and saw none but the
woman, he said unto her, Woman, where are those
thine accusers ? hath no man condemned thee ? 11 She
said, No man, Lord. And Jesus said unto her, Neither
do I condemn thee : go, and sin no more.

THE LIGHT OF THE WORLD

12 Then spake Jesus again unto them, saying, I am
the light of the world : he that followeth me shall not
walk in darkness, but shall have the light of life.
13 The Pharisees therefore said unto him, Thou bearest
record of thyself ; thy record is not true. 14 Jesus an-
swered and said unto them, Though I bear record of
myself, yet my record is true : for I know whence I
came, and whither I go ; but ye cannot tell whence
I come, and whither I go. 15 Ye judge after the flesh ;
I judge no man. 16 And yet if I judge, my judgment
is true : for I am not alone, but I and the Father that
sent me. 17 It is also written in your law, that the
testimony of two men is true. 18 I am one that bear
witness of myself, and the Father that sent me beareth
witness of me. 19 Then said they unto him, Where
is thy Father ? Jesus answered, Ye neither know me,
nor my Father : if ye had known me, ye should have

थी और उसे बीच में खड़ा करके बोले 'गुरुजी, यह स्त्री व्यभिचार कर्म में
पकड़ी गई है। ४ व्यवस्था में मूसा ने हमें आज्ञा दी है कि ऐसी स्त्रियों को
पत्थरों से प्रहार कर मार डाला जाए। ५ पर आप क्या कहते हैं ?' ६ उन्होंने
यह यीशु के परीक्षा करने के लिए कहा कि उन पर अभियोग लगा सकें।
यीशु नीचे झुककर अंगुली से भूमि पर लिखने लगे। ७ पर जब वे उनसे
पूछते ही रहे, तो उन्होंने अपना सिर उठाकर कहा, 'तुममें जो निष्पाप हो वह
पहले उस पर पत्थर फेंके', ८ और फिर नीचे झुककर भूमि पर लिखने लगे।
९ यह सुन कर वे बड़े से लेकर* एक एक करके बाहर चले गए, और
केवल यीशु और वह स्त्री, जो बीच में थी, रह गए। १० यीशु ने सिर उठा
कर उस स्त्री से पूछा, 'नारी, वे कहां हैं ? क्या किसी ने तुझे दोषी नहीं
ठहराया ?' ११ उसने कहा, 'प्रभु, किसी ने नहीं।' यीशु बोले, 'मैं भी तुझे
दोषी नहीं ठहराता। जा अब से फिर पाप न करना।'†

संसार की ज्योति

१२ फिर यीशु ने उनसे कहा, 'मैं संसार की ज्योति हूं। मेरा अनुयायी
अंधकार में विचरण नहीं करेगा, वरन् जीवन की ज्योति प्राप्त करेगा।'
१३ फरीसी बोले, 'आप अपने विषय में साक्षी देते हैं, आपकी साक्षी सत्य
नहीं।' १४ यीशु ने उत्तर दिया, 'मैं अपने विषय में आप साक्षी दे रहा हूं,
तो भी मेरी साक्षी सत्य है, क्योंकि मैं जानता हूं कि मैं कहां से आया और
कहां जा रहा हूं। किन्तु तुम नहीं जानते कि मैं कहां से आता हूं और कहां
जा रहा हूं। १५ तुम ऊपरी दृष्टि से आलोचना करते हो, परंतु मैं किसी पर
निर्णय नहीं देता। १६ परंतु यदि मैं निर्णय दूं भी तो मेरा न्याय सच्चा होगा
क्योंकि न्याय मैं अकेला नहीं करता, वरन् मैं और मेरा भेजनेवाला करता है।
१७ तुम्हारी व्यवस्था में भी लिखा है कि दो मनुष्यों की साक्षी सत्य होती है।
१८ मैं अपने विषय में साक्षी हूं और मेरा भेजनेवाला पिता भी मेरे विषय में
साक्षी है।' १९ तब उन्होंने पूछा, 'आपका पिता कहां है ?' यीशु ने
उत्तर दिया, 'तुम न तो मुझे जानते हो और न मेरे पिता को; यदि तुम मुझे

* कुछ प्रतियों के अनुसार यहां जोड़िए 'छोटों तक' अन्य के अनुसार 'सब'।
† कुछ प्राचीन प्रतियों में ७:५३ से ८:११ तक पद नहीं पाए जाते।

known my Father also. 20 These words spake Jesus in
the treasury, as he taught in the temple : and no man
laid hands on him ; for his hour was not yet come.

WARNINGS OF COMING DOOM

21 Then said Jesus again unto them, I go my way,
and ye shall seek me, and shall die in your sins :
whither I go, ye cannot come. 22 Then said the Jews,
Will he kill himself ? because he saith, Whither I go,
ye cannot come. 23 And he said unto them, Ye are
from beneath ; I am from above : ye are of this world ;
I am not of this world. 24 I said therefore unto you,
that ye shall die in your sins : for if ye believe not
that I am he, ye shall die in your sins. 25 Then said
they unto him, Who art thou ? And Jesus saith unto
them, Even the same that I said unto you from the
beginning. 26 I have many things to say and to judge
of you : but he that sent me is true ; and I speak to the
world those things which I have heard of him. 27 They
understood not that he spake to them of the Father.
28 Then said Jesus unto them, When ye have lifted up
the Son of man, then shall ye know that I am he, and
that I do nothing of myself ; but as my Father hath
taught me, I speak these things. 29 And he that sent
me is with me : the Father hath not left me alone : for
I do always those things that please him. 30 As he
spake these words, many believed on him.

CONTROVERSY WITH JEWS

31 Then said Jesus to those Jews which believed
on him, If ye continue in my word, then are ye my
disciples indeed ; 32 and ye shall know the truth, and
the truth shall make you free. 33 They answered him,
We be Abraham's seed, and were never in bondage
to any man : how sayest thou, Ye shall be made free ?
34 Jesus answered them, Verily, verily, I say unto you,
Whosoever committeth sin is the servant of sin. 35 And
the servant abideth not in the house for ever : but
the Son abideth ever. 36 If the Son therefore shall

जानते तो मेरे पिता को भी जानते।' २० ये बचन यीशु ने मंदिर में शिक्षा
देते समय कोषागार में कहे। परन्तु किसी ने उनको पकड़ा नहीं क्योंकि उनका
समय अभी नहीं आया था।

आनेवाले दंड के संबंध में चेतावनी

२१ उन्होंने फिर उनसे कहा, 'मैं जा रहा हूं, तुम मुझे ढूंढ़ोगे और अपने
पाप में मरोगे। जहां मैं जा रहा हूं वहां तुम नहीं आ सकते।' २२ तब
यहूदियों ने कहा, 'वह आत्महत्या तो नहीं कर लेंगे, क्योंकि कह रहे हैं, "जहां
मैं जा रहा हूं तुम नहीं आ सकते" !' २३ यीशु ने उनसे कहा, 'तुम नीचे के
हो और मैं ऊपर का हूं; तुम इस संसार के हो पर मैं इस संसार का नहीं।
२४ मैंने कहा था कि "तुम अपने पापों में मरोगे।" क्योंकि यदि तुम विश्वास
नहीं करते कि "मैं हूं"* तो तुम अपने पापों में मरोगे।' २५ लोगों ने पूछा,
'आप कौन हैं ?' यीशु ने उत्तर दिया, 'वही, जो मैंने आरम्भ से तुमसे कहा
है।† २६ तुम्हारे विषय में मुझे बहुत कुछ कहना और निर्णय करना है ;
परंतु मेरा भेजनेवाला सच्चा है, और जो कुछ मैंने उससे सुना है वही संसार से
कहता हूं।' २७ वे लोग नहीं समझे कि वह उनसे पिता के विषय में कह रहे हैं।
२८ तब यीशु ने कहा, "जब तुम मानव-पुत्र को ऊंचे पर चढ़ाओगे तब जानोगे
कि "मैं हूं" और अपने आप कुछ नहीं करता, परंतु जैसा पिता ने मुझे
सिखाया है, बोलता हूं। २९ जिसने मुझे भेजा है, वह मेरे साथ है; और उसने
मुझे अकेला नहीं छोड़ा, क्योंकि मैं सदा वही करता हूं जिससे वह प्रसन्न होता
है।' ३० वह जब ये बातें कह रहे थे तो बहुतों ने उन पर विश्वास किया।

यहूदियों से वादविवाद

३१ तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्होंने उन पर विश्वास किया था
कहा, 'यदि तुम मेरे बचन में रहो, तो तुम वास्तव में मेरे शिष्य हो ; ३२ तुम
सत्य को जानोगे और सत्य तुमको स्वतंत्र करेगा।' ३३ उन्होंने उत्तर दिया,
'हम अब्रहाम के वंशज हैं ; हमने कभी किसी की दासता नहीं की। आप
कैसे कहते हैं कि "तुम स्वतंत्र होगे ?" ३४ यीशु ने कहा, 'मैं तुमसे सच
सच कहता हूं, प्रत्येक पाप करनेवाला पाप का दास है। ३५ दास सदैव घर
में नहीं रहता, पर पुत्र सदा रहता है। ३६ यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करे, तो

* अथवा, 'मैं ख्रिस्त हूँ।'
† अथवा, 'मैं तुमसे क्यों बोलूं ?'

make you free, ye shall be free indeed. 37 I know that
ye are Abraham's seed ; but ye seek to kill me, because
my word hath no place in you. 38 I speak that which
I have seen with my Father : and ye do that which
ye have seen with your father. 39 They answered
and said unto him, Abraham is our father. Jesus saith
unto them, If ye were Abraham's children, ye would
do the works of Abraham. 40 But now ye seek to
kill me, a man that hath told you the truth, which
I have heard of God : this did not Abraham. 41 Ye do
the deeds of your father. Then said they to him, We
be not born of fornication ; we have one Father, even
God.

42 Jesus said unto them, If God were your Father,
ye would love me : for I proceeded forth and came
from God ; neither came I of myself, but he sent me.
43 Why do ye not understand my speech ? even because
ye cannot hear my word. 44 Ye are of your father
the devil, and the lusts of your father ye will do. He
was a murderer from the beginning, and abode not in
the truth, because there is no truth in him. When he
speaketh a lie, he speaketh of his own : for he is a liar,
and the father of it. 45 And because I tell you the
truth, ye believe me not. 46 Which of you convinceth
me of sin ? And if I say the truth, why do ye not believe
me ? 47 He that is of God heareth God's words : ye
therefore hear them not, because ye are not of God.

48 Then answered the Jews, and said unto him, Say
we not well that thou art a Samaritan, and hast a devil ?
49 Jesus answered, I have not a devil ; but I honour
my Father, and ye do dishonour me. 50 And I seek
not mine own glory : there is one that seeketh and
judgeth. 51 Verily, verily, I say unto you, If a man
keep my saying, he shall never see death. 52 Then said
the Jews unto him, Now we know that thou hast a
devil. Abraham is dead, and the prophets ; and thou
sayest, If a man keep my saying, he shall never taste
of death. 53 Art thou greater than our father Abraham,
which is dead ? and the prophets are dead : whom

वास्तव में तुम स्वतंत्र होगे। ३७ मैं जानता हूं कि तुम अब्रहाम के वंशज हो, पर तुम मुझे मार डालने के उपाय कर रहे हो, क्योंकि मेरे वचन के लिए तुम्हारे हृदय में कोई स्थान नहीं है। ३८ जो कुछ मैंने अपने पिता के यहां देखा है, वही कहता हूं; उसी प्रकार तुमने जो कुछ अपने पिता से सुना वही करते हो।' ३९ उन्होंने कहा, 'हमारे पिता अब्रहाम हैं।' यीशु ने उत्तर दिया, 'यदि तुम अब्रहाम की संतान होते तो अब्रहाम के सदृश कार्य करते। ४० परंतु तुम तो मुझे, उस मनुष्य को जिसने परमेश्वर से सुना हुआ सत्य तुम्हें बता दिया, मार डालने के प्रयत्न में हो। अब्रहाम ने ऐसा नहीं किया। ४१ तुम अपने पिता के कार्य कर रहे हो।' वे बोले; 'हम जारज-संतान नहीं, हमारा पिता एक है, अर्थात् परमेश्वर।'

४२ यीशु ने कहा, 'यदि परमेश्वर तुम्हारा पिता होता तो तुम मुझसे प्रेम करते क्योंकि मैं परमेश्वर के यहाँ से निकला और आया हूं। मैं स्वयं नहीं आया, वरन् उसने मुझे भेजा है। ४३ तो फिर तुम मेरी बात क्यों नहीं समझते? इसलिए कि तुम्हें मेरे वचन सहनीय नहीं हैं। ४४ तुम अपने पिता इबलीस से हो और अपने पिता की अभिलाषाएं पूरी करना चाहते हो। वह आरम्भ से ही हत्यारा था, और सत्य पर स्थिर नहीं, क्योंकि सत्य उसमें है ही नहीं। जब वह झूठ बोलता है तो अपने स्वभाव के अनुसार ही बोलता है, क्योंकि वह झूठा है और झूठ का पिता है। ४५ परन्तु मैं सत्य बोलता हूं, इसलिए तुम मुझ पर विश्वास नहीं करते। ४६ तुममें से कौन मुझ पर पाप का दोष लगाता है? यदि मैं सत्य कहता हूं तो तुम मुझ पर विश्वास क्यों नहीं करते? ४७ जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर के वचन सुनता है; तुम परमेश्वर के नहीं हो अतएव उसकी नहीं सुनते।'

४८ यहूदियों ने कहा, 'क्या हमारा यह कहना ठीक नहीं कि तुम सामरी हो और तुममें भूत है?' ४९ यीशु ने उत्तर दिया, 'मुझ में भूत नहीं है। मैं अपने पिता का आदर करता हूं, पर तुम मेरा अनादर कर रहे हो। ५० मैं अपना संमान नहीं चाहता; एक है जो चाहता है और वह न्याय कर्ता है। ५१ मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि यदि कोई मेरे वचन का पालन करे तो वह कभी मृत्यु न देखेगा।' ५२ यहूदी बोले, 'अब हम जान गए कि तुममें भूत है! अब्रहाम मृत्यु को प्राप्त हुए और नबी भी; और आप कहते हैं कि यदि कोई मेरे वचन का पालन करे तो वह कभी मृत्यु का स्वाद नहीं चखेगा। ५३ आप हमारे मृत पूर्वज अब्रहाम से महान् तो हैं नहीं

makest thou thyself ? 54 Jesus answered, If I honour
myself, my honour is nothing : it is my Father that
honoureth me ; of whom ye say, that he is your
God : 55 yet ye have not known him ; but I know
him : and if I should say, I know him not, I shall be
a liar like unto you : but I know him, and keep his
saying. 56 Your father Abraham rejoiced to see my
day : and he saw it, and was glad. 57 Then said the
Jews unto him, Thou art not yet fifty years old, and
hast thou seen Abraham ? 58 Jesus said unto them,
Verily, verily, I say unto you, Before Abraham was, I am.
59 Then took they up stones to cast at him : but Jesus
hid himself, and went out of the temple, going
through the midst of them, and so passed by.

JESUS CURES A MAN BORN BLIND

9 And as Jesus passed by, he saw a man which was
blind from his birth. 2 And his disciples asked him,
saying, Master, who did sin, this man, or his parents,
that he was born blind ? 3 Jesus answered, Neither hath
this man sinned, nor his parents : but that the works of
God should be made manifest in him. 4 I must work
the works of him that sent me, while it is day : the night
cometh, when no man can work. 5 As long as I am
in the world, I am the light of the world. 6 When
he had thus spoken, he spat on the ground, and made
clay of the spittle, and he anointed the eyes of the
blind man with the clay, 7 and said unto him, Go, wash
in the pool of Siloam, (which is by interpretation, Sent.)
He went his way therefore, and washed, and came
seeing. 8 The neighbours therefore, and they which
before had seen him that he was blind, said, Is not
this he that sat and begged ? 9 Some said, This is he :
others said, He is like him : but he said, I am he.
10 Therefore said they unto him, How were thine eyes
opened ? 11 He answered and said, A man that is called
Jesus made clay, and anointed mine eyes, and said unto
me, Go to the pool of Siloam, and wash : and I went

अन्य नबी भी मृत्यु को प्राप्त हुए! आप अपने को समझते क्या हैं?' ५४ यीशु
ने उत्तर दिया, 'यदि मैं स्वयं अपना संमान करूं तो वह कुछ नहीं।
मुझे संमानित करनेवाला मेरा पिता है जिसे तुम कहते हो कि वह हमारा
परमेश्वर है। ५५ तुम उसे नहीं जानते पर मैं उसे जानता हूं। यदि मैं
कहूं कि मैं उसे नहीं जानता, तो तुम्हारे समान झूठा ठहरूंगा; पर मैं उसे
जानता हूं और उसके बचन को पालन करता हूं। ५६ तुम्हारे पूर्वज
अब्राहम मेरे दिन का दर्शन कर उल्लसित हुए। उन्होंने दर्शन किया
और आनंदित हुए।' ५७ यहूदी बोले, 'अभी आप पचास वर्ष के
भी नहीं, और आप अब्राहम को देख चुके?' ५८ यीशु ने कहा, 'मैं तुमसे
सच सच कहता हूं, अब्राहम के उत्पन्न होने से पूर्व मैं हूं।' ५९ तब उन
पर फेंकने के लिए उन्होंने पत्थर उठाए, परन्तु यीशु छिपकर मंदिर से
निकल गए।

९

जन्मांध को दृष्टिदान

१ मार्ग में यीशु ने एक मनुष्य को देखा जो जन्म से अंधा था। २ उनके
शिष्यों ने उनसे पूछा, 'रब्बी, किसने पाप किया, इसने अथवा इसके माता-
पिता ने, कि यह अंधा हुआ?' ३ यीशु ने उत्तर दिया, 'न तो इसने पाप किया
और न इसके माता-पिता ने; परन्तु यह इसलिए हुआ कि परमेश्वर के कार्य
इसमें प्रकट हों। ४ दिन रहते हमें उसके कार्य करने में लगा रहना चाहिए,
जिसने मुझे भेजा है। रात आ रही है, जब कोई व्यक्ति कार्य नहीं कर
सकता। ५ जब तक मैं संसार में हूं, मैं संसार की ज्योति हूं।' ६ यह कह-
कर उन्होंने भूमि पर थूका, थूक से मिट्टी का लेप बनाया और यह लेप उसकी
आखों पर लगाकर कहा, ७ 'जाओ और शीलोह (अर्थात् "प्रेषित") के
कुण्ड में धो लो।' उसने जाकर धोया और देखता हुआ लौटा। ८ तब उसके
पड़ोसी और वे लोग जो पहले उसे भीख मांगते देखा करते थे, बोले, 'क्या यह
वही मनुष्य नहीं जो बैठा भीख मांगा करता था?' ९ कुछ ने कहा, 'वही
है।' अन्य बोले, 'नहीं, उस जैसा है।' उसने कहा, 'मैं वही हूं।' १० उन्होंने
पूछा, 'तुम्हारी आंख कैसे खुलीं?' ११ उसने उत्तर दिया, 'यीशु नामक मनुष्य
ने मिट्टी का लेप बनाकर मेरी आंखों पर लगाया और कहा, "शीलोह जाओ

and washed, and I received sight. 12 Then said they
unto him, Where is he ? He said, I know not.

13 They brought to the Pharisees him that aforetime
was blind. 14 And it was the sabbath day when Jesus
made the clay, and opened his eyes. 15 Then again
the Pharisees also asked him how he had received his
sight. He said unto them, He put clay upon mine
eyes, and I washed, and do see. 16 Therefore said
some of the Pharisees, This man is not of God, because
he keepeth not the sabbath day. Others said, How
can a man that is a sinner do such miracles ? And
there was a division among them. 17 They say unto
the blind man again, What sayest thou of him, that
he hath opened thine eyes ? He said, He is a prophet.
18 But the Jews did not believe concerning him, that
he had been blind, and received his sight, until they
called the parents of him that had received his sight.
19 And they asked them, saying, Is this your son, who
ye say was born blind ? how then doth he now see ?
20 His parents answered them and said, We know that
this is our son, and that he was born blind : 21 but by
what means he now seeth, we know not ; or who hath
opened his eyes, we know not : he is of age ; ask him : he
shall speak for himself. 22 These words spake his parents,
because they feared the Jews : for the Jews had agreed
already, that if any man did confess that he was Christ,
he should be put out of the synagogue. 23 Therefore
said his parents, He is of age : ask him.

24 Then again called they the man that was blind,
and said unto him, Give God the praise : we know
that this man is a sinner. 25 He answered and said,
Whether he be a sinner or no, I know not : one thing
I know, that, whereas I was blind, now I see. 26 Then
said they to him again, What did he to thee ? how
opened he thine eyes ? 27 He answered them, I have
told you already, and ye did not hear : wherefore would
ye hear it again ? will ye also be his disciples ? 28 Then
they reviled him, and said, Thou art his disciple ; but
we are Moses' disciples. 29 We know that God spake

और धोलो।" अस्तु, मैं गया और धोकर देखने लगा।" १२ उन्होंने उससे
पूछा, 'वह कहां है?' उसने उत्तर दिया, 'मैं नहीं जानता।'

१३ लोग उसे जो पहले अंधा था, फरीसियों के पास लाए। १४ जिस
दिन यीशु ने मिट्टी का लेप बनाकर उसकी आंखें खोली थी, वह सबत था।
१५ अतः फरीसियों ने फिर उससे पूछा कि वह कैसे देखने लगा। उसने
उनसे कहा, 'उन्होंने मिट्टी का लेप मेरी आँखों पर लगाया, मैंने उन्हें धो
डाला, और मैं देख रहा हूं।' १६ कुछ फरीसी बोले, 'यह मनुष्य परमेश्वर
की ओर से नहीं, क्योंकि यह सबत को नहीं मानता।' पर दूसरों ने कहा,
'ऐसे चिह्न एक पापी मनुष्य कैसे कर सकता है?' फलतः उनमें मतभेद हो
गया। १७ उन्होंने अंधे से फिर पूछा, 'तुम उनके विषय में क्या कहते
हो? तुम्हारी तो आंखें उन्होंने खोली!' उसने कहा, 'वह नबी है।' १८ परंतु
यहूदियों को विश्वास नहीं हुआ कि वह अन्धा था और अब देखने लगा है,
जब तक उन्होंने उस मनुष्य के—जो देखने लगा था—माता पिता को बुला
कर १९ पूछ न लिया कि क्या यह तुम्हारा पुत्र है जिसे तुम कहते हो कि अंधा
उत्पन्न हुआ था? फिर यह कैसे देख रहा है?" २० उसके माता-पिता ने
उत्तर दिया, 'हम जानते हैं कि यह हमारा पुत्र है, और यह अंधा उत्पन्न
हुआ था; २१ पर अब कैसे देख रहा है, हम नहीं जानते; और न हम यह
जानते हैं कि किसने इसकी आंखें खोली। उससे पूछिए, वह वयस्क है, वह
अपने विषय में स्वयं बताएगा।' २२ उसके माता-पिता ने यह बात इसलिए
कही कि वे यहूदियों से डरते थे, कारण यहूदियों ने एका कर लिया था कि
यदि कोई उनको ख्रिस्त स्वीकार करे तो उसका सभागृह से बहिष्कार हो।
२३ इस कारण उसके माता-पिता ने कहा था, 'वह वयस्क है, उससे पूछिए।'

२४ अतः उन्होंने उसे जो अंधा था दूसरी बार बुला भेजा और उससे
कहा, 'परमेश्वर की स्तुति करो, हम जानते हैं कि वह मनुष्य पापी है।'
२५ उसने उत्तर दिया, 'वह पापी है या नहीं, मैं नहीं जानता; एक बात
जानता हूं: मैं अंधा था और अब देख रहा हूं।' २६ उन्होंने पूछा, 'उसने
तुम्हारे साथ क्या किया? कैसे तुम्हारी आंखें खोलीं?' २७ उसने उत्तर
दिया, 'मैंने आपको बता तो दिया, पर आपने सुना ही नहीं। आप पुनः क्यों
सुनना चाहते हैं? क्या आप भी तो उनके शिष्य नहीं बनना चाहते हैं?' २८ इस
पर वे उसे अपशब्द कहकर बोले, 'तू उसका शिष्य होगा; हम तो मूसा
के शिष्य हैं। २९ हम जानते हैं कि परमेश्वर मूसा से बोले, पर हम नहीं

unto Moses : as for this fellow, we know not from
whence he is. 30 The man answered and said unto
them, Why herein is a marvellous thing, that ye know
not from whence he is, and yet he hath opened mine
eyes. 31 Now we know that God heareth not sinners :
but if any man be a worshipper of God, and doeth his
will, him he heareth. 32 Since the world began was
it not heard that any man opened the eyes of one that
was born blind. 33 If this man were not of God, he
could do nothing. 34 They answered and said unto
him, Thou wast altogether born in sins, and dost thou
teach us ? And they cast him out.

35 Jesus heard that they had cast him out ; and
when he had found him, he said unto him, Dost thou
believe on the Son of God ? 36 He answered and said,
Who is he, Lord, that I might believe on him ? 37 And
Jesus said unto him, Thou hast both seen him, and it
is he that talketh with thee. 38 And he said, Lord,
I believe. And he worshipped him. 39 And Jesus said,
For judgment I am come into this world, that they
which see not might see ; and that they which see might
be made blind. 40 And some of the Pharisees which
were with him heard these words, and said unto him,
Are we blind also ? 41 Jesus said unto them, If ye were
blind, ye should have no sin : but now ye say, We see ;
therefore your sin remaineth.

THE GOOD SHEPHERD

10 Verily, verily, I say unto you, He that entereth
not by the door into the sheepfold, but climbeth
up some other way, the same is a thief and a robber.
2 But he that entereth in by the door is the shepherd of
the sheep. 3 To him the porter openeth ; and the
sheep hear his voice : and he calleth his own sheep by
name, and leadeth them out. 4 And when he putteth
forth his own sheep, he goeth before them, and the
sheep follow him : for they know his voice. 5 And a

जानते कि यह कहां से है।' ३० उस मनुष्य ने उत्तर दिया, 'आश्चर्य है!
उन्होंने मेरी आंखें खोलीं, फिर भी आप नहीं जानते कि वह कहां से है।
३१ सब जानते हैं कि परमेश्वर पापियों की नहीं सुनते, परंतु यदि कोई
उनका उपासक हो और उनकी इच्छा के अनुसार चले तो वह उसकी सुनते
हैं। ३२ आदिकाल से अब तक यह सुनने में नहीं आया कि किसी ने जन्मांध
की आंखें खोली हों। ३३ यदि वह परमेश्वर की ओर से नहीं होते तो कुछ
भी नहीं कर पाते।' ३४ उनलोगों ने उत्तर दिया, 'तुम पूर्णतः पाप में उत्पन्न
हुए हो और हमें सिखाने चले हो!' और उसे बहिष्कृत दिया।

३५ यीशु ने सुना कि उन्होंने उसे निकाल दिया है तो उससे
मिलकर कहा; 'क्या तुम मानव-पुत्र पर विश्वास करते हो?' ३६ उसने
पूछा, 'महोदय, वह कौन है कि उस पर विश्वास करूं?' ३७ यीशु ने उससे
कहा, 'तुमने उसे देखा है, और जो तुमसे वार्तालाप कर रहा है, वही है।'
३८ उसने कहा, 'मैं विश्वास करता हूं, प्रभु,' और घुटने टेके। ३९ यीशु ने
कहा, 'मैं संसार में न्याय के निमित्त आया हूं; कि जो नहीं देखते वे
देखें, और जो देखते हैं वे अंधे हो जाएं।' ४० उनके साथ कुछ फरीसी थे।
वे यह सुनकर बोले, 'क्या हम भी अंधे हैं?' ४१ यीशु ने कहा, 'यदि तुम
अंधे होते तो पाप के भागी नहीं होते। पर तुम कहते हो 'कि तुम्हें दिखाई
पड़ता है, 'इसलिए तुम्हारा पाप बना रहता है।'

१०

उत्तम मेषपाल

१ 'मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि जो द्वार से भेड़शाला में प्रवेश नहीं
करता, किन्तु दूसरी ओर से चढ़ आता है, वह चोर और डाकू है। २ जो
द्वार से प्रवेश करता है, वह भेड़ों का मेषपाल है। ३ उसके लिए द्वारपाल
द्वार खोल देता है, भेड़ें उसका स्वर पहचानती है, वह अपनी भेड़ों को
नाम ले लेकर पुकारता है और बाहर ले आता है। ४ अपनी सब भेड़ों को
निकाल लेने पर वह उनके आगे-आगे चलता है, और भेड़ें उसके पीछे-पीछे
चलती हैं क्योंकि वे उसका स्वर पहिचानतीं हैं। ५ वे किसी अपरिचित के पीछे

stranger will they not follow, but will flee from him :
for they know not the voice of strangers. 6 This parable
spake Jesus unto them : but they understood not what
things they were which he spake unto them.

7 Then said Jesus unto them again, Verily, verily,
I say unto you, I am the door of the sheep. 8 All that
ever came before me are thieves and robbers : but the
sheep did not hear them. 9 I am the door : by me if any
man enter in, he shall be saved, and shall go in and out,
and find pasture.

10 The thief cometh not, but for to steal, and to kill,
and to destroy : I am come that they might have life,
and that they might have it more abundantly. 11 I am
the good shepherd ; the good shepherd giveth his life for
the sheep. 12 But he that is an hireling, and not the
shepherd, whose own the sheep are not, seeth the wolf
coming, and leaveth the sheep, and fleeth : and the
wolf catcheth them, and scattereth the sheep. 13 The
hireling fleeth, because he is an hireling, and careth not
for the sheep.

14 I am the good shepherd, and know my sheep, and
am known of mine. 15 As the Father knoweth me,
even so know I the Father : and I lay down my life
for the sheep. 16 And other sheep I have, which are
not of this fold : them also I must bring, and they
shall hear my voice ; and there shall be one fold, and
one shephered. 17 Therefore doth my Father love me,
because I lay down my life, that I might take it again.
18 No man taketh it from me, but I lay it down of
myself. I have power to lay it down, and I have power
to take it again. This commandment have I received
of my Father.

19 There was a division therefore again among the
Jews for these sayings. 20 And many of them said,
He hath a devil, and is mad ; why hear ye him ?
21 Others said, These are not the words of him that
hath a devil. Can a devil open the eyes of the blind ?

नहीं जाएंगी ; किन्तु उससे दूर भागेंगी क्योंकि अपरिचित मनुष्यों
का स्वर नहीं पहिचानतीं।'

६ यीशु ने यह दृष्टांत उनसे कहा, परंतु उन्होंने नहीं समझा कि वह क्या
कह रहे हैं।

७ इसलिए यीशु ने फिर कहा, 'मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि भेड़ों
का द्वार मैं हूं। ८ जो मुझसे पहले आए, वे सब चोर और डाकू हैं ; इसलिए
भेड़ों ने उनकी नहीं सुनी। ९ द्वार मैं हूं ; जो मेरे द्वारा प्रवेश करेगा वह
उद्धार पाएगा। वह भीतर-बाहर आया-जाया करेगा और चारा पायेगा।

१० 'चोर केवल चुराने, हत्या करने और नष्ट करने आता है ; मैं इसलिए
आया हूं कि वे जीवन प्राप्त करें और प्रचुरता से प्राप्त करें। ११ अच्छा
मेषपाल मैं हूं। अच्छा मेषपाल भेड़ों के लिए अपने प्राण देता है। १२ मज-
दूर जो न मेषपाल है और न भेड़ों का मालिक, भेड़िए को आते देख कर
भेड़ों को छोड़ भाग जाता है, और भेड़िया उनको पकड़ता और तितर
बितर कर देता है। १३ वह इस कारण भाग जाता है कि वह मजदूर है
और उसे भेड़ों की कोई चिंता नहीं।

१४ 'अच्छा मेषपाल मैं हूं। १५ जसे पिता मुझे जानता है और मैं पिता
को ; वैसे ही मैं अपनी भेड़ों को जानता हूं, और मेरी भेड़ें मुझे जानती हैं—
और मैं भेड़ों के लिए अपना प्राण देता हूं। १६ मेरी और भेड़े भी हैं जो
इस भेड़शाला की नहीं, मुझे उनको भी लाना है ; वे मेरी वाणी सुनेंगी,
तब एक ही समूह और एक ही मेषपाल होगा। १७ पिता इस कारण मुझसे
प्रेम करता है कि मैं अपना प्राण देता हूं कि उसे फिर ले लूं। १८ कोई
उसे मुझसे नहीं छीन रहा, वरन् मैं स्वयं दे रहा हूं। मुझे उसको देने का
अधिकार है और उसे पुनः लेने का भी अधिकार है ; यह आज्ञा मुझे अपने
पिता से मिली है।'

१९ इन वचनों के कारण यहूदियों में फिर मतभेद हो गया। २० अनेक
कहने लगे, 'उसमें भूत है, वह पागल है, उसकी क्यों सुनते हो ?'
२१ अन्य बोले, 'ये बातें भूतग्रसित की सी नहीं हैं। क्या भूत अंधों की
आंखें खोल सकता है ?'

JESUS AT THE FEAST OF DEDICATION IN JERUSALEM

22 And it was at Jerusalem the feast of the dedica-
tion, and it was winter. 23 And Jesus walked in the
temple in Solomon's porch. 24 Then came the Jews
round about him, and said unto him, How long dost
thou make us to doubt ? If thou be the Christ, tell us
plainly. 25 Jesus answered them, I told you, and ye
believed not : the works that I do in my Father's name,
they bear witness of me. 26 But ye believe not, because
ye are not of my sheep, as I said unto you. 27 My
sheep hear my voice, and I know them, and they follow
me : 28 and I give unto them eternal life ; and they
shall never perish, neither shall any man pluck them
out of my hand. 29 My Father, which gave them me,
is greater than all ; and no man is able to pluck them
out of my Father's hand. 30 I and my Father are one.

THE JEW'S HOSTILITY

31 Then the Jews took up stones again to stone him.
32 Jesus answered them, Many good works have I
shewed you from my Father ; for which of those works
do ye stone me ? 33 The Jews answered him, saying,
For a good work we stone thee not ; but for blasphemy ;
and because that thou, being a man, makest thyself God.
34 Jesus answered them, Is it not written in your law,
I said, Ye are gods ? 35 If he called them gods, unto
whom the word of God came, and the scripture cannot
be broken ; 36 say ye of him, whom the Father hath
sanctified, and sent into the world. Thou blasphemest ;
because I said, I am the Son of God ? 37 If I do not the
works of my Father, believe me not. 38 But if I do,
though ye believe not me, believe the works : that ye
may know, and believe, that the Father is in me, and I
in him. 39 Therefore they sought again to take him :

40 But he escaped out of their hand, and went away
again beyond Jordan into the place where John at first
baptized ; and there he abode. 41 And many resorted
unto him, and said, John did no miracle : but all things

प्रतिष्ठान पर्व पर यरूशलेम में

२२ शीत ऋतु थी, और यरूशलेम में प्रतिष्ठान-पर्व मनाया जा रहा था।
२३ यीशु मंदिर में सुलैमान के मंडप में टहल रहे थे। २४ यहूदी उनके
चारों ओर एकत्रित हो गए और पूछने लगे, 'आप कब तक हमें दुविधा
में डाले रहेंगे? यदि आप ख्रिस्त हैं तो हमसे स्पष्ट कह दीजिए।' २५ यीशु
ने उत्तर दिया, 'मैं तुमसे कह चुका हूं, पर तुम विश्वास करते ही नहीं।
२६ जो कार्य मैं पिता के नाम से करता हूं, वे मेरे साक्षी हैं; पर तुम विश्वास
नहीं करते क्योंकि मेरी भेड़ों में से नहीं हो। २७ मेरी भेड़ें मेरी वाणी सुनती
हैं; मैं उन्हें पहिचानता हूं, और वे मेरा अनुसरण करती हैं २८ मैं उन्हें
शाश्वत जीवन प्रदान करता हूं। वे कभी नष्ट नहीं होंगी। उन्हें मेरे
हाथ से कोई कभी छीन नहीं सकता। २९ मेरा पिता, जिसने उन्हें मुझको
दिया है, सबसे महान् है; और उनको मेरे पिता के हाथ से कोई नहीं छीन
सकता। ३० मैं और मेरे पिता एक हैं।'

यहूदियों द्वारा विरोध

३१ यहूदियों ने पुनः पत्थर उठाए कि उन पर प्रहार करें। ३२ इसपर यीशु
ने उन्हें उत्तर दिया, 'पिता की ओर से मैंने अनेक अच्छे कार्य तुम्हें दिखाए;
उनमें से किस कार्य के लिए तुम मुझ पर पत्थरों से प्रहार कर रहे हो?'
३३ यहूदियों ने कहा, 'अच्छे कार्य के लिए हम तुझ पर पत्थरों से प्रहार
नहीं करते वरन् परमेश्वर की निन्दा के लिए, 'क्योंकि तू मनुष्य होकर अपने
आपको परमेश्वर बताता है।' ३४ यीशु ने उत्तर दिया; 'क्या तुम्हारी व्यवस्था
में नहीं लिखा है, "मैंने कहा कि तुम ईश्वर हो।" ३५ यदि उसने उनको ईश्वर
कहा जिनके लिए परमेश्वर का बचन कहा गया (और शास्त्र-वचन टल नहीं
सकता), ३६ तो जिसे पिता ने पवित्र ठहरा कर संसार में भेजा, उसे तुम कैसे
कहते हो कि "तू परमेश्वर की निन्दा करता है," क्योंकि मैंने कहा कि मैं परमेश्वर
का पुत्र हूं? ३७ यदि मैं अपने पिता के कार्य नहीं कर रहा तो मुझ पर
विश्वास मत करो; ३८ परंतु यदि कर रहा हूं, तो चाहे तुम मुझ पर विश्वास
मत करो पर मेरे कार्यों पर तो विश्वास करो, जिससे तुम जान सको और समझ
सको कि पिता मुझ में हैं और मैं पिता में।' ३९ इसपर उन्होंने पुनः यीशु को
पकड़ने का प्रयत्न किया, परंतु वह उनके हाथ से निकल गए।

४० वह फिर यरदन पार उस स्थान पर चले गए, जहां यूहन्ना पहले
बपस्तिमा दिया करते थे; और वहीं रहे। ४१ बहुत लोग उनके पास आने

that John spake of this man were true. 42 And many
believed on him there.

THE RAISING OF LAZARUS TO LIFE

11 Now a certain man was sick, named Lazarus,
of Bethany, the town of Mary and her sister
Martha. 2 (It was that Mary which appointed the
Lord with ointment, and wiped his feet with her hair,
whose brother Lazarus was sick.) 3 Therefore his
sisters sent unto him, saying, Lord, behold, he whom
thou lovest is sick. 4 When Jesus heard that, he said,
This sickness is not unto death, but for the glory of God;
that the Son of God might be glorified thereby. 5 Now
Jesus loved Martha, and her sister, and Lazarus.
6 When he had heard therefore that he was sick,
he abode two days still in the same place where he was.
7 Then after that saith he to his disciples, Let us go
into Judæa again. 8 His disciples say unto him, Master,
the Jews of late sought to stone thee ; and goest thou
thither again ? 9 Jesus answered, Are there not twelve
hours in the day ? If any man walk in the day, he
stumbleth not, because he seeth the light of this world.
10 But if a man walk in the night, he stumbleth, because
there is no light in him. 11 These things said he :
and after that he saith unto them, Our friend Lazarus
sleepeth ; but I go, that I may awake him out of sleep.
12 Then said his disciples, Lord, if he sleep, he shall
do well. 13 Howbeit Jesus spake of his death : but
they thought that he had spoken of taking of rest
in sleep. 14 Then said Jesus unto them plainly, Lazarus
is dead. 15 And I am glad for your sakes that I was
not there, to the intent ye may believe ; nevertheless
let us go unto him. 16 Then said Thomas, which is
called Didymus, unto his fellow disciples, Let us also go,
that we may die with him.

17 Then when Jesus came, he found that he had
lain in the grave four days already. 18 Now Bethany

लगे। उनका कहना था 'यूहन्ना ने कोई चिह्न नहीं दिखाया, परंतु जो कुछ यूहन्ना ने इनके विषय में कहा था वह सब सत्य था।' ४२ वहां बहुतों ने उन पर विश्वास किया।

११

मृत लाजर को जीवन दान

१ लाजर नामक एक व्यक्ति रोगी था। वह मरियम और उसकी
बहिन मरथा के गांव बैतनिय्याह का था। २ यह वही मरियम थी जिसने
प्रभु पर गंधरस लगाया और उनके चरणों को अपने केशों से पोंछा था;
इसका भाई लाजर रोगी था। ३ बहिनों ने उनको संदेश भेजा, 'प्रभु,
देखिए जिससे आप प्रीति करते हैं, वह रुग्ण है।' ४ जब यीशु ने सुना तो बोले
'इस रोग का अंत मृत्यु नहीं; यह परमेश्वर की महिमा के निमित्त है कि इसके
द्वारा परमेश्वर-पुत्र महिमान्वित हो।' ५ यद्यपि वह मरथा, उसकी बहिन और
लाजर से प्रेम करते थे। ६ फिर भी जब उन्होंने सुना कि लाजर रुग्ण
है तो जहां थे वहीं दो दिन और ठहर गए। ७ इसके अनन्तर उन्होंने
अपने शिष्यों से कहा, 'आओ हम फिर यहूदिया को चलें।' ८ शिष्य बोले,
'रब्बी, कुछ समय हुआ यहूदी आप पर पत्थरों से प्रहार करना चाहते थे; इस-
पर भी आप वहीं जा रहे हैं?' ९ यीशु ने उत्तर दिया, 'क्या दिन में बारह
घंटे नहीं होते? यदि कोई दिन में चले तो ठोकर नहीं खाता, क्योंकि
वह इस संसार के प्रकाश को देखता है; १० परंतु यदि रात्रि में चले तो
ठोकर खाता है, क्योंकि उस समय प्रकाश नहीं होता।' ११ उन्होंने ये बातें
कहीं और इसके उपरांत उनसे बोले, 'हमारा मित्र लाजर सो गया है। मैं
उसे जगाने जाता हूं।' १२ शिष्यों ने कहा, 'प्रभु, यदि वह सो गया है तो
स्वस्थ हो जाएगा।' १३ यह यीशु ने उसकी मृत्यु के संबंध में कहा था,
परंतु वे समझे कि निद्रा-विश्राम के संबंध में कह रहे हैं। १४ तब यीशु ने
उनसे स्पष्ट कहा, 'लाजर मर गया है, और १५ तुम्हारे कारण मुझे प्रसन्नता
है कि मैं वहां नहीं था जिससे तुम विश्वास करो। परंतु अब आओ हम उसके
पास चलें।' १६ थोमा ने, जो दिदुमुस कहलाते हैं, अपने साथी शिष्यों से
कहा, 'आओ, हम भी इनके साथ मरने को चलें।'

१७ यीशु को वहां पहुंचने पर ज्ञात हुआ कि लाजर को कबर में रखे हुए चार
दिन हो चुके हैं। १८ बैतनिय्याह यरूशलेम के समीप लगभग पन्द्रह स्तादियन*

---

* देखिए अध्याय, ६, पर १९ पर टिप्पणी।

was nigh unto Jerusalem, about fifteen furlongs off:
19 and many of the Jews came to Martha and Mary,
to comfort them concerning their brother. 20 Then
Martha, as soon as she heard that Jesus was coming,
went and met him : but Mary sat still in the house.

21 Then said Martha unto Jesus, Lord, if thou hadst
been here, my brother had not died. 22 But I know,
that even now, whatsoever thou wilt ask of God, God
will give it thee. 23 Jesus saith unto her, Thy brother
shall rise again. 24 Martha saith unto him, I know
that he shall rise again in the resurrection at the last
day. 25 Jesus said unto her, I am the resurrection,
and the life ; he that believeth in me, though he were
dead, yet shall he live : 26 and whosoever liveth and
believeth in me shall never die. Believest thou this ?
27 She saith unto him, Yea, Lord : I believe that thou
art the Christ, the Son of God, which should come
into the world. 28 And when she had so said, she
went her way, and called Mary her sister secretly, saying,
The Master is come, and calleth for thee. 29 As soon
as she heard that, she arose quickly, and came unto him.
30 Now Jesus was not yet come into the town, but
was in that place where Martha met him. 31 The
Jews then which were with her in the house, and
comforted her, when they saw Mary, that she rose up
hastily and went out, followed her, saying, She goeth
unto the grave to weep there.

32 Then when Mary was come where Jesus was,
and saw him, she fell down at his feet, saying unto him,
Lord, if thou hadst been here, my brother had not died.
33 When Jesus therefore saw her weeping, and the
Jews also weeping which came with her, he groaned
in the spirit, and was troubled, 34 and said, Where have
ye laid him ? They said unto him, Lord, come and see.
35 Jesus wept. 36 Then said the Jews, Behold how he
loved him ! 37 And some of them said, Could not this
man, which opened the eyes of the blind, have caused
that even this man should not have died ? 38 Jesus
therefore again groaning in himself cometh to the grave.

दूर था १९ और अनेक यहूदी मरथा और मरियम के पास उनके भाई की
मृत्यु पर समवेदना प्रकट करने आए थे। २० ज्योंही मरथा ने सुना कि
यीशु आ रहे हैं, वह उनसे भेंट करने गई। किंतु मरियम घर में ही
बैठी रही।

२१ मरथा ने यीशु से कहा, 'प्रभु, यदि आप यहां होते तो मेरा भाई न
मरता, २२ और अब भी मैं जानती हूं कि आप जो कुछ परमेश्वर से मांगेंगे
परमेश्वर आपको देंगे।' २३ यीशु ने उससे कहा, 'तेरा भाई फिर उठेगा।'
२४ मरथा ने कहा, 'मैं जानती हूं कि अंतिम दिन, पुनरुत्थान के समय, वह
पुनः उठेगा।' २५ यीशु ने उससे कहा, 'पुनरुत्थान और जीवन मैं हूं ; जो
कोई मुझ पर विश्वास करता है, वह मर भी जाए तो भी जीएगा ; २६ और
जो जीवित है तथा मुझ पर विश्वास करता है, वह कभी नहीं मरेगा—क्या
तू यह विश्वास करती है ?' २७ उसने कहा, 'हां प्रभु, मेरा विश्वास है कि
आप ही ख्रिस्त अर्थात् परमेश्वर-पुत्र हैं जो संसार में आनेवाले थे।' २८ इतना
कहकर वह चली गई और अपनी बहिन मरियम को बुलाकर चुपचाप
बोली, 'गुरुजी यहीं हैं और तुझे बुलाते हैं।' २९ सुनते ही वह तत्काल
उठी और उनके पास आई। ३० यीशु अभी गांव में नहीं पहुंचे थे, परंतु
उसी स्थान पर थे जहां मरथा ने उनसे भेंट की थी। ३१ जब यहूदियों
ने, जो घर पर मरियम के साथ समवेदना प्रकट कर रहे थे, देखा कि वह
एकाएक उठी और बाहर निकली, तो वे उसके पीछे पीछे गए क्योंकि वे
समझे कि वह कबर पर रोने जा रही है।

३२ मरियम वहां आई जहां यीशु थे। उनको देखते ही वह उनके
चरणों पर गिर पड़ी और बोली, 'प्रभु यदि आप यहां होते तो मेरा भाई नहीं
मरता।' ३३ जब यीशु ने उसे और उसके साथ आए यहूदियों को रोते देखा
तो उनका हृदय द्रवित हो उठा। वह गहरी सांस ले कर बोले, 'तुमने उसको
कहां रखा है ?' उन्होंने कहा, ३४ 'प्रभु, चलिए और देखिए।' ३५ यीशु रोए।
३६ इस पर यहूदियों ने कहा, 'देखो, यह उससे कितनी प्रीति करते थे' ३७ परंतु
उनमें से कुछ बोले, 'क्या यह, जिन्होंने अंधे की आंखें खोली, इतना नहीं कर
सके कि यह मनुष्य नही मरता ?' ३८ यीशु ने फिर गहरी सांसली और कबर

It was a cave, and a stone lay upon it. 39 Jesus said,
Take ye away the stone. Martha, the sister of him that
was dead, saith unto him, Lord, by this time he stinketh :
for he hath been dead four days. 40 Jesus saith unto
her, Said I not unto thee, that, if thou wouldest believe,
thou shouldest see the glory of God ? 41 Then they
took away the stone from the place where the dead was
laid. And Jesus lifted up his eyes, and said, Father,
I thank thee that thou hast heard me. 42 And I knew
that thou hearest me always : but because of the people
which stand by I said it, that they may believe that
thou hast sent me. 43 And when he thus had spoken,
he cried with a loud voice, Lazarus, come forth. 44 And
he that was dead came forth, bound hand and foot with
graveclothes : and his face was bound about with a
napkin. Jesus saith unto them, Loose him, and let him go.
45 Then many of the Jews which came to Mary,
and had seen the things which Jesus did, believed on
him. 46 But some of them went their ways to the
Pharisees, and told them what things Jesus had done.

THE CHIEF PRIESTS PLOT THE DEATH OF JESUS

47 Then gathered the chief priests and the Pharisees
a council, and said, What do we ? for this man doeth
many miracles. 48 If we let him thus alone, all men
will believe on him : and the Romans shall come and
take away both our place and nation. 49 And one
of them, named Caiaphas, being the high priest that
same year, said unto them, Ye know nothing at
all, 50 nor consider that it is expedient for us, that
one man should die for the people, and that the whole
nation perish not. 51 And this spake he not of him-
self : but being high priest that year, he prophesied
that Jesus should die for that nation ; 52 and not for
that nation only, but that also he should gather toge-
ther in one the children of God that were scattered
abroad. 53 Then from that day forth they took counsel
together for to put him to death. 54 Jesus therefore
walked no more openly among the Jews ; but went
thence unto a country near to the wilderness, into a city

पर आए; वह एक गुफा थी जिस पर पत्थर रखा था। ३९ यीशु ने कहा, 'पत्थर
हटाओ।' मृतक की बहिन मरथा बोली, 'प्रभु, अब तो उसमें से दुर्गन्ध निकल रही
होगी क्योंकि उसे मरे चार दिन हो चुके हैं।' ४० यीशु ने उससे कहा, 'क्या
मैंने तुझसे नहीं कहा था कि यदि तू विश्वास करेगी तो परमेश्वर की महिमा
देखेगी?' अस्तु, लोगोंने पत्थर हटा दिया। ४१ अब यीशु ने आंखें ऊपर
उठाईं और कहा, 'हे पिता, मैं तुझे धन्यवाद देता हूं कि तूने मेरी सुन ली है।
४२ मैं जानता हूं कि तू सदैव मेरी सुनता है, परंतु चारों ओर खड़े जनसमूह के
कारण मैंने यह कहा कि वे विश्वास करें कि तूने मुझे भेजा है।' ४३ यह
कहकर उन्होंने ऊंचे स्वर से पुकारा, 'लाजर, बाहर निकल आ।' ४४ वह
मृतक बाहर निकल आया; उसके हाथ पैर पट्टियों से बंधे थे और उसका
मुंह अंगोछे में लिपटा था। यीशु ने उनसे कहा, 'इसे खोल दो और जाने दो।'

४५ अनेक यहूदियों ने जो मरियम के पास आए थे और उनका
यह कार्य देखा था, बहुतों ने उन पर विश्वास किया ४६ पर कितनों ने
फरीसियों के पास जाकर बताया कि यीशु ने क्या किया है।

महापुरोहितों का षड्यंत्र

४७ इस पर महापुरोहितों और फरीसियों ने परिषद् को एकत्रित कर कहा
'हम क्या कर रहे हैं? यह तो बहुत चिह्न दिखा रहा है। ४८ यदि हम
इसको यों ही छोड़ दें तो सब लोग इस पर विश्वास कर लेंगे और रूमी आकर
हमारे स्थान व जाति दोनों को नष्ट कर देंगे।' ४९ तब उनमें से एक
व्यक्ति, काइफा, ५० जो उस वर्ष महापुरोहित था, बोला, 'आप कुछ जानते
तो हैं नहीं, और न आप सोचते हैं कि आपकी भलाई इसमें है कि एक
व्यक्ति जनता के लिए मरे और समस्त जाति नष्ट न हो।' ५१ यह बात
उसने अपनी ओर से नही कहीं, परंतु उस वर्ष का महापुरोहित होने के कारण
भविष्यवाणी की कि यीशु जाति के लिए मरेंगे, ५२ और न केवल जाति के
लिए, वरन् इसलिए भी कि परमेश्वर की बिखरी हुई संतान को एकत्र कर
एक करें। ५३ अस्तु, वे लोग उस दिन से उन्हें मार डालने का परामर्श करने
लगे। ५४ इस कारण उस समय से यीशु ने यहूदियों के बीच खुले रूप में
विचरण नहीं किया; पर वहां से उस क्षेत्र को जो निर्जन प्रदेश के निकट था,
अर्थात् इफ्राईम नामक नगर को, चले गए और अपने शिष्यों सहित वहीं
रहने लगे।

called Ephraim, and there continued with his disciples.
55 And the Jews' passover was nigh at hand : and
many went out of the country up to Jerusalem before
the passover, to purify themselves. 56 Then sought they
for Jesus, and spake among themselves, as they stood in
the temple, What think ye, that he will not come to the
feast ? 57 Now both the chief priests and the Pharisees
had given a commandment, that, if any man knew where
he were, he should shew it, that they might take him.

JESUS ANOINTED BY MARY AT BETHANY

12 Then Jesus six days before the passover came to
Bethany, where Lazarus was which had been
dead, whom he raised from the dead. 2 There they
made him a supper ; and Martha served : but Lazarus
was one of them that sat at the table with him. 3 Then
took Mary a pound of ointment of spikenard, very
costly, and anointed the feet of Jesus, and wiped his
feet with her hair : and the house was filled with the
odour of the ointment. 4 Then saith one of his disci-
ples, Judas Iscariot, Simon's son, which should betray
him, 5 Why was not this ointment sold for three
hundred pence, and given to the poor ? 6 This he said,
not that he cared for the poor ; but because he was a
thief, and had the bag, and bare what was put therein.
7 Then said Jesus, Let her alone : against the day of
my burying hath she kept this. 8 For the poor always
ye have with you ; but me ye have not always.
9 Much people of the Jews therefore knew that he
was there : and they came not for Jesus' sake only, but
that they might see Lazarus also, whom he had raised
from the dead. 10 But the chief priests consulted that
they might put Lazarus also to death ; 11 because that
by reason of him many of the Jews went away, and
believed on Jesus.

THE TRIUMPHAL ENTRY OF JERUSALEM

12 On the next day much people that were come to

५५ यहूदियों का फसह समीप था, और बहुत लोग फसह से पूर्व देहात से यरूशलेम गए हुए थे कि अपने आपको शुद्ध करें। ५६ वे यीशु की खोज में थे और मंदिर में खड़े हुए आपस में कह रहे थे, 'तुम्हारा क्या विचार है ? क्या वह पर्व में नहीं आएंगे ?' ५७ उधर महापुरोहितों और फरीसियों ने आज्ञा दे रखी थी कि यदि किसी को ज्ञात हो जाए कि वह कहां है तो बताएं जिससे वे लोग उन्हें पकड़ लें।

१२

बैतनिय्याह का अभ्यंजन

१ फसह के छह दिन पूर्व यीशु बैतनिय्याह में आए, जहां लाजर था जिसे यीशु ने मृतकों में से जीवित उठाया था। २ वहां उन्हें भोज दिया गया ; मरथा सेवा कार्य कर रही थी और लाजर उनके साथ भोजन करने वालों में था। ३ तब मरियम ने जटामांसी का आधा सेर बहुमूल्य और विशुद्ध सुगंधित द्रव्य लिया, यीशु के चरणों पर डाला और अपने केशों से उनके चरण पोंछने लगी। उस द्रव्य की सुगंध से सारा घर सुगंधित हो उठा। ४ इस पर उनका एक शिष्य, यहूदा इस्किरियोती, जो उन्हें पकड़वाने को था, बोला, ५ 'यह द्रव्य तीन सौ दीनार में बेचकर दरिद्रों को क्यों नहीं दे दिया गया ?' ६ उसने यह बात इसलिए नहीं कही कि उसे दरिद्रों की चिन्ता थी, पर इसलिए कि वह चोर था और उसके पास थैली होने के कारण जो कुछ उसमें डाला जाता था चुरा लेता था। ७ यीशु ने कहा, उससे कुछ न कहो, उसे मेरे गाड़े जाने के दिन के लिए यह करने दो। ८ दरिद्र तो सदा तुम्हारे साथ हैं, परन्तु मैं तुम्हारे साथ सदा नहीं रहूंगा।'

९ यहूदियों की एक बड़ी भीड़ को ज्ञात हुआ कि यीशु वहां हैं तो लोग केवल यीशु के कारण ही नहीं, वरन् लाजर को भी देखने आए जिसे उन्होंने मृतकों में से उठाया था। १० इस पर महापुरोहितगण लाजर की भी हत्या करने का परामर्श करने लगे ११ क्योंकि उसके कारण अनेक यहूदी चले गए और यीशु पर विश्वास करने लगे।

विजयोल्लास सहित यरूशलेम में प्रवेश

१२ दूसरे दिन पर्व पर आई बड़ी भीड़ ने सुना कि यीशु यरूश-

the feast, when they heard that Jesus was coming to
Jerusalem, 13 took branches of palm trees, and went
forth to meet him, and cried,

Hosanna :
Blessed is the King of Israel
That cometh in the name of the Lord.

14 And Jesus, when he had found a young ass, sat
thereon ; as it is written,

15 Fear not, daughter of Sion :
Behold, thy King cometh, sitting on an ass's colt.

16 These things understood not his disciples at the
first : but when Jesus was glorified, then remembered
they that these things were written of him, and that
they had done these things unto him. 17 The people
therefore that was with him when he called Lazarus
out of his grave, and raised him from the dead, bare
record. 18 For this cause the people also met him, for
that they heard that he had done this miracle. 19 The
Pharisees therefore said among themselves, Perceive ye
how ye prevail nothing ? behold, the world is gone
after him.

THE REQUEST OF THE GREEKS

20 And there were certain Greeks among them that
came up to worship at the feast : 21 the same came
therefore to Philip, which was of Bethsaida of Galilee,
and desired him, saying, Sir, we would see Jesus.
22 Philip cometh and telleth Andrew : and again An-
drew and Philip tell Jesus. 23 And Jesus answered
them, saying, The hour is come, that the Son of man
should be glorified. 24 Verily, verily, I say unto you,
Except a corn of wheat fall into the ground and die, it
abideth alone : but if it die, it bringeth forth much fruit.
25 He that loveth his life shall lose it ; and he that
hateth his life in this world shall keep it unto life
eternal. 26 If any man serve me, let him follow me ; and
where I am, there shall also my servant be : if any man
serve me, him will my Father honour.

लेम आ रहे हैं। १३ लोगों ने खजूर की शाखाएं लीं और यीशु से भेंट
करने निकले। वे उच्च स्वर से कह रहे थे ;

'होशाना !
प्रभु के नाम में आनेवाले
इस्राएल के राजा की स्तुति हो।'

१४ यीशु को एक गर्दभ-शावक मिला। वह उस पर बैठ गए, जैसा शास्त्र
का लेख है —

१५ 'सिय्योन की पुत्री, भयभीत न हो।
देख, तेरा राजा
गर्दभ-शावक पर बैठा आ रहा है।'

१६ उनके शिष्य पहिले तो यह नहीं समझे, परन्तु यीशु के महिमान्वित
होने के पश्चात् उन्हें स्मरण हुआ कि यीशु के संबंध में शास्त्र में ऐसा ही लिखा
हुआ है और लोगों ने उनके साथ यही किया। १७ तब उन लोगोंनें
ने साक्षी दी, जो उस समय यीशु के साथ थे, जब कि उन्होंने लाजर को कब्र
से बाहर बुलाकर मृतकों में से जीवित उठाया था। १८ जनसमूह उनसे
इस कारण भेंट करने गया कि उसने सुना था कि उन्होंने यह चिह्न दिखाया
था। १९ इस पर फरीसियों ने एक दूसरेके कहा, 'तुम से कुछ नहीं
बन पड़ता : देखो, सारा संसार उसके पीछे हो लिया है।'

यूनानियों का निवेदन

२० जो लोग पर्व पर आराधना करने आए थे उनमें कुछ यूनानी थे।
२१ वे फिलिप्पुस के पास गए—जो गलील के बैतसैदा के थे—और उनसे निवेदन
किया, 'महोदय, हम यीशु को देखना चाहते हैं।' २२ फिलिप्पुस ने जाकर
अन्द्रियास से कहा, और अन्द्रियास और फिलिप्पुस ने जाकर यीशु से।
२३ यीशु ने उत्तर दिया, 'मानव-पुत्र के महिमान्वित होने का समय आ
पहुंचा है। २४ मै तुमसे सच सच कहता हूं कि जब तक गेहूं का दाना
भूमि में गिरकर मर न जाए अकेला रहता है, परन्तु यदि मर जाए तो बहुत
फलता है। २५ जो अपने प्राणों से प्रीति करता है वह उन्हें नष्ट करता है, पर
जो इस संसार में अपने प्राणों से बैर करता है वह उन्हें शाश्वत जीवन के लिए
सुरक्षित रखेगा। २६ यदि कोई मेरी सेवा करना चाहे तो मेरी अनुसरण
करे ; जहां मैं हूं, वहां मेरा सेवक भी होगा। यदि कोई मेरी सेवा करे तो मेरा
पिता उसका संमान करेगा।

27 Now is my soul troubled ; and what shall I say ?
Father, save me from this hour : but for this cause came
I unto this hour. 28 Father, glorify thy name. Then
came there a voice from heaven, saying, I have both
glorified it, and will glorify it again. 29 The people
therefore, that stood by, and heard it, said that it
thundered : others said, An angel spake to him. 30 Jesus
answered and said, This voice came not because of me,
but for your sakes. 31 Now is the judgment of this
world : now shall the prince of this world be cast out.
32 And I, if I be lifted up from the earth, will draw all
men unto me. 33 This he said, signifying what death
he should die. 34 The people answered him, We have
heard out of the law that Christ abideth for ever : and
how sayest thou, The Son of man must be lifted up ?
who is this Son of man ? 35 Then Jesus said unto
them, Yet a little while is the light with you. Walk
while ye have the light, lest darkness come upon you :
for he that walketh in darkness knoweth not whither
he goeth. 36 While ye have light, believe in the light,
that ye may be the children of light. These things spake
Jesus, and departed, and did hide himself from them.

UNBELIEF IN JUDAEA

37 But though he had done so many miracles before
them, yet they believed not on him : 38 That the saying
of Esaias the prophet might be fulfilled, which he spake,

Lord, who hath believed our report ?
And to whom hath the arm of the Lord been revealed ?

39 Therefore they could not believe, because that Esaias
said again,

40 He hath blinded their eyes, and hardened their heart ;
That they should not see with their eyes, nor understand with their heart,
And be converted,
And I should heal them.

२७ 'अब मेरा आत्मा व्याकुल है। मैं क्या कहूं ?' "हे पिता, इस घड़ी
से मुझे बचा!" परंतु मैं इसी कारण इस घड़ी को पहुँचा हूं। २८ हे पिता,
अपने नाम को महिमान्वित कर।' इस पर आकाशवाणी हुई, 'मैंने उसे
महिमान्वित किया है और पुनः महिमान्वित करूंगा।' २९ पास खड़े हुए
जनसमूह ने सुना और कहा, 'मेघ गरजा'। दूसरों ने कहा, 'स्वर्ग-दूत उनसे
बोला है।' ३० इस पर यीशु ने उत्तर दिया, 'यह वाणी मेरे लिए नहीं,
तुम्हारे लिए हुई है। ३१ अब इस संसार का न्याय होता है; अब इस
संसार का अधिपति निकाला जायगा। ३२ मैं, यदि पृथ्वी से ऊंचा उठाया
जाऊं तो सबको अपनी ओर आकर्षित करूंगा।' ३३ उन्होंने ऐसा यह संकेत
करनेके लिए कहा कि वह किस प्रकारकी मृत्युसे मरने को थे। ३४ जनसमूह
बोला 'हमने व्यवस्था में सुना है कि ख्रिस्त सदा सर्वदा रहते हैं फिर आप कैसे
कहते हैं कि मानय-पुत्र का ऊंचा उठाया जाना अनिवार्य है ? यह मानव-पुत्र
कौन है ?' ३५ यीशु ने उत्तर दिया, 'ज्योति थोड़ी देर और तुम्हारे बीच
में है। जब तक ज्योति है, चले चलो, ऐसा न हो कि अंधकार तुम्हें आ घेरे।
जो अंधकार में चलता है, वह नहीं जानता कि किधर जाता है ३६ जब तक
ज्योति तुम्हारे साथ है, ज्योति पर विश्वास करो कि तुम ज्योति की संतान
बनो।' ये कहकर यीशु चले गए और उनसे छिपे रहे।

यहूदियों ने विश्वास नहीं किया

३७ यद्यपि यीशु ने उनके सामने इतने चिह्न दिखाए तो भी उन्होंने
विश्वास नहीं किया ३८ कि यशायाह नबी का बचन पूरा हो;

'हे प्रभु, हमारे संवाद पर किसने विश्वास किया है ?
प्रभु का बाहुबल किस पर प्रकट हुआ है ?'

३९ वे विश्वास नहीं कर सके, क्योंकि यशायाह ने यह भी कहा है:

४० 'उसने उनकी आंखें अंधी कर दी हैं
और उनका मन जड़ किया है,
कहीं ऐसा न हो कि वे आंखों से देखें, मन में समझें,
और फिरें कि मैं उनको स्वस्थ करूं।'

41 These things said Esaias, when he saw his glory, and
spake of him.

42 Nevertheless among the chief rulers also many
believed on him ; but because of the Pharisees they did
not confess him, lest they should be put out of the
synagogue : 43 for they loved the praise of men more
than the praise of God.

SUMMARY OF JESUS' PUBLIC TEACHING

44 Jesus cried and said, He that believeth on me,
believeth not on me, but on him that sent me. 45 And
he that seeth me seeth him that sent me. 46 I am come
a light into the world, that whosoever believeth on me
should not abide in darkness. 47 And if any man hear
my words, and believe not, I judge him not : for I came
not to judge the world, but to save the world. 48 He
that rejecteth me, and receiveth not my words, hath
one that judgeth him : the word that I have spoken, the
same shall judge him in the last day. 49 For I have
not spoken of myself ; but the Father which sent me,
he gave me a commandment, what I should say, and
what I should speak. 50 And I know that his
commandment is life everlasting : whatsoever I speak
therefore, even as the Father said unto me, so I speak.

JESUS WASHES THE DISCIPLES' FEET

13 Now before the feast of the passover, when Jesus
knew that his hour was come that he should
depart out of this world unto the Father, having loved
his own which were in the world, he loved them unto
the end. 2 And supper being ended, the devil having
now put into the heart of Judas Iscariot, Simon's son,
to betray him ; 3 Jesus knowing that the Father had
given all things into his hands, and that he was come
from God, and went to God ; 4 he riseth from supper,
and laid aside his garments ; and took a towel, and girded

४१ यशायाह ने यह कहा क्योंकि उनकी महिमा देखी और उनके विषय में बोले।

४२ फिर भी अधिकारियों में से अनेक ने उन पर विश्वास किया, परंतु फरीसियों के कारण स्वीकार न किया, जिससे कहीं ऐसा न हो कि सभागृह से निकाल दिए जाएं। ४३ उन्हें परमेश्वर की संमान की अपेक्षा मनुष्यों का संमान अधिक प्रिय लगा।

सार्वजनिक शिक्षा का सारांश

४४ यीशु ने उच्च स्वर में कहा, 'जो मुझ पर विश्वास करता है, वह मुझ पर नहीं, वरन् मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है; जो मुझे देखता है, वह मेरे भेजनेवाले को देखता है। ४६ मैं संसार में ज्योतिस्वरूप होकर आया हूं कि जो कोई मुझ पर विश्वास करे, वह अंधकार में न रहे। ४७ यदि कोई मेरे वचन सुने और उनका पालन न करे तो मैं उस पर अपराध नहीं लगाता, क्योंकि मैं संसार पर अपराध लगाने नहीं, वरन् संसार का उद्धार करने आया हूं। ४८ जो मेरा तिरस्कार करता है, और मेरे वचन ग्रहण नहीं करता, उस पर अपराध लगाने वाला एक है: जो वचन मैंने कहा है, वही अंतिम दिन उसे अपराधी ठहराएगा। ४९ मैंने अपनी ओर से कुछ नहीं कहा, वरन् पिता ने, जिसने मुझे भेजा है, आज्ञा दी है कि क्या कहूं और क्या बोलूं। ५० मैं जानता हूं कि उसकी आज्ञा शाश्वत जीवन है; इसलिए जो कुछ मैं कहता हूं, उसे पिता ने जैसा मुझसे कहा है, वैसा ही कहता हूं।'

१३

प्रेरितों का पद-प्रक्षालन

१ फसह के पर्व से पूर्व यीशु ने, यह जानकर कि वह घड़ी आ पहुंची है जब उन्हें इस संसार को छोड़कर पिता के पास जाना है, अपनों से जो संसार में थे और जिन्हें वह प्रेम करते आए थे, अंतिम सीमा तक प्रेम किया।
२ इबलीस शमौन के पुत्र यहूदा इस्किरियोती के मन में विचार डाल चुका था कि उन्हें पकड़वाए; ३ तब भोजन करने समय यीशु ने यह जानकर कि पिता ने सब कुछ उनके हाथ में दे दिया है, और यह कि वह परमेश्वर से आए हैं और परमेश्वर के पास जा रहे हैं, ४ भोजन से उठकर अपने बाह्य वस्त्र

himself. 5 After that he poureth water into a bason,
and began to wash the disciples' feet, and to wipe
them with the towel wherewith he was girded.

6 Then cometh he to Simon Peter : and Peter saith
unto him, Lord, dost thou wash my feet ? 7 Jesus
answered and said unto him, What I do thou knowest
not now ; but thou shalt know hereafter. 8 Peter saith
unto him, Thou shalt never wash my feet. Jesus
answered him, If I wash thee not, thou hast no part
with me. 9 Simon Peter saith unto him, Lord, not
my feet only, but also my hands and my head. 10 Jesus
saith to him, He that is washed needeth not save to
wash his feet, but is clean every whit : and ye are clean,
but not all. 11 For he knew who should betray him ;
therefore said he, Ye are not all clean.

12 So after he had washed their feet, and had taken
his garments, and was set down again, he said unto
them, Know ye what I have done to you ? 13 Ye call
me Master and Lord : and ye say well ; for so I am.
14 If I then, your Lord and Master, have washed your
feet ; ye also ought to wash one another's feet. 15 For
I have given you an example, that ye should do as I
have done to you. 16 Verily, verily, I say unto you,
The servant is not greater than his lord ; neither he
that is sent greater than he that sent him. 17 If ye
know these things, happy are ye if ye do them. 18 I
speak not of you all : I know whom I have chosen :
but that the scripture may be fulfilled, He that eateth
bread with me hath lifted up his heel against me.
19 Now I tell you before it come, that, when it is
come to pass, ye may believe that I am he. 20 Verily,
verily, I say unto you, He that receiveth whomsoever
I send receiveth me ; and he that receiveth me recei-
veth him that sent me.

JESUS POINTS OUT THE TRAITOR

21 When Jesus had thus said, he was troubled in
spirit, and testified, and said, Verily, verily, I say unto

उतारे, और अपनी कमर में अंगोछा बांध लिया। ५ तब एक पात्र में जल
उड़ेल कर, वह अपने शिष्यों के पैर धोने और कमर में बंधे अंगोछे से पोंछने
लगे।

६ वह पतरस के समीप आए। पतरस बोले, 'हे प्रभु आप! और मेरे
पांव धोते हैं?' ७ यीशु ने उत्तर दिया, 'जो मैं कर रहा हूं उसे तुम अभी नहीं
जानते; पर पीछे समझोगे।' ८ पतरस बोले, 'आप मेरे पांव कदापि न धोने
पाएंगे।' यीशु ने उत्तर दिया, 'यदि मैं तुम्हें न धोऊं तो मेरे साथ तुम्हारा
कुछ भाग नहीं।' ९ शमौन पतरस बोले, 'तब तो प्रभु, मेरे पांव ही नहीं, वरन
हाथ और सिर भी धोइए।' १० यीशु ने कहा, 'जो स्नान कर चुका है उसे
पांव के अतिरिक्त और कुछ धोने की आवश्यकता नहीं, वह पूर्णतया शुद्ध
है। ११ तुम शुद्ध हो, परंतु सबके सब नहीं।' वह अपने पकड़वाने वाले
को जानते थे, इस कारण उन्होंने कहा, 'तुम सबके सब शुद्ध नहीं हो।'

१२ जब वह उन सबके पांव धो चुके और अपने वस्त्र पहिनकर पुनः बैठ
गए तो बोले, 'क्या तुम समझे कि मैंने तुम्हारे साथ क्या किया है? १३ तुम
मुझे "गुरु" और "प्रभु" कहते हो, और ठीक कहते हो, क्योंकि मैं हूं।
१४ अतः यदि मैंने गुरु और प्रभु होकर तुम्हारे पांव धोए तो तुमको भी एक
दूसरे के पांव धोने चाहिए। १५ मैंने तुम्हारे सामने एक आदर्श रखा है कि
जैसा मैंने किया है, वैसा ही तुम भी करो। १६ मैं तुमसे सच सच कहता हूं
कि दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं होता, और न भेजा हुआ अपने भेजनेवाले
से। १७ यदि तुम यह जानते हो और इसके अनुसार चलते तो धन्य हो।
१८ मैं तुम सबके विषय में नहीं बोल रहा; मैं जानता हूं कि किनको मैंने
चुना है, किन्तु शास्त्र-वचन पूरा होना है, "जो मेरी रोटी खाता है उसी ने मुझे
पर लात उठाई है।" १९ इसके घटित होने से पूर्व मैं तुम्हें बताए देता हूं,
जिससे जब यह हो तो विश्वास करो कि मैं हूं। २० मैं तुमसे सच सच
कहता हूं जो मेरे भेजे हुए को ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है;
और जो मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है।'

विश्वासघाती की ओर संकेत

२१ जब यीशु यह कह चुके तो आत्मा में व्याकुल हो उठे और यह साक्षी
दी, 'मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि तुममें से एक मुझे पकड़वाएगा।'

you, that one of you shall betray me. 22 Then the
disciples looked one on another, doubting of whom he
spake. 23 Now there was leaning on Jesus' bosom one
of his disciples, whom Jesus loved. 24 Simon Peter
therefore beckoned to him, that he should ask who it
should be of whom he spake. 25 He then lying on
Jesus' breast saith unto him, Lord, who is it ? 26 Jesus
answered, He it is, to whom I shall give a sop, when
I have dipped it. And when he had dipped the sop, he
gave it to Judas Iscariot, the son of Simon. 27 And
after the sop Satan entered into him. Then said Jesus
unto him, That thou doest, do quickly. 28 Now no
man at the table knew for what intent he spake this
unto him. 29 For some of them thought, because Judas
had the bag, that Jesus had said unto him, Buy those
things that we have need of against the feast ; or, that he
should give something to the poor. 30 He then having
received the sop went immediately out : and it was
night.

THE NEW COMMANDMENT OF LOVE

31 Therefore, when he was gone out, Jesus said,
Now is the Son of man glorified, and God is glorified
in him. 32 If God be glorified in him, God shall also
glorify him in himself, and shall straightway glorify
him. 33 Little children, yet a little while I am with
you. Ye shall seek me : and as I said unto the Jews,
Whither I go, ye cannot come ; so now I say to you.
34 A new conmandment I give unto you, That ye love
one another : as I have loved you, that ye also love
one another. 35 By this shall all men know that ye
are my disciples, if ye have love one to another.

PETER'S DENIAL FORETOLD

36 Simon Peter said unto him, Lord, whither goest
thou ? Jesus answered him, Whither I go, thou canst
not follow me now ; but thou shalt follow me after-
wards. 37 Peter said unto him, Lord, why cannot I
follow thee now ? I will lay down my life for thy
sake. 38 Jesus answered him, Wilt thou lay down thy

२२ इस पर शिष्य संशय में पड़ कर एक दूसरे की ओर देखने लगे कि उन्होंने
यह किस के विषय में कहा है। २३ एक शिष्य, जिसे यीशु प्रेम करते थे,
यीशु के वक्षस्थल के समीप झुका हुआ बैठा था। २४ शमौन पतरस ने
संकेत करके उससे कहा, 'बताओ तो यह किस के विषय में कह रहे हैं।'
२५ उसने वैसे ही यीशु के वक्षस्थल पर झुक कर पूछा, 'प्रभु, वह कौन है?'
२६ यीशु ने उत्तर दिया, 'जिसे मैं ग्रास डुबाकर दूंगा, वही है'; और उन्होंने
ग्रास डुबोया और लेकर शमौन के पुत्र यहूदा इस्करियोती को दिया।
२७ ग्रास लेते ही शैतान उसमें समा गया। तब यीशु उससे बोले, 'जो कुछ
तुझे करना है, शीघ्र कर।' २८ भोजन करनेवालों में से किसी ने न जाना
कि उन्होंने किस अभिप्राय से यह कहा। २९ कुछ ने समझा कि यहूदा के
पास थैली रहती थी इसलिए यीशु कह रहे हैं कि जो कुछ हमें पर्व के लिए
चाहिए मोल ले, अथवा, दरिद्रों को कुछ दें। ३० वह ग्रास को लेकर तत्काल
बाहर चला गया; और रात्रि थी।

नवीन आज्ञा

३१ जब वह बाहर चला गया तो यीशु बोले, 'अब मानव-पुत्र महिमा-
न्वित हुआ है और उसमें परमेश्वर महिमान्वित हुआ है; ३२ यदि उसमें
परमेश्वर महिमान्वित हुआ है तो परमेश्वर भी अपने में उसे महिमान्वित
करेगा और शीघ्र महिमान्वित करेगा। ३३ बालको, थोड़ी देर के लिए मैं
तुम्हारे साथ हूं; तुम मुझे ढूंढ़ोगे, और जैसे मैंने यहूदियों से कहा वैसे ही
तुमसे कहता हूं, "जहां मैं जा रहा हूं वहां तुम नहीं आ सकते।" ३४ मैं
तुम्हें एक नवीन आज्ञा देता हूं; एक दूसरे से प्रेम करो—जैसे मैंने तुमसे
प्रेम किया है वैसा ही तुम एक दूसरे से प्रेम करो। ३५ यदि तुम एक दूसरे
से प्रेम रखोगे तो इसी से सब लोग जानेंगे कि तुम मेरे शिष्य हो।"

पतरस का भावी अस्वीकरण

३६ शमौन पतरस ने उनसे पूछा, 'प्रभु, आप कहां जा रहे? यीशु ने
उत्तर दिया, 'जहां मैं जाता हूं वहां अभी तुम मेरा अनुसरण नहीं कर सकते
पर आगे अनुसरण करोगे। ३७ पतरस ने कहा, 'प्रभु, अभी मैं आपका अनु-
सरण क्यों नहीं कर सकता? मैं आपके लिए अपने प्राण तक दे दूंगा।'
३८ यीशुने उत्तर दिया, 'क्या तुम मेरे लिए अपने प्राण दोगे! मैं तुमसे सच
कहता हूं: मुरगे के बांग देने के पहले तुम तीन बार मुझे अस्वीकार करोगे।'

life for my sake? Verily, verily, I say unto thee, The
cock shall not crow, till thou hast denied me thrice.

THE LAST DISCOURSE

14 Let not your heart be troubled: ye believe in
God, believe also in me. 2 In my Father's house
are many mansions: if it were not so, I would have
told you. I go to prepare a place for you. 3 And if
I go and prepare a place for you, I will come again,
and receive you unto myself; that where I am, there
ye may be also. 4 And whither I go ye know, and
the way ye know.

5 Thomas saith unto him, Lord, we know not
whither thou goest; and how can we know the way?
6 Jesus saith unto him, I am the way, the truth, and
the life: no man cometh unto the Father, but by me.
7 If ye had known me, ye should have known my
Father also: and from henceforth ye know him, and
have seen him. 8 Philip saith unto him, Lord, shew
us the Father, and it sufficeth us. 9 Jesus saith unto
him, Have I been so long time with you, and yet hast
thou not known me, Philip? he that hath seen me hath
seen the Father; and how sayest thou then, Shew us
the Father? 10 Believest thou not that I am in the
Father, and the Father in me? the words that I speak
unto you I speak not of myself: but the Father that
dwelleth in me, he doeth the works. 11 Believe me
that I am in the Father, and the Father in me: or
else believe me for the very works' sake. 12 Verily,
verily, I say unto you, He that believeth on me, the
works that I do shall he do also; and greater works
than these shall he do; because I go unto my Father.
13 And whatsoever ye shall ask in my name, that will
I do, that the Father may be glorified in the Son.
14 If ye shall ask any thing in my name, I will do it.

THE PROMISE OF THE SPIRIT

15 If ye love me, keep my commandments. 16 And
I will pray the Father, and he shall give you another

१४

अन्तिम वार्त्ता का आरम्भ

१ 'तुम्हारा मन व्याकुल न हो, परमेश्वर पर विश्वास रखो* और मुझ पर
भी विश्वास रखो। २ मेरे पिता के घर में बहुत निवासस्थान हैं ; यदि न होते
तो मैं तुमसे कह देता ; क्योंकि मैं तुम्हारे लिए एक स्थान तैयार करने जा रहा
हूं।† ३ और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए स्थान तैयार करूं तो पुनः आऊंगा,
और तुमको अपने समीप ग्रहण करूंगा, जिससे जहां मैं हूं वहां तुम भी रहो।
४ तुम जानते हो कि मैं कहां जा रहा हूं, और वह मार्ग भी जानते हो।'

५ थोमा उनसे बोले, 'हे प्रभु, हम नहीं जानते कि आप कहां जा रहे हैं;
तो फिर मार्ग कैसे जानें ?' ६ यीशु ने कहा, 'मार्ग, सत्य और जीवन मैं हूं।
मेरे बिना कोई पिता के पास नहीं आता। ७ यदि तुम मुझे जानते तो
मेरे पिता को भी जानते। अबसे तुम उसे जानते हो और तुमने उसका
दर्शन किया है।' ८ फिलिप्पुस ने कहा, 'प्रभु, हमें पिता के दर्शन कराइए,
यह हमारे लिए पर्याप्त होगा।' ९ यीशु ने कहा, 'फिलिप्पुस ! मैं इतने
समय तुम्हारे साथ रहा, तो भी तुमने मुझको न जाना ? जिसने मुझे देखा,
उसने पिता को देख लिया। फिर तुम कैसे कहते हो "हमें पिता के दर्शन
कराइए"। १० क्या तुम विश्वास नहीं करते कि मैं पिता में हूं और
पिता मुझ में ? जो वचन मैं तुमसे कहता हूं, अपनी ओर से नहीं कहता,
परंतु मुझमें वास करनेवाला पिता अपने कार्य कर रहा है। ११ मेरा विश्वास
करो कि मैं पिता में हूं और पिता मुझमें : और नहीं तो कार्यों के कारण
ही विश्वास करो। १२ मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि मुझ पर विश्वास
करनेवाला वे कार्य करेगा जो मैं कर रहा हूं, वरन् इनसे भी महान् कार्य
करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जा रहा हूं। १३ जो कुछ तुम मेरे नाम से
मांगोगे, मैं उसे करूंगा जिससे मुझमें पिता महिमान्वित हो। १४ यदि तुम
मेरे नाम से मुझसे कुछ भी मांगोगे तो मैं उसे करूंगा।

यीशु सहायक भेजेंगे

१५ 'यदि तुम मुझसे प्रेम करते हो तो मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे,
१६ और मैं पिता से निवेदन करूंगा तथा वह तुम्हें दूसरा सहायक‡

* अथवा, 'रखते हो'। † अथवा, 'यदि न होते तो क्या मैं तुमसे कहता कि मैं तुम्हारे लिए स्थान तैयार करने जा रहा हूं।' ‡ मूल भाषा में, 'पराक्लेत' जिसके अर्थ हैं अभिभावक (एडवोकेट), शांतिदाता, परामर्शदाता।

Comforter, that he may abide with you for ever;
17 even the Spirit of truth; whom the world cannot
receive, because it seeth him not, neither knoweth
him: but ye know him; for he dwelleth with you,
and shall be in you. 18 I will not leave you com-
fortless: I will come to you. 19 Yet a little while,
and the world seeth me no more; but ye see me:
because I live, ye shall live also. 20 At that day ye
shall know that I am in my Father, and ye in me, and
I in you. 21 He that hath my commandments, and
keepth them, he it is that loveth me: and he that loveth
me shall be loved of my Father, and I will love him, and
will manifest myself to him. 22 Judas saith unto him,
not Iscariot, Lord, how is it that thou wilt manifest
thyself unto us, and not unto the world? 23 Jesus
answered and said unto him, If a man love me, he will
keep my words: and my Father will love him, and we
will come unto him, and make our abode with him.
24 He that loveth me not keepeth not my sayings: and
the word which ye hear is not mine, but the Father's
which sent me.

25 These things have I spoken unto you, being yet
present with you. 26 But the Comforter, which is the
Holy Ghost, whom the Father will send in my name, he
shall teach you all things, and bring all things to your
remembrance, whatsoever I have said unto you. 27 Peace
I leave with you, my peace I give unto you: not as the
world giveth, give I unto you. Let not your heart be
troubled, neither let it be afraid. 28 Ye have heard
how I said unto you, I go away, and come again unto
you. If ye loved me, ye would rejoice, because I said,
I go unto the Father: for my Father is greater than I.
29 And now I have told you before it come to pass,
that, when it is come to pass, ye might believe. 30 Here-
after I will not talk much with you: for the prince of
this world cometh, and hath nothing in me. 31 But that
the world may know that I love the Father; and as the
Father gave me commandment, even so I do. Arise, let
us go hence.

देगा कि वह सदा तुम्हारे साथ रहे—१७ अर्थात् सत्य का आत्मा। संसार
उसको ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि न तो वह उसे देखता है और न उसे
जानता है; तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है और तुममें
होगा। १८ मैं तुम्हें अनाथ नहीं छोड़ूंगा, मैं तुम्हारे पास आ रहा हूं।
१९ थोड़ी देर और ; फिर संसार मुझे नहीं देखेगा, पर तुम मुझे देखोगे;
मैं जीवित हूं इसलिए तुम भी जीविन रहोगे। २० उस दिन तुम जानोगे कि
मैं अपने पिता में हूं, तुम मुझमें हो और मैं तुममें। २१ जो मेरी आज्ञाएं
धारण करता है और उनका पालन करता है, वही मुझसे प्रेम करता है ;
जो मुझसे प्रेम करता है, वह मेरे पिता का प्रेमपात्र होगा; और मैं उसे
प्रेम करूंगा तथा अपना दर्शन दूंगा।' २२ यहूदा ने जो इस्किरियोती नहीं
था, पूछा, 'प्रभु, यह क्या कि आप हमें दर्शन देंगे और संसार को नहीं ?'
२३ यीशु ने उत्तर दिया, 'यदि कोई मुझसे प्रेम करे तो मेरा वचन मानेगा।
तब मेरा पिता उसे प्रेम करेगा, और हम उसके पास आएंगे तथा उसके साथ
निवास करेंगे। २४ परंतु जो मुझे प्रेम नहीं करता, वह मेरे वचन नहीं
मानता ! यह वचन जो तुम सुनते हो मेरा नहीं, वरन् पिता का है जिसने
मुझे भेजा है।

२५ 'तुम्हारे साथ रहते हुए ही मैंने तुमसे ये बातें कह दी हैं २६ परंतु
सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा, जिसे परमेश्वर मेरे नाम में भेजेगा, तुम्हें सब
बातें सिखाएगा, और सब कुछ जो मैंने तुमसे कहा है, तुमको स्मरण कराएगा।
२७ शान्ति मैं तुमको दिए जाता हूं, अपनी शान्ति मैं तुम्हें प्रदान करता
हूं--मैं ऐसे देता हूं जैसे संसार नहीं देता। तुम्हारा मन व्याकुल और
भयभीत न हो। २८ तुमने सुना कि मैंने तुमसे क्या कहा, "मैं जा रहा हूं
और फिर तुम्हारे पास आ रहा हूं।" यदि तुम मुझे प्रेम करते तो आनंद
मनाते कि मैं पिता के पास जा रहा हूं ; क्योंकि पिता मुझसे महान् है।
२९ अभी, यह होने से पहिले, मैंने तुमसे कह दिया है कि जब हो तो विश्वास
करो। ३० अब मैं तुमसे अधिक न बोलूंगा, क्योंकि इस संसार का अधि-
कारी आ रहा है। वह मेरा कुछ नहीं कर सकता। पर जैसी पिता ने मुझे
आज्ञा दी है, मैं उसका पालन करता हूं कि संसार जान ले कि मैं पिता से
प्रेम करता हूं। ३१ उठो, यहां से चलें।'

THE VINE AND THE BRANCHES

15 I am the true vine, and my Father is the hus-
bandman. 2 Every branch in me that beareth
not fruit he taketh away : and every branch that beareth
fruit, he purgeth it, that it may bring forth more fruit.
3 Now ye are clean through the word which I have
spoken unto you. 4 Abide in me, and I in you. As
the branch cannot bear fruit of itself, except it abide
in the vine ; no more can ye, except ye abide in me.
5 I am the vine, ye are the branches : He that abideth
in me, and I in him, the same bringeth forth much
fruit : for without me ye can do nothing. 6 If a man
abide not in me, he is cast forth as a branch, and is
withered ; and men gather them, and cast them into
the fire, and they are burned. 7 If ye abide in me,
and my words abide in you, ye shall ask what ye will,
and it shall be done unto you. 8 Herein is my Father
glorified, that ye bear much fruit ; so shall ye be my
disciples. 9 As the Father hath loved me, so have I
loved you : continue ye in my love. 10 If ye keep my
commandments, ye shall abide in my love ; even as I
have kept my Father's commandments, and abide in his
love. 11 These things have I spoken unto you, that
my joy might remain in you, and that your joy might
be full. 12 This is my commandment, That ye love
one another, as I have loved you. 13 Greater love hath
no man than this, that a man lay down his life for his
friends. 14 Ye are my friends, if ye do whatsoever I
command you. 15 Henceforth I call you not servants ;
for the servant knoweth not what his lord doeth : but
I have called you friends ; for all things that I have
heard of my Father I have made known unto you.
16 Ye have not chosen me, but I have chosen you, and
ordained you, that ye should go and bring forth fruit,
and that your fruit should remain : that whatsoever ye
shall ask of the Father in my name, he may give it
you. 17 These things I command you, that ye love
one another.

१५

द्राक्षलता और शाखाएं

१ 'सच्ची दाखलता मैं हूं और मेरा पिता कृषक है। २ प्रत्येक शाखा जो
मुझमें है, और फलती नहीं, वह काट डालता है: और प्रत्येक शाखा जो
फलती है, उसे वह छांटता है कि अधिक फले। ३ उस वचन के कारण, जो
मैंने तुमसे कहा है, तुम शुद्ध हो चुके हो। ४ मुझमें रहो, जैसे मैं तुममें।
जिस प्रकार शाखा, यदि दाखलता में न रहे तो अपने आप नहीं फल सकती,
उसी प्रकार तुम भी यदि मुझमें न रहो तो नहीं फल सकते। ५ मैं दाखलता
हूं, और तुम शाखाएं हो। जो मुझमें रहता है और मैं उसमें, वह बहुत
फलता है, क्योंकि मुझसे वियुक्त रहकर तुम कुछ नहीं कर सकते। ६ यदि
कोई मुझमें नहीं रहता तो वह शाखा के सदृश फेंक दिया जाता है, और
सूख जाता है। ७ लोग सूखी शाखाओं को एकत्रित कर आग में झोंकते और
जला देते हैं। यदि तुम मुझमें रहो और मेरे बचन तुममें, तो जो चाहो, मांगो
और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा। ८ मेरे पिता की महिमा इसी में है कि
तुम बहुत फलवान् हो तभी तुम मेरे शिष्य होगे। ९ जैसे मेरे पिता ने मुझसे
प्रेम रखा उसी प्रकार मैंने तुमसे प्रेम रखा। मेरे प्रेम में रहो। १० यदि तुम
मेरी आज्ञाओं को मानो तो मेरे प्रेम में रहोगे; जैसे मैंने अपने पिता की
आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में रहता हूं। ११ मैंने ये बातें तुमसे
इसलिए कही हैं कि मेरा आनंद तुममें हो और तुम्हारा आनंद पूर्ण हो जाए।
१२ मेरी आज्ञा यह है कि जैसा मैंने तुमसे प्रेम किया है, वैसा ही तुम भी एक
दूसरे से प्रेम करो। १३ इससे बड़ा प्रेम किसी का नहीं कि कोई अपने
मित्रों के निमित्त अपने प्राण दे। १४ जो आज्ञा मैं देता हूं, उसे यदि तुम पालन
करो तो मेरे मित्र हो। १५ अब से मैं तुम्हें दास नहीं कहता, क्योंकि दास नहीं
जानता कि उसका स्वामी क्या करता है; परंतु मैंने तुमको मित्र कहा है, क्योंकि
जो कुछ मैंने अपने पिता से सुना, वह सब तुमको बता दिया है। १६ तुमने
मुझे नहीं चुना पर मैंने तुमको चुना और नियुक्त किया कि तुम जाओ और
फलवान् हो, तथा तुम्हारा फल स्थायी रहे; जिससे कुछ तुम मेरे नाम से
मांगो, और वह तुमको दे १७ ये आज्ञाएं मैंने इसलिए दी हैं कि तुम एक दूसरे
से प्रेम करो।

THE WORLD AND THE SPIRIT OF TRUTH

18 If the world hate you, ye know that it hated me
before it hated you. 19 If ye were of the world, the
world would love his own : but because ye are not of
the world, but I have chosen you out of the world,
therefore the world hateth you. 20 Remember the
word that I said unto you, The servant is not greater
than his lord. If they have persecuted me, they will
also persecute you ; if they have kept my saying, they
will keep yours also. 21 But all these things will they
do unto you for my name's sake, because they know
not him that sent me. 22 If I had not come and spoken
unto them, they had not had sin : but now they have
no cloke for their sin. 23 He that hateth me hateth
my Father also. 24 If I had not done among them
the works which none other man did, they had
not had sin : but now have they both seen and hated
both me and my Father. 25 But this cometh to pass,
that the word might be fulfilled that is written in their
law, They hated me without a cause.

26 But when the Comforter is come, whom I will
send unto you from the Father, even the Spirit of
truth, which proceedeth from the Father, he shall testify
of me : 27 and ye also shall bear witness, because ye
have been with me from the beginning.

WORDS OF FAREWELL

16 These things have I spoken unto you, that ye
should not be offended. 2 They shall put you
out of the synagogues : yea, the time cometh, that who-
soever killeth you will think that he doeth God service.
3 And these things will they do unto you, because they
have not known the Father, nor me.

4 But these things have I told you, that when the
time shall come, ye may remember that I told you of
them. And these things I said not unto you at the
beginning, because I was with you. 5 But now I go

सत्य का आत्मा तथा संसार

१८ 'यदि संसार तुमसे बैर रखता है तो ध्यान रखो कि उसने तुमसे पहले मुझसे बैर रखा है। १९ यदि तुम संसार के होते तो संसार अपनों से प्रीति करता; तुम संसार के नहीं हो, वरन् मैंने तुमको संसार से चुन लिया है, इस कारण संसार तुमसे बैर रखता है। २० जो बचन मैंने तुमसे कहा उसे स्मरण करो: "दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं होता।" यदि उन्होंने मुझे सताया तो तुम्हें भी सताएंगे। यदि उन्होंने मेरी बात मानी है तो तुम्हारी भी मानेंगे। २१ परंतु यह सब कुछ वे मेरे नाम के कारण तुम्हारे साथ करेंगे, क्योंकि वे मेरे भेजनेवाले को नहीं जानते। २२ यदि मैं न आता और उनसे बातें न करता तो उन्हें पाप न लगता, परंतु अब उनके पास अपने पाप के लिए बहाना नहीं है। २३ जो मुझसे बैर रखता है, वह मेरे पिता से बैर रखता है। २४ यदि मैं उनके बीच वे कार्य नहीं करता, जो और किसी ने नहीं किए, तो उन्हें पाप न लगता परंतु अब तो उन्होंने मुझे और मेरे पिता दोनों को देख लिया है और फिर भी बैर किया है। २५ यह इसलिए हुआ है कि उनकी व्यवस्था में लिखा यह बचन पूरा हो, "उन्होंने मुझसे व्यर्थ बैर रखा।"

२६ 'परंतु जब सहायक आएगा जिसे मैं पिता के पास से तुम्हारे पास भेजूंगा—अर्थात् सत्य का आत्मा, जो पिता से निकलता है—तो वह तुम्हें मेरे विषय में साक्षी देगा, २७ और तुम भी मेरे साक्षी हो, क्योंकि तुम आरंभ से मेरे साथ रहे हो।

१६

बिदा के शब्द

१ 'मैंने तुमसे यह सब इसलिए कहा है कि तुम्हारा पतन न हो। २ वे तुम्हें सभागृह से बहिष्कृत करेंगे; वरन् समय आ रहा है जब कि तुम्हारी हत्या करने वाला समझेगा कि वह परमेश्वर को सेवा अर्पण कर रहा है। ३ और ये कार्य वे इसलिए करेंगे कि उन्होंने न तो पिता को जाना है और न मुझे। ४ मैंने तुमसे ये बातें इसलिए कहीं हैं कि जब इनका समय आए तो तुम्हें स्मरण हो कि मैंने तुमको बता दिया था।

५ 'मैंने तुमको आरम्भ से ये बातें नहीं बताईं क्योंकि मैं तुम्हारे साथ था।

my way to him that sent me ; and none of you asketh
me, Whither goest thou ? 6 But because I have said
these things unto you, sorrow hath filled your heart.
7 Nevertheless I tell you the truth ; It is expedient
for you that I go away : for if I go not away, the
Comforter will not come unto you ; but if I depart, I
will send him unto you. 8 And when he is come, he
will reprove the world of sin, and of righteousness,
and of judgment : 9 of sin, because they believe not
on me ; 10 of righteousness, because I go to my Father,
and ye see me no more ; 11 of judgment, because the
prince of this world is judged.

12 I have yet many things to say unto you, but ye
cannot bear them now. 13 Howbeit when he, the Spirit
of truth, is come, he will guide you into all truth :
for he shall not speak of himself ; but whatsoever he
shall hear, that shall he speak : and he will shew you
things to come. 14 He shall glorify me : for he shall
receive of mine, and shall shew it unto you. 15 All
things that the Father hath are mine : therefore said
I, that he shall take of mine, and shall shew it unto
you.

16 A little while, and ye shall not see me : and again,
a little while, and ye shall see me, because I go to
the Father. 17 Then said some of his disciples among
themselves, What is this that he saith unto us, A little
while, and ye shall not see me : and again, a little
while, and ye shall see me : and, Because I go to the
Father ? 18 They said therefore, What is this that
he saith, A little while ? we cannot tell what he saith.
19 Now Jesus knew that they were desirous to ask him,
and said unto them, Do ye enquire among yourselves
of that I said, A little while, and ye shall not see me :
and again, a little while, and ye shall see me ? 20 Verily,
verily, I say unto you, That ye shall weep and lament,
but the world shall rejoice : and ye shall be sorrowful,
but your sorrow shall be turned into joy. 21 A woman
when she is in travail hath sorrow, because her hour is
come : but as soon as she is delivered of the child, she

परंतु अब मैं अपने भेजनेवाले के पास जा रहा हूं, और तुममें से कोई नहीं
पूछता कि आप कहां जा रहे हैं। ६ मैंने तुम्हें ये बातें बताई हैं इसलिए
तुम्हारा हृदय शोकपूर्ण है। ७ तुमसे मैं सच कहता हूं कि यह तुम्हारे लिए
लाभप्रद है कि मैं जा रहा हूं; क्योंकि यदि मैं न जाऊं तो सहायक तुम्हारे
पास नहीं आएगा, परंतु यदि जाऊं तो उसे तुम्हारे पास भेजूंगा। ८ वह
आकर पापके विषय में, धार्मिकता के विषय में और न्याय के विषय में संसार
को दोषी सिद्ध करेगा: ९ पाप के विषय में, क्योंकि वे मुझ पर विश्वास नहीं
करते; १० धार्मिकता के विषय में, क्योंकि मैं तुम्हारे पिता के पास जा रहा हूं
और तुम मुझे फिर न देखोगे; ११ न्याय के विषय में, क्योंकि संसार का
अधिपति दोषी ठहरा है।

१२ 'मुझे तुमसे बहुत कुछ कहना है, परंतु अभी तुम उसे सहन नहीं कर
सकते। १३ जब वह, अर्थात् सत्य का आत्मा, आएगा, तो संपूर्ण सत्य में
तुम्हारा मार्गदर्शन करेगा; क्योंकि वह अपनी ओर से कुछ न कहेगा, वरन्
जो कुछ सुनेगा, कहेगा और आगे होनेवाली बातें तुम्हें बताएगा। १४ वह
मुझे महिमान्वित करेगा क्योंकि जो मेरा है, उसे लेगा और तुम्हें बताएगा।
१५ सब जो पिता का है, मेरा है। इस कारण मैंने कहा कि वह, जो मेरा है
उसे लेगा और तुम्हें बताएगा।

वियोग-कालीन उद्गार

१६ 'थोड़ी देर में तुम मुझे नहीं देखोगे; और फिर थोड़ी देर में तुम
मुझे देखोगे।' १७ इस पर उनके कुछ शिष्य आपस में कहने लगे, 'यह क्या
है जो यह हमसे कह रहे हैं, "थोड़ी देर में तुम मुझे नहीं देखोगे: फिर
थोड़ी देर में तुम मुझे देखोगे:" और "क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं"?'
१८ हम नहीं जानते कि यह क्या बोल रहे हैं?' १९ यीशु ने जाना कि वे उनसे
कुछ पूछना चाहते हैं, और उनसे कहा, 'क्या तुम आपस में इस पर विचार कर
रहे हो कि मैंने कहा, "थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे: फिर कुछ देर में तुम
मुझे देखोगे?" २० मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि तुम रोओगे और विलाप
करोगे, परंतु संसार आनंद मनाएगा। तुम शोकित होगे, परंतु तुम्हारा शोक
आनंद में परिणत हो जाएगा। २१ जब स्त्री प्रसव-पीड़ा में होती है तो उसे
कष्ट होता है, क्योंकि उसका समय आ पहुंचा है; पर जब वह बालक को
जन्म दे चुकती है तो इस आनंद के कारण कि एक शिशु संसार म उत्पन्न हुआ

remembereth no more the anguish, for joy that a man
is born into the world. 22 And ye now therefore have
sorrow : but I will see you again, and your heart shall
rejoice, and your joy no man taketh from you. 23 And
in that day ye shall ask me nothing. Verily, verily,
I say unto you, Whatsoever ye shall ask the Father in
my name, he will give it you. 24 Hitherto have ye
asked nothing in my name : ask, and ye shall receive,
that your joy may be full.

25 These things have I spoken unto you in proverbs :
but the time cometh, when I shall no more speak unto
you in proverbs, but I shall shew you plainly of the
Father. 26 At that day ye shall ask in my name : and
I say not unto you, that I will pray the Father for you :
27 for the Father himself loveth you, because ye have
loved me, and have believed that I came out from God.
28 I came forth from the Father, and am come into
the world : again, I leave the world, and go to the Father.

29 His disciples said unto him, Lo, now speakest thou
plainly, and speakest no proverb. 30 Now are we sure
that thou knowest all things, and needest not that any
man should ask thee : by this we believe that thou
camest forth from God. 31 Jesus answered them, Do
ye now believe ? 32 Behold, the hour cometh, yea, is
now come, that ye shall be scattered, every man to his
own, and shall leave me alone : and yet I am not alone,
because the Father is with me. 33 These things I have
spoken unto you, that in me ye might have peace. In
the world ye shall have tribulation : but be of good
cheer ; I have overcome the world.

THE PRAYER OF JESUS

17 These words spake Jesus, and lifted up his eyes to
heaven, and said, Father, the hour is come ; glorify
thy Son, that thy Son also may glorify thee : 2 as thou
hast given him power over all flesh, that he should give
eternal life to as many as thou hast given him. 3 And
this is life eternal, that they might know thee the only

है, फिर पीड़ा का स्मरण नहीं करती। २२ इसी प्रकार तुम अब शोक में
हो, परन्तु तुम मुझे पुनः देखोगे और तुम्हारा मन आनंदित होगा और तुमसे
तुम्हारा आनंद कोई नहीं छीन सकेगा। २३ उस दिन तुम मुझसे कुछ प्रश्न
न करोगे। मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि यदि तुम पिता से कुछ मांगोगे तो
वह मेरे नाम में तुम्हें देंगे। २४ अब तक तुमने मेरे नाम से कुछ नहीं
मांगा : मांगो, और पाओगे कि तुम्हारा आनंद पूरा हो।

२५ 'मैंने तुमसे रूपकों में यह कहा है ; परंतु समय आ रहा है जब मैं
तुमसे रूपकों में न बोलूंगा, वरन् पिता के विषय में स्पष्ट कहूंगा। २६ उस
दिन तुम मेरे नाम से मांगोगे ; मैं यह नहीं कहता कि तुम्हारे विषय में पिता
से निवेदन करूंगा, २७ पिता स्वयं तुमसे प्रीति करता है, क्योंकि तुमने
मुझ से प्रीति की है, तथा विश्वास किया है कि मैं पिता से आया हूं। २८ मैं
पिता से निकल कर संसार में आया हूं ; और फिर संसार को छोड़कर पिता
के पास जा रहा हूं।'

२९ उनके शिष्यों ने कहा, 'अब आप स्पष्ट बोल रहे हैं, रूपकों में नहीं।
३० अब हम जान गए कि आप सब कुछ जानते हैं और इस बात की
आवश्यकता नहीं कि कोई आपसे प्रश्न करे : इस कारण हम विश्वास करते
हैं कि आप परमेश्वर से निकलते हैं।' ३१ यीशु ने उत्तर दिया, 'क्या अब
मुझ पर विश्वास करते हो ? ३२ देखो समय आ रहा है, वरन् आ गया है कि
तुम तितर-बितर कर दिए जाओगे और प्रत्येक अपने अपने स्थान को चला
जाएगा और मुझे अकेला छोड़ देगा। फिर भी मैं अकेला नहीं हूं, क्योंकि
पिता मेरे साथ है। ३३ ये बातें मैंने तुमसे इसलिए कही कि तुम मुझमें
शान्ति पाओ। संसार में तुम कष्ट पाओगे ; पर धैर्य रखो, मैं संसार पर
विजयी हुआ हूं।'

१७

यीशु की महायाजकीय प्रार्थना

१ यीशु ने यह कहा और अपनी आंखें स्वर्ग की ओर उठाकर बोले,
'पिता, समय आ गया है ; अपने पुत्र को महिमान्वित कर कि पुत्र तुझे
महिमान्वित करे, २ क्योंकि तूने उसे सब प्राणियों पर अधिकार दिया है
कि वह उन सबको, जिन्हें तूने उसको दिया है, शाश्वत जीवन प्रदान करे।
३ और शाश्वत जीवन यह है कि वे तुझे ; एक मात्र सच्चे परमेश्वर को, और

true God, and Jesus Christ, whom thou hast sent. 4 I
have glorified thee on the earth : I have finished the
work which thou gavest me to do. 5 And now, O
Father, glorify thou me with thine own self with the
glory which I had with thee before the world was.
6 I have manifested thy name unto the men which thou
gavest me out of the world : thine they were, and thou
gavest them me ; and they have kept thy word. 7 Now
they have known that all things whatsoever thou hast
given me are of thee. 8 For I have given unto them
the words which thou gavest me ; and they have re-
ceived them, and have known surely that I came out
from thee, and they have believed that thou didst send
me. 9 I pray for them : I pray not for the world, but
for them which thou hast given me ; for they are thine.
10 And all mine are thine, and thine are mine ; and I
am glorified in them. 11 And now I am no more in
the world, but these are in the world, and I come to
thee. Holy Father, keep through thine own name those
whom thou hast given me, that they may be one, as we
are. 12 While I was with them in the world, I kept
them in thy name : those that thou gavest me I have
kept, and none of them is lost, but the son of perdition ;
that the scripture might be fulfilled. 13 And now come
I to thee ; and these things I speak in the world, that
they might have my joy fulfilled in themselves. 14 I have
given them thy word ; and the world hath hated them,
because they are not of the world, even as I am not of
the world. 15 I pray not that thou shouldest take them
out of the world, but that thou shouldest keep them
from the evil. 16 They are not of the world, even as
I am not of the world. 17 Sanctify them through thy
truth : thy word is truth. 18 As thou hast sent me
into the world, even so have I also sent them into the
world. 19 And for their sakes I sanctify myself, that
they also might be sanctified through the truth.

20 Neither pray I for these alone, but for them also
which shall believe on me through their word ; 21 that
they all may be one ; as thou, Father, art in me, and I

यीशु ख्रिस्त को, जिसे तूने भेजा है, जानें। ४ जो कार्य तूने मुझे करने को
दिया था, उसे पूरा कर मैंने तुझको पृथ्वी पर महिमान्वित किया है। ५ अब
हे पिता, अपनी उपस्थिति में मुझे उस महिमा से महिमान्वित कर, जो
संसार की उत्पत्ति से पहिले मेरी थी और तेरे साथ थी। ६ मैंने तेरा नाम
उन मनुष्यों पर प्रकट किया है जिन्हें तूने संसार में मुझे दिया ; वे तेरे थे, तूने
उन्हें मुझे दिया, और उन्होंने तेरे वचन का पालन किया है। ७ अब वे जानते
हैं कि जो कुछ तूने मुझे दिया है, वह तुझसे है, ८ क्योंकि जो वचन तूने
मुझे दिए थे, मैंने उनको दिए ; उन्होंने उनको ग्रहण किया और सचमुच जानते
हैं कि मैं तुझसे आया हूं ; और उन्होंने विश्वास किया है कि तूने मुझे
भेजा है। ९ मैं उनके लिए प्रार्थना कर रहा हूं ; संसार के लिए प्रार्थना नहीं
कर रहा, वरन् उनके लिए जिन्हें तूने मुझे दिया है, क्योंकि वे तेरे हैं।
१० मेरा सब तेरा है, तेरा मेरा है ; और मैं उनमें महिमान्वित हुआ हूं।
११ मैं अब संसार में नहीं रहूंगा ; पर वे संसार में होंगे, और मैं तेरे पास आ
रहा हूं। पवित्र पिता, उस नाम में जो तूने मुझे दिया है, उनको सुरक्षित रख
कि वे एक हों, जैसे हम एक हैं। १२ जब तक मैं उनके साथ रहा, तेरे उस
नाम में, जो तूने मुझे दिया था, मैंने उनकी चौकसी की ; और विनाश के पुत्र
को छोड़ कर उनमें से कोई नष्ट नहीं हुआ कि शास्त्र का लेख पूरा हो। १३ परंतु
अब मैं तेरे पास आ रहा हूं। मैं संसार में ये बातें कह रहा हूं कि वे
मेरे आनंद से परिपूर्ण हों। १४ मैंने उनको तेरा वचन दिया है
पर संसार उनसे बैर करता है, क्योंकि जिस प्रकार मैं संसार का नहीं हूं,
वे भी संसार के नहीं हैं। १५ मैं यह प्रार्थना नहीं करता कि तू उन्हें संसार
से उठा ले, वरन् यह कि उनको दुष्ट* से सुरक्षित रख। १६ जिस प्रकार
मैं इस संसार का नहीं हूं, वे भी इस संसार के नहीं हैं। १७ सत्य से उनको
पवित्र कर—तेरा वचन सत्य है। १८ जैसे तूने मुझे संसार में भेजा उसी
प्रकार मैंने उन्हें संसार में भेजा है। १९ उनके लिए मैं अपने को पवित्र†
करता हूं कि वे भी सत्य द्वारा पवित्र† किए जाएं।

२० मैं केवल इनके लिए ही प्रार्थना नहीं करता—वरन् उन सबके लिए,
भी जो इनके वचन द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, २१ कि वे सब एक हों ;
जैसे हे पिता, मैं तुझमें हूं और तू मुझमें, उसी प्रकार वे हममें हों, जिससे

---
* अर्थात् 'शैतान'
† अथवा, 'अर्पित'

in thee, that they also may be one in us : that the world
may believe that thou hast sent me. 22 And the glory
which thou gavest me I have given them ; that they
may be one, even as we are one : 23 I in them, and
thou in me, that they may be made perfect in one ;
and that the world may know that thou hast sent me,
and hast loved them, as thou hast loved me. 24 Father,
I will that they also, whom thou hast given me, be
with me where I am ; that they may behold my glory,
which thou hast given me : for thou lovedst me before the
foundation of the world. 25 O righteous Father, the
world hath not known thee : but I have known thee,
and these have known that thou hast sent me. 26 And
I have declared unto them thy name, and will declare
it : that the love wherewith thou hast loved me may
be in them, and I in them.

THE ARREST OF JESUS

18 When Jesus had spoken these words, he went
forth with his disciples over the brook Cedron,
where was a garden, into the which he entered, and
his disciples. 2 And Judas also, which betrayed him,
knew the place : for Jesus ofttimes resorted thither
with his disciples. 3 Judas then, having received a
band of men and officers from the chief priests and
Pharisees, cometh thither with lanterns and torches
and weapons. 4 Jesus therefore, knowing all things
that should come upon him, went forth, and said unto
them, Whom seek ye ? 5 They answered him, Jesus
of Nazareth. Jesus saith unto them, I am he. And
Judas also, which betrayed him, stood with them. 6 As
soon then as he had said unto them, I am he, they went
backward, and fell to the ground. 7 Then asked he
them again, Whom seek ye ? And they said, Jesus of
Nazareth. 8 Jesus answered, I have told you that I
am he : if therefore ye seek me, let these go their way :
9 that the saying might be fulfilled, which he spake,
Of them which thou gavest me have I lost none.

संसार विश्वास करे कि तूने मुझे भेजा है। २२ जो महिमा तूने मुझे दी थी, वह मैंने उन्हें दी है कि जैसे हम एक हैं, वे भी एक हों: २३ मैं उनमें और तू मुझमें, कि वे पूर्णरूप से एक हो जाएं, जिससे संसार जाने कि तूने मुझे भेजा है, और जैसे तूने मुझसे प्रेम किया है वैसे ही उनसे भी प्रेम किया है। २४ हे पिता, मैं चाहता हूं कि जिनको तूने मुझे दिया है, वे भी जहां मैं हूं मेरे साथ हों, जिससे वे उस महिमा को देख सकें जो तूने मुझे दी है, क्योंकि तूने संसार के शिलान्यास के पूर्व ही मुझे प्रेम किया है। २५ हे धार्मिक पिता, संसार ने तुझको नहीं जाना परंतु मैंने तुझे जाना है; और ये जानते हैं कि तूने मुझे भेजा है। २६ मैंने तेरा नाम इन्हें बताया और बताता रहूंगा कि वह प्रेम, जो तूने मुझे दिया है, उनमें भी हो और मैं उनमें होऊं।'

१८

यीशु को गिरफ्तारी

१ ये शब्द कहने के उपरांत यीशु अपने शिष्यों के साथ किद्रोन नाले के पार गए। वहां उन्होंने अपने शिष्यों के साथ एक उद्यान में प्रवेश किया। २ उनका पकड़वानेवाला यहूदा उस स्थान को जानता था, क्योंकि यीशु बहुधा अपने शिष्यों के साथ वहां जाया करते थे। ३ अस्तु, यहूदा सैन्य-दल को और महापुरोहितों एवं फरीसियों के कुछ कर्मचारियों को लेकर दीपकों, मशालों और अस्त्र-शस्त्रों के साथ वहां आया। ४ तब यीशु, जो कुछ उन पर बीतने को था उसे जानकर, आगे बढ़े और उनसे पूछा 'तुम किसे ढूंढ़ते हो?' ५ उन्होंने उत्तर दिया, 'नासरत-वासी यीशु को।' यीशु ने उनसे कहा, 'मैं ही वह हूं'। उनका पकड़वाने वाला यहूदा वहां साथ खड़ा था। ६ ज्यों ही उन्होंने कहा, 'मैं ही वह हूं' वे लोग पीछे हटे और भूमि पर गिर पड़े। ७ उन्होंने फिर पूछा, 'तुम किसे ढूंढ़ते हो?' वे बोले, 'नासरतवासी यीशु को।' ८ यीशु ने उत्तर दिया, 'मैं तुमसे कह चुका कि मैं ही हूं; इसलिए यदि तुम मुझे ढूंढ़ते हो तो इन्हें जाने दो' (९ जिससे उनका कहा हुआ यह बचन पूरा हो 'तूने

10 Then Simon Peter having a sword drew it, and
smote the high priest's servant, and cut off his right
ear. The servant's name was Malchus. 11 Then said
Jesus unto Peter, Put up thy sword into the sheath :
the cup which my Father hath given me, shall I not
drink it ?

12 Then the band and the captain and officers of
the Jews took Jesus, and bound him, 13 and led him
away to Annas first ; for he was father in law to
Caiaphas, which was the high priest that same year.
14 Now Caiaphas was he, which gave counsel to the
Jews, that it was expedient that one man should die
for the people.

PETER'S DENIAL OF JESUS

15 And Simon Peter followed Jesus, and so did
another disciple : that disciple was known unto the high
priest, and went in with Jesus into the palace of the
high priest. 16 But Peter stood at the door without.
Then went out that other disciple, which was known
unto the high priest, and spake unto her that kept
the door, and brought in Peter. 17 Then saith the
damsel that kept the door unto Peter, Art not thou
also one of this man's disciples ? He saith, I am not.
18 And the servants and officers stood there, who had
made a fire of coals ; for it was cold : and they warmed
themselves : and Peter stood with them, and warmed
himself.

19 The high priest then asked Jesus of his disciples,
and of his doctrine. 20 Jesus answered him, I spake
openly to the world ; I ever taught in the synagogue,
and in the temple, whither the Jews always resort ;
and in secret have I said nothing. 21 Why askest
thou me ? ask them which heard me, what I have
said unto them : behold, they know what I said.
22 And when he had thus spoken, one of the officers
which stood by struck Jesus with the palm of his hand,
saying, Answerest thou the high priest so ? 23 Jesus
answered him, If I have spoken evil, bear witness of

जिन्हें मुझे दिया मैंने उनमें से एक भी नष्ट नहीं होने दिया।') १० शमौन
पतरस के पास एक तलवार थी जो उन्होंने खींची और महापुरोहित के एक
दास पर चलाई, जिससे उसका दाहिना कान कट गया। उस दास का नाम
मलकुस था। ११ यीशु ने पतरस से कहा, 'तलवार म्यान में करो। क्या मैं
वह कटोरा न पिऊं जो पिता ने मुझे दिया है?'

१२ तब सैन्य-दल, सेनापति और यहूदियों के कर्मचारियों ने यीशु को
पकड़ा और बांध लिया। १३ पहले वे उन्हें हन्ना के पास ले गए क्योंकि वह
उस वर्ष के महापुरोहित काइफा का श्वसुर था। १४ इस काइफा ने ही यहूदियों
को परामर्श दिया था कि समस्त जाति के लिये एक व्यक्ति का मरना
लाभप्रद है।

पतरस का अस्वीकरण

१५ शमौन पतरस तथा एक और शिष्य यीशु के पीछे पीछे गए। यह
शिष्य महापुरोहित की जान पहिचान का था। वह यीशु के साथ महापुरोहित
के आंगन में चला गया, १६ जब कि पतरस द्वार के बाहर ही खड़े रहे।
तब वह शिष्य, जो महापुरोहित से परिचित था, बाहर आया और द्वार-रक्षिका
से कह कर पतरस को भीतर ले आया। १७ द्वार-रक्षिका ने पतरस से कहा,
'कहीं तू इस मनुष्य का शिष्य तो नहीं है?' उन्होंने उत्तर दिया, 'मैं नहीं हूं।'
१८ शीत के कारण दासों और कर्मचारियों ने कोयले की आग जला रखी थी
और खड़े होकर ताप रहे थे। पतरस भी उनके साथ खड़े हुए तापने लगे।

१९ महापुरोहित ने यीशु से उनके शिष्यों एवं शिक्षाओं के विषय में
पूछा। २० यीशु ने उत्तर दिया, 'मैंने संसार से खुले रूप में बातें की हैं।
मैंने सदा सभागृह तथा मंदिर में, जहां सब यहूदी एकत्रित होते हैं, शिक्षा दी है
और गुप्त रूप से कुछ नहीं कहा। आप मुझसे क्यों पूछते हैं? २१ सुननेवालों
से पूछ लीजिए कि मैंने उनसे क्या कहा। वे जानते हैं कि मैं क्या कहा था।'
२२ उनके यह कहने पर एक कर्मचारि से ने जो पास खड़ा था यीशु को
थप्पड़ मारा और कहा, 'तू महापुरोहित को इस प्रकार उत्तर देता है।'
२३ यीशु ने उत्तर दिया, 'यदि मैंने अनुचित कहा है तो अनौचित्य के संबंध
में साक्षी दो, परंतु ठीक कहा है तो फिर मुझ पर प्रहार क्यों करते हो?'

the evil : but if well, why smitest thou me ? 24 Now
Annas had sent him bound unto Caiaphas the high
priest.

25 And Simon Peter stood and warmed himself.
They said therefore unto him, Art not thou also one
of his disciples ? He denied it, and said, I am not.
26 One of the servants of the high priest, being his
kinsman whose ear Peter cut off, saith, Did not I see
thee in the garden with him ? 27 Peter then denied
again : and immediately the cock crew.

JESUS BEFORE PILATE, THE ROMAN GOVERNOR

28 Then led they Jesus from Caiaphas unto the
hall of judgment : and it was early ; and they them-
selves went not into the judgment hall, lest they should
be defiled ; but that they might eat the passover.
29 Pilate then went out unto them, and said, What
accusation bring ye against this man ? 30 They answered
and said unto him, If he were not a malefactor, we
would not have delivered him up unto thee. 31 Then
said Pilate unto them, Take ye him, and judge him
according to your law. The Jews therefore said unto
him, It is not lawful for us to put any man to death :
32 that the saying of Jesus might be fulfilled, which
he spake, signifying what death he should die.

33 Then Pilate entered into the judgment hall again,
and called Jesus, and said unto him, Art thou the King
of the Jews ? 34 Jesus answered him, Sayest thou this
thing of thyself, or did others tell it thee of me ?
35 Pilate answered, Am I a Jew ? Thine own nation
and the chief priests have delivered thee unto me :
what hast thou done ? 36 Jesus answered, My kingdom
is not of this world : if my kingdom were of this world,
then would my servants fight, that I should not be
delivered to the Jews : but now is my kingdom not
from hence. 37 Pilate therefore said unto him, Art
thou a king then ? Jesus answered, Thou sayest that
I am a king. To this end was I born, and for this cause
came I into the world, that I should bear witness unto

२४ तब हन्ना ने यीशु को महापुरोहित काइफा के पास भेज दिया।

२५ शमौन पतरस खड़े हुए ताप रहे थे। लोगों ने उनसे पूछा, 'कहीं
तू भी तो उनके शिष्यों में से नहीं ?' उन्होंने अस्वीकार किया और कहा,
'मैं नहीं हूं।' २६ महापुरोहित के एक दास ने, जो उस व्यक्ति का
संबंधी था जिसका पतरस ने कान उड़ा दिया था, उनसे पूछा, 'क्या मैंने तुझे
उसके साथ उपवन में नहीं देखा था ?' २७ पतरस ने फिर अस्वीकार किया,
और तुरंत मुर्ग ने बांग दी।

रोमन राज्यपाल पिलातुस के संमुख यीशु

२८ तब वे लोग यीशु को काइफा के पास से प्राइतोरियम* में ले गए।
प्रातःकाल हो रहा था; वे लोग स्वयं प्राइतोरियम में नहीं गए कि अशुद्ध न
हो जाएं वरन् फसह खा सकें। २९ पिलातुस ही बाहर उनके पास आया और
बोला, 'इस मनुष्य पर तुम क्या अभियोग लगाते हो ?' ३० उन्होंने उत्तर
दिया, 'यदि यह मनुष्य दुष्कर्मी न होता तो हम इसे आपके हाथ नहीं सौंपते।'
३१ पिलातुस ने उनसे कहा, 'तुम्हीं इसे ले जाओ और अपनी व्यवस्था के अनु-
सार दंड दो।' यहूदी बोले, 'किसी को प्राणदंड देना हमारे लिए
विहित नहीं है।' ३२ यह इसलिए हुआ कि यीशु के वे बचन पूर्ण हों जिनसे
उन्होंने संकेत किया था कि उनकी मृत्यु कैसे होनेवाली है।

३३ पिलातुस फिर प्राइतोरियम में गया और यीशु को बुलाकर उनसे
पूछा, 'क्या तुम यहूदियों के राजा हो ?' ३४ यीशु ने कहा, 'आप स्वयं यह
कह रहे हैं, या दूसरों ने आपसे मेरे विषय में यह कहा है ?' ३५ पिलातुस ने
उत्तर दिया, 'क्या मैं यहूदी हूं ? तुम्हारे ही लोगों ने और महापुरोहितों ने
तुम्हें मेरे हाथ सौंप दिया है। तुमने क्या किया है ?' ३६ यीशु ने उत्तर दिया,
'मेरा राजत्व इस संसार का नहीं है। यदि मेरा राजत्व इस संसार का होता,
तो मेरे कर्मचारी मेरी ओर से लड़ते और मैं यहूदियों के हाथ न पड़ता।
पर मेरा राजत्व यहां का नहीं है।' ३७ तब पिलातुस बोला, 'तो तुम राजा
हो ?' यीशु ने उत्तर दिया, 'आप ही कह रहे हैं कि मैं राजा हूं। मैंने इस
कारण जन्म लिया और इसीकारण संसार में आया हूं कि सत्य की साक्षी दूं।

* राज्यपाल का भवन

the truth. Every one that is of the truth heareth my
voice. 38 Pilate saith unto him, What is truth ?

And when he had said this, he went out again
unto the Jews, and saith unto them, I find in him no
fault at all. 39 But ye have a custom, that I should
release unto you one at the passover : will ye therefore
that I release unto you the King of the Jews ? 40 Then
cried they all again, saying, Not this man, but Barabbas.
Now Barabbas was a robber.

PILATE GIVES WAY TO THE JEWS

19 Then Pilate therefore took Jesus, and scourged
him. 2 And the soldiers platted a crown of
thorns, and put it on his head, and they put on him
a purple robe, 3 and said, Hail, King of the Jews !
and they smote him with their hands.

4 Pilate therefore went forth again, and saith unto
them, Behold, I bring him forth to you, that ye may
know that I find no fault in him. 5 Then came Jesus
forth, wearing the crown of thorns, and the purple
robe. And Pilate saith unto them, Behold the man
6 When the chief priest therefore and officers saw him
they cried out, saying, Crucify him, crucify him. Pilate
saith unto them, Take ye him, and crucify him : for
I find no fault in him. 7 The Jews answered him,
We have a law, and by our law he ought to die, because
he made himself the Son of God. 8 When Pilate
therefore heard that saying, he was the more afraid ;
9 and went again into the judgment hall, and saith unto
Jesus, Whence art thou ? But Jesus gave him no answer.
10 Then saith Pilate unto him, Speakest thou not unto
me ? knowest thou not that I have power to crucify
thee, and have power to release thee ? 11 Jesus
answered, Thou couldest have no power at all against
me, except it were given thee from above : therefore
he that delivered me unto thee hath the greater sin.
12 And from thenceforth Pilate sought to release him :
but the Jews cried out, saying, If thou let this man go,

प्रत्येक मनुष्य जो सत्य का है मेरी वाणी सुनता है।' ३८ पिलातुस ने उनसे कहा, 'सत्य क्या है ?'

यह कहकर वह फिर बाहर यहूदियों के पास गया और उनसे बोला, 'मैं उसमें कोई दोष नहीं पाता। ३९ पर तुम्हारी एक परंपरा है कि फसह पर मैं तुम्हारे लिए एक व्यक्ति को छोड़ता हूं। तो तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए "यहूदियों के राजा" को छोड़ दूं ?' ४० वे पुनः चिल्लाकर बोले, 'इसे नहीं, बरअब्बा को।' और बरअब्बा डाकू था।

१९

पिलातुस का यहूदियों से भयभीत होना

१ अब पिलातुस ने यीशु को कोड़े लगवाए। २ सैनिकों ने कांटों का मुकुट गूंथकर उनके सिर पर रखा, और उन्हें बैंजनी वस्त्र पहिनाया। ३ तब वे उनके पास आकर बारबार कहने लगे, 'यहूदियों के राजा प्रणाम !' और उनके थप्पड़ मारे।

४ पिलातुस फिर बाहर गया और लोगों से बोला, 'देखो मैं उसे बाहर ला रहा हूं जिससे तुम जान लो कि मैं उसमें कोई दोष नहीं पाता।' ५ तब यीशु बैंजनी वस्त्र और कांटों का मुकुट धारण किए बाहर आए। उसने कहा, 'देखो, यह मनुष्य !' ६ जब महापुरोहितों और कर्मचारियों ने उन्हें देखा तो चिल्लाकर बोले, 'क्रूस पर चढ़ाओ, क्रूस पर चढ़ाओ।' पिलातुस ने उनसे कहा, 'तुम्हीं उसे ले जाओ और क्रूस पर चढ़ाओ, क्योंकि मैं उसे दोषी नहीं पाता।' ७ यहूदियों ने उत्तर दिया, 'हमारी एक व्यवस्था है : उस व्यवस्था से इसे मृत्यु दंड मिलना चाहिये, क्योंकि यह अपने को परमेश्वर का पुत्र कहता है।' ८ जब पिलातुस ने यह बात सुनी तो और भी डर गया; ९ उसने फिर प्राइतोरियम में जाकर, यीशु से पूछा, 'तुम कहां के हो ?' परंतु यीशु ने कुछ उत्तर न दिया। १० तब पिलातुस ने कहा, 'तुम मुझसे भी नहीं बोलते ! क्या तुम नहीं जानते कि मुझे तुमको छोड़ देने का अधिकार है, और क्रूस पर चढ़ाने का भी अधिकार है ?' ११ यीशु ने उत्तर दिया, 'यदि आपको ऊपर से अधिकार न दिया जाता तो आपको मुझ पर लेशमात्र भी अधिकार नहीं होता। इस कारण जिन्होंने मुझे आपके हाथ सौंपा है, उनका पाप अधिक है।' १२ इस पर पिलातुस उनको छोड़ देने का और भी प्रयत्न करने लगा, पर यहूदियों ने चिल्लाकर कहा, 'यदि आपने इसको

thou art not Cæsar's friend : whosoever maketh himself
a king speaketh against Cæsar.

13 When Pilate therefore heard that saying, he
brought Jesus forth, and sat down in the judgment
seat in a place that is called the Pavement, but in
the Hebrew, Gabbatha. 14 And it was the preparation
of the passover, and about the sixth hour : and he
saith unto the Jews, Behold your King ! 15 But they
cried out, Away with him, away with him, crucify
him. Pilate saith unto them, Shall I crucify your King ?
The chief priests answered, We have no king but Cæsar.
16 Then delivered he him therefore unto them to be
crucified.

THE CRUCIFIXION OF JESUS

And they took Jesus, and led him away. 17 And
he bearing his cross went forth into a place called
the place of a skull, which is called in the Hebrew
Golgotha : 18 where they crucified him, and two other
with him, on either side one, and Jesus in the midst.

19 And Pilate wrote a title, and put it on the
cross. And the writing was, JESUS OF NAZARETH
THE KING OF THE JEWS. 20 This title then read
many of the Jews : for the place where Jesus was cruci-
fied was nigh to the city : and it was written in Hebrew,
and Greek, and Latin. 21 Then said the chief priests
of the Jews to Pilate, Write not, The King of the
Jews ; but that he said, I am King of the Jews. 22 Pilate
answered, What I have written I have written.

23 Then the soldiers, when they had crucified Jesus,
took his garments, and made four parts, to every soldier
a part ; and also his coat : now the coat was without
seam, woven from the top throughout. 24 They said
therefore among themselves, Let us not rend it, but
cast lots for it, whose it shall be : that the scripture
might be fulfilled, which saith,

They parted my raiment among them,
And for my vesture they did cast lots.

These things therefore the soldiers did.

छोड़ा तो आप कैसर के मित्र नहीं। जो अपने को राजा बताता है, वह कैसर
का विरोधी है।'

१३ पिलातुस यह सुनकर यीशु को बाहर लाया और उस स्थान
पर, जो 'चबूतरा' और इब्रानी में गब्बथा कहलाता है, न्याय-सिंहासन
पर बैठ गया। १४ यह फसह की तैयारी का दिन था और लगभग छटा
घंटा था। उसने यहूदियों से कहा, 'देखो तुम्हारा राजा'। १५ वे चिल्ला
कर बोले, 'इसे ले जाओ, इसे ले जाओ, इसे क्रूस पर चढ़ाओ!' पिलातुस ने
उनसे कहा, 'क्या मैं तुम्हारे राजा को क्रूस पर चढ़ाऊं।' महापुरोहितों ने
उत्तर दिया, 'कैसर के अतिरिक्त हमारा कोई राजा नहीं।' १६ तब उसने
यीशु को क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए उनके हाथ सौंप दिया।

क्रूस

वे लोग यीशु को ले चले। १७ वह अपना क्रूस उठाए बाहर निकले और
स्थान को गए जो 'कपाल-स्थल' कहलाता है और इब्रानी में गलगथा।
१८ यहां उन्होंने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया-; और उनके साथ दो और को
भी, एक को इधर, दूसरे को उधर, तथा बीच में यीशु को। १९ पिलातुस ने एक
शीर्षक लिखकर क्रूस पर लगवा दिया। इसमें लिखा हुआ था 'नासरतवासी
यीशु, यहूदियों का राजा'। २० अनेक यहूदियों ने इस शीर्षक को पढ़ा, क्योंकि
वह स्थान जहां यीशु क्रूस पर चढ़ाए गए नगर के समीप ही था, और शीर्षक
इब्रानी, लातीनी और यूनानी भाषाओं में लिखा था। २१ यहूदियों के महा-
पुरोहितों ने पिलातुस से कहा, "यहूदियों का राजा" ऐसा न लिखिए परंतु
यह कि 'उसने कहा था "मैं यहूदियों का राजा हूं"।' २२ पिलातुस ने उत्तर
दिया, 'मैंने जो लिख दिया, वह लिख दिया।'

२३ यीशु को क्रूस पर चढ़ाने उपरांत सैनिकों ने उनके वस्त्रों को
लेकर चार भाग किए; प्रत्येक सैनिक ने अपना भाग लिया। इसी प्रकार
कुरता भी लिया। यह कुरता सीवन रहित संपूर्ण बुना हुआ था; २४ इस-
लिए उन्होंने आपस में कहा, 'इसे फाड़ें नहीं, वरन् इस पर चिट्ठी डालें
कि यह किसका हो।' यह इसलिए हुआ कि शास्त्र का बचन पूरा हो;

'उन्होंने मेरे कपड़े आपस में बांट लिए,
और मेरे वस्त्र पर चिट्ठी डाली।'

25 Now there stood by the cross of Jesus his mother,
and his mother's sister, Mary the wife of Cleophas,
and Mary Magdalene. 26 When Jesus therefore saw
his mother, and the disciple standing by, whom he
loved, he saith unto his mother, Woman, behold thy
son! 27 Then saith he to the disciple, Behold thy
mother! And from that hour that disciple took her
unto his own home.

28 After this, Jesus knowing that all things were
now accomplished, that the scripture might be fulfilled,
saith, I thirst. 29 Now there was set a vessel full of
vinegar: and they filled a spunge with vinegar, and
put it upon hyssop, and put it to his mouth. 30 When
Jesus therefore had received the vinegar, he said, It
is finished: and he bowed his head, and gave up the
ghost.

THE LANCE-THRUST

31 The Jews therefore, because it was the prepara-
tion, that the bodies should not remain upon the cross
on the sabbath day, (for that sabbath day was an high
day,) besought Pilate that their legs might be broken,
and that they might be taken away. 32 Then came
the soldiers and brake the legs of the first, and of the
other which was crucified with him. 33 But when they
came to Jesus, and saw that he was dead already, they
brake not his legs: 34 but one of the soldiers with a
spear pierced his side, and forthwith came there out
blood and water. 35 And he that saw it bare record,
and his record is true: and he knoweth that he saith
true, that ye might believe. 36 For these things were
done, that the scripture should be fulfilled, A bone of
him shall not be broken. 37 And again another scrip-
ture saith, They shall look on him whom they pierced.

THE BURIAL

38 And after this Joseph of Arimathæa, being a
disciple of Jesus, but secretly for fear of the Jews,
besought Pilate that he might take away the body of
Jesus: and Pilate gave him leave. He came therefore,

२५ अस्तु, सैनिकों ने ऐसा ही किया। यीशु के क्रूस के समीप उनकी
माता, माता की बहिन मरियम, जो क्लोपास की पत्नी थी, तथा मरियम
मगदलीनी खड़ी थीं। २६ यीशु ने अपनी माता और उस शिष्य को, जिसे
वह प्रेम करते थे, पास खड़े देखा तो माता से बोले, 'महिला, देखो, तुम्हारा
पुत्र!' २७ तब शिष्य से बोले, 'देखो, तुम्हारी माता!' उसी समय से वह
उन्हें अपने घर ले गया।

२८ इसके अनंतर यीशु ने, यह जानकर कि सब कुछ पूर्ण हो चुका,
शास्त्र का लेख पूरा करने के निमित्त कहा, 'मैं प्यासा हूं।' वहां अम्लरस
से भरा हुआ एक पात्र रखा था। २९ लोगों ने अम्लरस में भिगोए स्पंज को
*जूफे पर रखकर उनके मुख पर लगाया। ३० जब यीशु ने अम्लरस ग्रहण
कर लिया तो कहा, 'पूर्ण हुआ' और सिर झुकाकर प्राण त्याग दिए।

भाले से बेधना

३१ यह 'परास्केव'† का दिन था। इसलिए यहूदियों ने पिलातुस से
निवेदन किया, 'उन लोगों की टांगें तोड़ दी जाएं और वे उतार लिए जाएं',
जिससे सबत' के दिन शरीर क्रूस पर न रहे, क्योंकि वह सबत का दिन एक
प्रधान दिन था। ३२ इसलिए सैनिक गए और यीशु के साथ क्रूसित पहले
व्यक्ति की टांगें तोड़ीं और फिर दूसरे की; ३३ परंतु जब उनके पास आकर
देखा कि वह पहिले ही प्राण त्याग चुके तो उनकी टांगें नहीं तोड़ीं। ३४ पर
एक सैनिक ने उनके पार्श्व में भाला मारा, और तत्काल उसमें से रक्त तथा
जल प्रवाहित हुआ। ३५ जिसने यह देखा, उसने साक्षी दी है—उसकी साक्षी
सत्य है-वह जानता है कि सत्य बोल रहा है जिससे तुम भी विश्वास करो।
३६ यह इसलिए हुआ कि शास्त्र का बचन पूरा हो 'उसकी कोई हड्डी
न तोड़ी जाएगी।' ३७ पुनः शास्त्र का कथन है, 'जिसे उन्होंने बेधा है,
उसे वे देखेंगे।'

यीशु का अभ्यंजन और दफ़न

३८ इसके अनंतर अरमतियाह के यूसुफ ने, जो यहूदियों के भय के
कारण यीशु के गुप्त शिष्य थे, पिलातुस से यीशु के शरीर को ले जाने की
आज्ञा मांगी। पिलातुस ने अनुमति दे दी। अस्तु, वह आकर उनके शव को

* अर्थात, सबत से पूर्व तैयारी का दिन
† पाठान्तर 'भाले'

and took the body of Jesus. 39 And there came also
Nicodemus, which at the first came to Jesus by night,
and brought a mixture of myrrh and aloes, about an
hundred pound weight. 40 Then took they the body
of Jesus, and wound it in linen clothes with the spices
as the manner of the Jews is to bury. 41 Now in the
place where he was crucified there was a garden ; and
in the garden a new sepulchre, wherein was never man
yet laid. 42 There laid they Jesus therefore because
of the Jews' preparation day ; for the sepulchre was
nigh at hand.

THE EMPTY TOMB

20 The first day of the week cometh Mary Magdalene
early, when it was yet dark, unto the sepulchre,
and seeth the stone taken away from the sepulchre.
2 Then she runneth, and cometh to Simon Peter, and
to the other disciple, whom Jesus loved, and saith unto
them, They have taken away the Lord out of the
sepulchre, and we know not where they have laid him.
3 Peter therefore went forth, and that other disciple,
and came to the sepulchre. 4 So they ran both toge-
ther : and the other disciple did outrun Peter, and
came first to the sepulchre. 5 And he stooping down
and looking in, saw the linen clothes lying ; yet went
he not in. 6 Then cometh Simon Peter following him,
and went into the sepulchre, and seeth the linen clothes
lie, 7 and the napkin, that was about his head, not
lying with the linen clothes, but wrapped together in
a place by itself. 8 Then went in also that other dis-
ciple, which came first to the sepulchre, and he saw,
and believed. 9 For as yet they knew not the scrip-
ture, that he must rise again from the dead.

10 Then the disciples went away again unto their
own home.

JESUS APPEARS TO MARY

11 But Mary stood without at the sepulchre
weeping : and as she wept, she stooped down and

ले गए। ३९ निकोदिमुस भी जो पहले, रात्रि के समय, यीशु के पास आए थे,
पचास सेर के लगभग गंध-रस एवं अगरु का मिश्रण लेकर आए। ४० इन
लोगों ने यीशु का शव लिया, यहूदियों की गाड़ने की प्रथा के अनुसार उसे
सुगंध लगाई और कफन में लपेटा। ४१ जहां यीशु क्रूसित किए गए थे,
उस स्थान पर एक उद्यान था और उद्यान में एक नई कबर थी जिसमें
कभी कोई शव नहीं रखा गया था। ४२ यहूदियों की तैयारी का दिन होने के
कारण, और इस कारण कि वह कबर निकट थी, उन्हों ने यीशु को वहां रखा।

२०

समाधि रिक्त मिली

१ सप्ताह के प्रथम दिन, प्रातःकाल जब कि अंधेरा ही था, मरियम
मगदलीनी कबर पर आईं और देखा कि कबर से पत्थर हटा हुआ है। २ इस
पर वह दौड़ी हुईं, शमौन पतरस और दूसरे शिष्य के पास गईं, जिसे यीशु
प्रीति करते थे और कहा, 'वे कबर से प्रभु को उठा ले गए हैं और हम नहीं
जानतीं कि उन्हें कहां रखा है।' ३ तब पतरस और दूसरा शिष्य दोनों
निकले और कबर की ओर चले। ४ वे दोनों साथ साथ दौड़े, पर दूसरा शिष्य
दौड़कर पतरस से आगे निकल गया और कबर पर पहिले पहुँचा। ५ उसने
झुककर देखा कि कफन पड़ा हुआ है, पर वह भीतर नहीं गया। ६ शमौन
पतरस उसके पीछे पीछे पहुँचे, कबर में प्रविष्ट हुए और कपड़ों को पड़े
देखा,: ७ परंतु वह अंगोछा जो उनके सिर पर बंधा था, कपड़ों के साथ नहीं
था, वरन् पृथक् वैसा ही लिपटा रखा था। ८ दूसरे शिष्य ने, जो कबर
पर पहिले पहुँचा था, भीतर जाकर देखा और विश्वास किया। ९ क्योंकि
तब तक वे शास्त्र का बचन नहीं समझे थे कि यीशु का मृतकों में से जी
उठना अनिवार्य है।

१० अस्तु, वे शिष्य अपने घर लौट गए।

मरियम मगदलीनी को दर्शन

११ पर मरियम कबर के पास बाहर रोती खड़ी रहीं। रोते हुए उन्होंने

looked into the sepulchre, 12 and seeth two angels
in white sitting, the one at the head, and the other at
the feet, where the body of Jesus had lain. 13 And
they say unto her, Woman, why weepest thou ? She
saith unto them, Because they have taken away my
Lord, and I know not where they have laid him. 14
And when she had thus said, she turned herself back
and saw Jesus standing, and knew not that it was Jesus.
15 Jesus saith unto her, Woman, why weepest thou ?
whom seekest thou ? She, supposing him to be the
gardener, saith unto him, Sir, if thou have borne him
hence, tell me where thou hast laid him, and I will
take him away. 16 Jesus saith unto her, Mary. She
turned herself, and saith unto him, Rabboni ; which is
to say, Master. 17 Jesus saith unto her, Touch me
not ; for I am not yet ascended to my Father : but go
to my brethren, and say unto them, I ascend unto my
Father, and your Father ; and to my God, and your
God. 18 Mary Magdalene came and told the disciples
that she had seen the Lord, and that he had spoken
these things unto her.

JESUS APPEARS TO THE APOSTLES

19 Then the same day at evening, being the first
day of the week, when the doors were shut where the
disciples were assembled for fear of the Jews, came
Jesus and stood in the midst, and saith unto them,
Peace be unto you. 20 And when he had so said, he
shewed unto them his hands and his side. Then were
the disciples glad, when they saw the Lord. 21 Then
said Jesus to them again, Peace be unto you : as my
Father hath sent me, even so send I you. 22 And
when he had said this, he breathed on them, and saith
unto them, Receive ye the Holy Ghost : 23 whose
soever sins ye remit, they are remitted unto them ; and
whose soever sins ye retain, they are retained.

JESUS APPEARS TO THOMAS

24 But Thomas, one of the twelve, called Didymus
was not with them when Jesus came. The other dis-

कबर में झांका १२ तो दो स्वर्ग-दूतों को श्वेत वस्त्र पहने, और उस स्थान पर,
जहां पहले यीशु का शव रखा था, बैठे देखा—एक सिरहाने बैठा था और
दूसरा पैताने। १३ वे बोले 'महिला, तुम क्यों रोती हो?' उन्होंने उत्तर
दिया, 'वे लोग मेरे प्रभु को उठाकर ले गए और मैं नहीं जानती कि उन्हें कहां
रखा है।' १४ यह कहकर वह पीछे मुड़ीं और यीशु को खड़ा देखा, पर न
जाना कि वह यीशु हैं। १५ यीशु ने उनसे कहा, 'हे महिला, तुम क्यों रो रही
हो? तुम किसे ढूंढ़ रही हो?' वह उनको माली समझ कर बोलीं, 'महोदय,
यदि आप उन्हें ले गए हों तो बता दीजिए कि उन्हें कहां रखा है कि मैं
उनको उठा ले जाऊं।' १६ यीशु ने उनसे कहा, 'मरियम!' वह मुड़ीं और
इब्रानी में बोली, 'रब्बूनी' (अर्थात् हे गुरु)! १७ यीशु ने कहा, 'मुझे
स्पर्श मत करो क्योंकि मैंने अभी पिता के पास आरोहण नहीं किया है, परंतु
मेरे भाइयों के पास जाओ और उनसे कहो कि मैं अपने पिता और तुम्हारे
पिता, अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जा रहा हूं।'
१८ मरियम मगदलीनी ने जाकर शिष्यों से कहा, 'मैंने प्रभु को देखा है,'
और उन्हें प्रभु का संदेश दिया।

प्रेरितों को दर्शन

१९ सप्ताह के प्रथम दिन, सायकाल को जब शिष्यों के द्वार
यहूदियों के भय के कारण बंद थे, यीशु वहां आए और उनके बीच खड़े
होकर बोले, 'तुम्हें शांति मिले;' तथा यह कहकर अपने हाथ और पार्श्व उन्हें
दिखाए।' २० शिष्य प्रभु को देखकर आनंद-विभोर हो गए। २१ यीशु ने
उनसे फिर कहा, 'तुम्हें शांति मिले। जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं
तुमको भेजता हूं।' २२ यह कहकर उन्होंने उन पर श्वास फूंका और कहा,
'पवित्र आत्मा लो। २३ जिनके पाप तुम क्षमा करो, वे क्षमा किए गए और
जिनके रखो, वे रखे गए हैं।'

थोमा को दर्शन

२४ यीशु आए तो बारह में से एक अर्थात् थोमा, जो दिदुमुस भी

ciples therefore said unto him, We have seen the Lord.
25 But he said unto them, Except I shall see in his
hands the print of the nails, and put my finger into
the print of the nails, and thrust my hand into his
side, I will not believe.

26 And after eight days again his disciples were
within, and Thomas with them : then came Jesus, the
doors being shut, and stood in the midst, and said,
Peace be unto you. 27 Then saith he to Thomas,
Reach hither thy finger, and behold my hands ; and
reach hither thy hand, and thrust it into my side :
and be not faithless, but believing. 28 And Thomas
answered and said unto him, My Lord and my God.
29 Jesus saith unto him, Thomas, because thou hast seen
me, thou hast believed : blessed are they that have not
seen, and yet have believed.

THE OBJECT OF THIS GOSPEL

30 And many other signs truly did Jesus in the
presence of his disciples, which are not written in this
book : 31 but these are written, that ye might believe
that Jesus is the Christ, the Son of God ; and that
believing ye might have life through his name.

JESUS APPEARS BY THE LAKE TIBERIAS

21 After these things Jesus shewed himself again to
the disciples at the sea of Tiberias ; and on this
wise shewed he himself. 2 There were together Simon
Peter, and Thomas called Didymus, and Nathanæl of
Cana in Galilee, and the sons of Zebedee, and two other
of his disciples. 3 Simon Peter saith unto them, I go a
fishing. They say unto him, We also go with thee.
They went forth, and entered into a ship immediately ;
and that night they caught nothing. 4 But when the
morning was now come, Jesus stood on the shore : but
the disciples knew not that it was Jesus. 5 Then Jesus
saith unto them, Children, have ye any meat ? They
answered him, No. 6 And he said unto them, Cast the

कहलाते हैं, शिष्यों के साथ नहीं थे। २५ अन्य शिष्यों ने उनसे कहा कि
'हमने प्रभु को देखा है, तो वह बोले, 'जब तक मैं उनके हाथों में कीलों के
चिह्न न देख लूं, और कीलों के स्थान में अपनी अंगुली एवं उनके पार्श्व
में अपना हाथ न डालूं, तब तक विश्वास नहीं करूंगा।'

२६ आठ दिन के अनंतर उनके शिष्य फिर घर में थे, और थोमा उनके
साथ थे। यद्यपि द्वार बंद थे तो भी यीशु आए और उनके बीच खड़े होकर
बोले, 'तुमको शांति मिले।' २७ तब उन्होंने थोमा से कहा, 'अपनी अंगुली
यहां लाओ और मेरे हाथों को देखो, अपना हाथ लाओ और मेरे पार्श्व में
डालो और अविश्वासी नहीं वरन् विश्वासी बनो।' २८ थोमा बोल उठे, 'मेरे
प्रभु ! मेरे परमेश्वर !' २९ यीशु ने उनसे कहा, 'क्या तुमने इसलिए विश्वास
किया है कि मुझे देखा है ? धन्य हैं वे जिन्होंने मुझे कभी नहीं देखा और
तो भी विश्वास किया है।'

सुसमाचार लिखने का प्रयोजन

३० यीशु ने अन्य अनेक चिह्न अपने शिष्यों के संमुख दिखाए जो इस
पुस्तक में नहीं लिखे गए हैं। ३१ परंतु ये लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो
कि यीशु ही परमेश्वर के पुत्र ख्रिस्त हैं, और इस विश्वास के द्वारा उनके नाम
से जीवन प्राप्त करो।

२१

समुद्र तट पर शिष्यों का दर्शन

१ इसके पश्चात् यीशु ने तिबिरियास सागर के तट पर पुनः अपने आपको
शिष्यों पर प्रकट किया, और इस प्रकार प्रकट किया। २ शमौन पतरस,
थोमा, जो दिदुमुस कहलाते हैं, नतनएल, जो गलील के काना के निवासी
थे, जबदी के दो पुत्र, तथा अन्य शिष्य एकत्र थे। ३ शमौन पतरस ने
उनसे कहा, 'मैं मछली पकड़ने जाता हूं।' वे बोले, 'हम भी तुम्हारे साथ
चलते हैं।' वे गए और नौका पर चढ़े, पर उस रात कुछ न पकड़ सके।

४ प्रातः काल हो ही रहा था कि यीशु सागर तट पर खड़े थे, परंतु
शिष्यों ने उन्हें नहीं पहिचाना। ५ यीशु ने उनसे कहा, 'बालको, क्या तुम्हारे
पास खाने को कुछ है ?' उन्होंने उत्तर दिया, 'नहीं।' ६ वह बोले, 'नौका की

net on the right side of the ship, and ye shall find.
They cast therefore, and now they were not able to
draw it for the multitude of fishes. 7 Therefore that
disciple whom Jesus loved saith unto Peter, It is the
Lord. Now when Simon Peter heard that it was the
Lord, he girt his fisher's coat unto him, (for he was
naked,) and did cast himself into the sea. 8 And the
other disciples came in a little ship; (for they were not
far from land, but as it were two hundred cubits,)
dragging the net with fishes.

9 As soon then as they were come to land, they
saw a fire of coals there, and fish laid thereon, and
bread. 10 Jesus saith unto them, Bring of the fish
which ye have now caught. 11 Simon Peter went up,
and drew the net to land full of great fishes, an hundred
and fifty and three: and for all there were so many,
yet was not the net broken. 12 Jesus saith unto them,
Come and dine. And none of the disciples durst ask
him, Who art thou? knowing that it was the Lord.
13 Jesus then cometh, and taketh bread, and giveth
them, and fish likewise. 14 This is now the third time
that Jesus shewed himself to his disciples, after that he
was risen from the dead.

JESUS' LAST WORDS TO PETER

15 So when they had dined, Jesus saith to Simon
Peter, Simon, son of Jonas, lovest thou me more than
these? He saith unto him, Yea, Lord; thou knowest
that I love thee. He saith unto him, Feed my lambs.
16 He saith to him again the second time, Simon, son
of Jonas, lovest thou me? He saith unto him, Yea,
Lord; thou knowest that I love thee. He saith unto
him, Feed my sheep. 17 He saith unto him the third
time, Simon, son of Jonas, lovest thou me? Peter was
grieved because he said unto him the third time, Lovest
thou me? And he said unto him, Lord, thou knowest
all things; thou knowest that I love thee. Jesus saith
unto him, Feed my sheep. 18 Verily, verily, I say unto
thee, When thou wast young, thou girdedst thyself, and

दाहिनी ओर जाल डालो तो पाओगे।' उन्होंने जाल डालाऔर मछलियों की
अधिकता के कारण उसे खींच न सके। ७ तब वह शिष्य, जिसे यीशु प्रेम
करते थे, पतरस से बोला, 'यह तो प्रभु हैं।' जब शमौन ने सुना कि प्रभु हैं
तो उन्होंने अपना अंगरखा कस लिया, क्योंकि वह वस्त्र नहीं पहने थे,
और सागर में कूद पड़े। ८ परंतु अन्य शिष्य नाव पर मछलियों से भरे
जाल को खींचते आए, क्योंकि वे तट से अधिक दूर नहीं केवल दो सौ
हाथ दूर थे।

९ जब वे भूमि पर आए तो उन्होंने कोयले की आग पर रखी हुई मछली
और रोटी देखी। १० यीशु ने उनसे कहा, 'जो मछलियां तुमने अभी
पकड़ी हैं उनमें से कुछ लाओ।' ११ शमौन पतरस ने नौका पर चढ़कर
एक सौ तिरपन बड़ी बड़ी मछलियों से भरा जाल तट पर खींचा; और
इतनी मछलियां होने पर भी जाल न फटा। १२ यीशु ने कहा,'आओ,भोजन
करो।' शिष्यों में से किसी को साहस न हुआ कि उनसे पूछें, 'आप कौन हैं?'
क्योंकि वे जानते थे कि वह प्रभु हैं। १३ यीशु आए और रोटी लेकर उन्हें
दीं और वैसे ही मछली भी। १४ मृतकों में से जी उठने के पश्चात् यह
तीसरी बार यीशु ने शिष्यों को दर्शन दिए।

पतरस को अन्तिम आदेश

१५ भोजन के उपरांत यीशु ने शमौन से कहा, 'शमौन, यूहन्ना के पुत्र,
क्या तुम मुझे इन से अधिक प्रेम करते हो?' वह बोले, 'हां प्रभु, आप जानते
हैं कि मैं आपसे प्रीति करता हूं।' उन्होंने कहा, 'मेरे मेम्नों को चराओ।'
१६ उन्होंने दूसरी बार फिर कहा, 'शमौन, यूहन्ना के पुत्र क्या तुम मुझ से
प्रेम करते हो?' उन्होंने उत्तर दिया, 'हां प्रभु, आप जानते हैं कि मैं
आपसे प्रीति करता हूं।' वह बोले,'मेरी भेड़ोंकी रखवाली करो।' १७ उन्होंने
तीसरी बार कहा, 'शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तुम मुझ से प्रीति करते हो?'
पतरस दुखी हुए कि उन्होंने तीसरी बार पूछा कि क्या तुम मुझे प्रीति
करते हो, और बोले, 'प्रभु आप सब कुछ जानते हैं। आप जानते हैं कि
मैं आपसे प्रीति करता हूं।' यीशु ने कहा, 'मेरी भेड़ों को चराओ। १८ मैं
तुमसे सच सच कहता हूं कि जब तुम युवा थे तो कमर बांध कर जहां
चाहते जाते थे; पर जब तुम वृद्ध होगे तो अपने हाथ फैलाओगे और कोई
दूसरा, तुम्हारी कमर बांध कर, जहां तुम न चाहोगे वहां तुम्हें ले जाएगा।'

walkedst whither thou wouldest : but when thou shalt
be old, thou shalt stretch forth thy hands, and another
shall gird thee, and carry thee whither thou wouldest
not. 19 This spake he, signifying by what death he
should glorify God. And when he had spoken this, he
saith unto him, Follow me. 20 Then Peter, turning
about, seeth the disciple whom Jesus loved following ;
which also leaned on his breast at supper, and said, Lord,
which is he that betrayeth thee ? 21 Peter seeing him
saith to Jesus, Lord, and what shall this man do ?
22 Jesus saith unto him, If I will that he tarry till I
come, what is that to thee ? follow thou me. 23 Then
went this saying abroad among the brethren, that that
disciple should not die : yet Jesus said not unto him, He
shall not die ; but, If I will that he tarry till I come,
what is that to thee ?

CONCLUSION

24 This is the disciple which testifieth of these things, and wrote these things : and we know that his testimony is true.

25 And there are also many other things which Jesus did, the which, if they should be written every one, I suppose that even the world itself could not contain the books that should be written. Amen.

१९ (ऐसा उन्होंने यह सूचित करने के लिए कहा कि पतरस किस प्रकार की
मृत्यु से परमेश्वर को महिमान्वित करेंगे।) इतना कह कर वह बोले, 'तुम
मेरा अनुसरण करो।' २० पतरस ने मुड़कर उस शिष्य को अनुसरण करते देखा,
जिसे यीशु प्रेम करते थे, और जिसने भोजन करते समय यीशु के वक्षस्थल
पर झुक कर पूछा था, 'प्रभु, वह कौन है जो आपको पकड़वाएगा।' २१ उसको
आते देखकर पतरस यीशु से बोले, 'प्रभु, इसका क्या होगा?' २२ यीशु ने
कहा, 'यदि मेरी इच्छा हो कि वह मेरे आने तक रहे, तो इससे तुम्हें क्या?
तुम मेरा अनुसरण करो।' २३ यह बात भाइयों में फैल गई कि वह शिष्य
कभी नहीं मरेगा, पर यीशु ने यह नहीं कहा था कि वह नहीं मरेगा,
वरन् यह कि 'यदि मेरी इच्छा हो कि वह मेरे आने तक बना रहे, तो
तुम्हें क्या?'

उपसंहार

२४ यही वह शिष्य है, जो इन बातों के विषय में साक्षी दे रहा है, और
जिसने इन बातों को लिखा है; और हम जानते हैं कि उसकी साक्षी सत्य है।

२५ और भी अनेक कार्य हैं जो यीशु ने किए; यदि उनमें से प्रत्येक
लिखा जाता तो मैं मानता हूं कि जो पुस्तकें लिखी जातीं, वे संसार भर में
नहीं समातीं।

THE ACTS OF THE APOSTLES

INTRODUCTION

THE former treatise have I made, O Theophilus, of
all that Jesus began both to do and teach, 2 until
the day in which he was taken up, after that he through
the Holy Ghost had given commandments unto the
apostles whom he had chosen: 3 to whom also he
shewed himself alive after his passion by many infallible
proofs, being seen of them forty days, and speaking of
the things pertaining to the kingdom of God: 4 and,
being assembled together with them, commanded them
that they should not depart from Jerusalem, but wait
for the promise of the Father, which, saith he, ye have
heard of me. 5 For John truly baptized with water;
but ye shall be baptized with the Holy Ghost not many
days hence.

ASCENSION OF JESUS

6 When they therefore were come together, they
asked of him, saying, Lord, wilt thou at this time restore
again the kingdom to Israel? 7 And he said unto them,
It is not for you to know the times or the seasons,
which the Father hath put in his own power. 8 But
ye shall receive power, after that the Holy Ghost is
come upon you: and ye shall be witnesses unto me
both in Jerusalem, and in all Judæa, and in Samaria,
and unto the uttermost part of the earth. 9 And when
he had spoken these things, while they beheld, he was
taken up; and a cloud received him out of their sight.
10 And while they looked stedfastly toward heaven as
he went up, behold, two men stood by them in white
apparel; 11 which also said, Ye men of Galilee, why
stand ye gazing up into heaven? this same Jesus, which

प्रेरितों के कार्य

१

प्रस्तावना

१ हे थियुफिलुस, मैंने अपने ग्रंथ के प्रथम भाग में उन सब बातों का
वर्णन किया जो यीशु उस दिन तक करते और सिखाते रहे २ जब तक कि वह
अपने निर्वाचित शिष्यों को पवित्र आत्मा द्वारा आज्ञा देने के पश्चात, ऊपर
न उठा लिए गए। ३ उन्होंने अपने दुःख भोग के पश्चात् अनेक अकाट्य
प्रमाणों से अपने आपको जीवित प्रदर्शित किया, और चालीस दिन तक वह
उन्हें दर्शन देते तथा परमेश्वर के राज्य के विषय में उनसे वार्तालाप करते रहे।
४ प्रेरितों के साथ भोजन करते समय* यीशु ने उन्हें आदेश दिया, 'यरू-
शलेम से बाहर न जाना, वरन् पिता की उस प्रतिज्ञा के पूर्ण होने की
प्रतीक्षा करना, जिसकी चर्चा तुमने मुझसे सुनी है; ५ क्योंकि यूहन्ना ने तो
जल से बपतिस्मा दिया, परंतु थोड़े ही दिन पश्चात तुम पवित्र आत्मा से
बपतिस्मा पाओगे।'

स्वर्गारोहण

६ जब शिष्य एकत्रित हुए तो पूछने लगे, 'प्रभु क्या आप इस समय
इस्राएल के लिए राज्य पुनः स्थापित करेंगे?' ७ उन्होंने कहा, 'यह तुम्हारा
काम नहीं कि उन निश्चित समय अथवा कालों को जानो जिन्हें पिता ने
अपने अधिकार में रखा है। ८ परंतु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा
तो तुम सामर्थ्य प्राप्त करोगे और यरूशलेम में, समस्त यहूदिया में, सामरिया
में और पृथ्वी के सीमांत तक मेरे साक्षी होंगे!' ९ इतना कहने के पश्चात्
वह उनको देखते देखते ऊपर उठा लिए गए और बादलने उन्हें उनकी आंखों से
ओझल कर दिया। १० यीशु के आरोहण के समय जब वे लोग आकाश
की ओर टकटकी लगाकर देख रहे थे तो एकाएक उज्वल वस्त्रधारी दो पुरुष
उनके पास आ खड़े हुए ११ और बोले, 'गलील निवासी पुरुषो, तुम खड़े खड़े
आकाश की ओर क्यों देख रहे हो?' यह यीशु, जो तुम्हारे पास से आकाश
में उठा लिए गए हैं, इसीप्रकार आएंगे, जैसे तुमने उनको आकाशमें जाते देखा है।'

* पाठान्तर 'से मिलकर'

is taken up from you into heaven, shall so come in like
manner as ye have seen him go into heaven.

APPOINTMENT OF A TWELFTH APOSTLE

12 Then returned they unto Jerusalem from the
mount called Olivet, which is from Jerusalem a sabbath
day's journey. 13 And when they were come in, they
went up into an upper room, where abode both Peter,
and James, and John, and Andrew, Philip, and Thomas,
Bartholomew, and Matthew, James the son of Alphæus,
and Simon Zelotes, and Judas the brother of James.
14 These all continued with one accord in prayer and
supplication, with the women, and Mary the mother of
Jesus, and with his brethren.

15 And in those days Peter stood up in the midst of
the disciples, and said, (the number of names together
were about an hundred and twenty,)
16 Men and brethren, this scripture must needs
have been fulfilled, which the Holy Ghost by the mouth
of David spake before concerning Judas, which was
guide to them that took Jesus. 17 For he was numbered
with us, and had obtained part of this ministry.
18 Now this man purchased a field with the reward of
iniquity ; and falling headlong, he burst asunder in the
midst, and all his bowels gushed out. 19 And it was
known unto all the dwellers at Jerusalem ; insomuch as
that field is called in their proper tongue, Aceldama,
that is to say, The field of blood. 20 For it is written
in the book of Psalms,

> Let his habitation be desolate,
> And let no man dwell therein :

and

> His bishoprick let another take.

21 Wherefore of these men which have companied
with us all the time that the Lord Jesus went in and
out among us, 22 beginning from the baptism of John,
unto that same day that he was taken up from us,
must one be ordained to be a witness with us of his
resurrection. 23 And they appointed two, Joseph called

बारहवें प्रेरित की नियुक्ति

१२ तब वे जैतून-कुंज नामक पर्वत से, जो यरूशलेम के समीप है और वहां से एक सबत की यात्रा की दूरी पर है, यरूशलेम लौट आए। १३ वहां पहुंचकर वे उस ऊपरी कक्ष में गए जहां पतरस, यूहन्ना, याकूब, अन्द्रियास, फिलिप्पुस थोमा, बरतुलमय, मत्ती, हलफई के पुत्र याकूब, शमौन जैलोतेस और याकूब के पुत्र यहूदा ठहरे हुए थे। १४ ये सब, अनेक स्त्रियों, यीशु की माता मरियम तथा उनके भाइयों सहित, एक-चित्त हो प्रार्थना में लगे रहे।

१५ इन्हीं दिनों पतरस ने भाइयों के बीच, अर्थात् कोई एक सौ बीस व्यक्तियों के समुदाय में खड़े होकर कहा, १६ 'भाइयो, यह अनिवार्य था कि शास्त्र की भविष्यवाणी पूरी हो जो पवित्र आत्मा ने दाऊद के मुंह से यहूदा के विषय में कही थी, जो यीशु को पकड़वाने वालों का मार्ग-दर्शक था। १७ उसकी हमारे साथ गणना होती थी और वह इस सेवा में हमारा साथी था। १८ उसने अपने अधर्म के धन से एक खेत मोल लिया; परंतु वह सिर के बल गिरा, उसका पेट फट गया और उसकी आतें बाहर निकल पड़ीं। १९ यरूशलेम के सब निवासी यह जान गए; इस कारण उनकी भाषा में उस खेत का नाम "हकलदमा" अर्थात् रक्त का खेत पड़ गया है। २० भजन संहिता का लेख भी है :

"उसका निवास निर्जन हो जाए,
उसमें बसने वाला कोई न बचे"

और

"उसका पद कोई दूसरा ग्रहण करे।"

२१-२२ इसलिए यह उचित है कि एक मनुष्य हमारे साथ पुनरुत्थान का साक्षी हो; और वह उन मनुष्यों में से हो जो यूहन्ना के बपतिस्मा से लेकर यीशु के स्वर्गारोहण के दिन तक सदा हमारे साथ रहे हैं जब प्रभु यीशु हमारे बीच आते जाते रहे।' २३ इस पर उन्होंने दो व्यक्तियों को खड़ा किया, एक यूसुफ को जो बरसबा कहलाते थे और जिनका उपनाम

Barsabas, who was surnamed Justus, and Matthias.
24 And they prayed, and said, Thou, Lord, which
knowest the hearts of all men, shew whether of these
two thou hast chosen, 25 that he may take part of this
ministry and apostleship, from which Judas by transgres-
sion fell, that he might go to his own place. 26 And
they gave forth their lots ; and the lot fell upon Mat-
thias ; and he was numbered with the eleven apostles.

THE GIFT OF THE HOLY SPIRIT

2 And when the day of Pentecost was fully come, they
were all with one accord in one place. 2 And sud-
denly there came a sound from heaven as of a rushing
mighty wind, and it filled all the house where they were
sitting. 3 And there appeared unto them cloven tongues
like as of fire, and it sat upon each of them. 4 And
they were all filled with the Holy Ghost, and began to
speak with other tongues, as the Spirit gave them
utterance.

5 And there were dwelling at Jerusalem Jews,
devout men, out of every nation under heaven. 6 Now
when this was noised abroad, the multitude came toge-
ther, and were confounded because that every man
heard them speak in his own language. 7 And they
were all amazed and marvelled, saying one to another,
Behold, are not all these which speak Galilæans ? 8 And
how hear we every man in our own tongue, wherein we
were born ? 9 Parthians, and Medes, and Elamites, and
the dwellers in Mesopotamia, and in Judæa, and Cappa-
docia, in Pontus, and Asia, 10 Phrygia, and Pamphylia,
in Egypt, and in the parts of Libya about Cyrene,
and strangers of Rome, Jews and proselytes, 11 Cretes
and Arabians, we do hear them speak in our tongues
the wonderful works of God. 12 And they were all
amazed, and were in doubt, saying one to another,
What meaneth this ? 13 Others mocking said, These
men are full of new wine.

यूसतुस था को और दूसरे मतिय्याहको, २४ और उन्होंने प्रार्थना की, 'हे
अंतर्यामी प्रभु, यह प्रकट कीजिए कि इन दोनों में से आपने किसको चुना है
कि उस सेवा एवं प्रेरित-पद को ग्रहण करे, २५ जिससे च्युत होकर यहूदा
अपने स्थान को चला गया।' २६ तब उन्होंने चिट्ठियां डालीं। चिट्ठी
मतिय्याह के नाम पर निकली और वह ग्यारह प्रेरितों के साथ सम्मिलित
किए गए।

२

पवित्र आत्मा का अवतरण

१ जब पिंतेकुस्त का दिन आया तो वे सब एक स्थान पर एकत्रित थे।
२ एकाएक आकाश से एक बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ;
और उससे सारा घर, जहां वे बैठे हुए थे, गूंज गया। ३ उन्हें आग के सदृश
जीभें विभाजित होती हुई दीख पड़ीं जो उनमें से प्रत्येक पर आ ठहरीं।
४ वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए, एवं आत्मा ने जैसी उन्हें वाणी
दी, विभिन्न भाषाएं बोलने लगे।

५ आकाश के नीचे स्थित सब देशों के श्रद्धालु यहूदी यरूशलेम में
रहते थे। ६ जब यह शब्द हुआ तो भीड़ लग गई; लोग घबरा गए क्योंकि
प्रत्येक ने उनको अपनी ही भाषा में बोलते सुना। ७ वे सब चकित रह गए और
विस्मित हो कहने लगे, 'देखो, ये जो बोल रहे हैं, क्या सब गलील-निवासी
नहीं हैं? ८ तो फिर हममें से प्रत्येक अपनी अपनी भाषा कैसे सुन रहा है?
९ पारथी, मेदी, एलामी और मेसोपोतामिया, यहूदिया, कप्पदूकिया, पोंतुस,
आसिया, १० फ्रूगिया, पंफूलिया, मिस्र कुरेने के निकटवर्त्ती लिबिया प्रांत के
निवासी रोम के प्रवासी यहूदी तथा ११ नवयहूदी, क्रेत और अरब के निवासी
—हम लोग अपनी अपनी भाषा में इनसे परमेश्वर के महान् कार्यों की चर्चा सुन
रहे हैं।' १२ वे सब चकित रह गए और घबराकर एक दूसरे से पूछने लगे,
'इसके क्या अर्थ?' १३ परंतु दूसरों ने उपहास करते हुए कहा, 'ये तो नई
मदिरा पीकर मत्त हो रहे हैं।'

PETER'S SPEECH AT PENTECOST

14 But Peter, standing up with the eleven, lifted
up his voice, and said unto them, Ye men of Judæa,
and all ye that dwell at Jerusalem, be this known
unto you, and hearken to my words: 15 For these are
not drunken, as ye suppose, seeing it is but the third
hour of the day. 16 But this is that which was spoken
by the prophet Joel;

17 And it shall come to pass in the last days, saith God,
I will pour out of my Spirit upon all flesh:
And your sons and your daughters shall prophesy,
And your young men shall see visions,
And your old men shall dream dreams:
18 And on my servants and on my handmaidens
I will pour out in those days of my Spirit; and they
shall prophesy:
19 And I will shew wonders in heaven above,
And signs in the earth beneath;
Blood, and fire, and vapour of smoke:
20 The sun shall be turned into darkness,
And the moon into blood,
Before that great and notable
Day of the Lord come:
21 And it shall come to pass, that whosoever shall
call on the name of the Lord shall be saved.

22 Ye men of Israel, hear these words; Jesus of
Nazareth, a man approved of God among you by
miracles and wonders and signs, which God did by
him in the midst of you, as ye yourselves also know:
23 him, being delivered by the determinate counsel and
foreknowledge of God, ye have taken, and by wicked
hands have crucified and slain: 24 whom God hath
raised up, having loosed the pains of death: because
it was not possible that he should be holden of it.
25 For David speaketh concerning him,

I foresaw the Lord always before my face,
For he is on my right hand, that I should not be
moved:

पिंतेकुस्त के दिन पतरस का भाषण

१४ तब पतरस ने ग्यारह के साथ खड़े होकर और लोगों को उच्च
स्वर में संबोधित कर इस प्रकार कहा, 'यहूदी भाइयो और सब यरूशलेम
निवासियो, मेरे शब्दों को ध्यान से सुनो। यह जान लो कि १५ जैसा तुम मान
रहे हो, ये लोग नशे में नहीं हैं; क्योंकि अभी तो पहर भर ही दिन चढ़ा
है। १६ परंतु यह वह बात है जो योएल नबी द्वारा कही गई:

१७ "परमेश्वर का वचन है, अंतिम दिनों ऐसा होगा
कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उड़ेलूंगा,
तब तुम्हारे पुत्र और तुम्हारी पुत्रियां नबूवत करेंगी।
तुम्हारे नवयुवक दिव्यदर्शन पाएंगे,
और तुम्हारे वृद्धजन स्वप्न-द्रष्टा होगें।

१८ मैं अपने दास और अपनी दासियों पर
उन दिनों अपना आत्मा उड़ेलूंगा,
और वे नबूवत करेंगे।

१९ मैं ऊपर आकाश में अद्भुत कार्य,
और नीचे पृथ्वी पर चिह्न दिखाऊंगा—
अर्थात् रक्त, अग्नि एवं धूम्रमेघ,

२० प्रभु का महान् और महत्वपूर्ण दिवस आने से पूर्व
सूर्य अंधकारमय हो जाएगा
और चंद्रमा रक्तमय।

२१ और जो कोई प्रभु का नाम लेगा वह उद्धार प्राप्त करेगा।'

२२ 'इस्राएली भाइयो, यह बात सुनो : नासरत-निवासी यीशु नामक
पुरुष को परमेश्वर ने सामर्थ्य के कार्यों, चमत्कारों और चिह्नों द्वारा तुम्हारे
समक्ष प्रमाणित किया—जैसा कि तुम्हें ज्ञात है। २३ वह परमेश्वर की निश्चित
योजना और पूर्वज्ञान के अनुसार पकड़वाए गए और तुमने विधर्मियों के
हाथों उन्हें क्रूस पर चढ़ाया एवं मार डाला। २४ परंतु परमेश्वर ने उनको
मृत्यु की यंत्रणा से मुक्त कर जीवित कर दिया ; यह असम्भव था कि वह
मृत्यु के वश में रहें। २५ दाऊद उनके विषय में कहते हैं,

"मैं प्रभु को सदा अपने संमुख देखता रहा,

Facts: Jesus 1. of God 2. did good 3. Slain 4. Raised up.
2:22-24
Interpretation: Jesus 1. Is Christ 2. Exalted of God to throne 3. Promised H.S. is through Him 4. Remission of Sins through Jesus Xt 5. God hath made him Lord & Xt.
2:30-36

Challenge: Repent (2) be Baptized (3) for Remission of Sins in Name of Jesus (4) Receive Gift of H.S. (5) Promise to you & Children

26 Therefore did my heart rejoice, and my tongue
was glad;
Moreover also my flesh shall rest in hope:
27 Because thou wilt not leave my soul in hell,
Neither wilt thou suffer thine Holy One to see
corruption.
28 Thou hast made known to me the ways of life;
Thou shalt make me full of joy with thy
countenance.

29 Men and brethren, let me freely speak unto you
of the patriarch David, that he is both dead and buried,
and his sepulchre is with us unto this day. 30 Therefore
being a prophet, and knowing that God had sworn with
an oath to him, that of the fruit of his loins, according
to the flesh; he would raise up Christ to sit on his
II (1) throne; 31 he seeing this before spake of the resurrec-
tion of Christ, that his soul was not left in hell, neither
his flesh did see corruption. 32 This Jesus hath God
(2) raised up, whereof we all are witnesses. 33 Therefore
being by the right hand of God exalted, and having
received of the Father the promise of the Holy Ghost,
he hath shed forth this, which ye now see and hear.
34 For David is not ascended into the heavens: but he
saith himself,

The LORD said unto my Lord, Sit thou on my
right hand,
35 Until I make thy foes thy footstool.

36 Therefore let all the house of Israel know assuredly,
that God hath made that same Jesus, whom ye have
crucified, both Lord and Christ.

37 Now when they heard this, they were pricked
in their heart, and said unto Peter and to the rest of the
III apostles, Men and brethren, what shall we do? 38 Then
Peter said unto them, Repent, and be baptized every
one of you in the name of Jesus Christ for the remission
of sins, and ye shall receive the gift of the Holy Ghost.
39 For the promise is unto you, and to your children,
and to all that are afar off, even as many as the Lord

क्योंकि वह मेरी दाहिनी ओर हैं,
जिससे मैं विचलित न होऊं ;
२६ इस कारण मेरा मन मुदित हुआ, एवं मेरी जिह्वा उल्लसित ।
अब मेरा शरीर आशा में विश्राम प्राप्त करेगा,
२७ क्योंकि आप मेरे प्राण पाताल में नहीं छोड़ेंगे
और न अपने पवित्र जन को विकृति का अनुभव होने देंगे ।
२८ आपने मुझे जीवन का पथ बताया है,
आप अपने दर्शन के द्वारा मुझे आनन्द-विभोर करेंगे ।'

२९ 'भाइयो, मैं तुमसे कुलपति दाऊद के विषय में निस्संकोच कह
सकता हूं कि वह मर गए, गाड़े गए और उनकी कबर आज तक हमारे
यहां विद्यमान है । ३० नबी होने के कारण उन्होंने जाना कि परमेश्वर
ने उनसे शपथ खाई है कि तुम्हारे वंश से एक व्यक्ति को तुम्हारे सिंहासन पर
बैठाऊंगा । ३१ उन्होंने ख्रिस्त के पुनरुत्थान के विषय में पहले से ही जान
कर कहा कि न तो वह पाताल में छोड़े गए और न उनका शरीर विकृति
को प्राप्त हुआ । ३२ इन्हीं यीशु को परमेश्वर ने जीवित उठाया है ; हम सब
इसके साक्षी हैं । ३३ इस प्रकार उन्होंने परमेश्वर के दाहिने हाथ से उच्च
पद पाया और पिता से पवित्र आत्मा, जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी, प्राप्त
कर उसे उड़ेल दिया है जो तुम देख और सुन रहे हो । ३४ दाऊद स्वर्ग पर
नहीं चढ़े क्योंकि उन्होंने तो स्वयं कहा है,
"प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा, मेरे दाहिने बैठ
३५ जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की चौकी न बनादूं ।"

३६ इसलिए समस्त इस्राएल वंश निश्चित रूपसे जान ले कि जिन यीशुको
तुमने क्रूसित किया उन्हीं को परमेश्वर ने प्रभु और ख्रिस्त दोनों बना
दिया है ।

३७ यह सुन कर उनके हृदय बिंध गए, और उन्होंने पतरस एवं अन्य
प्रेरितों से पूछा, 'भाइयो, हम क्या करें ?' ३८ पतरस ने उनसे कहा, 'हृदय
परिवर्तन करो, अपने पापों की क्षमा के लिए तुममें से प्रत्येक व्यक्ति यीशु
ख्रिस्त के नाम बपतिस्मा ले ; तब तुमको पवित्र आत्मा का वरदान प्राप्त
होगा ; ३९ क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम और तुम्हारी संतान के लिए है और
उन सबके लिए भी जो दूर है और जिनको हमारे प्रभु परमेश्वर बुलाते

our God shall call. 40 And with many other words did
he testify and exhort, saying, Save yourselves from this
untoward generation. 41 Then they that gladly received
his word were baptized : and the same day there were
added unto them about three thousand souls. 42 And
they continued stedfastly in the apostles' doctrine and
fellowship, and in breaking of bread, and in prayers.

THE RELIGIOUS LIFE OF THE CHRISTIAN SOCIETY

43 And fear came upon every soul : and many
wonders and signs were done by the apostles. 44 And
all that believed were together, and had all things
common ; 45 and sold their possessions and goods, and
parted them to all men, as every man had need. 46 And
they, continuing daily with one accord in the temple,
and breaking bread from house to house, did eat their
meat with gladness and singleness of heart, 47 praising
God, and having favour with all the people. And the
Lord added to the church daily such as should be saved.

CURE OF A LAME BEGGAR

3 Now Peter and John went up together into the
temple at the hour of prayer, being the ninth hour.
2 And a certain man lame from his mother's womb
was carried, whom they laid daily at the gate of the
temple which is called Beautiful, to ask alms of them
that entered into the temple ; 3 who seeing Peter and
John about to go into the temple asked an alms. 4 And
Peter, fastening his eyes upon him with John, said, Look
on us. 5 And he gave heed unto them, expecting to
receive something of them. 6 Then Peter said, Silver
and gold have I none ; but such as I have give I thee :
In the name of Jesus Christ of Nazareth rise up and
walk. 7 And he took him by the right hand, and
lifted him up : and immediately his feet and ankle bones
received strength. 8 And he leaping up stood, and
walked, and entered with them into the temple, walking,

हैं।' ४० वह और भी बहुत सी बातों से साक्षी दे देकर उन्हें प्रोत्साहित करते रहे कि अपने आपको उस भ्रष्ट पीढ़ी से बचाएं। ४१ जिन लोगों ने उनका उपदेश ग्रहण किया, उन्होंने बपतिस्मा लिया और उस दिन लगभग तीन सहस्र व्यक्ति उनमें सम्मिलित हुए। ४२ वे प्रेरितों की शिक्षा, संगति, रोटी के तोड़ने* एवं प्रार्थना में लवलीन रहने लगे।

ख्रिस्तीय समाज का धार्मिक जीवन

४३ सब लोगों पर भय छाया हुआ था, और प्रेरितों द्वारा बहुत चमत्कार और चिह्न होते थे। ४४ सब विश्वासी एक साथ रहा करते थे और उनकी सब वस्तुएं साझे में थीं। ४५ वे अपनी चल और अचल संपत्ति बेच देते, और जिसको जैसी आवश्यकता होती थी सब को बांट देते थे। ४६ प्रतिदिन वे मंदिर में एक भाव से उपस्थित होते, गृहों में रोटी को तोड़ते ओर आनन्दमय, सरल हृदय से भोजन करते थे। ४७ वे परमेश्वर की स्तुति करते और जनता के प्रेमपात्र थे। प्रभु उद्धार प्राप्त करने वालों को प्रतिदिन उनमें सम्मिलित करते थे।

३

लंगड़े का स्वस्थ किया जाना

१ पतरस और यूहन्ना तीसरे पहर प्रार्थना के समय मंदिर में जा रहे थे; २ और इधर लोग जन्म के एक लंगड़े को ले जा रहे थे, जिसे वे प्रतिदिन मंदिर के 'सुंदर' नामक द्वार पर बैठा देते थे कि वह मंदिर में जानेवालों से भिक्षा मांगे। ३ जब उसने पतरस और यूहन्ना को देखा कि मंदिर में प्रवेश करने को हैं तो उनसे भिक्षा मांगी।' ४ इस पर पतरस ने, और यूहन्ना ने भी एकटक दृष्टि से उसे देख कर कहा, 'हमारी ओर देख।' ५ वह उनसे कुछ पाने की आशा से उनकी ओर ताकने लगा। ६ पतरस ने कहा, 'मेरे पास चांदी और सोना तो हैं नहीं, परंतु जो कुछ है वह तुझे देता हूं; नासरत निवासी यीशु ख्रिस्त के नाम से चल फिर।' ७ और उन्होंने उसका दाहिना हाथ पकड़ कर उठाया। तत्क्षण उसके पावों और टखनों में बल आ गया। ८ वह उछल कर खड़ा हो गया और चलने फिरने लगा, और चलता, उछलता एवं परमेश्वर की स्तुति करता

* देखिए मत्ती २६:२६

and leaping, and praising God. 9 And all the people saw him walking and praising God : 10 and they knew that it was he which sat for alms at the Beautiful gate of the temple : and they were filled with wonder and amazement at that which had happened unto him.

PETER'S SPEECH IN THE TEMPLE

11 And as the lame man which was healed held Peter and John, all the people ran together unto them in the porch that is called Solomon's, greatly wondering. 12 And when Peter saw it, he answered unto the people, Ye men of Israel, why marvel ye at this ? or why look ye so earnestly on us, as though by our own power or holiness we had made this man to walk ? 13 The God of Abraham, and of Isaac, and of Jacob, the God of our fathers, hath glorified his Son Jesus ; whom ye delivered up, and denied him in the presence of Pilate, when he was determined to let him go. 14 But ye denied the Holy One and the Just, and desired a murderer to be granted unto you ; 15 and killed the Prince of life, whom God hath raised from the dead ; whereof we are witnesses. 16 And his name through faith in his name hath made this man strong, whom ye see and know : yea, the faith which is by him hath given him this perfect soundness in the presence of you all.

17 And now, brethren, I wot that through ignorance ye did it, as did also your rulers. 18 But those things, which God before had shewed by the mouth of all his prophets, that Christ should suffer, he hath so fulfilled. 19 Repent ye therefore, and be converted, that your sins may be blotted out, when the times of refreshing shall come from the presence of the Lord ; 20 and he shall send Jesus Christ, which before was preached unto you : 21 whom the heaven must receive until the times of restitution of all things, which God hath spoken by the mouth of all his holy prophets since the world began. 22 For Moses truly said unto the fathers, A prophet shall the Lord your God raise up unto you

हुआ मंदिर में गया। ९ लोगों ने उसे चलते फिरते और स्तुति करते
देखा १० तो सबसे पहिचान लिया कि यह वही है जो 'सुंदर' फाटक पर
बैठकर भिक्षा मांगा करता था ; उसमें घटित चमत्कार को देखकर वे चकित
और स्तंभित रह गए।

मंदिर में पतरस का उपदेश

११ वह व्यक्ति पतरस और यूहन्ना के साथ लगा था, इसलिए सारी विस्मित
जनता सुलेसान नाम मंडप में उनकी ओर दौड़ पड़ी। १२ यह देखकर पत-
रस ने जनता को संबोधित कर कहा 'इस्राएली भाइयो, इस मनुष्य पर क्यों
आश्चर्य करते हो, और हमारी ओर क्यों दृष्टि लगाए हो, मानो हमने
अपनी सामर्थ्य और भक्ति से इसे चलता-फिरता कर दिया हो ? १३ अब्राहम
इसहाक और याकूब के परमेश्वर, हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने अपने
सेवक यीशु को महिमान्वित किया है। तुमने उन्हें शत्रुओं के हाथ पकड़वा
दिया और पिलातुस के सामने अस्वीकार किया यद्यपि उसने उन्हें छोड़
देने का निश्चय कर लिया था। १४ तुमने उस पवित्र और धर्मात्मा पुरुष को
अस्वीकार किया ; एक हत्यारे को छोड़ने की मांग की, १५ और जीवन
के अधिनायक की हत्या कर डाली। पर उन्हें परमेश्वर ने मृतकों में से
जीवित कर दिया ; इसके हम साक्षी हैं। १६ उन्हीं के नाम ने—उस विश्वास
के द्वारा जो उनके नाम पर है—इस व्यक्ति को, जिसे तुम देखते और
जानते हो, बल प्रदान किया है ; जो विश्वास यीशु* के द्वारा प्राप्त होता
है उसने तुम सबके सामने इसे पूर्ण स्वस्थ कर दिया है।

१७ 'अस्तु, भाइयो मैं जानता हूं कि तुमने और तुम्हारे नेताओं ने यह
काम अज्ञानता से किया ; १८ परंतु परमेश्वर ने सब नबियों के मुख से
पहले ही बता दिया था कि मेरा ख्रिस्त दुःख उठाएगा ; वह उन्होंने इस
रीति से पूरा किया। १९ अतः हृदय-परिवर्तन करो और लौट आओ कि
तुम्हारे पाप मिट जाएं, २० जिससे प्रभु की ओर से विश्रांति का समय
प्राप्त हो और वह तुम्हारे लिए यीशु को अर्थात् पूर्व निर्धारित ख्रिस्त को
भेजें। २१ यह आवश्यक है कि वह स्वर्ग में उस समय तक रहें जब तक
कि समस्त वस्तुओं की पुनः स्थापना न हो जाए, जिसकी चर्चा परमेश्वर ने
सदा अपने नबियों के मुख से की है। २२ मूसा का कथन है, "जैसे प्रभु

* अथवा, 'उस नाम'

of your brethren, like unto me ; him shall ye hear in all
things whatsoever he shall say unto you. 23 And it
shall come to pass, that every soul, which will not hear
that prophet, shall be destroyed from among the people.
24 Yea, and all the prophets from Samuel and those
that follow after, as many as have spoken, have likewise
foretold of these days. 25 Ye are the children of the
prophets, and of the covenant which God made with our
fathers, saying unto Abraham, And in thy seed shall
all the kindreds of the earth be blessed. 26 Unto you
first God, having raised up his Son Jesus, sent him to
bless you, in turning away every one of you from his
iniquities.

PETER AND JOHN BEFORE THE COUNCIL

4 And as they spake unto the people, the priests, and
the captain of the temple, and the Sadducees, came
upon them, 2 being grieved that they taught the people,
and preached through Jesus the resurrection from the
dead. 3 And they laid hands on them, and put them
in hold unto the next day : for it was now eventide.
4 Howbeit many of them which heard the word
believed ; and the number of the men was about five
thousand.

5 And it came to pass on the morrow, that their
rulers, and elders, and scribes, 6 and Annas the high
priest, and Caiaphas, and John, and Alexander, and
as many as were of the kindred of the high priest, were
gathered together at Jerusalem. 7 And when they had
set them in the midst, they asked, By what power, or
by what name, have ye done this ? 8 Then Peter, filled
with the Holy Ghost, said unto them, Ye rulers of
the people, and elders of Israel, 9 if we this day be
examined of the good deed done to the impotent man,
by what means he is made whole ; 10 be it known unto
you all, and to all the people of Israel, that by the name
of Jesus Christ of Nazareth, whom ye crucified, whom

परमेश्वर ने मुझे उठाया वैसे ही तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिए एक
नबी उठाएंगे। वह जो कुछ तुमसे कहे उस पर ध्यान देना। २३ जो मनुष्य
उस नबी की बातों पर ध्यान नहीं देगा, वह इस प्रजा के बीच से नष्ट
हो जाएगा।" २४ सामुएल से लेकर उनके पश्चात् आनेवालों तक सभी
नबियों ने इन दिनों की घोषणा की है। २५ तुम नबियों की और उस
व्यवस्थान की संतान हो जिसकी परमेश्वर ने तुम्हारे पूर्वजों के साथ, अब्राहम
से यह कह कर स्थापना की कि, "तुम्हारे वंश द्वारा संसार की समस्त
जातियां आशिष पाएंगी।" २६ परमेश्वर ने अपने सेवक को जीवित कर
तुम्हारे पास भेजा कि तुम सबको दुष्कर्मों से विमुख करे और
आशिष दे।'

४

परिषद् में पतरस और यूहन्ना

१ जब वे लोगों से बोल रहे थे तो पुरोहित, मंदिर का नायक और सदूकी
उनके पास आ गए; और उन पर झुंझलाए २ कि वे लोगों को उपदेश दे रहे
थे और यीशु का उदाहरण दे देकर मृतकों के पुनरुत्थान का प्रचार कर रहे
थे।' ३ उन्होंने प्रेरितों को पकड़ा और दूसरे दिन तक के लिए कारागार में
डाल दिया, क्योंकि संध्या हो चली थी; ४ परंतु जो लोग बचन सुन रहे थे
उनमें से बहुतों ने विश्वास किया और उन लोगों की संख्या लगभग पांच
सहस्र हो गई।

५ दूसरे दिन प्रातःकाल उनके शासक, धर्मवृद्ध, शास्त्री, ६ महापुरोहित
हन्ना, कैफा, यूहन्ना, सिकंदर और पुरोहित वंश के सब लोग यरूशलेम में
एकत्रित हुए, ७ एवं प्रेरितों को बीच में खड़ा कर पूछने लगे, 'तुम लोगों ने किस
सामर्थ्य से अथवा किस नाम से यह काम किया?' ८ इस पर पतरस ने
पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर उनसे कहा, 'प्रजा के शासको और धर्मवृद्धो,
९ यदि आज हमसे एक दुर्बल मनुष्य का उपकार करने के विषय में प्रश्न किया
जाता है कि वह किस प्रकार स्वस्थ हुआ, १० तो आप सबको और इस्राएल
की समस्त जनता को ज्ञात हो कि जिनको आपने क्रूसित किया परंतु परमेश्वर
ने मृतकों में से जीवित किया, उन नासरत निवासी यीशु के नाम से यह

God raised from the dead, even by him doth this man
stand here before you whole. 11 This is the stone
which was set at nought of you builders, which is
become the head of the corner. 12 Neither is there
salvation in any other : for there is none other name
under heaven given among men, whereby we must be
saved.

13 Now when they saw the boldness of Peter and
John, and perceived that they were unlearned and
ignorant men, they marvelled ; and they took knowledge
of them, that they had been with Jesus. 14 And be-
holding the man which was healed standing with them,
they could say nothing against it. 15 But when they
had commanded them to go aside out of the council,
they conferred among themselves, 16 saying, What shall
we do to these men ? for that indeed a notable miracle
hath been done by them is manifest to all them that
dwell in Jerusalem ; and we cannot deny it. 17 But
that it spread no further among the people, let us straitly
threaten them, that they speak henceforth to no man
in this name. 18 And they called them, and commanded
them not to speak at all nor teach in the name of Jesus.

19 But Peter and John answered and said unto them,
Whether it be right in the sight of God to hearken
unto you more than unto God, judge ye. 20 For we
cannot but speak the things which we have seen and
heard. 21 So when they had further threatened them,
they let them go, finding nothing how they might punish
them, because of the people : for all men glorified God
for that which was done. 22 For the man was above
forty years old, on whom this miracle of healing was
shewed.

PETER AND JOHN RETURN TO THEIR FRIENDS

23 And being let go, they went to their own com-
pany, and reported all that the chief priests and elders
had said unto them. 24 And when they heard that,
they lifted up their voice to God with one accord, and
said, Lord, thou art God, which hast made heaven, and

मनुष्य आपके सामने स्वस्थ खड़ा है। ११ यह वही "पत्थर है जिसे तुम
भवन निर्माताओं ने निकृष्ट समझा, परंतु वह मेहराव की केन्द्रशिला बना
है।" १२ किसी दूसरे व्यक्ति के द्वारा उद्धार नहीं, क्योंकि आकाश के
नीचे मनुष्यों को कोई दूसरा नाम नहीं मिला जिसके द्वारा हम उद्धार
प्राप्त कर सकें।'

१३ वे पतरस और यूहन्ना की निर्भयता देखकर और यह जानकर कि
वे अशिक्षित और साधारण मनुष्य हैं, चकित रह गए ; फिर उनको पहिचाना
कि ये यीशु के साथ रहे हैं। १४ किंतु उनके साथ उस मनुष्य को स्वस्थ
देखकर वे विरोध में कुछ न कह सके। १५ तब वे उनको परिषद् से बाहर
जाने की आज्ञा देकर आपस में विचार करने लगे, १६ 'हम इन मनुष्यों
का क्या करें ? इनके द्वारा एक प्रत्यक्ष चमत्कार हुआ है—यह सब यरूशलेम
निवासियों पर प्रकाशित है और हम इसे अस्वीकार नहीं कर सकते।
१७ फिर भी यह बात जनता में अधिक न फैले, इसलिए हम इन्हें धमकाएं कि
ये यह नाम लेकर फिर किसी मनुष्य से चर्चा न करें ?' १८ तब उन लोगों
को बुलाकर उन्होंने चेतावनी दी कि यीशु का नाम लेकर न कोई चर्चा करें
और न शिक्षा दें। १९ इस पर पतरस और यूहन्ना ने उन्हें उत्तर दिया,
'आप ही न्याय करें ; परमेश्वर की दृष्टि में क्या यह उचित होगा कि हम
परमेश्वर की बात से बढ़कर आप की बात मानें। २० यह तो हमसे नहीं हो
सकता कि जो कुछ हमने देखा और सुना है, उसे न कहें।' २१ तब उन लोगों
ने प्रेरितों को पुनः धमका कर छोड़ दिया क्योंकि जनता के कारण उन्हें दंड
देने का कोई दांव नहीं मिला। सब लोग इस घटना के कारण परमेश्वर की स्तुति
कर रहे थे। २२ इस चमत्कार द्वारा जिस व्यक्ति को स्वास्थ्य लाभ हुआ था
उसकी आयु चालीस वर्ष से अधिक थी।

पतरस और यूहन्ना का अपने साथियों के पास लौटना

२३ वहाँ से छूटकर वे स्वजनों के पास आए और जो कुछ महापुरोहितों
और धर्मवृद्धों ने उनसे कहा था, कह सुनाया। २४ जब उन्होंने यह सुना तो

earth, and the sea, and all that in them is : 25 Who by
the mouth of thy servant David hast said,

Why did the heathen rage,
And the people imagine vain things ?
26 The kings of the earth stood up,
And the rulers were gathered together
Against the Lord, and against his Christ.

27 For of a truth against thy holy child Jesus, whom
thou hast anointed, both Herod, and Pontius Pilate,
with the Gentiles, and the people of Israel, were
gathered together, 28 for to do whatsoever thy hand and
thy counsel determined before to be done. 29 And
now, Lord, behold their threatenings : and grant unto
thy servants, that with all boldness they may speak
thy word, 30 by stretching forth thine hand to heal ;
and that signs and wonders may be done by the name
of thy holy child Jesus. 31 And when they had
prayed, the place was shaken where they were assembled
together ; and they were all filled with the Holy Ghost,
and they spake the word of God with boldness.

Church 5th

THE COMMON FUND

32 And the multitude of them that believed were
of (1) one heart and of one soul : neither said any of them
that ought of the (2) things which (3) he possessed was his
own ; but they had all things common. 33 And with
great power gave the apostles witness of the resurrec- (5)
(4) tion of the Lord Jesus : and great grace was upon them
all. 34 Neither was there any among them that lacked : (6)
for as many as were possessors of lands or houses sold
them, and brought the prices of things that were sold,
(7) 35 and laid them down at the apostles' feet : and dis-
(8) tribution was made unto every man according as he had
need. 36 And Joses, who by the apostles was surnamed
Barnabas, (which is, being interpreted, The son of con-
solation,) a Levite, and of the country of Cyprus,
A 37 having land, sold it, and brought the money, and
laid it at the apostles' feet.

समवेत स्वर में परमेश्वर की स्तुति की, 'हे स्वामी, आप आकाश, पृथ्वी
और समुद्र तथा इनमें जो कुछ है सबके सृष्टिकर्ता हैं।' २५ आपने पवित्र
आत्मा के द्वारा हमारे पूर्वज अपने सेवक दाऊद के मुख से कहा है,

"अन्य जातियां क्यों उद्धत बनीं ?
और, राष्ट्रों ने क्यों व्यर्थ बातों की कल्पना की ?
२६ प्रभु के विरोध में और उनके ख्रिस्त के विरोध में
पृथ्वी के राजा उठ खड़े हुए
और शासकगण एक स्थान पर एकत्रित हुए।"

२७ 'क्योंकि निस्संदेह आपके पवित्र सेवक यीशु के विरुद्ध, जिनका
अभिषेक आपने किया था, इस नगर में हेरोदेस और पुंतियिसु पिलातुस
विजातियों और इस्राएल की जनता के साथ एकत्रित हुए, २८ कि आपकी
योजना एवं सामर्थ्य ने पहिले से जो कुछ निर्धारित किया था, उसे करें।
२९ अब, हे प्रभु, उनकी धमकियों को देखिये और अपने दासों को वरदान
दीजिए कि आपका बचन पूरी निर्भयता से सुनाएं, ३० और स्वस्थ करने के
लिये अपने हाथ बढ़ाइए कि आपके पवित्र सेवक यीशु के नाम द्वारा चिह्न
एवं चमत्कार हों।' ३१ जब उन्होंने प्रार्थना की तो वह स्थान जहां वे एकत्र
हुए थे हिल गया ; पवित्र आत्मा से वे परिपूर्ण हो गए और परमेश्वर का बचन
निर्भयता से सुनाने लगे।

शिष्यों का संयुक्त कोष

३२ विश्वासियों का वह समुदाय एक मन और एक प्राण था ; उनमें
कोई भी अपनी संपत्ति को अपना नहीं समझता था, वरन् उन की सब वस्तुएं
साझे में थीं। ३३ प्रेरित बड़ी सामर्थ्य से प्रभु यीशु के पुनरुत्थान के
संबंध में अपनी साक्षी देते थे और उन सब पर महान् अनुग्रह था।
३४ कोई भी दरिद्र नहीं था क्योंकि जिनके पास भूमि या घर थे, वे उनको
बेच बेच कर, बिकी हुई वस्तुओं का मूल्य लाते ३५ और उसे प्रेरितों के
चरणों में रख देते थे, एवं वे प्रत्येक मनुष्य को उसकी आवश्यकतानुसार बांट
देते थे। ३६ उदाहरण के लिए, कुप्रुस निवासी यूसुफ नामक एक लेवी के
पास, जिसे प्रेरितों ने बरनबास अर्थात् सान्त्वना का पुत्र उपनाम* दिया था,
कुछ भूमि थी। ३७ उसने उसे बेचा, और मूल्य लाकर प्रेरितों के चरणों में
रख दिया।

ANANIAS AND SAPPHIRA

5 But a certain man named Ananias, with Sapphira
his wife, sold a possession, 2 and kept back part of
the price, his wife also being privy to it, and brought
a certain part, and laid it at the apostles' feet. 3 But
Peter said, Ananias, why hath Satan filled thine heart
to lie to the Holy Ghost, and to keep back part of the
price of the land ? 4 Whiles it remained, was it not
thine own ? and after it was sold, was it not in thine
own power ? why hast thou conceived this thing in
thine heart ? thou hast not lied unto men, but unto
God. 5 And Ananias hearing these words fell down,
and gave up the ghost : and great fear came on all them
that heard these things. 6 And the young men arose,
wound him up, and carried him out, and buried him.

7 And it was about the space of three hours after,
when his wife, not knowing what was done, came in.
8 And Peter answered unto her, Tell me whether ye
sold the land for so much ? And she said, Yea, for so
much. 9 Then Peter said unto her, How is it that
ye have agreed together to tempt the Spirit of the
Lord ? behold, the feet of them which have buried
thy husband are at the door, and shall carry thee out.
10 Then fell she down straightway at his feet, and
yielded up the ghost : and the young men came in, and
found her dead, and carrying her forth, buried her by
her husband. 11 And great fear came upon all the
church, and upon as many as heard these things.

SIGNS AND CURES DONE BY THE APOSTLES

12 And by the hands of the apostles were many
signs and wonders wrought among the people ; (and
they were all with one accord in Solomon's porch.
13 And of the rest durst no man join himself to them :
but the people magnified them, 14 And believers
were the more added to the Lord, multitudes both of
men and women.) 15 Insomuch that they brought
forth the sick into the streets, and laid them on beds

५

हनन्याह और सफीरा

१ परन्तु हनन्याह नामक एक पुरुष और उसकी पत्नी सफीरा ने भी कुछ
भूमि बेची। २ उसने अपनी पत्नी की सम्मति से मूल्य का कुछ अंश रख
लिया और शेष भाग लाकर प्रेरितों के चरणों में रखा। ३ इस पर पतरस
ने कहा, 'हनन्याह, शैतान ने तुम्हारे मन में यह बात क्यों डाली कि तुम पवित्र
आत्मा से झूठ बोलो और भूमि के मूल्य का कुछ अंश रख लो? ४ जब
वह तुम्हारे पास रही तो क्या तुम्हारी नहीं थी? और जब वह बिक गई तो
क्या उसका मूल्य तुम्हारे अधिकार में नहीं था? तुम ने इस विचार को
अपने मन में क्यों स्थान दिया? तुम मनुष्य से नहीं, परमेश्वर से झूठ बोले
हो।' ५ ये शब्द सुनते ही हनन्याह गिर पड़ा और उसके प्राण निकल गए।
और सब सुनने वालों पर बड़ा भय छा गया।' ६ कुछ नवयुवकों ने उठकर
उसकी अर्थी बनाई और बाहर ले जाकर उसे गाड़ दिया।'

७ लगभग तीन घंटे पश्चात् उसकी पत्नी, जो इस घटना से अनभिज्ञ
थी, भीतर आई। ८ पतरस ने उससे पूछा, मुझे बताओ, क्या तुमने वह भूमि
इतने में ही बेची?' उसने कहा, 'हां इतने में ही।' ९ पतरस ने उससे
कहा, 'यह क्या बात है कि तुम प्रभु के आत्मा की परीक्षा करने के लिए
एकमत हो गए? देखो तुम्हारे पति को गाड़नेवाले द्वार पर हैं, और
वे तुम्हें गाड़ने भी ले जाएंगे।' १० वह उसी क्षण उनके चरणों पर गिर पड़ी
और प्राण छोड़ दिए। नवयुवकों ने भीतर आकर उसे मृत पाया और
बाहर ले जाकर उसके पति के समीप गाड़ दिया। ११ इससे सारी कलीसिया
पर और जितनों ने सुना उन सब पर बड़ा भय छा गया।

चिह्न और चमत्कार

१२ प्रेरितों के द्वारा जनता में बहुत से चिह्न और चमत्कार हो रहे थे।
वे सब एक साथ सुलैमान के मंडप में एकत्र हुआ करते थे। १३ दूसरे
लोगों में से किसी को उनमें सम्मिलित होने का साहस नहीं होता था, फिर
भी जनता उनकी प्रशंसा करती थी। १४ अस्तु, प्रभु पर विश्वास करने
वाले स्त्री-पुरुषों की संख्या बढ़ती गई। १५ सच तो यह है कि लोग रोगियों
को सार्वजनिक स्थानों पर लाकर खाटों और खटोलियों पर लिटा देते थे

and couches, that at the least the shadow of Peter
passing by might overshadow some of them. 16 There
came also a multitude out of the cities round about
unto Jerusalem, bringing sick folks, and them which
were vexed with unclean spirits : and they were healed
every one.

PETER AND JOHN AGAIN BEFORE THE COUNCIL

17 Then the high priest rose up, and all they that
were with him, (which is the sect of the Sadducees,)
and were filled with indignation, 18 and laid their
hands on the apostles, and put them in the common
prison. 19 But the angel of the Lord by night opened
the prison doors, and brought them forth, and said,
20 Go, stand and speak in the temple to the people
all the words of this life. 21 And when they heard
that, they entered into the temple early in the
morning, and taught.

But the high priest came, and they that were with
him, and called the council together, and all the senate
of the children of Israel, and sent to the prison to have
them brought. 22 But when the officers came, and
found them not in the prison, they returned, and told,
23 saying, The prison truly found we shut with all
safety, and the keepers standing without before the
doors : but when we had opened, we found no man
within. 24 Now when the high priest and the captain
of the temple and the chief priests heard these things,
they doubted of them whereunto this would grow.
25 Then came one and told them, saying, Behold, the
men whom ye put in prison are standing in the temple,
and teaching the people. 26 Then went the captain
with the officers, and brought them without violence :
for they feared the people, lest they should have been
stoned.

27 And when they had brought them, they set them
before the council : and the high priest asked them,
28 saying, Did not we straitly command you that ye

कि जब पतरस आएं तो उनकी छाया ही उनमें से किसी पर पड़ जाए।
१६ यरूशलेम के आसपास के नगरों से भी बहुत लोग एकत्र हो रोगियों
और दुष्टात्मा से पीड़ित व्यक्तियों को लाते थे, और वे सब स्वस्थ हो जाते थे।

परिषद् में प्रेरित

१७ इस पर महापुरोहित और उनके सब साथी-अर्थात् स्थानीय सदूकी
लोग ईर्ष्यालु हो उठे। १८ उन्होंने प्रेरितों को पकड़कर सार्वजनिक कारागार
में डाल दिया। १९ परंतु प्रभु के एक दूत ने रात को कारागार का द्वार
खोला और उन्हें बाहर लाकर कहा, २० 'जाओ मंदिर में खड़े होकर जनता
को इस जीवन के विषय में सब बातें सुनाओ।' २१ यह सुनकर वे प्रभात
होते ही मंदिर में गए और उपदेश देने लगे।

महापुरोहित और उनके साथी आए तो उन्होंने परिषद् एवं इस्राएल
के सब धर्मवृद्धों को बुलवाया, और बंदीगृह में कहला भेजा कि प्रेरितों को
लाया जाए। २२ पर जब सेवक वहां पहुंचे तो कारागार में उनको नहीं
पाया। उन्होंने लौटकर समाचार दिया, २३ 'हमने बंदीगृह को बड़ी सावधानी
से बंद पाया और पहरेवालों को द्वारों पर खड़े देखा, परंतु खोलने पर भीतर
कोई न मिला।' २४ जब मंदिर के नायक और महापुरोहितों ने यह समाचार
सुना तो वे चिंता में पड़ गए कि उनका क्या हुआ।' २५ इतने में किसी
ने आकर उन्हें समाचार दिया, 'देखिए, जिन लोगों को आपने कारागार में
डाल दिया था, वे मंदिर में खड़े जनता को उपदेश दे रहे हैं।' २६ तब
नायक कुछ सेवकों के साथ जाकर उन्हें ले आया, परंतु बलपूर्वक नहीं
क्योंकि वे जनता से डरते थे कि कहीं उन पर पत्थरों से प्रहार न करें।

२७ वे उनको ले आए और परिषद् के सामने खड़ा कर दिया। महा-
पुरोहित ने उनसे पूछा, २८ 'क्या हमने तुम्हें कड़ा आदेश नहीं दिया था
कि इस नाम से शिक्षा न देना? पर तुमने सारा यरूशलेम अपनी शिक्षा
से भर दिया है, और इस व्यक्ति की हत्या का दोष हमारे सिर पर मढ़ना

should not teach in this name ? and, behold, ye have
filled Jerusalem with your doctrine, and intend to bring
this man's blood upon us. 29 Then Peter and the other
apostles answered and said, We ought to obey God
rather than men. 30 The God of our fathers raised up
Jesus, whom ye slew and hanged on a tree. 31 Him hath
God exalted with his right hand to be a Prince and a
Saviour, for to give repentance to Israel, and forgiveness
of sins. 32 And we are his witnesses of these things ;
and so is also the Holy Ghost, whom God hath given to
them that obey him.

33 When they heard that, they were cut to the
heart, and took counsel to slay them. 34 Then stood
there up one in the council, a Pharisee, named Gamaliel,
a doctor of the law, had in reputation among all the
people, and commanded to put the apostles forth a little
space ; 35 and said unto them, Ye men of Israel, take
heed to yourselves what ye intend to do as touching
these men. 36 For before these days rose up Theudas,
boasting himself to be somebody ; to whom a number of
men, about four hundred, joined themselves : who was
slain ; and all, as many as obeyed him, were scattered,
and brought to nought. 37 After this man rose up
Judas of Galilee in the days of the taxing, and drew
away much people after him : he also perished : and all,
even as many as obeyed him, were dispersed. 38 And
now I say unto you, Refrain from these men, and let
them alone : for if this counsel or this work be of men,
it will come to nought : 39 but if it be of God, ye
cannot overthrow it ; lest haply ye be found even to
fight against God.

40 And to him they agreed : and when they had
called the apostles, and beaten them, they commanded
that they should not speak in the name of Jesus, and let
them go. 41 And they departed from the presence of
the council, rejoicing that they were counted worthy to
suffer shame for his name. 42 And daily in the temple,
and in every house, they ceased not to teach and preach
Jesus-Christ.

चाहते हो।' २९ इस पर पतरस और प्रेरितों ने उत्तर दिया, 'यह अनिवार्य
है कि हम मनुष्यों की अपेक्षा परमेश्वर की आज्ञा मानें। ३० जिन यीशु
को तुम लोगों ने क्रूस* पर लटका कर मार डाला उनको हमारे पूर्वजों के
परमेश्वर ने जीवित कर दिया है। ३१ परमेश्वर ने उनको अपने दाहिने हाथ से
अधिनायक और उद्धारकर्त्ता का उच्च पद दिया कि वह इस्राएल को हृदय-
परिवर्तन एवं पाप-क्षमा प्रदान करें। ३२ इन बातों के साक्षी हम हैं और
पवित्र आत्मा भी, जिसे परमेश्वर ने अपनी आज्ञा मानने वालों को दिया
हैं।'

३३ यह सुनकर वे आग बबूला हो गए और उनको मार डालना चाहा,
३४ परंतु गमलीएल नामक एक फरीसी ने, जो नियमशास्त्र के आचार्य और
सारी जनता की श्रद्धा के पात्र थे, परिषद् में खड़े होकर प्रेरितों को
थोड़ी देर के लिए बाहर कर देने की आज्ञा दी, ३५ और उन लोगों से
कहा, 'हे इस्राएलियो, सावधान हो! तुम इन लोगों के साथ क्या करना
चाहते हो! ३६ कुछ दिन पूर्व थियूदास ने सिर उठाया था। वह कहता था
कि मैं भी कुछ हूं, और कोई चार सौ मनुष्य उसके साथ हो लिए। परंतु वह
मारा गया और उसके माननेवाले सब लोग बिखर कर नष्ट हो गए।
३७ इसके अनंतर जनगणना के दिनों में गलील निवासी यहूदा ने सिर
उठाया और अपने नेतृत्व में जनता को उत्तेजित किया; वह भी नष्ट हो गया
और उसके माननेवाले बिखर गए। ३८ अतएव इस विषय में मेरा तुमसे
कहना है कि इन लोगों से दूर ही रहो और इन्हें छोड़ो। यदि यह योजना
या कार्य मनुष्यों की ओर से है तो नष्ट हो जाएगा, ३९ परंतु यदि परमेश्वर
की ओर से है तो तुम इन्हें नष्ट नहीं कर सकोगे। यह भी सम्भव है कि
तुम अपने आपको परमेश्वर का विरोधी पाओ।

४० उन्होंने यह बात मान ली, प्रेरितों को बुलाकर पिटवाया, और
आदेश देकर छोड़ दिया कि वे यीशु के नाम से कुछ न कहें। ४१ वे
परिषद् से आनन्द मनाते हुए बाहर निकले कि उन्हें इस नाम के लिए
अपमानित होने का गौरव मिला। ४२ वे प्रतिदिन मंदिर में और
घर-घर जाकर निरंतर शिक्षा देते और प्रचार करते रहे कि यीशु ही
ख्रिस्त हैं।

---

* अक्षरशः, 'काठ'

APPOINTMENT OF THE SEVEN

6 And in those days, when the number of the disciples was multiplied, there arose a murmuring of the Grecians against the Hebrews, because their widows were neglected in the daily ministration. 2 Then the twelve called the multitude of the disciples unto them, and said, It is not reason that we should leave the word of God, and serve tables. 3 Wherefore, brethren, look ye out among you seven men of honest report, full of the Holy Ghost and wisdom, whom we may appoint over this business. 4 But we will give ourselves continually to prayer, and to the ministry of the word. 5 And the saying pleased the whole multitude: and they chose Stephen, a man full of faith and of the Holy Ghost, and Philip, and Prochorus, and Nicanor, and Timon, and Parmenas, and Nicolas a proselyte of Antioch: 6 whom they set before the apostles: and when they had prayed, they laid their hands on them. And the word of God increased.

7 And the number of the disciples multiplied in Jerusalem greatly; and a great company of the priests were obedient to the faith.

ATTACK ON STEPHEN

8 And Stephen, full of faith and power, did great wonders and miracles among the people. 9 Then there arose certain of the synagogue, which is called the synagogue of the Libertines, and Cyrenians, and Alexandrians, and of them of Cilicia and of Asia, disputing with Stephen. 10 And they were not able to resist the wisdom and the spirit by which he spake. 11 Then they suborned men, which said, We have heard him speak blasphemous words against Moses, and against God. 12 And they stirred up the people, and the elders, and the scribes, and came upon him, and caught him, and brought him to the council, 13 and set up false witnesses, which said, This man ceaseth not to speak blasphemous words against this holy place, and the law: 14 for we have heard him say, that this Jesus

६

सात सेवकों का निर्वाचन

१ उन दिनों जब शिष्यों की संख्या बढ़ रही थी, यूनानी-भाषी इब्रानी-भाषा-भाषियों पर कुड़कुड़ाने लगे कि दैनिक दान-वितरण के समय हमारी विधवाओं की उपेक्षा की जाती है। २ इस पर 'बारह' ने शिष्य-मंडली को बुलाकर कहा, 'यह शोभा नहीं देता कि हम परमेश्वर का बचन त्याग कर खिलाने पिलाने की सेवा में लगें। ३ अतः भाइयो, अपने में से सात सच्चरित्र पुरुषोंको ढूंढ़ निकालो जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हों। उन्हें हम इस कार्य पर नियुक्त कर देंगे, ४ और स्वयं प्रार्थना में और बचन की सेवा में लवलीन रहेंगे।' ५ यह बात समस्त मंडली को अच्छी लगी और उन्होंने स्तिफनुस नामक व्यक्ति को, जो विश्वास तथा पवित्र आत्मा से परिपूर्ण थे, तथा फिलिप्पुस, पुखुरुस, नीकानोर, तीमोन, परिमिनास और अंताकिया-निवासी नवयहूदी नीकुलाउस को ६ चुनकर प्रेरितों के सामने उपस्थित किया; और उन्होंने प्रार्थना करके उन पर हाथ रखे।

७ परमेश्वर का बचन फैलता गया, शिष्यों की संख्या यरूशलेम में बढ़ती गई और बहुत से पुरोहितों ने इस विश्वास को स्वीकार कर लिया।

स्तिफनुस का विरोध

८ स्तिफनुस अनुग्रह और सामर्थ्य से परिपूर्ण हो जनता में चमत्कार और बड़े बड़े चिह्न प्रदर्शित करने लगे। ९ तब उस सभागृह के जो लिबर्तीन दल' का कहलाता है, और कुरेनिया, सिंकदरिया, किलकिया और आसिया के कुछ लोग उठ खड़े हुए और स्तिफनुस से वाद-विवाद करने लगे; १० किन्तु जिस बुद्धि और आत्मा द्वारा वह बोल रहे थे उसका विरोध करने में वे असमर्थ रहे। ११ तब उन्होंने कुछ लोगों को उत्तेजित किया जो कहने लगे, 'हमने इसे मूसा और परमेश्वर के लिए निंदापूर्ण शब्द कहते सुना है।' १२ इस प्रकार जनता को, धर्मवृद्धों को एवं शास्त्रियों को भड़का, कर वे चढ़ आए और स्तिफनुस को पकड़ कर परिषद् में ले गए। १३ वहां उन्होंने झूठे साक्षी खड़े किए जो बोले, 'यह मनुष्य निरंतर इस पवित्र स्थान एवं नियमशास्त्र के विरुद्ध बोलता है। १४ हमने इसको कहते

of Nazareth shall destroy this place, and shall change
the customs which Moses delivered us. 15 And all
that sat in the council, looking stedfastly on him, saw
his face as it had been the face of an angel.

STEPHEN'S SPEECH

7 Then said the high priest, Are these things so?
2 And he said,
Men, brethren, and fathers, hearken; The God of
glory appeared unto our father Abraham, when he was
in Mesopotamia, before he dwelt in Charran, 3 and
said unto him, Get thee out of thy country, and from
thy kindred, and come into the land which I shall
shew thee. 4 Then came he out of the land of the
Chaldæans, and dwelt in Charran: and from thence,
when his father was dead, he removed him into this
land, wherein ye now dwell. 5 And he gave him
none inheritance in it, no, not so much as to set his
foot on: yet he promised that he would give it to him
for a possession, and to his seed after him, when as yet
he had no child.

6 And God spake on this wise, That his seed should
sojourn in a strange land; and that they should bring
them into bondage, and entreat them evil four hundred
years. 7 And the nation to whom they shall be in
bondage will I judge, said God: and after that shall
they come forth, and serve me in this place. 8 And
he gave him the covenant of circumcision: and so
Abraham begat Isaac, and circumcised him the eighth
day; and Isaac begat Jacob; and Jacob begat the twelve
patriarchs.

9 And the patriarchs, moved with envy, sold Joseph
into Egypt: but God was with him, 10 and delivered
him out of all his afflictions, and gave him favour and
wisdom in the sight of Pharaoh king of Egypt; and
he made him governor over Egypt and all his house.
11 Now there came a dearth over all the land of Egypt

सुना है कि नासरत निवासी यीशु इस स्थान को ध्वस्त, और मूसा प्रदत्त
प्रथाओं को परिवर्तित कर देगा।' १५ तब इस पर परिषद् में बैठे लोगों ने
अपनी दृष्टि स्तिफनुस पर गड़ा दी ; उस समय उनका मुख उन्हें स्वर्गदूत के
सदृश दीख पड़ा।

७

स्तिफनुस का भाषण

१ महापुरोहित ने पूछा, 'क्या ये बातें सच हैं?' स्तिफनुस ने कहा,

२ 'बंधुओं और पितृगण, सुनिए। जब हमारे पूर्वज अब्रहाम हारान में
निवास करने से पूर्व मिसुपुतामिया में थे तो तेजोमय परमेश्वर ने उन्हें
दर्शन दिए ३ और उनसे कहा, "तुम अपने देश और कुटुम्ब से निकल
कर उस देश को चलो जो मैं तुमको दिखाऊंगा।" ४ तब वह कसदियों
के देश से निकल कर हारान में जा बसे। उनके पिता की मृत्यु के
अनंतर परमेश्वर उनको हटाकर इस देश में लाए जहां तुम अब रहते हो।
५ यहां उनको परमेश्वर ने भूमि पर अधिकार तो अलग रहा, पैर रखने
को स्थान तक न दिया, तो भी प्रतिज्ञा की कि मैं यह देश तुम्हारे और
तुम्हारे पश्चात् तुम्हारे वंश के अधिकार में कर दूंगा—यद्यपि उस समय
उनके कोई पुत्र नहीं था। ६ परमेश्वर ने उनसे इस प्रकार कहा, "तुम्हारे
वंशज अन्य देश में प्रवास करेंगे, जहां के लोग उन्हें दास बनाएंगे और
चार सौ वर्ष तक उन पर अत्याचार करेंगे।" ७ फिर परमेश्वर ने कहा,"
जिस जाति के वे दास होंगे उसको मैं दंड दूंगा। इसके पश्चात् वे बाहर
निकल आएंगे और इस स्थान पर मेरी उपासना करेंगे।" ८ उनके साथ
परमेश्वर ने खतने का व्यवस्थान स्थापित किया। इस प्रकार अब्रहाम
इसहाक के जन्मदाता बने और उनका आठवें दिन खतना किया। इसहाक
से याकूब और याकूब से बारह कुलपति उत्पन्न हुए।

९ 'इन कुलपतियों ने द्वेष के कारण यूसुफ को मिस्र में बेच दिया ;
पर परमेश्वर उनके साथ थे १० और सब विपत्तियों से उनका उद्धार करते
रहे, तथा उन्हें मिस्र के राजा फिरौन के समक्ष कृपापात्र और ज्ञानवान्
बना दिया। फिरौनने उन्हें मिस्र का और अपने संपूर्ण राजभवन का अधि-
कारी नियुक्त किया। ११ जब समस्त मिस्र और कनान देश में अकाल तथा

and Chanaan, and great affliction : and our fathers
found no sustenance. 12 But when Jacob heard that
there was corn in Egypt, he sent out our fathers first.
13 And at the second time Joseph was made known
to his brethren ; and Joseph's kindred was made known
unto Pharaoh. 14 Then sent Joseph, and called his father
Jacob to him, and all his kindred, threescore and fifteen
souls. 15 So Jacob went down into Egypt, and died,
he, and our fathers, 16 and were carried over into
Sychem, and laid in the sepulchre that Abraham bought
for a sum of money of the sons of Emmor the father
of Sychem.

If Moses is this authentic Moshe & Ruler of Israel 17-35

17 But when the time of the promise drew nigh,
which God had sworn to Abraham, the people grew
and multiplied in Egypt, 18 Till another king arose,
which knew not Joseph. 19 The same dealt subtilly
with our kindred, and evil entreated our fathers, so
that they cast out their young children, to the end
they might not live. 20 In which time Moses was born,
and was exceeding fair, and nourished up in his father's
house three months : 21 and when he was cast out,
Pharaoh's daughter took him up, and nourished him for
her own son. 22 And Moses was learned in all the
wisdom of the Egyptians, and was mighty in words
and in deeds.

23 And when he was full forty years old, it came
into his heart to visit his brethren the children of
Israel. 24 And seeing one of them suffer wrong, he
defended him, and avenged him that was oppressed, and
smote the Egyptian : 25 for he supposed his brethren
would have understood how that God by his hand would
deliver them : but they understood not. 26 And the
next day he shewed himself unto them as they strove,
and would have set them at one again, saying, Sirs, ye
are brethren ; why do ye wrong one to another ? 27 But
he that did his neighbour wrong thrust him away,
saying, Who made thee a ruler and a judge over us ?
28 Wilt thou kill me, as thou diddest the Egyptian
yesterday ? 29 Then fled Moses at this saying, and was

संकट पड़ा और हमारे पूर्वजों को अन्न नहीं मिला, १२ तो याकूब ने यह
सुनकर कि मिस्र में अन्न है, हमारे पूर्वजों को पहली बार वहां भेजा।
१३ दूसरी यात्रा में यूसुफ के भाइयों ने उन्हें पहिचान लिया, और फिरौन को
भी यूसुफ के कुल का पता चल गया। १४ तब यूसुफ ने अपने पिता याकूब और
अपने समस्त परिवार, अर्थात् पचहत्तर व्यक्तियों को बुला भेजा। १५ याकूब
मिस्र को गए। वहीं उनका देहांत हुआ और हमारे पूर्वजों का भी। १६ वे
शिकिम में लाए गए और उस कबर में रखे गए जिसे अब्राहम ने धन देकर
शिकिम के निवासी हमौरे की संतान से मोल लिया था।

१७ 'अस्तु, ज्यों ज्यो उस प्रतिज्ञा के पूर्ण होने का समय आता गया
जिसकी घोषणा परमेश्वर ने अब्राहम से की थी, मिस्र में लोग बढ़ते गए
और उनकी संख्या बहुत हो गई। १८ अंततः मिस्र में एक अन्य राजा
हुआ जो यूसुफ को नहीं जानता था। १९ उसने हमारी जाति के साथ
धूर्तता की एवं हमारे पूर्वजों पर अत्याचार कर उन्हें विवश किया कि अपने
बच्चे फेंक दिया करें जिससे वे जीवित न बचें। २० ऐसे समय मूसा
का जन्म हुआ। वह परमेश्वर की दृष्टि में सुंदर थे। तीन महीने तक उनका
पालन पोषण अपने पिता के घर हुआ। २१ वहां से फेंके जाने पर फिरौन
की पुत्री ने उन्हें गोद लिया और पुत्र समझकर उनका पालन किया। २२ इस
प्रकार मूसा को मिस्रियों की समस्त विद्या प्राप्त हुई, और वह बड़े वाक्पटु
और कर्मठ निकले।

२३ 'जब वह चालीस वर्ष के हुए तो उनके मन में आया कि अपने
इस्राएली भाइयों से भेंट करें। २४ उनमें किसी व्यक्ति के साथ दुर्व्यवहार
होते देखकर उन्होंने उसकी रक्षा की और मिस्रनिवासी को मार कर
पीड़ित का प्रतिशोध लिया। २५ उनका विचार था कि मेरे भाई समझ
जाएंगे कि परमेश्वर मेरे हाथों उनका उद्धार करेगा, परंतु वे लोग न समझे
२६ दूसरे दिन जब वे आपस में लड़ रहे तो मूसा वहां आ निकले और
उनमें शांति स्थापना का यत्न करते हुए कहा, "सज्जनो, आप लोग भाई-
भाई हैं, एक दूसरे के साथ दुर्व्यवहार क्यों करते हैं?" २७ इस पर
उसने जो पड़ोसी के साथ अन्याय कर रहा था उनको एक ओर ढकेल दिया
और बोला, "तुझे किसने हमारे ऊपर शासक और न्यायकर्त्ता नियुक्त किया
है? २८ जिस तरह कल तूने उस मिस्री की हत्या कर डाली क्या उसी
तरह मेरी भी हत्या करना चाहता है?" २९ यह बात सुनकर मूसा वहां

a stranger in the land of Madian, where he begat two
sons.

30 And when forty years were expired, there ap-
peared to him in the wilderness of mount Sina an angel
of the Lord in a flame of fire in a bush. 31 When
Moses saw it, he wondered at the sight : and as he
drew near to behold it, the voice of the Lord came
unto him, 32 saying, I am the God of thy fathers, the
God of Abraham, and the God of Isaac, and the God
of Jacob. Then Moses trembled, and durst not behold.
33 Then said the Lord to him, Put off thy shoes from
thy feet : for the place where thou standest is holy
ground. 34 I have seen, I have seen the affliction of
my people which is in Egypt, and I have heard their
groaning, and am come down to deliver them. And
now come, I will send thee into Egypt.

Then he assured it was Moses who foretold coming of Jesus.

35–50

35 This Moses whom they refused, saying, Who
made thee a ruler and a judge ? the same did God send
to be a ruler and a deliverer by the hand of the angel
which appeared to him in the bush. 36 He brought
them out, after that he had shewed wonders and signs
in the land of Egypt, and in the Red sea, and in the
wilderness forty years. 37 This is that Moses, which
said unto the children of Israel, A prophet shall the
Lord your God raise up unto you of your brethren,
like unto me ; him shall ye hear. 38 This is he, that
was in the church in the wilderness with the angel
which spake to him in the mount Sina, and with our
fathers : who received the lively oracles to give unto
us : 39 to whom our fathers would not obey, but thrust
him from them, and in their hearts turned back again
into Egypt, 40 saying unto Aaron, Make us gods to
go before us : for as for this Moses, which brought us
out of the land of Egypt, we wot not what is become
of him. 41 And they made a calf in those days, and
offered sacrifice unto the idol, and rejoiced in the works
of their own hands. 42 Then God turned, and gave
them up to worship the host of heaven ; as it is written
in the book of the prophets,

से भाग निकले और मिद्यान देश में प्रवासी हुए। वहां उनके दो पुत्र
हुए।

३० 'जब पूरे चालीस वर्ष बीत गए तो सीना पर्वत के निर्जन प्रदेश में,
प्रज्वलित झाड़ी की ज्वाला में, एक स्वर्गदूत ने उन्हें दर्शन दिए। ३१ यह
दर्शन पाकर मूसा विस्मित हो गए और जब निरीक्षण के लिए निकट गए
तो उन्हें प्रभु की वाणी सुनाई दी, ३२ "मैं तुम्हारे पूर्वजों का परमेश्वर हूं—
अब्रहाम का, इसहाक का और याकूब का परमेश्वर।" मूसा कांप उठे ;
वह उस ओर देखने का साहस न कर सके। ३३ प्रभु ने उनसे कहा, "अपने
पैरों के जूते उतार दो क्योंकि जिस भूमि पर तुम खड़े हो वह पवित्र भूमि है।
३४ मैंने मिस्र में अपनी प्रजा की दुर्दशा भली भांति देखी है, मैंने उनका
क्रंदन सुना है और उनका उद्धार करने के निमित्त उतर आया हूं। अब
तैयार हो, मैं तुम्हें मिस्र भेजूंगा।"

३५ 'जिन मूसा को उन्होंने यह कहकर अमान्य किया था कि तुम्हें किसने
शासक और न्यायकर्त्ता नियुक्त किया, उन्हींको परमेश्वर ने—उस स्वर्गदूत के
द्वारा जो उन्हें झाड़ी में दिखाई दिया था—शासक और उद्धारक बना कर
भेजा। ३६ वह मिस्र देश में, लालसागर में एवं चालीस वर्ष तक निर्जन
प्रदेश में चिह्न और चमत्कार दिखाकर उनको निकाल लाए। ३७ यह वही
मूसा हैं जिन्होंने इस्राएलियों से कहा था, "परमेश्वर तुम्हारे भाइयों में से
तुम्हारे लिए एक नबी उठाएंगे जैसे उन्होंने मुझे उठाया है।" ३८ यह
वही हैं जो निर्जन प्रदेश की कलीसिया में उस स्वर्गदूत के साथ थे,
जिसने सीना पर्वत पर उनसे वार्तालाप किया था, और हमारे पूर्वजों के साथ
भी थे। उन्हें जीवित दिव्यवाणी प्राप्त हुई कि तुमको प्रदान करें। ३९ परंतु
हमारे पूर्वज उनको बात नहीं सुनना चाहते थे ; इसलिए उनको अमान्य
कर दिया, और अपना मन पुनः मिस्र की ओर लगाया। ४० वे हारून
से बोले, "हमारे लिए ऐसे देवता बनाओ जो हमारे आगे चलें, क्योंकि
उस मूसा का जो हमें मिस्र से निकाल कर लाया था, न जाने क्या हुआ!"
४१ उन दिनों उन्होंने एक बछड़ा बनाया, उस मूर्ति के आगे बलिदान
चढ़ाया, और अपने हाथों की कृति के लिए उत्सव मनाने लगे। ४२ इस
पर परमेश्वर भी उनसे विमुख हो गए और उन्हें आकाश के तारागण पूजने
को छोड़ दिया, जैसा कि नबियों की पुस्तक में लेख है :

O ye house of Israel, have ye offered to me slain
beasts and sacrifices
By the space of forty years in the wilderness ?
43 Yea, ye took up the tabernacle of Moloch,
And the star of your god Remphan,
Figures which ye made to worship them :
And I will carry you away beyond Babylon.

44 Our fathers had the tabernacle of witness in the
wilderness, as he had appointed, speaking unto Moses,
that he should make it according to the fashion that he
had seen. 45 Which also our fathers that came after
brought in with Jesus into the possession of the Gentiles,
whom God drave out before the face of our fathers,
unto the days of David ; 46 who found favour before
God, and desired to find a tabernacle for the God of
Jacob. 47 But Solomon built him an house.

48 Howbeit the most High dwelleth not in temples
made with hands ; as saith the prophet,

49 Heaven is my throne,
And earth is my footstool :
What house will ye build me ? saith the Lord :
Or what is the place of my rest ?
50 Hath not my hand made all these things ?

To Resist christ is to resist Holy Spirit of God
51-53

51 Ye stiffnecked and uncircumcised in heart and
ears, ye do always resist the Holy Ghost : as your fathers
did, so do ye. 52 Which of the prophets have not
your fathers persecuted ? and they have slain them
which shewed before of the coming of the Just One ;
of whom ye have been now the betrayers and mur-
derers : 53 who have received the law by the disposi-
tion of angels, and have not kept it.

DEATH OF STEPHEN

54 When they heard these things, they were cut
to the heart, and they gnashed on him with their teeth.

"हे इस्राएल वंश, क्या तूने चालीस वर्ष तक
मुझे पशु-बलि और उपहार अर्पित किए !
४३ नहीं, तुम लोग तो मोलक के शिविर को,
और रिफान देवता के तारे को
अर्थात् प्रतिमाओं को जो तुमने पूजने के लिए बनाईं थीं,
अपने साथ लिए फिरे ।
तुमको मैं बाबुल पार निर्वासित करूंगा ।"

४४ 'साक्षी का शिविर निर्जन प्रदेश में हमारे पूर्वजों के साथ था—यह उस
आदेश के अनुसार था जो वक्ता ने मूसा को दिया था, "जैसी आकृति
तुमने देखी है उसी के अनुसार बनाना ।" ४५ जिस समय हमारे पूर्वजों
ने अन्य जातियों पर अधिकार जमाया, जिनके पांव परमेश्वर ने उनके सामने
उखाड़ दिए थे, उस समय वे यहोशू के नेतृत्व में, परम्परा से प्राप्त इस
शिविर को लाए; और दाऊद के दिनों तक ऐसा ही रहा । ४६ दाऊद पर
परमेश्वर ने अनुग्रह किया तो उन्होंने याकूब के वंश के लिए* मंदिर बनाने
की स्वीकृति चाही ; ४७ पर सुलेमान ही इस भवन का निर्माण कर सके ।
४८ किन्तु सर्वोच्च परमेश्वर मानव निर्मित भवनों में नहीं रहते, जैसा कि
नबी ने कहा है,

४९ "स्वर्ग मेरा सिंहासन है,
और पृथ्वी मेरे चरणों की चौकी ।
प्रभु कहते हैं, तुम मेरे लिए कैसा घर बनाओगे ?
मेरा विश्राम-स्थल कहां होगा ?
५० क्या, ये सब मेरे ही हाथ की कृतियां नहीं है ?"

५१ 'हठधर्मियो तथा मन और कान से खतना विहीन लोगो, तुमने
सदा पवित्र आत्मा का विरोध किया है ; ५२ जैसे तुम्हारे पूर्वज थे, वैसे ही
तुम हो । तुम्हारे पूर्वजों ने किस नबी को नहीं सताया ? उन्होंने धर्म-पुरुष
के आगमन का संदेश देनेवालों की हत्या की थी ; ५३ और अब तुम जिन्हें
स्वर्गदूतों की मध्यस्थता से नियम प्राप्त हुए, पर जिनका तुमने पालन नहीं किया,
तुमने उन धर्म-पुरुष को पकड़वाया और उनकी हत्या के भागी बने ।'

स्तिफनुस की मृत्यु

५४ यह कथन सुनकर लोग आगबबूला हो उठे और उन पर दांत

* कुछ प्रतियों में, 'याकूब के परमेश्वर के लिए"

55 But he, being full of the Holy Ghost, looked up
stedfastly into heaven, and saw the glory of God, and
Jesus standing on the right hand of God, 56 and said,
Behold, I see the heavens opened, and the Son of man
standing on the right hand of God. 57 Then they
cried out with a loud voice, and stopped their ears,
and ran upon him with one accord, 58 and cast him out
of the city, and stoned him : and the witnesses laid
down their clothes at a young man's feet, whose name
was Saul. 59 And they stoned Stephen, calling upon
God, and saying, Lord Jesus, receive my spirit. 60 And
he kneeled down, and cried with a loud voice, Lord,
lay not this sin to their charge. And when he had said
this, he fell asleep.

PERSECUTION AND DISPERSION OF THE CHRISTIANS

8 And Saul was consenting unto his death.
And at that time there was a great persecution
against the church which was at Jerusalem ; and they
were all scattered abroad throughout the regions of
Judæa and Samaria, except the apostles. 2 And devout
men carried Stephen to his burial, and made great
lamentation over him. 3 As for Saul, he made havock
of the church, entering into every house, and haling
men and women committed them to prison.

PHILIP AT SAMARIA

4 Therefore they that were scattered abroad went
every where preaching the word. 5 Then Philip went
down to the city of Samaria, and preached Christ unto
them. 6 And the people with one accord gave heed
unto those things which Philip spake, hearing and seeing
the miracles which he did. 7 For unclean spirits, crying
with loud voice, came out of many that were possessed
with them : and many taken with palsies, and that were
lame, were healed. 8 And there was great joy in that
city.

SIMON THE MAGICIAN

9 But there was a certain man, called Simon, which
beforetime in the same city used sorcery, and bewitched

किटकिटाने लगे। ५५ पर उन्होंने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो स्वर्ग की ओर
अपलक दृष्टि की, और परमेश्वर की महिमा को, एवं परमेश्वर की दाहिनी ओर
खड़े यीशु को देखा। ५६ वह बोल उठे, 'मैं स्वर्ग को अनावृत्त और मानवपुत्र
को परमेश्वर की दाहिनी ओर खड़े देख रहा हूं।' ५७ इस पर लोग ऊंचे
स्वर से चिल्लाए, कान बंद कर एक साथ स्तिफनुस पर टूट पड़े ५८ और
उनको नगर के बाहर निकाल कर पत्थर मारने लगे। साक्षियों ने अपने
वस्त्र शाऊल नामक युवक के पैरों के पास रख दिए थे। ५९ लोग स्तिफनुस
को पत्थर मार रहे थे, उस समय स्तिफनुस ने पुकार कर कहा 'प्रभु यीशु, मेरी
आत्मा को ग्रहण कीजिए।' ६० फिर उन्होंने घुटने टेककर उच्च स्वर से कहा,
'प्रभु यह पाप इन पर मत लगाइए।' और यह कह कर वह चिरनिद्रा में
लीन हो गए।

८

कलीसिया पर अत्याचार

१ शाऊल उनकी हत्या में सहमत था। उस दिन से यरूशलेम की कली-
सिया पर घोर अत्याचार आरम्भ हुआ और प्रेरितों को छोड़कर सब के सब
यहूदिया और सामरिया प्रदेशों में बिखर गए। २ श्रद्धालु लोगों ने स्तिफनुस
को कबर में रखा और उनके लिए बहुत विलाप किया। ३ उधर शाऊल
कलीसिया को उजाड़ रहा था। वह घर घर में प्रवेश कर तथा पुरुष और
स्त्रियों को खींचकर कारागार में डाल रहा था।

सामरिया में फिलिप्पुस का प्रचार कार्य

४ जो लोग बिखर गए थे, वे घूम घूमकर बचन का प्रचार करने लगे;
५ अस्तु, फिलिप्पुस ने सामरिया नगर में आकर ख्रिस्त का प्रचार आरंभ
किया। ६ जब जनता ने फिलिप्पुस के बचन सुने और उनके द्वारा किए
गए चमत्कार देखे तो एक चित्त हो उनके कथन पर ध्यान दिया; ७ क्योंकि
बहुतों में से अशुद्ध आत्माएं चिल्लाती हुई निकलीं और अनेक अर्धांगी तथा
लंगड़े स्वस्थ हो गए; ८ इस प्रकार उस नगर में आनंद हो आनंद हो गया।

शमाऊन जादूगर

९ उस नगर में शमौन नामक एक व्यक्ति पहले से ही पहुंचा हुआ

the people of Samaria, giving out that himself was some
great one : 10 to whom they all gave heed, from the
least to the greatest, saying, This man is the great power
of God. 11 And to him they had regard, because that
of long time he had bewitched them with sorceries.
12 But when they believed Philip preaching the things
concerning the kingdom of God, and the name of Jesus
Christ, they were baptized, both men and women.
13 Then Simon himself believed also : and when he was
baptized, he continued with Philip, and wondered, be-
holding the miracles and signs which were done.

PETER AND JOHN AT SAMARIA

14 Now when the apostles which were at Jerusalem
heard that Samaria had received the word of God, they
sent unto them Peter and John : 15 who, when they
were come down, prayed for them, that they might
receive the Holy Ghost : 16 (for as yet he was fallen
upon none of them : only they were baptized in the
name of the Lord Jesus.) 17 Then laid they their hands
on them, and they received the Holy Ghost. 18 And
when Simon saw that through laying on of the apostles'
hands the Holy Ghost was given, he offered them
money, 19 saying, Give me also this power, that on
whomsoever I lay hands, he may receive the Holy
Ghost. 20 But Peter said unto him, Thy money perish
with thee, because thou hast thought that the gift of
God may be purchased with money. 21 Thou hast
neither part nor lot in this matter : for thy heart is
not right in the sight of God. 22 Repent therefore
of this thy wickedness, and pray God, if perhaps the
thought of thine heart may be forgiven thee. 23 For I
perceive that thou art in the gall of bitterness, and
in the bond of iniquity. 24 Then answered Simon, and
said, Pray ye to the Lord for me, that none of these
things which ye have spoken come upon me.

25 And they, when they had testified and preached
the word of the Lord, returned to Jerusalem, and
preached the gospel in many villages of the Samaritans.

था; वह जादू के काम दिखाकर सामरिया की जनता को विस्मित
रखता था और अपने आपको महान् पुरुष बताता था। १० सब
लोग, छोटे से बड़े तक, उसका सम्मान करते थे और कहते थे कि
यह मनुष्य परमेश्वर की शक्ति है जो महाशक्ति कहलाती है। ११ वे उसे
बहुत मानते थे क्योंकि उसने बहुत दिनों से उन्हें जादू के काम दिखा-दिखा
कर विस्मित कर रखा था। १२ परंतु जब लोगों को फिलिप्पुस की बातों
पर विश्वास हुआ, जो परमेश्वर के राज्य और यीशु ख्रिस्त के नाम के
संबंध में प्रचार कर रहे थे, तो स्त्री-पुरुष बपतिस्मा लेने लगे; १३ स्वयं शमौन
को भी विश्वास हुआ और वह बपतिस्मा लेकर फिलिप्पुस के साथ रहने लगा।
वह चमत्कार और महान् सामर्थ्य के कार्य होते देखकर चकित था।

सामरिया में पतरस और यूहन्ना

१४ जब यरूशलेम में प्रेरितों ने सुना कि सामरियों ने परमेश्वर का
वचन स्वीकार कर लिया है तो पतरस और यूहन्ना को उनके पास भेजा।
१५ वे वहां गए और साभरियों के लिए प्रार्थना की कि पवित्र आत्मा पाएं,
१६ क्योंकि वह अब तक उनमें से किसी पर अवतरित नहीं हुआ था-
उन्होंने तो ख्रिस्त यीशु के नाम पर केवल बपतिस्मा ही पाया था। १७ अतः
प्रेरितों ने उन पर हाथ रखे और उन्होंने पवित्र आत्मा प्राप्त किया। १८ शमौन
ने देखा कि प्रेरितों के हाथ रखने से पवित्र* आत्मा मिलता है तो उनके
पास रुपए लाकर १९ बोला, 'मुझे भी यह शक्ति दीजिए कि जिस पर हाथ
रखूं उसे पवित्र आत्मा प्राप्त हो।' २० पतरस ने उससे कहा, 'नाश हो
तेरा, और तेरे रुपयों का कि तूने परमेश्वर का वरदान रुपयों से मोल लेना
चाहा। २१ इस विषय में न तेरा कुछ भाग है और न अधिकार† क्योंकि
परमेश्वर की दृष्टि में तेरा हृदय शुद्ध नहीं है। २२ अब अपनी इस नीचता
पर पश्चात्ताप कर, और प्रभु से प्रार्थना कर कि यदि हो सके तो तेरे मन का
दुर्विचार क्षमा किया जाए। २३ मैं देख रहा हूं कि तू विष की गांठ‡ है
और अधर्म के बंधन में जकड़ा हुआ है।' २४ इस पर शमौन ने कहा,
'आप मेरे लिए प्रभु से प्रार्थना कीजिए कि जो कुछ आपने कहा, वह मुझ
पर घटित न हो।'
२५ जब वे साक्षी देकर प्रभु का बचन सुना चुके तो सामरिया के अनेक

---

* कुछ प्राचीन प्रतियों में यह शब्द नहीं पाया जाता † अक्षरशः 'उत्तराधिकार'
‡ अक्षरशः 'पित्त की कड़वाहट है'

PHILIP AND THE ETHIOPIAN EUNUCH

26 And the angel of the Lord spake unto Philip,
saying, Arise, and go toward the south unto the way
that goeth down from Jerusalem unto Gaza, which is
desert. 27 And he arose and went : and, behold, a man
of Ethiopia, an eunuch of great authority under Candace
queen of the Ethiopians, who had the charge of all her
treasure, and had come to Jerusalem for to worship,
28 was returning, and sitting in his chariot read Esaias
the prophet. 29 Then the Spirit said unto Philip,
Go near, and join thyself to this chariot. 30 And
Philip ran thither to him and heard him read the
prophet Esaias. and said, Understandest thou what
thou readest ? 31 And he said, How can I, except some
man should guide me ? And he desired Philip that
he would come up and sit with him. 32 The place of
the scripture which he read was this,

He was led as a sheep to the slaughter ;
And like a lamb dumb before his shearer,
So opened he not his mouth :
33 In his humiliation his judgment was taken away :
And who shall declare his generation ?
For his life is taken from the earth.

34 And the eunuch answered Philip, and said, I pray
thee, of whom speaketh the prophet this ? of himself,
or of some other man ? 35 Then Philip opened his
mouth, and began at the same scripture, and preached
unto him Jesus. 36 And as they went on their way,
they came unto a certain water ; and the eunuch said,
See, here is water ; what doth hinder me to be baptized ?
37 And Philip said, If thou believest with all thine heart,
thou mayest. And he answered and said, I believe
that Jesus Christ is the Son of God. 38 And he
commanded the chariot to stand still : and they went
down both into the water, both Philip and the eunuch ;
and he baptized him. 39 And when they were come
up out of the water, the Spirit of the Lord caught away
Philip, that the eunuch saw him no more : and he

ग्रामों में सुसमाचार सुनाते हुए यरूशलेम लौट गए।

फिलिप्पुस और ईथियोपी कंचुकी

२६ तब प्रभु के एक दूत ने फिलिप्पुस से कहा, 'उठो और दक्षिण की
ओर यरूशलेम से गाजा जानेवाले मार्ग पर जाओ; यह निर्जन प्रदेश में
है। २७ वह उठकर चल पड़े; और देखो, ईथियोपिया-निवासी एक कंचुकी
जो ईथियोपिया की रानी कंदाके का उच्च अधिकारी और कोषाध्यक्ष था,
आराधना के लिए यरूशलेम आया था, और अब लौट रहा था। २८ वह
अपने रथ पर बैठा हुआ यशायाह नबी की पुस्तक का पाठ कर रहा था।
२९ पवित्र आत्मा ने फिलिप्पुस से कहा, 'आगे बढ़ो, और इस रथ के साथ
हो लो।' ३० फिलिप्पुस उस ओर दौड़े और उसे यशायाह नबी का पाठ
करते सुना। उन्होंने पूछा, 'जो पढ़ रहे हो उसे समझते भी हो?' ३१ उसने
कहा, 'जब तक कोई मेरा पथ-प्रदर्शन न करे, मैं कैसे समझूं?' और उसने
फिलिप्पुस से अनुरोध किया कि ऊपर आकर उसके साथ बैठें। ३२ शास्त्र का
अंश जिसे वह पढ़ रहा था यह है—

"जैसे भेड़ वध-स्थान को जाते समय,
और मेम्ना ऊन कतरनेवाले के संमुख
निःशब्द रहते हैं, वैसे ही उसने अपना मुंह नहीं खोला।
३३ उसकी दशा दीन थी; उसके साथ न्याय नहीं हुआ।
उसकी वंशावली का वर्णन कौन करेगा?
क्योंकि उसका जीवन पृथ्वी पर समाप्त किया जा रहा है।'

३४ कंचुकी ने फिलिप्पुस से पूछा, 'कृपाकर बताइए कि नबी ने यह
किसके विषय में कहा है? अपने विषय में या किसी अन्य के विषय में?'
३५ तब फिलिप्पुस ने कथन आरम्भ किया, और शास्त्र के इसी पाठ से
आरंभ कर यीशु का सुसमाचार सुनाया। ३६ चलते चलते मार्ग में वे
ऐसे स्थान पर पहुंचे जहां जल था। कंचुकी बोला, 'देखिए जल! अब
मेरे बपतिस्मा लेने में क्या बाधा है?' ३७ फिलिप्पुस ने कहा, 'यदि तुम
संपूर्ण हृदय से विश्वास करते हो तो अनुमति है।' उसने उत्तर दिया, 'मैं
विश्वास करता हूं कि यीशु ख्रिस्त परमेश्वर के पुत्र हैं,* ३८ और आज्ञा
दी कि रथ रोका जाए। फिलिप्पुस और कंचुकी दोनों जल में उतर पड़े
और फिलिप्पुस ने उसे बपतिस्मा दिया। ३९ जब वे जल से निकल कर

* कुछ प्राचीन प्रतियों में यह पद नहीं मिलता

went on his way rejoicing. 40 But Philip was found
at Azotus: and passing through he preached in all the
cities, till he came to Cæsarea.

CONVERSION OF SAUL

9 And Saul, yet breathing out threatenings and
slaughter against the disciples of the Lord, went
unto the high priest, 2 and desired of him letters to
Damascus to the synagogues, that if he found any
of this way, whether they were men or women, he
might bring them bound unto Jerusalem.

3 And as he journeyed, he came near Damascus:
and suddenly there shined round about him a light
from heaven: 4 and he fell to the earth, and heard a
voice saying unto him, Saul, Saul, why persecutest thou
me? 5 And he said, Who art thou, Lord? And the
Lord said, I am Jesus whom thou persecutest: it is hard
for thee to kick against the pricks. 6 And he trembling
and astonished said, Lord, what wilt thou have me
to do? And the Lord said unto him, Arise, and go
into the city, and it shall be told thee what thou must
do. 7 And the men which journeyed with him stood
speechless, hearing a voice, but seeing no man. 8 And
Saul arose from the earth; and when his eyes were
opened, he saw no man: but they led him by the hand,
and brought him into Damascus. 9 And he was three
days without sight, and neither did eat nor drink.

SAUL AT DAMASCUS

10 And there was a certain disciple at Damascus,
named Ananias; and to him said the Lord in a vision,
Ananias. And he said, Behold, I am here, Lord.
11 And the Lord said unto him, Arise, and go into
the street which is called Straight, and enquire in the
house of Judas for one called Saul, of Tarsus: for,
behold, he prayeth, 12 and hath seen in a vision a man
named Ananias coming in, and putting his hand on

ऊपर आए तो प्रभु का आत्मा फिलिप्पुस को उठा ले गया और कंचुकी ने उन्हें
फिर न देखा। उसने आनंदमग्न हो अपना मार्ग लिया। ४० इधर फिलिप्पुस
अशदोद में दीख पड़े तथा कैसरिया पहुंचने तक नगर-नगर में सुसमाचार
सुनाते रहे।

९

शाऊल का हृदय-परिवर्तन

१ शाऊल अब तक प्रभु के शिष्यों को धमकाने और उनकी हत्या
करने की धुन में था। वह महापुरोहित के समीप गया, २ और उससे दमिश्क
के सभागृहों के नाम इस आशय के पत्र मांगे कि यदि इस पंथ के मानने वालों
को पाए तो, पुरुष हों या स्त्री, उन्हें बंदी कर यरूशलेम ले आए।

३ यात्रा करते हुए जब वह दमिश्क के निकट पहुंचा तो आकाश से
एक ज्योति उसके चारों ओर सहसा चमक उठी। ४ वह भूमि पर गिर
पड़ा और उसने एक वाणी को अपने से यह कहते सुना, 'शाऊल, शाऊल, तुम
मुझे क्यों सताते हो?' ५ उसने कहा, 'प्रभु, आप कौन हैं?' उत्तर मिला,
'मैं यीशु हूं, जिसे तुम सता रहे हो। ६ फिर भी उठो नगर में प्रवेश करो।
वहां तुम्हें बताया जाएगा कि तुम्हें क्या करना है।' ७ उसके सहयात्री
अवाक् खड़े थे क्योंकि उन्हें वाणी तो सुनाई दी पर उन्होंने देखा किसी
को नहीं। ८ शाऊल भूमि से उठा परंतु नेत्र खोलने पर उसे कुछ दिखाई न
दिया। तब लोग हाथ पकड़कर उसे दमिश्क को ले गए। ९ तीन दिन
तक वह दृष्टिहीन रहा; और उसने कुछ खाया पीया नहीं।

दमिश्क नगर में शाऊल

१० दमिश्क में हनन्याह नामक एक शिष्य थे। प्रभु ने उन्हें दर्शन
देकर कहा, 'हनन्याह!' उन्होंने उत्तर दिया, 'आज्ञा दीजिए, प्रभु!' ११ प्रभु
ने उनसे कहा, 'उठो, और "सरला" नामक गली में जाकर यहूदा के घर
पर तारसुस निवासी शाऊल का पता लगाओ। वह प्रार्थना कर रहा है
१२ और उसे दर्शन हुआ है कि हनन्याह नामक एक व्यक्ति ने प्रविष्ट

him, that he might receive his sight. 13 Then Ananias
answered, Lord, I have heard by many of this man,
how much evil he hath done to thy saints at Jerusalem :
14 and here he hath authority from the chief priests
to bind all that call on thy name. 15 But the Lord
said unto him, Go thy way : for he is a chosen vessel
unto me, to bear my name before the Gentiles, and kings,
and the children of Israel : 16 for I will shew him
how great things he must suffer for my name's sake.
17 And Ananias went his way, and entered into the
house ; and putting his hands on him said, Brother Saul,
the Lord, even Jesus, that appeared unto thee in the
way as thou camest, hath sent me, that thou mightest
receive thy sight, and be filled with the Holy Ghost.
18 And immediately there fell from his eyes as it had
been scales : and he received sight forthwith, and arose,
and was baptized. 19 And when he had received meat,
he was strengthened.

Then was Saul certain days with the disciples which
were at Damascus. 20 And straightway he preached
Christ in the synagogues, that he is the Son of God.
21 But all that heard him were amazed, and said,
Is not this he that destroyed them which called on
this name in Jerusalem, and came hither for that
intent, that he might bring them bound unto the chief
priests ? 22 But Saul increased the more in strength,
and confounded the Jews which dwelt at Damascus,
proving that this is very Christ.

23 And after that many days were fulfilled, the Jews
took counsel to kill him : 24 but their laying await
was known of Saul. And they watched the gates day
and night to kill him. 25 Then the disciples took
him by night, and let him down by the wall in a
basket.

SAUL AT JERUSALEM AND TARSUS

26 And when Saul was come to Jerusalem, he assayed to join himself to the disciples : but they were all afraid of him, and believed not that he was a

हो उस पर हाथ रखा है कि उसे पुनः दृष्टि प्राप्त हो जाए।' १३ हनन्याह
ने उत्तर दिया, 'प्रभु, मैं इस व्यक्ति के विषय में बहुतों से सुन चुका हूं कि
उसने यरूशलेम में आपके संतों को कैसे कैसे कष्ट दिए हैं। १४ उसको
महापुरोहितों से अधिकार मिला है कि यहां जितने आपका नाम लेते हैं उन
सबको बंदी बना ले।' १५ प्रभु ने उनसे कहा, 'जाओ; वह मेरा निर्वाचित
पात्र है। वह विजातियों, राजाओं और इस्राएलियों के संमुख मेरे नाम की
घोषणा करेगा १६ और मैं उसे बताऊंगा कि उसे मेरे नाम के लिए कितना
कष्ट सहना है।' १७ तब हनन्याह गए और उन्होंने घर में प्रवेश कर
तथा शाऊल पर अपने हाथ रख कर कहा, 'भाई शाऊल, प्रभु ने, अर्थात्
जिन्होंने मार्ग जाते समय तुमको दर्शन दिए थे उन यीशु ने, मुझे तुम्हारे
पास भेजा है कि फिर दृष्टि प्राप्त करो और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो
जाओ।' १८ तत्क्षण उनके नेत्रों से छिलके से गिरे और उन्हें पुनः दृष्टि
प्राप्त हो गई। वह उठे और बपतिस्मा लिया; १९ और भोजन करने से उन्हें
बल प्राप्त हुआ।

वह दमिश्क में शिष्यों के साथ कुछ दिन रहे २० और शीघ्र ही
सभागृहों में यीशु का प्रचार करने लगे कि वह परमेश्वर के पुत्र हैं।
२१ इससे सब सुननेवाले चकित हो गए और बोले, 'क्या यह वही व्यक्ति
नहीं जो यरूशलेम में इस नाम की दुहाई देनेवालों को विनष्ट कर रहा था
और यहां भी इस अभिप्राय से आया था कि इनको बंदी बना कर महा-
पुरोहितों के पास ले जाए?' २२ पर इससे शाऊल को और भी बल मिला,
और इस बात का प्रमाण देकर कि ख्रिस्त यही हैं, उन्होंने दमिश्क निवासी
यहूदियों को निरुत्तर कर दिया।

२३ इस प्रकार अनेक दिन बीत गए। अब यहूदियों ने उनकी हत्या
करने के लिए षड्यंत्र रचा, पर शाऊल को उनके षड्यंत्र का पता चल गया।
२४ लोग उनको मार डालने के लिए दिन रात फाटकों पर पहरा
देते २५ और उधर शाऊल के शिष्यों ने उन्हें टोकरे में बैठाकर रात को
चहार दीवारी से नीचे उतार दिया।

यरूशलेम और तरसुस में शाऊल

२६ यरूशलेम पहुंचने पर उन्होंने शिष्यों में सम्मिलित हो जाने का
प्रयत्न किया; परंतु सब लोग उनसे डरते थे क्योंकि उन्हें विश्वास नहीं

disciple. 27 But Barnabas took him, and brought him
to the apostles, and declared unto them how he had
seen the Lord in the way, and that he had spoken
to him, and how he had preached boldly at Damascus
in the name of Jesus. 28 And he was with them
coming in and going out at Jerusalem. 29 And he
spake boldly in the name of the Lord Jesus, and disputed
against the Grecians : but they went about to slay
him. 30 Which when the brethren knew, they brought
him down to Cæsarea, and sent him forth to Tarsus.

31 Then had the churches rest throughout all
Judæa and Galilee and Samaria, and were edified ; and
walking in the fear of the Lord, and in the comfort of
the Holy Ghost, were multiplied.

PETER'S CURES AT LYDDA

32 And it came to pass, as Peter passed throughout
all quarters, he came down also to the saints which
dwelt at Lydda. 33 And there he found a certain man
named Æneas, which had kept his bed eight years, and
was sick of the palsy. 34 And Peter said unto him,
Æneas, Jesus Christ maketh thee whole : arise, and
make thy bed. And he arose immediately. 35 And all
that dwelt at Lydda and Saron saw him, and turned to
the Lord.

DORCAS

36 Now there was at Joppa a certain disciple named
Tabitha, which by interpretation is called Dorcas : this
woman was full of good works and almsdeeds which she
did. 37 And it came to pass in those days, that she was
sick, and died : whom when they had washed, they laid
her in an upper chamber. 38 And forasmuch as Lydda was
nigh to Joppa, and the disciples had heard that Peter was
there, they sent unto him two men, desiring him that he
would not delay to come to them. 39 Then Peter arose
and went with them. When he was come, they brought
him into the upper chamber : and all the widows stood
by him weeping, and shewing the coats and garments

होता था कि वह भी शिष्य बन गए हैं। २७ तब बरनबास उनको प्रेरितों
के पास ले गए और बताया कि पौलुस ने किस प्रकार मार्ग में प्रभु के
दर्शन किए और प्रभु ने उनसे वार्तालाप किया; एवं किस प्रकार उन्होंने
दमिश्क में निर्भयतापूर्वक यीशु के नाम का प्रचार किया। २८ अब वह
प्रेरितों के साथ यरूशलेम में आने जाने २९ और निर्भयतापूर्वक प्रभु के नाम
का प्रचार करने लगे। वह यूनानी-भाषी यहूदियों से वार्तालाप और वाद-
विवाद किया करते थे; पर वे लोग उनके प्राणों के ग्राहक होगए। ३० जब
भाइयों को इसका पता चला, तो वे उन्हें कैसरिया ले गए और तरसुस को
भेज दिया।

३१ अब, समस्त यहूदिया, गलील और सामरिया में कलीसिया को
शांति प्राप्त थी। प्रभु के भय में उसका एवं उसके आचरण का निर्माण हो
रहा था और पवित्र आत्मा की सहायता से उसकी वृद्धि हो रही थी।

पतरस द्वारा लुद्दा में एक रोगी को स्वास्थ्यलाभ

३२ पतरस सब स्थानों का पर्यटन करते हुए लुद्दा निवासी संतों के
यहां पहुंचे। ३३ वहां उन्हें एनियास नामक व्यक्ति मिला जो अर्धांग रोग से
पीड़ित था और आठ वर्ष से रोग शय्या पर पड़ा था। ३४ पतरस ने उससे
कहा, 'एनियास, यीशु ख्रिस्त तुमको स्वस्थ कर रहे हैं। उठो, अपनी
शय्या उठाओ।' वह उसी क्षण उठ बैठा। ३५ लुद्दा और शारोन के
निवासियों ने यह देखा और उन्होंने प्रभु को स्वीकार किया।

दोरकास

३६ याफा में तबीता अर्थात् दोरकास* नामक एक शिष्या रहती थी।
वह पुण्य-कर्म और दान-धर्म में लगी रहती थी। ३७ उन दिनों वह रुग्ण
हुई और मर गई; लोगों ने उसे स्नान करा के अटारी में लिटा दिया।
३८ लुद्दा, याफा के समीप है अतएव, जब शिष्यों ने सुना कि पतरस
वहां हैं, तो दो आदमियों को भेजकर उनसे अनुरोध किया कि कृपाकर
हमारे यहां आइए। ३९ पतरस उठे और उनके साथ चल पड़े। जब वहां
पहुंचे तो लोग उन्हें उस अटारी पर ले गए। वहां सब विधवाएं रोती हुई
उनके समीप आ खड़ी हुईं, और दोरकस ने उनके साथ रहते समय, जो जो

* अर्थात् 'हिरणी'

which Dorcas made, while she was with them. 40 But
Peter put them all forth, and kneeled down, and prayed ;
and turning him to the body said, Tabitha, arise. And
she opened her eyes : and when she saw Peter, she sat
up. 41 And he gave her his hand, and lifted her up,
and when he had called the saints and widows, presented
her alive. 42 And it was known throughout all Joppa ;
and many believed in the Lord. 43 And it came to pass,
that he tarried many days in Joppa with one Simon
a tanner.

PETER AND CORNELIUS

10 There was a certain man in Cæsarea called
Cornelius, a centurion of the band called the
Italian band, 2 a devout man, and one that feared God
with all his house, which gave much alms to the people,
and prayed to God alway. 3 He saw in a vision
evidently about the ninth hour of the day an angel of
God coming in to him, and saying unto him, Cornelius.
4 And when he looked on him, he was afraid, and
said, What is it, Lord ? And he said unto him, Thy
prayers and thine alms are come up for a memorial
before God. 5 And now send men to Joppa, and call
for one Simon, whose surname is Peter : 6 he lodgeth
with one Simon a tanner, whose house is by the sea
side : he shall tell thee what thou oughtest to do.
7 And when the angel which spake unto Cornelius
was departed, he called two of his household servants,
and a devout soldier of them that waited on him con-
tinually ; 8 and when he had declared all these things
unto them, he sent them to Joppa.

9 On the morrow, as they went on their journey,
and drew nigh unto the city, Peter went up upon
the housetop to pray about the sixth hour : 10 and
he became very hungry, and would have eaten : but
while they made ready, he fell into a trance ; 11 and
saw heaven opened, and a certain vessel descending

कुरते और कपड़े बनाए थे, उनको दिखाने लगीं। ४० पतरस ने सबको
बाहर निकाल दिया और घुटने टेककर प्रार्थना की, एवं शव की ओर देखकर
कहा, 'तबीथा, उठो।' उसने आंखें खोल दीं और पतरस को देखकर उठ
बैठी! ४१ पतरस ने हाथ के सहारे उसे उठाया और संतों तथा विधवाओं
को बुलाकर उसे जीती जागती उनके सामने उपस्थित कर दिया। ४२ यह
बात समस्त याफा में फैल गई, और बहुतों ने प्रभु पर विश्वास किया।
पतरस ने याफा में शमौन नामक चर्मकार के यहां बहुत दिनों तक निवास
किया।

१०

पतरस और करनेलियुस

१ कैसरियामें करनेलियुस नामक एक व्यक्ति 'इतालियानी' नामक सैन्यदल
का शतपति था। २ वह धर्मपरायण था और समस्त परिवार सहित परमेश्वर
का भय मानता था। वह प्रजा को बहुत दान देता था और निरंतर परमेश्वर
से प्रार्थना किया करता था। ३ उसे दिन में लगभग तीसरे पहर* ४ के
समय स्पष्ट दर्शन हुआ कि परमेश्वर का दूत उसके पास आकर कह रहा
है, 'करनेलियुस'। उसने उस पर दृष्टि गड़ा दी और भयभीत होकर बोला
'प्रभु, क्या है?' उसने कहा, 'तुम्हारी प्रार्थनाओं और दान का स्मरण
परमेश्वर के समक्ष हुआ है। ५ अब, कुछ मनुष्यों को याफा भेज दो और
शमौन उपनाम पतरस को आमंत्रित करो। ६ वह शमौन नामक चर्मकार
के यहां अतिथि हैं जिसका घर समुद्र-तट पर है।' ७ जब वह स्वर्गदूत
जिसने उससे बातें की थीं चला गया तो उसने दो सेवकों को और अपने
अनुचरों में से एक धर्मपरायण सैनिक को बुलाया; ८ और उन्हें सब बातें
समझाकर याफा भेजा।

९ दूसरे दिन जब वे लोग यात्रा करते करते नगर के पास पहुंच रहे थे,
तो लगभग दोपहर† के समय, पतरस प्रार्थना करने के लिए कोठे पर गए।
१० उन्हें भूख लगी और कुछ खाने की इच्छा हुई। लोगों के भोजन बनाते
समय पतरस ध्यान-मग्न हो गए! ११ उन्होंने देखा कि आकाश खुल गया है

* अक्षरश: 'नवें घंटे'
† अक्षरश: 'छटे घंटे'

unto him, as it had been a great sheet knit at the four
corners, and let down to the earth : 12 wherein were
all manner of four-footed beasts of the earth, and wild
beasts, and creeping things, and fowls of the air.
13 And there came a voice to him, Rise, Peter ; kill,
and eat. 14 But Peter said, Not so, Lord ; for I have
never eaten any thing that is common or unclean.
15 And the voice spake unto him again the second
time, What God hath cleansed, that call not thou
common. 16 This was done thrice : and the vessel
was received up again into heaven.

17 Now while Peter doubted in himself what this
vision which he had seen should mean, behold, the men
which were sent from Cornelius had made enquiry for
Simon's house, and stood before the gate, 18 and called,
and asked whether Simon, which was surnamed
Peter, were lodged there. 19 While Peter thought on
the vision, the Spirit said unto him, Behold, three men
seek thee. 20 Arise therefore, and get thee down,
and go with them, doubting nothing : for I have sent
them. 21 Then Peter went down to the men which
were sent unto him from Cornelius ; and said, Behold,
I am he whom ye seek : what is the cause wherefore
ye are come ? 22 And they said, Cornelius the cen-
turion, a just man, and one that feareth God, and of
good report among all the nation of the Jews, was
warned from God by an holy angel to send for thee
into his house, and to hear words of thee. 23 Then
called he them in, and lodged them.

And on the morrow Peter went away with them,
and certain brethren from Joppa accompanied him.
24 And the morrow after they entered into Cæsarea.
And Cornelius waited for them, and had called toge-
ther his kinsmen and near friends. 25 And as Peter
was coming in, Cornelius met him, and fell down at
his feet, and worshipped him. 26 But Peter took him
up, saying, Stand up ; I myself also am a man. 27 And
as he talked with him, he went in, and found many
that were come together. 28 And he said unto them,

और चारों कोनों से लटकती हुई लम्बी चौड़ी चादर जसी कोई वस्तु पृथ्वी
पर उतर रही है, १२ और उसमें सब प्रकार के पशु, रेंगनेवाले जीवजंतु
और आकाश के पक्षी विद्यमान हैं। १३ उन्हें यह वाणी भी सुनाई पड़ी,
'पतरस, उठो, मारो और खाओ।' १४ पतरस ने कहा, 'नहीं प्रभु, कदापि
नहीं, क्योंकि मैंने कभी कोई अपवित्र और अशुद्ध वस्तु नहीं खाई।' १५ इस
पर उन्हें दूसरी बार फिर वाणी सुनाई दी, 'जिसे परमेश्वर ने शुद्ध कहा है,
उसे तुम अपवित्र मत कहो।' १६ तीन बार ऐसा ही हुआ तब वह वस्तु
तुरंत आकाश में उठा ली गई।

१७ पतरस के हृदय में अभी असमंजस था कि जो दर्शन मुझे हुआ है
उसका क्या तात्पर्य हो सकता है कि उधर करनेलियुस के भेजे हुए मनुष्य
शमौन का घर पूछते पूछते द्वार पर आ खड़े हुए, १८ और उच्च स्वर में
पूछने लगे कि क्या शमौन उपनाम पतरस यहीं ठहरे हैं? १९ पतरस अभी
उस दर्शन के विषय में विचार ही कर रहे थे कि आत्मा ने उनसे कहा, 'देखो,
तीन मनुष्य तुम्हें ढूंढ़ रहे हैं। २० उठो, नीचे उतरो और निस्संशय उनके
साथ चले जाओ क्योंकि मैंने ही उन्हें भेजा है।' २१ तब पतरस उन लोगों
के पास नीचे जाकर बोले, 'जिसको तुम पूछ रहे हो, वह मैं ही हूं। तुम
किस निमित्त यहाँ आए हो?' २२ उन्होंने कहा, 'शतपति करनेलियुस एक
धर्म-परायण और परमेश्वर का भय मानने वाले व्यक्ति हैं; समस्त यहूदी
जाति उनका सम्मान करती है। उनको एक पवित्र दूत से आज्ञा मिली
है कि आपको अपने घर आमंत्रित कर आपका उपदेश सुनें।' २३ तब पतरस
उन लोगों को भीतर ले गए और उनका अतिथि-सत्कार किया।

दूसरे दिन वह उनके साथ चले तो याफ़ा से कुछ बंधु भी साथ
हो लिए। २४ अगले दिन वह कैसरिया पहुंच गए, जहाँ करनेलियुस अपने
संबंधियों और अपने इष्ट मित्रों के साथ उनकी प्रतीक्षा कर रहा था।
२५ जब पतरस भीतर गए तो करनेलियुस उनसे मिला और चरणों पर
गिरकर उन्हें प्रणाम किया। २६ पतरस ने उसे उठाते हुए कहा, 'उठो, मैं
भी तो मनुष्य हूं।' २७ वह वार्तालाप करते हुए भीतर गए और वहाँ बहुत
लोगों को एकत्रित देखकर २८ उनसे कहा, 'तुम स्वयं जानते हो कि एक यहूदी
के लिए इतर जाति के व्यक्ति से सम्पर्क रखना अथवा उसके घर जाना
वर्जित है। परंतु परमेश्वर ने मुझ पर प्रकट किया कि किसी व्यक्ति को

Ye know how that it is an unlawful thing for a man
that is a Jew to keep company, or come unto one of
another nation ; but God hath shewed me that I should
not call any man common or unclean. 29 Therefore
came I unto you without gainsaying, as soon as I was
sent for : I ask therefore for what intent ye have sent
for me ? 30 And Cornelius said, Four days ago I was
fasting until this hour ; and at the ninth hour I prayed
in my house, and behold, a man stood before me in
bright clothing 31 and said, Cornelius, thy prayer is
heard, and thine alms are had in remembrance in the
sight of God. 32 Send therefore to Joppa, and call
hither Simon, whose surname is Peter ; he is lodged in
the house of one Simon a tanner by the sea side : who,
when he cometh, shall speak unto thee. 33 Immediately
therefore I sent to thee ; and thou hast well done that
thou art come. Now therefore are we all here present
before God, to hear all things that are commanded thee
of God.

PETER'S SPEECH

34 Then Peter opened his mouth, and said, Of a
truth I perceive that God is no respecter of persons :
35 but in every nation he that feareth him, and worketh
righteousness, is accepted with him. 36 The word
which God sent unto the children of Israel, preaching
peace by Jesus Christ ; (he is Lord of all :) 37 that
word, I say, ye know, which was published throughout
all Judæa, and began from Galilee, after the baptism
which John preached ; 38 how God anointed Jesus of
Nazareth with the Holy Ghost and with power : who
went about doing good, and healing all that were
oppressed of the devil ; for God was with him. 39 And
we are witnesses of all things which he did both in
the land of the Jews, and in Jerusalem ; whom they
slew and hanged on a tree : 40 him God raised up the
third day, and shewed him openly ; 41 not to all the
people, but unto witnesses chosen before of God, even
to us, who did eat and drink with him after he rose

अपवित्र या अशुद्ध न मानूं। २९ अतः आमंत्रित किए जाने पर में बिना कुछ
कहे चला आया हूं। अब मैं पूछता हूं कि तुमने मुझे किस कारण बुलाया है?'
३० करनेलियुस ने उत्तर दिया, 'चार दिन हुए, ठीक इसी समय जब मैं
अपने घर में तीसरे पहर की प्रार्थना कर रहा था तो उज्वल वस्त्र पहिने
हुए एक मनुष्य मेरे संमुख आ खड़ा हुआ और बोला, ३१ "करनेलियुस,
तुम्हारी प्रार्थना सुनी गई है और तुम्हारे दान का स्मरण परमेश्वर के समक्ष
हुआ है। ३२ अतः किसी को याफा भेजकर शमौन उपनाम पतरस को
आमंत्रित करो। वह समुद्र तट पर शमौन चर्मकार के घर अतिथि हैं।"
३३ मैंने उसी क्षण आपके पास आदमी भेजे और आपने बड़ी कृपा की कि
आ गए। अब हम सब परमेश्वर के संमुख उपस्थित हैं कि जो कुछ परमेश्वर
ने आपसे कहा है उसे सुनें।'

पतरस का भाषण

३४ पतरस ने उन्हें इन शब्दों में उपदेश दिया, 'अब मुझे स्पष्ट समझ
में आया कि परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करते, ३५ वरन् प्रत्येक जाति
में जो कोई उनसे भय मानता है और धर्म पर चलता है, उसे वह प्रिय मानते
हैं। ३६ उन्होंने इस्राएलियों के पास बचन भेजा और उन्हें यीशु ख्रिस्त के
द्वारा—जो सब के प्रभु हैं—शांति का सुसमाचार सुनाया ; ३७ तुमको वह
कथा विदित ही है कि यूहन्ना के बपतिस्मा-प्रचार के पश्चात्, गलील से
लेकर समस्त यहूदिया में, क्या-क्या हुआ : किस प्रकार नासरत निवासी यीशु
को परमेश्वर ने पवित्र आत्मा एवं सामर्थ्य से अभिषिक्त किया, ३८ और किस
प्रकार वह पर्यटन करते हुए शुभ कार्य करते रहे और इबलीस के वशवर्ती सब
लोगों को स्वस्थ करते रहे, क्योंकि परमेश्वर उनके साथ थे। ३९ उन्होंने जो
कार्य यहूदिया देश और यरूशलेम में किए, उन सबके हम साक्षी हैं। लोगों
ने उनको क्रूस* पर लटका कर मार डाला ; ४० परंतु परमेश्वर ने तीसरे
दिन उनको जीवित किया और दिखाया, ४१ सबको नहीं वरन् साक्षियों को
जिन्हें परमेश्वर ने पहले से निर्वाचित कर लिया था, अर्थात् हमको जिन्होंने

* अक्षरशः काष्ठ,

from the dead. 42 And he commanded us to preach
unto the people, and to testisy that it is he which was
ordained of God to be the Judge of quick and dead.
43 To him give all the prophets witness, that through
his name whosoever believeth in him shall receive
remission of sins.

GENTILES RECEIVE THE HOLY SPIRIT AND BAPTISM

44 While Peter yet spake these words, the Holy
Ghost fell on all them which heard the word. 45 And
they of the circumcision which believed were astonished,
as many as came with Peter, because that on the Gen-
tiles also was poured out the gift of the Holy Ghost.
46 For they heard them speak with tongues, and magnify
God. Then answered Peter, 47 Can any man forbid
water, that these should not be baptized, which have
received the Holy Ghost as well as we ? 48 And he
commanded them to be baptized in the name of the
Lord. Then prayed they him to tarry certain days.

PETER DEFENDS HIS ACTION

11 And the apostles and brethren that were in Judæa
heard that the Gentiles had also received the
word of God. 2 And when Peter was come up to
Jerusalem, they that were of the circumcision contended
with him, 3 saying, Thou wentest in to men uncircum-
cised, and didst eat with them. 4 But Peter rehearsed
the matter from the beginning, and expounded it by
order unto them, saying, 5 I was in the city of Joppa
praying : and in a trance I saw a vision, A certain
vessel descend, as it had been a great sheet, let down
from heaven by four corners ; and it came even to me :
6 upon the which when I had fastened mine eyes, I
considered, and saw fourfooted beasts of the earth, and
wild beasts, and creeping things, and fowls of the air.
7 And I heard a voice saying unto me, Arise, Peter ;
8 slay and eat. But I said, Not so, Lord : for nothing

उनके मृतकों में से जीवित होने के पश्चात् उनके साथ खाया पीया, ४२ और
हमें आज्ञा दी कि जनता में प्रचार करो और स्पष्ट साक्षी दो कि यह वही
हैं जिन्हें परमेश्वर ने जीवित एवं मृतकों का न्यायकर्त्ता नियुक्त किया है।
४३ इन्हीं के विषय में सब नबी साक्षी देते हैं कि जो इन पर विश्वास करेगा
उसे इनके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी।'

विजातियों पर पवित्र आत्मा का अवतरण

४४ पतरस अभी बोल ही रहे थे कि उन सब पर जो बचन सुन रहे थे,
पवित्र आत्मा उतर आया। ४५ खतनेवाले विश्वासी, जो पतरस के साथ
आए हुए थे, चकित रह गए कि पवित्र आत्मा की वर्षा विजातियों पर भी हुई;
४६ वे उनको भाषाएं बोलते और परमेश्वर की स्तुति करते सुन रहे थे। ४७ इस
पर पतरस ने पूछा, 'जिन लोगों ने हमारे समान ही पवित्र आत्मा प्राप्त किया
है, क्या उनके लिए कोई बपतिस्मा का जल रोक सकता है?' ४८ और उन्होंने
आदेश किया कि वे यीशु ख्रिस्त के नाम से बपतिस्मा लें। इसके पश्चात् उन
लोगों ने पतरस से निवेदन किया कि कुछ दिन उनके साथ निवास करें।

११

पतरस द्वारा अपने कार्य का स्पष्टीकरण

१ प्रेरितों ने और यहूदा निवासी बंधुओं ने सुन लिया था कि विजातियों
ने परमेश्वर का बचन स्वीकार किया है! २ अतः जब पतरस यरूशलेम
आए तो खतनेवालों ने उनकी आलोचना की ३ और कहा, 'तुम खतना
विहीन व्यक्तियों के घर क्यों गए और उनके साथ भोजन क्यों किया?'
४ इस पर पतरस क्रमपूर्वक सब घटनाएं उनके संमुख वर्णन करने लगे:
५ 'मैं याफा नगर में था और प्रार्थना कर रहा था। ध्यान-मग्न अवस्था में
मैंने देखा कि चारों कोनों से लटकी हुई, लंबी-चौड़ी चादर जैसी कोई वस्तु
आकाश से उतर रही है। वह मुझ तक आई। ६ जब मैंने ध्यान से देखा तो
मुझे उसमें पृथ्वी के चौपाए, वन पशु, रेंगनेवाले जीवजंतु और आकाश के
पक्षी दीख पड़े। ७ मुझे यह वाणी भी सुनाई दी, 'पतरस, उठो, मारो और
खाओ।'' ८ किंतु मैंने कहा, "नहीं प्रभु, मेरे मुंह में आज तक कोई अपवित्र

common or unclean hath at any time entered into my
mouth. 9 But the voice answered me again from heaven,
What God hath cleansed, that call not thou common.
10 And this was done three times : and all were drawn
up again into heaven. 11 And, behold, immediately
there were three men already come unto the house where
I was, sent from Cæsarea unto me. 12 And the Spirit
bade me go with them, nothing doubting. Moreover
these six brethren accompanied me, and we entered into
the man's house : 13 and he shewed us how he had
seen an angel in his house, which stood and said unto
him, Send men to Joppa, and call for Simon, whose
surname is Peter ; 14 who shall tell thee words, whereby
thou and all thy house shall be saved. 15 And as
I began to speak, the Holy Ghost fell on them, as on
us at the beginning. 16 Then remembered I the word
of the Lord, how that he said, John indeed baptized
with water ; but ye shall be baptized with the Holy
Ghost. 17 Forasmuch then as God gave them the like
gift as he did unto us, who believed on the Lord Jesus
Christ ; what was I, that I could withstand God ?
18 When they heard these things, they held their peace,
and glorified God, saying, Then hath God also to the
Gentiles granted repentance unto life.

THE GENTILE CHURCH IN ANTIOCH

19 Now they which were scattered abroad upon the
persecution that arose about Stephen travelled as far
as Phenice, and Cyprus, and Antioch, preaching the
word to none but unto the Jews only. 20 And some of
them were men of Cyprus and Cyrene, which, when
they were come to Antioch, spake unto the Grecians,
preaching the Lord Jesus. 21 And the hand of the
Lord was with them : and a great number believed,
and turned unto the Lord.

22 Then tidings of these things came unto the ears of
the church which was in Jerusalem : and they sent
forth Barnabas, that he should go as far as Antioch.
23 Who, when he came, and had seen the grace of God,

या अशुद्ध वस्तु नहीं गई है।" ९ आकाशवाणी ने दूसरी बार कहा, "जिसे
परमेश्वर ने शुद्ध कहा है उसे तुम अशुद्ध मत कहो।" १० तीन बार यही
हुआ और तब सब कुछ आकाश में उठ गया। ११ ठीक उसी क्षण कैसरिया से
मेरे पास भेजे गए तीन व्यक्ति उस घर के सामने आ खड़े हुए जहां हम थे।
१२ आत्मा ने मुझे आदेश दिया कि निस्संशय होकर उनके साथ जाऊं।
ये छह बंधु भी मेरे साथ गए और हमने उस मनुष्य के घर में प्रवेश
किया। १३ उसने हमें बताया कि किस प्रकार उसने अपने घर में
एक स्वर्गदूत खड़ा देखा जिसने कहा, "किसी को याफा भेजकर शमौन
उपनाम पतरस को आमंत्रित करो। १४ वह तुम्हें उपदेश देंगे जिससे तुमको
सपरिवार उद्धार प्राप्त होगा।" १५ मैंने बोलना आरंभ ही किया था कि पवित्र
आत्मा, जैसे प्रारंभ में हम पर उतरा था, वैसे ही उन पर उतर आया।
१६ उस समय मुझे प्रभु के वचन स्मरण हुए, "यूहन्ना ने तो जल से बपतिस्मा
दिया, परंतु तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।" १७ अस्तु, यदि
परमेश्वर ने उनको भी वही वरदान दिया जो हमें, जब हमने प्रभु यीशु ख्रिस्त
पर विश्वास किया था, तो मैं कौन था, और मेरी क्या सामर्थ्य थी कि
परमेश्वर को रोकता ?' १८ यह सुनकर वे शांत हो गए और परमेश्वर की
स्तुति करने लगे कि परमेश्वर ने विजातियों को भी हृदय-परिवर्तन का वरदान
दिया है कि वे जीवन प्राप्त करें।

विजातियों की प्रथम कलीसिया

१९ स्तिफनुस को लेकर जो अत्याचार आरंभ हुआ था उसके कारण लोग
बिखर गए और फीनीके, कुप्रुस तथा अंताकिया तक पहुँचे ; परंतु वे यहूदियों
के अतिरिक्त किसी और को सुसमाचार* नहीं सुनाया करते थे। २० परंतु
उनमें से कुछ कुप्रुस और कुरैन के निवासी, जब अंताकिया पहुँचे तो उन्होंने
यूनानियों† को भी प्रभु यीशु का सुसमाचार सुनाया। २१ प्रभु का हाथ उनपर
था, अतः बहुत से लोग विश्वास कर प्रभु की ओर फिरे। २२ जब इनके
विषय में यरूशलेम की कलीसिया के कानों तक समाचार पहुँचा, तो उन्होंने
बरनबास को अंताकिया भेजा। २३ उन्होंने वहां पहुँचकर परमेश्वर का अनुग्रह
देखा तो अत्यंत प्रसन्न हुए, और सबको प्रोत्साहित किया कि तन-मन से

* अक्षरशः 'बचन'
† कुछ प्राचीन प्रतियों में, 'यूनानी भाषा भाषियों'

was glad, and exhorted them all, that with purpose
of heart they would cleave unto the Lord. 24 For he
was a good man, and full of the Holy Ghost and of
faith : and much people was added unto the Lord.
25 Then departed Barnabas to Tarsus, for to seek Saul :
26 and when he had found him, he brought him unto
Antioch. And it came to pass, that a whole year they
assembled themselves with the church, and taught much
people. And the disciples were called Christians first
in Antioch.

MISSION OF BARNABAS AND SAUL TO JERUSALEM

27 And in these days came prophets from Jerusalem
unto Antioch. 28 And there stood up one of them
named Agabus, and signified by the Spirit that there
should be great dearth throughout all the world : which
came to pass in the days of Claudius Cæsar. 29 Then
the disciples, every man according to his ability, deter-
mined to send relief unto the brethren which dwelt
in Judæa : 30 which also they did, and sent it to the
elders by the hands of Barnabas and Saul.

PERSECUTION BY HEROD : PETER'S ESCAPE FROM PRISON

12 Now about that time Herod the king stretched
forth his hands to vex certain of the church.
2 And he killed James the brother of John with the
sword. 3 And because he saw it pleased the Jews,
he proceeded further to take Peter also. (Then were
the days of unleavened bread.) 4 And when he had
apprehended him, he put him in prison, and delivered
him to four quaternions of soldiers to keep him ;
intending after Easter to bring him forth to the people.
5 Peter therefore was kept in prison : but prayer was
made without ceasing of the church unto God for him.
6 And when Herod would have brought him forth,
the same night Peter was sleeping between two soldiers,
bound with two chains : and the keepers before the

प्रभु से संयुक्त रहें, २४ क्योंकि वह सज्जन थे और पवित्र आत्मा एवं विश्वास से
परिपूर्ण थे। बहुत से लोग प्रभु में आ मिले। २५ तब बरनबास
शाऊल की खोज में तरसुस गए २६ और भेंट होने पर उन्हें अंताकिया ले
आए। वे दोनों पूरे एक वर्ष कलीसिया के साथ रहे और बहुत से लोगों को
उपदेश दिया। अंताकिया में ही शिष्य पहिली बार ख्रिस्ती कहलाए।

यरूशलेम की कलीसिया को सहायता

२७ उन दिनों यरूशलेम से कुछ नबी अंताकिया आए। २८ उनमें से
अगबुस नामक नबी ने उठकर पवित्र आत्मा की प्रेरणा से भविष्यवाणी की
कि समस्त संसार में भयंकर अकाल पड़नेवाला है। यह अकाल क्लौदियुस के
शासनकाल में पड़ा। २९ अस्तु शिष्यों ने निश्चय किया कि प्रत्येक अपनी
सामर्थ्य के अनुसार यहूदिया निवासी भाइयों की सहायता के लिये कुछ भेजे।
३० उन्होंने ऐसा ही किया और बरनबास और शाऊल के हाथ धर्मवृद्धों के
पास सहायता भेजी।

१२

हेरोदेस का अत्याचार : पतरस की कारागार से मुक्ति

१ इन्हीं दिनों राजा हेरोदेस ने कलीसिया के कई व्यक्तियों पर
अत्याचार करने के लिए हाथ उठाया। २ उसने यूहन्ना के भाई याकूब को
खड्ग से मरवा डाला ३ और यह देखकर कि इससे यहूदी प्रसन्न हुए हैं उसने
पतरस को भी बंदी कर लिया। यह अखमीरी रोटियों के समय हुआ।
४ उनको पकड़कर उसने कारागार में डाल दिया और उनकी रखवाली के
लिए चार-चार सैनिकों के चार दल रख दिए। उसकी इच्छा थी कि फसह
के पश्चात् उन्हें जनता के समक्ष उपस्थित करे। ५ पतरस कारागार में बंद थे
और इधर कलीसिया उनके लिए परमेश्वर से प्रार्थना करने में लगी हुई थी।
६ जब हेरोदेस उनको जनता के समक्ष लाने को था, उस रात को पतरस दो
हथकड़ियों से बंधे, दो सैनिकों के बीच सो रहे थे, और प्रहरी कारागार के

door kept the prison. 7 And, behold, the angel of the
Lord came upon him, and a light shined in the prison :
and he smote Peter on the side, and raised him up,
saying, Arise up quickly. And his chains fell off from
his hands. 8 And the angel said unto him, Gird thy-
self, and bind on thy sandals. And so he did. And he
saith unto him, Cast thy garment about thee, and follow
me. 9 And he went out, and followed him ; and wist
not that it was true which was done by the angel ; but
thought he saw a vision. 10 When they were past the
first and the second ward, they came unto the iron gate
that leadeth unto the city ; which opened to them of his
own accord : and they went out, and passed on through
one street ; and forthwith the angel departed from him.
11 And when Peter was come to himself, he said, Now I
know of a surety, that the Lord hath sent his angel,
and hath delivered me out of the hand of Herod, and
from all the expectation of the people of the Jews.

12 And when he had considered the thing, he came
to the house of Mary the mother of John, whose
surname was Mark ; where many were gathered together
praying. 13 And as Peter knocked at the door of the
gate, a damsel came to hearken, named Rhoda. 14 And
when she knew Peter's voice, she opened not the
gate for gladness, but ran in, and told how Peter stood
before the gate. 15 And they said unto her, Thou art
mad. But she constantly affirmed that it was even so.
Then said they, It is his angel. 16 But Peter continued
knocking : and when they had opened the door, and
saw him, they were astonished. 17 But he, beckoning
unto them with the hand to hold their peace, declared
unto them how the Lord had brought him out of the
prison. And he said, Go shew these things unto James,
and to the brethren. And he departed, and went into
another place.

18 Now as soon as it was day, there was no small
stir among the soldiers, what was become of Peter.

द्वार की रक्षा कर रहे थे। ७ सहसा प्रभु का दूत आ खड़ा हुआ और कोठरी
प्रकाश से भर गई। उसने पतरस के पार्श्व को थपथपा कर उन्हें जगाया और
कहा, 'शीघ्र उठो।' इस पर उनकी हथकड़ियां खुलकर गिर पड़ीं। ८ तब
स्वर्गदूत ने उनसे कहा, 'कमर बांधो और अपनी चप्पल पहन लो।' पतरस ने
वैसा ही किया। फिर वह उनसे बोला, 'अपना वस्त्र पहनकर मेरे पीछे चले
आओ।' ९ वह उसके पीछे पीछे बाहर आए; पर उन्हें निश्चय नहीं हो रहा
था कि जो कुछ स्वर्गदूत कर रहा है, वह वास्तविक है। उन्होंने सोचा कि
संभवतः वह कोई स्वप्न देख रहे हैं। १० अस्तु, वह पहले और दूसरे पहरी
को पार कर उस लौह द्वार पर पहुँचे जहां से नगर की ओर मार्ग जाता है। वह
द्वार उनके लिए स्वतः खुल गया। वे बाहर निकल कर गली के छोर तक ही
गए थे कि सहसा स्वर्गदूत उन्हें छोड़कर चला गया। ११ तब पतरस सचेत
हुए और बोले, 'अब मैंने सचमुच जान लिया कि प्रभु ने अपना स्वर्गदूत भेजकर
मुझे हेरोदेस के पंजे से छुड़ाया और यहूदियों कि सारी योजनाएं निष्फल
कर दीं।'

१२ वह परिस्थिति समझ कर यूहन्ना उपनाम मरकुस की माता के घर
आए; वहां बहुत से लोग एकत्रित होकर प्रार्थना कर रहे थे। १३ जब
उन्होंने प्रवेश द्वार खटखटाया तो रुदे नाम की दासी देखने आई। १४ पत-
रस की वाणी सुन कर, उसने प्रसन्नता के मारे द्वार न खोला, वरन् दौड़
कर भीतर गई और कहने लगी कि पतरस द्वार पर हैं। १५ लोगों ने
कहा, 'तू पगली है।' जब उसने दृढ़ता से कहा कि ऐसा ही है तो वे बोले,
'उनका स्वर्गदूत होगा।' १६ उधर पतरस खटखटाए ही जा रहे थे। अतः
लोगों ने द्वार खोला और उनको देखकर चकित रह गए। १७ पतरस ने उन्हें
हाथ से संकेत किया कि चुप रहें और बताया कि किस प्रकार प्रभु उनको
कारागार से बाहर ले आए। तब कहा, 'याकूब और भाइयों से ये बातें
कह देना'; और वहां से निकल कर किसी अन्य स्थान को चले गए।

१८ प्रातःकाल हुआ तो सैनिकों में बड़ी खलबली मची कि पतरस का

19 And when Herod had sought for him, and found him not, he examined the keepers, and commanded that they should be put to death. And he went down from Judæa to Cæsarea, and there abode.

HEROD'S DEATH

20 And Herod was highly displeased with them of Tyre and Sidon : but they came with one accord to him, and, having made Blastus the king's chamberlain their friend, desired peace ; because their country was
nourished by the king's country. 21 And upon a set
day Herod, arrayed in royal apparel, sat upon his throne,
and made an oration unto them. 22 And the people
gave a shout, saying, It is the voice of a god, and not of
a man. 23 And immediately the angel of the Lord
smote him, because he gave not God the glory : and he was eaten of worms, and gave up the ghost.

24 But the word of God grew and multiplied.

25 And Barnabas and Saul returned from Jerusalem, when they had fulfilled their ministry, and took with them John, whose surname was Mark.

THE CHURCH AT ANTIOCH

13 Now there were in the church that was at Antioch certain prophets and teachers ; as Barnabas, and Simeon that was called Niger, and Lucius of Cyrene, and Manaen, which had been brought up
with Herod the tetrarch, and Saul. 2 As they
ministered to the Lord, and fasted, the Holy Ghost said, Separate me Barnabas and Saul for the work whereunto I have called them. 3 And when they had fasted
and prayed, and laid their hands on them, they sent them away.

BARNABAS AND SAUL AT CYPRUS

4 So they, being sent forth by the Holy Ghost, departed unto Seleucia ; and from thence they sailed to

क्या हुआ। १९ हेरोदेस ने उनकी बहुत खोज की पर कोई पता न चला;
अस्तु, उसने प्रहरियों की जांच कर उन्हें प्राणदंड की आज्ञा दी। इसके
अनंतर वह यहूदिया से कैसरिया जाकर रहने लगा।

हेरोदेस की मृत्यु

२० वह सूर और सैदा के निवासियों से अत्यंत क्रुद्ध था। अतः वे सब
सब एकमत हो उसके पास आए और राज-कंचुकी ब्लास्तुस को मिलाकर
उससे संधि का प्रस्ताव किया, क्योंकि उनके देश का पालन पोषण राजा के
देश पर निर्भर था। २१ नियत दिन आने पर हेरोदेस ने राजसी वस्त्र पहने
और सिंहासन पर बैठकर उनके संमुख भाषण देने लगा। २२ इस पर
जनता पुकार उठी कि यह मनुष्य की वाणी नहीं, देवता की वाणी है।
२३ उसी क्षण प्रभु के एक दूत ने उस पर प्रहार किया क्योंकि उसने प्रभु
को महिमान्वित नहीं किया था और वह कीड़े पड़कर मरा।
२४ परंतु परमेश्वर का वचन बढ़ता और फैलता गया।
२५ उधर बरनबास और शाऊल अपना सेवाकार्य पूरा कर यरूशलेम से*
लौटे और अपने साथ यहून्ना उपनाम मरकुस को भी लेते आए।

१३

अंताकिया की कलीसिया

१ अंताकिया की स्थानीय कलीसिया में कई और उपदेशक थे: जैसे
बरनबास, शमौन जो नीगर कहलाते थे, कुरेन निवासी लूकियुस, राजा† हेरोदेस
के साथ पालित मनाहेन और शाऊल। २ जब वे लोग प्रभु की उपासना में
लगे हुए थे और उपवास कर रहे थे तो पवित्र आत्मा ने कहा, 'मेरे निमित्त
बरनबास और शाऊल को उस कार्य के लिए पृथक् कर दो जिसके लिए मैंने
उन्हें बुलाया है।' ३ तब उन्होंने उपवास और प्रार्थना कर उन पर हाथ
रखे और उन्हें विदा किया।

पौलुस की प्रथम प्रेरितिक यात्रा

४ पवित्र आत्मा द्वारा भेजे जाने पर वे सिलूकिया गए। वहां से उन्होंने

* कुछ प्राचीन प्रतियों में को
† मूल में 'तित्रअर्खेस'

Cyprus. 5 And when they were at Salamis, they
preached the word of God in the synagogues of the
Jews : and they had also John to their minister. 6 And
when they had gone through the isle unto Paphos,
they found a certain sorcerer, a false prophet, a Jew,
whose name was Bar-jesus : 7 which was with the
deputy of the country, Sergius Paulus, a prudent man ;
who called for Barnabas and Saul, and desired to hear
the word of God. 8 But Elymas the sorcerer (for so is
his name by interpretation) withstood them, seeking to
turn away the deputy from the faith. 9 Then Saul,
(who also is called Paul,) filled with the Holy Ghost,
set his eyes on him, 10 and said, O full of all subtilty
and all mischief, thou child of the devil, thou enemy
of all righteousness, wilt thou not cease to pervert the
right ways of the Lord ? 11 And now, behold, the
hand of the Lord is upon thee, and thou shalt be blind,
not seeing the sun for a season. And immediately
there fell on him a mist and a darkness ; and he went
about seeking some to lead him by the hand. 12 Then
the deputy, when he saw what was done, believed,
being astonished at the doctrine of the Lord.

AT ANTIOCH IN PISIDIA : PAUL'S SERMON TO THE JEWS

13 Now when Paul and his company loosed from
Paphos, they came to Perga in Pamphylia : and John de-
parting from them returned to Jerusalem.

14 But when they departed from Perga, they came to
Antioch in Pisidia, and went into the synagogue on the
sabbath day, and sat down. 15 And after the reading of
the law and the prophets the rulers of the synagogue
sent unto them, saying, Ye men and brethren, if ye have
any word of exhortation for the people, say on.

16 Then Paul stood up, and beckoning with his hand
said, Men of Israel, and ye that fear God, give audience.
17 The God of this people of Israel chose our fathers,
and exalted the people when they dwelt as strangers in
the land of Egypt, and with an high arm brought he

जलयान पर चढ़ कुप्रुस की यात्रा की ५ और सलमीस पहुंच कर यहूदियों के
सभागृहों में परमेश्वर का वचन सुनाया। यूहन्ना उनका अनुचर था। ६ पूरे
द्वीप की यात्रा कर वे पाफुस पहुंचे तो वहां उनकी भेंट बारयीशु नामक जादूगर*
से हुई जो यहूदी था और झूठा नबी था। ७ वह प्रान्तपति सिरगियुस
पौलुस के साथ रहता था जो एक विचारशील व्यक्ति थे और जिन्होंने
बरनबास एवं शाऊल को बुलाकर परमेश्वर का वचन सुनने की अभिलाषा
प्रकट की थी। ८ पर इलीमास, जादूगर, ने क्योंकि यही उसके नाम
का अर्थ है-इन लोगों का विरोध किया और प्रान्तपति को विश्वास करने
से रोकना चाहा। ९ तब शाऊल ने जो पौलुस भी कहलाते हैं, पवित्र आत्मा
से परिपूर्ण हो और उसकी ओर टकटकी लगाकर कहा, १० 'हे सब कपट
व धूर्तता की खान, शैतान की संतान, समस्त धार्मिकता के शत्रु, क्या तू
परमेश्वर के सरल मार्गों को जटिल बनाना नहीं छोड़ेगा? ११ अच्छा तो देख,
अब प्रभु का हाथ तेरे विरुद्ध उठा है, तू अंधा हो जाएगा और कुछ काल तक
सूर्य का प्रकाश नहीं देख सकेगा।' तत्क्षण उसकी दृष्टि के सामने धुंधलापन
और अंधकार छा गया, और वह इधर उधर टटोलने लगा कि कोई उसका
हाथ पकड़ कर ले चले। १२ यह घटना देखकर और प्रभु की शिक्षाओं पर
चकित हो प्रांतपति ने विश्वास किया।

पिसीदिया के यहूदियों के मध्य पौलुस का उपदेश

१३ पौलुस और उनके साथी जलमार्ग द्वारा पाफुस से पंफूलिया के
पिरगा आए; यूहन्ना उनको वहां छोड़कर यरूशलेम लौट गए। १४ वे
पिरगा से चलकर पिसीदिया के अंताकिया में आए और सबत के दिन
सभागृह में आकर बैठ गए। १५ नियमशास्त्र और नबियों की पुस्तकों से
पाठ पढ़े जाने के पश्चात् सभागृह के अधिकारियों ने उनको कहलाया,
'बंधुओ, यदि आप जनता के प्रोत्साहन के लिए कुछ कहना चाहते हैं तो
कहिए।' १६ इस पर पौलुस उठे और हाथ से उन्हें चुप रहने का संकेत
कर कहने लगे, 'इस्राएली भाइयो और परमेश्वर का भय माननेवाले सज्जनो,
सुनो। १७ इस्राएली प्रजा के परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों को चुना और मिस्र के

* १ अदारशः 'मागस'। मत्ती २:१ पर टिप्पणी द्रष्टव्य है।

them out of it. 18 And about the time of forty years
suffered he their manners in the wilderness. 19 And
when he had destroyed seven nations in the land of
Chanaan, he divided their land to them by lot. 20 And
after that he gave unto them judges about the space of
four hundred and fifty years, until Samuel the prophet.
21 And afterward they desired a king : and God gave
unto them Saul the son of Cis, a man of the tribe of
Benjamin, by the space of forty years. 22 And when he
had removed him, he raised up unto them David to be
their king ; to whom also he gave testimony, and said,
I have found David the son of Jesse, a man after mine
own heart, which shall fulfil all my will. 23 Of this
man's' seed hath God according to his promise raised
unto Israel a Saviour, Jesus : 24 when John had first
preached before his coming the baptism of repentance
to all the people of Israel. 25 And as John fulfilled his
course, he said, Whom think ye that I am ? I am not
he. But, behold, there cometh one after me,whose shoes
of his feet I am not worthy to loose.

26 Men and brethren, children of the stock of
Abraham, and whosoever among you feareth God, to
you is the word of this salvation sent. 27 For they
that dwell at Jerusalem, and their rulers, because they
knew him not, nor yet the voices of the prophets which
are read every sabbath day, they have fulfilled them in
condemning him. 28 And though they found no cause
of death in him, yet desired they Pilate that he should
be slain. 29 And when they had fulfilled all that was
written of him, they took him down from the tree, and
laid him in a sepulchre. 30 But God raised him from
the dead : 31 and he was seen many days of them which
came up with him from Galilee to Jerusalem, who are
his witnesses unto the people. 32 And we declare unto
you glad tidings, how that the promise which was made
unto the fathers, 33 God hath fulfilled the same unto
us their children, in that he hath raised up Jesus again ;
as it is also written in the second psalm,

Thou art my Son, this day have I begotten thee.

प्रवास में इस प्रजा की उन्नति की। "वह अपने भुजबल के द्वारा उनको
वहां से निकाल लाए" १८ तथा चालीस वर्ष तक मरुभूमि में उनका व्यवहार
सहन किया*। १९ तब उन्होंने कनान देश में सात जातियों का विनाश
कर कोई चार सौ पचास वर्षों तक वह भूमि उनके अधिकार में रहने दी।
२० इसके पश्चात् उन्होंने सामुएल नबी के समय तक उन्हें न्यायकर्ता प्रदान
किए। २१ तब लोगों ने राजा की मांग की; और परमेश्वर ने बिन्यामीनगोत्रोत्पन्न, कीश-पुत्र शाऊल को नियुक्त किया जो चालीस वर्ष तक
राजा रहे। २२ फिर उन्हें हटाकर दाऊद को उन लोगों का राजा बनाया
तथा उनके विषय में साक्षी दी, "मुझे एक मनुष्य, यिशै का पुत्र दाऊद,
मिल गया, वह मेरे मन के अनुकूल है; वह मेरी सब इच्छाएं पूरी करेगा।"
२३ उन्हीं के वंश में परमेश्वर ने प्रतिज्ञानुसार इस्राएल के लिए एक उद्धारकर्ता
अर्थात् यीशु को नियुक्त किया है। २४ इनके आगमन से पहले यूहन्ना ने
इस्राएल की समस्त प्रजा के बीच हृदय-परिवर्तन के बपतिस्मे का प्रचार
किया। २५ जब यूहन्ना अपना जीवन-कार्य समाप्त करने को थे तो उन्होंने
कहा था, "जो तुम मुझे समझ रहे हो, वह मैं नहीं हूं। जो मेरे पीछे आ
रहे हैं, मैं उनके पैरों के जूते तक खोलने के योग्य नहीं हूं।"

२६ 'बंधुओ, अब्रहाम के वंशजो, एवं तुम जो परमेश्वर का भय
मानते हो, सुनो, उद्धार का यह संदेश हम लोगों के लिए भेजा गया है।
२७ यरूशलेम के निवासियों और उनके नेताओं ने यीशु को नहीं पहिचाना
और उन्हें दंडाज्ञा देकर नबियों की वह वाणी पूर्ण कर दी जिसका पाठ
प्रत्येक सबत के दिन किया जाता है। २८ उन्होंने प्राणदंड के योग्य कोई
दोष उनमें नहीं पाया, तो भी पिलातुस से मांग की कि वह मार डाले जाएं।
२९ जब उनके विषय में शास्त्र के लेखानुसार सब बातें उन्होंने पूरी कर दी
तो उन्हें क्रूस से उतार कर कबर में रखा। ३० परंतु परमेश्वर ने यीशु को
मृतकों में से जीवित कर दिया ३१ और वह बहुत दिनों तक उन लोगों को,
जो उनके साथ गलील से यरूशलेम आए थे, दर्शन देते रहे। यही लोग
अब जनता के सामने उनके साक्षी हैं। ३२ हम लोग यह सुसमाचार तुमको
सुनाते हैं कि परमेश्वर ने यीशु को जीवित किया है और इस प्रकार हमारे
पूर्वजों से की गई प्रतिज्ञा को ३३ हमारी संतानों† के लिए पूरा किया है।

---

* कुछ प्राचीन प्रतियों में, 'उनकी देखभाल की'
† कुछ प्राचीन प्रतियों में; 'उनकी संतान, अर्थात् हमारे लिए'

34 And as concerning that he raised him up from the
dead, now no more to return to corruption, he said on
this wise,

I will give you the sure mercies of David.

35 Wherefore he saith also in another psalm,

Thou shalt not suffer thine Holy One to see
corruption.

36 For David, after he had served his own generation
by the will of God, fell on sleep, and was laid unto his
fathers, and saw corruption : 37 but he, whom God
raised again, saw no corruption. 38 Be it known unto
you therefore, men and brethren, that through this
man is preached unto you the forgiveness of sins :
39 and by him all that believe are justified from all
things, from which ye could not be justified by the
law of Moses. 40 Beware therefore, lest that come
upon you, which is spoken of in the prophets ;

41 Behold, ye despisers, and wonder, and perish :
For I work a work in your days,
A work which ye shall in no wise believe, though
a man declare it unto you.

42 And when the Jews were gone out of the syna-
gogue, the Gentiles besought that these words might be
preached to them the next sabbath. 43 Now when the
congregation was broken up, many of the Jews and
religious proselyts followed Paul and Barnabas : who,
speaking to them, persuaded them to continue in the
grace of God.

THE APOSTLES TURN TO THE GENTILES

44 And the next sabbath day came almost the whole
city together to hear the word of God. 45 But when
the Jews saw the multitudes, they were filled with envy,
and spake against those things which were spoken by
Paul, contradicting and blaspheming. 46 Then Paul and
Barnabas waxed bold, and said, It was necessary that
the word of God should first have been spoken to

जैसा कि द्वितीय भजन में उल्लेख है,

"तू मेरा पुत्र है, आज मैंने तुझे जन्म दिया है।"

३४ इस बात के प्रमाण में कि परमेश्वर ने उनको मृतकों में से उठाया कि
उनकी विकृति कभी न हो, उनका कथन है,

"मैं दाऊद की पवित्र और अटल आशिष तुमको दूंगा।"

३५ इसी कारण उन्होंने अन्यत्र कहा है,

"तुम अपने पवित्र जन को विकृति का अनुभव नहीं होने दोगे।"

३६ दाऊद तो अपने युग में परमेश्वर का उद्देश्य पूर्ण कर चिरनिद्रा में मग्न हो
गए, अपने पूर्वजों के साथ गाड़े गए और विकृति को भी प्राप्त हुए ; ३७ परंतु
जिन्हें परमेश्वर ने जीवित किया, उन्होंने विकृति का अनुभव नहीं किया ;
३८ इसलिए बंधुओ, तुम्हें विदित हो कि इन्हीं के द्वारा पापों को क्षमा का
संदेश सुनाया जा रहा है। ३९ मूसा का नियमशास्त्र जिन बातों से तुम्हें
विमुक्त न कर सका, उनसे यीशु के द्वारा प्रत्येक विश्वासी को विमुक्ति प्राप्त
है। ४० इसलिए सावधान, कहीं नबियों का यह कथन तुम पर चरितार्थ
न हो :

४१ "हे निंदकवृंद देखो, चकित हो और विनष्ट हो जाओ ;
क्योंकि मैं तुम्हारे समय में वह कार्य कर रहा हूं
जिसे यदि कोई तुम्हें बताए, तो तुम उस पर विश्वास नहीं करोगे।" '

४२ उनके बाहर निकलते समय लोगों ने अनुरोध किया कि अगले सबत
को ये बाते उन्हें फिर सुनाएं। ४३ जब सभा विसर्जित हो गई तो बहुत से
यहूदियों और धर्मपरायण नवयहूदियों ने पौलुस और बरनबास का अनुसरण
किया। वे उनसे बातें करने और उन्हें समझाने लगे कि परमेश्वर के अनुग्रह
में बने रहें।

विजातियों में पौलुस द्वारा प्रचार का आरंभ

४४ आगामी सबत को परमेश्वर का वचन सुनने के लिए लगभग सारा
नगर उमड़ पड़ा। ४५ इस भीड़ को देखकर यहूदियों को बड़ी ईर्ष्या हुई
और वे पौलुस की तीव्र निंदा और उनके कथन का विरोध करने लगे।
४६ इस पर पौलुस और बरनबास ने निर्भय होकर कहा, "यह अनिवार्य था

you : but seeing ye put it from you, and judge your-
selves unworthy of everlasting life, lo, we turn to the
Gentiles. 47 For so hath the Lord commanded us,
saying,

I have set thee to be a light of the Gentiles,
That thou shouldest be for salvation unto the ends
of the earth.

48 And when the Gentiles heard this, they were
glad, and glorified the word of the Lord : and as many as
were ordained to eternal life believed. 49 And the
word of the Lord was published throughout all the
region. 50 But the Jews stirred up the devout and
honourable women, and the chief men of the city, and
raised persecution against Paul and Barnabas, and ex-
pelled them out of their coasts. 51 But they shook off
the dust of their feet against them, and came unto
Iconium. 52 And the disciples were filled with joy,
and with the Holy Ghost.

PAUL AND BARNABAS AT ICONIUM

14 And it came to pass in Iconium, that they went
both together into the synagogue of the Jews, and
so spake, that a great multitude both of the Jews and
also of the Greeks believed. 2 But the unbelieving
Jews stirred up the Gentiles, and made their minds evil
affected against the brethren. 3 Long time therefore
abode they speaking boldly in the Lord, which gave testi-
mony unto the word of his grace, and granted signs and
wonders to be done by their hands. 4 But the multitude
of the city was divided ; and part held with the Jews,
and part with the apostles. 5 And when there was an
assault made both of the Gentiles, and also of the Jews
with their rulers, to use them despitefully, and to stone
them, 6 they were ware of it, and fled unto Lystra and
Derbe, cities of Lycaonia, and unto the region that lieth
round about : 7 and there they preached the gospel.

कि परमेश्वर का बचन प्रथम तुम्हें सुनाया जाए ; परंतु जब तुम उसकी अव-
हेलना करते और अपने आपको शाश्वत जीवन के अयोग्य मानते हो, तो हम
विजातियों की ओर फिरते हैं, ४७ क्योंकि प्रभु ने हमें ऐसी ही आज्ञा
दी है :

"मैंने तुमको विजातियों के लिए प्रकाश नियुक्त किया है
कि तुम पृथ्वी की अंतिम सीमा तक उद्धार का संदेश दो।" '

४८ यह सुनकर विजातीय लोग आनंदित हुए और प्रभु के वचन की
प्रशंसा करने लगे, एवं जो शाश्वत जीवन के लिए नियुक्त हुए थे, उन्होंने
विश्वास किया। ४९ प्रभु का बचन सारे देश में फैल गया। ५० परंतु
यहूदियों ने प्रतिष्ठित धर्मपरायण महिलाओं को और नगर के नेताओं को
उकसाया और पौलुस एवं बरनबास के विरुद्ध उपद्रव खड़ा कर उनको अपनी
सीमा से निकाल दिया। ५१ वे भी उनके विरोध में पैरों की धूल झाड़कर
इकुनियुम चले गए। ५२ और शिष्यगण आनंद एवं पवित्र आत्मा से
परिपूर्ण थे।

१४

इकुनियुम में पौलुस और बरनबास

१ इसी प्रकार इकुनियुम में उन्होंने यहूदियों के समागृह में प्रवेश किया
और इस प्रकार बोले कि यहूदियों और यूनानियों के एक बड़े समुदाय
ने विश्वास किया। २ पर जिन यहूदियों ने विश्वास नहीं किया था उन्होंने
विजातियों को उकसाया और भाइयों के विरुद्ध उनका मन बिगाड़ दिया।
३ बहुत दिनों तक वे वहां रहे और निर्भयतापूर्वक प्रभु का प्रचार करते रहे।
प्रभु ने भी उनके हाथों, चिह्न और चमत्कार द्वारा, अपने अनुग्रहमय बचन को
प्रमाणित किया। ४ अब नगर की जनता में फूट पड़ गई—कुछ लोग
यहूदियों के साथ हो गए और कुछ प्रेरितों के। ५ जब विजातियों और यहूदियों
ने अपने नेताओं के साथ मिलकर उन्हें अपमानित करने और पत्थरों से मार
डालने का प्रयत्न किया, ६ तो वे परिस्थिति समझ कर लुकाउनियां के नगरों
लुस्त्रा और दिरबे, एवं उनके आसपास के प्रदेश की ओर भाग गए ७ और वहां
सुसमाचार सुनाने लगे।

AT LYSTRA

8 And there sat a certain man at Lystra, impotent
in his feet, being a cripple from his mother's womb, who
never had walked : 9 the same heard Paul speak : who
stedfastly beholding him, and perceiving that he had
faith to be healed, 10 said with a loud voice, Stand up-
right on thy feet. And he leaped and walked.

11 And when the people saw what Paul had done,
they lifted up their voices, saying in the speech of
Lycaonia, The gods are come down to us in the likeness
of men. 12 And they called Barnabas, Jupiter ; and
Paul, Mercurius, because he was the chief speaker.
13 Then the priest of Jupiter, which was before their
city, brought oxen and garlands unto the gates, and
would have done sacrifice with the people. 14 Which
when the apostles, Barnabas and Paul, heard of, they
rent their clothes, and ran in among the people, crying
out, 15 and saying, Sirs, why do ye these things ? We
also are men of like passions with you, and preach unto
you that ye should turn from these vanities unto the
living God, which made heaven, and earth, and the sea,
and all things that are therein : 16 who in times past
suffered all nations to walk in their own ways. 17 Ne-
vertheless he left not himself without witness, in that he
did good, and gave us rain from heaven, and fruitful
seasons, filling our hearts with food and gladness. 18 And
with these sayings scarce restrained they the people, that
they had not done sacrifice unto them.

19 And there came thither certain Jews from An-
tioch and Iconium, who persuaded the people, and,
having stoned Paul, drew him out of the city, supposing
he had been dead. 20 Howbeit, as the disciples stood
round about him, he rose up, and came into the city :
and the next day he departed with Barnabas to Derbe.

THE RETURN TO ANTIOCH

21 And when they had preached the gospel to that
city, and had taught many, they returned again to

लुस्त्रा में

८ लुस्त्रा में एक मनुष्य पैरों से असमर्थ होने के कारण बैठा था; वह जन्म से लंगड़ा था और कभी नहीं चला था। ९ वह पौलुस के वचन सुन रहा था। उन्होंने उसकी ओर एकटक दृष्टि की और यह देखकर कि उसे स्वस्थ होने का विश्वास है, १० उच्च स्वर से कहा, 'अपने पैरों पर सीधा खड़ा हो।' वह उछल पड़ा और चलने लगा।

११ पौलुस का यह कार्य देखकर जनसमूह लुकाउनियां की भाषा में कोलाहल करने लगा, 'देवतागण मनुष्यों का रूप धारण कर हमारे बीच उतर आए हैं।' १२ उन्होंने बरनबास को ज्यूस और पौलुसको हिरमेस कहा, क्योंकि वह प्रमुख वक्ता थे। १३ ज्यूस का पुजारी भी जिसका मंदिर नगर के सामने था, भारी जनसमूह के साथ बलिदान चढ़ाने के लिए बैलों और पुष्पमालाओं को लेकर फाटक पर आ पहुँचा। १४ जब प्रेरितों ने अर्थात् बरनबास और पौलुस ने यह सुना तो अपने वस्त्र फाड़े, भीड़ में कूद पड़े और उच्च स्वर में कहने लगे, १५ 'यह तुम क्या कर रहे हो ? हम भी तो तुम्हारे सदृश दुख-सुख भोगनेवाले मनुष्य हैं। हम तुम्हें सुसमाचार देते हैं कि इन निस्सार वस्तुओं* से विमुख होकर जीवंत परमेश्वर पर विश्वास करो जो आकाश, पृथ्वी, समुद्र एवं जो कुछ उनमें हैं सबके रचयिता हैं। १६ उन्होंने बीते युगों में सब जातियों को अपने अपने पंथ के अनुसार चलने दिया १७ परंतु फिर भी अपने को साक्षी-विहीन नहीं छोड़ा, क्योंकि वह आकाश से वृष्टि एवं फलवती ऋतुएं प्रदान कर और तुमको भोजन एवं मानसिक आनंद से तृप्त कर, तुम्हारा उपकार करते रहे।' १८ यह कहकर उन्होंने जनसमूह को बड़ी कठिनाई से रोका कि उनके लिए बलिदान न चढ़ाएं।

१९ पर अंताकिया और इकुनियुम से यहूदी आ पहुँचे,। उन्होंने जनता को अपने पक्ष में कर पौलुस पर पत्थरों से प्रहार किया तथा उन्हें मृतक समझकर नगर के बाहर खींच ले गए। २० जब शिष्य उनके चारों ओर एकत्रित हुए तो पौलुस उठे और नगर में गए और दूसरे दिन बरनबास के साथ दिरबे चल दिए।

अंताकिया को लौटना

२१ उन्होंने उस नगर में सुसमाचार सुनाया और अनेक शिष्य बनाकर

---
* अथवा, 'मूर्तियों'

Lystra, and to Iconium, and Antioch, 22 confirming the
souls of the disciples, and exhorting them to continue in
the faith, and that we must through much tribulation
enter into the kingdom of God. 23 And when they had
ordained them elders in every church, and had prayed
with fasting, they commended them to the Lord, on
whom they believed.

24 And after they had passed throughout Pisidia,
they came to Pamphylia. 25 And when they had
preached the word in Perga, they went down into
Attalia : 26 and thence sailed to Antioch, from whence
they had been recommended to the grace of God for the
work which they fulfilled. 27 And when they were
come, and had gathered the church together, they re-
hearsed all that God had done with them, and how he
had opened the door of faith unto the Gentiles. 28 And
there they abode long time with the disciples.

GENTILE CHRISTIANS AND THE LAW OF MOSES

15 And certain men which came down from Judæa
taught the brethren, and said, Except ye be cir-
cumcised after the manner of Moses, ye cannot be saved.
2 When therefore Paul and Barnabas had no small dis-
sension and disputation with them, they determined
that Paul and Barnabas, and certain other of them,
should go up to Jerusalem unto the apostles and elders
about this question. 3 And being brought on their way
by the church, they passed through Phenice and Samaria
declaring the conversion of the Gentiles : and they
caused great joy unto all the brethren. 4 And when
they were come to Jerusalem, they were received of
the church, and of the apostles and elders and they
declared all things that God had done with them.
5 But there rose up certain of the sect of the Pharisees
which believed, saying, That it was needful to cir-
cumcise them, and to command them to keep the law
of Moses.

लुस्त्रा, इकुनियुम और अंताकिया को ओर लौटे। २२ वे शिष्यों के मन सुदृढ़
करते, उन्हें विश्वास में स्थिर रहने को प्रोत्साहित करते और कहते थे कि
उन्हें बहुत संकटों में होकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना है। २३ उन्होंने
प्रत्येक कलीसिया में धर्मवृद्ध नियुक्त किए और प्रार्थना एवं उपवास कर उन्हें
प्रभु को, जिन पर उन्होंने विश्वास किया था, समर्पित किया।

२४ तब वे पिसिदिया से होते हुए पंफूलिया पहुँचे, २५ और पिरगा में
सुसमाचार सुनाकर अत्तालिया आए। २६ वहां से जलमार्ग द्वारा अंताकिया
पहुँचे, जहां वे उस कार्य के लिए परमेश्वर के अनुग्रह को अर्पण किए गए थे,
जो उन्होंने अब पूरा कर दिया था। २७ वहां पहुँच कर उन्होंने कलीसिया को
एकत्रित किया और बताया कि परमेश्वर ने उनका साथ देकर कैसे कैसे महान्
कार्य किए और किस प्रकार विजातियों के लिए विश्वास का द्वार खोल दिया।
२८ वहीं वे शिष्यों के साथ बहुत दिन तक रहे।

१५

विजातीय खिस्ती और मूसा की व्यवस्था

१ कुछ लोग यहूदिया से आकर भाइयों को सिखाने लगे कि यदि मूसा
की प्रथा के अनुसार तुम्हारा खतना नहीं होता तो तुम्हारा उद्धार भी नहीं
हो सकता। २ उनका पौलुस और बरनबास के साथ बहुत झगड़ा और
वाद विवाद हुआ, तो यह निश्चय हुआ कि पौलुस, बरनबास और उनमें से कई
व्यक्ति इस प्रश्न के निर्णय के लिए यरूशलेम में प्रेरितों और धर्मवृद्धों के पास
जाएं। ३ कलीसिया के लोग उन्हें कुछ दूर पहुंचाने गए। उन्होंने फीनीके और
सामरिया में होकर यात्रा की और वहां सब बंधुगणों को विजातियों के धर्म-
परिवर्तन का विवरण देकर आनंदित किया। ४ जब वे यरूशलेम पहुँचे तो
कलीसिया ने, प्रेरितों ने और धर्मवृद्धों ने उनका स्वागत किया। इन्होंने बताया
कि परमेश्वर ने इनका साथ लेकर कैसे कैसे महान् कार्य किए थे। ५ इस पर
फरीसी दल के कुछ लोग, जो विश्वासी हो गए थे, उठकर कहने लगे, 'उनका
खतना होना चाहिए और उन्हें आज्ञा दी जानी चाहिए कि वे मूसा के
नियमशास्त्र का पालन करें।'

THE COUNCIL AT JERUSALEM

6 And the apostles and elders came together for to
consider of this matter. 7 And when there had been
much disputing, Peter rose up and said unto them, Men
and brethren, ye know that a good while ago God made
choice among us, that the Gentiles by my mouth should
hear the word of the gospel, and believe. 8 And God
which knoweth the hearts, bare them witness, giving
them the Holy Ghost, even as he did unto us : 9 and
put no difference between us and them, purifying their
hearts by faith. 10 Now therefore why tempt ye God
to put a yoke upon the neck of the disciples, which
neither our fathers nor we were able to bear ? 11 But
we believe that through the grace of the Lord Jesus
Christ we shall be saved, even as they.

12 Then all the maltitude kept silence, and gave
audience to Barnabas and Paul, declaring what miracles
and wonders God had wrought among the Gentiles by
them. 13 And after they had held their peace, James
answered, saying, Men and brethren, hearken unto
me : 14 Simeon hath declared how God at the first
did visit the Gentiles, to take out of them a people
for his name. 15 And to this agree the words of the
prophets ; as it is written,

16 After this I will return,
And will build again the tabernacle of David, which is fallen down ;
And I will build again the ruins thereof,
And I will set it up :
17 That the residue of men might seek after the Lord,
And all the Gentiles, upon whom my name is called,
Saith the Lord, who doeth all these things.
18 Known unto God are all his works from the beginning of the world.

19 Wherefore my sentence is, that we trouble not them
which from among the Gentiles are turned to God :
20 but that we write unto them, that they abstain

यरूशलेम की परिषद्

६ इस विषय पर विचार करने के लिए प्रेरित और प्राचीन एकत्रित हुए।
७ बहुत वाद विवाद के अनंतर पतरस ने उठकर कहा, भाइयो, तुम्हें ज्ञात है कि
प्रारंभ में परमेश्वर ने तुममें से मुझे चुना कि विजातीय लोग मेरे मुख से सुसमा-
चार का वचन सुनें और विश्वास करें। ८ अंतर्यामी परमेश्वर ने हमारे समान
ही उनको पवित्र आत्मा देकर उनके पक्ष में साक्षी दी, ९ तथा विश्वास के द्वारा
उनका हृदय विशुद्ध कर हमारे और उनके बीच कोई भेद नहीं रखा। १० तो
तुम अब परमेश्वर की परीक्षा क्यों करते हो, और शिष्यों के कंधों पर वह
जुआ क्यों लादते हो जिसे न हम और न हमारे पूर्वज वहन कर सके?
११ हमारा विश्वास है कि प्रभु यीशु के अनुग्रह द्वारा जैसे हमारा उद्धार है वैसे
ही उनका भी।"

१२ इस पर सब सभा चुप हो गई और बरनबास एवं पौलुस का विवरण
सुनने लगी कि परमेश्वर ने उनके द्वारा विजातियों में कैसे महान् चिह्न और
चमत्कार किए। १३ जब वे चुप हुए तो याकूब ने कहा, भाइयो मेरी बात
सुनो। १४ शमौन बता चुके हैं कि किस प्रकार प्रारंभ में परमेश्वर ने अपने
नाम के निमित्त विजातियों में से प्रजा चुनने की कृपा की। १५ इस बात
का समर्थन नबियों की वाणी से होता है, जैसा कि लेख है :

१६ "इसके पश्चात् मैं लौटूंगा,
और दाऊद के गिरे हुए निवास-स्थान को बनाऊंगा,
उसके खंडहरों का पुनः निर्माण करूंगा,
और उसको फिर सीधा करूंगा;
१७ जिससे शेष मानव जाति भी प्रभु की खोज करें,
अर्थात् वे सब विजातियां जिन्हें मेरा नाम प्रदान किया गया है।
१८ यह उन्हीं प्रभु का कथन है जो आरंभ से यह प्रकट
करते आए हैं।"

१९ इस कारण मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूं कि जो विजातियों में से
परमेश्वर की ओर फिरें, उन्हें हम उलझन में न डालें, २० वरन् उन्हें लिख भेजें
कि मूर्तियों की अशुद्धताओं से, व्यभिचार से, (गला घोंटे पशुओं के मांस से)*

* कुछ प्राचीन प्रतियों में कोष्टांकित शब्द नहीं पाए जाते।

from pollutions of idols, and from fornication, and
from things strangled, and from blood. 21 For Moses
of old time hath in every city them that preach him,
being read in the synagogues every sabbath day.

A LETTER TO THE GENTILE CHRISTIANS

22 Then pleased it the apostles and elders, with
the whole church, to send chosen men of their own
company to Antioch with Paul and Barnabas; namely,
Judas surnamed Barsabas, and Silas, chief men among
the brethren: 23 and they wrote letters by them after
this manner; The apostles and elders and brethren
send greeting unto the brethren which are of the
Gentiles in Antioch and Syria and Cilicia: 24 foras-
much as we have heard, that certain which went out
from us have troubled you with words, subverting your
souls, saying, Ye must be circumcised, and keep the
law: to whom we gave no such commandment: 25 it
seemed good unto us, being assembled with one accord,
to send chosen men unto you with our beloved Barna-
bas and Paul, 26 men that have hazarded their lives
for the name of our Lord Jesus Christ. 27 We have
sent therefore Judas and Silas, who shall also tell you
the same things by mouth. 28 For it seemed good to the
Holy Ghost, and to us, to lay upon you no greater
burden than these necessary things; 29 that ye abstain
from meats offered to idols, and from blood, and from
things strangled, and from fornication: from which if ye
keep yourselves, ye shall do well. Fare ye well.

30 So when they were dismissed, they came to
Antioch: and when they had gathered the multitude
together, they delivered the epistle: 31 which when
they had read, they rejoiced for the consolation. 32 And
Judas and Silas, being prophets also themselves, exhorted
the brethren with many words, and confirmed them.
33 And after they had tarried there a space, they were
let go in peace from the brethren unto the apostles.
34 Notwithstanding it pleased Silas to abide there still.
35 Paul also and Barnabas continued in Antioch,

और रक्त से पृथक् रहें। २१ क्योंकि प्राचीन काल से नगर-नगर में
मूसा के नियमशास्त्र के प्रचारक विद्यमान है, जो प्रत्येक सबत को सभागृहों
में उसका पाठ करते हैं।'

परिषद् का निर्णय

२२ तब समस्त कलीसिया, प्रेरितों और धर्मवृद्धों ने निश्चय किया कि
अपने बीच से कुछ लोगों को चुन कर पौलुस एवं बरनबास के साथ अंताकिया
भेजा जाए। २३ यहूदा उपनाम बरसब्बा और सीलास के हाथ, जो भाइयों
में प्रमुख थे, उन्होंने यह लिख भेजा, 'अंताकिया, सूरिया और किलकिया
निवासी विजातीय भाइयों को, तुम्हारे भाई प्रेरितों और धर्मवृद्धों की ओर से
नमस्कार। २४ हमने सुना है कि हमारे यहां के कुछ लोगों ने अपनी बातों
से तुमको व्याकुल कर दिया है और तुम्हारे मन को अशांत। हमने उनको
कोई ऐसा आदेश नहीं दिया था। २५ अब हमने सर्वानुमति से निर्णय किया है
कि कुछ व्यक्तियों को चुनें, और प्रिय बरनबास एवं पौलुस के साथ,
२६ जिन्होंने अपना जीवन हमारे प्रभु यीशु ख्रिस्त के नाम पर अर्पित कर
दिया है तुम्हारे पास भेजें। २७ हम यहूदा और सीलास को भेज
रहे हैं। वे स्वयं अपने मुखसे इन बातों का वर्णन करेंगे। २८ पवित्र
आत्मा का और हमारा विचार है कि निम्नलिखित आवश्यक बातों
को छोड़ कर तुम पर और अधिक बोझ न लादा जाए: २९ मूर्तियों
पर चढ़े प्रसाद से, रक्त से, गला घोंटे हुए पशुओं के मांस से और
व्यभिचार से बचो। इनसे पृथक् रहने में तुम्हारा भलाई है। इति
शुभम्।'

३० तब वे बिदा होकर अंताकिया पहुँचे और सभा को एकत्रित कर यह
पत्र दिया। ३१ उसे पढ़कर वे लोग आश्वासन के संदेश है प्रसन्न हुए।
३२ यहूदा और सीलास स्वयं नबी थे, उन्होंने भी अनेक बचनों द्वारा भाइयों
को प्रोत्साहित और दृढ़ किया। ३३ कुछ दिन रहने के पश्चात् वे शांति के
साथ भाइयों से बिदा हुए कि अपने भेजने वालों के पास लौटें।
३४ पर सीलास ने वहीं रहने का निश्चय किया इसलिए यहूदा ही लौटे*।
३५ पौलुस और बरनबास भी अंताकिया में रह गए और अन्य बहुत लोगों
के साथ प्रभु के बचन की शिक्षा देते और उसका प्रचार करते रहे।

* अनेक प्राचीन प्रतियों में पद ३४ नहीं मिलता

teaching and preaching the word of the Lord, with many others also.

PAUL AND BARNABAS SEPARATE

36 And some days after Paul said unto Barnabas, Let us go again and visit our brethren in every city where we have preached the word of the Lord, and see how they do. 37 And Barnabas determined to take with them John, whose surname was Mark. 38 But Paul thought not good to take him with them, who departed from them from Pamphylia, and went not with them to the work. 39 And the contention was so sharp between them, that they departed asunder one from the other : and so Barnabas took Mark, and sailed unto Cyprus ; 40 and Paul chose Silas, and departed, being recommended by the brethren unto the grace of God. 41 And he went through Syria and Cilicia, confirming the churches.

TIMOTHY JOINS PAUL AT LYSTRA

16 Then came he to Derbe and Lystra : and, behold, a certain disciple was there, named Timotheus, the son of a certain woman, which was a Jewess, and believed ; but his father was a Greek : 2 which was well reported of by the brethren that were at Lystra and Iconium. 3 Him would Paul have to go forth with him : and took and circumcised him because of the Jews which were in those quarters : for they knew all that his father was a Greek. 4 And as they went through the cities, they delivered them the decrees for to keep, that were ordained of the apostles and elders which were at Jerusalem. 5 And so were the churches established in the faith, and increased in number daily.

PAUL'S JOURNEY THROUGH ASIA MINOR

6 Now when they had gone throughout Phrygia and the region of Galatia, and were forbidden of the Holy

पौलुस और बरनबास का वियुक्त होना

३६ कुछ दिन पश्चात् पौलुस ने बरनबास से कहा, 'आओ, जिन जिन
नगरों में हमने प्रभु का वचन सुनाया था, वहां लौट कर चलें, और भाइयों
को देखें कि वे कैसे हैं।' ३७ बरनबास की इच्छा थी कि यूहन्ना उपनाम
मरकुस को भी ले चलें परंतु पौलुस ने यह उपयुक्त नहीं समझा ३८ कि
जिस व्यक्ति ने उन्हें पंफूलिया में छोड़ दिया था और जो उनके साथ काम
पर नहीं गया था, उसे अपने साथ ले जायें। ३९ उनमें तीव्र मतभेद हो
गया, यहां तक कि वे एक दूसरे से पृथक् हो गए। बरनबास मरकुस को
लेकर जलमार्ग से कुप्रुस चले गए। ४० पौलुस ने सीलास को चुना और
तब भाइयों ने उन्हें प्रभु के अनुग्रह के अर्पण किया, ४१ तो वे वहां से
चल पड़े और सूरिया एवं किलिकिया का भ्रमण कलीसियाओं को सुदृढ़
करने लगे।

१६

पौलुस का तिमुथियुस को साथ लेना

१ वह दिरबे और लुस्त्रा पहुँचे। वहां तिमुथियुस नामक एक शिष्य
थे जो विश्वास करनेवाली किसी यहूदी महिला के पुत्र थे; पर उनके पिता
यूनानी थे। २ उनका लुस्त्रा और इकुनियुम के भाइयों में बड़ा मान था।
३ पौलुस की इच्छा थी कि उन्हें अपने साथ ले लें, इसलिए उन स्थानों के
निवासी यहूदियों के कारण उनका खतना कराया क्योंकि वे लोग जानते थे कि
उनके पिता यूनानी हैं। ४ तब उन्होंने नगर नगर भ्रमण कर लोगों तक उस
निर्णय को पहुँचाया, जो यरूशलेम में प्रेरितों और धर्मवृद्धों ने किया था, कि वे
उसका पालन करें। ५ इस प्रकार कलीसिया प्रतिदिन विश्वास में सुदृढ़ होती
और संख्या में बढ़ती गई।

फ्रूगिया, गलातिया और त्रोआस में

६ पवित्र आत्मा ने उन्हें आसिया में वचन सुनाने का निषेध किया इस-

Ghost to preach the word in Asia, 7 after they were
come to Mysia, they assayed to go into Bithynia : but
the Spirit suffered them not. 8 And they passing by
Mysia came down to Troas. 9 And a vision appeared
to Paul in the night ; There stood a man of Macedonia,
and prayed him, saying, Come over into Macedonia,
and help us. 10 And after he had seen the vision,
immediately we endeavoured to go into Macedonia,
assuredly gathering that the Lord had called us for to
preach the gospel unto them.

PAUL CROSSES TO MACEDONIA : AT PHILIPPI

11 Therefore loosing from Troas, we came with a
straight course to Samothracia, and the next day to
Neapolis ; 12 and from thence to Philippi, which is the
chief city of that part of Macedonia, and a colony :
and we were in that city abiding certain days. 13 And
on the sabbath we went out of the city by a river side,
where prayer was wont to be made ; and we sat down,
and spake unto the women which resorted thither.
14 And a certain woman named Lydia, a seller of
purple, of the city of Thyatira, which worshipped God,
heard us : whose heart the Lord opened, that she
attended unto the things which were spoken of Paul.
15 And when she was baptized, and her household,
she besought us, saying, If ye have judged me to be
faithful to the Lord, come into my house, and abide
there. And she constrained us.

16 And it came to pass, as we went to prayer,
a certain damsel possessed with a spirit of divination
met us, which brought her masters much gain by sooth-
saying : 17 The same followed Paul and us, and cried,
saying, These men are the servants of the most high
God, which shew unto us the way of salvation.
18 And this did she many days. But Paul, being
grieved, turned and said to the spirit, I command thee
in the name of Jesus Christ to come out of her. And
he came out the same hour.

लिए वे फ्रूगिया और गलातिया में होकर निकले। ७ जब वे मूसिया की
सीमा पर पहुंचे तो उन्होंने बितूनिया में प्रवेश करने का प्रयत्न किया पर यीशु
के आत्मा ने अनुमति नहीं दी। ८ इस पर वे मूसिया से होकर त्रोआस
आए। ९ वहां पौलुस ने रात्रि में दर्शन पाया कि एक मकिदूनिया निवासी
खड़ा हुआ उनसे निवेदन कर रहा है, 'पार उतरकर मकिदूनिया आइए और
हमारी सहायता कीजिए।' १० ज्योंही उन्होंने यह दर्शन पाया, हम लोग
मकिदूनिया पहुंचने का प्रयत्न करने लगे क्योंकि हमने जान लिया कि परमेश्वर
उन लोगों में सुसमाचार सुनाने के लिए हमें बुला रहे हैं।

यूरोप में : फिलिप्पी

११ त्रोआस से हमने समुद्र-यात्रा आरंभ की और सीधे सुमात्रा तक
गए, और दूसरे दिन नियापुलिस। १२ फिर वहां से फिलिप्पी पहुंचे जो
मकिदूनिया प्रांत का एक प्रमुख नगर एवं रोमी उपनिवेश है। हम उस नगर
में कुछ दिन रहे। १३ सबत के दिन हम नगर-द्वार के बाहर नदी तट पर
गए क्योंकि हमारा अनुमान था कि वहां कोई प्रार्थना करने का स्थान होगा ;
और बैठकर वहां एकत्रित स्त्रियों से वार्तालाप करने लगे। १४ उनमें लुदिया
नाम की, थुआथीरा नगर की रहनेवाली और बैंजनी वस्त्र बेचनेवाली एक
धर्मपरायण महिला थी जो सब बातें सुन रही थी। प्रभु ने उसका मन खोला कि
वह पौलुस के वचनों पर ध्यान दे। १५ वह सपरिवार बपतिस्मा ले चुकी
तो उनसे अनुरोध करने लगी 'यदि आप मानते हैं कि मैं प्रभु की विश्वासिनी
हूं तो चलकर मेरे घर रहिए।' हम जाने के लिए विवश हो गए।

१६ जब हम प्रार्थना-स्थान को जा रहे थे तो हमें एक नववयस्क दासी
मिली जिसमें भविष्य कहने वाली आत्मा थी, और जो भविष्य-वाणी द्वारा
अपने स्वामियों के लिये बहुत कुछ कमा लाती थी। १७ वह पौलुस के और
हमारे पीछे लग गई और चिल्लाने लगी, 'ये लोग सर्वोच्च परमेश्वर के सेवक
हैं ; ये तुम लोगों को उद्धार के मार्ग का संदेश देते हैं।' १८ वह बहुत दिनों
तक ऐसा ही करती रही। अंत में पौलुस तंग आकर उसकी ओर मुड़े और
उस आत्मा से बोले,' यीशु ख्रिस्त के नाम से मैं तुझे आज्ञा देता हूं कि
उसमें से निकल जा।' उसी क्षण वह उसमें से निकल गई।

19 And when her masters saw that the hope of
their gains was gone, they caught Paul and Silas, and
drew them into the marketplace unto the rulers,
20 and brought them to the magistrates, saying, These
men, being Jews, do exceedingly trouble our city,
21 and teach customs, which are not lawful for us
to receive, neither to observe, being Romans. 22 And
the multitude rose up together against them : and the
magistrates rent off their clothes, and commanded to
beat them. 23 And when they had laid many stripes
upon them, they cast them into prison, charging the
jailor to keep them safely : 24 who, having received
such a charge, thrust them into the inner prison, and
made their feet fast in the stocks.

25 And at midnight Paul and Silas prayed, and
sang praises unto God : and the prisoners heard them.
26 And suddenly there was a great earthquake, so
that the foundations of the prison were shaken : and
immediately all the doors were opened, and every one's
bands were loosed. 27 And the keeper of the prison
awaking out of his sleep, and seeing the prison doors
open, he drew out his sword, and would have killed
himself, supposing that the prisoners had been fled.
28 But Paul cried with a loud voice, saying, Do thyself
no harm : for we are all here. 29 Then he called for
a light, and sprang in, and came trembling, and fell
down before Paul and Silas, 30 and brought them out,
and said, Sirs, what must I do to be saved ? 31 And
they said, Believe on the Lord Jesus Christ, and thou
shalt be saved, and thy house. 32 And they spake
unto him the word of the Lord, and to all that were
in his house. 33 And he took them the same hour of
the night, and washed their stripes ; and was baptized,
he and all his, straightway. 34 And when he had
brought them into his house, he set meat before them,
and rejoiced, believing in God with all his house.

35 And when it was day, the magistrates sent the

१९ जब उसके स्वामियों ने देखा कि उनके लाभ की आशा जाती रही
तो उन्होंने पौलुस और सीलास को पकड़ा, उन्हें शासकों के पास चौक में
घसीट कर ले गए, २० तथा दंडाधिकारियों के संमुख ले जाकर कहा, 'ये
यहूदी हैं और नगर में उत्पात मचा रहे हैं। २१ ये ऐसी रीतियों का प्रचार
करते हैं जिनका मानना या करना हम रोमियों के लिए विहित नहीं।'
२२ उनके विरुद्ध भीड़ एकत्रित हो गई। इस पर दंडाधिकारियों ने बंदियों के
वस्त्र फाड़ डाले और उनके बेंत लगाने की आज्ञा दी। २३ उन्होंने उन्हें बैंतों
से बहुत पीटा और बंदीगृह में डाल दिया तथा बंदीगृह के अधीक्षक को आज्ञा
दी कि सावधानी से उनकी रखवाली करे। २४ उसने यह आदेश पाकर
उन्हें बंदीगृह के भीतरी भाग में रखा और उनके पैर काठ में जकड़ दिए।

२५ लगभग आधी रात के समय पौलुस और सीलास प्रार्थना कर रहे थे
और परमेश्वर की स्तुति गा रहे थे, तथा बंदीगण सुन रहे थे। २६ इतने में
एकाएक भारी भूकंप आया जिससे कारागार की नींव हिल गई, क्षण भर में
सब द्वार खुल गए और सब मुक्त हो गए। २७ बंदीगृह-अधीक्षक नींद से
जाग उठा। उसने बंदीगृह के द्वारों को खुला देखा तो यह सोचकर कि बंदी
भाग गए खड्ग खींच लिया और आत्महत्या करनी चाही। २८ इस पर
पौलुस ने उच्च स्वर से चिल्ला कर कहा, 'अपने आपको कोई हानि न पहुंचाओ,
क्योंकि हम सब यहां हैं।' २९ तब वह दीपक मंगाकर भीतर दौड़ा आया
और कांपता हुआ पौलुस एवं सीलास के आगे गिरा। ३० वह उन्हें बाहर ले
आया और बोला, 'सज्जनो, मुझे उद्धार-प्राप्ति के लिए क्या करना चाहिए?'
३१ उन्होंने उत्तर दिया, 'प्रभु यीशु पर विश्वास करो तो तुम एवं तुम्हारा
परिवार उद्धार पाएगा।' ३२ और उन्होंने उसको और उसके सब परिवार
को प्रभु का संदेश सुनाया। ३३ वह रात को उसी घड़ी उनको ले गया,
उनके घाव धोए और अपने समस्त परिजनों सहित तत्काल बपतिस्मा लिया।
३४ अब उसने उन्हें अपने घर जाकर भोजन कराया और सपरिवार आनंदित
हुआ कि उसने परमेश्वर पर विश्वास किया है।

३५ दिन होने पर दंडाधिकारियों ने दो आरक्षियों के हाथ कहला भेजा

serjeants, saying, Let those men go. 36 And the keeper
of the prison told this saying, to Paul, The magistrates
have sent to let you go : now therefore depart, and
go in peace. 37 But Paul said unto them, They have
beaten us openly uncondemned, being Romans, and
have cast us into prison : and now do they thrust
us out privily ? nay verily ; but let them come them-
selves and fetch us out. 38 And the serjeants told
these words unto the magistrates : and they feared,
when they heard that they were Romans. 39 And they
came and besought them, and brought them out, and
desired them to depart out of the city. 40 And they
went out of the prison, and entered into the house of
Lydia : and when they had seen the brethren, they com-
forted them, and departed.

AT THESSALONICA

17 Now when they had passed through Amphipolis
and Apollonia, they came to Thessalonica, where
was a synagogue of the Jews : 2 and Paul, as his manner
was, went in unto them, and three sabbath days reasoned
with them out of the scriptures, 3 opening and alleging,
that Christ must needs have suffered, and risen again
from the dead ; and that this Jesus, whom I preach unto
you, is Christ. 4 And some of them believed, and
consorted with Paul and Silas ; and of the devout Greeks
a great multitude, and of the chief women not a
few. 5 But the Jews which believed not, moved with
envy, took unto them certain lewd fellows of the baser
sort, and gathered a company, and set all the city on
an uproar, and assaulted the house of Jason, and sought
to bring them out to the people. 6 And when they
found them not, they drew Jason and certain brethren
unto the rulers of the city, crying, These that have
turned the world upside down are come hither also ;
7 whom Jason hath received : and these all do contrary
to the decrees of Cæsar, saying that there is another

कि वे व्यक्ति छोड़ दिए जाएं। ३६ बंदीगृह के अधीक्षक ने पौलुस को बताया, 'दंडाधिकारियों ने आपको छोड़ देने के लिये कहला भेजा है। अब बाहर चलिए और शांति से जाइए।' ३७ किंतु पौलुस ने उन लोगों से कहा, 'उन्होंने हम पर लगाए गए अभियोगों पर विचार किए बिना ही हम रोमी नागरिकों को लोगों के सामने पीटा और बंदीगृह में डाला ; और अब हमें चुपके से निकाल ले रहे हैं ? ऐसा नहीं होगा। वे स्वयं आकर हमें बाहर ले जाएं।' ३८ आरक्षियों ने दंडाधिकारियों को ये बचन जा सुनाए। जब उन्होंने सुना कि ये लोग रोमी नागरिक हैं तो डर गए ३९ और आकर उन्हें मनाने लगे। लोग उन्हें बाहर ले आए और प्रार्थना की कि नगर से बिदा हो जाएं। ४० वे बंदीगृह से निकल कर लूदिया के घर गए, भाइयों से मिले और उन्हें प्रोत्साहित कर वहां से बिदा हो गए।

१७

थिस्सलुनीके में

१ वे अंफिपुलिस और अपुल्लोनिया होकर थिस्सलुनीके आए जहां यहूदियों का सभागृह था। २ पौलुस अपनी प्रथा के अनुसार उनके पास गए और तीन सबत तक उनके साथ शास्त्रों पर वाद-विवाद करते रहे। ३ वे उनका अर्थ स्पष्ट कर इस बात का प्रमाण देते रहे कि ख्रिस्त का कष्ट भोगना और मृतकों में से जी उठना अनिवार्य था, एवं यीशु ही, जिनकी मैं तुम्हें कथा सुनाता हूं, ख्रिस्त हैं।' ४ उनमें से अनेक व्यक्तियों ने—धर्मपरायण यूनानियों और बहुत सी प्रतिष्ठित महिलाओं ने भी—विश्वास किया और पौलुस एवं सीलास के साथ सम्मिलित हो गए। ५ इस पर यहूदी ईर्ष्या से जल उठे और कुछ बाजारू गुंडों को लेकर और भीड़ एकत्र कर नगर में हुल्लड़ मचाने लगे। वे यासीन के घर पर चढ़ आए और प्रेरितों को नगर-सभा के संमुख ले जाने का प्रयत्न किया। ६ उन्हें न पाकर वे यासीन और कई भाइयों को नगर के अधिकारियों के पास खींच लाए और लगे चिल्लाने, 'संसार में उलट पलट करनेवाले ये लोग यहां भी आ पहुंचे हैं, ७ और यासीन के अतिथि हैं। ये सब कैसर

king, one Jesus. 8 And they troubled the people and
the rulers of the city, when they heard these things.
9 And when they had taken security of Jason, and
of the other, they let them go.

AT BEROEA

10 And the brethren immediately sent away Paul
and Silas by night unto Berea : who coming thither
went into the synagogue of the Jews. 11 These were
more noble than those in Thessalonica, in that they
received the word with all readiness of mind, and
searched the scriptures daily, whether those things
were so. 12 Therefore many of them believed ; also
of honourable women which were Greeks, and of men,
not a few. 13 But when the Jews of Thessalonica had
knowledge that the word of God was preached of Paul
at Berea, they came thither also, and stirred up the
people. 14 And then immediately the brethren sent
away Paul to go as it were to the sea : but Silas and
Timotheus abode there still. 15 And they that con-
ducted Paul brought him unto Athens : and receiving a
commandment unto Silas and Timotheus for to come to
him with all speed, they departed.

AT ATHENS

16 Now while Paul waited for them at Athens,
his spirit was stirred in him, when he saw the
city wholly given to idolatry. 17 Therefore disputed
he in the synagogue with the Jews, and with the devout
persons, and in the market daily with them that met
with him. 18 Then certain philosophers of the Epicu-
reans, and of the Stoicks, encountered him. And some
said, What will this babbler say ? other some, He
seemeth to be a setter forth of strange gods : because
he preached unto them Jesus, and the resurrection.
19 And they took him, and brought him unto Areop-
agus, saying, May we know what this new doctrine,
whereof thou speakest, is ? 20 For thou bringest certain
strange things to our ears : we would know therefore
what these things mean. 21 (For all the Athenians and

के आदेशों का विरोध करते हैं और कहते हैं कि कोई दूसरा व्यक्ति—यीशु—राजा है।' ८ जनता और नगर-अधिकारी ये बातें सुनकर विचलित हो उठे। ९ इस पर अधिकारियों ने यासोन एवं शेष व्यक्तियों से मुचलका लिया और उन्हें जाने दिया।

बिरीया में

१० भाइयों ने पौलुस और सीलास को शीघ्र ही रातों रात बिरीया भेज दिया। वहां पहुंचने पर वे यहूदियों के सभागृह में गए। ११ ये लोग थिस्सलुनीके के यहूदियों की अपेक्षा अधिक उदार हृदय थे, क्योंकि इन्होंने बड़ी उत्सुकता से वचन को ग्रहण किया और प्रतिदिन शास्त्रों में ढूंढ़ते रहे कि ये बातें ऐसे ही हैं अथवा नहीं। १२ इनमें से बहुतों ने—प्रतिष्ठित यूनानी महिलाओं ने और पुरुषों की बड़ी संख्या ने—विश्वास किया। १३ किंतु जब थिस्सलुनीके के यहूदियों को पता चला कि पौलुस बिरीया में परमेश्वर का वचन सुना रहे हैं तो वहां भी आकर हलचल मचाने और जनता को उत्तेजित करने लगे। १४ तब भाइयों ने पौलुस को तुरंत विदा कर दिया कि समुद्र तट पर चले जाएं; पर सीलास और तीमुथियुस वहीं रह गए। १५ पौलुस को पहुँचाने वाले उन्हें अथेने तक ले गए और सीलास एवं तीमुथियुस के लिए यह आदेश लेकर कि वे तुरंत चले आएं, लौट आए।

अथेने में

१६ पौलुस अथेने में उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। नगर में देवी-देवताओं की भरमार देख कर उन्हें बहुत क्षोभ हुआ। १७ इस कारण वह प्रतिदिन सभागृह में यहूदियों और धर्मपरायण व्यक्तियों से, तथा चौक में सब आने जाने वालों से वाद-विवाद करने लगे। १८ कुछ इपिकूरी और स्तोइकी दार्शनिकों से भी उनका वार्तालाप हुआ। कई बोले, 'यह बकवादी कहना क्या चाहता है?' दूसरों ने कहा, 'विदेशी देवताओं का प्रचारक प्रतीत होता है'—क्योंकि वह यीशु का और पुनरुत्थान का प्रचार किया करते थे। १९ वे लोग उनको अपने साथ अरियुपगुस ले गए और पूछने लगे, 'क्या हम जान सकते हैं कि आप यह कौन सी नई शिक्षा दे रहे हैं? २० आप कुछ ऐसी बातें कहते हैं जो हमारे कानों को अनोखी लगती हैं; हम जानना चाहते हैं कि उनका क्या अर्थ है।' २१ क्योंकि सब अथेने निवासी

strangers which were there spent their time in nothing
else, but either to tell, or to hear some new thing.)

PAUL'S SPEECH IN THE AREOPAGUS

22 Then Paul stood in the midst of Mars' hill, and
said, Ye men of Athens, I perceive that in all things
ye are too superstitious. 23 For as I passed by, and
beheld your devotions, I found an altar with this
inscription, TO THE UNKNOWN GOD. Whom
therefore ye ignorantly worship, him declare I unto you.
24 God that made the world and all things therein,
seeing that he is Lord of heaven and earth, dwelleth
not in temples made with hands : 25 neither is wor-
shipped with men's hands, as though he needed any
thing, seeing he giveth to all life, and breath, and all
things ; 26 and hath made of one blood all nations
of men for to dwell on all the face of the earth, and hath
determined the times before appointed, and the bounds
of their habitation ; 27 that they should seek the Lord,
if haply they might feel after him, and find him, though
he be not far from every one of us : 28 for in him we
live, and move, and have our being ; as certain also of
your own poets have said,

For we are also his offspring.

29 Forasmuch then as we are the offspring of God,
we ought not to think that the Godhead is like unto
gold, or silver, or stone, graven by art and man's device.
30 And the times of this ignorance God winked at ; but
now commandeth all men every where to repent : 31
because he hath appointed a day, in the which he will
judge the world in righteousness by that man whom he
hath ordained ; whereof he hath given assurance unto
all men, in that he hath raised him from the dead.

32 And when they heard of the resurrection of the
dead, some mocked : and others said, We will hear thee
again of this matter. 33 So Paul departed from among
them. 34 Howbeit certain men clave unto him, and
believed : among the which was Dionysius the Areopa-

एवं वहां रहने वाले परदेशी नई नई बातें कहने और सुनने के अतिरिक्त और
किसी कार्य में समय नहीं बिताते थे ।

अरियोपगुस में पौलुस का भाषण

२२ अस्तु, पौलुस अरियोपगुस के बीच में खड़े होकर कहने लगे, 'हे अथेने
निवासी सज्जनो, मैं देखता हूं कि तुम बड़े धर्म-प्रेमी हो । २३ जब मैं घूमता
फिरता तुम्हारी आराध्य वस्तुओं को देख रहा था तो मुझे एक वेदी मिली
जिस पर लिखा था, "अज्ञात देवता के लिए ।" जिसे तुम अनजाने पूजते
हो, मैं तुम्हें उसीका संदेशा देता हूं । २४ जो परमेश्वर जगत् एवं उसमें
स्थित प्रत्येक वस्तु के रचयिता हैं, जो आकाश और पृथ्वी के अधिपति हैं, वह हाथ
के बनाए मंदिरों में निवास नहीं करते २५ और न उन्हें किसी वस्तु का अभाव
है कि मनुष्य के हाथों से सेवा ग्रहण करें ; क्योंकि वह तो स्वयं सबको जीवन,
श्वास एवं समस्त वस्तुएं प्रदान करते हैं। २६ उन्होंने एक ही मूल से
मनुष्य की प्रत्येक जाति का निर्माण किया कि सारी पृथ्वी पर निवास करें ।
उन्होंने इतिहास की अवधि और निवास की सीमाएं निर्धारित कर दीं २७ कि
लोग परमेश्वर को ढूंढ़ें और खोजते हुए कदाचित् उन्हें प्राप्त करें । फिर भी वह
हम में से किसी से दूर नहीं हैं, २८ क्योंकि 'उन्हीं में हम जीवित रहते, चलते
फिरते और अस्तित्व रखते हैं ;' तुम्हारे ही कुछ कवियों ने कहा है,

"निश्चय ही हम उनके वंशज हैं ।"

२९ अब यदि हम उनके वंशज हैं, तो हमें समझना चाहिए कि परमेश्वर-
तत्व, सोने, चांदी अथवा पत्थर की प्रतिमा के सदृश नहीं है जो मनुष्य
की कला और कल्पना की उपज हैं। ३० परमेश्वर ने अज्ञानता के
समय पर ध्यान नहीं दिया परंतु अब उनकी आज्ञा है कि सर्वत्र सब
मनुष्य हृदय-परिवर्तन करें, ३१ क्योंकि उन्होंने एक दिन निश्चित कर दिया है
जब वह पूर्व-निर्धारित मानव के द्वारा संसार का धर्मपूर्वक न्याय करेंगे ;
और उन्होंने इस व्यक्ति को मृतकों में से जीवित कर दिया और सबको इस
बात का प्रमाण दे दिया है ।'

३२ मृतकों के पुनरुत्थान की बात सुनकर कुछ व्यक्ति उनका उपहास करने
लगे ; परंतु कुछ बोले, 'हम इस विषय में आपसे फिर कभी सुनेंगे ।' ३३ इस
पर पौलुस उनके बीच से चले गए। ३४ फिर भी कुछ मनुष्यों ने उनका

gite, and a woman named Damaris, and others with them.

AT CORINTH

18 After these things Paul departed from Athens,
and came to Corinth ; 2 and found a certain Jew
named Aquila, born in Pontus, lately come from Italy,
with his wife Priscilla ; (because that Claudius had com-
manded all Jews to depart from Rome :) and came unto
them. 3 And because he was of the same craft, he
abode with them, and wrought : for by their occupation
they were tentmakers. 4 And he reasoned in the syna-
gogue every sabbath, and persuaded the Jews and the
Greeks.

5 And when Silas and Timotheus were come from
Macedonia, Paul was pressed in the spirit, and testified
to the Jews that Jesus was Christ. 6 And when they
opposed themselves, and blasphemed, he shook his rai-
ment, and said unto them, Your blood be upon your
own heads ; I am clean : from henceforth I will go
unto the Gentiles. 7 And he departed thence, and
entered into a certain man's house, named Justus, one
that worshipped God, whose house joined hard to the
synagogue. 8 And Crispus, the chief ruler of the
synagogue, believed on the Lord with all his house :
and many of the Corinthians hearing believed, and were
baptized. 9 Then spake the Lord to Paul in the night
by a vision, Be not afraid, but speak, and hold not thy
peace : 10 for I am with thee, and no man shall set on
thee to hurt thee : for I have much people in this city.
11 And he continued there a year and six months,
teaching the word of God among them.

GALLIO AND PAUL

12 And when Gallio was the deputy of Achaia,
the Jews made insurrection with one accord against
Paul, and brought him to the judgment seat, 13 saying,

साथ दिया और विश्वास किया ; इनमें अरियुपगुस के सदस्य दियुनुसियुस, दसरिस नाम की एकमहिला और इनके साथ अन्य कई व्यक्ति थे।

१८

कुरिंथुस में

१ इसके अनंतर पौलुस अथेने से विदा होकर कुरिंथुस आए। २ वहां उनकी भेंट अक्विला नामक एक यहूदी से हुई जो जन्मतः पुंतुस के थे। वह अपनी पत्नी प्रिस्किला के साथ कुछ समय पूर्व ही इतालिया से आए थे, क्योंकि क्लौदियुस ने सब यहूदियों को रोम से निकल जाने का आदेश दिया था। पौलुस उनके यहां गए ३ और एक ही व्यवसाय के होने के कारण उनके साथ रहने और काम करने लगे - उनका व्यवसाय तंबू बनाना था। ४ वह प्रत्येक सबत को वाद-विवाद करके यहूदियों और यूनानियों दोनों को समझाने का प्रयत्न करते थे।

५ जब सीलास और तिमुथियुस मकिदूनिया से आ गए तो पौलुस बचन सुनाने में लवलीन हो गए और यहूदियों के समक्ष साक्षी देने लगे कि यीशु ही ख्रिस्त हैं। ६ परंतु जब ये लोग पौलुस का विरोध करने और निंदा करने लगे तो उन्होंने वस्त्र झाड़ कर कहा, 'तुम्हारा रक्त तुम्हारे सिर। मैं निर्दोष हूं। अब से मैं विजातियों के पास जाऊंगा।' ७ वहां से वह तितुस युस्तुस नामक एक धर्मपरायण व्यक्ति के यहां आ गए जिसका घर सभागृह के समीप था। ८ अब सभागृह के अधिकारी क्रिसपुस ने सपरिवार प्रभु पर विश्वास किया और कुरिंथुस के अनेक निवासियों ने भी विश्वास कर बपतिस्मा लिया। ९ प्रभु ने एक रात पौलुस को दर्शन देकर कहा, 'डरो मत, बोलते जाओ और चुप मत रहो, १० क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूं। कोई मनुष्य तुम पर आक्रमण कर तुम्हें हानि न पहुंचा सकेगा क्योंकि इस नगर में मेरे बहुत से लोग हैं।' ११ वह परमेश्वर का बचन सुनाते हुए उनके बीच डेढ़ वर्ष रहे।

गल्लियो और पौलुस

१२ जिस समय गल्लियो अखाया देश का प्रांतपति था, यहूदियों ने एका कर पौलुस पर आक्रमण किया और उन्हें न्यायासन के संमुख खींच लाए तथा कहने लगे, १३ 'यह लोगों को परमेश्वर की उपासना की ऐसी पद्धति

This fellow persuadeth men to worship God contrary to the law. 14 And when Paul was now about to open his mouth, Gallio said unto the Jews, If it were a matter of wrong or wicked lewdness, O ye Jews, reason would that I should bear with you : 15 but if it be a question of words and names, and of your law, look ye to it ; for I will be no judge of such matters. 16 And he drave them from the judgment seat. 17 Then all the Greeks took Sosthenes, the chief ruler of the synagogue, and beat him before the judgment seat. And Gallio cared for none of those things.

PAUL RETURNS TO SYRIA

18 And Paul after this tarried there yet a good while, and then took his leave of the brethren, and sailed thence into Syria, and with him Priscilla and Aquila ; having shorn his head in Cenchrea : for he had a vow. 19 And he came to Ephesus, and left them there : but he himself entered into the synagogue, and reasoned with the Jews. 20 When they desired him to tarry longer time with them, he consented not ; 21 but bade them farewell, saying, I must by all means keep this feast that cometh in Jerusalem : but I will return again unto you, if God will. And he sailed from Ephesus. 22 And when he had landed at Cæsarea, and gone up and saluted the church, he went down to Antioch. 23 And after he had spent some time there, he departed, and went over all the country of Galatia and Phrygia in order, strengthening all the disciples.

APOLLOS AT EPHESUS

24 And a certain Jew named Apollos, born at Alexandria, an eloquent man, and mighty in the scriptures, came to Ephesus. 25 This man was instructed in the way of the Lord ; and being fervent in the spirit, he spake and taught diligently the things of the Lord, knowing only the baptism of John. 26 And he began to speak boldly in the synagogue : whom when Aquila and Priscilla had heard, they took him unto them, and expounded unto him the way of God more perfectly.

सिखाता है जो नियम-विरुद्ध है।' १४ पौलुस बोलने के लिए मुंह खोल ही
रहे थे कि गल्लियो ने यहूदियों से कहा, 'हे यहूदियो, यदि यह कोई अन्याय
अथवा छल-कपट का प्रकरण होता तो मेरे लिए तुम्हारा अभियोग सुनना
बुद्धिसंगत होता। १५ परंतु यदि यह वाद-विवाद शब्दों और नामों और
तुम्हारे नियमशास्त्र के विषय में है, तो तुम्हीं जानो ; क्योंकि मैं इन विषयों
का न्याय नहीं करना चाहता।' १६ और उसने उन्हें न्यायासन के सामने
से निकलवा दिया। १७ तब सबने सभागृह के अध्यक्ष सोस्थिनेस को पकड़
कर न्यायासन के संमुख ही पीटा, पर गल्लियो ने इस पर कुछ ध्यान
नहीं दिया।

सूरिया लौटना

१८ इसके अनंतर पौलुस वहां बहुत दिन रहे और तब भाइयों से बिदा
लेकर जलमार्ग द्वारा सूरिया को चल दिए। उनके साथ प्रिस्किल्ला और
अक्विला भी थे। किसी व्रत के कारण उन्होंने किंख्रिया में अपने सिर का
मुंडन करा लिया। १९ इफिसुस पहुंच कर पौलुस उनसे पृथक् होगए
और सभागृह में प्रवेश कर यहूदियों से वाद-विवाद करने लगे। २० लोगों
ने निवेदन किया कि वह उनके साथ कुछ दिन और रहें, परंतु उन्होंने स्वीकार
नहीं किया २१ और यह कह कर बिदा ली कि यदि परमेश्वर की इच्छा
हुई तो आपके पास फिर आऊंगा। २२ वह इफिसुस से जलमार्ग द्वारा
कैसरिया गए और वहां से यरूशलेम जाकर कलीसिया का अभिवादन किया
और अंताकिया चले आए। २३ वहां कुछ दिन ठहर कर वे फिर बाहर
निकले और क्रमशः गलातिया और फ्रूगिया में भ्रमण करते हुए शिष्यों को
सुदृढ़ करते रहे।

इफिसुस में अपुल्लोस

२४ अपुल्लोस नामक एक यहूदी जिसका जन्म सिकंदरिया में हुआ था
और जो अच्छा वक्ता एवं धर्मशास्त्र का पंडित था, इफिसुस पहुंचा। २५ उसने
प्रभु के मार्ग की शिक्षा पाई थी और यीशु की कथा को बड़े उत्साह से ठीक
ठीक सुनाता और सिखाता था, परंतु केवल यूहन्ना के बपतिस्मा से परिचित
था। २६ वह सभागृह में निर्भीकता से बोलने लगा। प्रिस्किल्ला और
अक्विला उसकी बातें सुनकर उसे अपने साथ ले गए और अधिक सूक्ष्म

27 And when he was disposed to pass into Achaia, the
brethren wrote, exhorting the disciples to receive him :
who, when he was come, helped them much which had
believed through grace : 28 for he mightily convinced
the Jews, and that publickly, shewing by the scriptures
that Jesus was Christ.

DISCIPLES OF JOHN THE BAPTIST AT EPHESUS

19 And it came to pass, that, while Apollos was at
Corinth, Paul having passed through the upper
coasts came to Ephesus : and finding certain disciples,
2 he said unto them, Have ye received the Holy Ghost
since ye believed ? And they said unto him, We have
not so much as heard whether there be any Holy Ghost.
3 And he said unto them, Unto what then were ye
baptized ? And they said, Unto John's baptism. 4 Then
said Paul, John verily baptized with the baptism of
repentance, saying unto the people, that they should
believe on him which should come after him, that is,
on Christ Jesus. 5 When they heard this, they were
baptized in the name of the Lord Jesus. 6 And when
Paul had laid his hands upon them, the Holy Ghost
came on them ; and they spake with tongues, and
prophesied. 7 And all the men were about twelve.

PAUL AT EPHESUS

8 And he went into the synagogue, and spake boldly
for the space of three months, disputing and persuading
the things concerning the kingdom of God. 9 But
when divers were hardened, and believed not, but spake
evil of that way before the multitude, he departed
from them, and separated the disciples disputing daily
in the school of one Tyrannus. 10 And this conti-
nued by the space of two years ; so that all they which
dwelt in Asia heard the word of the Lord Jesus,

रूप में परमेश्वर के मार्ग के विषय में उसे बताया। २७ उसकी इच्छा थी समुद्र
पार अखाया को जाए। भाइयों ने उसे इस विषय में प्रोत्साहित किया और
शिष्यों को लिखा कि उसका स्वागत करें। वहां पहुंच कर उसने उन लोगों
की बड़ी सहायता की जो अनुग्रह के कारण विश्वासी बन चुके थे ; २८ क्योंकि
उसने यहूदियों का सबके सामने प्रबल खंडन कर शास्त्र से प्रमाणित किया कि
ख्रिस्त, यीशु ही हैं।

१९

इफिसुस में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के शिष्य

१ जिस समय अपुल्लोस कुरिंथुस में था तो पौलुस समुद्र से दूरवर्ती प्रदेशों
का पर्यटन करते हुए इफिसुस आए। २ वहां उन्हें कुछ शिष्य मिले जिनसे
उन्होंने पूछा, 'क्या विश्वास करते समय तुम्हें पवित्र आत्मा प्राप्त हुआ ?'
उन्होंने उत्तर दिया, 'हमने सुना भी नहीं कि पवित्र आत्मा है या नहीं।'
३ पौलुस ने कहा, 'तो तुमने किसका बपतिस्मा लिया ?' वे बोले, 'यूहन्ना
बपतिस्मा देनेवाले का।' ४ इस पर पौलुस ने उनसे कहा, 'यूहन्ना बपतिस्मा
देने वाले हृदय-परिवर्तन का बपतिस्मा देते थे। वे लोगों से
कहते थे कि जो मेरे पीछे आनेवाले हैं उनपर अर्थात् यीशु पर विश्वास
करना। ५ यह सुन कर उन लोगों ने प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा
लिया। ६ जब पौलुस ने उन पर हाथ रखा तो पवित्र आत्मा
उन पर उतरा और वे भाषाएं बोलने तथा नबूवत करने लगे। ७ ये सब
लगभग बारह पुरुष थे।

इफिसुस में पौलुस

८ अस्तु, पौलुस सभागृह में गए और तीन महीने तक परमेश्वर के राज्य के
विषय में निर्भीकता पूर्वक विवाद करते और समझाते रहे। ९ परंतु जब
कुछ लोगों ने कठोर होकर उनकी बात न मानी और सभा में इस मार्ग की
निंदा करने लगे तो पौलुस ने उनको छोड़ दिया और शिष्यों को भी पृथक् कर
लिया। अब वह तुरन्नुस के गोष्ठी-भवन में प्रतिदिन* वाद-विवाद करने
लगे। १० यह क्रम दो वर्ष तक चला यहां तक कि आसिया निवासी,

* कुछ प्राचीन प्रतियों में 'प्रति दिन ग्यारह बजे से चार बजे तक'

both Jews and Greeks. 11 And God wrought special
miracles by the hands of Paul : 12 so that from his body
were brought unto the sick handkerchiefs or aprons, and
the diseases departed from them, and the evil spirits
went out of them.

13 Then certain of the vagabond Jews, exorcists, took
upon them to call over them which had evil spirits
the name of the Lord Jesus, saying, We adjure you
by Jesus whom Paul preacheth. 14 And there were
seven sons of one Sceva, a Jew, and chief of the priests,
which did so. 15 And the evil spirit answered and
said, Jesus I know, and Paul I know ; but who are ye ?
16 And the man in whom the evil spirit was leaped
on them, and overcame them, and prevailed against
them, so that they fled out of that house naked and
wounded. 17 And this was known to all the Jews
and Greeks also dwelling at Ephesus ; and fear fell on
them all, and the name of the Lord Jesus was magnified.
18 And many that believed came, and confessed, and
shewed their deeds. 19 Many of them also which
used curious arts brought their books together, and
burned them before all men : and they counted the
price of them, and found it fifty thousand pieces of
silver. 20 So mightily grew the word of God and
prevailed.

21 After these things were ended, Paul purposed
in the spirit, when he had passed through Macedonia
and Achaia, to go to Jerusalem, saying, After I have
been there, I must also see Rome. 22 So he sent into
Macedonia two of them that ministered unto him,
Timotheus and Erastus ; but he himself stayed in Asia
for a season.

THE RIOT AT EPHESUS

23 And the same time there arose no small stir about
that way. 24 For a certain man named Demetrius, a
silversmith, which made silver shrines for Diana, brought

क्या यहूदी, क्या यूनानी, सबने प्रभु का बचन सुन लिया। ११ परमेश्वर ने
पौलुस के हाथों अलौकिक सामर्थ्य के काम किए, १२ यहां तक कि उनके
शरीर से स्पर्श किए हुए अंगोछे और रूमाल रोगियों पर डाल दिए जाते
तो उनके रोग दूर हो जाते और दुष्टात्माएं निकल जाती थीं।

१३ कुछ इधर-उधर घूमने वाले यहूदी ओझों ने प्रयत्न किया कि अशुद्ध
आत्माओं से ग्रस्त लोगों पर प्रभु यीशु के नाम का प्रयोग करें और कहें, 'तुम्हें
यीशु की शपथ जिनका प्रचार पौलुस करते है।' १४ स्किवा नामक यहूदी
महापुरोहित के सात पुत्र ऐसा ही करते थे। १५ दुष्टात्मा ने उनसे कहा,
'यीशु को मैं जानती हूं और पौलुस को भी पहिचानती हूं, पर तुम कौन
हो?' १६ और दुष्टात्मा-ग्रस्त मनुष्य ने झपट कर उन सबको वशीभूत कर
लिया और एसा पछाड़ा कि वे नंगे और घायल होकर उस घर से निकल
भागे। १७ यह बात इफिसुस के रहनेवाले सब यहूदियों और यूनानियों पर
विदित हो गई। उन सब पर भय छा गया, और प्रभु यीशु के नाम का
गुणगान होने लगा। १८ जिन्होंने विश्वास किया था उनमें से अनेकों ने स्पष्ट
अंगीकार किया कि वे जादू का प्रयोग किया करते थे। १९ बहुत से जादू टोनों
के व्यवसायियों ने अपनी पोथियां इकट्ठी कर सबके संमुख जला दीं, और
जब उनका मूल्य जोड़ा गया तो लगभग पचास हजार रुपया निकला।
२० इस प्रकार प्रभु का बचन प्रबलता से फैला और प्रभावशाली हुआ।

२१ यह सब होने पर पौलुस ने संकल्प किया, 'मैं मकिदूनिया
और अखाया होते हुए यरूशलेम जाऊंगा और वहां पहुंचने के पश्चात्
रोम भी अवश्य देखूंगा।' २२ अस्तु, उन्होंने अपने सहायकों में से दो
अर्थात् तिमुथियुस और इरास्तुस को मकिदूनिया भेज दिया और स्वयं कुछ
दिन तक आसिया में ठहरे रहे।

इफिसुस में विरोध

२३ इन्हीं दिनों की बात है कि इस मार्ग को लेकर बड़ी हलचल मची।
२४ देमेत्रियुस नामक सुनार अरतिमिस के मंदिर की रजत* प्रतिकृतियां

* अक्षरशः 'मंदिर'

no small gain unto the craftsmen ; 25 whom he called
together with the workmen of like occupation, and
said, Sirs, ye know that by this craft we have our wealth,
26 Moreover ye see and hear, that not alone at Ephesus,
but almost throughout all Asia, this Paul hath persuaded
and turned away much people, saying that they be no
gods, which are made with hands : 27 so that not only
this our craft is in danger to be set at nought ; but also
that the temple of the great goddess Diana should be
despised, and her magnificence should be destroyed,
whom all Asia and the world worshippeth.

28 And when they heard these sayings, they were full
of wrath, and cried out, saying, Great is Diana of the
Ephesians. 29 And the whole city was filled with confu-
sion : and having caught Gaius and Aristarchus, men of
Macedonia, Paul's companions in travel, they rushed with
one accord into the theatre. 30 And when Paul would
have entered in unto the people, the disciples suffered
him not. 31 And certain of the chief of Asia, which
were his friends, sent unto him, desiring him that he
would not adventure himself into the theatre. 32 Some
therefore cried one thing, and some another: for the
assembly was confused ; and the more part knew not
wherefore they were come together. 33 And they drew
Alexander out of the multitude, the Jews putting him
forward. And Alexander beckoned with the hand, and
would have made his defence unto the people. 34 But
when they knew that he was a Jew, all with one voice
about the space of two hours cried out, Great is Diana of
the Ephesians. 35 And when the townclerk had appeased
the people, he said, Ye men of Ephesus, what man is there
that knoweth not how that the city of the Ephesians is
a worshipper of the great goddess Diana, and of the
image which fell down from Jupiter ? 36 Seeing then
that these things cannot be spoken against, ye ought to
be quiet, and to do nothing rashly. 37 For ye have
brought hither these men, which are neither robbers
of churches, nor yet blasphemers of your goddess.

बनवाकर कारीगरों को बहुत काम दिलाता था। २५ उनको और ऐसे ही
अन्य व्यवसायों के कारीगरों को एकत्र कर उसने कहा, 'सज्जनो, आप जानते
हैं कि इस व्यवसाय से हमें कितना धन मिलता है। २६ और आप यह भी
देख रहे हैं और सुन रहे हैं कि इफिसुस में ही नहीं, वरन् लगभग समस्त
आसिया में, इस पौलुस ने एक बड़े समुदाय को समझा बुझाकर बहका
दिया है कि हाथ के बने देवता, देवता नहीं। २७ इससे केवल यही डर
नहीं कि हमारे व्यवसाय की प्रतिष्ठा जाती रहेगी, वरन् यह भी है कि लोग
महान् देवी अरतिमिस के मंदिर को तुच्छ समझने लगेंगे; और यह देवी,
जिसकी समस्त आसिया और संसार पूजा करता है, अपने प्रताप से वंचित हो
जाएगी।'

२८ यह सुनकर लोग क्रोधित हो चिल्लाने लगे, 'इफिसियों की देवी
अरतिमिस महान् है।' २९ नगर में खलबली मच गई। लोगों ने गयुस और
अरिस्तर्खुस को, जो पौलुस के सहयात्री और मकिदूनिया-निवासी थे,
पकड़ लिया और एक साथ रंगशाला की ओर दौड़ पड़े। ३० पौलुस भीतर
जनता के संमुख जाना चाहते थे, पर शिष्यों ने उन्हें नहीं जाने दिया। ३१
आसिया के कई शासक पौलुस के मित्र थे; उन्होंने भी संदेश भेजकर
निवेदन किया कि रंगशाला में जाने का दुस्साहस न कीजिए। ३२ अस्तु,
कोई कुछ चिल्ला रहा था, कोई कुछ; सभा में कोलाहल मचा हुआ था।
अधिकांश लोग यह भी नहीं जानते थे कि वे किस कारण इकट्ठे हुए हैं।
३३ तब कुछ लोगों ने सिकंदर को, जिसे यहूदियों ने खड़ा किया था,
भीड़ में आगे बढ़ाया। सिकंदर ने जनता को हाथ से चुप रहने का
संकेत कर अपने पक्ष के समर्थन में कुछ कहना चाहा; ३४ परंतु जब लोगों को
ज्ञात हुआ कि वह यहूदी है तो सबके सब कोई दो घंटे तक एक स्वर से
चिल्लाते रहे, 'इफिसियों की अरतिमिस की जय।' ३५ इसके पश्चात् नगर
के मंत्री ने जनसमूह को शांत कर कहा, 'इफिसुस निवासी सज्जनो, ऐसा
कौन मनुष्य है जो नहीं जानता कि इफिसुस का यह नगर महान्-देवी
अरतिमिस के मंदिर का और आकाश* से गिरी मूर्ति का सेवक है?
३६ अस्तु, यदि यह बात निर्विवाद है तो आपको शांत रहना चाहिए और
बिना सोचे विचारे कोई काम नहीं करना चाहिए। ३७ आप ऐसे मनुष्यों को
पकड़ लाए हैं जिन्होंने न तो मंदिर को अपवित्र किया है और न हमारी

* अथवा 'ज्यूस'

38 Wherefore if Demetrius, and the craftsmen which
are with him, have a matter against any man, the law
is open, and there are deputies : let them implead one
another. 39 But if ye enquire any thing concerning
other matters, it shall be determined in a lawful assemb-
ly. 40 For we are in danger to be called in question
for this day's uproar, there being no cause whereby we
may give an account of this concourse. 41 And when
he had thus spoken, he dismissed the assembly.

PAUL IN MACEDONIA, GREECE AND TROAS

20 And after the uproar was ceased, Paul called unto
him the disciples, and embraced them and depart-
ed for to go into Macedonia. 2 And when he had
gone over those parts, and had given them much
exhortation, he came into Greece, 3 and there abode
three months. And when the Jews laid wait for him,
as he was about to sail into Syria, he purposed to return
through Macedonia. 4 And there accompanied him
into Asia Sopater of Berea ; and of the Thessalonians,
Aristarchus and Secundus ; and Gaius of Derbe, and
Timotheus ; and of Asia, Tychicus and Trophimus.
5 These going before tarried for us at Troas. 6 And we
sailed away from Philippi after the days of unleavened
bread, and came unto them to Troas in five days ; where
we abode seven days.

EUTYCHUS

7 And upon the first day of the week, when the
disciples came together to break bread, Paul preached
unto them, ready to depart on the morrow ; and con-
tinued his speech until midnight. 8 And there were many
lights in the upper chamber, where they were gathered
together. 9 And there sat in a window a certain young
man named Eutychus, being fallen into a deep sleep : and
as Paul was long preaching, he sunk down with sleep,
and fell down from the third loft, and was taken up
dead. 10 And Paul went down, and fell on him, and
embracing him said, Trouble not yourselves ; for his life

देवी का अपमान। ३८ यदि देमेत्रियुस और उसके साथी-कारीगरों का
किसी से कुछ विवाद है तो न्यायालय खुले हैं और प्रांतपति विद्यमान हैं :
वे एक दूसरे पर अभियोग चलावें। ३९ परंतु यदि आप कुछ और*
चाहते हैं तो इसका निर्णय नियमित सभा में किया जाएगा। ४० हमें आशंका
है कि आज के विप्लव का दोष कहीं हम पर न मढ़ा जाए क्योंकि हम इस
अव्यवस्था का कारण नहीं बता सकेंगे।' ४१ यह कहकर उसने सभा
विसर्जित कर दी।

२०

मकिदूनिया, यूनान और त्रोआस में पौलुस

१ उपद्रव शांत होने के पश्चात् पौलुस ने शिष्यों को बुला भेजा और
उन्हें प्रोत्साहित कर तथा उनसे बिदा होकर मकिदूनिया की ओर चल दिए।
२ वह इन भूभागों में लोगों का उत्साह बढ़ाते हुए यूनान आए। ३ वहां
तीन महीने बिताने के उपरांत जब वह जलमार्ग से सूरिया जाने लगे तो
उन्हें ज्ञात हुआ कि यहूदी उनके विरुद्ध षड्यंत्र कर रहे हैं। अस्तु, उन्होंने
मकिदूनिया होकर लौटने का निश्चय किया। ४ पुरुस के पुत्र सोपत्रुस जो
बिरीया के निवासी थे, थिस्सलुनीकिया के निवासी अरिस्तर्खुस एवं सिकंदुस,
दिरबे नगर के गयुस, तिमुथियुस तथा आसिया के तुखिकुस और त्रुफिमुस
उनके साथ थे। ५ ये लोग आगे जाकर त्रोआस में हमारी प्रतीक्षा करने लगे।
६ हमने अखमीरी रोटियों के पर्व के पश्चात् फिलिप्पी से जलयात्रा
आरम्भ की और पांच दिन में उनके पास त्रोआस पहुंचे और वहां सात
दिन रहे।

युतुखुस

७ सप्ताह के पहले दिन हम रोटी को तोड़ने के निमित्त एकत्रित हुए।
पौलुस जो दूसरे दिन चले जाने को थे लोगों से वार्तालाप करने लगे और
यह वार्त्ता आधी रात तक चलती रही। ८ जिस अटारी पर हम लोग एकत्रित
हुए थे, वहां बहुत से दीपक जल रहे थे। ९ जब पौलुस देर तक वार्तालाप
करते रहे तो, यूतुखुस नामक एक युवक को जो खिड़की पर बैठा था गहरी नींद
आ गई। वह नींद के झोके में तिमंजिले से गिर पड़ा और मृत अवस्था में
उठाया गया। १० तब पौलुस नीचे उतरे, झुककर उसका आलिंगन किया

* अनेक प्राचीन प्रतियों में, 'कुछ अन्य विशेष बातें'

is in him. 11 When he therefore was come up again, and had broken bread, and eaten, and talked a long while, even till break of day, so he departed. 12 And they brought the young man alive, and were not a little comforted.

JOURNEY TO MILETUS

13 And we went before to ship, and sailed unto Assos, there intending to take in Paul: for so had he appointed, minding himself to go afoot. 14 And when he met with us at Assos, we took him in, and came to Mitylene. 15 And we sailed thence, and came the next day over against Chios; and the next day we arrived at Samos, and tarried at Trogyllium; and the next day we came to Miletus. 16 For Paul had determined to sail by Ephesus, because he would not spend the time in Asia: for he hasted, if it were possible for him, to be at Jerusalem the day of Pentecost.

PAUL'S FAREWELL SPEECH TO THE EPHESIAN ELDERS AT MILETUS

17 And from Miletus he sent to Ephesus, and called the elders of the church. 18 And when they were come to him, he said unto them, Ye know, from the first day that I came into Asia, after what manner I have been with you at all seasons, 19 serving the Lord with all humility of mind, and with many tears, and temptations, which befell me by the lying in wait of the Jews: 20 and how I kept back nothing that was profitable unto you, but have shewed you, and have taught you publickly, and from house to house, 21 testifying both to the Jews, and also to the Greeks, repentance toward God, and faith toward our Lord Jesus Christ.

22 And now, behold, I go bound in the spirit unto Jerusalem, not knowing the things that shall befall me there: 23 save that the Holy Ghost witnesseth in every city, saying that bonds and afflictions abide me. 24 But none of these things move me, neither count I my life dear unto myself, so that I might finish my course with joy, and the ministry, which I have received

और बोले, 'घबराओ मत; इसमें अभी प्राण शेष हैं।' ११ फिर ऊपर जाकर
उन्होंने रोटी तोड़ी और खाई। इसके पश्चात् वह इतनी देर तक बातें करते
रहे कि प्रातःकाल हो गया। तब वह विदा हुए। १२ लोग उस नवयुवक
को जीवित ले आए और उनकी सांत्वना की सीमा न रही।

मीलेतुस को यात्रा

१३ हम नौका द्वारा अस्सुस को पहले ही चल दिए थे। हमारा उद्देश
था कि वहां पौलुस को नौका पर चढ़ा लें—वह स्थल मार्ग से आने को थे
अतः उन्होंने ऐसा ही प्रबंध किया था। १४ अस्तु, अस्सुस में वह हमसे
मिले तो हमने उन्हें नौका पर चढ़ा लिया और मीतुलेने में आए। १५ दूसरे
दिन वहां से लंगर उठा कर हम खियुस के सामने पहुँचे, अगले दिन सामुस
जा लगे,* और फिर एक दिन पश्चात् मीलेतुस में आए। १६ पौलुस ने
निश्चय कर रखा था कि इफिसुस को छोड़ते हुए निकल जाएंगे जिससे
आसिया में बिलंब न हो। वह इस कारण शीघ्रता कर रहे थे कि हो सके
तो पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम में हों।

इफिसुस के धर्मवृद्धों से बिदा लेना

१७ अतः उन्होंने मिलेतुस से इफिसुस संदेश भेज कर कलीसिया के
धर्मवृद्धों को बुलाया १८ और उनके आने पर उनसे कहा, 'तुम
जानते हो कि जिस दिन से मैं आसिया पहुंचा, मैंने अपना सारा
समय तुम्हारे साथ किस प्रकार बिताया; १९ किस प्रकार अत्यंत दीनता
पूर्वक आंसू बहा बहाकर उन संकटों में जो यहूदियों के षड्यंत्रों के कारण
मुझ पर आ पड़े, मैं प्रभु की सेवा करता रहा; २० जो बातें तुम्हारे
हित की थीं उनके विषय में मैं मौन नहीं रहा, और सार्वजनिक
रूप से तथा घर घर जाकर तुमको उपदेश देता रहा। २१ मैंने यहूदियों और
यूनानियों दोनों के संमुख स्पष्ट साक्षी दी कि वे परमेश्वर की ओर
मन फिराएं और हमारे प्रभु यीशु ख्रिस्त पर विश्वास करें।

२२ 'परंतु अब मैं आत्मा की प्रेरणा से विवश होकर यरूशलेम जा रहा हूं।
वहां मुझ पर क्या बीतेगा, मैं नहीं जानता। २३ केवल यह जानता हूं
कि प्रत्येक नगर में पवित्र आत्मा मुझे चेतावनी दे रहा है कि बेड़ियां और
विपत्तियां मेरी प्रतीक्षा कर रही हैं। २४ मेरे जीवन का मेरे लिए कोई
महत्व नहीं; यदि है तो केवल यह कि मेरी वह दौड़ और वह सेवा पूर्ण हो

* अनेक प्राचीन प्रतियों के अनुसार, 'और त्रीगुल्युन में रुकने के पश्चात् फिर.....'

of the Lord Jesus, to testify the gospel of the grace
of God. 25 And now, behold, I know that ye all,
among whom I have gone preaching the kingdom of
God, shall see my face no more. 26 Wherefore I take
you to record this day, that I am pure from the blood
of all men. 27 For I have not shunned to declare
unto you all the counsel of God. 28 Take heed
therefore unto yourselves, and to all the flock,
over the which the Holy Ghost hath made you
overseers, to feed the church of God, which he
hath purchased with his own blood. 29 For I know
this, that after my departing shall grievous wolves enter
in among you, not sparing the flock. 30 Also of your
own selves shall men arise, speaking perverse things,
to draw away disciples after them. 31 Therefore watch,
and remember, that by the space of three years I ceased
not to warn every one night and day with tears.

32 And now, brethren, I commend you to God,
and to the word of his grace, which is able to build you
up, and to give you an inheritance among all them
which are sanctified. 33 I have coveted no man's silver,
or gold, or apparel. 34 Yea, ye yourselves know, that
these hands have ministered unto my necessities, and
to them that were with me. 35 I have shewed you
all things, how that so labouring ye ought to support
the weak, and to remember the words of the Lord Jesus,
how he said, It is more blessed to give than to receive.

36 And when he had thus spoken, he kneeled down,
and prayed with them all. 37 And they all wept sore,
and fell on Paul's neck, and kissed him, 38 sorrowing
most of all for the words which he spake, that they
should see his face no more. And they accompanied
him unto the ship.

FROM MILETUS TO TYRE

21 And it came to pass, that after we were gotten
from them, and had launched, we came with a
straight course unto Coos, and the day following unto

जो प्रभु यीशु ने मुझे प्रदान की है, अर्थात् मैं परमेश्वर के अनुग्रहपूर्ण
सुसमाचार की साक्षी देता रहूं। २५ अब देखो, मुझे निश्चय है कि तुम
सब, जिनके बीच मैं राज्य* का सुसमाचार सुनाता रहा, मेरा मुंह फिर न
देखने पाओगे। २६ इस कारण मैं आज तुम्हारे संमुख साक्षी देता हूं कि मैं
तुम सबके रक्त से निर्दोष हूं। २७ मैंने परमेश्वर का संपूर्ण अभिप्राय तुम्हें
बताने में कोई बात उठा नहीं रखी। २८ अपना और अपने समस्त समूह का
ध्यान रखो। इस समूह पर पवित्र आत्मा ने तुमको अध्यक्ष नियुक्त किया है
कि तुम परमेश्वर† की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उन्होंने‡
अपने प्रिय के रक्त से उपार्जित किया है। २९ मैं जानता हूं कि मेरे
जाने के उपरांत भयानक भेड़िए तुममें घुस आएंगे जो समूह को न छोड़ेंगे।
३० हां, तुम्हारे ही मध्य ऐसे लोग उठ खड़े होंगे जो शिष्यों को अपना अनुगामी
बनाने के लिए उल्टी—सीधी शिक्षाएं देंगे। ३१ इसलिए जागते रहो और
स्मरण रखो कि कैसे मैंने तीन वर्ष तक दिन-रात आंसू बहा बहाकर तुममें से
एक एक व्यक्ति को समझाया है।

३२ 'और अब मैं तुमको परमेश्वर के एवं उनके अनुग्रहपूर्ण वचन के संर-
क्षण में छोड़ता हूं, जो तुम्हारा निर्माण करने और समस्त संतों के साथ तुम्हारा
उत्तराधिकार तुम्हें प्रदान करने में समर्थ हैं। ३३ मैंने किसी के सोने चाँदी
और वस्त्रों का लोभ नहीं किया। ३४ तुम स्वयं जानते हो कि इन हाथों
ने मेरी और मेरे साथियों की आवश्यकताएं पूरी की हैं। ३५ मैंने सदा
तुम्हारे संमुख उदाहरण रखा कि हमें किस प्रकार परिश्रम करके निबलों को
संभालना चाहिए और प्रभु यीशु के वचन स्मरण रखना चाहिए जो उन्होंने
स्वयं कहे थे, "लेने की अपेक्षा देना धन्य है।"'

३६ इतना कहकर उन्होंने घुटने टेके और सबके साथ प्रार्थना की। ३७ तब
वे सब फूट-फूट कर रोने और पौलुस के गले लिपट कर उन्हें बार बार चुंबन
करने लगे। ३८ विशेष कर पौलुस के इस कथन से कि 'तुम मेरा मुंह फिर
न देख पाओगे', वे अत्यंत शोकातुर हुए। वे लोग उनको जलयान
तक पहुंचाने आए।

२१

तूर से मिलेतुस

१ उनसे वियुक्त होकर हमने लंगर उठाया तो सीधे मार्ग से कोस आए,

* कुछ प्रतियों में 'परमेश्वर के राज्य'
† पाठांतर, 'प्रभु' ‡ अथवा, 'स्वयं अपने'

Rhodes, and from thence unto Patara : 2 and finding a ship sailing over unto Phenicia, we went aboard, and set forth. 3 Now when we had discovered Cyprus, we left it on the left hand, and sailed into Syria, and landed at Tyre : for there the ship was to unlade her burden. 4 And finding disciples, we tarried there seven days : who said to Paul through the Spirit, that he should not go up to Jerusalem. 5 And when we had accomplished those days, we departed and went our way ; and they all brought us on our way, with wives and children, till we were out of the city : and we kneeled down on the shore, and prayed. 6 And when we had taken our leave one of another, we took ship ; and they returned home again.

TO CAESAREA

7 And when we had finished our course from Tyre, we came to Ptolemais, and saluted the brethren, and abode with them one day. 8 And the next day we that were of Paul's company departed, and came unto Cæsarea : and we entered into the house of Philip the evangelist, which was one of the seven ; and abode with him. 9 And the same man had four daughters, virgins, which did prophesy. 10 And as we tarried there many days, there came down from Judæa a certain prophet, named Agabus. 11 And when he was come unto us, he took Paul's girdle, and bound his own hands and feet, and said, Thus saith the Holy Ghost, So shall the Jews at Jerusalem bind the man that owneth this girdle, and shall deliver him into the hands of the Gentiles. 12 And when we heard these things, both we, and they of that place, besought him not to go up to Jerusalem.

13 Then Paul answered, What mean ye to weep and to break mine heart ? for I am ready not to be bound only, but also to die at Jerusalem for the name of the Lord Jesus. 14 And when he would not be persuaded, we ceased, saying, The will of the Lord be done.

फिर दूसरे दिन रुदुस और वहां से पतारा*। २ वहां फीनीके जाने वाला
एक जलयान मिलने पर हम उस पर चढ़े और लंगर खोल दिया। ३ अब
हमें कुप्रुस दीख पड़ा परंतु हम उसे अपने बाएं छोड़कर सूरिया की ओर बढ़े
और तूर में जा उतरे, क्योंकि वहां जलयान को अपना भार उतारना था।
४ हमने वहां शिष्यों को ढूंढ़ निकाला और सात दिन तक उनके यहां रहे।
उन्होंने आत्मा द्वारा पौलुस से कहा कि यरूशलेम में पांव न रखें। ५ जब
ये दिन पूरे हुए और हम बिदा लेकर चले तो सब लोग, स्त्री-बच्चों सहित, नगर
के बाहर तक हमें पहुंचाने आए। हमने समुद्र तट पर घुटने टेककर प्रार्थना की
और एक दूसरे से विदा होकर, ६ हम जलयान पर चढ़े और वे अपने घर
लौट गए।

कैसरिया को

७ हमने तूर से पतुलिमयिस पहुंच कर अपनी जलयात्रा समाप्त की
और भाइयों का अभिवादन कर एक दिन उनके यहां रहे। ८ वहां से चल
कर दूसरे दिन हम कैसरिया पहुंचे और धर्मप्रचारक फिलिप्पुस के यहां
जाकर ठहरे जो 'सात' में से एक थे। ९ इनके चार कुमारी कन्याएं थीं
जो भविष्यवाणी किया करती थीं। १० हमको वहां रहते-रहते कई दिन बीत
गए, तो अगबुस नामक नबी, यहूदिया से वहां आए। ११ जब वह हमसे
मिलने आए तो उन्होंने पौलुस का कटिबंध लिया और अपने हाथ पांव
बांधकर कहा, 'पवित्र आत्मा का कहना है कि जिस व्यक्ति का यह कटिबंध
है उसको यरूशलेम में यहूदी इसी प्रकार बांधेंगे और विजातियों के हाथ सौंप
देंगे।' १२ जब हमने यह सुना तो हम और वहां के लोग पौलुस से अनु-
रोध करने लगे कि वह यरूशलेम न जाएं।

१३ पर उन्होंने उत्तर दिया, 'तुम यह क्या कर रहे हो? इस प्रकार से
रो-रोककर तुम मेरे हृदय को क्यों तोड़ रहे हो? मैं तो प्रभु यीशु के नाम के
कारण यरूशलेम में बंदी होने को ही नहीं वरन् मरने को प्रस्तुत हूं।'
१४ जब उन्होंने न माना तो हम यह कहकर चुप हो गए कि प्रभु की इच्छा
पूरी हो।

---

* कुछ प्रतियों के अनुसार, 'पतारा और मूरा'

TO JERUSALEM

15 And after those days we took up our carriages, and went up to Jerusalem. 16 There went with us also certain of the disciples of Cæsarea, and brought with them one Mnason of Cyprus, an old disciple, with whom we should lodge.

PAUL'S EFFORT TO CONCILIATE THE JEWISH CHRISTIANS

17 And when we were come to Jerusalem, the brethren received us gladly. 18 And the day following Paul went in with us unto James; and all the elders were present. 19 And when he had saluted them, he declared particularly what things God had wrought among the Gentiles by his ministry. 20 And when they heard it, they glorified the Lord, and said unto him, Thou seest, brother, how many thousands of Jews there are which believe; and they are all zealous of the law: 21 and they are informed of thee, that thou teachest all the Jews which are among the Gentiles to forsake Moses, saying that they ought not to circumcise their children, neither to walk after the customs. 22 What is it therefore? the multitude must needs come together: for they will hear that thou art come. 23 Do therefore this that we say to thee: We have four men which have a vow on them; 24 them take, and purify thyself with them, and be at charges with them, that they may shave their heads: and all may know that those things, whereof they were informed concerning thee, are nothing; but that thou thyself also walkest orderly, and keepest the law. 25 As touching the Gentiles which believe, we have written and concluded that they observe no such thing, save only that they keep themselves from things offered to idols, and from blood, and from strangled, and from fornication. 26 Then Paul took the men, and the next day purifying himself with them entered into the temple, to signify the accomplishment of the days of purification, until that an offering should be offered for every one of them.

यरूशलेम को

१५ इन दिनों के उपरांत हमने तैयारी की और यरूशलेम को चल दिए। १६ कैसरिया से कुछ शिष्य हमारे साथ आए और हमें कुप्रुस निवासी मनासोन के घर ले गए ; यह एक पुराने शिष्य थे जिनके यहां हमें अतिथि होना था।

यहूदी-खिस्तियों को प्रसन्न करने का प्रयत्न

१७ जब हम यरूशलेम पहुंचे तो भाइयों ने हमारा सहर्ष स्वागत किया। १८ दूसरे दिन पौलुस हमें लेकर याकूब के पास घर गए जहां सब धर्मवृद्ध एकत्रित थे। १६ पौलुस ने उनका अभिवादन किया, और जो कुछ परमेश्वर ने उनके सेवा-कार्य द्वारा विजातियों के बीच में किया था, वह सब एक-एक करके उन्हें बता दिया। ३० उन्होंने यह सुनकर परमेश्वर की स्तुति की और कहा, 'भाई, तुम देखते हो कि यहूदियों में से कई सहस्र लोगों ने विश्वास कर लिया है ; और ये सब नियमशास्त्र के कट्टर समर्थक हैं। २१ इनको बताया गया है कि विजातियों के बीच रहनेवाले यहूदियों को तुम सिखाते हो कि मूसा की शिक्षा त्याग दें, अर्थात् अपने बच्चों का खतना न कराएं और न विधियों के अनुसार आचरण करें। २२ तो फिर क्या किया जाए ? ये अवश्य सुन लेंगे कि तुम आ पहुंचे हो। २३ अतः जो हम बताते हैं वह करो। हमारे यहां चार व्यक्ति हैं जिन्होंने व्रत लिया है ; २४ उन्हें ले जाओ और उनके साथ अपने को शुद्ध करो एवं उन्हें व्यय दो कि वे अपना मुंडन कराएं। इस प्रकार सब लोगों को पता लग जाएगा कि तुम्हारे विषय में उन्हें जो कुछ बताया गया है वह मिथ्या है, और तुम स्वयं नियमशास्त्र को मानते एवं उस पर चलते हो। २५ रहा उन विजातियों के विषय में, जिन्होंने विश्वास कर लिया है—इस संबंध में हमने निर्णय भेज ही दिया है कि वे मूर्तियों पर चढ़ाए हुए प्रसाद से, रक्त से, गला घोटे हुए पशुओं के मांस से और व्यभिचार से अपने को बचाएं।' २६ अस्तु, दूसरे दिन पौलुस इन मनुष्यों को लेकर और उनके साथ शुद्ध हो मंदिर में गए, और सूचित किया कि शुद्धिकरण के दिन, अर्थात् उनमें से प्रत्येक के लिए बलिदान चढ़ाने के दिन, कब पूरे होंगे।

RIOT IN JERUSALEM, AND PAUL'S ARREST

27 And when the seven days were almost ended, the Jews which were of Asia, when they saw him in the temple, stirred up all the people, and laid hands on him,
28 crying out, Men of Israel, help : This is the man, that teacheth all men every where against the people, and the law, and this place : and further brought Greeks also into the temple, and hath polluted this holy place.
29 (For they had seen before with him in the city Trophimus an Ephesian, whom they supposed that Paul had brought into the temple.) 30 And all the city was moved, and the people ran together : and they took Paul, and drew him out of the temple : and forthwith the doors were shut. 31 And as they went about to kill him, tidings came unto the chief captain of the band, that all Jerusalem was in an uproar.
32 Who immediately took soldiers and centurions, and ran down unto them : and when they saw the chief captain and the soldiers, they left beating of Paul.
33 Then the chief captain came near, and took him, and commanded him to be bound with two chains ; and demanded who he was, and what he had done.

34 And some cried one thing, some another, among the multitude : and when he could not know the certainty for the tumult, he commanded him to be carried into the castle. 35 And when he came upon the stairs, so it was, that he was borne of the soldiers for the violence of the people. 36 For the multitude of the people followed after, crying, Away with him.

37 And as Paul was to be led into the castle, he said unto the chief captain, May I speak unto thee ? Who said, Canst thou speak Greek ? 38 Art not thou that Egyptian, which before these days madest an uproar, and leddest out into the wilderness four thousand men that were murderers ? 39 But Paul said, I am a man which am a Jew of Tarsus, a city in Cilicia, a citizen of no mean city : and, I beseech thee, suffer me to speak unto

यरूशलेम में उपद्रव, पौलुस का बंदी होना

२७ सात दिन की अवधि पूर्ण होने को थी। आसिया के यहूदियों ने पौलुस
को मंदिर में देख कर समस्त जनसमूह में उत्तेजना फैला दी और उनको पकड़-
कर २८ चिल्लाने लगे, 'इस्राएली सज्जनो, सहायता करो। यही वह व्यक्ति है
जो सबको सर्वत्र, हमारी प्रजा, नियमशास्त्र एवं इस स्थान के विरुद्ध शिक्षा
देता है। इतना ही नहीं इसने यूनानियों को मंदिर में लाकर इस पवित्र
स्थान को भ्रष्ट कर दिया है।' २६ वे लोग इफिसुस निवासी त्रेफिमुस को
पौलुस के साथ नगर में देख चुके थे, इसलिए उन्होंने समझा कि पौलुस उसे
मंदिर में ले आए हैं। ३० सारे नगर में हलचल मच गई और लोगों का
जमघट लग गया। वे पौलुस को पकड़कर मंदिर के बाहर घसीट लाए और
द्वार तुरंत बंद हो गए। ३१ वे लोग पौलुस को मार डालना चाहते थे परंतु
सैन्यदल के सहस्रपति को सूचना मिली कि सारे यरूशलेम में उपद्रव मचा
हुआ है। ३२ वह शीघ्र ही सैनिकों और शतपतियों को लेकर उनकी ओर
दौड़ पड़ा; लोगों ने सहस्रपति और सैनिकों को देखकर पौलुस को पीटना
छोड़ दिया। ३३ सहस्रपति ने समीप आकर पौलुस को बंदी कर लिया और
उन्हें दो बेड़ियों में बांधे जाने की आज्ञा दी। तब उसने पूछा कि, 'यह मनुष्य
कौन है? इसने क्या किया है?

३४ भीड़ में से किसी ने कुछ कहा और किसी ने कुछ। हुल्लड़ के मारे
वह तथ्य तक न पहुंच सका तो उसने पौलुस को गढ़ में ले जाने की आज्ञा दी।
३५ जब पौलुस सीढ़ी पर पहुंचे तो भीड़ की हिंसक वृत्ति के कारण सिपाहियों
को उन्हें उठा कर ले जाना पड़ा, ३६ क्योंकि भीड़ उनका पीछा कर रही थी
और चिल्ला रही थी कि इसका अंत कर दो।

३७ पौलुस जब गढ़ में प्रवेश करने को थे तो उन्होंने सहस्रपति से कहा,
'आज्ञा हो तो मैं आपसे कुछ निवेदन करूं।' उसने कहा, 'क्या तुम यूनानी
जानते हो। ३८ क्या तुम वह मिस्र निवासी नहीं जिसने कुछ दिन पहले
विद्रोह किया था और चार सहस्र कृपाणधारी लोगों को निर्जन प्रदेश में ले
गया था?' ३९ पौलुस ने कहा, 'मैं यहूदी हूं और किलिकिया के तरसुस का
निवासी—मैं किसी छोटे नगर का नागरिक नहीं हूं। आपसे निवेदन है कि

the people. 40 And when he had given him licence, Paul stood on the stairs, and beckoned with the hand unto the people. And when there was made a great silence, he spake unto them in the Hebrew tongue, saying,

PAUL'S SPEECH TO THE JEWS

22 Men, brethren, and fathers, hear ye my defence which I make now unto you. 2 (And when they heard that he spake in the Hebrew tongue to them, they kept the more silence : and he saith,)

3 I am verily a man which am a Jew, born in Tarsus, a city in Cilicia, yet brought up in this city at the feet of Gamaliel, and taught according to the perfect manner of the law of the fathers, and was zealous toward God, as ye all are this day. 4 And I persecuted this way unto the death, binding and delivering into prisons both men and women. 5 As also the high priest doth bear me witness, and all the estate of the elders : from whom also I received letters unto the brethren, and went to Damascus, to bring them which were there bound unto Jerusalem, for to be punished.

6 And it came to pass, that, as I made my journey, and was come nigh unto Damascus about noon, suddenly there shone from heaven a great light round about me. 7 And I fell unto the ground, and heard a voice saying unto me, Saul, Saul, why persecutest thou me ? 8 And I aswered, Who art thou, Lord ? And he said unto me, I am Jesus of Nazareth, whom thou persecutest. 9 And they that were with me saw indeed the light and were afraid but ; they heard not the voice of him that spake to me. 10 And I said, What shall I do, Lord ? And the Lord said unto me, Arise, and go into Damascus ; and there it shall be told thee of all things which are appointed for thee to do. 11 And when I could not see for the glory of that light, being led by the hand of them that were with me, I came into Damascus.

12 And one Ananias, a devout man according to the law, having a good report of all the Jews which dwelt

मुझे इन लोगों से बातचीत करने की अनुमति दीजिए।' ४० जब उसने
अनुमति दे दी तो पौलुस ने सीढ़ी पर खड़े होकर लोगों को हाथ का संकेत
किया। चारों ओर सन्नाटा छा जाने पर वह इब्रानी भाषा में कहने लगे :

२२

यहूदियों के संमुख पौलुस का भाषण

१ 'भाइयो और पितृगण, मेरे पक्ष के समर्थन में वक्तव्य सुनो।' २ जब
लोगों ने सुना कि पौलुस उनसे इब्रानी में बोल रहे हैं तो वे और भी चुप हो
गए। उन्होंने कहा, ३ 'मैं यहूदी हूं, किलकिया के तरसुस नगर में मेरा जन्म
हुआ; पर मैंने अपनी शिक्षा-दीक्षा इस नगर में गमलीएल के चरणों में बैठकर
पाई। पूर्वजों के नियमशास्त्र का मैंने विधिवत् अध्ययन किया और परमेश्वर
का ऐसा उत्साही उपासक बना जैसे कि तुम सब आज हो। ४ मैंने इस
'मार्ग' के प्रति घोर अत्याचार किया और पुरुषों एवं स्त्रियों को बांध-बांध कर
बंदीगृह में डाल दिया। ५ इस बात के लिए स्वयं महापुरोहित और सब
धर्मवृद्ध मेरे साक्षी हैं। मैं इनसे भाइयों के नाम पत्र लेकर दमिश्क जा
रहा था कि वहां के लोगों को भी बंदी कर दंड दिलाने यरूशलेम
लाऊं।

६ 'जब मैं यात्रा करते करते दमिश्क के निकट पहुंचा तो दोपहर
के समय आकाश से एक महान् ज्योति एकाएक मेरे चारों ओर चमक उठी।
७ मैं भूमि पर गिर पड़ा, और एक वाणी को अपने से यह कहते सुना,
"शाऊल, शाऊल, तुम मुझे क्यों सताते हो?" ८ मैंने पूछा, "प्रभु, आप
कौन हैं?" उन्होंने मुझको कहा, "मैं नासरत का यीशु हूं जिसे तुम सता
रहे हो।"—९ मेरे साथियों ने ज्योति तो देखी, पर जो मुझसे बोल रहे थे उनकी
वाणी नहीं सुनी।— १० मैंने कहा, "प्रभु मैं क्या करूं?" प्रभुने कहा,
"उठो, और दमिश्क जाओ। जो कुछ तुम्हारे करने के लिए निर्धारित किया
गया है, वह सब तुमको वहीं बताया जाएगा।" ११ जब उस ज्योति के तेज
के कारण मुझे कुछ दिखाई न दिया तो मैं अपने साथियों के हाथ पकड़े हुए
दमिश्क आया।

१२ तब हनन्याह नामक एक व्यक्ति, जो नियमशास्त्र के अनुसार

there, 13 came unto me, and stood, and said unto me,
Brother Saul, receive thy sight. And the same hour I
looked up upon him. 14 And he said, The God of our
fathers hath chosen thee, that thou shouldest know his
will, and see that Just One, and shouldest hear the voice
of his mouth. 15 For thou shalt be his witness unto
all men of what thou hast seen and heard. 16 And now
why tarriest thou ? arise, and be baptized, and wash
away thy sins, calling on the name of the Lord.

17 And it came to pass, that, when I was come again
to Jerusalem, even while I prayed in the temple, I was in
a trance ; 18 and saw him saying unto me, Make haste,
and get thee quickly out of Jerusalem : for they will not
receive thy testimony concerning me. 19 And I said,
Lord, they know that I imprisoned and beat in every
synagogue them that believed on thee : 20 and when the
blood of thy martyr Stephen was shed, I also was stand-
ing by, and consenting unto his death, and kept the rai-
ment of them that slew him. 21 And he said unto me,
Depart : for I will send thee far hence unto the Gentiles.

PAUL'S CLAIM AS A ROMAN CITIZEN

22 And they gave him audience unto this word,
and then lifted up their voices, and said, Away with
such a fellow from the earth : for it is not fit that he
should live. 23 And as they cried out, and cast off
their clothes, and threw dust into the air, 24 the chief
captain commanded him to be brought into the castle,
and bade that he should be examined by scourging ;
that he might know wherefore they cried so against him.
25 And as they bound him with thongs, Paul said unto
the centurion that stood by, Is it lawful for you to
scourge a man that is a Roman, and uncondemned ?
26 When the centurion heard that, he went and told
the chief captain, saying, Take heed what thou doest :
for this man is a Roman. 27 Then the chief captain
came, and said unto him, Tell me, art thou a Roman ?
He said, Yea. 28 And the chief captain answered, With
a great sum obtained I this freedom. And Paul said,

धर्मनिष्ठ थे और उस स्थान के यहूदियों में प्रतिष्ठित गिने जाते थे, १३ मेरे
पास आकर खड़े हो गए और मुझसे बोले, "शाऊल भाई, दृष्टि प्राप्त
करो !" उसी क्षण मुझे दृष्टि मिल गई और मैंने उन्हें देखा। १४ तब
उन्होंने कहा, "हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने पहले से ही तुम्हारा निर्वाचन
कर लिया है कि तुम उनकी इच्छा जानो, धर्म-पुरुष के दर्शन करो एवं
उनके मुख की वाणी सुनो, १५ क्योंकि तुम उनकी ओर से मनुष्यों के संमुख उन
बातों के साक्षी होनेवाले हो जो तुमने देखी और सुनी हैं। १६ अब विलंब क्यों ?
उठो, बपतिस्मा लो और प्रभु का नाम लेकर अपने पापों को धो डालो।"
१७ 'जब मैं यरूशलेम से लौटा और मंदिर में प्रार्थना कर रहा था,
तो मैं ध्यानमग्न हो गया। १८ उन्होंने मुझे दर्शन दिए और कहा,
"शीघ्रता करो और तुरंत यरूशलेम से बाहर चले जाओ, क्योंकि ये लोग
मेरे संबंध में तुम्हारी साक्षी स्वीकार नहीं करेंगे।" १९ मैंने कहा, "प्रभु,
उन्हें तो ज्ञात है कि मैं आपके विश्वासियों को बंदी करता और पीटता था ;
२० और जब आपके शहीद* स्तिफनुस का रक्तपात हो रहा था उस समय
मैं स्वयं पास खड़ा था और सहमत होकर हत्यारों के वस्त्रों की रखवाली कर
रहा था।" २१ किन्तु प्रभु ने मुझसे कहा, "जाओ, क्योंकि मैं तुम्हें
विजातियों के पास दूर दूर तक भेजूंगा।",

पौलुस की रोमी नागरिकता

२२ यहां तक तो लोगों ने उनका कथन सुना। पर अब वे ऊंचे
स्वर से चिल्ला उठे, 'इस पुरुष को पृथ्वी से हटा दो ! ऐसा मनुष्य जीवित
रहने योग्य नहीं।' २३ जब वे चिल्लाने, वस्त्र उछालने और आकाश
में धूल उड़ाने लगे २४ तो सहस्रपति ने आदेश दिया, 'इसे भीतर गढ़ में
ले चलो और कोड़े मार कर इसकी जांच करो कि मुझे ज्ञात हो कि ये लोग
इसके विरुद्ध इस प्रकार क्यों चिल्ला रहे हैं।' २५ जब वे लोग उनको बंधनों
में जकड़ चुके तो पौलुस ने पास खड़े शतपति से पूछा, 'क्या यह विधि-सम्मत
है कि आप, ऐसे व्यक्ति को जो रोमी नागरिक हो और अपराधी सिद्ध नहीं हुआ
हो, कोड़े लगाएं।' २६ जब शतपति ने यह सुना तो सहस्रपति के पास
जाकर कहा, 'यह आप क्या कर रहे हैं ? यह व्यक्ति तो रोमी है !' २७ शतपति
ने उनके पास जाकर पूछा, 'मुझे बताओ, क्या तुम रोमी नागरिक हो?' उन्होंने
कहा, 'हां।' २८ शतपति बोला, 'मुझे तो यह नागरिकता प्रचुर धन व्यय

* अथवा 'साक्षी'

But I was free born. 29 Then straightway they depart-
ed from him which should have examined him: and
the chief captain also was afraid, after he knew that he
was a Roman, and because he had bound him.

PAUL'S DEFENCE BEFORE THE SANHEDRIN

30 On the morrow, because he would have known
the certainty wherefore he was accused of the Jews,
he loosed him from his bands, and commanded the
chief priests and all their council to appear, and brought
Paul down, and set him before them.

23 And Paul, earnestly beholding the council, said,
Men and brethren, I have lived in all good con-
science before God until this day. 2 And the high
priest Ananias commanded them that stood by him to
smite him on the mouth. 3 Then said Paul unto him,
God shall smite thee, thou whited wall: for sittest
thou to judge me after the law, and cammandest me to
be smitten contrary to the law? 4 And they that stood
by said, Revilest thou God's high priest? 5 Then said
Paul, I wist not, brethren, that he was the high priest:
for it is written, Thou shalt not speak evil of the ruler
of thy people.

6 But when Paul perceived that the one part were
Sadducees, and the other Pharisees, he cried out in the
council, Men and brethren, I am a Pharisee, the son of
a Pharisee: of the hope and resurrection of the dead
I am called in question. 7 And when he had so said,
there arose a dissension between the Pharisees and the
Sadducees: and the multitude was divided. 8 For the
Sadducees say that there is no resurrection, neither
angel, nor spirit: but the Pharisees confess both. 9
And there arose a great cry: and the scribes that
were of the Pharisees' part arose, and strove, saying,
We find no evil in this man: but if a spirit or an
angel hath spoken to him, let us not fight against God.
10 And when there arose a great dissension, the

करने पर मिली !' पौलुस ने कहा, 'पर मैं तो जन्म से ही रोमी हूं।'
२६ तब वे लोग जो उनकी जांच करने को थे तत्काल दूर हट गए। सहस्रपति
भी यह जानकर सहम गया कि यह रोमी नागरिक हैं और मैंने इन्हें
बंदी किया है।

पौलुस का परिषद् के संमुख वक्तव्य

३० दूसरे दिन तथ्य जानने की इच्छा से कि यहूदी उन पर क्यों अभियोग
लगाते हैं, उसने पौलुस के बंधन खोल दिए, महापुरोहितों एवं समस्त महा-
सभा को एकत्रित होने की आज्ञा दी, और पौलुस को लाकर उनके संमुख
खड़ा किया।

२३

१ पौलुस ने महासभा की ओर एकटक दृष्टि से देखा और कहने लगे,
'भाइयो, मैंने आज के दिन तक परमेश्वर के लिए शुद्ध अंतःकरण से जीवन
व्यतीत किया।' २ इस पर महापुरोहित हनन्याह ने पास खड़े लोगों
को आज्ञा दी कि इसके मुंह पर थप्पड़ मारो। ३ पौलुस ने उनसे कहा,
'हे पुती हुई भीत, तुम्हें परमेश्वर मारेगा। तुम नियमशास्त्र के अनुसार
मेरा न्याय करने बैठे हो ओर नियमशास्त्र के ही विरुद्ध मुझे मारने को
कहते हो ?' ४ पास खड़े लोग उनसे बोले, 'क्या तुम परमेश्वर के
महापुरोहित को अपशब्द कह रहे हो ?' ५ इस पर पौलुस ने कहा, 'भाइयो,
मुझे नहीं ज्ञात था कि यह महापुरोहित हैं, क्योंकि शास्त्र का लेख है,
"प्रजा के किसी शासक को अपशब्द न कहना।"

६ पौलुस नें यह देख कर कि एक दल सदूकियों का हैं और दूसरा
फरीसियों का, महासभा में पुकार कर कहा, 'भाइयो, मैं फरीसी हूं
और फरीसियों का वंशज। मृतकों के पुनरुत्थान की आशा के कारण
मुझ पर अभियोग चलाया जा रहा है।' ७ उनका यह कहना था कि
फरीसियों और सदूकियों में विवाद होने लगा और सभा में फूट पड़
गई। ८ क्योंकि सदूकियों का कहना है कि न पुनरुत्थान है, न स्वर्गदूत और
न आत्मा ; परंतु फरीसी इन सबको मानते हैं। ९ अस्तु, बड़ा कोलाहल
मचा ; फरीसी दल के कुछ शास्त्री उठ कर झगड़ने और कहने लगे, 'हम
इस व्यक्ति में कोई बुराई नहीं पाते। कौन जाने इससे कोई आत्मा या
स्वर्गदूत बोला हो ?' १० जब विवाद बहुत बढ़ा तो सहस्रपति को भय

chief captain, fearing lest Paul should have been pulled in pieces of them, commanded the soldiers to go down, and to take him by force from among them, and to bring him into the castle.
11 And the night following the Lord stood by him, and said, Be of good cheer, Paul: for as thou hast testified of me in Jerusalem, so must thou bear witness also at Rome.

JEWISH PLOT AGAINST PAUL

12 And when it was day, certain of the Jews banded together, and bound themselves under a curse, saying that they would neither eat nor drink till they had killed Paul.
13 And they were more than forty which had made this conspiracy.
14 And they came to the chief priests and elders, and said, We have bound ourselves under a great curse, that we will eat nothing until we have slain Paul.
15 Now therefore ye with the council signify to the chief captain that he bring him down unto you to morrow, as though ye would enquire something more perfectly concerning him: and we, or ever he come near, are ready to kill him.

16 And when Paul's sister's son heard of their lying in wait, he went and entered into the castle, and told Paul.
17 Then Paul called one of the centurions unto him, and said, Bring this young man unto the chief captain: for he hath a certain thing to tell him.
18 So he took him, and brought him to the chief captain, and said, Paul the prisoner called me unto him, and prayed me to bring this young man unto thee, who hath something to say unto thee.
19 Then the chief captain took him by the hand, and went with him aside privately, and asked him, What is that thou hast to tell me?
20 And he said, The Jews have agreed to desire thee that thou wouldest bring down Paul to morrow into the council, as though they would enquire somewhat of him more perfectly.
21 But do not thou yield unto them: for there lie in wait for him of them more than forty men, which have bound themselves with an oath,

हुआ कि कहीं वे पौलुस के खंड-खंड न कर डालें ; इसलिए उसने सैन्यदल को आज्ञा दी कि नीचे जाकर उनको छुड़ा ले और गढ़ में ले आए।
११ उसी रात को प्रभु ने पौलुस के समीप खड़े होकर कहा, 'निर्भय रहो, जैसे तुमने यरूशलेम में मेरी साक्षी दी है, वैसे ही तुम्हें रोम में साक्षी देनी है।'

यहूदियों का पौलुस के विरुद्ध षड्यंत्र

१२ दिन होने पर यहूदियों ने एक षड्यंत्र रचा और मिलकर शपथ ली
कि जब तब पौलुस को मार न डालें, अन्न-जल ग्रहण नहीं करेंगे। १३ जिन
लोगों ने यह षड्यंत्र रचा था वह चालीस से अधिक थे। १४ उन्होंने महा-
पुरोहितों और धर्मवृद्धों के पास जाकर कहा, 'हमने घोर शपथ ली है कि जब
तक पौलुस को मार न डालें, अन्न जल ग्रहण नहीं करेंगे। १५ इस
लिए आप लोग और परिषद्, सहस्रपति को सूचित करें कि वह पौलुस को आपके पास भेज दे, मानों आप उसके संबंध में और भी ठीक जांच करना चाहते हैं ; और हम लोग उसे मार्ग में ही मार डालने को तैयार बैठे हैं।'

१६ पौलुस के भानजे ने इस षड्यंत्र के विषय में सुना तो गढ़ में
पहुँचा और भीतर जाकर पौलुस को समाचार सुनाया। १७ पौलुस ने एक
शतपति को बुला कर कहा, 'इस नवयुवक को सहस्रपति के पास ले जाइए
क्योंकि इसको उनसे कुछ कहना है।' १८ अतः उसने सहस्रपति के पास उसे
ले जाकर कहा, 'बंदी पौलुस ने मुझे बुलाकर निवेदन किया कि इस नवयुवक को आपके पास लाऊं क्योंकि यह आपसे कुछ कहना चाहता है।'
१९ सहस्रपति उसे हाथ पकड़ कर एकांत में ले गया और पूछा, 'तुम मुझे
कौन सी बात बताना चाहते हो?' २० उसने कहा, 'यहूदियों ने मंत्रणा की है
कि आपसे निवेदन करें कि कल आप पौलुस को परिषद् में ले जाएं मानों वे उनके संबंध में और अधिक जांच करना चाहते हैं। आप उन लोगों की बात
मत मानिए, २१ क्योंकि उनमें से चालीस से अधिक मनुष्य पौलुस की घात
में हैं ; उन्होंने शपथ ली है कि जब तक उन्हें मार न डालें अन्न-जल ग्रहण

PAUL'S TRIAL BEFORE THE GOVERNOR FELIX

24 And after five days Ananias the high priest
descended with the elders, and with a certain
orator named Tertullus, who informed the governor
against Paul. 2 And when he was called forth, Tertu-
llus began to accuse him, saying.

Seeing that by thee we enjoy great quietness, and
that very worthy deeds are done unto this nation by
thy providence, 3 we accept it always, and in all
places, most noble Felix, with all thankfulness. 4 Not-
withstanding, that I be not further tedious unto thee, I
pray thee that thou wouldest hear us of thy clemency
a few words. 5 For we have found this man a pesti-
lent fellow, and a mover of sedition among all the Jews
throughout the world, and a ringleader of the sect of the
Nazarenes : 6 who also hath gone about to profane the
temple : whom we took, and would have judged accord-
ing to our law. 7 But the chief captain Lysias came
upon us, and with great violence took him away out of
our hands, 8 commanding his accusers to come unto thee :
by examining of whom thyself mayest take knowledge
of all these things, whereof we accuse him. 9 And the
Jews also assented, saying that these things were so.

10 Then Paul, after that the governor had beckoned
unto him to speak, answered, Forasmuch as I know that
thou hast been of many years a judge unto this nation,
I do the more cheerfully answer for myself : 11 because
that thou mayest understand, that there are yet but
twelve days since I went up to Jerusalem for to wor-
ship. 12 And they neither found me in the temple
disputing with any man, neither raising up the people,
neither in the synagogues, nor in the city: 13 neither can
they prove the things whereof they now accuse me.
14 But this I confess unto thee, that after the way which
they call heresy, so worship I the God of my fathers,
believing all things which are written in the law and
in the prophets ; 15 and have hope toward God, which
they themselves also allow, that there shall be a resur-

२४

फैलिक्स के संमुख पौलुस का अभियोग

१ पांच दिन पश्चात् महापुरोहित हनन्याह कुछ धर्मवृद्धों और तिरतुल्लुस
नामक अभिभाषक के साथ वहां आया। इन लोगों ने राज्यपाल के संमुख पौलुस
के विरुद्ध प्रकरण प्रस्तुत किया। २ जब पौलुस की पुकार हुई तो तिरतुल्लुस
ने उन पर इस प्रकार अभियोग लगाया :

'परमश्रेष्ठ फेलिक्स, आपके कारण हमारे बीच शांति स्थापित है, एवं
आपकी दूरदर्शिता से इस जाति के निमित्त अनेक सुधार संपन्न हुए हैं—३ यह
बात हम लोग सब प्रकार से सब स्थानों में बड़ी कृतज्ञता पूर्वक स्वीकार करते
हैं। ४ मैं आपका अधिक समय नहीं लेना चाहता अतः आपसे निवेदन
करता हूं कि हमारे दो शब्द सुनने की कृपा करें। ५ यह मनुष्य संक्रामक
रोग के सदृश है, यह संसार भर के सारे यहूदियों में आंदोलन करता फिरता
है और नासरी कुपंथ का मुखिया है। ६ इसने यहां तक प्रयत्न किया कि मंदिर
को अपवित्र करे पर हमने इसे पकड़ लिया। इसे हमने अपने नियमशास्त्र
के अनुसार दंड दिया होता ७ किन्तु सहस्रपति लूसियास ने आकर हमारे हाथ
से इसे छीन लिया, और इस पर अभियोग लगाने वालों को आपके संमुख उप-
स्थित होने की आज्ञा दी। ८ आप स्वयं इन सब बातों के विषय इससे पूछताछ
करें, तो आपको हमारे लगाए अभियोगों की सत्यता विदित हो जाएगी।'
९ यहूदियों ने भी अभियोग का समर्थन किया और कहा, 'ये बातें ठीक
इसी प्रकार हैं।'

१० राज्यपाल ने पौलुस को बोलने का संकेत किया तो उन्होंने इस
प्रकार उत्तर दिया, 'यह जानकर कि आप अनेक वर्षों से इस जाति
के न्यायाधीश हैं, मुझे अपने पक्ष का समर्थन करने में हर्ष हो रहा है।
११ आप पता लगा सकते हैं कि मुझे उपासना के लिए यरूशलेम में आए अभी
बारह दिन से अधिक नहीं हुए हैं। १२ इन लोगों ने मुझे न तो मंदिर में, न
सभागृहों में, और न कहीं नगर में किसी से वाद विवाद करते अथवा जनता में
उत्तेजना फैलाते पाया ; १३ और न इन अभियोगों को, जो वे अब मुझ पर
लगा रहे हैं, आपके सामने प्रमाणित कर सकते हैं। १४ हां, यह मैं आपके
संमुख स्वीकार करता है कि उस मार्ग के अनुसार जिसे ये कुपंथ कहते है, मैं
अपने पूर्वजों के परमेश्वर की उपासना करता हूं, और नियमशास्त्र एवं
नबियों ने जो कुछ लिखा है उस सब पर मेरा विश्वास है। १५ मुझे परमेश्वर

rection of the dead, both of the just and unjust. 16 And
herein do I exercise myself, to have always a conscience
void of offence toward God, and toward men. 17 Now
after many years I came to bring alms to my nation,
and offerings. 18 Whereupon certain Jews from Asia
found me purified in the temple, neither with multi-
tude nor with tumult. 19 Who ought to have been
here before thee, and object, if they had ought against
me. 20 Or else let these same here say, if they have
found any evil doing in me, while I stood before the
council, 21 except it be for this one voice, that I cried
standing among them, Touching the resurrection of the
dead I am called in question by you this day.

FELIX ADJOURNS THE CASE

22 And when Felix heard these things having more
perfect knowledge of that way, he deferred them, and
said, When Lysias the chief captain shall come down,
I will know the uttermost of your matter. 23 And he
commanded a centurion to keep Paul, and to let him
have liberty and that he should forbid none of his
acquaintance to minister or come unto him.

24 And after certain days, when Felix came with
his wife Drusilla, which was a Jewess, he sent for Paul
and heard him concerning the faith in Christ. 25 And
as he reasoned of righteousness, temperance, and judg-
ment to come, Felix trembled, and answered, Go thy
way for this time ; when I have a convenient season,
26 I will call for thee. He hoped also that money
should have been given him of Paul, that he might
loose him : wherefore he sent for him the oftener, and
communed with him. 27 But after two years Porcius
Festus came into Felix' room : and Felix, willing to
shew the Jews a pleasure, left Paul bound.

PAUL'S TRIAL BEFORE FESTUS

25 Now when Festus was come into the province,
after three days he ascended from Cæsarea to
Jersusalem. 2 Then the high priest and the chief of

से आशा है, जैसे इनको भी है कि धर्मात्मा और अधर्मी, दोनों का पुनरुत्थान
होगा। १६ इसलिए मेरा सदैव प्रयत्न रहता है कि परमेश्वर और मनुष्यों
की दृष्टि में मेरा अंतःकरण निर्दोष प्रमाणित हो। १७ अनेक वर्षों के अनंतर मैं
अपने लोगों का दान पहुंचाने, और भेंट चढ़ाने आया था; १८ लोगों ने
मुझे शुद्ध दशा में मंदिर के भीतर यह सब करते हुए देखा। मैं न तो भीड़
लगाए था और न हुल्लड़ मचा रहा था। १९ परंतु आसिया के कुछ यहूदी
:··उचित तो यह था कि यदि उन्हें मेरे विरोध में कुछ कहना था तो आपके
सामने उपस्थित होकर अभियोग लगाते—२० या फिर ये लोग ही बताएं
कि जब मैं परिषद् के संमुख उपस्थित हुआ तो इन्होंने मुझमें कौन सा
अपराध पाया? २१ हां, मैं इनके बीच खड़ा होकर यह अवश्य पुकार उठा
था, 'मृतकों के पुनरुत्थान के विषय में आज आपके सामने मुझ पर अभियोग
चलाया जा रहा है।"

फेलिक्स द्वारा सुनवाई का स्थगित होना

२२ फेलिक्स को इस मार्ग की अच्छी जानकारी थी इसलिए उसने
सुनवाई स्थगित कर दी और कहा, 'सहस्रपति लूसियास के आने पर मैं
तुम्हारे प्रकरण पर निर्णय दूंगा।' २३ फिर उसने शतपति को बुलाकर
आज्ञा दी कि पौलुस को पहरे में रखा जाए, पर उन्हें कुछ स्वतंत्रता रहे तथा
उनके स्वजनों को उनकी सेवा करने से न रोका जाए।

२४ कुछ दिनों पश्चात् फेलिक्स अपनी पत्नी, द्रुसिल्ला नामक यहूदी
महिला को लेकर आया। उसने पौलुस को बुलवा कर उनसे ख्रिस्त यीशु
पर विश्वास करने के विषय वार्ता सुनी। २५ पर जब वह धार्मिकता, संयम
और आनेवाले दंड का चर्चा करने लगे तो फेलिक्स भयभीत हो उठा और
बोला, 'अभी तुम जाओ; समय मिलने पर मैं तुम्हें फिर बुलाऊंगा।'
२६ उसे पौलुस से कुछ धन प्राप्त होने की आशा थी। इसलिए भी वह प्रायः
उन्हें बुलाकर उनसे वार्तालाप करता रहा। २७ दो वर्ष बीतने पर जब
फेलिक्स के स्थान पर पुरकियुस फेस्तुस नियुक्त हुआ तो फेलिक्स यहूदियों
को प्रसन्न करने के लिए पौलुस को बंदी ही छोड़ गया।

२५

फेस्तुस के समक्ष पौलुस पर अभियोग

१ फेस्तुस अपने प्रांत में आने के तीन दिन पश्चात् कैसरिया से
यरूशलेम गया। २ वहां महापुरोहितों और यहूदियों के प्रमुख पुरुषों ने

the Jews informed him against Paul, and besought him,
3 and desired favour against him, that he would send for
him to Jerusalem, laying wait in the way to kill him.
4 But Festus answered, that Paul should be kept at
Cæsarea, and that he himself would depart shortly
thither. 5 Let them therefore, said he, which among
you are able, go down with me, and accuse this man,
if there be any wickedness in him.

6 And when he had tarried among them more than
ten days, he went down unto Cæsarea ; and the next
day sitting on the judgment seat commanded Paul to
be brought. 7 And when he was come, the Jews which
came down from Jerusalem stood round about, and laid
many and grievous complaints against Paul, which they
could not prove. 8 While he answered for himself,
Neither against the law of the Jews, neither against
the temple, nor yet against Cæsar, have I offended any
thing at all. 9 But Festus, willing to do the Jews a
pleasure, answered Paul, and said, Wilt thou go up to
Jerusalem, and there be judged of these things before
me ? 10 Then said Paul, I stand at Cæsar's judgment
seat, where I ought to be judged : to the Jews have I
done no wrong, as thou very well knowest. 11 For if
I be an offender, or have committed any thing worthy
of death, I refuse not to die : but if there be none of
these things whereof these accuse me, no man may
deliver me unto them. I appeal unto Cæsar. 12 Then
Festus, when he had conferred with the council, ans-
wered, Hast thou appealed unto Cæsar ? unto Cæsar
shalt thou go.

AGRIPPA AND BERNICE

13 And after certain days king Agrippa and Bernice
came unto Cæsarea to salute Festus. 14 And when
they had been there many days, Festus declared
Paul's cause unto the king, saying, There is a certain
man left in bonds by Felix : 15 about whom, when I
was at Jerusalem, the chief priests and the elders of the

पौलुस का प्रकरण उसके संमुख रखा और अनुरोध किया, ३ 'आप उन्हें यरूशलेम फिर बुलवा लें तो बड़ी कृपा होगी', क्योंकि वे लोग मार्ग में ही उनकी हत्या कर डालने का षड्यंत्र रच रहे थे। ४ फेस्तुस ने उत्तर दिया, 'पौलुस कैसरिया में बंदी है और मैं वहां शीघ्र जानेवाला हूं। ५ इसलिए आपलोगों में से जो अधिकारी हैं वे मेरे साथ चलें, और यदि उसने कोई अनुचित काम किया है तो उस पर अभियोग चलाएं।'

६ वह यरूशलेम में कोई आठ या दस दिन बिताकर कैसरिया गया और दूसरे ही दिन न्यायासन पर बैठ कर आज्ञा दी कि पौलुस को उपस्थित किया जाए। ७ उनके उपस्थित होने पर यरूशलेम से आए हुए यहूदियों ने उन्हें घेर लिया और उन पर अनेक गंभीर आरोप लगाने लगे, जिन्हें वे प्रमाणित नहीं कर सके। ८ पौलुस ने अपने पक्ष के समर्थन में कहा, 'मैंने न तो यहूदियों के नियमशास्त्र के विरुद्ध, न मंदिर के विरुद्ध, और न कैसर के विरुद्ध कोई अपराध किया है।' ९ तो भी फेस्तुस ने यहूदियों को प्रसन्न करने के लिए पौलुस से पूछा, 'क्या तुम चाहते हो कि यरूशलेम जाओ और वहां मेरे संमुख इन बातों के संबंध में तुम्हारा न्याय हो?' १० इस पर पौलुस ने कहा, 'मैं कैसर के न्यायासन के समक्ष खड़ा हुआ हूं; यहीं मेरा न्याय होना चाहिये। जैसा कि आपको भलीभांति ज्ञात है कि मैंने यहूदियों को कोई हानि नहीं पहुँचाई। ११ यदि मैं अपराधी हूं और यदि मैंने मृत्युदंड के योग्य कोई काम किया है तो मैं मरने से मुंह नहीं मोड़ता; परंतु यदि इनके द्वारा मुझ पर लगाये गये अभियोग मिथ्या हैं तो कोई मुझे इनके हाथ नहीं सौंप सकता। मैं कैसर की दुहाई देता हूं।' १२ तब फैस्तुस ने मंत्रिमंडल से परामर्श कर उत्तर दिया, 'तुमने कैसर की दुहाई दी है; तुम कैसर के यहां ही जाओगे।'

अग्रिप्पा और बिरनीके

१३ कुछ दिन और बीत गए तो राजा अग्रिप्पा और बिरनीके फेस्तुस का अभिनंदन करने कैसरिया में आए। १४ वे वहां कई दिन ठहरे। फेस्तुस ने पौलुस के विषय राजा को बताते हुए कहा, 'फेलिक्स एक मनुष्य को बंदी छोड़ गए हैं; १५ जब मैं यरूशलेम में था तो यहूदियों के महापुरोहितों और

Jews informed me, desiring to have judgment against
him. 16 To whom I answered, It is not the manner
of the Romans to deliver any man to die, before that
he which is accused have the accusers face to face, and
have licence to answer for himself concerning the crime
laid against him. 17 Therefore, when they were come
hither, without any delay on the morrow I sat on the
judgment seat, and commanded the man to be brought
forth. 18 Against whom when the accusers stood up,
they brought none accusation of such things as I sup-
posed: 19 but had certain questions against him of
their own superstition, and of one Jesus, which was
dead, whom Paul affirmed to be alive. 20 And because
I doubted of such manner of questions, I asked him
whether he would go to Jerusalem, and there be judged
of these matters. 21 But when Paul had appealed to
be reserved unto the hearing of Augustus, I com-
manded him to be kept till I might send him to Cæsar.
22 Then Agrippa said unto Festus, I would also hear
the man myself. To morrow, said he, thou shalt hear
him.

23 And on the morrow, when Agrippa was come,
and Bernice, with great pomp, and was entered into the
place of hearing, with the chief captains, and principal
men of the city, at Festus' commandment Paul was
brought forth. 24 And Festus said, King Agrippa, and
all men which are here present with us, ye see this man,
about whom all the multitude of the Jews have dealt
with me, both at Jerusalem, and also here, crying that he
ought not to live any longer. 25 But when I found
that he had committed nothing worthy of death, and
that he himself hath appealed to Augustus, I have
determined to send him. 26 Of whom I have no
certain thing to write unto my lord. Wherefore I have
brought him forth before you, and specially before
thee, O king Agrippa, that, after examination had, I
might have somewhat to write. 27 For it seemeth
to me unreasonable to send a prisoner, and not withal
to signify the crimes laid against him.

धर्मवृद्धों ने उसके संबंध में मुझे सूचना दी और निवेदन किया कि उसे दंड दिया जाए। १६ मैंने उन्हें उत्तर दिया, 'रोमियों की प्रथा यह नहीं है कि अभियुक्त को दंडित करें, और पहिले, उसे अभियोगियों के संमुख, अभियोग के प्रतिवाद का अवसर न दें।' १७ अस्तु, जब वे लोग यहां एकत्रित हुए तो मैं दूसरे ही दिन अविलंब न्यायासन पर बैठा और उस मनुष्य को उपस्थित करने करने की आज्ञा दी। १८ जब अभियोगी खड़े हुए तो उन्होंने उस पर कोई ऐसा अभियोग नहीं लगाया, जिसे मैं अपराध मान सकूँ। १६ उससे उनका विवाद अपने धार्मिक विषयों के संबंध में था, और किसी यीशु के विषय में भी, जो मर चुका है, परंतु पौलुस का कथन है कि वह जीवित है। २० मेरी समझ में नहीं आया कि इन बातों की छानबीन कैसे की जाए, अतः मैंने उससे पूछा कि क्या तुम यरूशलेम जाना चाहोगे कि वहां इस संबंध में तुम्हारा न्याय किया जाए। २१ परंतु जब पौलुस ने दुहाई दी कि उसे सम्राट् के न्याय एवं निर्णय के लिए संरक्षण में रखा जाए, तो मैंने आदेश दिया कि जब तक मैं उसे कैसर के पास नहीं भेजता, वह पहरे में रहे।' २२ इस पर अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहा, 'मेरी भी अभिलाषा रही है कि इस व्यक्ति को सुनूं।' फेस्तुस बोला, 'कल आप सुन लेंगे।'

२३ अतः दूसरे दिन अग्रिप्पा और बिरनीके बड़े समारोह के साथ आए और सहस्रपति एवं नगर के गण्यमान्य व्यक्तियों के साथ सभा-भवन में प्रवेश किया। २४ तब फेस्तुस के आदेश से पौलुस लाए गए। फेस्तुस ने कहा, 'हे राजन् अग्रिप्पा और समस्त उपस्थित सज्जनो, इस व्यक्ति को देखिए जिसके विषय में सब यहूदियों ने यहां और यरूशलेम में भी मुझसे चिल्ला-चिल्ला कर अनुरोध किया कि यह जीने योग्य नहीं। ३५ मैं इस निश्चय पर पहुँचा कि इसने मृत्युदंड के योग्य कोई काम नहीं किया है; परंतु जब स्वतः इसी ने सम्राट् की दुहाई दी तो मैंने इसे भेज देने का निर्णय किया। २६ मेरे पास इसके विषय में स्वामी को लिखने के लिए कोई निश्चित बात नहीं है। अतएव मैंने आपलोगों के संमुख, और विशेषकर हे राजन् अग्रिप्पा, आपके संमुख, इस व्यक्ति को उपस्थित किया है कि इसकी जांच करने के उपरांत लिखने के लिए मुझे कुछ मिले। २७ मुझे यह बात तर्क-संगत नहीं लगती कि बंदी को तो भेजा जाए, पर उसके अभियोगों का निर्देश न किया जाए।'

PAUL SPEAKS BEFORE AGRIPPA

26 Then Agrippa said unto Paul, Thou art permitted
to speak for thyself. Then Paul stretched forth
the hand, and answered for himself :

2 I think myself happy, king Agrippa, because I
shall answer for myself this day before thee touching
all the things whereof I am accused of the Jews ;
3 especially because I know thee to be expert in all
customs and questions which are among the Jews :
wherefore I beseech thee to hear me patiently.

4 My manner of life from my youth, which was at
the first among mine own nation at Jerusalem, know all
the Jews : 5 which knew me from the beginning, if they
would testify, that after the most straitest sect of our
religion I lived a Pharisee. 6 And now I stand and
am judged for the hope of the promise made of God
unto our fathers : 7 unto which promise our twelve
tribes, instantly serving God day and night, hope to
come. For which hope's sake, king Agrippa, I am
accused of the Jews. 8 Why should it be thought
a thing incredible with you, that God should raise
the dead ?

9 I verily thought with myself, that I ought to
do many things contrary to the name of Jesus of
Nazareth. 10 Which thing I also did in Jerusalem :
and many of the saints did I shut up in prison, having
received authority from the chief priests ; and when
they were put to death, I gave my voice against
them. 11 And I punished them oft in every synagogue,
and compelled them to blaspheme ; and being excee-
dingly mad against them, I persecuted them even unto
strange cities.

12 Whereupon as I went to Damascus with authority
and commission from the chief priests, 13 at midday, O
king, I saw in the way a light from heaven, above the
brightness of the sun, shining round about me and them
which journeyed with me. 14 And when we were all

२६

पौलुस का स्वपक्ष-समर्थन

१ अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, 'तुम्हें अपने संबंध में बोलने की अनुमति है।'
इस पर पौलुस हाथ उठा कर अपना पक्ष-समर्थन करते हुए कहने लगे :
२ 'हे राजन् अग्रिप्पा, यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे आपके सामने उन बातों
का प्रतिवाद करने का अवसर मिला है जिनका अभियोग यहूदी मुझ पर लगाते
हैं। ३ आप यहूदियों की सब प्रथाओं और विवादों से विशेष रूप से परिचित
हैं, इसलिए मेरी प्रार्थना है कि मेरी बात धैर्यपूर्वक सुनने की कृपा करें।'
४ 'मेरा जीवन आरम्भ से ही अपनी जाति में और यरूशलेम में
बीता है: वह युवावस्था से ही कैसा रहा इसे सब यहूदी जानते हैं। ५ वे मेरे
पुराने परिचित हैं; यदि वे साक्षी देना चाहें तो उन्हें ज्ञात है कि हमारे धर्म
के सबसे कठोर पंथ के अनुसार मैंने फरीसी-जीवन बिताया है। ६ परंतु
अब मुझ पर अभियोग चल रहा है, क्योंकि मुझे उस प्रतिज्ञा की आशा
है जो परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों से की। ७ इसी आशा की पूर्ति के लिए
हमारे बारह गोत्र तत्परता से अहर्निश परमेश्वर की उपासना करते आए
है; और हे राजन्, इसी आशा के लिए, यहूदी मुझ पर दोष लगाते
हैं! ८ आप लोगों को यह बात अविश्वसनीय क्यों लगती है कि
परमेश्वर मृतकों को जीवित करते हैं।
९ 'मैं स्वयं सोचता था कि नासरत निवासी यीशु के नाम के विरुद्ध मुझे
बहुत कुछ करना है। १० मैंने यरूशलेम में ऐसा ही किया भी; मैंने महा-
पुरोहितों से अधिकार लेकर, अनेक संतों को कारागार में डाल दिया; और
जब उनकी हत्या की गई तो उसमें मेरी सहमति थी। ११ मैंने अनेक सभागृहों
में प्रयत्न किया कि मार-मार कर उन्हें यीशु की निंदा करने के लिए विवश
करूं। मैं क्रोध के कारण इतना उन्मत्त हो गया था कि विदेशी नगरों में
जाकर उनको सताता था।
१२ 'ऐसी स्थिति में महापुरोहितों से अनुमति और अधिकार प्राप्त कर
मैं दमिश्क को जा रहा था। १३ हे राजन, मध्याह्न के समय मार्ग में मुझे
एक दिव्य-ज्योति दीख पड़ी जो सूर्य से भी अधिक दीप्तिवान् थी, और जो
मेरे तथा मेरे सहयात्रियों के चारों ओर चमक रही था। १४ हम पृथ्वी पर गिर
पड़े और मैंने सुना कि एक वाणी इब्रानी भाषा में मुझसे कह रही है, "शाऊल
शाऊल, तुम मुझे क्यों सताते हो? अंकुश पर पद-प्रहार करना तुम्हारे लिए

fallen to the earth, I heard a voice speaking unto me,
and saying in the Hebrew tongue, Saul, Saul, why
persecutest thou me ? it is hard for thee to kick against
the pricks. 15 And I said, Who art thou, Lord ? And
he said, I am Jesus whom thou persecutest. 16 But rise,
and stand upon thy feet : for I have appeared unto
thee for this purpose, to make thee a minister and a
witness both of these things which thou hast seen, and
of those things in the which I will appear unto thee ;
17 delivering thee from the people, and from the Gen-
tiles, unto whom now I send thee, 18 to open their eyes,
and to turn them from darkness to light, and from
the power of Satan unto God, that they may receive
forgiveness of sins, and inheritance among them which
are sanctified by faith that is in me.

19 Whereupon, O king Agrippa, I was not disobe-
dient unto the heavenly vision : 20 but shewed first
unto them of Damascus, and at Jerusalem, and through-
out all the coasts of Judæa, and then to the Gen-
tiles, that they should repent and turn to God, and do
works meet for repentance. 21 For these causes the
Jews caught me in the temple, and went about to kill
me. 22 Having therefore obtained help of God, I con-
tinue unto this day, witnessing both to small and great,
saying none other things than those which the pro-
phets and Moses did say should come : 23 that Christ
should suffer, and that he should be the first that should
rise from the dead, and should shew light unto the
people, and to the Gentiles.

24 And as he thus spake for himself, Festus said
with a loud voice. Paul, thou art beside thyself ; much
learning doth make thee mad. 25 But he said, I am
not mad, most noble Festus ; but speak forth the
words of truth and soberness. 26 For the king knoweth
of these things, before whom also I speak freely : for
I am persuaded that none of these things are hidden
from him ; for this thing was not done in a corner.
27 King Agrippa, believest thou the prophets ? I

दुष्कर है।" १५ मैंने पूछा, "प्रभु आप कौन हैं ?" प्रभु ने कहा, "मैं यीशु हूं जिसे तुम सता रहे हो। १६ परंतु उठो और अपने पैरों पर खड़े हो, क्योंकि मैंने तुमको इस कारण दर्शन दिया है कि जो बातें मैंने तुमको दिखाई है और दिखाऊंगा, उन सब के निमित्त तुमको मैं अपना सेवक और साक्षी नियुक्त करूं। १७ मैं इस प्रजा से और उन विजातियों से तुम्हारी रक्षा करूंगा जिनके पास मैं तुमको भेज रहा हूं। १८ मैं तुमको भेज रहा हूं कि उनकी आंखें खोलो जिससे वे अंधकार से ज्योति की ओर, तथा शैतान की शक्ति से परमेश्वर की ओर फिरें ; अपने पापों की क्षमा पाएं ; और उन लोगों के बीच अधिकृत स्थान प्राप्त करें, जो मुझपर विश्वास कर पवित्र हुए हैं।"

१९ 'फलतः, हे राजन् अग्रिप्पा, मैंने इस स्वर्गीय-दर्शन की आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया, २० परन्तु पहिले दमिश्क में और तब यरूशलेम, समस्त यहूदिया प्रदेश एवं विजातियों में प्रचार करता रहा, "हृदय परिवर्तन कर परमेश्वर की ओर लौटो और हृदय-परिवर्तन के अनुरूप कार्य करो।" २१ यही कारण था कि यहूदियों ने मुझे मंदिर में पकड़ा और मार डालने का चेष्टा की ; २२ किंतु परमेश्वर की सहायता से मैं आज तक विद्यमान हूं और छोटे बड़े सब के संमुख साक्षी दे रहा हूं। जिन बातों की भविष्यवाणी नबियों ने और मूसा ने की उनसे अधिक मैं कुछ नहीं बताता : २३ अर्थात् यह कि ख्रिस्त को दुख उठाना है, और यह कि वही पहले पहल मृतकों में से जीवित होकर अपनी प्रजा को एवं विजातियों को ज्योति का संदेश देंगे।'

२४ जब वह इस प्रकार अपने पक्ष का समर्थन कर रहे थे, तो फेस्तुस उच्च स्वर में चिल्ला उठा, 'पौलुस तुम पागल हो गए हो। अत्यधिक विद्याभ्यास ने तुम्हें विक्षिप्त कर दिया हैं।' २५ पौलुस ने उत्तर दिया, 'परम श्रेष्ठ फेलिक्स, मैं पागल नहीं हूं। मेरे बचन सत्य और विवेकपूर्ण हैं। २६ महाराज इस विषय को जानते हैं, उन्हीं के संमुख मैं निस्संकोच हो बोल रहा हूं। मुझे निश्चय है कि उनसे कोई बात छुपी नहीं क्योंकि यह घटना किसी कोने में नहीं हुई। २७ राजन् अग्रिप्पा, क्या आप नबियों पर विश्वास करते हैं ?

know that thou believest. 28 Then Agrippa said unto
Paul, Almost thou persuadest me to be a Christian.
29 And Paul said, I would to God, that not only thou,
but also all that hear me this day, were both almost,
and altogether such as I am, except these bonds.

30 And when he had thus spoken, the king rose
up, and the governor, and Bernice, and they that sat
with them: 31 and when they were gone aside, they
talked between themselves, saying, This man doeth
nothing worthy of death or of bonds. 32 Then said
Agrippa unto Festus, This man might have been set
at liberty, if he had not appealed unto Cæsar.

PAUL'S VOYAGE TO ROME ; TO CRETE

27 And when it was determined that we should
sail into Italy, they delivered Paul and certain
other prisoners unto one named Julius, a centurion of
Augustus' band. 2 And entering into a ship of Ad-
ramyttium, we launched, meaning to sail by the coasts
of Asia ; one Aristarchus, a Macedonian of Thessalonica,
being with us. 3 And the next day we touched at
Sidon. And Julius courteously entreated Paul, and
gave him liberty to go unto his friends to refresh
himself. 4 And when we had launched from thence,
we sailed under Cyprus, because the winds were
contrary. 5 And when we had sailed over the sea of
Cilicia and Pamphylia, we came to Myra, a city of Lycia.
6 And there the centurion found a ship of Alexandria
sailing into Italy ; and he put us therein. 7 And when
we had sailed slowly many days, and scarce were come
over against Cnidus, the wind not suffering us, we sailed
under Crete, over against Salmone ; 8 and, hardly passing
it, came unto a place which is called The fair havens ;
nigh whereunto was the city of Lasea.

TO MALTA : THE STORM AND SHIPWRECK

9 Now when much time was spent, and when sailing
was now dangerous, because the fast was now already

मैं जानता हूं कि आप विश्वास करते हैं ?' २८ इस पर अग्रिप्पा ने पौलुस से
कहा, 'तुम अनायास* ही मुझे सहमत करना और ख्रिस्ती बनाना चाहते हो ?'
२९ पौलुस ने उत्तर दिया, 'अनायास हो या सप्रयास, परमेश्वर करें कि न
केवल आप वरन् ये सब, जो आज मेरा बचन सुन रहे हैं, इन बेड़ियों को छोड़,
मेरे सदृश हो जाएं।'

३० तब राजा, राज्यपाल और बिरनीके तथा उनके साथ बैठे हुए व्यक्ति उठ
गए ३१ और एकांत में एक दूसरे से बातें करने और कहने लगे, 'इस व्यक्ति
ने मृत्युदंड अथवा कारागार के योग्य कोई काम नहीं किया।' ३२ अग्रिप्पा
ने फेस्तुस से कहा, 'यदि इस पुरुष ने कैसर की दुहाई न दी होती तो मुक्त हो
सकता था।'

२७

पौलुस की रोम यात्रा : क्रेत

१ जब यह निश्चित हो गया कि हम जलयान द्वारा इतालिया जाएंगे
तो पौलुस और अन्य कई बंदीजन यूलियुस के हाथ सौंप दिये गए जो सम्राट्
औगुस्तुस के सैन्यदल का शतपति था। २ हम लोग अद्रमुत्तियुम के एक
जलयान पर चढ़े जो आसिया के तटवर्ती स्थानों पर होता हुआ जाने वाला
था, और लंगर खोल दिया। थिस्सलुनीके—निवासी अरिस्तर्खुस नामक एक
मकिदूनी भी हमारे साथ था। ३ दूसरे दिन हमने सैदा† में लंगर
डाला ; यहां यूनियुस ने पौलुस के प्रति सौजन्य दिखाया और उन्हें अपने
मित्रों के यहां जाने एवं उनकी सहायता स्वीकार करने की अनुमति दे दी।
४ वहां से लंगर उठाकर हम कुप्रुस की आड़ में खेने लगे क्योंकि वायु विपरीत
थी। ५ जब हम किलकिया और पंफूलिया के तटवर्ती समुद्र को पार कर चुके
तो लूसिया के मूरा नामक स्थान पर पहुंचे। ६ वहां शतपति को सिकंदरिया
का एक जलयान इतालिया जाता हुआ मिला जिस पर उसने हमें चढ़ा दिया।
७ हम लोग कई दिनों तक धीरे धीरे खेकर कठिनाई से कनिदुस के संमुख
पहुंचे। अब वायु आगे बढ़ने से रोक रही थी, इसलिए हम सलमोन के समीप
क्रेते की आड़ में खेने लगे। ८ उसके किनारे किनारे खेते हुए हम कठिनाई से
"मनोहर पोताश्रय" नामक स्थान पर पहुंचे ; यहां से लसया नगर निकट है।

मिलिते की ओर : भूमध्यसागर में तूफान

९ पर्याप्त समय बीत चुका था, यहां तक कि उपवास के दिन भी बीत

* अथवा 'थोड़े में'
† पाठांतर, 'कौदा'

past, Paul admonished them, 10 and said unto them,
Sirs, I perceive that this voyage will be with hurt and
much damage, not only of the lading and ship, but also
of our lives. 11 Nevertheless the centurion believed
the master and the owner of the ship, more than those
things which were spoken by Paul. 12 And because
the haven was not commodious to winter in, the more
part advised to depart thence also, if by any means
they might attain to Phenice, and there to winter;
which is an haven of Crete, and lieth toward the
south west and north west. 13 And when the south
wind blew softly, supposing that they had obtained
their purpose, loosing thence, they sailed close by Crete.
14 But not long after there arose against it a tempes-
tuous wind, called Euroclydon. 15 And when the ship
was caught, and could not bear up into the wind,
we let her drive. 16 And running under a certain
island which is called Clauda, we had much work to
come by the boat: 17 which when they had taken
up, they used helps, undergirding the ship; and, fear-
ing lest they should fall into the quicksands, strake
sail, and so were driven. 18 And we being exceedingly
tossed with a tempest, the next day they lightened
the ship; 19 and the third day we cast out with our
own hands the tackling of the ship. 20 And when
neither sun nor stars in many days appeared, and
no small tempest lay on us, all hope that we should
be saved was then taken away.

21 But after long abstinence Paul stood forth in
the midst of them, and said, Sirs, ye should have
hearkened unto me, and not have loosed from Crete,
and to have gained this harm and loss. 22 And now
I exhort you to be of good cheer: for there shall be
no loss of any man's life among you, but of the ship.
23 For there stood by me this night the angel of
God, whose I am, and whom I serve, 24 saying, Fear not,
Paul; thou must be brought before Cæsar: and, lo,
God hath given thee all them that sail with thee.

गए थे ; इसलिए जल-यात्रा करना निरापद नहीं था। अतः पौलुस ने लोगों
को परामर्श दिया, १० 'सज्जनो, मैं देख रहा हूं कि हमें इस जलयात्रा से माल
और जलयान की ही नहीं, वरन् प्राणों की भी हानि उठानी पड़ेगी।' ११ किंतु
शतपति ने पौलुस के कथन की अपेक्षा नायक और जलयान के स्वामी की
बातों पर अधिक ध्यान दिया। १२ यह बंदरगाह शीत ऋतु के लिए उपयुक्त
नहीं था, इस कारण अधिकांश लोगों की सम्मति हुई कि यहां से लंगर खोल दें
और किसी न किसी प्रकार फीनिक्स पहुँच कर शीत-ऋतु बितावें। यह क्रेत
का एक बंदरगाह है जिसका मुख दक्षिण-पश्चिम और उत्तर-पश्चिम*
को और है। १३ जब दक्षिण-पवन मंद मंद बहने लगा तो उन्होंने सोचा कि
हमारा उद्देश्य सफल हो गया; उन्होंने लंगर उठाया और क्रेत के किनारे
किनारे चल पड़े। १४ पर शीघ्र ही स्थल की ओर से यूरकुलीन† नामक
आंधी उठी। १५ जब जलयान आंधी में फंस गया और उसका सामना करने
में असमर्थ हुआ तो हमने उसे बहने दिया। १६ क्लौदा‡ नामक एक
छोटे द्वीप की आड़ में बहते-बहते हम कठिनाई से डोंगी को ऊपर खींच सके ;
१७ उसे उठाने के पश्चात् नाविकों ने अनेक उपाय करके जलयान को
नीचे से बांधा और सुरतिस§ में फंस जाने के भय से पाल उतार कर यों ही बह
चले। १८ हम आंधी से बुरी तरह झकझोरे खा रहे थे; इसलिए वे दूसरे
दिन माल समुद्र में फेंकने लगे ; १९ तीसरे दिन उन्होंने अपने ही हाथों
जलयान के रस्से आदि भी फेंक दिये। २० बहुत दिनों तक सूर्य और नक्षत्रों के
दर्शन नहीं हुए, एवं आंधी का वेग भी वैसा ही रहा। अब हमें अपने बचने
की कोई आशा न रही।

२१ लोग कई दिनों से निराहार थे, अतः पौलुस ने उनके बीच खड़े
होकर कहा, 'सज्जनो, उचित तो यह था कि तुम मेरे कथन पर ध्यान देते और
क्रेत से लंगर न उठाते ; तब न तो यह विपत्ति सहनी पड़ती और न यह हानि
उठानी पड़ती। २२ परंतु अब तुमसे मेरा अनुरोध है कि धैर्य रखो। तुम लोगों
में से किसी की प्राण-हानि न होगी, केवल जलयान नष्ट हो जाएगा।
२३ जिस परमेश्वर का मैं हूं और जिसकी उपासना करता हूं, उसके
स्वर्गदूत ने आज रात मेरे समीप खड़े होकर कहा, २४ "पौलुस, डरो मत।

* अथवा, उत्तर-पूर्व और दक्षिण-पूर्व

† अर्थात् 'पूर्वोत्तर'

‡ पाठांतर 'कौदा'

§ एक उथली खाड़ी का नाम

25 Wherefore, sirs, be of good cheer : for I believe God,
that it shall be even as it was told me. 26 Howbeit we
must be cast upon a certain island.

27 But when the fourteenth night was come, as we
were driven up and down in Adria, about midnight the
shipmen deemed that they drew near to some country ;
28 and sounded, and found it twenty fathoms : and
when they had gone a little further, they sounded
again, and found it fifteen fathoms. 29 Then fearing
lest we should have fallen upon rocks, they cast four
anchors out of the stern, and wished for the day.
30 And as the shipmen were about to flee out of
the ship, when they had let down the boat into the sea,
under colour as though they would have cast anchors
out of the foreship, 31 Paul said to the centurion and
to the soldiers, Except these abide in the ship, ye can-
not be saved. 32 Then the soldiers cut off the ropes of
the boat, and let her fall off.

33 And while the day was coming on, Paul besought
them all to take meat, saying, This day is the fourteenth
day that ye have tarried and continued fasting, having
taken nothing. 34 Wherefore I pray you to take some
meat : for this is for your health : for there shall not an
hair fall from the head of any of you. 35 And when he
had thus spoken, he took bread, and gave thanks to God
in presence of them all : and when he had broken it,
he began to eat. 36 Then were they all of good cheer,
and they also took some meat. 37 And we were in all
in the ship two hundred threescore and sixteen souls.
38 And when they had eaten enough, they lightened
the ship, and cast out the wheat into the sea.

39 And when it was day, they knew not the land :
but they discovered a certain creek with a shore, into the
which they were minded, if it were possible, to thrust in
the ship. 40 And when they had taken up the anchors,
they committed themselves unto the sea, and loosed the
rudder bands, and hoised up the mainsail to the wind,
and made toward shore. 41 And falling into a place

तुम्हारा कसर के संमुख उपस्थित होना अनिवार्य है। और देखो, परमेश्वर
ने तुम्हारे सब सहयात्री तुमको प्रदान किए हैं।" २५ इस कारण, सज्जनो,
धैर्य रखो। मुझे परमेश्वर पर विश्वास है : जैसा मुझसे कहा गया है ठीक
वैसा ही होगा। २६ हम अवश्य किसी द्वीप से जा लगेंगे।'

२७ जब चौदहवीं रात आई और हम अद्रिया-सागर में इधर उधर भटक
रहे थे तो लगभग आधी रात को नाविकों ने अनुमान किया कि हम किसी
देश के निकट पहुँच रहे हैं। २८ उन्होंने थाह ली तो बीस व्याम जल पाया ;
थोड़ा आगे चलकर उन्होंने फिर थाह ली तो पंद्रह व्याम। २९ तब इस डर
से कि कहीं हम चट्टानों में न जा पड़ें उन्होंने जलयान के पिछले भाग से चार
लंगर डाले और प्रातःकाल होने की प्रतीक्षा करने लगे। ३० पर नाविक
जलयान से भागने का विचार कर रहे थे और अगले भाग से लंगर डालने
के बहाने वे डोंगी को समुद्र में उतार चुके थे। ३१ अतः पौलुस ने शतपति
और सैनिकों से कहा, 'यदि ये मनुष्य जलयान पर न ठहरें तो आप-लोग भी
नहीं बच सकते।' ३२ इस पर सैनिकों ने रस्सियां काट कर डोंगी गिरा दी।

३३ जब दिन निकलने को हुआ तो पौलुस ने सबको भोजन करने
के लिए उत्साहित किया और कहा 'आज चौदह दिन हो गए, तुम लोग
चिंता के कारण निराहार हो। तुमने कुछ नहीं खाया। ३४ मेरा तुमसे
अनुरोध है कि कुछ भोजन करो ; इससे तुम्हें बल मिलेगा। तुममें से किसी
का बाल भी बांका न होगा।' ३५ इतना कह कर उन्होंने रोटी ली,
सबके सामने परमेश्वर को धन्यवाद दिया और तोड़ कर खाने लगे।
३६ इससे सबको आश्वासन मिला और वे भी भोजन करने लगे।
३७ जलयान पर हम सब दो सौ छिहत्तर* प्राणी थे। ३८ भोजन
से तृप्त हो जाने पर लोगों ने समुद्र में गेहूं फेंक कर जलयान को हलका
किया।

३९ जब दिन निकला तो वे भूमि को न पहचान सके, पर उनकी दृष्टि
एक खाड़ी पर पड़ी जिसका तट रेतीला था। उन्होंने विचार किया
कि यदि हो सके तो इसीमें जलयान को लगा दिया जाए। ४० उन्होंने
लंगर काट कर समुद्र में डाल दिए और साथ ही पतवारों के बंधन ढीले
कर दिए। तब वे वायु के संमुख पाल चढ़ाकर तट की ओर चले। ४१ परंतु

* १ कुछ प्रतियों के अनुसार, 'छिहत्तर'

where two seas met, they ran the ship aground ; and the
forepart stuck fast, and remained unmoveable, but the
hinder part was broken with the violence of the waves.
42 And the soldiers' counsel was to kill the priso-
ners, lest any of them should swim out, and escape.
43 But the centurion, willing to save Paul, kept them
from their purpose ; and commanded that they which
could swim should cast themselves first into the sea, and
get to land : 44 and the rest, some on boards, and some
on broken pieces of the ship. And so it came to pass,
that they escaped all safe to land.

PAUL AT MALTA

28 And when they were escaped, then they knew
that the island was called Melita. 2 And the
barbarous people shewed us no little kindness : for
they kindled a fire, and received us every one, be-
cause of the present rain, and because of the cold.
3 And when Paul had gathered a bundle of sticks,
and laid them on the fire, there came a viper out of the
heat, and fastened on his hand. 4 And when the bar-
barians saw the venomous beast hang on his hand, they
said among themselves, No doubt this man is a murderer,
whom, though he hath escaped the sea, yet vengeance
suffereth not to live. 5 And he shook off the beast into
the fire, and felt no harm. 6 Howbeit they looked
when he should have swollen, or fallen down dead
suddenly : but after they had looked a great while, and
saw no harm come to him, they changed their minds,
and said that he was a god.

7 In the same quarters were possessions of the chief
man of the island, whose name was Publius ; who
received us, and lodged us three days courteously. 8 And
it came to pass, that the father of Publius lay sick of a
fever and of a bloody flux : to whom Paul entered in,
and prayed, and laid his hands on him, and healed him.
9 So when this was done, others also, which had diseases

जलमग्न बालू में धंस जाने के कारण उन्होंने जलयान को वहीं रहने दिया।
उसका अगला भाग गढ़ कर अचल हो रहा पर पिछला भाग लहरों के थपेड़ों
से टूटने लगा। ४२ सैनिकों का विचार था कि बंदियों को मार डाला जाए
जिस से कोई तैरकर भाग न सके। ४३ परंतु शतपति ने पौलुस की प्राण
रक्षा निमित्त उनकी योजना रोकी। उसने आज्ञा दी कि जो तैर सकते हैं
वे पहले कूद कर भूमि पर निकल जाएं, ४४ और शेष लोग लकड़ी के
पटरों और जलयान की टूटी वस्तुओं के सहारे आएं। इस प्रकार हम सब
भूमि पर सकुशल पहुँच गए।

२८

मिलिते में पौलुस का स्वागत

१ इस प्रकार बच जाने के उपरांत हमें ज्ञात हुआ कि उस द्वीप का नाम
मिलिते है। २ वहाँ के निवासियों ने हमारे प्रति बड़ी सहृदयता प्रदर्शित की
और आग जलाकर हमारा स्वागत किया, क्योंकि वर्षा होने लगी थी और
ठंड भी थी। ३ पौलुस ने लकड़ियों का गट्ठा एकत्रित कर आग पर रखा था।
ताप के कारण उसमें से एक सप निकला और उनके हाथ से लिपट गया।
४ वहां के निवासियों ने उस जंतु को उनके हाथ से लटकते देखा तो एक
दूसरे से कहने लगे, 'निश्चय यह कोई हत्यारा है। यह समुद्र से बच निकला
पर 'न्याय की देवी* इसे नहीं जीने देना चाहती।' ५ अस्तु, पौलुस ने उस
सर्प को अग्नि में झटक दिया, और उन्हें कोई हानि नहीं पहुंची। ६ लोगों का
अब भी अनुमान था कि वह सूज जाएंगे और सहसा गिरकर मर जाएंगे। जब
वे देर तक प्रतीक्षा करते रहे और देखा कि पौलुस का कुछ भी अशुभ नहीं हुआ
तो उन लोगों का विचार बदल गया और वे कहने लगे, 'यह कोई देवता है।'

७ उस स्थान के आसपास, द्वीप के पुबलियुस नामक मुखिया की भूमि
थी। उसने हमारा स्वागत कर तीन दिन प्रेम भाव से हमारा आतिथ्य
किया। ८ पुबलियुस का पिता ज्वर तथा उदर रोग से पीड़ित था। पौलुस
ने उसके पास घर में जाकर प्रार्थना की और उस पर हाथ रख कर उसे स्वस्थ
कर दिया। ९ यह ज्ञात होने पर द्वीप के अन्य रोगी भी आकर स्वस्थ होने

* अक्षरशः 'दिके'

in the island, came, and were healed : 10 who also
honoured us with many honours ; and when we de-
parted, they laded us with such things as were necessary.

VOYAGE TO ROME CONTINUED

11 And after three months we departed in a ship of
Alexandria, which had wintered in the isle, whose sign
was Castor and Pollux. 12 And landing at Syracuse, we
tarried there three days. 13 And from thence we
fetched a compass, and came to Rhegium : and after one
day the south wind blew, and we came the next day to
Puteoli : 14 where we found brethren, and were desired
to tarry with them seven days : and so we went toward
Rome. 15 And from thence, when the brethren heard
of us, they came to meet us as far as Appii forum, and
The three taverns : whom when Paul saw, he thanked
God, and took courage.

16 And when we came to Rome, the centurion
delivered the prisoners to the captain of the guard : but
Paul was suffered to dwell by himself with a soldier that
kept him.

PAUL INTERVIEWS THE JEWS AT ROME

17 And it came to pass, that after three days
Paul called the chief of the Jews together : and when
they were come together, he said unto them, Men and
brethren, though I have committed nothing against the
people, or customs of our fathers, yet was I delivered
prisoner from Jerusalem into the hands of the Romans.
18 Who, when they had examined me, would have let
me go, because there was no cause of death in me.
19 But when the Jews spake against it, I was cons-
trained to appeal unto Cæsar ; not that I had ought to
accuse my nation of. 20 For this cause therefore have I
called for you, to see you, and to speak with you :
because that for the hope of Israel I am bound with this
chain. 21 And they said unto him, We neither received
letters out of Judæa concerning thee, neither any of the
brethren that came shewed or spake any harm of thee.
22 But we desire to hear of thee what thou thinkest :

लगे। १० उन्होंने हमारा बहुत आदर किया* और जब हम चलने लगे तो हमारी आवश्यकता की वस्तुएं लाकर जलयान पर रख दीं।

मिलिते से रोम की ओर

११ तीन महीने के पश्चात् हम सिकंदरिया के एक जलयान पर चढ़े जिसने इस द्वीप में शीत काल बताया था और जिसका चिह्न था, 'दियुसकूरी'†।
१२ हम सुरकूसा में लंगर डाल कर वहां तीन दिन ठहरे; १३ वहां से किनारे किनारे जलयान पर रेगियुम पहुंचे; और एक दिन पश्चात् दक्षिण पवन चलने लगी, तो दूसरे दिन पुतियुली आए। १४ वहां भाइयों से हमारी भेंट हुई और उनके अनुरोध पर हम सात दिन उनके यहां ठहरे। इस प्रकार हम रोम तक आ पहुँचे। १५ यहां बंधुगण हमारी चर्चा सुन कर हमसे मिलने के मिलने के लिए अप्पियुस के चौक और 'तीन सराय' नामक स्थान तक आए। उन्हें देखकर पौलुस प्रफुल्लित हुए और परमेश्वर को धन्यवाद दिया।
१६ जब हम रोम पहुँचे तो पौलुस को अनुमति मिल गई कि एक सैनिक के साथ, जो उनकी रखवाली के लिए नियुक्त था, अपने निजी स्थान में रहें।

रोम के यहूदियों से वार्तालाप

१७ तीन दिन पश्चात् पौलुस ने यहूदियों के प्रमुख पुरुषों को बुलाया और उनके एकत्रित होने पर कहा, 'भाइयो, मैंने अपनी जाति और पूर्वजों की प्रथाओं के विरुद्ध कोई काम नहीं किया, फिर भी मुझे बंदी बना कर यरूशलेम से रोमियों के हाथ दे दिया गया। १८ इन लोगों ने मेरी जाँच कर मुझे मुक्त कराना चाहा, क्योंकि मैंने मृत्युदंड के योग्य कोई काम नहीं किया था, १९ परंतु यहूदियों के विरोध से विवश होकर मुझे सम्राट् की दुहाई देनी पड़ी—यह नहीं कि मुझे अपने ही लोगों पर अभियोग लगाना था।
२० इसी कारण मैंने तुमको आमंत्रित किया है कि तुमसे मिलूं और वार्तालाप करूं। मैं इस्राएल की आशा का समर्थक हूं, इसीलिए मैं इन शृङ्खलाओं से बँधा हूं।' २१ उन्होंने पौलुस से कहा, 'हमें यहूदिया में तुम्हारे संबंध में कोई पत्र नहीं मिला, और न वहां से आए हुए भाइयों में से किसी ने तुम्हारे विषय में संदेश दिया अथवा कोई बुरी बात कही। २२ हम तुम्हारे विचार

* अथवा, 'हमें बहुत उपहार दिए'
† अर्थात्, 'यमजदेव'

for as concerning this sect, we know that every where
it is spoken against.

23 And when they had appointed him a day, there
came many to him into his lodging; to whom he ex-
pounded and testified the kingdom of God, persuading
them concerning Jesus, both out of the law of Moses,
and out of the prophets, from morning till evening.
24 And some believed the things which were spoken,
and some believed not. 25 And when they agreed not
among themselves, they departed, after that Paul had
spoken one word, Well spake the Holy Ghost by Esaias
the prophet unto our fathers, 26 saying,

Go unto this people, and say,
Hearing ye shall hear, and shall not understand;
And seeing ye shall see, and not perceive:
27 For the heart of this people is waxed gross,
And their ears are dull of hearing,
And their eyes have they closed;
Lest they should see with their eyes,
And hear with their ears,
And understand with their heart,
And should be converted,
And I should heal them.

28 Be it known therefore unto you, that the salvation
of God is sent unto the Gentiles, and that they will
hear it. 29 And when he had said these words, the
Jews departed, and had great reasoning among them-
selves.

CONCLUSION

30 And Paul dwelt two whole years in his own
hired house, and received all that came in unto him,
31 preaching the kingdom of God, and teaching those
things which concern the Lord Jesus Christ, with all
confidence, no man forbidding him.

सुनना चाहते हैं क्योंकि हमें ज्ञात है कि इस पंथ का सर्वत्र विरोध हो रहा है।'
२३ उन्होंने पौलुस के लिए एक दिन निश्चित किया और बड़ी संख्या
में उनके यहां आए। पौलुस ने प्रातःकाल से सायंकाल तक परमेश्वर के राज्य
की साक्षी दी और उन्हें यीशु के संबंध में मूसा के नियमशास्त्र तथा नबियों के
लेख से समझाया। २४ कुछ ने उनके कथन को माना पर कुछ अविश्वासी
बने रहे; २५ जब वे आपस में सहमत नहीं हुए और विदा होने लगे, तब
पौलुस ने उनसे एक बात कही : 'पवित्र आत्मा ने यशायाह नबी द्वारा तुम्हारे
पूर्वजों से ठीक ही कहा है :

२६ "इस प्रजा के पास जाकर कहो,
तुम सुनोगे अवश्य, पर न समझोगे,
तुम देखोगे अवश्य, पर तुम्हें सूझ न पड़ेगा ;
२७ क्योंकि इन लोगों का मन मोटा हो गया है,
वे कानों से ऊंचा सुनने लगे हैं,
उन्होंने अपनी आंखें बंद कर ली हैं
कि कहीं ऐसा न हो कि वे आंखों से देखें,
कानों से सुनें, मन से समझें, और लौट आएं
और मैं उनको स्वस्थ कर दूं।"

२८ इसलिए तुम्हें विदित हो कि परमेश्वर का यह उद्धार विजातियों को
भेजा गया है; वे सुनेंगे।' २९ उनके यह कहने पर यहूदी आपस में
विवाद करते हुए वहां से चले गए।*

उपसंहार

३० पौलुस वहां अपने व्यय से पूरे दो वर्ष तक रहे। वह अपने पास
आने वाले लोगों का स्वागत करते, ३१ निस्संकोच होकर निर्विघ्न रूप
से परमेश्वर के राज्य का प्रचार करते और प्रभु यीशु ख्रिस्त के विषय में
शिक्षा देते रहे।

* कुछ प्रतियों में पद २९ नहीं पाया जाता।
† अथवा 'भाड़े के घर में'

Published by The Bible Society of India & Ceylon, A/1, Mahatma Gandhi Road, Bangalore-1, and printed by Sri G. C. Ray, Navana Printing Works Private Ltd., 47, Ganesh Chunder Avenue, Calcutta-13.